श्रीः।

जातिभास्कर.

भाषाटीकासंवलित.

यजुर्वेद-भाषाभाष्यकार अनेक ग्रन्थोंके अनुवादक
तथा निर्माता मुरादाबादनिवासी विद्यावारिधि
स्वर्गीय पण्डित ज्वालाप्रसादजी मिश्र
द्वारा संपादित।

जिसमें

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और मिश्रखण्ड हैं.

उसीको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालय

बम्बईमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया.

संवत् १९८३, शके १८४८.

विद्यावारिधि स्वर्गीय पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र-मुरादाबाद.



इस पुस्तकको खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

भूमिका।

इस उन्नतिकी जागृतिके समयमें सभी लोग उन्नत होना चाह रहे हैं यह भारतवर्षके सौभाग्यकी बात है और हमारे पूर्वज महर्षियोंका आदेश भी इसी प्रकार है कि "उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।" अर्थात् अपनी उन्नति स्वयं करो कभी अधोगति मत होने दो। कदाचित् प्रमाद आदिसे मनुष्य आत्मोन्नति न करे तो उसके लिये मुनियोंने स्पष्ट शब्दोंमें आत्मघाती शब्दका प्रयोग किया है। इससे प्रत्येक बुद्धिमान् समझ सकता है कि अपने स्वरूपको भुला देना और वर्णाश्रमधर्मानुसार अपने करने योग्य धर्म कर्मोंको न करना गुरुतर पातक है।

भगवान् श्रीकृष्णने अपने श्रीमुखसे स्फुट कहा है "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः" "स्वेस्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।" इत्यादि। इन वचनामृतोंका कितना गौरव है, यथार्थ उन्नतिका क्या उपाय है, देश कालके अनुसार किस कर्मके करनेसे यथार्थ उन्नति होसकती है? इत्यादि विचारकर हमने मुरादाबादनिवासी विद्यावारिधि पण्डित ज्वालाप्रसादजी मिश्रसे जातिनिर्णयकी एक पुस्तक प्रणयन करनेको कहा था, उन्होंने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक यह जातिभास्कर नामक ग्रन्थ बनाया है।

जातिशब्दके अनेक अर्थ होनेपर भी इस ग्रन्थमें **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत।** इस वैदिक प्रमाणानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा उनके मेलसे होनेवाली अनेक संकर जातियां श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास इत्यादिके प्रमाणोंसे लिखी गयी हैं। यथाशक्ति निखिल भारतवर्षमें रहनेवाले चातुर्वर्ण्य, अनुलोम, विलोम आदिभेदसे प्रचलित प्राचीन वैदिक जातियां, श्रीरामचन्द्रजीके यज्ञमें तथा प्रसिद्ध क्षत्रियान्तक, परशुरामजीके समयमें उनके भगवदंश होनेसे, उनकी अव्याहत शक्तिके प्रभावसे जो ब्राह्मणादि नवीन जातियां बनी हैं उन सबका वर्णन, एवं रमा, पार्वती प्रभृति भगवती देवियोंके अनुग्रहसे आविर्भूत जातियां जो जो संसारमें प्रसिद्ध हैं उनका वर्णन, कान्यकुब्जोंके विश्वे, कुलदेवता आदि, सरयूपारियोंके तीन तेरह आदिक भेद, मैथिलोंके श्रोत्रियादि भेद और उनकी विवाहादिकी प्रतिष्ठा, गौडादियोंकी समस्त जातियोंका वर्णन, चारों सम्प्रदायोंके आचार्योंका महत्त्व और उनके रहस्यादि उत्तमतासे लिखे गये हैं, तथा पाश्चात्य विद्वानोंकी हिंदुजातिकी समालोचना पर उचित टिप्पणी भी की गयी है।

हम ऊपर कह चुके हैं कि प्रत्येक मनुष्यका आत्मोन्नति करना परम धर्म है परन्तु वह उन्नति यथा विधि करनी चाहिये न कि सहसा धार्मिक दौड़में नीचेसे सबसे ऊंचे चढनेकी मृगतृष्णामें उससे भी नीचे गिर जांय। अवनत जातियोंको उन्नत करनेके जो उपाय हमारे पूर्व पुरुष परम हितचिन्तक महर्षियोंने अपनी विशुद्ध बुद्धि और धार्मिक भावनाओंसे स्मृतियोंमें लिखे हैं उन्हींके अनुसार आचरण करनेसे जातियां उन्नति कर सकती हैं, आज कल स्वकपोल कल्पित नियमोंके अनुकूल जनेऊ पहनलेने और जिस किसीको भी ब्राह्मण क्षत्रिय आदि बनालेनेसे जातियोंकी उन्नति नहीं बरन महती अवनति है। हम सनातन धर्मावलम्बियोंकी सत्य युगसे त्रेता युग तकके सुविस्तीर्ण समयमें जो जो उन्नतियां हुई वह सत्यधर्मके पालनसे ही हुई हैं। इस कराल समयमें अहर्निश जो अधोगति होरही है वह सनातन धर्मकी अवहेल-

नासे ही होरही है। क्या अब भी अपने ज्ञानवृद्ध त्रिकालज्ञ महर्षियोंकी अमृतमयी वाणीका समादर या उनके निर्दिष्ट पथ पर चलकर आप अपनीअपनी जातियोंका उद्धार न करेंगे ? हम आशा करते हैं कि, इस जातिभास्करमें लिखे हुए मुनिमतोंके विचार करनेसे आप स्वयं अपनी उन्नतिका वही सरल निष्कण्टक मार्ग ग्रहण कर लाभ उठावेंगे। जब प्रत्येक जाति अपने जात्युक्त कर्मों पर चलने लग जायँ तो हमारे स्वर्गीय विद्यावारिधिजीके आत्माको परम शांति होगी।

इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं कि उक्त विद्यावारिधिजीका विशेष समय नाना प्रकारके ग्रन्थोंके अवलोकनमें ही जाता था और जहां कोई अपूर्व ग्रंथ आपको उपलब्ध होजाय आप उसकी हिन्दी टीका करके इस भारतवर्षीय प्रजाकी ज्ञानवृद्धिके लिये सदा सचेष्ट रहते थे। जिसके प्रमाणभूत हमारे मुद्रणयन्त्रालयमें उनकी निमित अनेक विषयकी पुस्तकें हैं। यजुर्वेदका भाषाभाष्य बनाकर उन्होंने हिन्दी जाननेवाली असंख्य प्रजाको वेदका मर्म सरलतया समझा दिया है। श्रीमद्भगवद्गीताकी हिन्दी टीका बनाकर कर्म, भक्ति और ज्ञानकाण्डके कठिन तत्त्वोंको सरल और मधुर भाषामें सुकुमार बुद्धियोंके लिये उन्होंने विशद किया है, खेदपूर्वक कहा जाता है कि उसको हम उनकी जीवित अवस्थामें प्रकाशित नहीं करसके, परन्तु आशा है कि शीघ्र प्रकाशित करेंगे। एक दो और ग्रंथ भी उनकी प्रसिद्ध लेखनीसे लिखे हुए हैं मुद्रित होजानेपर उनको पढकर भी पाठक आनन्दलाभ करेंगे।

इस प्रकार सार्वजनिक कार्योंमें आसक्त रहनेसे आपका अधिक समय परोपकारमें ही लगा रहता था; आप तन मनसे हिन्दी और हिन्दू धर्मकी सेवा किया करते थे। श्रीगंगाजीमें आपकी विशेष भक्ति रहती थी। विश्वोपकारिणी पतित-पावनी भगवती भागीरथीने भी अपने भक्तकी जैसी उत्तम गति होनी चाहिये वैसी ही आपको दी, अर्थात् जब आपको अपने नश्वर शरीरपर रोगवश शिथिलता विदित होने लगी तो आप गढमुक्तेश्वरमें कार्तिक मासकी पूर्णमासीके प्रसिद्ध पर्वके समय अस्वस्थ दशामें और स्वजनोंके निवारण करनेपर भी परमपदके लाभकी आकाङ्क्षासे चलेही गये और आपने दीनोद्धारिणी माता भागीरथीके गोदमें मस्तक रख नश्वर मानव देहके बदले दिव्यदेह लाभ किया।

हम आशा करते हैं कि अब भी कितनी ही जातिके लोगोंको अपनी यथार्थता जाननेकी प्रबल अभिलाषा रहती है वह इस सर्वोत्तम और अलभ्य ग्रन्थको मँगाकर लाभ उठावेंगे।

आपका हिताभिलाषी–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाधिपति बम्बई.

॥ श्रीः ॥

अथ जातिभास्कर-विषयानुक्रमणिका ।

दूसरे अनेकविध ब्रा० उ०

(इति वैश्यखड:)

विचारकोटिकी जातियां।

इति जातिभास्कर-विषयानुक्रमणिका-समाप्ता ।

अथ जातिभास्करः प्रारभ्यते

भाषाटीकासंवलितः ।

दोहा ।

गौरि गिरा गणपति सुमरि, शम्भुचरण शिर नाय ।
जातिभास्कर ग्रंथ शुभ, लिखत सुजन सुखदाय ॥

उपोद्घातः ।

जाति क्या वस्तु है, इस समय इसके विषयमें बहुत विवाद चल रहा है, कोई जन्मसे और कोई कर्मसे जातिका निर्णय करते हैं, परन्तु इसमें यथार्थ निर्णय क्या है, इस विषयको हम वेद, वेदाङ्ग, धर्मशास्त्र, पुराणादिके प्रमाणोंसे निर्णय कर सर्वसाधारणके हितके निमित्त प्रकाश करते हैं। जातिशब्द जन् धातुसे क्तिन् प्रत्यय करनेसे बनता है, जिसके अर्थ जन्म और गोत्रके होते हैं। यद्यपि जाति एक प्रकारका छन्द, जाति फल, मालती, वेदकी शाखा आदि कई अर्थोंमें प्रयुक्त होता है, परन्तु यहां उसका प्रसंग न होनेसे उस विषयका उल्लेख नहीं किया जायगा। व्याकरणके मतसे किसी शब्दके प्रतिपाद्य अर्थको जाति कहते हैं, वैयाकरण चार प्रकारके शब्द बतलाते हैं, उनमें ही जातिवाचक एक प्रकार है, व्याकरणशास्त्रमें जातिका लक्षण इस प्रकार कहा है।

आकृतिग्रहणा जातिर्लिङ्गानाञ्च न सर्वभाक् ।
सकृदाख्यातनिर्ग्राह्या गोत्रञ्च चरणैः सह ॥ १ ॥

जिस आकृतिके द्वारा कोई पहचाना जाय, उसको अर्थात् आकृतिको जाति कहते हैं, मनुष्यकी हाथ पैर आदि विशेष२ आकृति न जानने पर उसको यह मनुष्य है ऐसा नहीं जाना जा सकता, पर उसकी आकृति जानने पर मनुष्य जातिका बोध होता है, इसी प्रकार भिन्न भिन्न आकृतियोंके जानने पर भिन्न भिन्न जातियोंकी पहचान होती है, मनुष्यको देखकर वृक्ष नहीं कहा जायगा, कारण कि मनुष्यकी और वृक्ष आदिकी आकृतिमें अन्तर है, मान लो कि यदि कोई मनुष्य वृक्षको न जानता हो तो उसको वृक्षकी पहचानके निमित्त वृक्षके ही शाखा पत्ते वल्कलादिकी आकृति बताई जायगी जिससे वह व्यक्ति उस आकृतिके द्वारा वृक्षको पहचान सकैगा. आकृति देखकर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यका बोध नहीं होता इस कारण दूसरा लक्षण करते हैं.

लिङ्गानाञ्च न सर्वभाक् ।

जो सम्पूर्ण लिंगोंको न ग्रहण करै अर्थात् सब लिंगोंमें जिसका शब्दरूप न हो तात्पर्य यह कि जो तीनों लिंग न हो जैसे ब्राह्मणत्व और ब्राह्मण आदि, इन शब्दोंमें कोई पुँल्लिङ्ग और कोई स्त्रीलिंग रूप हैं।

इस लक्षणके अनुसार देवदत्त कृष्णदास आदि एकलिंगभागी संज्ञाशब्द भी जातिवाचक हो सकता है इसकारण पूर्वोक्त दोनों लक्षणोंका विशेष स्वरूप कहा जाता है.

सकृदाख्यातनिर्ग्राह्या।

जो एक बार समझानेसे ही जान लीजाय, अर्थात् एकबार समझाने पर किसी एक जाति (श्रेणी) का ज्ञान अवश्य होता है, देवदास कृष्णदास प्रभृति एकलिंगभागी होनेपर भी दोनों व्यक्तियोंकी श्रेणी निर्दिष्ट नहीं समझी जायगी आख्यातका अर्थ उपदेश है एक बारके उपदेशसे जिसका सब जगह ग्रहण हो वह जाति है।

वेदके किसी एक स्थानके क्रियावाचक कठादि शब्द एवं गार्ग गार्गी आदि अपत्यप्रत्ययान्त त्रिलिङ्गशब्द समस्त जातिवाचक बनानेके निमित्त तीसरा लक्षण कहा है कि,

गोत्रञ्च चरणैः सह।

अर्थात् वेदके किसी एक देशके कठादि शाखा अध्येतृ आदि शब्द और अपत्यप्रत्ययान्त शब्द भी जातिवाचक होते हैं।

महाभाष्यम जातिका लक्षण इसप्रकार कहा है।

प्रादुर्भावविनाशाभ्यां सत्त्वस्य युगपद्गुणैः।
असर्वलिंगां बह्वर्थां तां जातिं कवयो विदुः॥

सत्त्वके प्रादुर्भाव और विनाशके साथ रहनेवाले गुणोंसे जो एकसाथ मिलित है जो सब लिंगोंको नहीं भजती अर्थात् उत्पत्तिके साथ ही जिसमें जो गुण रहते हैं और विनाशके साथ समाप्त होते हैं ऐसी एकलिंगमें वर्तमान बहुत अर्थवाली जाति कहाती है। कोई २ पंडित कहते हैं कि सबका जो एक धर्म है वही जाति और ब्रह्म है।

सम्बन्धभेदात्सत्तैव विद्यमानगवादिषु। जातिरित्युच्यते तस्यां सर्वे शब्दा व्यवस्थिताः॥ तां प्रातिपदिकार्थञ्च धात्वर्थञ्च प्रचक्षते। सा नित्या सा महानात्मा तामाहुस्त्वतलादयः।

गौ आदि सम्पूर्ण पदार्थ सम्बन्ध भेदमें जो सत्तारूप एक पदार्थ है, उसीका नाम जाति है, इसीमें सम्पूर्ण शब्द स्थिति करते हैं, यह जाति ही धात्वर्थ और प्रातिपदिकार्थ समझलेनी चाहिये, यह नित्य एवम् आत्मस्वरूप हैं, त्वतल इत्यादि भावार्थ प्रत्ययमें यह जातिको ही बतलाते हैं, अर्थात् इनसे जातिका अर्थ ही निकलता है, केवल जाति ही एक और नित्य है, व्यक्ति अनेक और अनित्य हैं.

अनेकव्यक्त्यभिव्यङ्ग्या जातिः स्फोट इति स्मृता।

अनेक व्यक्तियोंमें अभिव्यक्ति (स्फुटता) जातिको स्फोट कहते हैं। शब्द दो प्रकारके हैं–नित्य और अनित्य एकमात्र स्फोटशब्द नित्य है और इसके अतिरिक्त जितने वर्णात्मक शब्द हैं वे सब अनित्य हैं। वर्णातिरिक्त स्फोटात्मक जो नित्य शब्द हैं उनके विषयमें शास्त्रोंमें अनेकानेक युक्ति देखी जाती हैं, उनमें प्रधान युक्ति यह है कि स्फोट न होनेपर केवल वर्णात्मक शब्दसे कुछ अर्थ ही नहीं समझा जाता, जैसे इसको सब ही मानते हैं कि अकार, गकार, नकार, इकार इन चार अक्षरोंका जो अग्नि शब्द है उसके

द्वारा वह्निका बोध होता है, किन्तु वह केवल चार अक्षरोंसे ही सम्पादित नहीं होसकता है, कारण कि यदि इन चार अक्षरोंमेंसे किसी एकसे ही अग्निका बोध होता तो केवल अकार अथवा गकार उच्चारण करनेपर ही वह्निका बोध क्यों नहीं होता, इस दोषके दूर करनेको यह चार अक्षर मिलकर ही अग्निका बोध कराते हैं, यह कहना भी भ्रांति है कि सब वर्ण आशु विनाशी हैं अर्थात् परस्पर वर्णके उत्पन्न होनेपर पहले २ सब अक्षर नष्ट होजाते हैं, ऐसा हो तो अर्थबोधकी बात तो दूर है उनकी एकत्र स्थिति भी सम्भव नहीं है, इन चार वर्णोंसे प्रथम स्फोटकी अभिव्यक्ति अर्थात् स्फुटता उत्पन्न होती है, पीछे स्फोटद्वारा वह्निका बोध होता है.

कैश्चिद्व्यक्तय एवास्या ध्वनित्वेन प्रकल्पिताः।

कोई कोई कल्पना करते हैं कि सम्पूर्ण व्यक्ति इस जातिकी ध्वनिस्वरूप हैं, जातिको जो स्फोट कहा गया है, वह वाच्यवाचकका एकत्र मानकर कहागया है, इसप्रकार समझना चाहिये.

नैयायिकोंके मतसे सोलह पदार्थोंके अन्तर्गत जाति भी एक पदार्थ है गौतमसूत्रमें इसका लक्षण इस प्रकार कहा है.

समानप्रसवात्मिका न्याय० अ०२ आह्नि० २ सू० ६७.

समानः समानाकारकः प्रसवो बुद्धिजननमात्मस्वरूपं यस्याः सा तथाच समानाकारबुद्धिजननयोग्यत्वमर्थः। गौ० वृ० २।२।६७

अर्थात् जिस पदार्थसे समानताका बोध हो उसीका नाम जाति है जैसे मनुष्य पशु इत्यादि, यह समानताका बोध जातिपरक दिखाया है, अवान्तरभेदसे नहीं, अवान्तर भेदमें जिसकी समानता होगी वह भी जाति कही जायगी। ब्राह्मण और शूद्रको हम एक श्रेणीमें कहना चाहें तो नहीं कहसकते, क्योंकि ब्राह्मणका धर्म पृथक् है, शूद्रका पृथक् है, ब्राह्मण संध्या पूजा करता है, शूद्र उसकी सेवा करता है, ब्राह्मणके गलेमें यज्ञोपवीत है, उसके गलेमें कंठी है, तो इस रूपमें यह एकजाति नहीं हैं, परन्तु मनुष्यत्वमें दोनों समान वा एक हैं, कारण कि मनुष्यत्व दोनोंमें है, इससे मनुष्यत्वजाति न्यायने स्वीकार की।

समानताका बोध जिससे हो उसीका नाम जाति कहकर दूसरा नाम सामान्य भी दिया है जो जाति कहनेपर समझा जाता है, सामान्य कहनेपर भी वही समझा जाता है, इस जातिके बहुतसे लक्षण और भेद हैं, यथा हि–

साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां प्रत्यवस्थानं (जातिः) गौ० आह्नि० २ सू० १८.

प्रयुक्ते हि हेतौ यः प्रसंगो जायते सा जातिः, स च प्रसङ्गः साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां प्रत्यवस्थानमुपालम्भः प्रतिषेध इति उदाहरण-साधर्म्यात् साध्यसाधनं हेतुरित्यस्योदाहरणसाधर्म्येण प्रत्यवस्थान-मुदाहरणं, वैधर्म्यात् साध्यसाधनं हेतुरित्यस्योदाहरणवैधर्म्येण प्रत्यवस्थानम्। प्रत्यनीकभावाज्जायमानोऽर्थो जातिःवात्स्या० १।२।५९

अर्थात् व्याप्तिको छोडकर साधर्म्य और वैधर्म्य द्वारा जो दोष कहाजाय उसीका नाम जाति है.

(छलादिभिन्नदूषणासमर्थमुत्तरम्) छलादिके अतिरिक्त दोषके जो अयोग्य अर्थात् छलादि व्यतिरेक जिसमें कुछ दोष न मानाजाय उसीका नाम जाति है.

स्वव्याघातकमुत्तरम् । गौ. सू. १।२।१८

अपने प्रतिबन्धक उत्तरका नाम जाति है, वक्ता जिस अर्थ तात्पर्यसे शब्दको प्रयोग करे, उस शब्दसे वह अर्थ न लेकर उसके विपरीत अर्थ मानकर जो मिथ्या दोष लगाया जाय उसको छल कहते हैं, जैसे—'हरिप्रसादमहं भक्षामि' में हरिका प्रसाद भक्षण करता हूँ ऐसे स्थलमें यदि हरिशब्दका विष्णु अर्थ न लगाकर वानरके अर्थकी कल्पना करके क्या तुम वानरकी जूठन खातेहो ? ऐसा दोष लगाया जाय, यह छल है इसी प्रकार वाक्छल सामान्यछल और उपचारछल रहित असत् उत्तरको अर्थात् वक्ताद्वारा संस्थापित मत दूषण करनेमें असमर्थ अथवा अपने मतका हानिजनक जो उत्तर उसको जाति कहते हैं यह जातिपदार्थ २४ प्रकारका है.

साधर्म्यवैधर्म्योत्कर्षापकर्षवर्ण्यावर्ण्यविकल्पसाध्यप्राप्त्यप्राप्तिप्रसंगप्रतिदृष्टान्तानुत्पत्तिसंशयप्रकरणहेत्वर्थापत्त्यविशेषोपपत्त्युपलब्ध्यनुपलब्धिनित्यानित्यकार्यसमाः । न्या॰ सू. अ. ५ अ. १ सू. १

अर्थात् साधर्म्यसम, वैधर्म्यसम, उत्कर्षसम, उपकर्षसम, वर्ण्यसम, अवर्ण्यसम, विकल्पसम, साध्यसम, प्राप्तिसम, अप्राप्तिसम, प्रसंगसन, प्रतिदृष्टान्तसम, अनुत्पत्तिसम, संशयसम, प्रकरणसम, हेतुसम, अर्थापत्ति॰ सम, अविशेषसम, उपपत्तिसम, उपलब्धिसम, अनुपलब्धिसम, नित्यसम, अनित्यसम, कार्यसम इसप्रकार २४ भेद गौतमसूत्रमें जातिके कहे हैं । तर्कभाषा और तर्कदीपिकामें भी इसीप्रकार जातिका विवरण कहा गया है । प्रभाकरका मत है कि, आकृतिद्वारा व्यंगित पदार्थको ही जाति कहना चाहिये, गुणत्व आदिका जातित्व नहीं मानना चाहिये ।

नैयायिकगणोंके मतसे गुणत्वप्रभृति भी जाति मानी जाती है, तर्कप्रकाशिकामें निम्नलिखित जातिका लक्षण कहा गया है ।

नित्याऽनेकसमवेतम् ।

जो पदार्थ नित्य अर्थात् ध्वंस और प्रागभावरहित [नष्ट न होनेवाला] और समवाय सम्बन्धसे सब पदार्थोंमें वर्तमान है, उसीको जाति कहते हैं, जैसे द्रव्यत्व, गुणत्व, घटत्व, कर्मत्व इत्यादि.

विचार करो, घटत्व अर्थात् घटगत जो एक विलक्षण धर्म है वह नित्य है कारण कि घट विनष्ट होनेपर भी घटत्वका नाश नहीं होता, घटत्व धर्म सब घटोंमें विद्यमान रहता है, कारण कि एक घट देखकर वार २ घट देखनेपर भी घट ही समझा जाता है, यह घटत्व घटमें समवाय सम्बन्धसे वर्तमान है, इससे घटत्व ही जाति हुई । सिद्धान्तमुक्तावलीमें भी जातिका लक्षण इसी प्रकार कहा है, भाषा परिच्छेदमें जाति दो श्रेणियोंमें विभक्त हुई है ।

सामान्यं द्विविधं प्रोक्तं परञ्चापरमेव च । द्रव्यादित्रिकवृत्तिस्तु सत्ता परतयोच्यते । परभिन्ना च या जातिः सैवापरतयोच्यते ॥ द्रव्यत्वादिकजातिस्तु परापरतयोच्यते । भाषापरिच्छेद. ।

१ " घटादीनां कपालादौ द्रव्येषु गुणकर्मणोः । तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्तितः " ।

समान्य अर्थात् जाति दो प्रकारकी है; एक पर जाति दूसरी अपर जाति । व्यापकजातिको परा जाति कहते हैं । जाति कहकर निर्दिष्ट द्रव्य, गुण और कर्म इन तीन पदार्थोंमें जो सत्ता है इसको भी परा जाति कहते हैं । सत्ता जाति किसी समय भी अपरा जाति नहीं होती । घटत्व पटत्व आदि जो जाति है, यह अपरा कहकर निर्दिष्ट है । यह कभी परा नहीं होती, परन्तु द्रव्यत्व प्रभृति जाति परा और अपरा दोनों जातिमें है ।

द्रव्यजाति सत्ताजातिकी अपेक्षा अव्यापक सुतरां अपरापर घटत्वजातिकी अपेक्षा व्यापक मानकर परा हुई है "यश्च केषाश्चित् कुतश्चिद्भेदं करोति तत्सामान्यविशेषो जातिः । वात्स्या० २।२।७१

वात्स्यायनका मत है कि एक पदार्थ दूसरे पदार्थसे पृथक् है इस भेदको मानकर सामान्य विशेषका नाम जाति है, जैसे गोत्व मनुष्यत्व इत्यादि, वैशेषिक दर्शनके मतसे छः भावपदार्थसे पृथक् एक पदार्थका नाम जाति है, अनुगत एकाकार बुद्धि जनक पदार्थको जाति कहते हैं । वह सामान्य और विशेष भेदसे दो प्रकारकी है, फिर सामान्य पर और अपरभेदसे दो प्रकारकी है ।

जातिशब्दका प्रयोग दर्शनादिमें कहां कहां किस रूपमें है सो वर्णन किया, अब जातिशब्दसे जो वर्ण-विभाग है उसका निरूपण करते हैं, दार्शनिकजाति उन २ पदार्थोंमें निरूपित हो चुकी । जाति कहनेसे ब्राह्मणादि वर्णोंका भी बोध होता है, भारतवर्षके सिवाय अन्य देशोंमें वहांके रहनेवाले भिन्न २ श्रेणी और भिन्न २ सम्प्रदायोंमें विभक्त होनेपर भी एक ही जाति कहलाते हैं, किन्तु भारतवर्षमें ऐसा नहीं है, यहां प्रधानतासे चार वर्णोंका निवास है, इन चार वर्णोंसे ही असंख्य श्रेणी असंख्य शाखा और असंख्य सम्प्रदायोंकी उत्पत्ति हुई है । धर्म और नीतिकी भित्ति अर्थात् आश्रयसे हिन्दूसमाजमें जातीयता संगठित है । इस लोक और परलोकसम्बन्धी सब विषयोंमें हिन्दू जाति और कर्मको मानते हैं । जातित्वके भ्रष्ट होनेपर हिन्दूका हिन्दुत्व नहीं रहता है । इस प्रकार अनिर्वार्य जातिभेद-प्रथा किसप्रकारसे प्रवृत्त हुई इसको कौन नहीं जानना चाहता ? ।

चारों वेदोंके अन्तर्गत पुरुषसूक्तमें सबसे पहले चार जातियोंकी उत्पत्तिका वर्णन देखते हैं । ऋग्वेदमें इसका वर्णन इस प्रकार है-

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्य कौ बाहू कावूरू पादा उच्येते । ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत । ऋ. मं. १० सू. ९ मं. ११ ।१२.

जिस पुरुषका विधान किया गया, उसकी कितने प्रकारकी कल्पना हुई, अर्थात् प्रजापति द्वारा जिस समय पुरुष विभक्त हुए तो उनको कितने भागोंमें विभक्त किया गया, इनके मुख बाहु ऊरू और चरण क्या कहे जाते हैं ११ (उत्तर) ब्राह्मणजाति इस पुरुषके मुखसे, क्षत्रिय जाति भुजासे, वैश्यजाति ऊरुद्वयसे और शूद्रजाति दोनों चरणोंसे उत्पन्न हुई, इस कारण ब्राह्मणादि चार जाति परमात्माके मुख, भुजा, ऊरू और चरण कहाते हैं । पुरुषसूक्तमें जगत्की उत्पत्तिका प्रकरण है, सब चराचरोंकी उत्पत्तिका इसमें प्रसंग है, इसकारण यहां कल्पना शब्दसे उत्पत्तिका ही अर्थ लिया जायगा न कि अलंकारकी कल्पनाका अर्थ । अन्यत्र भी वेदमें उत्पत्तिका ही आया है यथा "सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् " ऋ. मं. १०सू०१९१मं. ३ अर्थात् सूर्य चन्द्रमा जैसे विधाताने पूर्व कल्पमें बनाये थे वैसे ही इस कल्पमें बनाये हैं । यजुर्वेद अध्याय ३१ अथर्ववेद कं० १९ । ६ । ६ में भी पुरुषसूक्त है । ऋक्संहिताके साथ

मंत्रोंका सब अंश मिलता है, केवल अथर्वमें ऊरूके स्थानमें "मध्यं तदस्य यद्वैश्यः" इस प्रकार पाठान्तर देखा जाता है कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीय संहितामें कुछ विशेषताके साथ लिखा है।

प्रजापतिरकामयत प्रजायेयेति स मुखतस्त्रिवृतं निरमिमीत तमग्निर्देवतान्वसृजत गायत्री छन्दो रथन्तरं साम ब्राह्मणो मनुष्याणामजः पशूनां तस्मात्ते मुख्या मुखतो ह्यसृज्यन्तोरसो बाहुभ्यां पञ्चदशं निरमिमीत तमिन्द्रो देवतान्वसृज्यत त्रिष्टुप्छन्दो बृहत्साम राजन्यो मनुष्याणामविः पशूनां तस्मात्ते वीर्यावन्तो वीर्याध्यसृज्यन्त, मध्यतः सप्तदशं निरमिमीत तं विश्वेदेवा देवता अन्वसृज्यन्त जगती छन्दो वैरूपं साम वैश्यो मनुष्याणां गावः पशूनां तस्मात्त आद्या अन्नधानाध्यसृज्यन्त तस्माद्भूयांसोन्योभूयिष्ठा हि देवता अन्वसृज्यन्तपत्त एकविंशं निरमिमीत तमनुष्टुप् छन्दः अन्वसृज्यत वैराजे साम शूद्रो मनष्याणामश्वः पशूनां तस्मात्तौ भूतसंक्रमिणावश्वश्च शूद्रश्च तस्माच्छूद्रो यज्ञेनवक्लृप्तो नहि देवता अन्वसृज्यत तस्मात् पादावुपजीवतः पत्तो ह्यसृज्यताम् । तैत्तिरीय० ७ । १ । ४ । ९

अर्थात् प्रजापतिने इच्छा की कि मैं प्रगट होऊं तो उन्होंने मुखसे त्रिवृत निर्माण किया, उसके पीछे अग्नि देवता गायत्री छन्द रथन्तर साम मनुष्योंमें ब्राह्मण, पशुओंमें अज (मुखसे) उत्पन्न हुआ, मुखसे उत्पन्न होनेसे ही वे मुख्य हैं। हृदय और दोनों भुजाओंसे पंचदश स्तोम निर्माण किये, उसके पीछे इन्द्र देवता, त्रिष्टुप् छन्द, बृहत्साम, मनुष्योंमें क्षत्रिय और पशुओंमें मेष उत्पन्न हुआ, वीर्यसे उत्पन्न होनेके कारण वे वीर्यवान् हुए, मध्यसे सप्तदश स्तोम निर्माण किये। उसके पीछे विश्वेदेवा देवता, जगती छन्द, वैरूप साम, मनुष्योंमें वैश्य एवं पशुओंमें गौ उत्पन्न हुई, अन्नाधारसे उत्पन्न होनेके कारण वे अन्नवान् हुए, इनकी संख्या बहुत है, कारण कि बहुतसे देवता भी पीछे उत्पन्न हुए उनके पदसे इक्कीस स्तोम निर्मित हुए, पीछे अनुष्टुप् छन्द वैराज साम मनुष्योंमें शूद्र और पशुओंमें अश्व उत्पन्न हुआ, यह अश्व और शूद्र ही भूत संक्रमी है विशेषतः शूद्रयज्ञमें अनुपयुक्त हैं, क्योंकि इक्कीस स्तोमके पीछे और कोई देवता उत्पन्न नहीं हुआ, पादसे उत्पन्न होनेसे अश्व और शूद्र दोनों पत्त अर्थात् पादद्वारा जीवनरक्षा करनेवाले हुए।

शुक्लयजुर्वेद वाजसनेयी संहितामें इस प्रकार लिखा है:-

तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत ब्रह्मणस्पतिरधिपतिरासीत् १४ । २८ पञ्चदशभिरस्तुवतक्षत्रमसृज्यतेन्द्रोधिपतिरासीत् १४ । २९ नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्य्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपती आस्ताम् १४ । ३० ।

प्रजापतिद्वारा प्राण उदान और व्यान इन तीन द्वारा स्तव करने पर ब्राह्मण सृष्ट हुए, ब्रह्मणस्पति अधिपति हुए, हस्त और पादांगुलि दश, दोनों हाथ दोनों पाद एवं नाभिका ऊर्ध्वभाग इन पंचदश द्वारा स्तव करनेपर क्षत्रिय सृष्ट हुए, इन्द्र अधिपति हुए, इसीप्रकार दश अंगुली और शरीरके ऊपर नीचे स्थित

छिद्र रूप नौ प्राण, इन उन्नीसके द्वारा स्तव करनेपर शूद्र और वैश्य उत्पन्न हुए, अहोरात्र अधिपति हुए। अथर्ववेदके एक स्थलमें इस प्रकार लिखा है,

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो राज्ञोऽतिथिर्गृहानागच्छेत् श्रेयांसमेनमात्मनो मानयेत्तथा क्षत्राय नावृश्चते तथा राष्ट्राय नावृश्चते अतो वै ब्रह्म च क्षत्रं च चोदतिष्ठताम्। अथर्व० १५।१०।१--३।

अर्थात् जिस राजाके घरमें ऐसे विद्वान् व्रात्य अतिथिरूपसे आगमन करैं अपनी अपेक्षा उसका अधिक सन्मान करना श्रेष्ठ है ऐसा करनेसे उसके राजसन्मान वा राज्यकी कुछ हानि नहीं होती, कारण कि इससे ही ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्थानको प्राप्त हुए हैं, तैत्तिरीय ब्राह्मणमें लिखा है--

सर्वं हेदं ब्रह्मणा हैव सृष्टं ऋग्भ्यो जातं वैश्यं वर्णमाहुः। यजुर्वेदं क्षत्रियस्याहुर्योनिं सामवेदो ब्राह्मणानां प्रसूतिः। ३।१२।९।२।

यह सब संसार ब्रह्मा द्वारा सृष्ट हुआ है, कोई ऋक्से वैश्यवर्णकी उत्पत्ति यजुर्वेद क्षत्रियकी योनि अर्थात् उत्पत्तिस्थान कहते हैं, सामवेदसे ब्राह्मणवर्णकी उत्पत्ति कहते हैं। शतपथब्राह्मणमें लिखा है—

भूरिति वै प्रजापतिर्ब्रह्म अजनयत् भुवः इति क्षत्त्रम् स्वरिति विशम् एतावद्वै इदं सर्वं यावद्ब्रह्म क्षत्रं विट्। श.।२।१।४।१३

भूः यह शब्द उच्चारण करके ब्रह्माजीने ब्राह्मणको उत्पन्न किया, भुवः शब्द कहकर क्षत्रियको और स्वः शब्द कह कर वैश्यको उत्पन्न किया यह समस्त विश्वमण्डल ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यसे ही परिपूर्ण है तैत्तिरीय ब्राह्मणमें लिखा है—

दैव्यो वै वर्णो ब्राह्मणः असुर्यः शूद्रः १।२।६।७।

ब्राह्मणवर्ण दैवी सम्पत्तिवाला है, शूद्र आसुरी सम्पत्तिवाला है, इत्यादि वैदिक ग्रन्थोंसे स्पष्ट सिद्ध है कि सृष्टिकी आदिमें प्रजापति, ब्रह्मा, पुरुष आदि अनेक नामधारी परमात्मासे वेद ब्राह्मणादि चार वर्ण गयादि पशु उत्पन्न हुए हैं और यह सब प्रमाण एक रूप होनेसे इनमें कोई विरोध भी नहीं है, मनुसंहितामें भी इन्हीं मंत्रोंके अनुवादरूपमें यह श्लोक है—

लोकानान्तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः। ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रञ्च निरवर्तयत। मनु.१।३१।

लोकोंकी वृद्धिके निमित्त प्रजापतिने मुख बाहु ऊरु और चरणोंसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंको निर्माण किया, कूर्मपुराण और श्रीमद्भागवतमें भी पुरुषसूक्तके अनुसार ही सृष्टि लिखी है, इससे स्पष्ट है कि सृष्टिकी आदिमें ही परमात्मा द्वारा पृथक् गुणकर्म स्वभाव सम्पन्न चार जातियें उत्पन्न हुई हैं इससे जो लोग कहते हैं कर्म करने पर जो जैसे थे पीछे उनके कर्मानुसार वर्ण निर्धारित हुआ यह वा ठीक नहीं है पूर्व जन्मोंके कर्मानुसार वर्णकी उत्पत्ति है पश्चात् उनको कर्म सौंपे गये हैं, वर्णरचना नवीन नहा है वेदके साथ २ है और सृजनपद पडा हुआ है जिसके अर्थ उत्पन्न करनेके हैं, अब हम उन प्रमाणोंको सामने रखकर उनकी मीमांसा करैंगे जिन प्रमाणोंको लेकर कोई-कोई कहते हैं पीछे वर्णविभाग हुआ है; ब्रह्माण्डपुराणमेंलिखा है—

ब्रह्मा स्वयम्भूर्भगवान् दृष्ट्वा सिद्धिन्तु कर्मजाम् । ततःप्रभृति चौष-
ध्यः कृष्टपच्यास्तु जज्ञिरे ॥ १ ॥ संसिद्धायां तु वार्तायां ततस्तासां
स्वयम्भुवः । मर्यादाः स्थापयामास यथारब्धाः परस्परम् ॥ २ ॥
ये वै परिगृहीतारस्तासामासन्बलीयसः । इतरेषां कृतत्राणान् स्थापया-
मास क्षत्रियान् ॥ ३ ॥ उपतिष्ठन्ति ये तान्वै यावन्तो निर्भया-
स्तथा । सत्यं ब्रह्म यथाभूतं ब्रुवन्तो ब्राह्मणाश्च ते ॥ ४ ॥ ये चा-
न्येऽल्पबलास्तेषां वैश्यसंकर्मसंस्थिताः। कीनाशा नाशयन्ति स्म पृथि-
व्यां प्रागतन्द्रिताः ॥५॥ वैश्यानेव तु तानाहुः कीनाशान् वृत्तिसा-
धकान् । शोचन्तश्च द्रवन्तश्च परिचर्यासु ये रताः ॥ ६ ॥ निस्तेज-
सोऽल्पवीर्याश्च शूद्रास्तानब्रवीत्तु सः । तेषां कर्माणि धर्मांश्च ब्रह्मा
तु व्यदधात् प्रभुः ॥ ७ ॥ संस्थितौ प्राकृतायान्तु चातुर्वर्णस्य सर्व-
शः ॥ ८ ॥ अ० ७ । १५१-१५८ ।

ब्रह्मा स्वयम्भू भगवान्ने कर्मसे उत्पन्न होनेवाली सिद्धिको देखकर उसी फल मूल कृष्टपच्या-रूपसे सृष्टि की, अर्थात् जब ओषधी अन्नकी सृष्टि कर चुके तब प्रजागणकी वृत्तिका उपाय स्थिर होनेपर स्वयम्भूने उनमें मर्यादा स्थापन की, उस सृजन की हुई प्रजा समूहमें जो परिग्रहीता और प्रजाकी रक्षाकर्ता थे उनको क्षत्रिय और जो क्षत्रियोंके आश्रय होकर निर्भय चित्तसे सब भूतोंमें एकमात्र ब्रह्म विद्यमान है इस चिन्तामें दिन व्यतीत करते थे उनको ब्राह्मण, जो उनमें अल्प बलवाले कृषिकार्य द्वारा जीविका निर्वाह करते थे उनको वैश्य और जो दुःख शोकके परा-यण तेजहीन अल्पवीर्य एवं अन्य जातियोंकी सेवामें नियुक्त थे उनको शूद्र कहकर निर्देश किया, इस प्रकार ब्रह्माजीने उन चारों वर्णोंके कर्म धर्म और मर्यादाओंकी स्थापना की इन प्रमाणोंसे यह अर्थ नहीं निकलता कि पूर्वकालमें एक वर्ण था पीछे उनकी जातिमें विभाग किया गया, परिग्रहीता आदि लक्षण-वाले जो लोग थे वे ब्राह्मण कहे गये, जब एक ही प्रकारकी सृष्टि हुई तो उन प्रजापतिसे उत्पन्न होने-वालोंमें लक्षणोंके भेद क्यों होगये, यदि एक ही स्थानसे प्रगट हुए तो सबका एक लक्षण पाया जाता, पर ऐसा नहीं हुआ उन उत्पन्न हुए पुरुषोंमें चार प्रकारके लक्षणवाले पुरुष थे और वह लक्षण उनमें पूर्वकर्मानुसार थे, इसी कारण 'दृष्ट्वा सिद्धिं तु कर्मजाम्' इसमें यह पद पढा है, तब यह सिद्ध है जो मनुष्य रचना हुई वह प्रजापतिके मुख भुजा ऊरु और चरणसे हुई, उनमें मुखसे उत्पन्न हुए मनुष्य सब भूतोंमें ब्रह्म विद्यमान है इत्यादि चिन्ताशील थे, उनको ब्राह्मण संज्ञासे संयुक्त किया, भुजाओंसे उत्पन्न हुए जो रक्षणादि लक्षणसम्पन्न थे, उनकी क्षत्रिय संज्ञा की, इत्यादि । इन वचनोंसे चार जाति जन्मसे ही सिद्ध हैं न कि पीछे वर्णविभाग हुआ, विष्णुपुराण मत्स्यपुराण और मार्कण्डेयपुराणमें भी इसीप्रकार है हरिवंशमें लिखा है-

व्यतिरिक्तेन्द्रियो विष्णुर्योगात्मा ब्रह्मसंभवः । दक्षः प्रजापतिर्भूत्वा
सृजते विपुलाः प्रजाः ॥ १ ॥ अक्षराद्ब्राह्मणाः सौम्याः क्षरात्क्षत्रिय-

बान्धवाः। वैश्या विकारतश्चैव शूद्रा धूमविकारतः ॥ २ ॥ श्वेतलोहितकैर्वर्णैः पीतैर्नीलैश्च ब्राह्मणाः। अभिनिर्वर्तिता वर्णाश्चिन्त्यमानेन विष्णुना ॥ ३ ॥ ततो वर्णत्वमापन्नाः प्रजा लोकचतुर्विधाः। ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैव महीपते ॥ ४ ॥ ततो निर्वाणसम्भूताः शूद्राः कर्मविवर्जिताः। तस्मान्नार्हन्ति संस्कारं न ह्यत्र ब्रह्म विद्यते ॥ ५ ॥

वही दक्षप्रजापति होकर अनेक प्रकारकी प्रजा उत्पन्न करता है ॥ १ ॥ अक्षररूपसे सौम्यगुणविशिष्ट ब्राह्मण, क्षररूपसे क्षत्रिय, विकाररूपसे वैश्य और धूमविकारसे शूद्र हुए ॥ २ ॥ इनके आन्तारिक रंग श्वेत लाल पीत और कृष्ण क्रमसे जानने। जब भगवान् विष्णुकी चिंतनासे इस प्रकार वर्ण निर्गत हुए यह लोकमें वर्णत्वको प्राप्त होकर चार प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामसे विख्यात हुए और जो कि धूमसे प्रगट हैं इस कारण शूद्र कर्मोंसे रहित हैं।

इस कारण इनके संस्कार नहीं होसकते, कारण कि इनमें वेदकी स्थिति नहीं है। इन प्रमाणोंसे भी यही विदित होता है कि चारों वर्णोंकी रचना भिन्न २ रूपसे है और उनमें अपने २ वह कारण विद्यमान हैं और उन कारणोंसे ब्राह्मणोंका श्वेत वर्ण अर्थात् मुखसे उत्पन्न होनेके कारण विशुद्धात्मा होनेसे अन्तरमें श्वेतता, क्षत्रियोंमें रजोगुण प्रधान होनेसे अन्तरमें लोहितपना, वैश्योंमें रज तम मिश्रित होनेसे अन्तरमें पीतपना, और शूद्रमें तम प्रधान होनेसे अन्तरमें नीलिमा विद्यमान है, इसकारण उसमें संस्कारका अवकाश नहीं है, यह ऊपरके रंगोंका वर्णन नहीं है, किन्तु आत्माके संस्कारका भीतरी वर्णन है। सत रज तम और रज तमके रूप हैं।

महाभारतके शान्तिपर्वमें इसप्रकार लिखा है-

ततः कृष्णो महाभागः पुनरेव युधिष्ठिर। ब्राह्मणानां शतं श्रेष्ठं मुखादेवासृजत् प्रभुः ॥ १ ॥ बाहुभ्यां क्षत्रियशतं वैश्यानामूरुतः शतम्। पद्भ्यां शूद्रशतञ्चैव केशवो भरतर्षभ ॥ २ ॥

हे युधिष्ठिर! फिर परमात्मा कृष्णने मुखसे सौ श्रेष्ठ ब्राह्मण, बाहुओंसे सौ क्षत्रिय और ऊरुओंसे सौ वैश्य और चरणोंसे सौ शूद्रोंकी सृष्टि की, इन सब प्रमाणोंसे यह स्पष्ट विदित होता है कि संहिता, स्मृति, इतिहास, पुराण सबमें सृष्टिके आदिकालसे ही चारवर्णोंकी उत्पत्ति हुई चली आती है और जब साक्षात् वेद ही प्रत्येक सृष्टिके आरम्भमें चारों वर्णोंकी सृष्टि कथन कर रहा है, तब फिर दूसरे प्रमाणोंकी आवश्यकता क्या है।

कुछ लोगोंकी ऐसी भी शंकाएँ हैं कि क्षत्रियोंमें कितने ही ब्राह्मण होगये हैं तथा कितने एक क्षत्रियोंने चारों वर्णोंकी प्रवृत्ति की ही है, यह बात उन लोगोंकी इस बातको तो सिद्ध नहीं कर सकती कि आदिसृष्टिमें चार वर्ण नहीं थे, प्रत्युत यही निश्चय होता है कि चार वर्ण सनातनके हैं, नहीं तो क्षत्रियसे ब्राह्मण होगये, यह कहना बन ही नहीं सकता, पहले क्षत्रिय थे तो पीछे ब्राह्मण होगये, इससे भी ब्राह्मण क्षत्रिय जाति पूर्वकालीन सिद्ध है, ब्राह्मण होजानेका यह अर्थ नहीं है कि वे ब्राह्मण जातिको प्राप्त

होगये किन्तु यह अर्थ है कि वे ब्रह्मभावको प्राप्त होगये क्षत्रियोंद्वारा वर्णोंकी प्रवृत्तिका अर्थ यही है कि राजाकी व्यवस्था ठीक होनेसे चारों वर्णोंकी निज २ धर्ममें प्रवृत्ति होती है, यही उनका वर्णोंका प्रवृत्त करना है, ऋषिसर्ग इनसे विलक्षण होता है उनकी सामर्थ्य विलक्षण होजाती है, वे गुरुआदिके समीप रहनेके कारण उन्हींके वंशसे परिचित होजाते हैं, उदाहरणके निमित्त कुछ प्रमाण लिखते हैं। मनुके दौहित्र पुरन्वरा हुए, इनके आयु, आयुके पांच पुत्रोंमें एकका नाम क्षत्रवृद्ध था, क्षत्रवृद्धके पुत्र शुनहोत्र, शुनहोत्रके तीन पुत्र हुए, काश, लेश और गृत्समद । इनके शौनक हुए, जिन्होंने चारों वर्णोंकी प्रवृत्ति यथायोग्य की ।

विष्णुपुराण ४ । ८ । १ में लिखा है ।

गृत्समदस्य शौनकश्चातुर्वर्ण्यप्रवर्तयिताभूत् ।

हरिवंशके उन्तीसवें अध्याय पूर्व प्रथममें लिखा है-

पुत्रो गृत्समदस्यापि शुनको यस्य शौनकाः । ब्राह्मणाः क्षत्रियाश्चैव वैश्याः शूद्रास्तथैव च ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

गृत्समदके पुत्र शुनक हुए, इनसे शौनक हुए जिन्होंने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र चारों वर्णोंकी विशेष व्यवस्था की, सायनाचार्य गृत्समदको ऋग्वेदका दूसरा मण्डल देखनेवाला कहते हैं वह लिखते हैं-

स च पूर्वमाङ्गिरसकुले शुनहोत्रस्य पुत्रः सन् यज्ञकालेऽसुरैर्गृहीतः इन्द्रेण मोचितः पश्चात्तद्वचनेनैव भृगुकुले शनकपुत्रो गृत्समदनामाऽभूत, तथाचानुक्रमणिका "यः आंगिरसशौनहोत्रो भूत्वा भार्गवः शौनकोऽभवत् स गृत्समदो द्वितीयमण्डलमपश्यत् । गृत्समदः शौनको भृगुतां गतः शौनहोत्रो प्रकृत्या तु यः आंगिरस उच्यते ।

अर्थात् दूसरा मण्डल गृत्समदका देखा है यह पहले आङ्गिरसवंशी शुनहोत्रके पुत्र थे यज्ञकालमें असुर इनको पकडकर लेगये पीछे इन्द्रने इनको छुडाया, पीछे उसी देवताके कथनानुसार वह भृगुकुलमें प्राप्त हुए और शुनक पुत्र गृत्समदनाम हुआ, यह प्रकृत आङ्गिरसकुलमें और शुनहोत्रके पुत्र होनेपर इन्द्रके वचनसे भार्गव और शुनक-पुत्र हुए थे । हरिवंशके ३२ अध्यायमें लिखा है-

वत्सस्य वत्सभूमिस्तु भार्गभूमिस्तु भार्गवात् । एते त्वङ्गिरसः पुत्रा जाता वंशेऽथ भार्गवे ॥ ३९ ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या शूद्राश्च भरतर्षभ ॥ ४० ॥

अर्थात् वत्ससे वत्सभूमि, भार्गवसे भार्गभूमि हुए, भार्गवके वंशमें यह आङ्गिरसके पुत्र चार वर्णोंको प्राप्त होगये अर्थात् चार वर्णोके भाव सम्पन्न हुए, हरिवंशके ३२ अध्यायमें लिखा है-

काशकश्च महासत्त्वस्तथा गृत्समतिर्नृप । तथा गृत्समतेः पुत्रा ब्राह्मणाः क्षत्रिया विशः ॥

अर्थात् सुहोत्रके दो पुत्र हुए काशक और गृत्समति, गृत्समतिके पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य भावसम्पन्न हुए । ब्रह्माण्डपुराणमें लिखा है ।

वेणुहोत्रसुतश्चापि गार्ग्यो नाम प्रजेश्वरः। गार्ग्यस्य गर्गभूमिस्तु वत्सो वत्सस्य धीमतः॥ब्राह्मणाः क्षत्रियाश्चैव तयोः पुत्रास्तु धार्मिकाः।

वेणुहोत्रके पुत्र राजा गार्ग्य हुए, गार्ग्यसे गर्गभूमि और वत्स हुए इन दोनोंके पुत्र सुधार्मिक ब्राह्मण क्षत्रिय हुए इन प्रमाणोंसे भी यह स्पष्ट है कि चारों वर्ण पूर्वकालके हैं, इसमें सन्देह नहीं कि अति प्राचीन-कालमें क्षत्रिय भी इतने ब्रह्मभाव सम्पन्न थे कि ब्राह्मणोंने भी उनके पास जाकर अध्यात्मविद्याकी शिक्षा ली थी और उनके पुत्रोंमें भी कभी कभी इतना ब्रह्मभाव समा गया था कि वे राजकाज छोडकर सर्वथा अपना जीवन ईश्वरचिन्तनमें व्यतीत करदेते थे, इससे उनको ब्राह्मणरूपसे पुकारागया है, यह अर्थ नहीं है कि वे ब्राह्मण जाति होगये, दूसरे कभी २ क्षत्रियोंके पाससे चारों वर्णोंने शिक्षा ली है किसीसे तीन वर्णोंने किसीसे दो वर्णोंने इससे वे उन राजोंके पुत्ररूपसे कहेगये हैं, जो क्षत्रिय सर्वथा ब्रह्मभावको प्राप्त होगये हैं तथा जो महातपस्वी होगये हैं जिन्होंने विवाहादि गृहस्थक्रिया नहीं की है, उनमें कितनोंहीके गोत्र,प्रवर चले हैं और उनकी शिक्षा माननेवालोंने उन उन गोत्रोंको स्वीकार कर लिया है,यह ऋषिक्षत्रोपेत द्विजाति कहाते हैं, लिंगपुराणमें लिखा है—

हारितो युवनाश्वस्य हारितायत आत्मजाः। एते ह्यांगिरसः पक्षे क्षत्रोपेता द्विजातयः॥

अर्थात् युवनाश्वके पुत्र हरित, उनके हारीत पुत्र हुए आंगिरस पक्षमें यह क्षत्रोपेत द्विजाति कहाते हैं विष्णुपुराणकी टीकामें ४।३।५। में हारितके विषयमें लिखा है—

"यतो हारिताद्धारिता आंगिरसो द्विजा हारितगोत्रप्रवराः"

अर्थात् हारितसे आङ्गिरस हारीतगण हुए यह हरित गोत्रके प्रवर हैं। श्रीमद्भागवतमें लिखा है।

राभस्य रभसः पुत्रो गम्भीरश्चाक्रियस्तथा। तस्य क्षेत्रे ब्रह्म जज्ञे शृणु वंशमनेनसः॥ (९।१७।१०।)

पुरूरवाके पुत्र आयु, उनके राभ, उनके रभस, उसके गभीर और अक्रिय उत्पन्न हुए। उसके यहां ब्रह्मवित् (ब्राह्मण) हुए। राजा पुरुसे आगे बारहवें पुरुषमें महाराज अप्रतिरथ उत्पन्न हुए,उनके विषयमें विष्णुपुराणमें लिखा है—

अप्रतिरथः कण्वः तस्यापि मेधातिथिः। यतः काण्वायनाद्विजा बभूवुः ४। १९। २।

अर्थात् अप्रतिरथके पुत्र कण्व, कण्वके मेधातिथि, मेधातिथिसे काण्वायन ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति हुई। श्रीमद्भागवतमें इसी विषयमें लिखा है—

सुमतिर्ध्रुवोऽप्रतिरथः कण्वोऽप्रतिरथात्मजः। तस्य मेधातिथिस्तस्मात्प्रस्कण्वाद्या द्विजातयः॥ पुत्रोऽभूत्सुमते रैभ्यो दुष्यन्तस्तत्सुतो मतः। भा.स्क. ९ अ. २० श्लो०. ७।

रंतिभारके सुमति, ध्रुव और अप्रतिरथ हुए। अप्रतिरथका पुत्र कण्व, कण्वके मेधातिथि, उनके प्रस्क-

ण्वादिक ब्राह्मण हुए । सुमतिका पुत्र रैभ्य, उसका दुष्यन्त हुआ । श्रीमद्भागवतके कथनसे अजमीढके वंशमें प्रियमेधादिक ब्राह्मण हुए ।

अजमीढस्य वंश्याः स्युः प्रियमेधादयो द्विजाः ॥ ९ । २१ । २१ ।

विष्णुभागवत और मत्स्यपुराणके मतसे क्षत्रियराज अजमीढके सप्तम पुरुषमें मुद्गलका जन्म हुआ उससे मौद्गल्यनाम क्षत्रोपेत ब्राह्मण हुए; यथाहि-

मुद्गलस्यापि मौद्गल्यक्षत्रोपेता द्विजातयः । एते ह्याङ्गिरसः पक्षे संस्थिताः कण्वमुद्गलाः ॥ मत्स्य.

मत्स्यपुराणमें दूसरे स्थानमें भी लिखा है-

कात्यानान्तु वरा ह्येते त्रयः प्रोक्ता महर्षयः । गर्गाः संकृतयः काव्या क्षत्रोपेता द्विजातयः ॥

गर्ग, संकृति और काव्य, कविवंशी यह तीन महर्षि क्षत्रोपेत ब्राह्मण कहे जाते हैं । भागवत, विष्णु, मत्स्य और ब्रह्माण्डपुराणमें लिखा है-

गर्गाच्छिनिस्ततो गार्ग्यः क्षत्राद्ब्रह्म ह्यवर्तत ॥ भा. ९ । २१ । १९ ।

गर्गसे शिनि, शिनिसे गार्ग्य उत्पन्न हुए । यह गार्ग्य गण क्षत्रियसे ब्रह्म (ब्राह्मणत्व) में परिवर्तित हो गये । पुराणोंमें लिखा है कि गर्गके भ्राता महावीर्य, उनका पुत्र उरुक्षय हुआ, इस उरुक्षयके तीन पुत्र हुए-त्रय्यरुण, पुष्करी और कपि । यह तीनों क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मण हुए ।

उरुक्षयसुता ह्येते सर्वे ब्राह्मणतां गताः । (मत्स्यपुराण)

श्रीमद्भागवतके स्कन्द ९ । २१ । १९ की टीकामें श्रीधरस्वामीने इस प्रकार लिखा है । 'येऽत्र क्षत्रवंशे ब्राह्मणगतिं ब्राह्मणरूपतां गतास्ते' अर्थात् ब्राह्मण होनेका भाव यह है कि वे ब्राह्मणताको प्राप्त हुए. तप भजन आदि करनेसे ब्राह्मण सदृश हो गये न कि उनकी जाति बदल गई और श्रीधरस्वामीका यह मत नहीं कि वे ब्राह्मणजाति होगये । इन श्लोकोंमेंसे यह ध्वनि बराबर निकलती है कि उनके ऐसे आचरण थे जिनसे वे ब्राह्मणसदृश मानेगये विवाहादि संस्कार ब्राह्मणोंके साथ उनका नहीं था इस समय जो विश्वामित्र कौशिक कण्व आङ्गिरस मौद्गल्य वात्स्य काण्वायन शुनक हारित प्रभृति गोत्र देखेजाते हैं वे क्षत्रोपेत गोत्र हैं । यह महानुभाव अपनी तपश्चर्यासे ऋषिपदको प्राप्त हुए और इनके शिष्यरूपमें गोत्रोंमें दूसरे वर्णोंने स्वीकारता प्राप्त की, अर्थात् उन उन गोत्रवालोंके पूर्व पुरुष जातिसे क्षत्रिय थे कोई २ क्षत्रिय अपने कर्मोंद्वारा वैश्यभावको प्राप्त हुए हैं । भागवत ९ । २ । २३में लिखा है-

नाभागो दिष्टपुत्रोऽन्यः कर्मणा वैश्यतां गतः ।

कि नेदिष्टका पुत्र नाभाग हुआ, जो कर्मसे वैश्यताको प्राप्त हुआ । मार्कण्डेय पुराणका मत है कि नाभाग वैश्यकन्याके साथ विवाह करनेके कारण वैश्यताको प्राप्त हुआ कहीं २ वैश्यगण भी तपोवृद्धिके कारण ब्राह्मणोंके सदृश आचरणवाले कहेगये हैं । हरिवंश पुराण अ० ११ में लिखा है-

नाभागारिष्टपुत्रौ द्वौ वैश्यौ ब्राह्मणतां गतौ ११।९

नाभागारिष्टके दो पुत्र वैश्य ब्राह्मण भावको प्राप्त हुए । यह सम्पूर्ण प्रमाण कर्मप्रधानतापरक हैं । जाति न बदलनेपर भी कर्मसे उन्नत वा अवनत जातिकी समानताको प्राप्त हुए कोई कोई वैश्यजातिके पुरुष तपश्च-

र्य्योमें इतने संलग्न हुए हैं कि ध्यानमें उनको वेदमन्त्रोंका दर्शन हुआ है और आजतक मन्त्रद्रष्टा कहकर विख्यात हैं। मत्स्यपुराण-अ० १३२ में लिखा है-

भलन्दश्चैव वन्द्यश्च संकीर्तिश्चैव ते त्रयः। ते वै मन्त्रकृतो ज्ञेया वैश्यानाम्प्रवराः सदा। इत्येकनवतिः प्रोक्ता मन्त्रा यैश्च बहिष्कृताः॥

अर्थात् भलन्द, वन्द्य और संकृति यह तीन वैश्य भी वेदमन्त्रोंके द्रष्टा हैं इसप्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्योंमें ऋषित्वको प्राप्त हुए ९१ जनोंने वेदोंके मंत्र देखे हैं और वेदमन्त्रोंके द्रष्टा होने तथा गोत्र-प्रवर्तक होनेसे आर्षसर्गमें यह ब्रह्मभाव सम्पन्न मानेगये है, जाति नहीं बदली है नहीं तो मन्त्रोंके साथमें वैश्य ऋषि इस प्रकार नहीं लिखा जाता। महाभारत अनुशासन पर्व १४३ में लिखा है कि यदि कोई वर्ण अपने कर्म त्याग दूसरी जातिके कर्म करता है तो परजन्ममें उसी योनिमें प्राप्त होता है।

ब्राह्मण्यं देवि दुष्प्राप्यं निसर्गाद्ब्राह्मणः शुभे। क्षत्रियो वैश्यशूद्रौ वा निसर्गादिति मे मतिः॥ ६॥ कर्मणा दुष्कृतेनेह स्थानाद्भ्रश्यति वै द्विजः। ज्येष्ठवर्णमनुप्राप्य तस्माद्रक्षेत वै द्विजः॥ ७॥ स्थितो ब्राह्मणधर्मेण ब्राह्मण्यमुपजीवति। क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा ब्रह्म-भूयं स गच्छति॥ ८॥ यस्तु ब्रह्मत्वमुत्सृज्य क्षात्रं धर्मं निषेवते। ब्राह्मण्यात्स परिभ्रष्टः क्षत्रयोनौ प्रजायते॥ ९॥ वैश्यकर्म च यो विप्रो लोभमोहव्यपाश्रयः। ब्राह्मण्यं दुर्लभं प्राप्य करोत्यल्पमतिः सदा॥ १०॥ स द्विजो वैश्यतामेति वैश्यो वा शूद्रतामियात्। स्वधर्मात्प्रच्युतो विप्रस्ततः शूद्रत्वमाप्नुते॥ ११॥ एभिस्तु कर्म-भिर्देवि शुभैराचरितैस्तथा। शूद्रो ब्राह्मणतां याति वैश्यः क्षत्रि-यतां व्रजेत्॥ २६॥

महादेवजी पार्वतीसे कहते हैं सहजमें ब्राह्मणत्व प्राप्त नहीं होता, मेरे मतसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह प्रकृति अर्थात् स्वभावसिद्ध हैं (यह जन्मसे सिद्ध हैं यह प्रयोजन है) दुष्कर्म करनेसे ब्राह्मण अपने धर्मसे पतित होजाता है, इसलिये ब्राह्मण्य प्राप्त करके यत्नपूर्वक उसकी रक्षा करनी चाहिये, जो क्षत्रिय वा वैश्य ब्राह्मणधर्म अवलम्बन करके जीविका निर्वाह करते हैं वे अपने परिश्रमसे परजन्ममें ब्राह्मणत्वको प्राप्त करलेते हैं और जो ब्राह्मण ब्राह्मणत्वको प्राप्त करके क्षत्रियधर्मसे जीविका निर्वाह करते हैं वे ब्राह्म-णत्वसे भ्रष्ट होकर (क्षत्रयोनौ) क्षत्रिययोनिमें जन्म ग्रहण करते हैं और जो बुद्धिहीन ब्राह्मण लोभ मोहके कारण वैश्यकर्म ग्रहण करता है वह वैश्यत्वको प्राप्त हो परजन्ममें वैश्य ही होजाता है, इसीप्रकार वैश्य शूद्र होजाता है, ब्राह्मण अपने धर्मसे भ्रष्ट होता होता शूद्रत्वको प्राप्त होता है और शूद्र भी श्रेष्ठ कर्म करते २ परजन्ममें ब्राह्मणत्वको प्राप्त होजाता है।

इन प्रमाणोंका स्पष्ट उद्देश्य यही है कि ब्राह्मणको ब्राह्मणताकी रक्षा करनी चाहिये, ब्राह्मणको ब्रह्मण-शरीर पाकर अपने निर्दिष्ट कर्मोंका ही अनुष्ठान करना चाहिये, बहुतसे लोग महाभारतके कुछ श्लोक

उदाहरणमें देकर कहते हैं कि पहले सब एक ही वर्ण थे पीछे कर्मानुसार विभाग हुआ है हम उनको यहां लिखकर उनपर विचार करेंगे-वनपर्व अ० १८० ।

सर्प उवाच-

ब्राह्मणः को भवेद्राजन् वेद्यं किञ्च युधिष्ठिर । ब्रवीह्यतिमतिं त्वां हि वाक्यैरनुमिमीमहे ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

सत्यं दानं क्षमा शीलमानृशंस्यं तपो घृणा । दृश्यन्ते यत्र नागेन्द्र स ब्राह्मण इति स्मृतः ॥ वेद्यं सर्प परब्रह्म निर्दुःखमसुखञ्च यत् । यत्र गत्वा न शोचन्ति भवतः किं विवक्षितम् ॥

सर्प उवाच ।

चातुर्वर्ण्यं प्रमाणञ्च सत्यञ्च ब्रह्म चैव हि । शूद्रेष्वपि च सत्यञ्च दानमक्रोध एव च ॥ आनृशंस्यमहिंसा च घृणा चैव युधिष्ठिर ॥ वेद्यं यच्चात्र निर्दुःखमसुखं च नराधिप ॥ ताभ्यां हीनं पदञ्चा-न्यन्न तदस्तीति लक्षये ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

शूद्रे तु यद्भवेल्लक्ष्म द्विजे तच्च न विद्यते । न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः ॥ यत्रैतल्लक्ष्यते सर्प वृत्त स ब्राह्मणः स्मृतः। यत्रैतन्न भवेत्सर्प तं शूद्रमिति निर्दिशेत् ॥ यत्पुनर्भवता प्रोक्तं न वेद्यं विद्यतीति च । ताभ्यां हीनमतोऽन्यत्र पदं नास्तीति चेदपि ॥ एवमेतन्मतं सर्प ताभ्यां हीनं न विद्यते । यथा शीतोष्णयोर्मध्ये भवेन्नोष्णं न शीतता ॥ एवं वै सुखदुःखाभ्यां हीनं नास्ति पदं क्वचित् । एषा मम मतिः सर्प यथा वा गम्यते भवान् ॥

सर्प उवाच ।

यदि ते वृत्ततो राजन् ब्राह्मणः प्रसमीक्षितः । वृथा जातिस्तदायुष्मन् कृतिर्यावन्न विद्यते ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

जातिरत्र महासर्प मनुष्यत्वे महामते । सङ्करात्सर्ववर्णानां दुष्परी-क्ष्येति मे मतिः॥ सर्वे सर्वास्वपत्यानि जनयन्ति सदा नराः । वाङ्-मैथुनमथो जन्म मरणञ्च समं नृणाम् ॥ तावच्छूद्र समो ह्येष यावद्वेदे न जायते ॥

सर्पने कहा हे युधिष्ठिर! तुम्हारी वार्तोसे मुझे भलीभांति प्रगट होगया कि तुम अतिबुद्धिमान् हो' मुझे यह वताओ कि ब्राह्मण कौन है और जाननेयोग्य क्या बात है ? युधिष्ठिर बोले—हे नागराज ! स्मृतिशास्त्रके मतसे सत्य, दान, क्षमा, शील, निर्दोषता, तप और घृणा, जिसमें यह लक्षण देखेजाँय वही ब्राह्मण कहा जा सकता है.सुखदुःख रहित ब्रह्म ही जाननेयोग्य है, जिसके प्राप्त होनेसे शोकादि विनष्ट होजाता है, आप और क्या पूछते हैं ? सर्पने कहा, चारों वर्णोंके विषयमें वेद ही एकमात्र सत्य और प्रमाण माना जाता है, शूद्रमें भी सत्य, दान, अक्रोध,आनृशंस्य,अहिंसा और घृणा देखी जाती है, और जहांतक विचार किया जाय, जिसमें सुख दुःख नहीं है, इस द्विपद वार्जित ब्रह्मके सिवाय और कुछ नहीं है, युधिष्ठिर बोले—जो ब्राह्मणके लक्षण हैं वह किसी शूद्रमें दिखाई दें और ब्राह्मणमें शूद्रके लक्षण दिखाई दें तो वह शूद्र शूद्र नहीं और ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं है, जिसमें वैदिक आचार आदि देखेजांय वही ब्राह्मण है और जिसमें वह लक्षण नहीं वह शूद्र है, आपने जो कहा कि सुखःदुखहीन कुछ जानने योग्य नहीं है, वह भी ठीक है, जिस प्रकार शीत और उष्णमें उष्ण और शीत नहीं होसकता है, उसी प्रकार कोई पद ही सुख दुःख हीन नहीं होसकता है,मेरी भी यही सम्मति है,आप क्यां पूछते.हैं ?

सर्पने कहा राजन् ! यदि वृत्तिके कारण ही ब्राह्मण कहागया तो वह कृति न होनेपर भी उसकी जाति वृथा है। युधिष्ठिर बोले--हे महासर्प ! इस मनुष्यजन्ममें सब वर्णोंका संकरत्वहेतु होनेसे जातिनिर्णय करना महाकठिन काम है, सब वर्णके लोग ही सब वर्णोकी स्त्रीमें सन्तान उत्पन्न करते हैं. सबका भक्ष्य सबका मैथुन, सबका जन्म, मृत्यु एक प्रकार हैं, वास्तविकरूपसे जबतक वेदाधिकार मनुष्यको उत्पन्न न हो तबतक वह शूद्र ही रहता है *इन वाक्योंसे यह बात सिद्ध न समझनी कि युधिष्ठिर महाराज जन्मसे जाति नहीं मानते वह जन्मसे ही जाति मानते हैं कर्मकी प्रधानता जो कही है वह कर्मकी प्रशंसामात्र है, यदि उनको यह बात स्वीकार होती तो फिर, 'जातिरत्र महासर्प मनुष्यत्वे महामते' यह वचन क्यों कहते, हां यह बात उनको स्वीकार है कि कर्मके विना स्वयं जातिका निर्णय नहीं होता, इसलिये उनका अभिप्राय ब्राह्मणादिजातियोंको कर्ममें सदा सावधान होनेसे है इस कारण उन्होंने कहा है एक दूसरे एक दूसरेसे मिल जांयगे, स्वयं वर्ण विवेक न रहैगा, इसकारण वे दुष्परीक्ष्य हो जांयगे, इससे उनके लिये कर्मकी प्रधानताका निरूपण किया है, अभी आगेभी हम और समाधान करेंगे, एक दो प्रमाण पूर्वपक्षरूपसे और लिखगे। महाभारत शान्तिपर्व १८८। १८९ अध्याय।

असृजद्ब्राह्मणानेवं पूर्वं ब्रह्मा प्रजापतीन्। आत्मतेजोऽभिनिर्वृत्तान् भास्कराग्निसमप्रभान् ॥ ततः सत्यञ्च धर्मञ्च तपो ब्रह्म च शाश्वतम्। आचारञ्चैव(धर्मञ्च) शौचञ्च स्वर्गाय विदधे प्रभुः॥ देवदानवगन्धर्वा दैत्यासुरमहोरगाः। यक्षराक्षसनागाश्च पिशाचा मनुजास्तथा॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्च द्विजसत्तम। ये चान्ये भूतसत्त्वानां वर्णास्तांश्चापि निर्ममे ॥ ब्राह्मणानां सितो वर्णः क्षत्रियाणाञ्च लोहितः। वैश्यानां पीतको वर्णः शूद्राणामसितस्तथा ॥

---

* नीलकण्ठमें इसपर अपनामत इसप्रकार कथन किया है 'इतरस्तु ब्राह्मणपदेन ब्रह्मविदं विवक्षित्वा शूद्रादेरपि ब्राह्मणत्वमभ्युपगम्य परिहरति शूद्रे त्विति, शूद्रलक्ष्यकामादिकं न ब्राह्मणेऽस्ति न ब्राह्मणलक्ष्यकामादिकं शूद्रेऽस्ति इत्यर्थः। शूद्रोऽपि कामाद्युपेतो ब्राह्मणः ब्राह्मणोऽपि कामाद्युपेतः शूद्र इत्यर्थः।

भरद्वाज उवाच ।

चातुर्वर्णस्य वर्णेन यदि वर्णो विभिद्यते। सर्वेषां खलु वर्णानां दृश्यते वर्णसंकरः ॥ कामः क्रोधो भयं लोभः शोकश्चिन्ताक्षुधा श्रमः । सर्वेषां नः प्रभवति कस्माद्वर्णो विभिद्यते ॥
जङ्गमानामसंख्येयाः स्थावराणाञ्च जातयः । तेषां विविधवर्णानां कुतो वर्णविनिश्चयः ॥

भृगुरुवाच ।

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत् । ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मभिर्वर्णतां गतम् ॥ कामभोगप्रियास्तीक्ष्णाः क्रोधनाः प्रियसाहसाः । त्यक्तस्वधर्मा रक्ताङ्गास्ते द्विजाः क्षत्रतां गताः ॥ गोभ्यो वृत्तिं समास्थाय पीताः कृष्युपजीविनः । स्वधर्मं नानुतिष्ठन्ति ते द्विजा वैश्यतां गताः ॥ हिंसानृतप्रिया लुब्धाः सर्वकर्मोपजीविनः ॥ कृष्णाः शौचपरिभ्रष्टास्ते द्विजाः शूद्रतां गताः ॥ इत्येतैः कर्मभिर्व्यस्ता द्विजाः वर्णान्तरं गताः । धर्मो यज्ञक्रिया तेषां नित्यं न प्रतिषिध्यते ॥ इत्येते चतुरो वर्णा येषां ब्राह्मी सरस्वती । विहिता ब्रह्मणा पूर्वं लोभात्त्वज्ञानतां गताः ॥ ब्राह्मणा ब्रह्मतन्त्रस्थास्तपस्तेषां न नश्यति । ब्रह्म धारयतां नित्यं व्रतानि नियमांस्तथा ॥ ब्रह्म चैव परं सृष्टं ये न जानन्ति तेऽद्विजाः । तेषां बहुविधास्त्वन्यास्तत्र तत्र हि जातयः ॥ पिशाचा राक्षसाः प्रेता विविधा म्लेच्छजातयः । प्रनष्टज्ञानविज्ञानाः स्वच्छन्दाचारचेष्टिताः ॥

भरद्वाज उवाच ।

ब्राह्मणः केन भवति क्षत्रियो वा द्विजोत्तम । वैश्यः शूद्रश्च विप्रर्षे तद्ब्रूहि वदतांवर ॥

भृगुरुवाच ।

जातकर्मादिभिर्यस्तु संस्कारैः संस्कृतः शुचिः । वेदाध्ययनसम्पन्नः षट्सु कर्मस्ववस्थितः॥शौचाचारस्थितः सम्यग् ब्रह्मनिष्ठो गुरुप्रियः। नित्यव्रती सत्यपरः स वै ब्राह्मण उच्यते ॥ सत्यं दानमथाऽद्रोहः आनृशंस्यं त्रपा घृणा । तपश्च दृश्यते यत्र स ब्राह्मण इति स्मृतः ॥ क्षत्रजं सेवते कर्म वेदाध्ययनसङ्गतः । दानादानरतिर्यस्तु स वै

क्षत्रिय उच्यते ॥ विशत्याशु पशुभ्यश्च कृष्यादानरतिः शुचिः । वेदाध्ययनसम्पन्नः स वैश्य इति संज्ञितः ॥ सर्वभक्ष्यरतिर्नित्यं सर्वकर्मकरोऽशुचिः । त्यक्तवेदस्त्वनाचारः स वै शूद्र इति स्मृतः ॥ शूद्रे चैतद्भवेल्लक्ष्यं द्विजे तच्च न विद्यते । न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो नच ब्राह्मणः ॥

अर्थात् ब्रह्माजीने प्रथम अपने तेजसे सूर्य और अग्निके समान प्रभावशाली ब्रह्मनिष्ठ मरीचि आदि प्रजापतियोंको उत्तम करके स्वर्गप्राप्तिका उपायस्वरूप सत्यधर्म तपस्या शाश्वत वेद आचार और शौचको सृजन किया पीछे देव, दानव, गन्धर्व, दैत्य, असुर, यक्ष, राक्षस, नाग, पिशाच और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्ण युक्त मनुष्य जातिकी सृष्टि की । उस समय ब्राह्मण श्वेतवर्ण (अर्थात् सत्त्वगुणयुक्त) क्षत्रिय लोहितवर्ण (रजोगुणयुक्त) वैश्य पीतवर्ण (रज और तमयुक्त) और शूद्र कृष्णवर्ण (सर्वथा तमोगुणयुक्त) हुए । भरद्वाज बोले हे भगवन् ! सब मनुष्योंमें ही कोई न कोई गुण विद्यमान हैं । इससे केवल वर्ण [गुण] द्वारा मनुष्यका वर्णभेद नहीं किया जा सकता, देखिये सब मनुष्य काम, क्रोध, भय, लोभ, शोक, चिन्ता , क्षुधा और परिश्रमसे व्याकुल होते हैं सबके ही शरीरसे स्वेद, मूत्र, पुरीष, श्लेष्मा, पित्त और रुधिर निकलता है, इससे गुणद्वारा भी किसी प्रकार वर्णविभाग नहीं किया जा सकता। भृगुजीने कहा इस लोकमें वर्णोंमें कुछ भी विशेषता नहीं है, समस्त संसार ही ब्रह्ममय है मनुष्यगण प्रथम ब्रह्माजी द्वारा उत्पन्न होकर धीरे २ कर्मोंसे वर्णोंमें विभक्त हुए हैं, जिन ब्राह्मणोंने रजोगुणयुक्त होकर काम भोगप्रिय, क्रोधके वशीभूत होकर तथा साहसी और तीक्ष्ण होकर स्वधर्मका त्याग न किया वे क्षत्रियपनको प्राप्त हुए, जिन्होंने रज और तमोगुण युक्त होकर पशु पालन और कृषिका आश्रय कर लिया वे वैश्यपनको प्राप्त हुए, जो तमोगुण युक्त होकर हिंसक लुब्ध सर्व कर्मोपजीवी मिथ्यावादी और शौचभ्रष्ट हुए, वे द्विज शूद्रत्वको प्राप्त हुए इस प्रकार भिन्न २ कार्य करनेसे ब्राह्मण ही पृथक् पृथक् वर्णोंको प्राप्त हुए हैं, इससे सब वर्णोंका ही नित्य धर्म और नित्य यज्ञमें अधिकार है भगवान् ब्रह्माजीने सृष्टि करके जिनको वेदाधिकारी बनाया वही लोभके कारण शूद्रत्वको प्राप्त हुए हैं, ब्राह्मण सर्वदा वेदाध्ययन, व्रत और नियमानुष्ठानमें तत्पर रहे, इस कारण उनकी तपस्या नष्ट नहीं हुई ब्राह्मणोंमें जो परमार्थ ब्रह्मपदार्थको नहीं जान सके, वही निकृष्ट समझे गये, और ज्ञान विज्ञान हीन स्वेच्छाचारी, पिशाच राक्षस, प्रेत आदि विविध म्लेच्छ जातित्वको प्राप्त हुए । भरद्वाज बोले हे द्विजोत्तम ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इनका लक्षण क्या है ? यह मुझसे कहिये । भृगुजी बोले, जो जातिसंस्कारादि संस्कारसे संस्कृत परम पवित्र वेदाध्ययनमें अनुरक्त रहकर प्रतिदिन संध्यावन्दन, स्नान, तप, होम, देवपूजा और अतिथि सत्कार इन छः कर्मोंको करते हैं, जो शौचाचारपरायण, नित्य ब्रह्ममें निष्ठावान्, गुरुप्रिय और सत्यनिरत होक ब्राह्मणोंका भुक्तावशिष्ट अन्न भोजन करते और जिनमें दान, अद्रोह, शान्ति, अनृशंसता, क्षमा, दया और तपस्यामें नितान्त आसक्त देखा जाय वही ब्राह्मण है, जो वेदाध्ययन सम्पन्न युद्ध कार्यमें तत्पर, ब्राह्मणोंको धन दान कर प्रजासे कर ग्रहण करै, वह क्षत्रिय है, जो पवित्र होकर वेदाध्ययन और कृषि वाणिज्यादि कार्य करै वह वैश्य और जो वेदविहीन आचार भ्रष्ट हों सर्वदा सब काम और सब वस्तु भक्षण करैं वह शूद्र हैं यदि कोई ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न होकर शूद्रके समान कर्म करै और शूद्र ब्राह्मणके समान कर्म करै, तो वह शूद्र शूद्र नहीं और ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं है इन वचनोंको आश्रय करके बहुतसे महानुभाव कहते हैं कि,

वर्णविभाग पीछेसे हुआ है, परन्तु यह बात समीचीन नहीं है जब कि सतरज, रजतम, तम इन तीन गुणोंके अनुसार स्वभाव जन्मसे होता है, तब वे पुरुष अपने २ स्वभावका अनुसरण करेंगे, और उनका वही वर्णविभाग होगा, इन श्लोकोंमें मुखादिसे मनुष्योंकी उत्पत्ति न कहकर स्थूलरूपसे प्रजापतिद्वारा सबको एकरूप निर्देश किया है, परन्तु वास्तवमें अंगविभागसे उत्पन्न होनेके कारण उनमें क्षत्रिय वैश्य और शूद्रोंके कर्म थे, इसीसे वे उन उन कर्मोंको करके अपने यथार्थ नामोंको प्राप्त हुए, इससे यही सिद्ध होता है कि जाति जन्मसे ही है, कर्मद्वारा जाति व्यक्त होजाती है और " वैश्यतां गताः " इत्यादि पदोंसे यह स्पष्ट है कि वे वैश्यभावको प्राप्त हुए, पर वैश्य प्रथम ही विद्यमान थे, अपने पितृजनोंके गुण कर्मकी भलीप्रकार रक्षा करें नहीं तो उस जातिसे च्युत समझे जांयगे, इसीके द्योतक यह सब वचन हैं, और यह वाक्य सब पूर्वपक्षमें यदि रखकर विचार किया जाय तो पूरा निश्चय होजायगा कि जाति जन्मसे ही है, कारण कि इन्द्रादि देवताओंमें, गौ अश्वादि पशुओंमें, वृक्ष लता गुल्मादिम, गायत्री आदि छन्दोंमें भी वर्ण विभाग पाया जाता है, 'ब्रह्म वै बृहस्पतिः' (ऐतरेय) यान्येतानि देवत्रा (देवेषु) क्षत्राणि इन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो यमो मृत्युरीशानः, स विशमसृजत् । यान्येतानि देवजातानि गणश आख्यायन्ते वसवो रुद्र आदित्या विश्वेदेवा मरुत इति ' श० कां० १४ अर्थात् बृहस्पति ब्राह्मण, इन्द्र वरुण सोम रुद्र पर्जन्य यम मृत्यु इशान यह क्षत्रिय हैं , उसने वैश्यकी रचना की जो देवजाति गणरूपसे निरूपण की गई वे वसु ८ रुद्र ११ आदित्य १२ विश्वेदेवा १३ मरुद्गण ४९ वैश्य कहाते हैं। पशुओंमें 'ब्रह्म वा अजः। क्षत्रं वा अश्वः । वैश्यं च शूद्रश्चानु रासभः श०' । अज ब्राह्मण, अश्व क्षत्रिय, गर्दभ वैश्य और शूद्र है, ग्रन्थके आरंभमें तैत्तिरीयके वचनसे चार वर्णोंके साथमें जिन२पशु और छन्दोंकी सृष्टि हुई है,वह वह उसी वर्ण-वाले हैं, वृक्षोंमें 'ब्रह्म वै पलाशः' श० । पीपल ब्राह्मण है औषधियोंमें क्षत्रं वा एतदोषधीनां यद् दूर्वा ऐत० । औषधियोंमें दूर्वा क्षत्रिय है, छन्दोंमें गायत्रश्छन्दसा ब्राह्मणः ऐत० । गायत्री छन्द ब्राह्मण, त्रिष्टुप् क्षत्रिय, और जगती वैश्य है । इसी प्रकार नक्षत्र ताराराशियोंमें भी स्वाभाविक वर्णविभाग हैं, यदि कर्म ही प्रधान होता तो वृक्ष ओषधी छन्दादि वा पशुआदिमें वर्ण विभाग नहीं होता, इससे यह कोई स्वभाव सिद्ध नैसर्गिक बात है, यदि कर्मसे जातिविभाग जनसमुदायने चलाया तो किसीको श्रेष्ठ और किसीको भूपति किसीको दास बनाकर बडा अन्याय किया, कारण कि, निकृष्ट बननेकी किसीकी इच्छा नहीं होती, सभी श्रेष्ठ बनना चाहते हैं यदि कर्मसे विभाग हैं तो प्रथम ब्राह्मणोंके होनेमें कौनसे कर्मका हेतु है और वह उनमें क्यों हुआ कारण कि, कर्मद्वारा विभागसे पहले उनके मतम ब्राह्मणत्वकी सिद्धि नहीं, है इससे स्पष्ट है कि, कमविभाग वर्णविभागमूलक है न कि, कर्मविभागमूलक वर्णविभाग है, इसी बातको भगवान्ने गीतामें भी कहा है ।

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणाञ्च परन्तप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ १८ । ४१

अर्थात् हे परन्तप ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रोंके कर्म स्वभावसे उत्पन्न हुए गुणोंके कारण विभक्त हुए हैं, स्वभाव जन्मसे होता है तो जन्मसे जो गुण हैं वह जातिके लिये हुए हैं, जब स्वभाव ईश्वरकृत है तब वर्णविभाग ईश्वरकृत है इससे चार वर्णोंके मुखादिद्वारा होनेसे--

तेषां कर्माणि धर्माश्च ब्रह्मा तु व्यदधात्प्रभुः ।

उनके धर्मों और कर्मोंको प्रभु ब्रह्माजीने पृथक् विधान किया इससे सिद्ध है कि पहले वर्ण और पीछे उनके

कर्मोंका विधान किया अर्थात् विधाताने ही सब वर्णोंको अपने २ कर्मोंमें नियुक्त किया है जहां मुखसे ब्राह्मणकी उत्पत्ति है उसीसे अग्निकी उत्पत्ति है 'यथा मुखादग्निरजायत' इसीसे ब्राह्मणको आग्नेय कहा है शतपथके चौदहवें काण्डमें देवताओंमें वर्णविभाग माना है 'प्रजापतिरकामयत' इस श्रुतिद्वारा देव मनुष्य छन्द पशु आदिकी वर्णद्योतक श्रुति लिख ही चुके हैं और जब पुरुषसूक्तका वेदमन्त्र चार वर्णोंकी उत्पत्तिके विषयमें गर्ज रहा है तो प्रमाणान्तरकी आवश्यकता क्या है और यदि कर्मभिर्वर्णतां गतम्' इसका यह अर्थ किया जाय कि कुछ समयके उपरान्त स्थूलरूपसे वर्णविभाग हुआ पहले सूक्ष्मरूपमें था तो भी यही सिद्ध होता है । 'कारणगुणाः कार्यगुणानारभन्ते' इस न्यायके अनुसार महामहिमावाले महर्षियोंने उन उन वंशोंके उत्पन्न हुए वर्णोंको दृढ किया न कि पिता क्षत्रिय और पुत्र शूद्र बनाया पिता शूद्र और पुत्र ब्राह्मण बनाया, किन्तु उन्होंने यह नियम किया कि, 'सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः' सवर्णा स्त्रीमें सवर्णसे सजाति पुरुष उत्पन्न होता है, सदा स्थिर रक्खा वह जानते थे कि मधुर आम्रके बीजसे आम होंगे इमलीसे इमली होगी जैसे रंगके सूतसे कपडा बनाया जायगा उसका वैसा ही रंग होगा इसी प्रकार शमप्रधानादि गुणसे उत्पन्न ब्राह्मण ही होगा, इतर नहीं. यदि पढनेसे ही ब्राह्मण हो जाता तो 'शूद्रो हि कवषो दीक्षां प्रविष्टः' जब शूद्र कवष दीक्षामें प्रविष्ट हुआ तो महर्षियोंने उसको बाहर किया और कहा समाज नियम भङ्ग करनेवाले कवषको दण्ड देना चाहिये और कहा "अत्रैनं पिपासा हन्तु सरस्वत्या उदकं मा पात्" यह प्याससे मरे सरस्वतीका जल न पीसके ऐसा कहकर उसको निर्जल देशमें निकाल दिया यदि कर्ममूलक वर्णविभाग हो जाय तो विचारा कवष दीक्षासे क्यों निकाला जाता? वह कर्मोंसे तो ब्राह्मण वर्णमें प्रवेश होने योग्य था, पीछे जो उसकी महिमा हुई वह उसके गुणोंके ही कारण हुई न कि ब्राह्मणोंके कर्मानुष्ठानसे और यदि कहीं किसीमें विशेषगुणोंके कारण कोई विशेषता होजाय तो वह किसी नियमको भंग नहीं कर सकते, सब पशुओंके पुरीष गोबरके समान नहीं होसकते, सब गन्ध कस्तूरी नहीं होसकती । इसी प्रकार कवष जो पीछे उच्चपदको प्राप्त हुआ तो उससे वर्णविभागका नियम भंग नहीं समझा जायगा, इससे कुल क्रमागत ही मुख्यतया वर्णव्यवस्था है, यही इस ऐतरेय आख्यानसे सिद्ध होता है, यदि केवल ब्राह्मणके गुण धारणसे ही ब्राह्मण होजाता तो विश्वामित्रमें किन गुणोंकी कमी थी, वेद पढे थे परन्तु फिर भी उनको सहस्रों वर्षोंतक तपस्या करनी पडी और उनके चर्ममें ब्राह्मणत्व होते हुए भी वशिष्ठादिने उनको ब्राह्मण न कहा जो मंत्रद्रष्टा हैं उनको भी ब्रह्मर्षि कहलानेको सहस्रों वर्ष तपश्चर्यासे ब्रह्मर्षिपद लाभ हुआ तो स्पष्ट ही है वर्णविभाग जन्मसे सिद्ध है, न कि कर्मसे और विश्वामित्रके समयमें भी यह बात रहते इसके अनादित्व होनेमें शंका क्या है और अनेकों युग व्यतीत होते हुए वर्णकी शिथिलताके जो दो चार उदाहरण मिलते हैं वे वर्णभेदकी सनातनता सूचित करते हैं, यह बात सूक्ष्म दृष्टि देनेसे समझमें आजाती है, इससे सहस्रों युगोंमें वर्णविनिमयके दो तीन उदाहरण देखे जांय तो वह गिनतीमें नहीं आसकते, न उनसे वर्णविभाग शिथिल हो सकता है, न वैसा अब कोई अनुष्ठान करनेको समर्थ है और यदि वर्णविभाग पूर्वसे ही सुदृढ न होता तो यह वर्णविनिमयकी दो चार कथा लिखनेकी आवश्यकता क्या थी, कारण कि यह तो रीति ही थी, फिर इसके लिखनेका प्रयोजन क्या था और भी देखा जाता है ।

तद्य इह रमणीयाचरणा अभ्याशो ह यत्ते रमणीयां योनिमापद्येरन् ब्राह्मणयोनिं वा क्षत्रिययोनिं वा वैश्ययोनिं वाथ य इह कपूयचरणा

अश्वाशो ह यत्ते कपूयां योनिमापद्येरन् श्वयोनिं वा शूकरयोनिं वा चाण्डालयोनिं वा (छान्दो० ५।१०)।

इस छान्दोग्य श्रुतिसे यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि, कर्मके अनुसार दूसरे जन्ममें शुभकर्मसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य योनि मिलती है, निन्दित आचरणसे कुत्ते शूकर चाण्डाल योनि प्राप्त होती है, इससे स्पष्ट है कि वर्णविभाग जन्मसे है न कि कर्मसे, यदि कर्मसे ही वर्णविभाग होता तो निरन्तर शस्त्रधारणकर्ता परशुरामजी क्षत्रियवर्णमें गिने जाते और महात्मा द्रोणाचार्य और कृपाचार्य निरन्तर धनुर्वेदके पारंगत होनेसे ब्राह्मणत्वसे हीन होकर क्षत्रिय होजाते और तपश्चरण करनेवाला शूद्र रामचंद्रजीके द्वारा कभी निधनताको प्राप्त नहीं होता, अनुशासनपर्व अ० २७ में युधिष्ठिरने भीष्म पितामहसे पूछा है—

नान्यस्त्वदन्यो लोकेषु प्रष्टव्योऽस्ति नराधिप । क्षत्रियो यदि वा वैश्यः शूद्रो वा राजसत्तम ॥३ ॥ ब्राह्मण्यं प्राप्नुयाद्येन तन्मे व्याख्यातुमर्हसि । तपसा वा सुमहता कर्मणा वा श्रुतेन वा । ब्राह्मण्यमथ चेदिच्छेत्तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ ४॥

हे पितामह! आपके सिवाय यह विषय किसीसे पूछने योग्य नहीं है । क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्र यह ब्राह्मणत्वको बडे तप कर्म वा शास्त्र किसके द्वारा प्राप्त कर सकते हैं ? यह आप मुझसे कहिये इसपर भीष्मपितामहने कहा—

ब्राह्मण्यं तात दुष्प्राप्यं वर्णैः क्षत्रादिभिस्त्रिभिः । परं हि सर्वभूतानां स्थानमेतद्युधिष्ठिर ॥ ५ ॥ बह्वीस्तु संसरन् योनीर्जायमानः पुनः पुनः । पर्याये तात कस्मिंश्चिद् ब्राह्मणो नाम जायते ॥ ६ ॥

हे तात! तीनों वर्णोको ब्राह्मणत्व दुष्प्राप है कारण कि यह ब्रह्मत्व सम्पूर्ण प्राणियोंका स्थान है अनेक योनियोंमें उत्पन्न होकर किसी समय ब्राह्मणके यहां जन्म लेता है इससे भी स्पष्ट है कि जाति जन्मसे होती है कर्मसे जातिका कोई प्रसङ्ग नहीं है और जो मतङ्गका इतिहास है वह भी इस बातको समर्थन करता है कि जातिसे हीन कोई पुरुष भी ब्राह्मणत्वको प्राप्त नहीं हो सकता. मतङ्गका वचन इन्द्रके प्रति—

इदं वर्षसहस्रं वै ब्रह्मचारी समाहितः । अतिष्ठमेकपादेन ब्राह्मण्यं नाप्नुयां कथम् ॥ अहिंसादममास्थाय कथं नार्हामि विप्रताम् । अनु. प. अ. २९ ॥

अर्थात् सहस्र वर्षपर्यन्त सावधानतासे मैं ब्रह्मचर्य धारणपूर्वक एक पगसे स्थित होकर अहिंसा और इन्द्रियदमनमें स्थित हो रहा हूँ मुझको ब्रह्मचर्यके प्रभावसे ब्राह्मणत्व क्यों न प्राप्त होगा । इन्द्रने इसका उत्तर दिया—

श्रेष्ठता सर्वभूतेषु तपोऽर्थं नातिवर्तते । तदग्र्यं प्रार्थयानस्त्वमचिराद्विनशिष्यति ॥ (अनुशासनप. अ. २७ । २९ ॥

सब प्राणियोंमें श्रेष्ठता तपसे ही प्राप्त करनेकी इच्छासे तू ब्राह्मणत्वकी इच्छा करता है तो शीघ्र नष्ट होगा इस प्रकार मतङ्गको महान् तप करनेसे भी ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति न हुई और जो यक्ष युधिष्ठिरके संवादमें

युधिष्ठिरजीने कर्मको ही द्विजत्वका कारण कहा है, यह कर्मकी प्रशंसामात्र है, द्विजत्व शुद्धजन्मसे तो सिद्ध हो ही चुका है, कारण कि जब वेद वर्णोंकी उत्पत्ति कहता है,तब द्विजत्व सिद्धही है,कर्मोंको देखकर उनका विभाग करलिया, वास्तवमें ये पहलेसे ही ब्राह्मणादि हैं, नहीं तो फिर द्रोणादिकमें ब्राह्मणत्वका व्यवहार न होगा, भीष्मके वचनोंमें विरोध आवैगा और फिर युधिष्ठिरजीने भी तो यह स्पष्ट कहा है (वृत्तं यत्नेन संरक्ष्यं ब्राह्मणेन विशेषतः) विशेषकर ब्राह्मणको अपने कर्मोंमें परायण होना चाहिये, नहीं तो इससे निन्दाकी प्राप्ति होगी। इसी प्रकार नहुषके संवादमें भी युधिष्ठिरके वचनसे यह प्रतीत होता है कि निकृष्ट युगोंमें व्यभिचारादिकी विशेषतासे और वर्णसंकरकी विशेषतासे जातिमात्रसे उत्कृष्ट ब्राह्मण परीक्षाके योग्य है, ऐसे समयमें सत्य शमादि गुणयुक्त देखकर ब्राह्मणका निश्चय कर लेना यह अभिप्राय है। धर्म व्याधादिके संवादमें सत्त्वादि गुणोंका उत्कर्ष कथन ही तात्पर्य है। गीतामें यह स्पष्ट ही है (श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः) अर्थात् अपना धर्म विगुण भी हो तो भी परधर्म ग्रहण न करे स्वधर्ममें मरण श्रेष्ठ है परधर्म भयका देनेवाला है। इस गीताके वचनसे स्पष्ट है कि वर्णविभागहेतुक कर्मविभाग है न कि कर्मविभागहेतुक वर्णविभाग है। मनुजीने भी यही कहा है—

सर्ववर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षतयोनिषु। आनुलोम्येन सम्भूता जात्या ज्ञेयास्त एव ते॥ (मनु० अ० १० । ५) सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः। (याज्ञवल्क्य)

चारो वर्णोंमें समान जातिवाली अक्षतयोनि स्त्रियोंमें विवाहपूर्वक अनुलोमविधि अर्थात् ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें क्षत्रियसे क्षत्रियामें जो सन्तान उत्पन्न होती है, वे अपने पिताकी जातिकी ही उत्पन्न होती हैं, यही याज्ञवल्क्य कहते हैं कि, सवर्णोंकी सवर्णा स्त्रीमें वही जाति उत्पन्न होती है जो उनके पिताकी है मनुजी कहते हैं—

उत्पत्तिरेव विप्रस्य मूर्तिर्धर्मस्य शाश्वती। स हि धर्मार्थमुत्पन्नो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥ ब्राह्मणो जायमानो हि पृथिव्यामधि जायते। ईश्वरः सर्वभूतानां धर्मकोशस्य गुप्तये॥ अ० १ श्लो० ९८ । ९९)

जन्मतेही ब्राह्मणका देह धर्मका अविनाशी शरीर इस कारण है कि, यह ब्राह्मण धर्मके निमित्त ही उत्पन्न होता है और धर्मसे उत्पन्न हुए आत्मज्ञानसे मोक्षका भागी होता है। ब्राह्मण जन्म पृथिवीमें सबसे उत्कृष्ट है इसीसे यह प्राणियोंके धर्म समूहकी रक्षाके लिये समर्थ है कारण कि सब धर्मोंका उपदेश ब्राह्मणसे ही होता है। हारीत कहते हैं—

ब्राह्मण्यां ब्राह्मणेनैव उत्पन्नो ब्राह्मणः स्मृतः॥ (१ । १५)

ब्राह्मणीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हुआ ही ब्राह्मण होता है। अत्रि कहते हैं--

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते। विद्यया याति विप्रत्वं श्रोत्रियस्त्रिभिरेव च॥ (१३८)

अर्थात् ब्राह्मणीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हुआ ब्राह्मण कहाता है संस्कारोंसे द्विज होता है, विद्यासे विप्र और

तीनों वेदोंके ज्ञानसे श्रोत्रिय कहाता है। यदि अपने वर्णोचित कर्मोंको ब्राह्मण त्याग दे तो भी उसमें ब्राह्मणत्व माना जाता है। यथा हि-

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः। यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति॥ १५७॥ यथा षण्ढोऽफलः स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला। यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः॥ (अ० २। १५८)

जैसे काठका हाथी चमडेका मृग नाममात्रका है इसी प्रकारसे वेपढा ब्राह्मण नाममात्रको धारण करनेवाला होता है, जैसे नपुंसक स्त्रियोंमें फलवाला नहीं होता जैसे गाय गायमें पुत्र उत्पन्न नहीं करसकती जैसे मूर्खको दान देनेका फल नहीं होता इसी प्रकार वेदविद्यारहित ब्राह्मणको दान देनेसे फल नहीं होता। इन मनुके श्लोकोंसे विद्यारहित ब्राह्मणमें भी ब्राह्मणत्व माना है यदि कर्मसे जाति होती तो विद्यारहितमें तीनकालमें भी ब्राह्मण शब्दका प्रयोग नहीं होता। भाष्यकार पतञ्जलिने भी (नञ् २। २। ६) इस सूत्रमें इस कारिकाको लिखते हुए जन्मसे ही ब्राह्मण माना है।

तपः श्रुतं च योनिश्चेत्येतद्ब्राह्मणकारकम्। तपःश्रुताभ्यां यो हीनो जातिब्राह्मण एव सः॥ (महाभाष्य.)

तपस्या शास्त्र और योनि यह तीन ब्राह्मणके कारक हैं जो तपस्या और शास्त्र इनसे हीन है वह जातिसे ब्राह्मण है, इससे स्पष्ट है कि जाति जन्मसे ही है। यदि कहीं शास्त्रविहीन ब्राह्मणमें अब्राह्मण शब्द प्रयुक्त हो तो वह पढेलिखे ब्राह्मणोंके मध्यमें उपचारसे प्रयोग हुआ जानना इससे भी जन्मसेही जाति स्पष्ट है और निकृष्ट वर्ण यदि उत्तम कर्म करै तो भी भगवान् मनु उस उत्कृष्टतासे स्वीकार नहीं करते, यथाहि-

अनार्यमार्यकर्माणमार्यं चानार्यकर्मिणम्। संप्रधार्याब्रवीद्धाता न समौ नासमाविति॥ मनु. अ. १०। ७३॥

यदि नीचवर्ण शूद्र ब्राह्मणादिके कर्म करता हो और ब्राह्मणादि शूद्रोंके समान कर्म करते हों तो विधाताने यह इसका निश्चय किया है कि न तो वह शूद्र ब्राह्मणादिके समान है और न वह ब्राह्मण शूद्रके असमान है।

पराशरजी कहते हैं-

दुःशीलोऽपि द्विजः पूज्यो न शूद्रो विजितेन्द्रियः। कः परित्यज्य दुष्टां गां दुहेच्छीलवतीं खरीम्॥ ८। ३२॥

दुष्टशीलवाला भी ब्राह्मण पूज्य है और जितेन्द्रिय शूद्र पूज्य नहीं है, खोटे स्वभाववाली गायको छोडकर शीलवाली गधीको कौन दुहैगा अर्थात् गधैयाका दूध नहीं पिया जायगा, इससे भी जाति ही सिद्ध होती है। मनुजी राजधर्ममें कहते हैं-

अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो दैवतं महत्। प्रणीतश्चाप्रणीतश्च यथाग्निर्दैवतं महत् (अ० ९। ३१७)

अविद्वान् हो चाहे विद्वान् हो ब्राह्मण महान् देवता है जैसे अग्निप्रणीताधानवाली वा विना आधानकी महान् देवता ही है और भी बारहवें अध्यायमें मनुजी कहते हैं कि-

स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु कर्मभ्यश्चतुर्वर्णा ह्यनापदि। पापान् संसृत्य संसारान् प्रेष्यतां यान्ति शत्रुषु॥ (१२ । ७०)

अर्थात्–चारों वर्ण आपत्तिहीन कालमें यदि अपने२ कर्मोंको त्याग करैं दूसरे वर्णोंके कर्म करैं तो वह पातकी होकर संसारमें पडकर कुत्सित योनिको प्राप्त हो जन्मान्तरमें शत्रुके दास होते है, इन वचनोंसे यही सिद्ध होता है कि वर्णक्रम जन्मसे है न कि कर्मसे इस लेखसे हमारा यह प्रयोजन नहीं कि ब्राह्मणादि वर्ण अपने २ कर्मोंका त्याग कर दें, ऐसा कभी नहीं करना चाहिये, कर्मत्यागसे ब्राह्मणादिकी बडी निन्दा है । इससे ब्राह्मणादि वर्णोंके जन्मके उपरान्त उत्कर्षता साधनके निमित्त संस्कार अवश्य ही उचित है,इससे उन २ वर्णोंका प्रभाव लक्षित होता है विना संस्कारके मणियोंमें भी मलीनता देखी जाती हैं, पर लोष्ट पत्थरमें वह वात नहीं होती । इससे विप्रकुलोंमें उत्पन्न जनोंके ब्राह्मणत्वादि सिद्धिके निमित्त संस्कार करने चाहिये, न कि, शूद्रोंके नामकरणमें मनुजीका आशय जन्मसे जातिकी सिद्धि करता है ।

मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात् क्षत्रियस्य बलान्वितम् । वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य च जगुप्सितम्॥ (२ । ३१)

ब्राह्मणका नाम मङ्गलाचारयुक्त क्षत्रियका बलयुक्त और वैश्यका पुष्टियुक्त तथा शूद्रका जुगुप्सित नाम रखना चाहिये । जब कि, दशमें बारहवें दिन ब्राह्मणादिके यहां उत्पन्न हुए वालकोंके नाम उन उन वर्णोंके अनुसार ही शास्त्रने माने हैं, तब जन्मसे जाति निषेधका साहस कौन करसकता है । कारण कि, जन्म लेते ही ब्राह्मणादिके गुण कर्म उसमें प्रगट नहीं है । इसीप्रकार स्मृतिकारोंने यज्ञोपवीतमें काल दण्डादिका समय पृथक् निरूपण किया है, जहां कहीं कर्म न करनेसे पतित लिखा है वह भयके निमित्त है, उसमेंसे जातिमात्रका ब्राह्मणांश किसीकालमें दूर नहीं होता । कारण कि, वह रजवीजके प्रसंगसे बना है और जहां कहीं अवनति उन्नतिका वर्णन किया है वह स्मृतिकारोंका रहस्य है कि, उन्नति वडी कठिनतासे प्राप्त होती है और अवनति वहुत सहजम हो जाती है इसकारण विनिपातसे सदा भय करना चाहिये, पर स्मृतिकारोंका यह कहीं सिद्धान्त नहीं है कि, किसी वर्णसे कोई दूसरा वर्ण समुन्नतिमें हो गया हो,योनि विद्या और कर्म यह तीन ब्राह्मणके कारक हैं । यह वात भाष्यकारने स्वयं लिखीहै, तब यदि अन्य वर्ण विद्या और कर्मसे युक्त भी हों तब भी योनिसे रहित होनेसे वे ब्राह्मण नहीं हो सकते, इस समुदायमें एकके विनाशसे भी हीनता प्राप्त होती हैं, परन्तु नया वर्ण प्रगट नहीं होता । ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न हुआ कोई पुरुष यदि विद्या और कर्मोंको त्याग न कर दे, अथवा विद्यायुक्त होकर भी कर्मसे पतित हो जाय सुरापानादिसे विद्या और प्रकृष्ट कर्मोंको भी त्यागदे तो उसमें योनि विद्या और कर्मका समुदाय प्रतिष्ठित नहीं है, ऐसा होनेसे वह ब्राह्मणत्वसे पतित हो जायगा । यह तीनों समुदाय ही ब्राह्मणकी उत्कृष्टताके साधक हैं । योनिमात्र वा योनि और विद्या होनेपर भी एक वातकी न्यूनतामें प्रतिष्ठाकी हानि है । इसीप्रकार अन्यवर्ण ब्राह्मणयोनिसे रहित हो उत्तम विद्या और संस्कारवाला भी हो, यम नियमादि कर्मोंमें अनुरक्त भी हो, परन्तु एक योनिसमुदायके न होनेसे वह ब्राह्मणताको प्राप्त नहीं कर सकता । इससे इस जन्ममें अन्यवर्ण ब्राह्मण नहीं हो सकता, इससे जो लोग म्लेच्छादिकोंको ब्राह्मणादि धर्म सिखाते हैं, उनको वर्णोंमें सम्मिलित करते हैं वे भाष्यकारके इस वचनसे कि–

तपः श्रुतं च योनिश्च त्रयं ब्राह्मणकारकम् ।

तपस्या, कर्म और योनि तीन ब्राह्मणके कारक हैं, परास्त होते हैं । यदि कहो कि, योनिकृत वर्णवि-

भाग मानाजाय तो गौ अश्वादिके समान आकृतिमें भेद होना चाहिये, परन्तु ऐसा न होकर सब वर्णोंमें एकसा ही रूप दिखाई देता है इससे योनिकृत वर्णभेद नहीं होसकता यह बात तुच्छ है। गवादिका प्रकृति भेद सिद्ध ही है, विधाताके नियमसे वैसा भेद है। उसीका अनुसरण करके कर्म भेदसे यह जातिभेद उत्पन्न हुआ है। कारण कि, कारणगुण कार्यके गुणोंका आरंभ करते हैं, इस प्राकृतनियमके अनुसार योनि-भेदकी मूलकता प्राप्त होती है, यह श्रुति स्मृतिसे अनेकवार सिद्ध हो चुका है ब्राह्मणादि वर्ण मनुष्य जातिके अवान्तरभेद हैं न कि गोअश्वादिके समान एकान्ततः जातिकी पृथक्ता दिखानेवाले हैं, अवानन्तरभेद सब मनुष्य तिर्यगादि जातियोंमें पायेजाते हैं, यह विद्वानोंने अच्छेप्रकार समझ लिया है उनमें परस्पर संकीर्णता नहीं है, यह स्वाभाविक भेद परीक्षक गण भले प्रकार जान सकते हैं,स्वरूप भेद ही भेदकी प्रयोजकता नहीं वताता, किन्तु गुणस्वभाव भी भेदका प्रयोजक है। अश्वजातिके कितने अवान्तरभेद हैं, सुधी सज्जन इसका निरूपण करसकते हैं, इससे वर्णोंके भेदमें योनिभेदको निवारण करनेको कोई समर्थ नहीं है। प्रकृतिका भेद वर्णभेद नहीं वतासकता, वहुतसे ब्राह्मण अल्पमति, क्षत्रिय, कातर, शूद्रोंकी बुद्धिमें कुशाग्रता दिखाई देती हैऔर वीर्य भी उनमें दिखाई देता है, यदि इस पर आक्षेप किया जाय तो यह भी वडा अविचार होगा। इस समय कालदोषसे वर्णोंका निज २ अभिमान शिथिल होगया है, अपने २ कर्मोंको वर्णोंने त्याग दिया है, शास्त्रकी मर्यादा त्याग दी है, वर्णोंका परिचय नाममात्रसे दिया जाता है, स्त्रियोंके चरित्र शिथिल ही नहीं, वरन् विलीन हो गये हैं, इससमय चारों ओरसे दुरवस्था खडी हो गई है, इससे ऐसा दिखाई देता है यदि वर्ण यथार्थरूपसे अपने कर्मोंमें प्रवृत्त होते तो कभी ऐसा नहीं होता। अवश्य ही ब्राह्मणके यहां ब्राह्मणोचित प्रकृतिवाले उत्पन्न होते हैं,मीठे आमके वीजसे मीठे ही फल उत्पन्न होंगे, यह प्राकृतिक नियम है, प्राकृतिक नियमोंको अनुसरण करके ही आचार्योंकी मर्यादा स्थित रहसकती है। जहां कहीं इस नियममें कुछ व्यभिचार दिखाई दे अवश्य ही उसमें कोई हेतु विशेष है। परन्तु उसका निदर्शन नहीं लिया जासकता, इस विषयमें यही न्यायमार्ग है, इसकारण सामाजिक उन्नति - साधनमें यथाशास्त्र ही वर्तना उचित है, ब्राह्मण क्षत्रियादिके वालक ब्राह्मणादि प्रकृतिके ही होने चाहिये, यह व्यवस्था त्याग देनेसे कदाचित् भी समाजकी सुव्यवस्था नहीं हो सकती। अब भी ब्राह्मणोंकी विद्याविशेषता क्षत्रियोंकी स्वाभाविक वीरता वैश्योंका धनाधिक्य इसविषयके जागते प्रमाण हैं और जो कोई कहते हैं सृष्टिकी आदिमें एक ही मनुष्यजाति थी और उसमें सांख्याचार्य ईश्वरकृष्णके सृष्टि भेदोंको कहते हैं कि—

अष्टविकल्पो दैवस्तैर्यग्योन्यश्च पञ्चधा भवति । मानुषश्चैकविधः समासतो भौतिकः सर्गः ॥

अर्थात्--चौदह प्रकारके भूतसर्गमें दैवसर्गके ब्राह्म, प्राजापत्य, इन्द्र, पितर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, पिशाच यह आठ भेद हैं, तिर्यग्योनियोंमें पशु, मृग, पक्षी, सरीसृप (चींटी कानखजूरे आदि) स्थावर यह पांच भेद हैं, एक भेदवाली मनुष्यजाति है, ब्राह्मणादिका इसमें भेद नहीं आया, इसी प्रकार भागवतादिमें सृष्टिका विभाग कहते हुए एक ही मनुष्यजाति निरूपण की है, इस प्रश्नके उत्तरमें हमको यही कहना है कि ब्राह्मणादि मनुष्य सृष्टिके अवान्तरभेद हैं, सृष्टिका आरंभ लिखनेमें सर्वथा सृष्टिके अवान्तरभेद नहीं भी दिखाये जाते, न गिनाये जाते हैं, क्या यह पांचही प्रकारका तिर्यक् सर्ग है इसके सहस्रों अवान्तरभेद क्या नहीं हैं, क्या वे सृष्टिके आदिसे योनिसिद्ध वा प्रसिद्ध नहीं है, गो महिष आदिके भेदोंकी उपेक्षासे केवल तम प्रधानमात्रको लक्ष्य करके आचार्यने पांच भेदसे कल्पना कर दी है। इसी प्रकार रजोगुणकी प्रधान-

ताको लक्ष्य करके ब्राह्मणादि अवान्तरभेदको न दिखाकर एकमात्र मनुष्यजातिकी बात लिखी है,इससे योनि-सिद्ध वर्णभेदमें हानि प्राप्त नहीं होती, कारण कि, देवता सत्त्वप्रधान हैं यद्यपि उनमें भी तम और रज है इसीप्रकार मनुष्यमें भी सत् और तम हैं, परन्तु प्रधान रजोगुण लेकर एकमात्र मनुष्यजातिरूपसे व्यवहार किया है, वाचस्पति मिश्रने भी इस कारिकाकी व्याख्या करते हुए लिखा है कि आचार्यको यहां ब्राह्मणादि भेदोंकी विवक्षा नहीं थी और इसके न कहनेसे ब्राह्मणादि वर्णोंकी असिद्धि नहीं होती (संस्थानस्य चतुर्ष्वप्येकविधत्वादिति) संस्थान नाम अवयवोंका सन्निवेश यह इन चारों वर्णोंमें भेदको प्राप्त नहीं होता, अर्थात् सबके एकसे ही हाथ पैर होते हैं, हां इनकी प्रकृतियोंमें भेद हैं, पर हमने यहां संस्थानभेदको भेद माना है, इससे ब्राह्मणादि वर्णोंका इस स्थलमें परिगणन नहीं किया, इसीप्रकार पुराणोंमें भेदोंकी विवक्षा जाननी, क्योंकि सब भेद तो कोई गिन ही नहीं सकता और जो भेद गिनाये हैं उनमें भी हजारों अवान्तर भेद रह गये हैं, अवान्तर भेदोंमें ब्राह्मणादि वर्णोंका प्रवेश होता है बहुतसे पुराणोंमें सृष्टि-विभागमें यह भेद कहे भी हैं,वह हमने शुद्र वाक्य ग्रन्थके आरम्भमें दिखाये भी हैं, स्वयं वेदमन्त्रोंसे ही वर्णविभाग दिखाया गया है, तब फिर इसमें शंकाका स्थल ही कहां है इससे जहां कहीं सृष्टिके आरम्भमें अवान्तरभेद न दिखाया गया हो, वहां भी इन वर्णोंकी योनिसिद्धता किसी प्रकार विनष्ट नहीं होसकती, विचारशील पुरुष इस बातको समझ सके हैं । और जो कहते हैं कि, योनसिद्ध भेदवाले पशु गौ अश्वा-दिमें दूसरेका कार्य दूसरे अनुष्ठान नहीं कर सकते, इनके भेदविज्ञानमें बालकको भी शंका नहीं होती कारण कि उनके भेद प्रत्यक्ष ही सिद्ध हैं । इनमें विजातीय पुरुषोंसे विजातीय स्त्रियें सन्तान नहीं प्रगट कर सकतीं और जो कोई खिच्चडआदि संकरजातिका पशु होता है वह इन दोनोंसे अत्यन्त विजातीय होता है । परन्तु यह बात ब्राह्मण क्षत्रियादिमें नहीं देखी जाती उनमें सुशिक्षित शूद्र भी ब्राह्मण कर्म करनेमें समर्थ होता है, कर्मभेदके विज्ञानके सिवाय इनमें किसीप्रकारका भेद विदित नहीं होसकता, वर्णान्तरोंमें भी वर्णान्तरोंसे उत्पन्न हुई सन्तति उनके स्वरूपके समान ही होती है इससे यह जातिभेद योनिसिद्ध नहीं होसकता । यह बात भी समीचीन नहीं है अब भी बहुतसे शूद्र ब्राह्मणकर्म करते हुए देखे जाते हैं, यह बात कही जाय तो प्रश्नकर्ता स्वयं ही शूद्रको ब्राह्मणके कर्म करनेवाला कथन कर्ता है । श्रुतिस्मृतिमें ब्राह्मणोंके कर्म देखो--

यस्त्वेवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे । (श्रुतिः)
(यजु० ३१ । २१)
देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः । ते मंत्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद्ब्राह्मणदेवताः ॥ (स्मृतिः)

जो इसप्रकारसे ब्राह्मण जानता है देवता उसके वशमें हैं और भी कहते हैं सब जगत् देवके अधीन देवता मन्त्रोंके अधीन हैं और वे मन्त्र ब्राह्मणोंके आधीन हैं इससे ब्राह्मण देवता हैं अर्थात् इस प्रवर्तमान प्राकृतिक जगच्चक्रको जो यथावत् जानकर यथेच्छ अन्यथा प्रवृत्त होसकै यही ब्राह्मणका कार्य है। किस शूद्रने इसका अनुष्ठान किया है यदि कोई कहै कि,जगच्चक्रका अन्यथा अनुष्ठान तो अब कोई ब्राह्मण भी नहीं करसकता तो यह भी कथन ठीक नहीं होसकता । कारण कि,हमारी यह वर्णव्यवस्था इस कालके लिये तो प्रस्तुत नहीं हुई किन्तु सार्वकालिकी है, सब वर्णोंके कर्म क्या २ हें जब कि हम इसका निर्णय करनेमें असमर्थ हैं, मनसे भी नहीं निर्णय कर सकते, तब वर्ण परिवर्तनका आग्रह किसप्रकार उचित

हो सकता है, कोई भी जब इस कर्मव्यवस्थाको दूर नहीं कर सकता, तब इसकी व्यवस्थाके नियम दृढ करनेमें ही प्रवृत्त होना चाहिये, वर्णभेदका परिज्ञान कर्मसे नियुक्त है । परन्तु वर्णभेदका प्रकृतिभेद मूल है, प्रकृतिभेदका कर्मभेद मूल है । यहां भी जात्यन्तरका समागम जात्यन्तरको उत्पन्न करता है । वह संकर जाति स्मृतियोंमें देख लो, गौ अश्वादिके भेदके समान हमको इष्ट नहीं है ऐसा हम पूर्वमें कह चुके हैं । और जो कोई मनुका यह वचन देते हैं कि 'शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्' अर्थात् शूद्र ब्राह्मणताको और ब्राह्मण शूद्रताको प्राप्त होता है यह उनके वचन हैं जिन्होंने सर्वथा मनुका शास्त्र नहीं देखा । वर्णसंकर प्रकरणमें लिखा है—

शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः श्रेयसा चेत्प्रजायते । अश्रेयां श्रेयसीं जातिं गच्छत्यासप्तमाद्युगात् ॥ (मनु० १० । ६४)

अर्थात्--ब्राह्मणसे शूद्रकन्यामें उत्पन्न हुआ पारशव वर्ण होता है यदि यह कन्या हो और ब्राह्मणसे विवाही जाय उसके कन्या हो और वह भी ब्राह्मणसे विवाही जाय तो सातवीं कन्या भी ब्राह्मणसे विवाही जाय तो ब्राह्मणको उत्पन्न करती है, सातवीं पीढीमें माताका दोष दूर होकर वीजमें स्पष्ट ब्राह्मणत्व आता हैं, इस सातके वीचकी कन्यायें संकर जातिको उत्पन्न करती हैं । यहां 'प्रजायते' इस पदसे कन्याकी परम्पराई दिखाई देती है कारण कि, प्रजनन स्त्रियोंमें ही होता है, न कि पुरुषोंमें, इसी प्रकार सातवीं ब्राह्मण कन्या शूद्रको उत्पन्न करती है, इस प्रकार सातवीं पीढीमें शूद्र ब्राह्मण और ब्राह्मण शूद्र हो जाता । इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्यमें भी जानना । यही वातको महर्षि याज्ञवल्क्यजी कहते हैं—

जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः पञ्चमे सप्तमेऽपि वा । याज्ञवल्क्यस्मृतिः आचारा० ९६ ।

ब्राह्मणसे क्षत्रिया और वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्नका श्रेयके संपर्कसे पांचवें जन्ममें पिताके तुल्य वर्णकी प्राप्ति होती है, और शूद्रामें ब्राह्मणसे उत्पन्नका सातवें जन्ममें जात्युत्कर्ष होगा यह मिताक्षरामें स्पष्ट कहा गया है इससे प्रसंग देखनेसे मनुजीके श्लोकका यही अर्थ संभावित होता है कारण कि, यहां संकर जातिका प्रकरण है, वर्णसंकरके विषयमें जो पिताका ब्राह्मण्य है वह सातवें युगमें माताका दोष दूर होनेसे शुद्ध दिखाई देगा ,नया ब्राह्मणत्व प्राप्त नहीं होगा कारण कि, वीजके सम्बन्धसे महर्षियोंद्वारा वहुतसे दूसरे वर्णकी स्त्रियोंमें ब्राह्मण सन्तति जन्मी हैं, परन्तु सामान्यरूपसे शूद्रोंको ब्राह्मणत्वकी प्राप्तिका कोई भी दृष्टान्त नहीं है, ऐसा हम पहले कह चुके हैं । मनुजीने यथास्थलमें वर्णव्यवस्था योनि सिद्धही स्वीकार की है इसको हम कई वार कहचुके हैं 'शूद्रो ब्राह्मणतामेति' यह श्लोक तो शुक्रशोणितकी अनुवृत्ति लेकर पिता वा माताके रजोवीजके दोषसे वर्णान्तरता स्वीकार करता है, तव कर्म वादियोंके तो यह सर्वथा प्रतिकूल ही पडता है और जातिको योनिसिद्ध मानता है । यदि कर्मप्रधान वर्णव्यवस्था होती तो ब्राह्मणके व्याहनेमात्रसे ही शूद्रकन्या ब्राह्मणी होजाती और उसके पुत्रोंकी ब्राह्मणता सिद्धिमें सातवें पांचवें जन्मकी आवश्यकताका विचार क्या था । जब कि, ब्राह्मणसन्तति क्षेत्रदोषसे सातवें जन्ममें शुद्ध ब्राह्मणत्वको प्राप्त होती है, तो शूद्रोंके ब्राह्मणत्व होनेकी तो कथाही क्या है । इससे 'शूद्रो ब्राह्मणतामेति' इसमें भी जन्मसे ही वर्णकी व्यवस्था विदित होती हैं यह वात निर्विवाद है ।

और जो कोई आग्रह परतन्त्र होकर कहते हैं कि, ब्राह्मणसे शूद्रोंमें उत्पन्न हुआ (अश्रेयान्), किसी प्रकार ब्राह्मणीके पुत्रसे निकृष्ट होकर यदि (श्रेयसा) कल्याणरूप धर्माचरणसे (प्रजायते) युक्त हो तो

(सप्तमे) सातवें (युगे) वर्षमें (श्रेयसी) पिताकी तुल्य जातिको प्राप्त होता है । और यह सातवां वर्ष उपनयनकालका बोधक है; इससे स्वकालमें उपनयन होने और वेदपाठ करनेसे उसमें द्विजकुमारोंसे कोई अविशेषता नही; उपनयनके बलसे शूद्र भी ब्राह्मण होजाता है, विना उपनयनके द्विजकुमार भी शूद्र है. यही अर्थ यहां ठीक है; युगशब्दका अर्थ वर्ष ही लेना चाहिये युगशब्दका जन्मका अर्थ लिया जाय इसमें कोई प्रमाण नहीं, पर वर्ष वाचकताका प्रयोग देखा जाता है । कारण कि, वर्षके दो अयन युग्म कहलाते हैं । वर्षके अवयव चारमास चतुर्मासादि भी मासपक्षादि युग्मरूप हैं आठवें वर्षमें उपनयन कहनेसे वर्ष ही युग शब्दसे ग्रहण करना चाहिये और भी-

तपोबीजप्रभावैस्तु ते गच्छन्ति युगे युगे । उत्कर्षं चापकर्षंञ्च मनुष्येष्विह जन्मतः ॥ यस्माद्द्विजप्रभावेण तिर्यग्जा ऋषयोऽभवन् । पूजिताश्च प्रशस्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्यते ॥ (मनु. १० । ७२)

वे मनुष्योंमें इसी जन्ममें तप और वीर्यके प्रभावसे उत्कर्ष और अपकर्षताको प्राप्त होते है जिससे कि बीजके प्रभावसे तिर्यक् जातिमें ऋषि हुए पूजित और प्रशस्त भी हुए, इससे बीजकी ही प्रधानता है, इससे शूद्रको ब्राह्मण होना कर्मसे ही उचित है, इत्यादि आपत्तिकारोंका यह सब कथन अनर्गल है । कारण कि, पूर्व श्लोकमें 'प्रजायते' पद पढा है, जो प्रपूर्वक जन् धातुका गर्भग्रहणमें प्रयोग होता है ।

सब श्रुति स्मृतिमें आठवें वर्षमें यज्ञोपवीतकालका निर्णय है सातवें वर्षसे आठवें वर्षके ग्रहण करनेमें कोई प्रमाण ही नहीं है । और जब गुणकर्ममूलक जातिविभाग है तो शूद्रामें उत्पन्नमात्र होनेसे उसमें अश्रेयस्पना कैसे मनुजीने कहा, सातवें वर्षसे पहले अश्रेयस् कहनेवाले उसमें कौनसे गुण कर्म होंगे और जो ऐसा अर्थ करनेवालोंके अनुसार उपनयनके उपरान्त ही श्रेयस्त्व प्राप्त होता है तो फिर उसके विशेषानुकीर्तनसे फल ही क्या ? यज्ञोपवीतके उपरान्त सब ही श्रेष्ठ हैं उपनयनसे पहले बालक कामचार होता है, क्षीरकण्ठवाले उसके लिये श्रेय वा अश्रेय कहनेकी क्या आवश्यकता है ? इस कारण यह सर्वथा विपरीत कल्पना है । यदि शूद्र ब्राह्मण होजाता है ब्राह्मण शूद्र होजाता है, यही बात सर्वथा अर्थमें मानी जाय तब भी यह साकांक्ष पद है इसमें यह विचार करना उचित है कि, क्यों शूद्र ब्राह्मण हो जाता है, वह हेतु क्या है और जबतक उसका पूर्वापर न देखा जाय तब तक उसमें गुणकर्म मिलानेका उपयोग कैसे कोई कह सकता है ? प्रसंग देखनेसे पूर्वापरश्लोकोंका मिलान करनेसे 'श्रेयसा चेत्प्रजायते' इस श्लोकके अनुसार इस पूर्वश्लोकके हेतु निवारणमें कोई भी समर्थ नहीं है, पूर्वापर विरुद्ध अर्थ कि शूद्र ब्राह्मण होजाता है तीन कालमें भी सम्बन्धवाला नहीं होसकता और देखो-

अनार्यायां समुत्पन्नो ब्राह्मणात्तु यदृच्छया । ब्राह्मण्यामप्यनार्यात्तु श्रेयस्त्वं केति चेद्भवेत् ॥ जातो नार्यामनार्यायामार्यादार्यो भवेद्गुणैः । जातोऽप्यनार्यादार्यायामनार्य इति निश्चयः ॥ तावुभावप्यसंस्कार्याविति धर्मो व्यवस्थितः । वैगुण्याज्जन्मना पूर्व उत्तरः प्रतिलोमतः ॥ (मनु १०।६६।६७।६८)

अर्थात्-एक तो ब्राह्मणसे शूद्रामें उत्पन्न हुआ दूसरा शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुआ इन दोनोंमें कौन श्रेष्ठ है यदि ऐसा सन्देह हो तो बीजकी उत्तमतासे शूद्रामें ब्राह्मणसे उत्पन्न साधु शूद्र होता है,जो ब्राह्मणीमें उत्तम शूद्र श्रेष्ठ कौन हो इसपर कहते हैं॥६६॥ शूद्रास्त्रीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हुआ पुत्र यदि स्मृतियोंमें कहे हुए

पाकयज्ञादि गुणोंसे हो तो आर्य ही होता है और शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुआ पुत्र प्रतिलोमज होनेसे अनार्य ही होता है यह शास्त्रकी मर्यादा है ॥ ६७ ॥ वे दोनों पारशव और चाण्डाल संस्कारके योग्य नहीं यह शास्त्रकी मर्यादा है। पहला पारशव जन्मके दोषसे और दूसरा चाण्डाल प्रतिलोमज होनेसे संस्कारके योग्य नहीं है। इन श्लोकोंसे भगवान् मनुजी जन्मसे ही वर्ण स्वीकार करते हैं वर्ण हेतुमें जन्म ही मुख्य है। फिर कथनमात्रसे शूद्र कैसे ब्राह्मण हो सकता है और जो शूद्रादिका उपनयनादि संस्कार स्वीकार करते हैं वह भी इन प्रमाणोंसे परास्त होते हैं। जो युगशब्दका अर्थ वर्ष कल्पना करते हैं, जन्मके समान उनके पास इसका कोई प्रमाण नहीं है, वर्षके अर्थमें तो सर्वथा ही प्रमाण नहीं, उलटा हास्य प्रतीत होता है, इसी प्रकार सात पक्षादिका उनका अर्थ है, हमारे अर्थ किये हुएमें सातवीं पीढीमें कन्यारूप वर्ण शुद्ध ब्राह्मणको उत्पन्न करेगा, इसमें 'प्रजायते' आदि पदोंपर ध्यान देना चाहिये और वादीके अर्थमें तो साहसके सिवाय कुछ भी सार नहीं है और जो (तपोबीजप्रभावेण०) यह श्लोक प्रमाण देते हैं उनको विचार करना चाहिये, तपस्यादिके प्रभावसे ही भगवान् व्यासादिकने एक ही जन्ममें उत्कर्षताकी प्राप्ति की, पर विना तपस्याके तो सातवें जन्ममें उत्कर्ष होहीगा यह तो निश्चय ही है और उसमें भी बीजकी उत्कर्षताका विचार भी न भूलना चाहिये, यही मनुके सब टीकाकारोंका मत है। इसी प्रकार-

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ।
अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ।

अर्थात्-धर्माचरणसे नीच वर्ण उच्च वर्णको और निकृष्ट आचरणसे ऊंच वर्ण नीच वर्णको प्राप्त होते हैं, यह जो आपस्तम्बके वचन हैं। यह भी मनुके समान अर्थवाले अनुलोम और संकर जातिके क्रमसे जन्मान्तरमें उत्कर्ष अपकर्षके साधक हैं। 'जातिपरिवृत्तौ' से यह स्पष्ट है कि, उत्तम जन्मका वारंवार सम्बन्ध होनेसे (जननं जातिः) जननार्थक जातिशब्द उपादान होनेसे, कि धर्माचरणसे जन्मान्तरमें उत्कर्षताकी प्राप्ति होगी और धर्माचरणसे जन्मान्तरमें उत्कर्षवर्णकी प्राप्ति होती है, यह उपनिषदादिके प्रमाणोंसे पहले कथन कर चुके हैं। इस जन्ममें तो उत्कर्षताकी प्राप्ति कोई शास्त्र सम्पादन नहीं करता, यदि इसी जन्ममें इन वचनोंसे सिद्धि होती तो 'जातिपरिवृत्तौ' पढनेकी अवश्यकता क्या थी, यह पद असंगत होजाता, इससे वर्णव्यवस्था योनिजन्मसे ही सिद्ध है गुण कर्मसे नहीं है यह सिद्धान्त है।

और जो सत्यकाम जाबालको वेश्यापुत्र कहते हुए कहते हैं कि सत्यके आश्रयसे उसने उसको ब्राह्मण समझ लिया इससे जातिविभाग गुणकर्मसे जाना जाता है। कारण कि, जब ऋषिने उसका गोत्र पूछा तब माताने उसको उत्तर दिया कि-

बह्वहं चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वामलभे साहमेतन्न वेद । यद्गो-त्रस्त्वमसि जबाला तु नामाहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसीति सोऽहं सत्यकामो जाबालोऽस्मि भोः ॥ (छां० खं० ४ । ४)

इस कथनसे युवावस्थामें बहुतोंके परिचरणसे पुत्रके गोत्रके न जाननेके उत्तरसे जबालाका वेश्यात्व प्रत्यक्ष है, नहीं तो क्यों वह अपने पतिका गोत्र न जानती और 'बहु चरन्ती' पदसे बहुतोंके समीप रहनेवाली ही बात प्रगट होती है, गौतमने उसको सत्यवाक् जानकर यह कहा कि, (नैतदब्राह्मणो विवक्तुमर्हति, समिधं सोम्य आहर, उपत्वानेष्ये, न सत्यादगाः) अर्थात्-अब्राह्मण ऐसा नहीं कह सकता, हे सोम्य समिध ले आ, मैं तेरा उपनयन करूंगा, जो कि, तैने सत्य नहीं त्यागा, इससे वेश्यापुत्र होना

सिद्ध है, केवल सत्यरूप गुणाश्रयसे गौतमने उसका यज्ञोपवीत किया इससे कर्ममूलक वर्णविभाग विदित होता है और भी लिखा है-

पुत्रो गृत्समदस्यापि शुनको यस्य शौनकः। ब्राह्मणा क्षत्रियाश्चैव वैश्या शूद्रास्तथैव च॥ (हरिवंश० २९। ८)

अर्थात् गृत्समदके पुत्र शुनक उनके शौनक और उसके वंशमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य प्रगट हुए इत्यादि पूर्वमें लिख चुके हैं इससे वर्णविभाग कर्ममूलक दिखाई देता है। यद्यपि कुछ समाधान इसका पूर्वमें किया है कुछ अब भी करते हैं सत्यकाम जाबालकी कथा भी वर्णव्यवस्थाको जन्मसे ही प्रतिपादन करती है, जब कि पहले गुरुजन गोत्र ज्ञानसे ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न हुएकी सम्यक् प्रकारसे परीक्षा करते थे तब शिष्य करते थे फिर गुणकर्ममूलक जातिविभागकी तो कथा ही क्या है और यदि गुणकर्ममूलक जातिविभाग होता तो गौतम उससे गोत्र क्यों पूछते क्या उनकी इच्छामात्रसे वह ब्राह्मणत्वमें प्रविष्ट होकर यज्ञोपवीती नहीं होसकता था, इससे गोत्रका पूछना जन्मसे ही जाति सिद्ध करता है, जन्मसे ही वर्णविभाग होनेसे गोत्र प्रवरकी व्यवस्था हो सकती है, अन्यथा गुणकर्मानुसार सब ही ब्राह्मणकर्मा ब्राह्मण हो सकते हैं, फिर गोत्र प्रवरकी व्यवस्थाकी आवश्यकता क्या है और गोत्र-प्रवर श्रुतिस्मृति प्रतिपादित हैं। इससे वर्णविभाग जन्मसे ही सिद्ध होता है और जो सत्यसे उसको जाना इसका कारण यही है कि, असाधारण सत्यके आश्रयसे उसमें ब्राह्मणवीर्यसे उत्पत्ति जानकर स्फुटतासे उसका ब्राह्मणत्व समझ लिया, यहां ब्राह्मणजन्यत्व अनुमान ही स्फुट है न कि गुणकर्मसे, उसकी जातिका विभाग किया। अन्यथा उपनयनसे पहले तो उसमें ब्राह्मणत्वका सर्वथा अभाव है, बीजके प्रभाव और किसी उसके साथमें सत्यादि विशिष्ट गुणके विकाससे इस जन्ममें ब्राह्मणादि शब्दोंका व्यवहार होता है। और जवालाको वेश्या कहना नितान्त ही मूढता है (बहुपरिचरन्ती) का अर्थ 'अतिथीन्' बहुधा (परिचरन्ती) अर्थात् अतिथियोंके कार्यमें नियुक्त रहती थी, युवा अवस्थामें तू उत्पन्न हुआ था उसके उपरान्त ही पिताका शरीरपात होगया, मुझे गोत्रादि पूछनेका अवसर न मिला यह जबालाकी उक्तिका तात्पर्य है बहुत कहनेसे क्या है उपनिषद्के समयमें भी योनिकृत वर्णव्यवस्था थी गुणकर्मसे नहीं थी। कारण कि, उपनिषदोंमें लिखा है कि-'ये वै रमणीयाचरणाः ते रमणीयां योनियामद्येरन्' (ब्राह्मणयोनिं वा क्षत्रिययोनिं वा। छान्दो० ५। १० खण्ड) अर्थात् अच्छे कर्म करनेवाले ब्राह्मणयोनि क्षत्रिययोनि, वैश्ययोनिको प्राप्त होते हैं। इन वचनोंसे भी योनिकी प्रधानता पाई जाती हैं, यह हम पूर्व भी कह चुके हैं। और शौनकके कुलमें जो चारों वर्णोंके उत्पन्न होनेकी बात लिखी है यह बात भी हमारे सिद्धान्तके प्रतिकूल नहीं है। एक ही महर्षिकी भिन्न वर्णोंकी भार्याओंमें चार वर्णोंकी उत्पत्तिका सम्भव है, कारण कि, पहले उत्तम वर्ण अपनेसे अवर वर्णोंकी कन्या भी ग्रहण करते थे। मनुने ब्राह्मणकी चार भार्या वर्णन की है, वे ही यह संकर जातिके पुरुष हैं, कहीं विशेषता होनेसे पिताके वर्णके कहीं सामान्यतासे माताके वर्णके स्मृतियोंमें गिनाये हैं, कलिमें इस प्रकारके विवाहका सत्य ही निषेध है। पुरातन कालमें सृष्टिके आरम्भमें किसी महर्षिके उत्कट गुणसे कहीं उत्कृष्ट वर्णकी प्राप्ति है वह कोई असाधारण बात है परन्तु श्रुति स्मृतिको लेकर जो ऋषियोंने व्यवस्था की है वह सबको ही अनिवार्य है। कारण कि, जिस समयतक सृष्टिका आरम्भ था अनुष्ठान करनेवालोंका अभाव था उस समय धर्मव्यवस्थाका दृढबन्धन नहीं था व्यवस्थाके आरम्भमें कहीं कहीं विशृंखल भी होता है इसे कौन नहीं मानता, परन्तु उस समयकी बात उठा कर विशृंखलताका

अचार नितान्त ही विचार हीनताकी बात है इससे सतयुगमें किन्ही वीतहव्यादिकोंका किसी एक विशिष्ट कारणसे वर्णका परिवर्तन पुराणमें लिखा हो तो भी दृढ व्यवस्थाकी सिद्धिके कारण इससमय वह कर्तव्य उचित नहीं है। यह विचारशीलोंको सोचना चाहिये और जो महानुभाव ऋषि आदिमें मंत्रसूक्तको देखकर ऋषिआदिमें वर्णव्यवस्थाका परिणमन आरोपण करते हैं उनको तो नमस्कार है वहां वह समय और कहां यह बुद्धिमानोंको कुछ तो सोचना चाहिये।

और जो वज्रसूची उपनिषद्को लेकर शमदमादि गुणसम्पन्न ब्राह्मण हैं इस बातका उल्लेख करतेहैं। कमसे कम उनको इस बातका तो विचार करलेना चाहिये कि उदनिषदोंका विषय क्या है उनमें आत्मज्ञानियोंको ही ब्राह्मणत्व स्वीकार किया है यदि ऐसा होजाय तो ब्राह्मणजातिके श्रौतस्मार्त कर्मका लोप होजायगा, ब्राह्मण हुए विना आत्मज्ञानमें उसका अधिकार नहींहै और जो महाभारतमें लिखा है। कि—

ब्राह्मणः पतनीयेषु वर्तमानो विकर्मसु। दाम्भिको दुष्कृतप्रायः शूद्रेण-सदृशो भवेत्॥ यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थितः। तं ब्राह्मण-महं मन्ये वृत्तेन हि भवेद्द्विजः॥

अर्थात् यदि ब्राह्मण विकर्मोंमें पड़कर दाम्भिक होजाय तो वह दुष्कृत करनेके कारण शूद्रके समान हो जाता है, और जो शूद्र इन्द्रियजित् सत्यधर्ममें सदा स्थित हो उसको मैं ब्राह्मण मानता हूं, आचरणसे ही ब्राह्मण होताहै। इन श्लोकोंमें स्पष्ट यह लिखा है कि, ब्राह्मण शूद्रके सदृश होजाता है न कि स्पष्ट शूद्र होताहै, यदि जातिविभाग कर्ममूलक होता तो उसको स्पष्ट शूद्रही कहना उचित था, सदृशकी आवश्यकता क्याथी। इसीप्रकार प्रशस्त गुणयुक्त शूद्रको ब्राह्मण कहना यह है कि मैं मानता हूं, यहां वास्तविक अर्थ नहीं है, जसे कोई कहै कि, मैं उसको चन्द्रमुखी मानता हूं, इसका अर्थ यह नहीं कि, लोक उसको चन्द्रमुखी मानते हैं, यहां नीच ऊंचका वर्णन कर्मकी स्तुतिके निमित्त है, कर्मसे जातिविभाग है, इसनिमित्त नहीं है। इससे कर्ममूलक जातिविभाग सर्वथा असिद्ध है। यदि कर्ममूलक जातिविभाग होता तो यह वाक्य कैसे कहा जाता कि ब्राह्मण यदि निकृष्ट कर्म करै तो शूद्र सदृश होजाय वह तो शूद्र ही है वहां ब्राह्मण पद लिखनाही अनावश्यक है कारण कि, वह तो कर्मानुसार शूद्र ही है। और जब ब्राह्मण विकर्ममें स्थित हुआ शूद्रवत् हो जाता है तो इससे अधिक उसका योनिसिद्ध ब्राह्मण होनेका और प्रमाण क्या चाहते हो इस प्रकारके वहुतसे वाक्योंकी व्यवस्था पूर्वमें करचुके हैं।

यदि कोई दयानंदका मत अवलम्बन करके कहै कि, हम जातिविभाग कर्ममूलक है इस विषयमें केवल मंत्रभागही प्रमाण मानेंगे तो उनके विषयमें हमको यह कहना है कि, वह कौनसा मंत्र है जिसमें यह बात लिखी हो कि जाति विभाग गुणकर्ममूलक है और यदि वालकके समान किसीने ऋगादि भाष्यभूमिकामें लिखा है कि, (पृ० २३३ सं० १९३४)

ब्रह्म हि ब्राह्मणः क्षत्रं हीन्द्रः, क्षत्रं राजन्यः॥ (श. कां. ५ अ. १ब्रा. १)

इसके अर्थ यों प्रकाशित किये हैं कि, परमेश्वरकी उपासनासे वर्तमान विद्यादि उत्तमगुणसे युक्त पुरुष ब्राह्मण होनेके योग्य है। इस प्रकारसे जो पुरुष परमैश्वर्यमान् शत्रुओंके क्षय करनेमें तत्पर युद्धमेंउत्सुक प्रजापालनमें तत्पर हो वह क्षत्रिय हो सकता है इत्यादि मंत्रोंके स्थानमें जो यह ब्राह्मण वाक्य लिखे हैं, यह भी गुणकर्मके योगसे ब्राह्मणत्वके साधक नहीं यहां तो हि शब्दसे यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि ब्राह्मण इस प्रकारका होता है, क्षत्रिय इस प्रकारका होता है, यह इन वाक्योंका

तात्पर्य है न कि, इन गुणोंवाला जो हो वह ब्राह्मण होता है, और इन वाक्योंका तात्पर्य पहले निरूपण करचुके हैं कि, ब्राह्मणमें अग्निदेवताके सम्बन्धसे ब्राह्मण्य है, बलके देवता इन्द्रके सम्बन्धसे क्षत्रियत्व हैं, इस अर्थमें भी सत्य ही कारणके गुणोंसे कार्यगुण आरंभ होते हैं इस न्यायसे वर्णोंकी स्थिति योनि सिद्ध ही है। ऋगादि संहिताओंमें भी कर्ममूलक वर्णविभाग नहीं देखते हैं। किंतु 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' 'पद्भ्यां शूद्रोऽजायत' इत्यादि उत्पत्ति मात्रसे ही ब्राह्मणादि वर्णोंका विधान है, और जो इसका प्रसिद्ध अर्थ छोडकर कल्पित अर्थ करते हैं उनसे पूछना है कि, आपके अर्थमें प्रमाण क्या है, जो वे० भू० में लिखा है कि इस पुरुषके मुख जो विद्यादि मुख्यगुण हैं सत्यभाषण उपदेश आदि जो कर्म हैं, उनसे ब्राह्मण उत्पन्न हुआ वलवीर्यादि लक्षणयुक्त क्षत्रिय, कृषि व्यापारादि गुण मध्यम उनसे वैश्य, पाद इन्द्रिय नीचत्व अर्थात् जडबुद्धि इत्यादि गुणोंसे सेवागुण विशिष्ट शूद्र हुआ, इन वाक्योंसे परमेश्वरके विद्यादि गुणोंसे ब्राह्मणादिकी उत्पत्ति सिद्ध होती है, इसमें भी यह विचार है कि, आपके दर्शनसे यह जीव ईश्वरका अंश ईश्वरसे उत्पन्न है नहीं। अथवा जीव प्रकृति ईश्वरसे पृथक्भूत है आपके मतमें जीव प्रकृति पृथक् २ हैं तो फिर ईश्वरके विद्यादि गुणोंसे जीवोंके विद्यादि गुणोंकी उत्पत्ति कसे हो सकती है कारणगुणोंसे ही कार्यगुणोंकी उत्पत्ति होती है यह सिद्ध है। यदि उपदेशके द्वारा जीवमें परमेश्वरने वे गुण उत्पन्न किये हों तो ब्राह्मण मुख है यह उपचार संभव पहला दोष है, उपादानगुणोंका उपादेयगुणोंसे अभेदोपचारके दर्शनमें भी इतरका असंभव है, विद्यादिके उपदेशमें किसीप्रकार हेतुकी संभावना होती भी हो तथापि बल व्यापारादिके उपदेशमें हेतुकी गन्ध भी नहीं है, तब क्षत्रिय भुजा हैं यह उपचार तो सर्वथा ही असंभव है, सर्वथा असंगत अर्थ है और जडबुद्धि आदिके गुणोंका शूद्रमें उपदेश हुआ यह तो बहुत ही विचित्र है, समान उपदेशमें किसीको कुछ किसीको कुछ यह बडी विलक्षण बात है, इस भेदका कारण क्या है यदि कहो कि, स्वभावसे ही भिन्न २ गुणोंकी उत्पत्ति है, तो स्वभावही ब्राह्मणादि वर्णविभागका हेतु होनेसे ईश्वरके उपदेशकी असंगति प्राप्ति होगी, इस समय भी किसी वर्णको ईश्वरका साक्षात् उपदेश होता है, उन २ गुणोंका ईश्वरके गुणोंसे जन्यत्व असंभव ही है, इससे यह नवीन अर्थ किसीप्रकार संगतिको प्राप्त नहीं होते इससे जो हमने पहले अर्थ किये हैं वही ठीक हैं, ईश्वरांश होनेसे जीवके वे २ गुण ईश्वरके गुणोंके द्वारा प्राप्त होनेसे यह जीवके गुणोंकी समूहता ईश्वरके गुणोंसे जन्य होनेसे सृष्टिकी आदिमें स्वतःही आरंभ हुई और उसके आगे पिता पुत्रकी परम्परासे पुत्रादिकोंमें उन २ गुणोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती गई, इससे भी वर्णविभाग योनिसिद्ध ही है।

यदि कहो कि, पिताके गुण पुत्रमें आते हों यह बात सर्वथा असंभव है, पुत्र और पिताका कार्यकारणभाव शरीरमात्रकी निष्ठावाला है, जीवनिष्ठ किसी प्रकार नहीं है, पिताके जीवसे पुत्रके जीवकी तो उत्पत्ति नहीं है, सो स्थूलशरीरके जो कुछ गुण हैं वह पुत्रादिके शरीरमें प्राप्त होसकते हैं, परन्तु विद्यादिक शक्तिविशेष तो कभी किसी पुत्रमें नहीं आसकती, इससे तुम्हारा वर्णविभाग योनिसिद्ध सोपपत्तिक नहीं इसपर कहते हैं—

यह सत्य है कि जीवोंका परस्पर कार्यकारणभाव नहीं है और यह गुणभी वर्णत्वकी प्रयोजकता करनेवाले जीवमात्रमें निष्ठावाले नहीं होसकते, कारण कि, वेदान्त सिद्धान्तमें परमात्मा और जीवात्मा दोनों ही निर्गुण वर्णन किये हैं, इसकारण स्थूल सूक्ष्म कारण तीन शरीरोंसे युक्त अथवा तीनोंसे अन्यतम विशिष्ट जीवमें उन उन गुणोंकी स्थिति मानी जायगी। यद्यपि स्थूल शरीरमें ही पिता पुत्रका कार्यकारणभाव मुख्य है, तो भी कस्तूरी लगे कपडेके समान उसकी गन्ध सूक्ष्मादि शरीरोंकी शक्ति विशेषसे पुत्रादिकमें अवश्य

गमन करती है, यह अर्थ प्रत्यक्ष सिद्ध किसीसे खंडनके योग्य नहीं है, इसीसे 'वाचं मे त्वयि दधानि 'मनो मेत्वयि दधानि' अर्थात्--तुझमें वाणी और मन स्थापन करता हूँ इत्यादि श्रुतियोंका अर्थ भी संगत हो सकता है, इससे दर्शन तथा मन्त्र द्वारा भी वर्णविभाग योनिसिद्ध है, और मन्त्रोंमें भी वर्णविभागके समय ब्राह्मणादिका वर्णविभागमें उत्कर्ष सुना जाता है यथाहि-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह । तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ (अ० २० । २५ यजु.)

न ब्राह्मणो हिंसितव्योऽग्निः प्रयतनोरिव । सोमो ह्यस्य दायादः इन्द्रो अस्याभिशास्तिपाः ॥) अथर्व अ० ५ । १८।६)

अर्थात्--जहां ब्राह्मण और क्षत्रिय जाति साथ २ विचरती हैं, जहां अग्निके साथ देवता निवास करते हैं उस पवित्र पुण्य-लोकको मैं देखूं। ब्राह्मणकी कभी हिंसा नहीं करनी चाहिये यह अग्निके समान पवित्र है सोम इसका दायाद और इंद्र इसका कल्याणरक्षक है, इन मन्त्रोंकी आलोचनासे भी वर्णविभाग योनिसिद्ध ही है गुणकर्ममूलक जातिभेदमें कोई तो प्रमाण होना चाहिये था। इसके अतिरिक्त 'ब्राह्मणोऽस्य मुखम्। पद्भ्यां शूद्रो अजायत, न ब्राह्मणो हिंसितव्यः' इत्यादि वचनोंसे स्वयं सिद्ध है कि जातिविभाग योनिसिद्ध है।

इसके सिवाय शाब्दिक आचार्योंके शिरोमणि महर्षि पतंजलि भी ब्राह्मण वर्णकी जाति योनिसिद्धि ही मानते हैं ब्राह्मण शब्दकी सिद्धिके समय वह कहते हैं 'ब्राह्मोऽजातौ' कि, जातिमें ब्राह्मण और अजातिमें ब्राह्मशब्द होता है, महर्षि कात्यायन भी कहते हैं 'शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिरिति' इस वार्तिकमें शूद्र पदको जातिवाचक कहते हुए पुंयोगकी व्यावृत्तिम जाति ग्रहण करके शूद्रकी भार्या भी शूद्रजाति होती है, यह स्फुट कथन करते हुए जन्मसे ही वर्ण विभागकी सिद्धि करते हैं, यह वाचकवृन्द स्वयं ही जान सकते हैं, 'सकृदाख्यातनिर्ग्राह्या' इससे जाति लक्षणवृषलादिमें लेते हुए 'योनिर्विद्याकर्मचेति' इत्यादि पूर्वोक्त स्मृति और मन्त्रोंमें जब वर्णविभाग योनिसिद्ध है तब भाष्यकारादिकोंकी क्या कथा है, कि गुण कर्ममूलक वर्णविभाग निरूपण कर, यदि कहो आचार्योंने यह ब्राह्मणादिमें जातिव्यवहार आरोपण किये हैं, वास्तवमें नहीं तब यह प्रश्न होसकता है कि यह आरोप किस हेतुवाला है, कहीं सादृश्यके सिवाय अहेतुक आरोप तो सुना नहीं गया उन २ कर्मोंसे सम्पन्न बहुतसे ब्राह्मणादिकोंमें बुद्धिपूर्वक जातिके सादृश्य आरोप किया होगा स्वतः ही विना विचारे आरोपसे तो कोई स्वरसता प्रतीत नहीं होती। जाति, गुण, क्रिया, यदृच्छा यह चार प्रकारकी उपाधि शाब्दिक आचार्य मानते हैं इससे भाष्यकारोंके मतमे भी शब्दोंकी चार प्रकारकी विधि है, यदि कर्मको ही प्रवृत्तिनिमित्तक मानकर ब्राह्मण आदि शब्द प्रवृत्त हों तो क्रिया शब्दत्व ही इनमें संगतिको प्राप्त होगा जातिशब्दत्व किसी प्रकार भी प्राप्त नहीं होगा, बहुतसे पाचकोंमें यह वचन क्रिया समान बुद्धिको प्रयुक्त नहीं करती, न कोई चित्तवाला पुरुष इसको जाति मानता है तब ब्राह्मण आदिका जातित्व जन्मसे ही सिद्ध होता है यह निर्विवाद सिद्ध है और जो कर्मपरायण लुहारादिमें जातिका व्यवहार है वह भी जन्मपरत्व ही है इस प्रकारसे श्रुति, स्मृति, उपनिषद् पुराण द्वारा वर्ण विभागकी सिद्धि जन्मसे ही सिद्ध होती है यह निष्कर्ष है।

जो लोग शास्त्रविचारको आगे न लेकर साहसमात्रसे वर्णव्यवस्थापर आक्षेप करते हैं कि, इससे देशको हानि पहुंची है, जो जैसा कर्म करे उसको वैसा ही समझ लेना चाहिये, इसपर बुद्धिमान् विचार कर सकते हैं कि, इसमें कितनी वर्णकी विशृंखलता हो सकती है एक ही कुलमें कितने वर्णविभाग हो जायंगे और एक ही जन्ममें कितने वर्ण वदलेंगे और फिर वर्णकी कोई व्यवस्था न रहनेसे संकीर्णताको प्राप्त होनेसे वर्णविभाग ही नष्ट होकर जाति ही नष्ट होजायगी। इतिहासादिके देखनेसे स्पष्ट विदित होता है कि, जिस समय भारतवर्षकी पूर्ण उन्नति थी उस समय यह जन्मसिद्ध जातिविभाग पूर्णरूपसे दृढ हो रहा था, यदि जातिविभाग ही उन्नतिका प्रतिवन्धक है तो पूर्वकालमें भारतकी उन्नति कैसे थी, हमारी समझमें तो वर्णविभागकी शिथिलता ही अवनतिका कारण है, जवसे वर्णोंने अपने २ कार्योंमें शिथिलता स्वीकार की उसी समयसे यह जाति परतन्त्रकी शृंखलामें वंधकर धर्मकी उदासीनतासे बौद्धादि विविध मत प्रचारका कारणभूत होकर अपना अस्तित्व खो वैठी।

वास्तवमें विद्यावृद्धिके विना ही जसा जिसके विचारमें आता है वैसा ही वह कहने लगता है और इतो भ्रष्ट ततो भ्रष्ट होकर कोइ भी सिद्धान्तका अवलम्बन नहीं कर सकते, हम नहीं कह सकते कुल परंपरागत जातिविभागको अनुभव करते हुए भी यह लोग इसके त्यागमें उन्नतिका साधन कैसे समझते हैं। फिर दूसरे इस वातका भी विचार इन लोगोंको करना चाहिये कि प्रत्येक वर्णका आहा विहार भिन्न २ प्रकारका है फिर एकके आहार दूसरेके अनुकूल भी नहीं है और भारतीय जन केवल इसी देशके उन्नतिसाधक नहीं हैं किन्तु परलोकमें भी उनका दृढतर विश्वास है, सो प्रत्येक वर्ण अपने विशुद्ध सत्वकी रक्षाके लिये और विरुद्ध संस्कारकी निवृत्तिके लिये सांकर्य आहारका सेवन नहीं करते, देशकी प्रकृतिको अनुसरण करके उन २ वर्णकी शक्ति वृद्धिके निमित्त भिन्न२ आहार विहारकी अपेक्षा रखते हैं। यह वात अप्राकृतिक नहीं है वहुत कह चुके हैं यहां इस कारण विस्तार नहीं करते और विचारनेकी बात है कि, इस प्रकार विवेकशील भारतवर्षमें वर्णविभागकी रीति किसी प्रका भी काल्पनिक नहीं होसकती, यदि एक ही कुलमें पिता पुत्रादिकोंमें भिन्न वर्णता हो तो उनके आहार विहारकी अनुकूलताका सामञ्जस्य किस प्रकारसे होसकता है, नये मतके कर्णधार भी इस विषयमें वहुत भूल कर गये हैं, यह तो सोचना चाहिये कि, ब्राह्मण आदिके पुत्र शूद्रत्व आदिको प्राप्त हुए अपने पिताके कार्य किस प्रकारसे निर्वाह कर सकते हैं, क्या ऐसा होनेपर पुत्रोंके विद्यमान होते हुए भी कुलोंके कुल नाश न हो जायंगे, मान लो कि, किसी ब्राह्मणका पुत्र शूद्रकर्मा होनेसे शूद्रके यहां पहुंचाया गया और उसके घर आनेयोग्य कोई वैसा कुमार न मिला तो एक वंश तो नष्ट होगया, ब्राह्मणका वीर्यरज हो तो भी पुत्र शूद्र वन गया, यह वर्णान्तरताकी प्राप्ति तो किसी असम्वद्ध पुत्रोंकी नहीं होसकती, अपने २ पुत्रोंका प्यार किस प्रकार नष्ट होकर दूसरोंमें होगा और यह कैसी समाज व्यवस्था होगी, कुछ बुद्धिमानोंको आंख खोलकर देखना चाहिये, कुल परम्परासे जो कारणगुण कार्यमें आये हैं, उनको छोडकर प्रकृतिके विरुद्ध इसका क्या परिणाम होगा, इसपर कुछ विचार तो होना चाहिये था। और जो इसपर यह कहते हैं कि, नहीं वहुतसे पुत्र दूसरे वर्णोंसे मिल जायंगे, जिनमें जैसी योग्यता होगी वैसे कुलोंमें पहुंच जायंगे, इससे जातिविभाग कर्मसिद्ध मानना ही उचित है और इसमें यह भी लाभ होगा जो कि उच्चवर्णमें जन्म होनेसे ही अपनेको कृतार्थ मान वैठते और श्रेष्ठ कर्म करनेसे विरक्त रहते हैं, यह दुरवस्था भी कर्मविभागसे जाती रहेगी और कर्मकी वात सदा जागती रहेगी, उत्पत्तिमात्रसे अपनेको उत्तम वर्ण होनेका अभिमान और इतर वर्णोंका उत्तम कर्म करनेपर भी अनादर यह वात जाती रहैगी और परस्पर प्रेम बढैगा इस कारण जन्मसिद्ध जातिविभागकी व्यवस्था ठीक नहीं है।

इसपर हमारा यह कहना है कि, इस समय दुर्भाग्यवश जो यह दोष जातियोंमें प्रवेश कर गये हैं, उन दोषोंको दूर करके मतिमानोंको सनातन पन्थकी रक्षा करनी चाहिये, न कि दोषविशेषकी संभावनासे सनातन व्यवस्थाको ही नष्ट कर देना चाहिये, अव्यवस्थामें वहुत दोष होते हैं, इस कारण उन दोषोंके दूर करनेको व्यवस्था दृढरूपसे बांधनी चाहिये, न कि ऐसा करना उचित है, कि जो कुछ थोडा वहुत अवशेष है उसको नष्ट कर देना चाहिये, जिस प्रकारसे समाजके नव्यजनोंको संस्कार अभीष्ट है और वह संस्कार सनातन परिपाटी है इस प्रकारसे वर्णव्यवस्था भी है, दोनों ही दलोंको संस्कारके लिये विशेष करके यत्न करना चाहिये, विना यत्नके कोई भी संस्कार सिद्ध नहीं होसकता इसीसे यत्नपूर्वक पूर्वकालीन व्यवस्थाका आदर करना चाहिये न कि जो उसकी स्थिति है उसको दूरकरके नई व्यवस्थाके स्थापनाका दूना भार अपने शिरपर उठाया जाय, पूर्वसिद्ध सुव्यवस्थाके प्रचारमें अपने २ धर्मके अवलम्बनसे अवश्य ही उन २ कुलोंमें योग्य सन्तान उत्पन्न होंगे । उपपत्तिसिद्ध जो प्राकृतिक नियम हैं उनके व्यभिचारसे अवश्य दोषकी प्राप्ति होगी, इस समय ब्राह्मणोंमें दृढ अपनी शक्तिके संस्कार नहीं हैं, इससे पुत्रादिकोंमें उनका विकाश नहीं होता । परन्तु इस दुरवस्थामें भी वहुतोंके कुलसंस्कार विद्यमान हैं और देखे भी जा चुके हैं, जो जिन वर्णोंके कर्म हैं उनका अनुष्ठान अवश्य करना चाहिये इसपर हमारे शास्त्रोंने वहुत वल दिया है यथार्थ धर्मके प्रचारमें इस कर्मालस्य दोषका सम्पर्क भी नहीं होसकता और यदि कर्ममें आलस्य करनेवाले इस निन्दारूप पराभवको प्राप्त भी हों तो भी यह शास्त्रके अनुकूल ही है, परन्तु इस पराभवसे यथार्थ सिद्ध वर्णोंकी व्यवस्थामें वर्णोंकी परस्परमें विद्वेष रीति प्रचलित नहीं होसकती, कारण कि, उनका यह विश्वास है कि, ईश्वरने हमको जिस वर्णमें उत्पन्न किया है उसीके अनुसार कर्म करना चाहिये, उनके सन्तोषके लिये वहुत है, इससे दूसरे वर्णोंके साथ उनको ईर्ष्या भी नहीं होकती, हां व्यवस्था न होनेसे विद्वेषका मूल यह ईर्षा उठ खड़ी हो सकती है, इस कारण ईश्वरने जिन वर्णोंमें जिनको उत्पन्न किया है उसमें सन्तोष मानकर अपनी और अपने जातिभाइयोंकी उन्नतिमें तथा विद्यावृद्धिमें ईश्वरभक्तिमें सद्गुणोंके विकाशमें सवको दृढ यत्न करना चाहिये, उत्तम वर्णोंको भी अपने अधीन इतर वर्णोंके साथ सौहार्द दिखाना चाहिये, प्रेम और सौहार्द दिखानेकी वहुतसी रीति हैं, एक साथ भोजन कर लेनेका नाम सौहार्द नहीं है और दूसरे वर्णोंके साथ घृणा प्रकाश करना भी शास्त्रका नियम नहीं है, जिन चरणोंसे शूद्रकी उत्पति है भगवान्के उन्ही चरणोंको समस्त वर्ण प्रणाम करते हैं, तथा उन्हीं चरणोंसे निकली गंगाजीमें सव कोई स्नान करते हैं, इससे अपने अपने कार्यमें समस्त वर्ण मुख्य हैं, इस कारण किसीको किसी वर्णके साथ विद्वेष वा घृणा प्रकाश करना वहुत ही अनुचित और अन्याय है । कारण कि, समस्त सृष्टि भगवान्की है; इससे एक दूसरेको प्यारकी दृष्टिसे देखना चाहिये और वह दृष्टि इस वेदवचनसे लेनी चाहिये कि—

' मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे '

अर्थात्-मित्र देवताकी दृष्टिसे सारे ससारको देखें सवके साथ प्रेमका वर्ताव करें ।

इस प्रकारसे वर्णव्यवस्थाके सम्वन्धमें जो शंका इस समय उठ रही हैं उनका निरास करके हम इस समय चारों वर्णोंके जातिभेद जितने कि हमको प्राप्त हुए हैं लिखनेमें प्रवृत्त होते हैं । हमने इस ग्रन्थको चार खंडोंमें विभक्त किया है और एक एक वर्णके जितने भेद हमको मिले हैं वह क्रमशः ब्राह्मणादि खण्डोंमें प्रकाशित किये हैं वैश्यखण्डके पीछे कुछ जातियोंका वणन दूसरे लोगोंकी सम्मतिपर लिखा है । इसमें जवतक उन जातियोंके विषयमें ऐकमत्य न हो तवतक वे विचारकोटिम रक्खे गये हैं । कारण कि, इस समय प्रायः वहुतसी जातियें अपनेको ब्राह्मण वा क्षत्रिय कहलानेकी अभिलाषायें कर रही हैं उन्होंने

जो कुछ अपनी वंशावलियोंमें खैंचातानी की है उसका आभास भी हमने पाठकोंके सामने रख दिया है विद्वान् लोग देखकर सत असत्का विचार कर सकते है चतुर्थ खण्डमें शूद्र सत्र वा सब संकर जातियोंका हीउल्लेख नहीं है उसमें भी दोचार जाति आभीर मेढू स्वर्णकारादि विचारकोटिकी है हमने किसीको अपनी ओरसे कुछ नहीं कहा है केवल जिन वंशावलियोंमें प्रमाणोंके अर्थ उलट फेरसे किये है जिनसे सर्व साधारणमें भ्रम होजानेकी संभावना है उनके अर्थ शास्त्रमर्यादाके रक्षणके निमित्त यथार्थरूपसे करदिये हैं इसके छपनेपर यदि किसी जातिके लोग अपने पुष्ट प्रमाण हमारे पास भेजैंगे हम उनको दूसरी वारमें अवश्य लगादेंगे हम किसी जातिकी उन्नतिमें वाधक नहीं है वे अपनेको जो चाहै सो कहै परन्तु जब शास्त्रके प्रमाणकी वात होगी तव हमको यथार्थ कहनेमें संकोच न होगा । इस समय ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्डमें बहुतसी ब्राह्मण जातियें लिखी हैं पर उसमें बहुतसी उत्पत्ति जनश्रुतिके आधार पर है बहुत ऐसी हैं कि, जिन ग्रन्थोंका पता उसमें लिखा है उन ग्रन्थोंमें वह नहीं मिलता है पर जाति पाई जाती हैं इससे हमने भी उसमेंसे अनेक जातियें ली है । प्रथम दशविध ब्राह्मणोंका उल्लेख करते हैं ।

सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड उत्कलमैथिलाः । पंच गौडा इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः ॥

सारस्वत कान्यकुब्ज गौड उत्कल मैथिल यह पांच ब्राह्मण विन्ध्याचलके उत्तरमें निवास करते हैं । (इत्युपोद्घातः)

ब्राह्मणखण्डः ।

सारस्वतब्राह्मणोंकी उत्पत्ति ।

दशप्रकारके ब्राह्मणोंमें सारस्वत जाति पंजाव देशमें प्रसिद्ध है और वहीं इनका निकास भी विदित होता है जिस प्रकार अन्य ब्राह्मण देशके नामोंसे विख्यात हुए हैं इसी प्रकार सरस्वती तीरवासी सारस्वत देशमें रहनेवाले ब्राह्मण सारस्वत कहे जाते हैं । (वायुपुराण अ० ४ खं० २) में लिखा है--

जनयामास पुत्रौ द्वौ सुकन्यायाश्च भार्गवः । आत्मवानं दधीचं च तावुभौ साधु सम्मतौ ॥ सारस्वतः सरस्वत्यां दधीचाच्चोपपद्यते । भारुकच्छाः समाहेयाः सह सारस्वतैस्तथा॥(मत्स्यपु.अ.११४ श्लो.५०)

भृगु महर्षिकी स्त्री पुलोम्नकी कन्या पौलोमीको जिस समय पुलोमा राक्षस ले गया तब भयके कारण उसके आठ महीनेका गर्भपात होगया गर्भच्युत होजानेसे ही वह बालक च्यवन कहाया, उस बालकके तेजसे वह दैत्य तत्काल भस्म होगया । इन च्यवन ऋषिकी दूसरी पत्नी (राजा शर्यातिकी कन्यासे) दधीच ऋषि उत्पन्न हुए । इनके पुत्र सारस्वत सरस्वती नदीमें उत्पन्न हुए, वासका दक्षिणका देश है । दूसरे सारस्वत नर्मदाके समीप भारुकच्छ, समाहेय और सारस्वत यह विन्ध्याचलके समीपके देश है, और श्रीहर्षचरित्रके आरंभमें लिखा है कि ब्रह्मलोकमें एक समय दुर्वासाके मुखसे कोई शब्द अशुद्ध निकल गया उसपर सरस्वती हंसी तब दुर्वासाने शाप दिया कि तुम मर्त्यलोकमें मानुषी हो, तब सरस्वती मानुषी होकर दधीचसे विवाही गई उसकी सन्तान सारस्वत ब्राह्मणके नामसे विख्यात हुई । स्कन्द उपपुराणके हिङ्गुलाद्रिखण्डकी उत्तरसंहितामें लिखा है कि सिन्धु देशमें हिंगुल तीर्थके समीप दधीच ऋषिका आश्रम था । वहां सिन्धुनदी और सागरका संगम है तथा अनेक तीर्थ हैं। एक समय पृथिवीतलमें वर्षा नहीं हुई तब देवता-

ओंने भूलोकमें आकर सरस्वती नदीके समीप सारस्वत तीर्थमें यज्ञानुष्ठान किया और एक कलशमें सौत्रामणि अमृत रक्खा और सरस्वती देवीकी स्तुति की उस समय सरस्वतीने प्रत्यक्ष रूपसे दर्शन दे वर मांगनेको कहा तब देवता बोले—

भिषजोर्हंसगागभात्पुत्रो भवति निश्चितम् ।

कि अश्विनीकुमारके वीर्यसे तुम्हारे पुत्र उत्पन्न हो तो उसके द्वारा वर्षा होगी तब सरस्वतीने लज्जित हो कहा यदि अपना भाग और वल ब्रह्माजी अश्विनी कुमारको दें तो ऐसा हो सकता है यह स्वीकार होनेपर अश्विनीकुमारने प्रसन्न हो देवीसे रमण किया और सरस्वतीके गर्भ रहा परन्तु छठे महीने वह गर्भस्राव होगया जिससे देवताओंको बडी चिन्ता हुई ब्रह्माजीने अपने हाथमें वह गर्भ ले सौत्रामणि कलशमें धरा और सरस्वतीको दिया सरस्वतीने जलमें जाकर उस गर्भको देखा तो उस गर्भके दो रूप दीखे तब देवीने सोचा कि, इसमेंसे एक देवताओंको दूगी और एक मै रक्खूंगी सौ वर्षमें वह गर्भ पुष्ट हुआ और देवीने जो तटस्थ दृष्टिसे पुत्रको देखा तो वह लालरंग होगया वेदमें यही लोहितेन्द्र नामसे विख्यात है देवता वृष्टिके निमित्त इसको स्वर्गमें लेगये ।

मन्नाम्नाप्यपरः पुत्रः सारस्वतदधीचकः ।

तब देवीने कहा यह दूसरा पुत्र मेरे नामसे सारस्वत दधीच कहावेगा, ब्रह्माजीने भी वरदान दिया है कि—

अयं पुत्रो दधीचस्तु सारस्वतकलाधिपः । भविता मृत्युलोक ऋषीणां कुलपालकः ॥

यह पुत्र सारस्वत कुलका प्रवर्तक ऋषियोंका पालक होगा । वेदमती आतूकर्ण्य ऋषिकी कन्यासे दधीचका विवाह हुआ, फिर दधीचकी सन्तान बहुत हुई उनमें कुछ मुख्योंका वर्णन करते हैं । ब्रह्म, दालभ्य, जैमिनि, ताण्डव, दिक्पाल, दक्ष, प्राची, कण्व, दाक्षायण, गोपाल, शंख, पाल, शाकिनी, शांभव, नंदी, आदी; समलाशैरं, शक्ति, पातंजलि, पालाशी, गोमय, दीपदेव, निष्णुक, रुद्र, क्षेत्रपाल, सुसिद्ध, अपर, पर, धर्म, नारायण, तिमिर, धमिण, तैत्तिर, दुर्दुर, जमदग्नि, लगत, कपालि, सम्यक, सुदर्श, शिशुमारक, च्यवन, शुकक, चन्द्र, सुचन्द्र, मानद, आकन्दक, नन्द, मानक, मानसा, चंपक, व्यास, पिप्पलाद, अघातुक, देवल, घृतकौश्य, सूर्य, मर्क, अज, भैरव, कृष्णात्रि, विश्वपालक, नरपाल, तुम्बरु, तुलसि, वामदेव, वामनाकारक, ब्रह्मचारी, त्रह, भैरव, नरकपालक, वक, दालम्य, सुश्रुव, कपि यह अट्ठासी ऋषि हुए हैं ।सो ऋषि गोत्रोंके प्रवर जानना गांग और सांकृति यह क्षत्रियोंके गोत्र जानने अंगिरा गोत्र भी है ब्रह्मक्षत्रियका दायाद सुहोता हुआ इसका ज्येष्ठ पुत्र सारस्वत कुलमें हुआ दधीचके मालिनी, केशनी, धूमिनी तीन कन्या हुईं, यह वंशानुवंश गोत्र बहुत चला ।

सारस्वतकुलोंके अवटंक आदिका वर्णन ।

पञ्चजाति ।

आढ्यकुल अढाई घर ।

१ उपनाम गोत्र प्रवर वेदपूर्वशब्द १ कुमडिये जामदग्न्य-भार्गव च्यवन वत्स । आप्नवान् और्वजामदग्न्य यजु० कुमारीयवाकुमारोपासक.

२ जेतली गौतमवात्स्य । अंगिरस गौतम औशनस् ३ जैत अर्थात् कुलवृक्ष जयन्तीसे
३ झिंगण भारद्वाज अंगिरस भारद्वाज बार्हस्पत्य झंगण
४ तिक्खे पाराशर वशिष्ठ, शक्ति, तृत्त् पराशर ३
५ मोहले सोमस्तम्भ काश्यप, अवत्सार नैध्रुव मुशल ।

चार घर ।

कुमडिये, जेतली, झिंगण तिक्खे मोहले यह चार घर भी कहाते हैं गोत्रादि ऊपर लिखे हैं ।

तीसरी श्रेणी ।

तुमडिये, (कुमडिये) पेतली (जेतली) पिंगण (झिंगण) पिक्खे (आंडले तिक्खे) वोहले (मोहले) गोत्रादि पूर्ववत् यह चार घरोंके नामान्तर किसी कारण कुछ न्यूनता लिये हैं ।

अन्य उत्तम श्रेणी ।

वग्गे प्रभाकर परदल श्यामेंपोतरे मठूरिये दत्त चूर्णा भोजेपोतरे
कालिये छिब्बर अर्णा धन्न धन्न पोतरे मालिये वाली सरदल शेतपाल
कपूरिये वैद्य (वारी) खेतुपोतरे नेवले लव कलिये सिन्धुपोतरे
रावडे मुह्याल प्रभाकर वदेपोतरे चूनीवालम्ब मोहन लखनपाल ढुवडे
सर्वेलिये " ऐरी मैधर पंडित पंडित नाम क्खतलाडली
१ (अष्टवंश) पाठक मल्लन शामादासी २ सण्ढ ठंडे मंत्री पुश्रत
३ पाठक गड्डूरे पत्ती भारद्वाजी ४ कुरल ढौंकच चित्रचोर काठपाल
५ भारद्वाजी छक्कडे शारद घोरके ६ जोशी अजपोत पुकरणे
७ शोरी सज्जरेपुंज मनोत सिन्धुपाल ८ तिवाडी वन्दू ९ मरूढ न्यासी

बामन जाई ।

अग्निहोत्री अग्रफक आंचारज अल अंगछ आरी ईसर ईसराज
ऋषि (रिखि) ऐरे ओगे कपाल कुन्दि कलन्दं कुसारित कपाले
कुण्ड कण्ड्यारे कलि काई पल्हण कर्दम करदम किरार
कुतवाल कुरपाल कलस कुच्छी कैजर कोटपाल कारडगे काठपाल
खटवंश खेंती खोरे खिन्दडिये गंगाहर गांदर गांधे गजेसू
गन्दे गांधी गुटरे घोटके चनन चित्रचोर चुन्नी घकपालिये
चवमे चितचोट चन्दन चूडामन जालप चूनी चूखन छिब्बे
जालपोत जोतशी जक्की जैठके जयचन्द जोति जलप जसरव
डिड्डि जठरे जचरे झमाण वेले टाड टगले टनिक
तिवाड डगले डंगवाल ठंडे तिवाडी त्रिपाणे तेजपाल तिनूनी
तह्लुण तोले तोते तिनमणी दंगवल तगाले तंमणावते दगाले
धायी दिद्रिये दवेसर दुबारे नारद धर्म्मी धिन्दे नाहर
प्रभाकर नाम नाद पराशर ।

इस वंशसे ज्वार सत्तकवंश जिले हुशियार प्रचलित हुआ है लगभग ४०० वर्ष हुए जुएमें जीतनेसे ज्वार कहाया. अब इस ग्रामका नाम रामटवाली है ।

पाधे (पांधे) पंजन पाल पुंज पधि पलतू पुजे पट्टू
परींजे पंडे पांडे पिपर पन्व पठल्ल पठरू पुच्छरतन
ब्रली वाहोये ब्रह्मसुकुल वटूरे विजराये विवडे वन्दू भाखरखोरे
भारखारी भारद्वाजी भारथे भिंडे भूत भणोत भटरे भाजी
मम्बी भोग मार्गी भटैर मज्जू मोहन मकावर मन्दार
मरूद मसोदरे मन्दहर मैत्र मदरखम्भ मेट्ठ मेहद मच्छ
महे मुसतल मण्डहर मघरे यम्य रतनपाल रूपाल रनदेह
रति रमताल रतनिये रूथडे रांगडे लखनपाल लालडिये लक्कडफाड
लालीवचे लुद्र लड्डू लाहद लुध विनायक वासुदेव वशिष्ट
विरद व्यास वटपोतरे विदार श्रीधर श्रीडङ्ढवासुदेव शेतपाल शालिवाहन
सीढी संगद सन्धि सूरन सूदन सहजपाल सनखोतरे सोयरी
सणवल सैली संगर सांग सुन्दर सट्टी हरद हांसले
सधीर हरिये हरी हंसतीर।

यह जातियें लाहौर अमृतसर प्रान्तसे गुरुदासपुर, वटाला, जलंधर, मुलतान, लुधियाना, उच्च, झङ्ग और शाहपुर तक निवास करती हैं। इनके सिवाय दत्तारपुर होशियारपुरके पृथक् हैं। जम्बू जसरोटाके डोगरे सारस्वत, तथा कांगडेके सारस्वतोंमें अल्लसे ही जातिविभाग माना है, नवीन नाम निकासके देशोंके अनुसार ही प्रायः पाये जाते हैं। इन, नेवले, रावडे, आदि पांच जातोंमें चूनी नहीं लिये गये हैं, इनके पहलेमें लम्ब हैं, दत्त और प्रभाकर दान प्रतिग्रह नहीं लेते, वगेभट्टरियोंकी पञ्चजातिकी कन्या पञ्चजातिमें ही व्याही जाती हैं, पर इस समय नेवले, रावडे,सरवलिये पंडित और चूनिये भी वगेभट्टारियोंकी पञ्चजातिमें कन्या देते हैं, अष्टवंश अपनी ही आठों जातिमें विवाह करते हैं, ऐसा ही होना चाहिये, जब तक समान कुलके व्याह होते रहेंगे वंश बने रहेंगे।

दत्तारपुर होशियारपुरके सारस्वतोंकी उत्तम श्रेणी।

खजूरिये दुबे डोगरे पाधे वोहसनिये पाधे खिदड्डिये पाधे ढोलवालवैये
पाधे ददिये लखनपाल सरमायी

दूसरी श्रेणी।

अल कमाहटिये कुटल्हैडिये कालिये गदोत्तरे चपडोहिये चिवभे चंधियल
चिरणोल छकोतर जलरेप्ये जुआल झुम्मुटियार झोल स्वाहाये ढोसे
ताक ताडी थानिक दगड दल्लोहल्लिये पटडू पन्याल पंडित
वाधले भरवियाल भटोल मसूल भदोये भटोहये भटरे मकडे
मुचले मदोते मिश्र मैते मिरट मुकाती रजोहद लाहद
लाठ लई वंटडे श्रीधर शारद समनोल सेल संड

जम्बू जसरोटा प्रान्तकी उत्तम श्रेणी।

मगोतरे ढप्पे वंभवाल सपोलिये पाधे केरूर दवे मोहन खजूरेप्रोहत
नाव लव छिब्बर वडयाल लट वैध वालिये जम्बुआलपंडित

मध्यम श्रेणी ।

अधोत्रे पराशर मिश्र सभोत्रे कटोत्रे बड मसोत्रे सुधालिये
कश्मीरी पंडित वनालपाधे रैणे सुदाथिये केर्णिये पंडित वनगोत्रे ललोत्रे पन्धोत्रे
टगोत्रे भगोत्रे बिल्हानोच महिते भरैड सतोत्रे पुरोच

तृतीय श्रेणी ।

उपाधे गराडिये धारऔच भरंगोल उदिहल घोडे धमानिये मलोच
उत्रियाल चम्मे नभोत्रे भैनखरे कलंदरी चरगांट पटल भूरिये
किरले चन्दन पिन्धड भूत कुन्दन चकोत्रे पृथ्वीपाल मुण्डे
कीडे छछियाले पलाधू मरोत्रे कमनिये जलोत्रे पंगे मगडोल
कम्बो जखोत्रे फैनफण मनसोत्र कुडिदव्व जरड नगनाछाल मगदिगालिये
कर्नाठिये जरंघाल वसमोत्रे माथर कठियाल्ह जड वरात महीजिये
कानूनगो जम्बे वडकुलिये मधोत्रे कालिये ऊनगोत्रे वाह्ली मखोत्र
कफनखो झिन्धड वनोत्रे मच्छर खडोत्रे झल्ह ब्रह्मिये यन्त्रधारी
खगोत्रे झावडू वरगोत्रे रजूलिये खिदडियेपाधे झाफाड् वच्छल रजूनिये
गौडपुरोहित ठक्कुरपुरोहित वटयालिये रतनपाल मशोच डडोरिच वधोत्रे रोद
गुहलिवे तिरपद वहल रेडाथिये गुड्डे यमनोत्रे विसगोत्रे लाढछन
गोकुललियेगुसाई थन्मथ बुधार लखनपाल गल्हल दव्व वणदो लबन्दे
गन्धरगाल दुहाल भूरे लमोत्रे शशगोत्रे सांगडे सशोच सैनहसन
सूदन सुर्नचाल सरमाथी सुहण्डिये सुक्खे सिरखडिये सुथडे सोल्हे
संगडोल सळूर्ण सिगाड सागुणिये सणाहोच

कांगडके पहाडी सारस्वतोंकी प्रथम श्रेणी.

आचारिये ओसदि कसदु दीक्षित नाग पण्डित कश्मीरी पञ्चकर्ण मिश्रकश्मीरी
मदिहारी राइणे सोत्रि वेदवे

द्वितीय श्रेणी ।

खजूरे सुरवध गलवढ गुटरे चिथू चलिवाले छुतवन डुम्रे
डांगमार डेहैडी धामुडू पनयाल्ह पम्बर पोतअडटोटरोटिये पाधेसरोज पाधेखजूबू
पाधेमहिते मनवाल मंगरूडिये मैते रुक्खे रम्बे विष्टप्रोत "

अब हम थोडासा विवरण भी देते हैं। कुमडिये सारस्वतोंका शुक्ल यजुर्वेद, माध्यन्दिनी शाखा, उपवेद धनुर्वेद, सूत्र कात्यान सारस्वत देश, सरस्वती नदी, बिल्व वृक्ष, कुलेश बाबा जयजय कुमार, पूज्य कार्तिकेय, औशनस तीर्थ है जैतली अंगिराके गणमें गौतमवंशकी औशनस शाखामें कहे जाते हैं, (मथुरावृत्ति श्रीगोकर्णेश्वर मन्दिरस्थ महामहेश आत्मकुलदेवता) पञ्चजातीय कुलदेवतार्चनपद्धतिमें लिखा है यह मथुराप्रान्तके निवासीर हैं, नीलरुद्र इनके उपास्यदेव हैं, जयन्तीशमीवृक्षका इनके यहां पूजन होता है इसको जंड भी कहते हैं, इस कारण इसके उत्सवको इससमय जंडी कहा जाता है, सिंगणसारस्वत परमर्षि अंगिराकी भारद्वाजशाखामें हैं, इनका वेद शु० यजु० है, झ नाम बृहस्पतिका है झगण भारद्वाज ही झिंगण नामसे पसिद्ध हैं, मांध्यन्दिनी शाखा है, कुलदेवी भाटियानी चण्डिका भवानी, भह गौतम नाई मेढा धम्मा गौतमभइ ही, असीरतपरीनां,

खावी जवारी, सने और टंडन यजमान, सत्तीदी निकास, झिंगण भारद्वाजोंमें बावा पैडीके थंभेमें सर्व ज्येष्ठ अत्तू मध्यम, नत्थू और कनिष्ठ सहोदर गौतमसे अत्तूपोतरे, नत्थूपोत्रे और गौतम पोत्रे यह तीन शाखा उत्पन्न हुईं, गुसाई बावे और व्यास नामसे इनकी प्रसिद्धि हुई इनकी कुलदेवीकी मूर्त्ति भट्टके घर रहती है डाउदेव सर्पमूर्त्तिका पूजन होता है कहते हैं इस कुलमें किसी स्त्रीके गर्भसे सर्प जन्मा था और वह शान्तभावसे उसी घरमें रहता था, एक दिन नई आई हुई वधूने दुअञ्चियां चूल्हेमें आग बालदी और वह सर्प भस्म हो गया। तबसे इनमें दुअंचिया चूल्हा नहीं बनता सर्पकी पूजा होती है, नत्थू पोत्रे झिंगणोंमें बिहारी गुसाईंके पुत्र मिश्र मूलचन्दजीसे कक्कांडवाले झिंगणोंकी वंशावलीका आरम्भ होता है, मात कोरी और बवा चन्द्रतपा इनके कुलपूज्य हैं।

तिक्खे महर्षि वशिष्ठके कुलप्रसूत हैं सम्भव है तृत्सू शब्द जो वशिष्ठगणोंके सम्बन्धसे ऋग्वेद सप्तममण्डलके (उदद्यामिवेत् + + त्तृत्सुभ्यो अकृणोदुलोकम्) मन्त्रमें आता है उससे बिगड कर तिक्खा शब्द बना हो और तीखा स्वभाव इनका रहा हो, इस वंशमें वटके सात पत्रोंको साडूके टुकडेमें लपेट कर शुभकार्यमें पूजन करते हैं वटवृक्ष ही इनका कुलेश वीर माता कुलपूज्या है वटवृक्ष शास्त्रोंमें शंकररूपसे माना है (रुद्ररूपी वटस्तद्वत्) पद्मपु० । इनके यजमान तालवाड हैं इनके गोत्रादि पूर्वलिखित अनुसार हैं। इनकी शिखा दक्षिण तुर्क भट्ट, तामसी नाई, ततिला मिरासी, तेजपाल असारत धर्म विदित नहीं। उज्जे दुज्जे पडावन्दे आटुडे आदि इनके कुलोंकी अल्लु हैं।

मोहले यह पञ्चाजातिमें तबसे मिलाये गये हैं जबसे पम्बू इस जातिसे पृथक् किये गये हैं। कहते हैं कि पंचाजातिकी पंचायतके समय जब यह विचार होरहा था कि पम्बुओंको निकालकर किसको ग्रहण करैं, उस समय कोठेसे एक मूसल अकस्मात् गिर पडा पंचोंने इस घटनाको दैवी समझकर मोहलोंको पंचजातिमें ग्रहण किया कारण कि पंजाबी भाषामें मूसलको मोहला कहते हैं मोहलोंका सोमस्तम्ब गोत्र है और स्तम्बशब्द जिसके अन्तमें आता है उसको द्वामुष्यायण वा दो कुलोंकी सन्ततिमें गिना जाता है। पुत्रिका पुत्र कृत्रिम दत्तक आदि द्वामुष्यायण कहे जाते हैं। प्रवर इनके लिख दिये हैं, यह भरद्वाज नहीं हैं इन मोहले सारस्वतोंके यजमान शैगल खत्री हैं यह शैगल ही छागलय हैं इसमें सन्देह नहीं। इनके तीन थम्मे हैं दिलवालिये सिरन्दिये और गुजरातिये। परन्तु यह देशानुसार नामान्तर हैं, थंभे नहीं हैं गुदराल, मिरासी, चण्डीदास भट्ट और मेढा नाई, इनकी वृत्ति कमाते हैं।

यद्यपि पम्बू इस समय पञ्चाजातिमें सम्मिलित नहीं हैं परन्तु इनका उपमन्यु गोत्र है, चौंजातीके कुलीन कपूर क्षत्रियोंकी यजमानी वृत्ति भी इनके हाथसे जाती रही है। पम्बूसंज्ञा पंबयानाप्रदेशके निकास कारणसे प्रसिद्ध हुई है, यथार्थमें यह भी वशिष्ठकुलके कहे जाते हैं, इनकी कुलदेवी भगवती चण्डिका इशपूज्य माता कही गई है। इनका महोत्सव वैशाखशुक्ल नवमीको होता है। इनकी दक्षिण शिखा, भट्टमाहल नाई मेढा है। इनके खोती पोतरे, मनोहर पोतरे और सरन पोतरे यह तीन थम्बे हैं।

सारस्वतोंमें बामन जाइयोंकी जाति संज्ञा अनेक प्रकारकी है और वे अपने २ नामोंसे विख्यात हैं। अष्टकुलवाले अष्टवंश, पट्जातिवाले खिजाति और बारहजातिवाले बारी नामसे कहे जाते हैं। इस जातिके अनेक भेद और विस्तार होगये हैं, जिनका वर्णन उनकी वंशावलीमें विशालरूपसे दीखता है। पर वास्तवमें ब्राह्मणोंकी जो शाखा सरस्वतीके किनारे सारस्वत देशमें बसी वही सारस्वत ब्राह्मणोंके नामसे विख्यात हुई।

अब सेणवी सारस्वत ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते है-सह्याद्रि खण्डमें लिखा है कि जब परशुरामजी तीर्थयात्राके निमित्त शूर्पारक क्षेत्रमें आये और वहां श्राद्ध करनेकी इच्छा की तब बुलानेसे वहांके ब्राह्मण

नहीं आये, उस समय परशुरामने भारद्वाज, कौशिक, वत्स, कौण्डिन्य, कश्यप, वशिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र, गौतम, अत्रि इन दश ब्राह्मणोंको श्राद्ध यज्ञादिमें भोजन व्यवहार चलानेके निमित्त त्रिहोत्रदेशके पंचगौडान्तर्गत सारस्वत ब्राह्मणोंको मटग्राममें, कुठलांतमें, केलोशी और गोमांचल इत्यादि स्थानोंमें स्थापन किया । इनकी कुलदेवता मंगेश महादेव, महालक्ष्मी, ह्मालसा, शांता दुर्गा, नागेश, सप्तकोटेश्वरादिक हैं । इन दश ब्राह्मणोंके छयासठ कुल थे, उनमेंसे कुशस्थली, केलोसी इन दो क्षेत्रोंमें कौत्स, वत्स्य और कौण्डिन्य इन तीन गोत्रोंको दश दश कुलसहित स्थापित किया, यह सब रूप गुण सम्पन्न थे, और मठग्राम वरेण्य (नाखे) अम्बूजी और लोटली मिलके इन चार ग्रामोंमें छः कुल स्थापित किये चूडामणि महाक्षेत्रमें दशकुल तीन तीन देवताओंसे युक्त स्थापित किये दीपवतीमें आठ कुल स्थापित किये, गोमांचलके बीचमें बारह कुल स्थापित किये, इस प्रकार छयासठ हुए । इनमें साष्टीकर पहला भेद और सेणवी दूसरा भेद है, तीसरा भेद–

प्रथमस्तेष्वयं भेदः साष्टीकर इतीरितः । साणवीति द्वितीयस्तु भेदस्तेषामुदाहृतः ॥ तथाच कोंकणा इत्थं भेदाः सन्ति ह्यनेकशः ।

कोंकण भी कहाते हैं, अब इसका कारण कहते हैं । कर्णाटक देशमें मयूरवर्मा नामक एक राजा था उसका पौत्र शिखिवर्मा इसने सारस्वत ब्राह्मणोंको छन्नूग्रामका अधिकार दिया इस कारण शास्त्रमें छन्नू अंकका नाम षण्णवती है इस कारण षण्णवी उपनाम शेणवी हुआ है ।

अधिकारं पषणवतिग्रामाणां च ददौ किल । एतद्ग्रामाधिकाराच षाण्णवीत्युपनामकम् ॥

कोंकण देशमें रहनेसे कोंकण नामवाले कहे गये हैं ।

दूसरी प्रकारकी उत्पत्तिका विस्तार ।

एक समय रामचन्द्रजी हिंगुला देवीका दर्शन करने गये तब वहां लक्षब्राह्मण भोजन करानेका संकल्प किया पर उस समय वहां ब्राह्मण न थे चोरोंके भयसे भाग गये थे उस समय सरस्वती देवीका स्मरण किया उसी समय सरस्वती देवी प्रगट हुई और रामसे मन इच्छित मांगनेको कहा तब रामचन्द्रजीने ब्राह्मणोंके निमित्त सरस्वतीसे कहा सुनते ही सरस्वतीने पृथिवीमें अपने हाथ घिसे उसी समय पृथ्वीसे १२९६ बारसौ छानवे ब्राह्मण उत्पन्न हुए, सरस्वतीसे पैदा होनेसे सारस्वत कहाये ।

सारस्वतास्तदोत्पन्ना दीप्तपावकसन्निभाः । त्रयोदशशतं तेषां दीप्तपावकसन्निभान् ॥

इसप्रकार उनको भोजन और सुवर्णदान देकर रामचन्द्रने अपना व्रत समाप्त किया और वे ब्राह्मण सारस्वत नामसे पृथिवीमें विख्यात हुए और चारों दिशाओंमें निवास करने लगे इनके यजमान लवाणा क्षत्रिय हैं ।

अथ नर्मदोत्तरवासिसारस्वतब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम् ।

महाभारत गदापर्वके तीर्थयात्रा प्रसंगमें लेख है कि, दधीच ऋषि बडे तपस्वी थे उनकी तपस्यासे भयभीत हो एक समय इन्द्रने उनकी तपस्या डिगानेके निमित्त अलंबुषा अप्सरा भेजी ऋषि सरस्वती नदीमें स्नान कररहे थे अप्सराको देखकर सरस्वती नदीमें उनका वीर्य स्खलित हुआ, वह वीर्य सरस्व-

तीकी अधिष्ठात्री देवीने ग्रहण किया और नौ महीने पीछे जब गर्भसे बालक जन्मा तब सरस्वती उस बालकको लेकर ऋषिके पास आई और सब वृत्तान्त सुनाया ऋषिने बडी प्रसन्नतासे उस पुत्रको ग्रहण करके कहा-

मम प्रियकरं चापि सततं प्रियदर्शने। तस्मात्सारस्वतः पुत्रो महांस्ते वरवर्णिनि। तवैव नाम्ना प्रथितः पुत्रस्ते लोकभावनः । सारस्वत इति ख्यातो भविष्यति महातपाः ॥

हे प्रियदर्शने ! जिससे कि तैने मेरा प्रिय किया है, इस कारण यह तेरे नामसे महातपस्वी सारस्वत विख्यात होगा, वह पुत्र लेकर ऋषिने पालन किया और सब विद्या सिखाई कुछ कालमें इन्द्रदेवने दधीच ऋषिसे वज्र बनानेको उनके शरीरकी अस्थि मागी ऋषि अस्थि देकर सायुज्यको प्राप्त हुए पीछे बडी अनावृष्टि होनेसे वहांके ऋषि इधर उधर गमन करने लगे,उस समय सारस्वत मुनिने भी जानेकी इच्छा की, तब सरस्वतीने उनसे कहा तुम कहीं मत जाओ तुम्हारे निमित्त भोजनका प्रबन्ध यहीं करूंगी,यह सुनकर ऋषि वहां ही रहे पीछे अनावृष्टि दूर हुई और सब ऋषि एकत्र हुए, परन्तु वेद भूल गयेथे, सारस्त मुनिने उन सबको वेद अध्ययन कराया, ऐसे साठ सहस्र ऋषि सारस्वत मुनिके बालक हैं, वे सब ही सारस्वत नामसे विख्यात हुए, परन्तु आदिमें जो ब्राह्मण जाति सरस्वती नदीके समीप निवास करनेवाली थी,वही सारस्वत ब्राह्मणके नामसे विख्यात हुई ।

इति सारस्वतब्राह्मणोत्पत्तिः ।

अथ कान्कुब्जोत्पत्तिः ।

इस जातिका नाम कान्यकुब्ज क्यों हुआ इस विषयको हम आर्षग्रन्थ वाल्मीकिरामायणसे लिखते हैं।

कुशनाभस्तु राजर्षिः कन्याशतमनुत्तमम् । जनयामास धर्मात्मा घृताच्यां रघुनंदन ॥ १ ॥ तास्त यौवनशालिन्यो रूपवत्यस्स्वलंकृताः । उद्यानभूमिमासाद्य प्रावृषीव शतह्रदाः ॥ २ ॥ गायन्त्यो नृत्यमानाश्च वादयन्त्यश्च राघव । आमोदं परमं जग्मुर्वराभरणभूषिताः ॥ ३ ॥ ताः सर्वगुणसम्पन्ना रूपयौवनसंयुताः । दृष्ट्वा सर्वात्मको वायुरिदं वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥ अहं वः कामये सर्वा भार्या मम भविष्यथ । मानुषस्त्यज्यताम्भावो दीर्घमायुरवाप्स्यथ ॥ ५ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वायोरक्लिष्टकर्मणः । अपहास्य ततो वाक्यं कन्याशतमथाब्रवीत् ॥ ६ ॥ पिता हि प्रभुरस्माकं दैवतं परमं च सः । यस्य नो दास्यति पिता स नो भर्ता भविष्यति ॥ ७ ॥ तासां तद्वचनं श्रुत्वा हरिः परमकोपनः । प्रविश्य सर्वगात्राणि बभञ्ज भगवान्प्रभुः ॥ ८ ॥ स च ता दयिता भग्नाः कन्याः परमशो-

भना: । दृष्ट्वा दीनास्तदा राजा सम्भ्रान्त इदमब्रवीत् ॥ ९ ॥
किमिदं कथ्यतां पुत्र्यः को धर्ममवमन्यते । कुब्जाः केन कृताः सर्वा-
श्चेष्टन्त्यो नाभिभाषथ ॥ १० ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कुशनाभस्य
धीमतः। शिरोभिश्चरणौ स्पृष्ट्वा कन्याशतमभाषत ॥ ११ ॥ वायुः
सर्वात्मको राजन्प्रधर्षयितुमिच्छति । अशुभं मार्गमास्थाय न धर्मं
प्रत्यवेक्षते ॥ १२ ॥ विसृज्य कन्याः काकुत्स्थ राजा त्रिदशविक्रमः ।
मन्त्रज्ञो मन्त्रयामास प्रदानं सह मन्त्रिभिः ॥ १३ ॥ सुबुद्धिं कृत-
वान् राजा कुशनाभः सुधार्मिकः । ब्रह्मदत्ताय काकुत्स्थ दातुं कन्या-
शतं तदा ॥ १४ ॥ तमाहूय महातेजा ब्रह्मदत्तं महीपतिः । ददौ
कन्याशतं राजा सुप्रीतेनान्तरात्मना ॥ १५ ॥ पृष्टमात्रे तदा पाणौ
विकुब्जं विगतज्वरम् । युक्तं परमया लक्ष्म्या बभौ कन्याशतं
तदा ॥ १६ ॥ कन्या कुब्जाऽभवन् यत्र कान्कुब्जस्ततोऽभवत् ।
देशोऽयं कान्यकुब्जाख्यः सदा ब्रह्मर्षिसेवितः ॥ १७ ॥

महोदय पुर निवासी महात्मा कुशनाभ राजाके घृताची रानीसे सौ कन्या जन्मी थीं जिस समय वह रूप यौवन सम्पन्न हुई तब वागमें विहार करनेको गईं ॥ २ ॥ वहां वह गाने बजाने और नाचने लगीं हे राम ! वह सम्पूर्ण आभूषण पहरे वड़ी प्रसन्न हुईं ॥ ३ ॥ उन सर्व गुण सम्पन्न रूपयौवनशालिनी कन्याओंको देखकर सर्वात्मा वायु प्रगट होकर उन सबसे कहने लगे ॥ ४ ॥ मेरी इच्छा तुम सबके साथ विवाह करनेकी है इस कारण तुम सब हमारी भार्या होजाओ तुम यह मानुषीभाव त्यागकर दीर्घ आयुको प्राप्त हो जाओगी ॥ ५ ॥ मयापराक्रमी वायु देवताके यह वचन सुनकर वे सौ कन्या उनके वचनका निरादर करती हुईं बोलीं ॥ ६ ॥ पिता ही हमारे प्रभु और देवता है वह पिता जिसके निमित्त हमको देंगे हमारे स्वामी वही हो कसते हैं ॥ ७ ॥ उनके यह वचन सुनकर वायु देवताने परम क्रोध करके उनके शरीरमें प्रवेशकर अपनी शक्तिसे सबके शरीर कुवडे कर दिये ॥ ८ ॥ इस प्रकार वे सब कन्या मग्न होकर घर गईं उनको देखकर आश्चर्यसे राजाने पूछा ॥ ९ ॥ हे पुत्रियो ! यह तुम्हारे शरीरकी क्या दशा हुई धर्मका तिरस्कार किसने किया किसने तुमको कुवडा कर दिया जो चेष्टा करनेपर भी तुम नहीं कह सकतीं ॥ १० ॥ उन महाबुद्धिमान् कुशनाभके वचन श्रवण करके पिताके चरणोंमें शिर झुकाकर सौकन्या कहने लगीं ॥ ११ ॥ हे राजन् ! सर्वात्मा वायु हमको धर्षण करनेकी इच्छा करता है और अशुभ मार्गमें स्थित होकर धर्मके देखनेकी इच्छा नहीं करता ॥ १२ ॥ देवपराक्रमी राजाने उनके यह वचन सुन उन कन्याओंको विदा करके मंत्रियोंसे उनके विवाह-सम्बन्धमें सम्मति की ॥ १३ ॥ इस प्रकार धर्मात्मा राजा कुशनाभने सुमति करके वे सौ कन्या ब्रह्मदत्त महात्माको देनेकी इच्छा की ॥ १४ ॥ और महातेजस्वी राजाने ज्योंही ब्रह्मदत्तको बुलाकर परम प्रसन्न मनसे उन सौं कन्याओंको देनेका विचार किया कि ॥ १५ ॥ ऋषिके कर ग्रहण करते ही उन कन्याओंका समस्त रोग और कुवडापन जाता रहा और वह कन्या परमशोभाको प्राप्त हो ऋषिके साथ आश्रमको

गई ॥ १६ ॥ हे राम ! जिस देशमें वह कन्या कुब्ज हुई उसी दिनसे वह ब्रह्मर्षि सेवित देश कान्यकुब्ज नामसे विख्यात हुआ और उस देशके निवासी ब्राह्मण कान्यकुब्ज नामसे विख्यात हुए, जब कि, रघुनाथ• जीसे बहुत पहले देशका नाम कान्यकुब्ज विख्यात हो चुका था तब रामचन्द्रके समय कान्य और कुब्ज इन दो भाइयोंका यज्ञमें जाना और दानसे इनकार करना और फिर उनके नामसे इतने विशाल वंशोंका चलना समझमें नहीं आता, कारण कि, दानका त्याग कोई बडी विचित्र बात नही सहस्रोंने ऐसा किया है और करते हैं, दूसरे यदि यह वंशप्रवर्तक थे तब कान्यवंश और कुब्जवंश ऐसे दो नामसे कुल चलते, एकसे नहीं इससे यह बहुत दूषित होनेसे सर्वथा दन्तकथा है ।

येन लिङ्गेन यो देशो युक्तः समुपलक्ष्यते । तेनैव नाम्ना तं देशं वाच्यमाहुर्मनीषिणः ॥ (महा० आ० अ० २।१२)

कान्यकुब्जेऽपिबत्सोममिन्द्रेण सह कौशिकः । ततः क्षत्रादपाक्राम-द्ब्राह्मणोऽस्मीति चाब्रवीत् ॥ (वन० ८७।१७)

जिस देशमें जो चिन्ह रहता है उसीके अनुसार पण्डित लोग उसका नाम रखते हैं । इसी कान्यकुब्ज देशमें विश्वामित्रने इन्द्रके साथ सोमपान किया था और मैं क्षत्रियपनसे छूटकर ब्राह्मणत्वको प्राप्त हुआ ऐसा कहा । अब यह कान्यकुब्ज देश कहांसे कहां तक है सो इसका मान कहते हैं ।

शृङ्गिणस्थलमारभ्य दालभ्यौकान्तमायतः । कोशलाद्दक्षिणे देशः कान्यकुब्जः प्रचक्षते ॥

शृंगीरामपुरसे दालभ्य ऋषिके आश्रमपर्यन्त कोशलदेश नाम अयोध्यापुरीसे दक्षिणमें कान्यकुब्ज देश कहाता है, यद्यपि इस समय कानपुर, फतहपुर, फरुखाबाद, इटावा आदि स्थानोंमें कान्यकुब्ज बहुतायतसे फैल गये हैं तो भी लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, रायबरेली, हरदोई, शाहजहांपुर, भगवन्तनगर आदि स्थानोंमें इनका मूलनिवास है और यही कान्यकुब्ज देश किन्हींके मतमें पञ्चाल देश कहा जाता है, कान्यकुब्ज देशवासी ब्राह्मणोंमें कुलमर्यादा मान आदिका अभिमान विशेष है और इनके पूर्व पुरुष तो विशेषकर्मपरायण थे, कारण कि इनकी उपाधियां बहुधा कर्मसे सम्बन्ध रखती हैं । अब हम इनके गोत्र और कुलोंका संक्षेपसे निरूपण करते हैं ।

कश्यपश्च भारद्वाजो शाण्डिल्यः सांकृतस्तथा । कात्यायनोपमन्युश्च काश्यपश्च धनंजयः ॥

कविस्तो गौतमो गर्गो भरद्वाजस्तथैव च । कौशिकश्च वशिष्ठश्च वत्सः पाराशरस्तथा ॥ इत्येते कान्यकुब्जानां गोत्राण्याहुश्च षोडश ।

अर्थात्-कश्यप, भरद्वाज, शांडिल्य, सांकृत, कात्यायन, उपमन्यु, काश्यप, धनञ्जय, कविस्त, गौतम, गर्ग, भरद्वाज, कौशिक, वशिष्ठ, वत्स, पराशर यह सोलह गोत्र बहुत प्रसिद्ध हैं इनमें पहले छः गोत्र बहुत प्रसिद्ध हैं ।

कात्यायनोपमन्युश्च भरद्वाजोऽथ कश्यपः । शाण्डिल्यः सांकृतश्चैव षडेते गोत्रजोत्तमाः ॥

कात्यायान, उपमन्यु, भरद्वाज, कश्यप, शाण्डिल्य और सांकृत यह छः गोत्र कुलीन और षट्कुल नामसे विख्यात हैं कान्यकुब्जोंकी दूसरी शाखा धाकर कहाती है उसमें-

पाराशराः काश्यपभरद्वाजधनञ्जया गौतमवत्सगर्गाः। वशिष्ठकाविस्तसुकौशिकाश्च उदाहृता धाकरका दशैते॥

अर्थात्–पाराशर, काश्यप, भारद्वाज, धनञ्जय, गौतम, वत्स, गर्ग, वसिष्ठ, काविस्त, कौशिक यह दश गोत्र धाकरसंज्ञक कहलाते हैं। यह दश गोत्र आधे भी कहाते हैं और इस प्रकारसे ६॥ कहाते हैं और इनका विस्तार होकर वंशावलियोंमें ७२ गोत्र तक मिलते हैं। हम संक्षेपसे सोलह गोत्रोंका व्याख्यान करते हैं।

यहां यह भी लिख देना उचित है कि प्रत्येक गोत्रके साथ कान्यकुब्जोंमें आस्पद और प्रतिष्ठाके नाम होते हैं। जो जिस ग्राम वा स्थानमें बसे उनका नाम भी लिखा होता है। यथा–पांडे, पाठक, त्रिपाठी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, अवस्थी, दीक्षित, शुक्ल, मिश्र, उपाध्याय, भट्टाचार्य, अग्निहोत्री, वाजपेयी आदि। इनमें वेद पढनेसे द्विवेदी त्रिवेदी आदि कहाये अध्यापक होनेसे उपाध्याय पाठक और भट्टाचार्य कहाये यज्ञादिक कर्मानुष्ठान करनेसे वाजपेयी अग्निहोत्री अवस्थी और दीक्षित आदि कहाये, श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठान करनेसे मिश्र शुद्ध निर्मल गुण कर्मोंके अनुष्ठानसे शुक्ल कहाये, जो जिस ऋषिके वंशमें हुए वह उनका गोत्र हुआ, उस ऋषिके सहित उनके पुत्र पौत्रोंको मिलाकर गोत्र हुआ, कहीं पांच पुरुषोंके नाम होनेसे पंच प्रवर हैं, वंशावलियोंमें यह बात ध्यान देनेके योग्य है, कि जो पुरुष अपने नामसे प्रसिद्ध हुआ उसका और उनके पिता दोनोंका नाम कान्यकुब्ज वंशावलीमें लिखा गया है और जो पिताके नामसे प्रसिद्ध है उनका नाम नहीं लिखा, जैसे कश्यप गोत्रमें गंगाके पुत्र गौतम थे, यह विद्वान् होनेके कारण गौतमाचार्य कहाये और गंगा शाहबादमें रहनेके कारण शाहबादके मिश्र कहाये और गौतमाचार्य रामपुरमें रहनेके कारण रामपुरके मिश्र कहाये, गंगाके दूसरे पुत्र पिताके नामसे प्रसिद्ध हुए उनका नाम नहीं लिखा गया, इसीभांति शांडिल्य गोत्रमें त्रिपुरके मिश्रके बाबू १ खेमकरन २ हेमनाथ यह तीन पुत्र लिखे गये हैं, इनमें बाबू खानीपुरके मिश्र, खेमकरन भोजपुरके मिश्र, हेमनाथ हमीरपुरके मिश्र, त्रिपुरवाले कहाये, त्रिपुर कम्पिलाके मिश्र कहाये इससे यह विदित होता है कि, त्रिपुरके और भी पुत्र थे जो कम्पिलामें रहते रहे और त्रिपुरके नामसे प्रसिद्ध हुए, बहुतसे पुरुष ऐसे भी हैं जो अपने और पिता दोनोंके नामसे प्रसिद्ध हैं, अब पहिले कश्यप गोत्रका व्याख्यान करते हैं, यद्यपि आदि सृष्टिसे लाखों करोडों वर्ष वीत चुके हैं, जिससे वंशवर्णन एक प्रकारसे दुःसाध्य है और जो वंशावली मिलती हैं वह पांच छःसौ वर्षसे अधिककी नहीं हैं, इस लिये उन्हींपर निर्भरकरके लिखते हैं।

कश्यपगोत्र।

ब्रह्माके पुत्र मरीचि, मरीचिके कश्यप, उनके वंशमें बहुत समय पीछे देवलजी जन्मे, यह काश्मीरमें रहते थे वहांसे मदावरमें आये, मदावरके अधिपतिने इनका बहुत सन्मान किया और राजपंडित बनाकर अपने यहां रक्खा देवलजीके पुत्र महाप्रतापी आशादत्तजी त्रिपाठी नामसे प्रसिद्ध हुए और इनको अन्तर्वेद देशान्तर्गत शिवराजपुरके राजाने आपना पुरोहित नियत किया और इनसे यज्ञ कराया और दक्षिणामें शिवराजपुरके सहित साढे दश ग्राम दिये और आधे चिंगसपुरमें अपनी राजधानी बनाई, इस कारण चिंगसपुर कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंका आधा स्थान है उन ग्रामोंके नाम-मनोह, बरुआ, सखरेज, गौरी, शिवराजपुर, शिवली, उमरी, पचोर, हरिवंशपुर, गूदरपुर, चिंगसपुर, आधा यह साढे दस ग्राम कश्यपगोत्री कान्यकुब्जोंके हैं, आशादत्तजीके विश्वा पांच हैं, आशादत्तके ग्यारह पुत्र हुए उनमें पहले धनीराम मनोहमें बसे, काशीराम बरुआमें,

राजाराम सखरेजमें, वंशगोपाल गौरीमें, लोकनाथ शिवराजपुरमें, वन्दीराम शिवलीमें, हरिराम हरिवंशपुरमें, चन्दन गूदरपुरमें और नन्दनराम चिंगसपुरमें रहे। यह सब जहां वसे उस ग्रामके तिवारी कहाये। इन सबके १० विश्वा हैं।

मनोहग्रामका वंशविस्तार।

इस ग्राममें धनीराम तिवारीके हरी, धन्नी, लक्ष्मण और खेचर यह चर पुत्र हुए, हरी ख्यूरामें रहनेसे ख्यूराके तिवारी आशादत्ती कहाये, वि० ४ धन्नी करिगमें रहनेसे कारिंगके तिवारी कहाये, वि० ७ लक्ष्मण शिवपुरमें रहनेसे शिवपुरके तिवारी कहाये वि० ९ खेचर औनहाग्राममें आवसथ्य अग्न्याधान करनेसे अवस्थी कहाये वि० ७ हरीके दो पुत्र हुए बदरीनाथ और वोदल वदरीनाथ इनमें पहले ख्यूराके आशादत्ती तिवारी कहाये वि० ४ वोदल मनोहमें रहनेसे मनोहके वामन ग्रन्थी तिवारी कहाये वि० ६ धन्नीके नन्दू और बोधूनन्दू दो पुत्र हुए यह चिलौली ग्राममें निवास करनेसे चिलौलीके तिवारी कहाये वि० ७। बोधू रतनपुरमें रहनेसे रतनपुरके तिवारी कहाये वि० ७ । लक्ष्मणके कल्याण और परमेश्वरीदत्त दो पुत्र हुए और लक्ष्मणपुरमें स्मार्त यज्ञ करके लक्ष्मणपुरके मिश्र कहाये, वि ९ । बदरीनाथके पुत्र हेमनाथ बदरकाके दीक्षित कहाये वि० १०। वोदलके केशवराम और कृष्णदत्त दो पुत्र हुए, केशवराम शिवलीमें रहनेसे शिवलीके अवस्थी कहाये वि० ८। कृष्णदत्त मनोहके बावनग्रंथी तिवारी कहाये वि० ९। कृष्णदत्तके उदय, क्षेम, प्रयाग और गोपाल यह चार पुत्र हुए और मनोहके बावनग्रन्थी तिवारी कहाये वि० ९। उदयके पुत्र हेमनाथ अटेर और परमसुख हुए, इनमें हेमनाथ मनोहके बावनग्रंथी तिवारी कहाये, वि० ८। अटेर किरलुआके अग्निहोत्री कहाये वि० १०। परमसुख लक्ष्मणपुरके मिश्र कहाये, वि० ९। खेमके चार पुत्र हुए, गंगा, पैकू, कन्नू, जन्नू इन नामोंमें प्रसिद्ध हुए, गंगा शाहबादमें वसनेसे शाहबादके मिश्र कहाये वि० ११। पैकू औहागके तेवारी कहाये वि० ८। कन्नू बांगरमऊके दुबे कहाये वि० ७। जन्नू नवायेंके अवस्थी कहाये वि० ८। प्रयागके आशाराम, शिवदत्त और भट्टू यह तीन पुत्र हुए, आशाराम ख्यूराके तिवारी कहाये वि० ६। शिवदत्त रतनपुरके तिवारी कहाये वि० ४। भट्टू मनोहरके तिवारी कहाये वि० ४। गोपालके शुद्धी' हंसराम और भवानी यह तीन पुत्र हुए, शुद्धी सखरेजके तिवारी कहाये वि० १०। हंसराम पडरीके तिवारी कहाये वि० १०। भवानी सखरेजके तिवारी कहाये वि० १०। अटेरके भीम, भैरव, बदरीनाथ, किदारनाथ यह चार पुत्र हुए, भीम कल्लुआके अग्निहोत्री कहाये वि० ८। भैरव कोडाके अग्निहोत्री, वि० ८। बदरीनाथ ख्यूराके अग्निहोत्री वि० ८। और किदारनाथ कठेरुआके अग्निहोत्री कहाये, वि० ९। परमसुखके कमल और देवसरकमल नामक दो पुत्र हुए, कमल नगराके मिश्र कहाये वि० ८ देवसर विरामपुरके मिश्र कहाये वि० ९। गंगाके एक पुत्र गौतमने वेदाध्ययन करनेसे आचार्यपदवी पाकर रामपुरमें वसे ये रामपुरी गौतमाचार्य मिश्र कहाये, वि० १०। पैकूके दो पुत्र शिवदत्त और भद्रदत्त हुए, यह दोनों ओहागके तिवारी कहाये वि० ८। कन्नूके दिवोल और हरिहर दो पुत्र हुए, दिवोल आंटीके दुबे कहाये वि० ४। हरिहर बीठलपुरके दीक्षित कहाये वि० १९। जन्नूके दो पुत्र स्यूनी * और सीरू हुए, स्यूनी पिहानीमें रहनेसे पिहानीके अवस्थी कहाये

* वंशावलीके पुरुषोंका नाम देखनेसे जाना जाता है कि यह वह अविद्या अंधकारका समय था जब कि यह वंशावली संग्रहीत हुई है, कि नाम भी साधु वा उचित रूपके नहीं रक्खे जाते थे और तिवारी झट ही मिश्र वा दीक्षित निर्वाय कहने लगते थे, वा दीक्षितके पुत्र तिवारी वा अग्निहोत्री ग्राममात्रके परिवर्तनसे होजाते थे, इससे स्पष्ट है कि पांच छः सौ वर्षसे पहलेकी यह पदवी प्राप्त नहीं है।

वि० ९। सीरू नत्रायेमें रहनेसे वहांके अवस्थी कहाये वि०. १०। शिवदत्तके पुत्र. वेनी रतनपुरके तिवारी कहाये वि० ४। भवानीके धनई मनई, औंर शीतल तीन पुत्र हुए, धनई चांदीपुरके तिवारी वि० ८। मनई वकसीरके तिवारी वि० ९। शीतल मौरंगके तिवारी वि० ७। किदारनाथके मन्ना और मोती दो पुत्र हुए, मन्ना सिरोजके अग्निहोत्री वि० ९। मोती जनसारपुरके अग्निहोत्री वि० ४। दिवोलके शिवोल भवदेव और भवानी तीन पुत्र हुए, शिवोल वांगरके दुबे वि० ४। भवदेव शिवरामपुरके दुबे वि० ९। भवानी गलाथेके दुबे कहाये वि० ९।

हरिहरके श्रीकान्त भदैन और बवुआ तीन पुत्र हुए। श्रीकान्त ऊगूमें बसनेसे वहांके दीक्षित कहाये वि० २०। भदैन नौगांवमें रहनेसे नौगांवके दीक्षित कहाये वि० १४। और बबुआ बोढलपुरमें रहनेसे वहांके दीक्षित कहाये वि० १९।

श्रीकान्तके खगेश्वर धर्मेश्वर, और वीरेश्वर यह तीन पुत्र कहाये। धर्मेश्वरका वंश हडहा और एकडलामें है। वीरेश्वरका वंश भगवन्तनगर औनहाँ सखरेज और विरह इन ग्रामोंमें है, खगेश्वरके लाल और हरिदत्त यह दो पुत्र हुए, हरिदत्तके देवीदत्त और वैद्यनाथ यह दो पुत्र हुए, आगे इनका वंश नहीं चला, लालके सन्त और वहोरे दो पुत्र हुए, सन्तके पुत्र अनन्तदेव हुए, इनका एक घर ऊगू तथा कुछ घर सकूरावादमें है, वहोरेके तीन पुत्र सदानन्द भोलानाथ और भागवत हुए, सदानन्दके हरलाल और नैनसुख दो पुत्र हुए, हरलालके नन्दन और कुमार दो पुत्र हुए, नयनसुखके मुकुन्द हुए, भोलानाथके प्राणनाथ, प्राणनाथके हेमनाथ हुए, हेमनाथ, नन्दन और मुकुन्द यह तीनों वडे प्रतापी हुए, इनके वंशजोंका निवास स्थान ऊगू है वि० २०। वहां यह तीनों आंक विख्यात हैं, कुमारके पुत्र जोदल हुए इनका वंश टेढा ग्राममें है वि० २०। भागवतके कुलमणि और जगन्मणि दो पुत्र हुए, इनका वंश न्योतनी और नारायणदासखेरेमें है, यह सब श्रीकान्तके दीक्षित कहाये वि० २०।

वरुआ ग्रामवासियोंका वंश।

इस ग्राममें काशीराम तिवारीके सधारी, विहारी, गिरधारी, अनन्तराम, मनीराम और कुन्दन यह छः पुत्र हुए, सधारी सुगनापुरके दुबे कहाये, वि० ९। विहारी नागपुरके दुबे वि० ९। गिरधारी आंटीपुरके दुबे वि० ५। अनन्तराम वरुआके तिवारी, वि० ७। मनीराम गोपालपुरके तिवारी वि० ७। और कुन्दन वांगरमऊके तिवारी कहाये वि० ७।

सखेरज ग्रामनिवासियोंका वंश।

सखरेजमें राजारामके राधी, जानी, चतुरी और कन्है यह चार पुत्र हुए, राधे और जानी एकडाके तिवारी कहाये वि० १०। चतुरी और कन्है हडहाके तिवारी कहाये वि० ९। राधेके राय और विभाकर दो पुत्र हुए, राय अवनिहापुरके तिवारी वि० ७। विभाकर जुईके तिवारी कहाये वि० ८। चतुरीके तीन पुत्र चन्दन मतिराम और सखाराम हुए, चन्दन हडहाके अग्निहोत्री वि० ८। मतिराम सांपेपुरवाके तिवारी वि० ८। सखाराम गोत्र (ऊचपर) के तिवारी वि० ८। कन्हैके यदुनाथ और वन्दन दो पुत्र हुए, यदुनाथ असनीके तिवारी वि० ८। वन्दन अर्चितपुरके तिवारी कहाये वि० ८

गारा ग्रामके वंशका वर्णन।

गौरी ग्राममें वंशगोपाल तिवारीके बा पुत्र हुए, यह गारीके तिवारी कहाये वि० ९। बाबूके वेनी, मनऊ, सुन्दर, साहेव और हेमचल यह पांच पुत्र हुए, यह पंचभैया तिवारी कहाये वेनी जनपुरमें

त्रि० ९ । ननऊ स्यानऊ पुरम त्रि० ६ । सुन्दर विद्यानपुरमें बसे त्रि० ६ । लाहर और हेमचन्द मिहार-पुरमें बसे, यह जहां रहे वहां पंचमैया तिवारी कहाये । सुन्दरके खेम और जिझाड दो पुत्र हुए, खेम मिचौलीके अवस्थी कहाये त्रि० ४ । जिझाड खिर्मीपुरके अवस्थी कहाये त्रि० ३ ।

शिवराजपुर ग्रामके वंशवालोंका वर्णन ।

शिवराज पुरमें लोकनाथके चा पुत्र हुए, उनके नाम कान्ते, चूके, आनन्दवन, बघुचार, कान्ते शिवराजपुरमें रहनेसे शिवराजपुरके तिवारी कहाये त्रि० ११ । चूके पंचमैया ग्राममें रहनेसे वहांके तिवारी कहाये त्रि० १० । आनन्दवन बरहमपुरमें रहनेसे वहांके तिवारी कहाये त्रि० ८ । बघुचार शिवराजपुरमें रहनेसे वहांके तिवारी कहाये त्रि० ८ ।

शिवलीग्राम निवासियोंका वंश ।

वन्दीनाथके पुत्र लोकनाथ शिवलीमें रहनेसे शिवलीके तिवारी कहाये त्रि० ९ । लोकनाथके रमते, स्यानऊ और रंजन तीन पुत्र हुए, रमते फकहापुरके तिवारी कहाये त्रि० ९ । स्यानऊ दिलीपपुरके तिवारी कहाये त्रि० १० । रंजन ककरदहीके तिवारी कहाये त्रि० १० । रमतेके गौरी, गली, अंगद, मंगद चार पुत्र हुए, गौरी पुरवाके तिवारी त्रि० ३ । गैली विहारपुरके तिवारी त्रि० ९ । अंगद चेचर्डीके तिवारी त्रि० ६ । मंगद शाहबादके तिवारी त्रि० ३ । स्यानऊके कंसू और बंसू दो पुत्र हुए, कंसू नौबस्ताके तिवारी कहाये त्रि० ७ । बंसू बरुआके तिवारी कहाये त्रि० ५ । रंजनके भग्गी, मोला और दलपति तीन पुत्र हुए, भग्गी श्रीपुरके तिवारी कहाये त्रि० ९ । मोला विहारपुरके तिवारी त्रि० ९ । दलपति गूदरपुरके तिवारी कहाये त्रि० ८ । कंसूके कश्यप और दिलीप दो पुत्र हुए, कश्यप विदारीके तिवारी त्रि० ९ । दिलीप दयालपुरके तिवारी कहाये त्रि० ।

ऊमरीग्रामनिवासियोंका वंशवर्णन.

ऊमरीमें परमानन्दकी पहली स्त्रीसे बचनू हुए. यह ऊमरीके तिवारी कहाये त्रि० ६ । दूसरी स्त्रीसे हंसू, जीवन, देवी और शंकर यह चार पुत्र हुए, हंसू गुनरीके तिवारी त्रि० ९ । जीवन चिचौलीके तिवारी त्रि० ८ । देवी बरगदपुरके बरगदहा तिवारी त्रि० ६ । शंकर बतूराके तिवारी कहाये त्रि० ५ । बचनूके नैनी और नाखन दो पुत्र हुए, नैनी कुम्हरांवके तिवारी त्रि० ५ । नाखन महोलीके तिवारी कहाये त्रि० ४ । नाखनके चण्ड और मुण्ड दो पुत्र हुए, चंड मंगेराके तिवारी त्रि० ९ । मुंड शिवपुरके तिवारी कहाये त्रि० ९ ।

पचोरग्रामनिवासियोंका वंशवर्णन.

पचोरमें सुखानंदके पुत्र वंशीधर दयालपुरके तिवारी कहाये त्रि० १० । वंशीधरके गली, बोधू, नन्दू तीन पुत्र हुए, गली श्रीपतिपुरके तिवारी त्रि० १० । बोधू रतनपुरके सुकरिहा तिवारी कहाये, त्रि० १० । नन्दू चिचालीके तिवारी कहाये त्रि० ७ । नन्दूके गंगू और बोदल दो पुत्र हुए, गंगू पचोरके तिवारी त्रि० । ९ बोदल विरानपुरके तिवारी कहाये त्रि० ५ ॥

हरिवंशपुरग्रामवासियोंका वंशवर्णन.

हरिवंशपुरमें हरिरामकी पहली स्त्रीसे गडरू पुत्र हुए जो हरिवंशपुरके तिवारी कहाये त्रि० ८ । हरिरामकी दूसरी स्त्रीसे सुखराम हुए, लोढीतूपुरके तिवारी कहाये त्रि० ८ । गडरूके सुखी, दुःखी, श्रीपत और सन्तू चार पुत्र हुए, सुखी बीबीपुरके तिवारी त्रि० ५ । दुःखी गडरीपुरके तिवारी त्रि० ४ । श्रीपति बर-

वाईपुरके तिवारी वि० ५। सन्तू सपरीपुरके तिवारी वि० ९। श्रीपतिके हरजू प्रभुजू दो पुत्र हुए, यह दोनों घरवाईपुरके तिवारी कहाये वि० ४।

गूदरग्रामवासियोंका वंश.

गूदरपुरमें चन्दनके पुत्र हरिनाथ गूदरपुरके तिवारी कहाये वि० १० हरिनाथके राते, पाते, चन्दू, हर्षू, वछनू, माते यह छः पुत्र हुए, राते, पाते गूदरपुरके तिवारी, वि० १०। चन्दू, हर्षू वछनू वि० ७। और माते वरुआमें रहनेसे वरुआके तिवारी कहाये वि० १०। चन्दूके कान्हरू और माधवदास दो पुत्र हुए, दोनों वरुआके तिवारी कहाये वि० ७। कान्हरूके रामनाथ, जगन्नाथ, धनजई, किशोर, धनी-भूधर, जागन, पुरुषोत्तम आठ पुत्र हुए, रामनाथ जगन्नाथ कठरेके तिवारी कहाये वि० १४। धन-जई गूदरपुरके वि० १२। किशोर मंहगपुरके वि० ११। धेनी अनन्दपुरके तिवारी वि० १४। भूधर छितावाले तिवारी वि० ४ जागन झगडगामीके तिवारी वि० ४। पुरुषोत्तम तिहुंडाके तिवारी वि० ४ माधवदासकी पहली भार्यासे रमई वि० १७। घाघ वि० १०। यह दो पुत्र हुए. दोनों जहांगीराबादी तिवारी कहाये वि० २०। १० इनकी दूसरी स्त्रीमें अर्चित, मल्हु, गणपति, माधव चार पुत्र हुए, चारों वरुआमें रहनेसे वरुआके तिवारी कहाये वि० १०। रमईकी पहली स्त्रीसे, दमा, गोपाल गोवर्द्धन, चतू यह चार पुत्र हुए। दमा सपईमें रहनेसे सपईके तिवारी कहाये वि० १०। गोपाल पडरीमें रहनेसे पडरीके तिवारी कहाये, वि० १६। गोवर्द्धन कठेरुआमें रहनेसे वहांके तिवारी कहाये वि० १९। चतू जहांगीराबादमें रहनेसे वहांके तिवारी कहाये वि० २०। रमईकी दूसरी स्त्रीमें आशाधर हुए वह यमुनापार रहनेसे वीरवलीतिवारी कहाये वि० ९। घाघके नन्दराम, गजराम, महाशर्म यह तीनों पुत्र हुए यह तीनों जहांगीरावादी तिवारी घाघके कहाये वि० १७। माधवके मुंमुआ नामक पुत्र गोपालपुरके तिवारी कहाये, विश्वा १३। दमाके तीन पुत्र श्रीधर, लोकनाथ और लक्ष्मण सपईमें रहनेसे सपईके तिवारी कहाये वि० १७। इनमें श्रीधर अपने नामसे प्रसिद्ध हुए, वि० १०। और लोकनाथ वि० १८। लक्ष्मण दमाके तिवारी कहाये वि० १७। गोपालके रणवीर, जगन्नाथ दो पुत्र हुए, ये पडरीमें रहनेसे गोपालके तिवारी कहाये, वि० १८। १७। गोवर्द्धनके चक्रपाणि, कमला-पति, मोहन, मुरलीधर, उमादत्त, धर्मेश्वर और प्रद्युम्न यह सात पुत्र हुए, यह सब कठेरुआमें रहनेसे गोव-र्द्धनके तिवारी कहाये, इनमें चक्रपाणि और कमलापतिके वि० २०। मोहन मुरलीधरके १९ और शेष तीनोंके वि० १८ हैं। चतूके दिउता, लाला, रूपा, मोहन और हीरानन्द पांच पुत्र हुए, यह सब चतूके तिवारी कहाये, इनमें दिउताके १९ वि० हीरानन्दके १७ वि० शेष तीनोंके वि० २० हैं।

चिंगसपुरके रहनेवालोंका वंशवर्णन।

यहांके रहने वाले नन्दरामके सविता नामक पुत्र हुए, यह चिंगसपुरके तिवारी कहाये वि० ९। नन्दरामके वंशमें दिवता और जसराम अपने अपने नामसे अग्निहोत्री कहाये वि० ४ चार। यह चिंगस-पुर आधा स्थान है।

जहांगीराबाद अकबरके पुत्र जहांगीरने बसाया, इसकी स्थापना १६७४ संवत्में हुई, उस समयतक भारतमें ब्राह्मणोंकी गुणकर्मके अनुसार प्रतिष्ठा बढती घटती रही, मानमर्य्यादा विश्वा घटते रहे पर अब ढाई सौ वर्षके उपरान्त ही यह दशा है कि उच्च कुल चाहै जैसा निरक्षर भट्टाचार्य क्यों न हों वह ऊंचाही है और शेष दशगोत्री चाहै जैसे सुकर्मी क्यों न हों वह धाकरही हैं, यह अविद्या नहीं तो और क्या है। फिर कन्याविलापकी बात या ठहरोनीकी बात तो क्या कहैं। कलेजा मुखको आता है प्रतापनारायण मिश्रने

सत्य कहा था (सबसे वढकर दुर्दशा कान्यकुब्जकन्यनकी है) भाइयो अब तो जागो और भाइयोंको अपना कर जातिको पुष्ट करो । इति कश्यपगोत्र ।

अथ शाण्डिल्यगोत्रव्याख्यानम् ।

ब्रह्माजीके पुत्र मरीचि, मरीचिके कश्यप, कश्यपके यज्ञ करनेसे अग्निकुण्डसे शाण्डिल्यऋषि हुए इनसे शाण्डिल्यगोत्र चला, अग्निका नाम हुताशन भी है और अग्निका गोत्र शाण्डिल्य कहा जाता है, शांडिल्यवंशमें एक पुरुष महाप्रतापी हुताशन हुआ,हुताशनके वंशमें बहुतकाल पीछे मनोरथ तिवारी हुए, इन्होंने बुन्देलखण्डके राजाको पुत्रेष्टि यज्ञ कराया, इन राजाका नाम अमरसिंह था और राजपुरोहितका नाम विश्वनाथ था । विश्वनाथने मनोरथ तिवारीको अपनी कन्या व्याह दी, पीछे दतिया, उडैसा, और मदावरके राजाओंने इनको बुलाया, और तीनों शिष्य हुए, कुछकाल पीछे हमीरपुरके राजपुरोहित गंगारामकी कन्यासे दूसरा विवाह किया, और उस समयसे वह तिवारीसे मिश्र कहाये, इनकी निवासभूमि धतुरा थी, इस कारण यह धतुराके मिश्र कहाये वि० ४ । इनकी पहली स्त्रीसे कमलनाभि पुत्र हुए; वह मातासमेत मऊग्राममें रहे इससे मऊके मिश्र कहाये, वि० ४ । दूसरी स्त्रीसे पद्मनाभ वि० ७ देवनाम दो पुत्र हुए यह हमीरपुरके मिश्र कहाये वि० ९ । पद्मनाभके पुत्र हरिहर हमीरपुरके उपाध्याय कहाये वि० ३ । देवनाभके पुत्र शारंगधर हमीरपुरके मिश्र कहाये वि० ४ । हरिहरके गंगाराम, वंशीधर, जगन्नाथ यह तीन हमीरपुरके उपाध्याय मिश्र कहाये वि० ३ । शारङ्गधरके त्रिपुर और गदाधर दो पुत्र हुए, त्रिपुर कपिलाके मिश्र कहाये वि० १० । गदाधर हमीरपुरके मिश्र कहाये वि० ९ । त्रिपुरके बाबू खेमकरण और हेमनाथ तीन पुत्र हुए. बाबू खानीपुरके मिश्र वि० ८ । खेमकरण भोजपुरके मिश्र वि० ९ । हेमनाथ हमीरपुरके मिश्र कहाये वि० ४ । गदाधरके गंगाधर और श्रीहर्ष यह दो पुत्र हुए,- गंगाधर भोजपुरमें रहे, और वहांके दीक्षित कहाये वि० ९ । श्रीहर्ष खानीपुरमें रहनेसे वहांके मिश्र कहाये, वि० ७ । खेमकरणके पुत्र दारौ असनीमें रहनेसे असनीके शुक्ल कहाये वि० ४ । गंगाधरकी १ स्त्रीसे बाबू, बलराम, वीरेश्वर और उमादत्त यह चार पुत्र हुए, बाबू, और बलराम अंठेरमें रहनेसे वहांके दीक्षित कहाये वि० १८ । वीरेश्वर और उमादत्त वटपुरमें रहनेसे अपने नामसे दीक्षित कहाये वि० १९ । गंगारामकी दूसरी स्त्री घेतलीसे गोपी और हंसराम दो पुत्र हुए, गोपी अपनी माताके सहित नौगांवमें बसे, इससे वहांके मिश्र कहाये, वि० १० । हंसराम अंटेरिमें रहे और दीक्षित कहाये वि० १४ । श्रीहर्षके परशू, हिमकर, ललकर और गोपीनाथ यह चार पुत्र हुए, परशू खानीपुरके मिश्र वि० २० । हिमकर भटेउराके मिश्र वि० १९ । ललकर वि० १९ और गोपीनाथ असनीमें रहनेसे असनीके मिश्र कहाये वि० १ । बाबूके विद्याधर, वनवारी और रघुनंदन यह तीन पुत्र हुए और अंटेरमें रहनेसे अंटेरके दीक्षित कहाये, वि० १६ । बलिरामके कंगू, समाधान, वासी और चतुरी नामक चार पुत्र हुए, कंगू वटपुरमें रहनेसे वहांके दीक्षित कहाये वि० २० शष तीनों अंटेरमें रहनेसे वहांके दीक्षित कहाये क्रमसे वि० १९ । १८ । १८ । वीरेश्वरके मुरली, गिरिधारी, नित्यानन्द, शिरोमणि, जगजीवन यह पांच पुत्र हुए यह सब वटपुरमें रहे, और वीरेश्वरके दीक्षित कहाये वि० २० । जगजीवनके १६ उमादत्तके १७ बुधकेशव (११) यादव (१६) और गोविन्द (१९) यह चार पुत्र हुए, और वटपुरमें रहकर उमादत्तके दीक्षित कहाये वि० (१७ । ११ । १६ । २९) परशूके पद्मपाणि, कमलपाणि, चक्रपाणि और वंशीधर यह चार पुत्र हुए, और चारों खानीपुर वाले परशूके मिश्र कहाये । वि० २० । हिमकरके शंकर, क्षेमराज, जयभद्र तीन पुत्र हुए, शंकरने भटोउरामें, निवास किया वि० १९ । क्षेमराजने असनीमें निवास किया वि० १९ । जयभद्रने गंगासोंमें निवास किया वि० १९ । यह तीनों हिमकरके मिश्र कहाये, गोपीनाथके

मथुरानाथ, प्रभाकर, श्रीधर तीन पुत्र हुए, यह तीनों कन्नोजमें बसे मथुरानाथ प्रभाकर गोपीनाथी कन्नोज के मिश्र कहाये वि० १७ । श्रीधर गोपीनाथी घोविहामिश्र कहाये वि० १८ । कंगूके श्रद्धा पुरुषोत्तम, माधवराम भट्टाचार्य ये चार पुत्र हुए, यह चारों वटश्वरमें रहे और कंगूके दीक्षित कहाये वि० सबके २०। समाधानके चार पुत्र हुए उनके नाम इन्द्र, मुकुन्द, जागे और बदले हुए, यह चारों बटपुरमें समाधानके दीक्षित कहाये क्रमसे वि० ७ । ६ । ७ । ८ । मुरलीके लच्छू विरजू और मोहन तथा दिवऊ यह चार पुत्र हुए, यह चारों वटपुरवाले वीरेश्वरके दीक्षित कहाये वि० १७ । १८ । १८ । १७ जगजीवनके धर्मू और शर्मू दो पुत्र हुए यह बटपुरवाले वीरेश्वरके दीक्षित कहाये वि० १८ । कमलपाणिक लालमणि, वि० १९, लोकनाथ विश्वनाथ, चतुर्भुज, यह चारों असनी वाले परशुके मिश्र कहाये वि० २० । जयभद्रके लछनू और बछनू दो पुत्र हुए यह दोनों गंगासोंवाले हिमकरके मिश्र कहायेवि० १७ । १६। प्रभाकरकेश्रीकंठ और माधव यह दो पुत्र हुए आर गोपालपुरमें बसे गोपीनाथी मिश्र कहाये विश्वा १९ । श्रीधरके एक पुत्र चतुर्भुज हुए, यह असनीके गोपीनाथी धोवियामिश्र कहाये वि० १९ । श्रद्धाके चक्रपाणि, शेखर, और श्रीचन्द यह तीन पुत्र हुए, यह वटपुरमें रहे और कंगूके दीक्षित कहाये इनमें चक्रपाणि और शेखरके १९ और श्रीचन्दके १८ विश्वे हैं । धर्मके पुत्र जयकृष्ण वटपुरवाले वीरेश्वरके दीक्षित कहाये वि० १५ । चतुर्भुजके सुक्खे, मुन्ने, बुद्धा और दीप यह चार पुत्र हुए, यह चारों मीराकी सरायवाले परशूके मिश्र कहाये वि० २० । २० । १९ । २० । क्रमसे जानने । श्रीकण्ठके प्राणनाथ, केशवराम, हरिनन्दन यह तीन पुत्र हुए । मोजावादके गोपीनाथी मिश्र कहाये १२ । १३ । १४ वि० क्रमसे जानने । जयकृष्णके यज्ञपति,गृहपति; धीरेश्वर यज्ञदत्त क्षेमकरण यह पांच वटपुरवाले वीरेश्वर के दीक्षित कहाये । वि० १६ । १५ । १५ । १४ । १४। क्रमसे जानने । सुक्खेके गागम और प्राथम यह दो पुत्र हुए, यह दोनों मीराकी सरायवाले परशूके मिश्र रामपुरी कहाये दोनोंके विश्वा २० हैं । प्राणनाथके गदाधर और लक्ष्मण यह दो पुत्र हुए, और खानीपुरके मिश्र कहाये विश्वा १० ॥ क्षेमकरणके रूपनारयण, सूर्यमणि और दीनानाथ यह तीन पुत्र हुए और वटपुरवाले वीरेश्वरके दीक्षित कहाये वि० १४।१५।१४ क्रमसे जानने । दीनानाथके गोकुल,समाधान, देवकीनन्दन और देवदत्त यह चार पुत्र हुए । यह चारों वटपुरी वीरेश्वरके मिश्र कहाये, वि० १३ । १२ । १३ । १३ क्रमसे जानने । गोकुलके कृपाराम और मजन यह दो पुत्र हुए, और वटपुरी वीरेश्वरके दीक्षित कहाये विश्वा १३ । १२ क्रमसे जानने । भजनके काशीप्रसाद, रामप्रसाद यह दो पुत्र हुए और वटपुरी वीरेश्वरके दीक्षित कहाये विश्वा १२ दोनोंके जानने । काशीप्रसादके चन्द्रसेन रामसहाय कालिका यह तीन पुत्र हुए, इनमें चन्द्रसेन डौडियाखेरेके दीक्षित कहाये विश्वा ३ । रामसहाय वनिगांवमें बसे, और वहांके तिवारी कहाये विश्वा ३ । कालिका कठौतामें रहे और वहांके तिवारी कहाये विश्वा ३ । चन्द्रसेनके वंदीदीन, जागन, मनोहर और मोती यह चार पुत्र हुए, बन्दीदीन धतूराके तिवारी विश्वा ३ जागन धतूराके अवस्थी वि० ३ । मनोहर कठौताके अवस्थी विश्वा ३ । मोती अमिलगहनीके अवस्थी कहाये विश्वा ३ । रामसहायके दिवता, जसराम और जवाहिर तीन पुत्र हुए दिवता भावपुराके अग्निहोत्री कहाये विश्वा ३ । जसराम वटपुरके अग्निहोत्री विश्वा ३ । और जवाहिर खभराके मिश्र कहाये विश्वा ५ । कालिकाके मतिराम और कुन्दन दो पुत्र हुए मतिराम लखनऊके उपाध्याय कहाये विश्वा २ । कुन्दन चिचोलीके उपाध्याय कहाये विश्वा ३ । इस प्रकार शाण्डिल्य गोत्रमें १७ पीढी और एकसौ तीस पुरुष वंशकर्ता पाये जाते हैं ।

कात्यायन गोत्रका व्याख्यान।

श्रीब्रह्मर्षि विश्वामित्रजीके वंशमें उत्पन्न महर्षि कात्यायनजीके गोत्रमें चतुर्भुज द्विवेदी वडे विद्वान् और प्रसिद्ध हुए। वे टिकारिया ग्राममें निवास करनेसे टिकारियाके दुबे कहाये वि० ४। चतुर्भुजके पुत्र गार्गिदत्त हुए, यह वडे विद्वान् और महाप्रतापी हुए, कंजपुरके राजाने इनको बुलाकर अपना गुरु बनाय राजपुरोहित हेमनाथकी कन्याके संग इनका विवाह हुआ, और यह कंजपुरमें ही रहने लगे, इसकारण कंजपुरके मिश्र कहाये। वि० १०। इनकी पहिली स्त्रीसे ऐंडे, गैंडे, खट्टे मिट्ठे यह चार पुत्र हुए, ऐंडे वदरकामें वसे इससे वदरकाके मिश्र कहाये वि० १०। गैंडे सिरकिडामें वसे और वहांके दुबे कहाये वि० १०। खट्टे मिट्ठे कंजपुरमें वसे और कंजपुरके मिश्र कहाये वि० १०। दूसरी स्त्रीसे दिउता और गोविन्द यह दो पुत्र उत्पन्न हुए और दोनों कंजपुरके मिश्र कहाये वि० १०। ऐंडेके छः पुत्र मोहनलाल, काशीनाथ, जगन्नाथ, विश्वनाथ, पीया और महाशर्म हुए, इनमें मोहनलाल और महाशर्म वदरका ववनाटोलेके मिश्र कहाये वि० १४। १० क्रमसे जानने। काशीनाथ, जगन्नाथ और विश्वनाथ तथा पीया यह वदरकाके मिश्र कहाये वि० १६। १६। १० क्रमसे जानने। गैंडके राधारमण, सूर्यप्रसाद, दयाराम सेवाराम और गुलजारी यह पांच पुत्र हुए, इनमें राधारमण जगदीशपुरके मिश्र, वि० १०। सूर्यप्रसाद, सिर्किडाके मिश्र, वि० १०। दयाराम सरवरके मिश्र, वि० १०। सेवाराम पत्योंजाके मिश्र, वि० ८। और गुलजारी नैथुवाके मिश्र कहाये वि० १०। खट्टेके पवननाथ, लोकनाथ और विश्वनाथ यह तीन पुत्र हुए, पवननाथ वैजगांवके मिश्र कहाये, वि० १९। लोकनाथ पासीखेरेके मिश्र वि० १४। विश्वनाथ गलेथेके मिश्र कहाये वि० ११। मिट्ठेके अनन्तराम और चिन्तामणि यह दो पुत्र हुए; इनमें अनन्तराम, राजापुरके अग्निहोत्र यज्ञ करनेसे राजापुरमें अग्निहोत्री कहाये वि० १०। चिन्तामणि गलाथेके मिश्र कहाये वि० १३। मोहनलालके वेदमूर्ति, कमलनयन, मान्धाता यह तीन पुत्र हुए और तीनों वदरका ववनाटोलेके मिश्र कहाये वि० १४। १३। १४ क्रमसे जानने। पीथके एक पुत्र विज्ञानेश्वर हुए सो वरुआके मिश्र कहाये वि० १४। सेवारामके भगनी और भगवन्त यह दो पुत्र हुए, भगनी पत्योंजाके दुबे कहाये वि० ७। भगवन्त नलहारपुरके मिश्र कहाये वि० ६। पवननाथके मुरलीधर, मल्लिनाथ, गोपीनाथ और मधुनाथ यह चार पुत्र हुए; और वैजगांवके मिश्र कहाये विश्वा १६ सबके। लोकनाथकी पहली स्त्रीसे मथुरानाथ हुए यह पासीखेरेके मिश्र कहाये वि० १९। दूसरीसे काशीनाथ, रतिनाथ, नीलकंठ यह तीन पुत्र हुए और गलाथेवाले मिश्र कहाये वि० १३। १४। १४ क्रमसे जानने। विश्वनाथके एक पुत्र शंभुनाथ पासीखेरेके हुए, और गलाथेवाले मिश्र कहाये वि० १३ अनन्तरामके पहली स्त्रीसे मथुरा अयोध्या और प्रयाग तीन पुत्र हुए, मथुरा वदरकाके अग्निहोत्री वि० ५। अयोध्या विहगांवके अग्निहोत्री कहाये वि० १०। प्रयाग सोतीपुरके अग्निहोत्री कहाये वि० ३। अनन्तरामकी दूसरी स्त्रीसे मुन्ना और केशरी यह दोपुत्र हुए, मुन्ना चांदापुरके अग्निहोत्री वि० ८। केशरी रामपुरके मिश्र कहाये वि० ९। चिन्तामणिके केशी, रामनाथ और अनिरुद्ध यह तीन पुत्र हुए, केशी यह सुठियांयेंके मिश्र वि० २०। रामनाथ आंकनके मिश्र, वि० १९ और अनिरुद्ध कन्नौज ग्वाल मैदानके मिश्र कहाये वि० २०। विज्ञानेश्वरके एक पुत्र श्रीदत्त हुए सो लवानीके मिश्र कहाये वि० १२। मल्लिनाथके एक पुत्र भावनाथ हुए सो वहसरायके मिश्र कहाये वि० १९। गोपीनाथके एक पुत्र रामनाथ हुए पालीमें निवास किया और वैजगांवके मिश्र कहाये वि० १९। मधुनाथके नृसिंहनाथ पुत्र हुए यह हडहामें वसे और वैजगांवके मिश्र कहाये वि० १४। केशीके हरिराम, माधवराम

यह दो पुत्र हुए, यह दोनों सुठियायेंके मिश्र कहाये विश्वा १७ । १८ क्रमसे जानने । रामनाथके मोहन, कमल, प्रजापति और कन्ते यह चार पुत्र हुए, इनमें मोहन और कमल वदरकामें वसे, और आंकिनके मिश्र कहाये वि० २० । २० । प्रजापति मांझगांवके मिश्र कहायें वि० २० । कन्ते निवादामें बसे और आंकिनके मिश्र कहाये वि० १८ । अनिरुद्धकी पहली स्त्रीके सदा, शंकर, हंसराम और शिरोमणि यह चार पुत्र हुए, यह चारों ग्वालमैदानवाले (कन्नौजके) अनिरुद्धके मिश्र कहाये वि० २० । २० २० । २० । क्रमसे जानने, दूसरी स्त्रीसे गंगाप्रसाद हुए, और अनिरुद्धके मिश्र कहाये वि० १८ । शंकरके लाले और वाले यह दो पुत्र हुए और दोनों कन्नौजके मिश्र कहाये वि० २० । श्रीदत्तके पुत्र सुरेश्वर हुए और वांकीपुर (लावनी) के मिश्र कहाये वि० १२ । हरीरामके गनी, गोवर्द्धन, मार्कण्डेय और भवन यह चार पुत्र हुए, गनी और भवन नौगवावाले सुठियायेंके मिश्र कहाये वि० १७ । १७। गोवर्द्धन और मार्कण्डेय सुठियायेंके मिश्र कहाये वि० २० । १८ । माधवरामकी पहिली स्त्रीसे इन्द्रमणि, माधनाथ टीकाराम तीन पुत्र हुए, और सुठियायेंके मिश्र कहाये वि० १९। १८ । १९ । दूसरी स्त्रीसे राजाराम और वीरभद्र यह दो पुत्र हुए, यह सुठियायेंके मिश्र कहाये वि० १८ । १७ । मोहनके मूके, प्रेम और तेज यह तीन पुत्र हुए और मुरादाबादमें वसे और आंकिनके मिश्र कहाये वि० २० । २० । २० क्रमसे जानने, प्रजापतिके हीरानन्द, चतुर्भुज, योगेश्वर, सिद्धी, उर्वीधर और बदले यह छः पुत्र हुए । यह सब मांझगांवके मिश्र कहाये वि० २० । कान्तेके विद्याधर, रामदयाल, घासीराम, वीरेश्वर यह चार पुत्र हुए, और निवादावाले आंकिनके मिश्र कहाये वि० १७।१६।१६।१८।क्रमसे जानने, शिरोमणिके दत्त दिवाकर, हेमनाथ तीन पुत्र हुए यह तीनों कन्नौज ग्वालमैदानके अनिरुद्धवाले मिश्र कहाये १९ । १९ । १९ विश्वे क्रमसे जानने, गंगाप्रसादके घना, वला, सतीदास, श्रीहर्ष यह चार पुत्र हुए, घना, वला बौधीके मिश्र कहाये वि० १० । १० । सतीदास कनौजके मिश्र कहाये वि० १४ । श्रीहर्ष गोपामऊके मिश्र कहाये वि० १० । हीरानन्दके चाचे देवमणि, भोले, पलटू, कृपा, सन्तोषी यह छः पुत्र हुए, इनमें चाचे पलटू संतोषी यह काकोरीमें वसे और मांझगांवके मिश्र कहाये वि० । २० । १९ । १९ क्रमसे जानने, देवमणि, भोले, और कृपा यह मांझगांवके मिश्र कहाये वि० २० । १८ । २० क्रमसे जानने, हेमनाथके मूले, धमने, गंगाधर, विश्वनाथ और रघुनाथ यह पांच पुत्र हुए, और कनोज (ग्वालमैदान) के मिश्र कहाये वि० १९ । १९ । १९ । १९ । १९ क्रमसे जानने, चाचेके पराशर और खेम यह दो पुत्र हुए, और काकोरामें रहे मांझगांवके मिश्र कहाये वि० १८ । १८ । मूलेकें एक पुत्र कमलभाल पिहानीमें रहे और पिहानीके मिश्र कहाये वि० १०। गंगाधरकी पहली स्त्रीसे वन्दन, गुलाल और भगोले यह तीन पुत्र हुए, और कन्नौज ग्वालमैदानके मिश्र कहाये वि० १९ । सबके क्रमसे दूसरी स्त्रीके शंभु, वेदनाथ, माधव, हरिनाथ यह चार पुत्र हुए, और दरौलीमें रहे, और ग्वालमैदान कन्नौजके मिश्र कहाये वि० १९ । १९ । १९ । १९ क्रमसे जानने, इस प्रकार कात्यायन वंशमें १० पीढी और ११६ पुरुष वंशकर्ता हुए ।

भरद्वाज गोत्रका वर्णन ।

ब्रह्माजीके पुत्र अंगिरा, अंगिराके बृहस्पति, बृहस्पतिके भरद्वाज भरद्वाजके वंशमें द्रोणाचार्य हुए द्रोणाचार्यके अश्वत्थामा हुए इनके वंशमें बहुत समय उपरान्त सत्याधर वामदेव परम प्रतापी हुए और तरी ग्राममें वास करनेके कारण तरीके शुक्ल कहाये वि० ४ । सत्याधरके पुत्र मधुकर विगहपुरमें रहनेसे

विगहापुरके शुक्ल कहाये वि० ४ । वामदेवके पुत्र गुणाकर वनस्थीके पांडे कहाये वि० ७। मधुकरके और गुणाकरके पुत्र पौत्रादिसे बहुतसी वंशवृद्धि हुई, मधुकरके चन्दन, यदुनन्दन, मणिकंठ, कुंजू, वंशी, दुर्गादत्त, धर्मदत्त, महासुख, मिश्री और इन्द्रदत्त यह दश पुत्र हुए। चन्दन तरीके शुक्ल वि० ६ । यदुनन्दन नवायेंके शुक्ल वि० ९ । मणिकंठ पुरवाके शुक्ल वि० २ । कुंजू गहरौलीके शुक्ल वि० ४ । वंशी खरौलीके सुकुल वि० ४ । दुर्गादास भैंसोईके सुकुल वि० ९ । धर्मदत्त विगहपुरके सुकुल वि० ११ । महासुख गूदरपुरके सुकुल वि० ९ । मिश्री चन्द्रपुरके सुकुल वि० २ । इन्द्रदत्त ऊंचे गांवके सुकुल कहाये वि० ४ । गुणाकरके एक पुत्र जगदेव वनस्थीके पांडे कहाये वि० ९ चन्दनके रुदी, पुरुषोत्तम और सन्त यह तीन पुत्र हुए, और तरीके सुकुल कहाये वि० ६ । ५ । ५ । यदुकी पहली स्त्रीसे एक पुत्र सत्यशील हुए वह नवायेंमें वसे और सत्यके सुकुल कहाये वि० ९ । दूसरी स्त्रीसे सर्वसुख नामक पुत्र हुए यह पाटनके सुकुल कहाये वि० १० महासुखके आशादत्त, पद्मनाम, रामचन्द्र यह तीन पुत्र हुए, और यह तीनों गूदरपुरके सुकुल कहाये वि० ९ । ९ । ९ । मिश्रीके शिवमणि और कुमनई यह दो पुत्र हुए, शिवमणि चौसाके सुकुल कहाये वि० ८ । कुमनई चन्दनपुरके सुकुल कहाये वि० ९ । जगदेवकी पहली स्त्रीसे भास्कर पुत्र हुए, यह वनस्थीके पांडे कहाये वि० ५ । दूसरी स्त्रीसे लाला, भोजराज, रामनाथ, यह तीन पुत्र हुए, लाला गौराके पांडे वि० ९ । भोजराज कपिलाके पांडे वि० १० । रामनाथ पटियारीके पांडे कहाये वि० १० । सर्वसुखके नाल, घाटम और अजय यह तीन पुत्र हुए, यह तीनों दिलीपपुरके सुकुल कहाये वि० १२ । शिवमणिके दिनकर, महँगू, पटोरे यह तीन पुत्र हुए, दिनकर चोसाके सुकुल वि० ७ । महँगू पटोरेको कोई सुकुल कोई मिश्र कहते हैं, इससे यह सुकुल मिश्र कहाये और चौसामें रहे वि० ८ । किसी वंशावलीका लेख है कि भानु सुकुलने महँगू. पटेरोको राशिमें वैठाया, सो भानु सुकुलमें मिलनेके कारण दोनों सुकुल मिश्र विख्यात हुए, इनके वंशीय अवतक अपनेको भानुके सुकुल कहते हैं, कुमनईके सूर्यमणि, गोपीनाथ दो पुत्र हुए, दोनों गौडहाके सुकुल कहाये वि० १० । भास्करके बछहु और कुलीन दो पुत्र हुए दोनों भीषमपुरके पांडे कहाये वि० ७ । भीजराजके पूरन और भैरव दो पुत्र हुए, पूरन लखनऊके पांडे, वि० १९ । भैरव असली खोरिंगलीमें निवास करनेसे खोरके पांडे कहाये वि० २० । रामनाथके भानू कुंठवन, कृष्णादीन सुक्खू यह चार पुत्र हुए, भानू वेलाके पांडे वि० ९ । कुंठवन पटियारीके पांडे कहाये, वि० ९ कृष्णादीन पालीके पांडे वि० ८ सुक्खू डौंडियाखेरेके पांडे कहाये वि० ९ । सूर्यमणिकी पहली स्त्रीमें एक पुत्र वृन्दावन हुए यह गौडिहाके सुकुल कहाये वि० १० । दूसरी स्त्रीसे एक पुत्र जगदेव दूसरे रामनाथ और तीसरे नारायण हुए, जगदेव महोलीके सुकुल वि० १० । रामनाथ सिकटियाके सुकुल वि० १० । नारायण गलाथेके सुकुल कहाये वि० १६ । गोपीनाथके होल, हरदास, जगई, कश्यप और भानु यह पांच पुत्र हुए, यह सब विगहपुरके सुकुल अपने २ नामसे प्रसिद्ध हुए, वि० ११ । १२ । १० । १३ । १० क्रमसे जानने । नाल सुकुलके देवमणि, अदित, तितई, बतनू, दिउता, ठकुरी और पउगा यह सात पुत्र हुए, और सब दिलीपपुरके सुकुल कहाये वि० १२ । ११ । १२ । १२ । ११ । ११ । १० क्रमसे जानने । घाटमके एक पुत्र भागीरथ हुए, वह साढके त्रिवेदी कहाये वि० १० । अजयके अम्बर और कान्ह यह दो पुत्र हुए, अम्बर घाटमपुरके सुकुल कहाये वि० ३ । कान्ह विरसाके त्रिवेदी अपने नामसे प्रसिद्ध हुए वि० ११ । पूरनके वीरेश्वर, श्रीकृष्णी, शीतल, गिरधर, परम, हरिनाथ, मणिराम और गंगाराम यह आठ पुत्र हुए, वीरेश्वर, श्रीकृष्णी और शीतल यह तीनों गंगासोंके पांडे कहाये विश्वा २० । २० । २० । गिरधर, परम और हरिनाथ यह शिवपुरमें गंगासोंके पांडे

कहाये. वि० २० । २० । मणिराम और गंगाराम यह तूतीपारवाले पांडे गंगासोंके कहाये. वि० २० । २० । २० । भैरवके प्राणनाथ, परमकृष्ण और जगदीश यह तीन पुत्र हुए, प्राणनाथ और परमकृष्ण यह गंगासोंके पांडे कहाये वि० २० । २० । जगदीश अमराके पांडे कहाये वि० १२ । भगीरथके चिन्ता, हीरा, दयाल, माधव और रवेन्त यह पांच पुत्र हुए, चिन्ता, और दयाल साढके त्रिवेदी कहाये वि०१०। १० । हीरा घाटमपुरके त्रिवेदी वि० १० । माधव हाजीपुरके त्रिवेदी कहाये वि० १० । हाजीपुर हाजीगफूरखांने संवत् १६०१ में बसाया था, रेवन्त विहारपुरके त्रिवेदी कहाये वि० १० अम्बरके रूपा और जगदीश्वर यह दो पुत्र हुए, दोनों घाटमपुरके सुकुल कहाये वि० ३ । ३ । कान्हकी बडी स्त्रीमें वासुदेव और भोला यह दो पुत्र हुए, और सुठियायेंमें रहे और कान्हके त्रिवेदी जेठीबाले कहाये वि० १२ । १३ । छोटी स्त्रीसे खेमानन्द, पद्मधर, मणिकंठ, धनाकर, हरी और प्रभाकर यह छः पुत्र हुए, खेमानन्द, पद्मधर मणिकण्ठ यह लहुरीके कान्हवाले त्रिवेदी कहाये, विरसामें निवास किया वि० १४ । १३ । १४ । धनाकर नवायेंक सुकुल वि० १३ । हरी प्रभाकर असनीके सुकुल कहाये वि० १८ । १८ । नारायणके एक पुत्र बावू हुए, सो गलाथेके सुकुल कहाये वि० १७ हौलके दो पुत्र हुए, रुद्री और भैरव, रुद्रीका दूसरा नाम उदयनाथ था, यह दोनों विगहपुरके सुकुल कहाये वि० १२ । १२ । हरिदासके चिन्ताचन्द्रमणि और माणिक यह दो पुत्र हुए यह दोनों विगहपुरके सुकुल कहाये वि० ८ । १० । नगईके एक पुत्र सकटे हुए, सो विगहपुरमें नगईके सुकुल कहाये वि० १२ । कश्यपकी पहली स्त्रीसे एक पुत्र ख्यूराज हुए, सो विगहपुरमें ख्यूरहाके सुकुल कहाये वि० १० । दूसरी स्त्रीसे भगदत्त, भास्कर और मकरन्द यह तीन पुत्र हुए यह तीनों विगहपुरके सुकुल अपने २ नामसे प्रसिद्ध हुए वि० १४ । १० । १२ । गंगारामके उद्धरणनाथ, रामेश्वर यह दो पुत्र हुए, उद्धरणनाथ सोनहामें गंगासोंके पांडे कहाये वि० १७। रामेश्वर विद्वान् होनेसे भट्टाचार्य कहाये, और लखनऊ ऊंचे टोलेमें बसे, यह लखनऊके पांडे भट्टाचार्य कहाये । वि० १८ । परमकृष्णके भूरे और भास्कर यह दो पुत्र हुए और गंगासोंके पांडे कहाये वि २० । २० । जगदीशके लला, राम, वीरे और जीवन यह चार पुत्र हुए, और अमराके पांडे कहाये वि० १० । १४ । १४ । १४ । पद्मधरके कल्लू, सन्नू और येनी यह तीन पुत्र हुए यह त्रिवेदी लहुरी कान्हके तौधकपुरवाले कहाये । वि० १२ । १२ । १२ । बाबूके छंगे केशी और पसई तीन पुत्र हुए, छंगे गलाथेके सुकुल अपने नामसे प्रसिद्ध हुए, वि० २० । केशी टेढाके सुकुल कहाये वि० १८ । पसई गलाथेमें रहे और वहांके सुकुल कहाये वि० १४ । भैरवके लालमणि तिलक और वनवारी यह तीन पुत्र हुए, और अपने २ नामसे ऊधनपुरके सुकुल कहाये वि० १३ । १० । १० । चन्द्रमणिकी पहली स्त्रीसे वलराम और मधुसूदन यह दो पुत्र हुए, दोनों विगहपुरके सुकुल कहाये वि० ९ । ८ । दूसरी स्त्रीसे अनिरुद्ध और भीमसेन यह दो पुत्र हुए, यह दोनों भैंसईके सुकुल कहाये वि० १० । १० । माणिक्यके आदित्यराम, कल्याणमणि, हरिहर, देवमणि यह चार पुत्र हुए, यह चारों पाटनके सुकुल कहाये वि० ८ १२ । १२ । ११ । भवदत्तके चन्द्राकर; दिवाकर; विष्णुदत्त; (विसई) नारायण और जगन्नाथ यह पांच पुत्र हुए, इनमें पहले चार भवदत्तके सुकुल कहाये वि० २० । १८ । १७ । १९ । जगन्नाथ दिलीप नगरमें रहे और भवदत्तके सुकुल कहाये वि० १४ । भास्करके घनश्याम लालमणि दो पुत्र हुए, और विगहपुरी भास्करके सुकुल कहाये, वि० १४ । १० । मकरन्दके भास्कर मोहन वनराज देवाकर और घनश्याम यह पांच पुत्र हुए, यह सब विगहपुरी मकरन्दके सुकुल कहाये, वि० १० । १० ।

१०। १०। १०। रामेश्वरके एक पुत्र गोपीकान्त हुए, यह लखनऊके पांडे भट्टाचार्य कहाये, वि० १८। भूरेके लाले, वाले, गंगू, कान्हर और गदाधर यह पांच पुत्र हुए, यह पांचों खोरी गलीके पांडे कहाये वि० २०। सत्रके। भास्करके छः पुत्र लाले, नरोत्तम, टौंडर, कन्वर, विश्वनाथ और मनीरामहुए, लाले कन्नौज खोरीगलीके पांडे कहाये वि० २०। नरोत्तम असनीके पांडे कहाये वि० २०। टौंडर कन्नौजकी खोरीगलीके टौंडरहा पांडे कहाये वि० १८। कन्वर कन्नौज खोरीगलीके पांडे कहाये वि० २०। विश्वनाथ गंगासों खोरीगलीके पांडे कहाये, वि० २०। मनीराम, तूतीपार, खोरीगलीके पांडे कहाये वि० २०। लालाके लाल्ह और वीरभद्र दो पुत्र हुए, लाल्ह विलासपुरके पांडे वि० १४। वीरभद्र अमराके पांडे कहाये वि० १०। मनीरामके विहारी, दलपति, यक्षपति दिवोल यह चार पुत्र हुए, विहारी मौराके पांडे वि० ७। दलपति नारायणपुरके पांडे वि० ९। यशपति नौगांगके पांडे वि० ९। दिवोल विगहपुरके पांडे कहाये वि० ९। वीरभद्रके नित्यानन्द, छेदी, मथन्, गंगा, खंजन, ज्वालनाथ और बद्रीनाथ यह सात पुत्र हुए, नित्यानन्द इटौंजाके पांडे वि० ७। छेदी वागीशपुरके पांडे वि० १०। मथन् वनगांवके पांडे वि० १०। गंगा चम्पापुरके पांडे वि० ४। खंजन मनोहके पांडे वि० ९। ज्वालनाथ नाथपुरके पांडे वि० ४। वद्रीनाथ हरिदासरके पांडे कहाये वि० ३। जीवनके मोती, मंसा, चेतन, वचनू, केशरी और शिवा यह छः पुत्र हुए, मोती लखीमपुरके पांडे वि० ९। गंगा विरसापुरके पांडे वि० ८। चेतन किन्तुरियाके पांडे वि० ९। वचनू वररीके पांडे वि० ९। केशरी जहानावादके पांडे वि० ९। शिवा वमराके पांडे कहाये वि० ९। छंगे सुकुलके देवशर्म, दुलम्भी, मकरन्द, यदुनाथ, पीतांबर, कमलापति, लोकनाथ यह सात पुत्र हुए यह सातों गलाथेके छंगेवाले सुकुल कहाये वि० १९। १९। १८। १८। १८। १९। १८ क्रमसे जानने। लालमणिके वाला, वागीश दो पुत्र हुए, वाला हफीजाबादमें रहे, और अपने नामके सुकुल कहाये वि० २०। वागीश न्यायशास्त्रमें पारंगत हुए, और भट्टाचार्य पदवी पाकर कन्नौजमें जाकर वसे, सो न्यायवागीशके सुकुल भट्टाचार्य कन्नौजके कहाये वि० २०। वलरामके मनसुखराम, अनन्तराम, हरिशंकर, दुर्गादास यह चार पुत्र हुए, और चारोंमैंसईके सुकुल कहाये वि० १०। ९। ८। १४। अनिरुद्धके जगन्नाथ, रघुनाथ, यह दो पुत्र हुए, और गलाथे के सुकुल कहाये वि० १०। १०। भीमसेनके उमा और धन्नी दो पुत्र हुए, उमा विगहापुरमें अपने नामसे सुकुल कहाये वि० ८। धन्नी ओनहामें अपने नामसे सुकुल कहाये, वि० १३। हरिहरके कसनी, घनश्याम, पुरुषोत्तम तीन पुत्र हुए, तीनो विगहपुरी हरिहरके सुकुल कहाये वि० १६। १६। १७। दिवाकरके कमल, कल्यान, निली, कृष्ण, और गोविन्द यह पांच पुत्र हुए यह पांचों विगहपुरमें दिवाकरके भवदत्तके सुकुल कहाये वि०। १६। १६। १९। १९। १६। गोपीकान्त पांडेके वंशीधर, मुरलीधर, मतिकृष्ण, शिरोमणि, चन्द्रमौलि, कमलापति, और श्रीपति यह सात पुत्र हुए, और सातो कन्नौजमें भट्टाचार्य पांडे कहाये वि० २०। २०। १९। १९। २०। २०। २०। मथनूके जयदेव एक पुत्र हुए. यह सवायलपुरके पांडे कहाये वि० ७। भुजेले पहितियाके पांडे वि० ४। वालाके वीरेश्वर, नन्दराम, रामनिवाज, हरिसेवक और जगन्नाथ यह पांच पुत्र हुए और पांचो हफीजाबादी वालाके सुकुल कहाये वि० २०। २०। २०। १९। १९। वागीशके चन्द्रमौलि, जयकृष्ण और कुमार यह तीन पुत्र हुए, तीनों कन्नौजमें न्यायवागीशके सुकुल भट्टाचार्य कहाये वि० १९। १९। १९। जगन्नाथके हरी तथा पैकूहरी दो पुत्र हुए, यह विगहपुरमें अपने नामसे सुकुल विख्यात हुए, वि १०।

पैकूमी अपने नामसे विगहपुरी सुकुल कहाये वि० १८। रामनाथके मणिकंठ एक पुत्र हुए, यह एकडलाके सुकुल कहाये वि० १२ । धन्नीके काशीराम, गोपी, विश्वेश्वर, रामेश्वर, और सत्यधर यह पांच पुत्र हुए, यह पांचों औनिहा ग्राममें धन्नीके सुकुल कहाये. वि० १४। १४। १३। १३। १४ । कसनीके कल्याणकर और ललऊ दो पुत्र हुए, यह दोनों सातनपुरमें हरिहरके सुकुल कहाये वि० १२।१३। घनश्यामके इन्द्रमणि नामक एक पुत्र हुए, सो निवादाके सुकुल हरिहरवाले कहाये वि० १३। पुरुषोत्तमके मोहन और रतन दो पुत्र हुए, यह दोनों विगहपुरमें हरिहरके सुकुल कहाये वि० १३ । १३ । वीरेश्वरके काशीराम, यदुवीर, रघुवीर, गयादत्त और गदाधर यह पांच पुत्र हुए, यह पांचों हफीजादमें वालाके सुकुल कहाये, वि० २० । २० । २० । २० । २० । नन्दरामकी पहली स्त्रीमें विश्वनाथ गोपीनाथ, और अमरनाथ यह तीन पुत्र हुए, तीनों सकूरावादी वालाके सुकुल कहाये वि० १७ । १७।१८ । दूसरी स्त्रीसे हरिशंकर और चक्रपाणि यह दोपुत्र हुए, और सकूराबादी वालाके सुकुल कहाये वि० १८।१८पैकूके वेनीराम, लक्ष्मीराम चतुर्भुज और विश्वनाथ यह चार पुत्र हुए,इनमें पहले तीन विगहपुरमें वसे, और विश्वनाथ निवईमें रहे और सब पैकूके सुकुल कहाये वि० १९ । १९ । १९ । १९ क्रमसे जानने । गोपीके एक पुत्र गोकुल हुए वह औनिहांमें धन्नीके सुकुल कहाये वि० १६ । मोहनके मुरलीधर, महामुनि, रेवतीनाथ यह तीन पुत्र हुए, मुरलीधर नीवीपुरके सुकुल वि० ११ । महामुनि निवईके सुकुल वि० १० । रेवतीनाथ नीवीपुरके (तिहरिया) सुकुल कहाये वि० ११ । रतनके सोते, वसावन, नित्यानन्द, और नन्दू यह चार पुत्र हुए, चारों निवाहाके सुकुल कहाये वि० १२ । १२ । १२ । १२ । काशीरामके यमुनादीन, देवीदीन, गंगादीन यह तीन पुत्र हुए, यह तीनों हफीजावादमें वालाके सुकुल कहाये वि० २० । २० । २० । चक्रपाणिके रामचरन और शिवचरन यह दो पुत्र हुए, और शकूरावादी वालाके सुकुल कहाये वि० १९ । १९ । विश्वनाथके गुलाल और देवीदत्त यह दो पुत्र हुए, और दोनों वदरकामें पैकूके सुकुल कहाये वि० १६ । १६ । मुरलीधरके दशरथ, असई, भोजराम, सुखमन, गंगाचरण, संकटादीन और विरंजू यह सात पुत्र हुए, दशरथ और असई यह दोनों वदरकामें अपने नामसे सुकुल कहाये वि० १९। १४। भोजराज वसईके सुकुल कहाये वि० १२ । सुखमन विगहुलीके सुकुल कहाये वि० ४ । गङ्गाचरन वरवाईके सुकुल कहाये वि० ७ । संकटादीन वरुईके सुकुल कहाये वि० ४ । विरजूवरोलीके सुकुल कहाये वि० ४ । भोजराजके सन्तू, भगवान और शक्तिधर तीन पुत्र हुए, सन्तू पतिहाके सुकुल वि० ९ । भगवानदीन अभसपुरके सुकुल वि० ९ । शक्तिधर मल्ईके सुकुल कहाये वि० ३ । सुखमनके विहारी, कोमल और गिरिवर, यह तीन पुत्र हुए, विहारी वेलाके पांडे वि० ९ । कोमल सुसौराके पांडे वि० ४ । और गिरिवर मौरांवके पांडे कहाये वि० १० ।

इस प्रकार भरद्वाज गोत्रमें सत्याधरसे गिरिवरपर्यन्त २६९ पुरुष वंशकर्ता और १६ पीढी हैं ।

इति भरद्वाजगोत्रविवरणम् ।

उपमन्युगोत्रका वर्णन ।

ब्रह्माजीके पुत्र वशिष्ठजी, उनके पुत्र व्याघ्रपाद, उनके उपमन्यु, उपमन्युके सिन्धुपद, सिन्धुपदके वंशमें वहुत समयके पीछे भूपानाम पंडित परम प्रतापी हुए, इन पंडितजीने पिनाकपुरके राजा धर्मपालको अपना शिष्य करके जुजुहूतपुरमें यज्ञ कराया, और राजपुरोहितकी कन्यासे भूपाजीका व्याह हुआ तबसे यह भूपाजी जुजुहूतपुरके दीक्षित कहाये वि० ९ । भूपाजीके जानी और यागेश्वर दो पुत्र हुए, जानी

जानापुरमें बसे, और पाठक कहाये वि० ८ । यागेश्वर यज्ञपुरके दुबे कहाये वि० ४ । जानीके नभऊ और गदाधर दो पुत्र हुए नभऊ दरियावादी अवस्थी कहाये वि० ७ । गदाधर सेठपुरके पाठक कहाये वि० ८ । नभऊके कमल नल और भट्ट तीन पुत्र हुए, कमल विसौराके अवस्थी वि० ५ । नल एकडालाके त्रिवेदी वि० ९ । भट्ट चन्दनपुरके वाजपेयी कहाये वि० ९ । गदाधरके कन्दर्प, सितावू और बच्चू तीन पुत्र हुए, इनमें कन्दर्प नसुराके पाठक वि० ९ । सितावू जानापुरके पाठक, वि० ५ । बच्चू अंगईके पाठक कहाये वि० ८ । कमलके वंशी और गोपी दो पुत्र हुए, दोनों ओमीपुरके अवस्थी कहाये वि० ९ । ९ । भट्टके एक पुत्र जगन्नाथ चन्दनपुरके वाजपेयी कहाये वि० १० । सितावूके पतिराखन और व्रजलाल दो पुत्र हुए, पतिराखन शाहाबादमें जानापुरके पाठक कहाये वि० ५ । व्रजलाल मौरायेंके पाठक कहाये वि० ८ । गोपीके गोसल और धर्माई दो पुत्र हुए, गोसल वेनवामऊके पाठक वि० ४ । धर्माई मौरायेंके अवस्थी कहाये वि० ९ । धर्माईकी पहली स्त्रीसे देवर्षि, सुरेश्वर, सिद्धनाथ, खांडे, जीवन, केदार, नन्दू और ब्रह्मदत्त यह आठ पुत्र हुए, देवर्षि सरवनके अवस्थी वि० १० । सुरेश्वर जयगांवके अवस्थी वि० १० । सिद्धनाथ दारयावादके अवस्थी वि० १० । खांडे और जीवन मतिपुरके अवस्थी वि० ८ । ८ । कदार और नन्दू गौराके अवस्थी वि० १० । ८ । और ब्रह्मदत्त मौरायेंके अवस्थी कहाये, वि० १० । धर्माईकी दूसरी स्त्रीसे शिवदत्त, देवदत्त, यज्ञदत्त तीन पुत्र हुए शिवदत्त मौरायेंके मिश्र वि० ९ । देवदत्त मौरायेंके दुबे वि० ९ । यज्ञदत्त मौरायेंके वाजपेयी कहाये वि० ९ । ब्रह्मदत्तकी पहली स्त्रीसे जो आठ पुत्र हुए वे अठभैय्या अवस्थी कहाये, दूसरी स्त्रीसे परशुराम, कान्हकुमार और दीनानाथ यह तीन पुत्र हुँए, परशुराम कान्हकुमार सिंहपुरके अवस्थी वि० १० । १० । दीनानाथ एकडलाके अवस्थी कहाये वि० १० । शिवदत्तके एक पुत्र हरदत्त हुए, यह वेनवामऊके पाठक कहाये वि० ५ । देवदत्तकी पहली स्त्रीसे विहारी नामक एक पुत्र हुए, यह पसिमवांके दुबे कहाये वि० ८ । दूसरी स्त्रीसे जीवन, जगनी, फिन्दर और हरसुख यह चार पुत्र हुए, जीवन रिवाडीके अग्निहोत्री वि० ११ । जगनी जौनपुरके अग्निहोत्री वि० ८ । फिन्दर दरियावादी अग्निहोत्री वि० १० । हरसुख बदरकाके अग्निहोत्री कहाये वि० ११ । यज्ञदत्तके विष्णुशर्मा, देवशर्मा, शिवशर्मा, महाशर्मा, लक्ष्मीशर्मा यह पांच पुत्र हुए, और पांच लखनऊके वाजपेयी कहाये वि० १७ । १८ । १८ । १७ । १८ । परशुरामके बडे और गोपाल दो पुत्र हुए, यह त्योरासीमें बसे और अपने नामसे अवस्थी कहाये वि० १७ । १७ । कान्हकुमारके माधव और माते दो पुत्र हुए, और त्यौरासीके अवस्थी कहाये वि० २० । १९ । दीनानाथके प्रभाकर नाम एक पुत्र हुए, यह भी त्यौरासीके अवस्थी कहाये वि० २० । हरदत्तके सहतावन, वृन्दावन, पद्येन्द्र और सर्वाधार यह चार पुत्र हुए, सहतावनके सरमऊके मिश्र, वि० ९ । वृन्दावन लखपुराके मिश्र, वि० ९ । पद्येन्द्र परसुहियाके मिश्र वि० ४ । सर्वाधार गुर्दवानके मिश्र कहाये वि० ९ । विहारीके थलई और रुपई दो पुत्र हुए, थलई पहुआमें बसे और दीक्षित कहाये वि० ९ । रुपई मैंसईमें बसे और दुबे कहाये वि० ५ । जगनीके हीरामणि, शिरोमणि और दत्तू यह तीन पुत्र हुए, यह तीनों जौनपुरके अग्निहोत्री कहाये वि० ७ । ७ । ७ । फिन्दरके बाबूराम एक पुत्र हुए, सो दरियावादी अग्निहोत्री कहाये वि० ९ । विष्णुशर्माके एक पुत्र ओंकेश्वर हुँए, सो गौरामें वसे वाजपेयी पुरवाके कहाये वि० १६ । देवशर्माके मदन, माखन और मंगली यह तीन पुत्र हुए, मदन दिवईके वाजपेयीके वि० १९ । माखन कडरीके वाजपेई वि० १९ । मंगली रामपुरके वाजपेयी कहाये वि० १९ । यह तीनों अपनेको लखनऊके वाजपेयी भी कहते

हैं, शिवशर्माके सुन्दर गंगादास और रमण यह तीनों लखनऊके वाजपेयी पुरवाके कहाये वि० १८। १४ । १४। महाशर्माके निर्मल, किसई और कुलमणि यह तीन पुत्र हुए, निर्मल खटोलहाके वाज॰ पेयी अपने नामसे प्रसिद्ध हुए, वि० १२ । किसई, कुलमणि वैदहाके वाजपेयी अपने नामसे प्रसिद्ध हुए, वि० १३ । १८ । लक्ष्मीशर्माके एक पुत्र कृष्णशर्मा हुए, सो लखनऊके वाजपेयी पुरवाके वाजपेयी कहाये वि० १७ । बडेके भोलानाथ, जगपति, रायप्रसाद और देवीदत्त यह चार पुत्र हुए, यह चारों त्यौ॰ रासीके अवस्थी वड़ेके कहाये वि० २० । २० । २० । १९ । गोपालके उद्धवनामक एक पुत्र हुए, वह अवस्थी गोपालके त्यौरासीके कहाये वि० २० । प्रभाकरके नारायण, रमई, जगनी, हरिकृष्ण, धरणीधर मुरारी और इन्द्रमणि यह सात पुत्र हुए, और त्यौरासीमें रहे, प्रभाकरके अवस्थी कहाये, वि० २० । २० । २० । २० । २० । २० । २० । माधवके बाबू, बांके, और मुनीश यह तीन पुत्र हुए, यह तीनों त्यौरासीमें माधवके अवस्थी कहाये वि० २० । २० । २० । इन्द्रमणिके उदयनाथ, प्रेमनाथ, स्थानेश्वर तीन पुत्र हुए, और प्रभाकरके अवस्थी कहाये वि० २० । २० । २० । रुपईके दामोदर और कवितांडव यह दो पुत्र हुए, इनमें दामोदर एकडलाके त्रिवेदी वि० ११ । कवितांडव विष्णुपुरके दुबे कहाये वि० १५ । ओंकेश्वरके एक पुत्र छंगे हुए सो गोराके वाजपेयी पुरवाके कहाये, वि० १६ । कुलमणिके गुपई, मथुरी, ललकार, काशीराम और मनीराम यह पांच पुत्र हुए, गुपई ललकर वैदहामें वाजपेयी कहाये वि० १९ । १८ । मथुरी गोपालपुरके वाजपेयी कहाये, वि० १५ । काशीराम मनीराम चिलौलाके वाजपेयी कहाये, वि० १५। १९ कृष्णशर्मकी पहलीस्त्रीसे पीथानाम एक पुत्र हुए, सो असनीके वाजपेयी कहाये, वि० १८ । दूसरी स्त्रीसे हीरा, वीसा, धन्नी और तारा यह चार पुत्र हुए, यह चारोंअसनीके वाजपेयी कहाये, वि० २०। २० । १९। १७। दामोदरके साहब वादे मंडन और प्रयाग यह चार पुत्र हुए, चारों एकडलामें अपने २ नामसे त्रिवेदी कहाये वि० १०। १०। १२ । १३ । कवितांडवके कला और देवराज यह दो पुत्र हुए, कला कन्नौजके दुवे कहाये वि० ८। देवराज जैराजमऊके दुवे कहाये, वि० ९ । छंगेके रामभद्र और प्रीतिकर यह दो पुत्र हुए और दोनों लखनऊके वाजपेयी कहाये, वि० २० ।२० । काशीरामके लछनी बछनी, गंगू, यादव रघुनाथ और शिवदयाल यह सब चिलौलामें काशीरामके वाजपेयी कहाये, वि० १७ । १६। १६। १६। १७ । १७ । मनीरामकी पहली स्त्रिसे लाले, वाले और मनोरथ यह तीन पुत्र हुए, तीनों भोजियामें मनीरामके वाजपेयी कहाये, वि० १६ । १६। १३ । इन मनीरामका दूसरा विवाह वटेश्वरमें हुआ; उस स्त्रीसे नित्यानन्द महामुनि यह दोनों वटेश्वरमें अपने नामसे वाजपेयी कहाये, वि० १९।१९ पीथाके एक पुत्र जगनायक सो वाजपुरमें पीथाके वाजपेयी कहाये, वि० १७ । हीराके चत्ते, मत्ते, बीर और भगोले यह चार पुत्र हुए, इनमें तीन असनीमें वसे वि० २०। २० । २० । वाजपेयी कहाये भगोले विहारमें वसे और हीराके वाजपेयी कहाये, वि० १९ । वीसाके कमले, उर्वीधर, केशव, गयादत्त, यह चार पुत्र हुए, कमले मौरहामें वीसाके वाजपेयी कहाये, वि० १९ उर्वीधर, केशव और गयादत्त ये तीनों असनीमें वीसाके वाजपेयी कहाये वि० २० । २० । २० । धन्नीके भावनाथ, उदयनाथ, गिरधर और मुसऊ यह चार पुत्र हुए, और मौजमावादमें धन्नीके सुकुल कहाये, विश्वा १८ । १८ । १८। १८। ताराके रघुनंदन नामक एक पुत्र हुए, सो हाजीपुरमें ताराके वाजपेयी कहाये, विश्वा १८ । प्रयागके हरी और रघुनाथ यह दो पुत्र हुए और एकडलामें अपने नामके त्रिवेदी कहाये, विश्वा १९ । १३ । कलाके कुन्दन और अभई यह दो पुत्र हुए, कुन्दन कचियाके दुवे कहाये वि० १० । अभई नरोत्तमपुरके दुवे कहाये, विश्वा ७। देवराजके वासुदेव, घरवास, वाल्मीक और जनार्दन, यह

चार पुत्र हुए, वासुदेव केसरमऊके दुवे, विश्वा १२ । घरवास इटावामें अपने नामके दुवे विश्वा २० । वाल्मीकि स्यूराके दीक्षित कहाये, विश्वा ८ । जनार्दन रिन्नाईके अग्निहोत्री कहाये, विश्वा १० । रामभद्रके रामकृष्ण और कमलनैन यह दो पुत्र हुए; दोनों लखनऊ ऊंचेके वाजपेयी रामभद्रवाले कहाये, विश्वा १९ । १९ । प्रीतिकरके गणपति, पीताम्बर, नरहरि, वेनीदत्त, रामचन्द्र और बुद्धशर्म यह छः पुत्र हुए, इनमें पांच लखनऊके ऊंचे प्रीतिकरके वाजपेयी कहाये, विश्वा १८ । १९ । १८ । १८ । २० । बुद्धिशर्म खालेके वाजपेयी कहाये विश्वा २० । रघुनाथ के प्राणसुख, धूमल और चूड़ा यह तीन पुत्र हुए, यह अमदावादमें वसे और काशीरामके वाजपेयी कहाये, विश्वा १८ । १८ । १८ । महामुनिके चन्द, आनन्द, लाल्ह, घनश्याम और माधवराम यह पांच पुत्र हुए, यह पांचों वटेश्वरमें महामुनिके वाजपेयी कहाये, वि० १८ । १८ । १९ । १८ । १८ । चत्तेके परशुराम और मुरलीधर यह दो पुत्र हुए, दोनों असनीमें हीराके वाजपेयी कहाये विश्वा २० । २० । कमलेके परमेश्वरी नामक एक पुत्र हुए सो वीराके वाजपेयी कहाये, वि० १९ । हीराके मानिक, श्याम, वदाम, हीरा, पुरन्दर और आत्माराम यह छः पुत्र हुए, यह सब एकडलामें हीराके त्रिवेदी अपने २ नामसे प्रसिद्ध हुए वि० १७ । १६ । २० । १८ । १६ । १४ । घरवासके घनश्याम, चन्द्रमणि और मनऊ तीन पुत्र हुए, इनमें घनश्याम, चन्द्रमणि इटावामें घरवासके दुवे वि० २० । २० । और मनऊ नरोत्तमपुरमें घरवासके दुवे कहाये, वि० १९ । वाल्मीकिके शान्ति और सन्तोष यह दो पुत्र हुए, शान्ति दरियावादी दीक्षित, वि० १० । सन्तोष नैमिषके दीक्षित कहाये, वि० ७ । जनार्दनके चन्दन और मतिकर दो पुत्र हुए, चन्दन उज्जैनके अग्निहोत्री वि० १० । मतिकर ऊगूके अग्निहोत्री कहाये, वि० १३ । बुद्धिशर्मके बाला, लक्ष्मण, लोकी, शंकर, भीखू और मनीराम यह छः पुत्र हुए, और लखनऊके खालेके वाजपेयी कहाये, वि० २० । २० । २० । २० । २० । २० । चूड़ाके शिवनन्दन, स्यूती, और दिवनी, यह तीन पुत्र हुए, और असनीमें काशीरामके वाजपेयी कहाये वि० १७ । १७ । १७ । लाल्हके कामदेव और रामदेव यह दो पुत्र हुए दोनों वटेश्वरमें महामुनिके वाजपेयी कहाये वि० २० । २० मनऊके जगनू और नरोत्तम दो पुत्र हुए जगनू चिलौलीके दुवे वि० ९ । नरोत्तम भैंसईके दुवे कहाये वि० ९ । शंकरके चूड़ा, टीका और देवदत्त यह तीन पुत्र हुए, और तीनों लखनऊके खालेके वाजपेयी कहाये, वि० २० । २० । २० । नरोत्तमके वसई, जानकी और वावू तीन पुत्र हुए, तीनों सर्रईमें भैंसईके दुवे कहाये, वि० २० । ६ । ७ । वावूके एक पुत्र वल्हू हुए सो सर्पईमें भैंसईके दुवे कहाये, वि० ९ । वल्हूके चन्द्र, वद्री और मकरन्द यह तीन पुत्र हुए, चन्द्र वद्री विल्वारेके दुवे वि० १० । ३ । मकरन्द भोजपुरके दुवे कहाये, वि० ४ । वद्रीके एक पुत्र सेवकी उन्नावके दुवे कहाये, वि० २ । सेवकीके गोपाल और भूपराम दो पुत्र हुए, गोपाल पनेमाके दुवे वि० ८ । भूपराम वरुआके दुवे कहाये वि० ४ । गोपालके जगवंशी, रघुवंशी, परिवर और यमराज ४ पुत्र हुए, जगवंशी औसीपुरके अवस्थी वि० २ । रघुवंशी, परिवार विशौरीके अवस्थी, वि० ४ । ९ । यमराज दरियावादी मिश्र कहाये, वि० ३ । यमराजके लंकादहन, देवदत्त और ईश्वरी तीन पुत्र हुए, लंकादहन कपिडुलियोंमें गुदवानके मिश्र कहाये, वि० २ । देवदत्त एकडलामें अग्निहोत्री कहाये वि० ९ । ईश्वरी मीठापुरके उपाध्याय कहाये, वि० २ । इसप्रकार उपमन्यु गोत्रमें २० पीढी और २०४ पुरुष वंशवृद्धिकर्ता हुए हैं ।

इति उपमन्युगोत्र व्याख्यान ।

अथ सांकृतगोत्रव्याख्यानम् ।

ब्रह्माजीके पुत्र भृगुजीके वंशमें सांख्यायन मुनि हुए, इनके पुत्र मगन हुए, इन मगनका दूसरा नाम गौर्व हैं, मगनके पुत्र सांकृत सांकृतके पुत्र जीवात्म, बहुत प्रसिद्ध हुए, इनके वंशमें पृथ्वीधर महाप्रतापी हुए, पृथ्वीधरको कौशिकपुरके राजाने बुलाकर आवसथ्य यज्ञ कराया, और पृथ्वीधर जीको अवस्थी कहा तबसे यह कौशिकपुरके अवस्थी कहाये वि० ९। पृथ्वीधरके महीधर और धरणीधर दो पुत्र हुए, महीधर कौशिकपुरके सुकुल, वि० ९। धरणीधर रूपगुणशीलसम्पन्न होनेके कारण त्रिगुणायत अवस्थी कौशिकपुरके कहाये; वि० ४। महीधरके पुत्र नाभूजी हुए, इनको पृथ्वीधरने यथाशक्ति अध्ययन कराया, परन्तु जब वृद्धावस्थाके कारण न पढासके तब पूर्ण विद्वान् होनेके लिये मनीराम वाजपेयीके पास भेज दिया, मनीरामजीने इनको पूर्ण विद्वान् करादिया, और अपनी भुवनेश्वरी नामक कन्याका इनके साथ विवाह करदिया, और अपने समीप पुरैनियां ग्राममें बसाया, तबसे नाभूजी पुरैनियांके सुकुल कहाये, वि० ९। नाभूजीके बुजुरुक और खुर्दपति दो पुत्र हुए, बुजुरुक गुपालपुर (पुरैनियां) के सुकुल कहाये, वि० १८। खुर्दपति वहारपुर (पुरैनियां) के सुकुल कहाये, वि० १२। बुजुरुकके छत्रपति, आनन्दवन और मुक्ता यह तीन पुत्र हुए, छत्रपति और मुक्ता पुरैनियां नभेलेके सुकुल, वि० १५। १९ आनन्दवन अकबरपुर (पुरैनियां) के सुकुल कहाये, वि० १९। खुर्दपतिके खेमन वहेरू और रूपन यह तीन पुत्र हुए, खेमन गौराके सुकुल, वि० १०। वहेरू गहिरीके सुकुल, वि० ९। रूपन जाजमउके सुकुल कहाये, वि० १०। छत्रपतिके गंगाराम माधवराम शालग्राम तीन पुत्र हुए, गंगाराम डोमनपुरमें पुरैनियां नभेलेके सुकुल कहाये, वि० १६। गंगाराम डोमनपुरसे अपने भाइयोंसमेत खजुहामें रहने लगे, यह छिन्नमस्ता देवीके अनन्य उपासक थे, एक समय बादशाह अकबर विजय करते हुए खजुहाके निकट आनकर उतरे गंगारामकी प्रशंसा करके इनको अपने समीप बुलाया, और इनका चमत्कार देखकर बहुत प्रसन्न हुए, और खजुहाग्रामका नाम फतिहाबाद रक्खा माधवराम असनी (पुरैनियां) के सुकुल, वि० १८। शालग्राम, नरवल पुरैनियांके सुकुल, वि० २०। मुक्ताके एक पुत्र रामचन्द्र हुए, सो गहिरीके सुकुल कहाये, वि० ५। खेमनकी पहली स्त्रीसे गणपति, हरिब्रह्म और ईश यह तीन पुत्र हुए, गणपति फतिहाबादमें पुरैनियां नभेलेके सुकुल कहाये, वि० २०। हरिब्रह्म अमोहमें पुरैनियां नभेलेके सुकुल, वि० २०। ईश असनीमें पुरैनियां नभेलेके सुकुल कहाये, वि० १९। खेमनके दूसरी स्त्रीसे दारो नामक एक पुत्र हुए, सो असनीके सुकुल कहाये वि० १०। वहेरूके देवीदीन, दरियाव, जवाहर, जानकी, भीष्म यह पांच पुत्र हुए, देवीदीन गौराके सुकुल वि० ९। दरियाव अठाके ६सुकुल, वि०९। जवाहिर गूदरपुरके सुकुल, वि० ७। जानकी अकबरपुरके सुकुल, वि० ८। और भीष्म गहिरीके सुकुल कहाये, वि० ८। रूपनके धना और घनश्याम दो पुत्र हुए, धना गौराके सुकुल, वि० १८। घनश्याम जाजमऊके सुकुल कहाये, वि० १२। गंगारामके रघुवंश और हरिवंश दो पुत्र हुए, रघुवंश फतिहाबादमें पुरैनियांके सुकुल कहाये, वि० १९। हरिवंश डोमनपुरमें पुरैनियांके सुकुल कहाये, वि० १४। गणपतिके विश्वनाथ, गोवर्द्धन, चेरेलाल यह तीन पुत्र हुए, तीनों फतिहाबादमें पुरैनियांके सुकुल कहाये, वि० २०। २०। २०। धनाके कृष्णी और ब्रजलाल दो पुत्र हुए, कृष्णी कौशिकपुरके मिश्र वि० २०। ब्रजलाल विजौलीके दुवे कहाये, वि० २०। घनश्यामके वीर वनवारी और प्रजापति यह तीन पुत्र हुए, वीर जाजमऊके मिश्र, वि० २०। वनवारी चंचैडीके मिश्र, वि० १८। और प्रजापति इटावाके मिश्र कहाये, वि० १८। वीर परम विद्वान् रूपवान् और गुणवान् थे, इनको देखकर अकबरबादशाहने मिश्रजी

कहकर आसन दिया तबसे वीरके मिश्र कहाये, इनके भ्राता भी संगमें उत्तम वर्तावके कारण वीरके समान मिश्र कहाये और इनको अठारह विश्वा मर्यादा प्राप्त हुई, विश्वनाथके हट्टूलाल चन्दन और दुलीचन्द यह तीन पुत्र हुए यह तीनों फतिहावादी पुरैनियां नमेलके सुकुल कहाये, वि० २०।१९। २० दुलीचंदके माऊ और शीतल यह दो पुत्र हुए, दोनों फतिहावादी पुरैन्याके नमेलपुकुल कहाये, विश्वा २० । २० । इस प्रकार सांकृतगोत्रमें ८ पीढी और ४२ पुरुष वंशवृद्धि कर्ताहुए हैं ।इति सांकृतगोत्र ।

इति षट्कुलवर्णनम् ।

अथ दशगोत्रवर्णनम् (कश्यपगोत्रका व्याख्यान)

संवत् १५८४ में मदारपुरके अधिपति ब्राह्मणों और यवनोंमें बहुत युद्ध हुआ, उस युद्धमें बहुतसे ब्राह्मण मारे गये, केवल एक अनन्तराम ब्राह्मणकी स्त्री गर्भिणी थी, सो बच रही, सो यवनोंके उपद्रवसे स्योना नाम नाईके साथ अपनी सुसरालको चली गई, स्योना नापित बहुत वृद्ध था, और मदारपुरके भुईंहार ब्राह्मणोंका परम सेवक था, कुतमऊ ग्राममें उसकी सुसराल थी, अनन्तरामकी स्त्री पति देवर आदिके मारेजानेके कारण बहुत दुःखी रहा करती थी, और बहुत निर्बल होगई थी, इस कारण बालकका जन्म बडे कष्टसे हुआ, और माता तत्काल मर गयी, तब स्योना नाईने अपने पुरोहित कश्यपगोत्रीय चिलौलीके तिवारी सुखमणिके द्वारा उस ब्राह्मणोकी मृतकक्रिया कराई, और बालकका जातकर्म संस्कार कराया, और बालकका नाम गर्भू रक्खा, जब बालक आठ वर्षका हुआ तब पुत्रहीन सुखमणि तिवारीको स्योना नाईने पुत्ररूपसे बालक देदिया, सुखमणि उस बालकका वैदिकरीतिसे संस्कार किया, और वेदाध्ययन कराया, गर्भूके कुलमें नाईके उपकारको स्मरण करनेके निमित्त उस्तरे और कटोरीकी पूजा होती है, विश्वा ७ । गर्भूके गौरी और गनेश दो पुत्र हुए, गौरी मदारपुरम रहे, ओर कुतुमौआके तिवारी कहाये, विश्वा ९ । गनेश विहारपुरके कुतुमौआ तिवारी कहाये, विश्वा ९ । गौरीके मोहन परमसुख रजनी और कमोरी यह चार पुत्र हुए, और चारों मदारपुरके कुतुमौआ तिवारी कहाये विश्वा ९ । ९ । ९ । ९ । गनेशके पुत्र जुगनू हुए, सो वितौरे अग्निहोत्री कहाये, विश्वा ५ । मोहनके शांति, सीताराम, कर्ण और जयराम यह चार पुत्र हुए, शांति वडेराके तिवारी कहाये विश्वा ९ सीताराम लुकऊपुरके तिवारी, विश्वा ९ । कर्ण तिलौरीके तिवारी, विश्वा ९ । जयराम गलायेके तिवारी कहाये, विश्वा ७ । कमोरीके ठकुरी, लखनी, रंजन, त्रिभुवन, और वहादुर यह पांच पुत्र हुए, ठकुरी गल्हैयाके दुवे, विश्वा ४ । लखनी नागापुरके दुवे, विश्वा ३ । रंजन सगुनापुरके दुवे, विश्वा ४ त्रिभुवन विनहारपुरके दुवे, विश्वा ३ । वहादुर मगरायल्पुरके दुवे, विश्वा ७ । जुगनूके रामकृष्ण, परमाई और गोवर्द्धन यह तीन पुत्र हुए, रामकृष्ण कृपानपुरके मिश्र, वि०९ परमाई भागीरथके दीक्षित, वि० ४ । गोवर्द्धन विचौलीके सुकुल कहाये, विश्वा ९ । जयरामके साहब नाम एक पुत्र हुए, सो मिगलानीके अवस्थी कहाये, विश्वा ४ । जयपाल विठूरके दुवे, विश्वा ४ । ठकुरीकी पहली स्त्रीसे भग्गा, जुडावन और शीतल यह तीन पुत्र हुए, भग्गा अमृतपुरके अग्निहोत्री, विश्वा ४ । जुडावन लखनऊके अग्निहोत्री, विश्वा ४ । शीतल कठेरआके अग्निहोत्री कहाये, विश्वा४ । रामकृष्णके देवकीनन्दन नामक एक पुत्र हुए, सो नगराके मिश्र कहाये, विश्वा ३ । परमाईके एक पुत्र रतन हुए, सो क्यूनापुरके दीक्षित कहाये, विश्वा १० । गोवर्द्धनके पुत्र सुन्दर हुए, सो रिवाडीके सुकुल कहाये, वि० ४ । रतनके गोपी, गिरधर, गोपाल, गंगा और देवदत्त यह पांच पुत्र हुए, गोपी मदारपुरमें क्यूनापुरके दीक्षित कहाये, वि० ४ । गिरधर शिवलीमें क्यूनापुरके दीक्षित कहाये, विश्वा ४ । गोपाल विहारपुरमें क्यूनापुरके दीक्षित कहाये

वि० ३। गंगा वाणापुरमें क्यूनापुरके दीक्षित कहाये, वि० ९ देवदत्त कुतमऊमें यज्ञके दीक्षित कहाये, वि० ७। गोपीके थलई, रुपई, मोहन और भोगी यह चार पुत्र हुए, थलई, रुपई कुतमऊके दीक्षित, वि० ४। ३। मोहन कोडरीके दीक्षित, वि० २। भोगी शाहबादके दीक्षित कहाये, वि० २। गिरधरके खेम, चन्द, यज्ञपति, गुरुदत्त और शिवदीन यह पांच पुत्र हुए, इनमें खेम सेंहुडाके दीक्षित, वि० २। चन्द विहारपुरके दीक्षित, वि० २। यज्ञपति खरमुआके अवस्थी, वि० ३। गुरदत्त गरहाके दीक्षित, वि० ३। शिवदीन कलुहाके अग्निहोत्री कहाये, वि० ७। गोपालके हरीबाबू आशादत्त सीरू और भीखू यह पांच पुत्र हुए। इनमें हरी और बबुआ खिरौलीके अवस्थी वि० ९।९। आशादत्त रूयूराके अवस्थी, वि० २। सीरू मदनिहाके दुबे, वि० २। भीखू ठाठविलारके दुबे कहाये, वि० २। भीखूके मदन, भोगी और परमानन्द यह तीन पुत्र हुए, मदन विहारके दुबे वि० २। भोगी इच्छावरके दुबे, वि० २ परमानन्द लहुरीपुरक दुबे कहाये, वि० २। परमानन्दके शीतल और शिवदत्त दो पुत्र हुए शीतल तिवारीपुरके तिवारी, वि० २। शिवदत्त नगराके मिश्र कहाये, वि० ३।

इति कश्यपगोत्रव्याख्यानम्।

अथ गर्गगोत्रव्याख्यानम्।

श्रीगर्गाचार्यजी यदुवंशियोंके पुरोहित थे, उनके वंशमें बहुत काल पीछे महानन्द चौबे परम प्रतापी, और प्रसिद्ध हुए, विश्वा ३। महानन्दके पुत्र महेश्वर डौडिया खेरके चौबे कहाये वि० ९। महेश्वरके श्यामल, सुन्दर और छविनाथ यह तीन पुत्र हुए। श्यामल पिहानीक चौबे, विश्वा ३। सुन्दर अमरीके चौबे, विश्वा २। छविनाथ जिनखीपुरके चौबे, विश्वा २। श्यामलके श्रीधर मनोहर विद्याधर और गोपाल यह चार पुत्र हुए, श्रीधर पचोरके पांडे, विश्वा २। मनोहर पिहानीके पांडे, वि० ४। विद्याधर कनौजके पांडे विश्वा ५। गोपाल पडरीके पांडे कहाये, विश्वा ३। सुन्दरके रंगनाथ और भावनाथ दो पुत्र हुए, रंगनाथ पटनेके मिश्र, विश्वा ८। भावनाथ सदनियांके मिश्र कहाये, विश्वा ३। गोपालके गुमानी, ठकुरी, चतुरी यह तीन पुत्र हुए, गुमानी शिवराजपुरके अवस्थी, विश्वा २। ठकुरी संवरिके अग्निहोत्री, विश्वा २। चतुरी चोकलीके उपाध्याय कहाये, विश्वा १। रंगनाथके श्रद्धा, सहतावन और सन्तोष तीन पुत्र हुए, श्रद्धा त्रिपुरारिपुरके पाठक कहाये, विश्वा २। सहतावन गुदरीपुरके पाठक कहाये, विश्वा २। सन्तोष सिरौनाके पाठक कहाये, विश्वा २। गुमानीके रजनी और किन्दर दो पुत्र हुए, रजनी उन्नावके दुबे, विश्वा १। किन्दर गरगैयाग्रामके चौबे कहाये विश्वा २। सन्तोषके गिरिधर गोपाल दो पुत्र हुए, गिरिधर आमताराके पाठक विश्वा २, गोपाल सांपीके तिवारी, विश्वा २। गिरधरके एक पुत्र भार्गव हुए सो छीतूपुरके पाठक कहाये, विश्वा २। भार्गवके मुरली और बोधन दो पुत्र हुए, मुरली खिउलिहाके दुबे, विश्वा २। बोधन सदनियाके दुबे कहाये, विश्वा २।

इति गर्गगोत्रव्याख्यानम्।

अथ गौतमगोत्रव्याख्यानम्।

ब्रह्माजीके पुत्र महामुनि गौतमजी न्यायशास्त्रके आचार्य हैं उनके वंशमें गौतमीगंगाके निकट धनावली ग्राममें माधवानन्द सुकुल न्यायशास्त्रके वेत्ता महागुणी हुए, उनकी पांचवीं पीढीमें त्रिपुरमर्दन नाम सुकुल महाप्रतापी हुए और धनावलीके सुकुल कहाये, वि० ४। त्रिपुरमर्दनके पुत्र क्षेमकर्ण अपने पिताके बसाये त्रिपुरारिपुरमें जाकर रहे, इस कारण

त्रिपुरारिपुरके सुकुल कहाये, वि० ४ । क्षेमकर्णके धनई विजयी और अंगद यह तीन पुत्र हुए, धनई गहवरके तिवारी, वि० २ । विजयी वादपुरके ति० २ । अंगद वस्तनिहाके तिवारी कहाये, वि० ५ । धनईके यदुवंश और हरिवंश दो पुत्र हुए, यदुवंश चकलपुरके अग्निहोत्री, विश्वा २ । हरिवंश शुक्ल-पुरके अग्निहोत्री कहाये, विश्वा १ । विजयीके भगवन्त और भगवानदीन यह दो पुत्र हुए, भगवन्त भदे-श्वरीके दुवे विश्वा १ । भगवानदीन गलौलीके दुवे कहाये, विश्वा २ । अंगदकी पहली स्त्रीमें रूपराम और शिवलाल दो पुत्र हुए, रूपराम चिलौलीके पांडे विश्वा २ । शिवलाल गुलौलीके पांडे कहाये वि० २ । दूसरी स्त्रीसे कंठमणि हुए, सो पोखराके मिश्र कहाये, वि० २ । रूपरामके कालेश्वर और नागेश्वर दो पुत्र हुए कालेश्वर नौदसीके पांडे, वि० २ । नागेश्वर हरिहरपुरके पांडे कहाये वि० ३ । कंठमणिके परमसुख और महासुख दो पुत्र हुए, परमसुख डूंगरपुरके मिश्र, वि० २ । महासुख पोखराके मिश्र गौतमी कहाये, वि० २ । कालेश्वरके मधई भजनी और सीवन्त यह तीन पुत्र हुए, मधई त्रिपुरारिपुरके अवस्थी, वि० ४ । भजनी गूजरपुरके अवस्थी, वि० २ । और सीवन्त नवलपुरके अवस्थी कहाये, वि० ४ भजनीके मतिकर और यज्ञ दो पुत्र हुए मतिकर वीरमपुरके दुवे वि० २ । यज्ञ भोगीपुरके अवस्थी अपने नामसे विख्यात हुए, वि० ४ ।

इति गौतमगोत्र ।

अथ भारद्वाजगोत्रवर्णनम् ।

भारद्वाज संहितामें लिखा है कि वागविद्याके प्रचार करनेवाले भारद्वाजजी वडे तपस्वी हुए, उनके शिष्य तपोघन नाम ब्रह्मचारीने अपने गुरुजीकी आज्ञासे चित्रकूटके महाराज महिपाल अग्निवंशोत्पन्नकी सौभाग्यवती नामवाली कन्यासे विवाह किया, और अंगठा नाम ग्राममें रहे, वहां ब्राह्मणोंको बुलाय अग्निहोत्र यज्ञ किया, तथा दान दक्षिणासे परम संतुष्ट किया, तब ब्राह्मणोंने प्रसन्न होकर तपोवनजीको अग्निहोत्री कहा और भारद्वाजगोत्र प्रमाणदिया, उन तपोवनकी सातवीं पीढीमें धीरधर महाप्रतापी हुए और अंगेठाके अग्निहोत्री कहाये वि० ४। धीरधरके बालमुकुन्द, देवकीनन्दन, अघमोचन, मदमोचन, और विहारके यह पांच पुत्र हुए, बालमुकुन्द ऐंचीपुरके तिवारी, वि० ४ । देवकीनन्दन तिवारीपुरके तिवारी विश्वा ९ । अघमोचन चौंसाके दुवे, विश्वा ३ । मदमोचन मिहौनीके दुवे वि० ३। विहारी स्यूलहाके दुवे कहाये, वि० २ । बालमुकुन्दके हीरा, किशन और शंकर यह तीन पुत्र हुए, हीरा राघनपुरके सुकुल वि० ९ । किसन गाडूमऊके दीक्षित वि० ९ । शंकर पहितियाके पांडे कहाये, वि० ४ । देवकीनन्दनके एक पुत्र दुर्गादत्त हुए, सो खौरिहाके तिवारी कहाये, वि० ४ । अघमोचनके एक पुत्र त्रिलोकी हुए, सो इच्छावरके उपाध्याय कहाये, वि० ३ । मदमोचनके अम्बिकादत्त और दुलारे दो पुत्र हुए, अम्बिकादत्त वरुआके दुवे वि० ४। दुलारे इच्छावरके दुवे कहाये वि० ३। विहारीके एक पुत्र मनज हुए, सो रेगांवके दुवे कहाये वि० ४ । हीराके एक पुत्र शुभङ्कर हुए, सो राघनिके पांडे कहाये, वि० ९ । किसनके व्रजलाल, बुलाकी, वनवारी, केदार, महानन्द और निहाल यह छः पुत्र हुए, व्रजलाल मगडैलके दीक्षित, वि० ५ । बुलाकी स्यूरहाके दीक्षित वि० ९ । वनवारी जहांनावादके दीक्षित, वि० ९ । केदार डौंडियाखेरेके दीक्षित, वि० ८ । महानन्द कल्हारीके दीक्षित, विश्वा ३ । निहाल हडाडेके दीक्षित कहाये, विश्वा २ । यह छहों गाडूमऊमें जारहे इसकारण अपने२ स्थानके दीक्षित गाडूमऊके कहाये, शंकरके गङ्गाधर, शशिधर, शूलधर, यह तीन पुत्र हुए, गङ्गाधर मुसौरामें, शशिधर सनहामें, शूलधर अमौसामें पतिहासे जाकर रहे । इस कारण तीनों

पहितियाके पांडे अपने २ स्थानके कहलाये, विश्वा ३ । ३ । २ । शुभंकरके श्रीपति और पिनाकी दो पुत्र हुए, श्रीपति किम्पुराके सुकुल वि० ५ । पिनाकी शान्तिपुरके सुकुल कहाये वि० ३ । पिनाकीके एक पुत्र भूरे हुए, सो कालिकापुरके सुकुल कहाये, वि० ३ । भूरेके शिवसहाय, रामसहाय, शिवलाल, गङ्गा, कौशिक और भवदत्त यह छः पुत्र हुए, शिवसहाय पुरवाके तिवारी, विश्वा २ । रामसहाय विनौरके तिवारी वि० २ । शिवलाल ऐनिके तिवारी वि० २। गङ्गा पुरैनियांके दीक्षित वि० २ । कौशिक इच्छावरके- अवस्थी वि० २ । भवदत्त पुरैनियांके दीक्षित कहाये वि० ८। शिवलालके भानु, परमसुख, पुरुषोत्तम, पूरन और रिपुमर्दन यह पांच पुत्र हुए यह सब ऐनीमें रहे, भानु पराशरी दुबे ऐनीके कहाये वि० २ । परमसुखको कोई सन्तान नहीं हुई, इन्होंने भरद्वाज गोत्रके महंगूपटोरेके दो पुत्रोंको राशि बैठाया, यह दोनों महँगू पटोरेके मिश्र कहाये वि० ८ । पुरुषोत्तम उनइयांके दुबे वि० २ । पूरन मदेश्वरके दुबे वि० २ । रिपुमर्दनके कोई पुत्र नहीं हुआ, तब पूरनके पुत्रको गोद लिया । उसकी सन्तान रिपुमर्दनके नामसे राशि बैठारे दुबे कहाये वि० २ । पुरुषोत्तमके जनार्दन, शिवशंकर, हरिनाथ, शोभाराम, अर्गलस यह पांच पुत्र हुए, जनार्दन अंगेठाके अग्निहोत्री वि० ४ । शिवशंकर नागपुरमें जहांनाबादी उपाध्याय कहाये वि० २ । हरिनाथ मलीहाबादी उपाध्याय कहाये वि० २ । शोभाराम नरोत्तमपुरके नरैनियां अध्वर्यु कहाये वि० २ । अर्गलस सगुनापुरके अध्वर्यु और पाठक कहाये वि० २ । हरिनाथके रामभजन, नारायण, काशीराम और प्रयागू यह चार पुत्र हुए, रामभजन सौनिहांके पाठक वि० २ । नारायण मलाथेके पाठक वि० २ । काशीराम चौकलीके पाठक वि० २। प्रयागू नागापुरके पाठक कहाये वि० २ । नारायणके यागेश्वरी, परमेश्वरी, भानु और यज्ञ यह चार पुत्र हुए, यागेश्वरी ममरायलके पाठक वि० २ । परमेश्वरी नवरलके पाठक, वि० २ । भानु चौसाके पाठक, वि० ५। यज्ञ जहाना-वादके पाठक कहाये वि० ३ । इसमें नौ पीढीतक ५२ पुरुष वंशवृद्धिकर्ता हैं ।

इति भारद्वाजगोत्रवर्णनम् ।

अथ धनञ्जयगोत्रवर्णनम् ।

श्रीमद्भागवतके दशमस्कन्ध उत्तरार्द्धमें एक कथा है, कि द्वारकापुरीमें एक ब्राह्मणके जब २ सन्तान होती थी, तब २ मर जाती थी, अन्तमें वह मरे बालकोंको राजा उग्रसेनकी सभामें लेजाकर रख आने लगा और अनेक दुर्वचन कह आता था कि, तुम्हारेही अपराधसे मेरे बालक मरजाते है, और यदि ऐसा नहीं है तो मेरे सन्तानकी रक्षा आपके अधीन है. एक समय जब वह मृतक बालकको सभामें रख रहा था, और दुर्वचन कह रहा था उस समय अर्जुन वहां बैठा था, उसने ब्राह्मणका आर्तनाद सुनकर पुत्रके बचानेकी प्रतिज्ञा की, और अन्य बालकके जन्मके समय बाणोंसे उसका घर छा दिया, इसपर भी बालक न बचा और होतेही मर गया, तब अर्जुन प्रतिज्ञाभंग होनेसे अग्निमें जलनेको तयार हुआ, तब कृष्णचन्द्रजीने अर्जुनको समझाया, और साथ लेजाकर महानारायणके समीपसे ब्राह्मणके सब पुत्र लाकर उसको दिये, इससे ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ. अर्जुनने उन बालकोंमेंसे एक पुत्र उस ब्राह्मणसे मांग लिया और उस बालकका नाम कृष्णानन्द रक्खा, तब भगवान् कृष्णचंद्रजीने अर्जुनसे कहा तुमने हमारे नामके अनुसार इसका नाम रक्खा, इससे हम वर देते है कि तुम्हारे नामसे इस बालकका गोत्र चलैगा, पश्चात् गर्गाचार्यसे उस बालकका यज्ञोपवीत कराया अर्जुनने उस बालकको सान्दीपनि ऋषिके पास पढने भेज दिया, यह पढकर पूर्ण विद्वान् हुए, बहुत काल पीछे इनके वंशमें पुष्करानन्द और पुष्पानन्द दो भाई परमप्रतापी हुए, पुष्करानन्दका वंश नहीं चला, पुष्पानन्द नानपाराके तिवारी कहाये विश्वा ३। पुष्पानन्दके

मशरण, शिवशरण, हरिभजन और शिवभजन यह चार पुत्र हुए, रामशरण नौगजाके तिवारी विश्वा ३ । शिवशरण विहटाके तिवारी विश्वा ३ । हरिभजन कचौराके तिवारी विश्वा ३ । शिवभजन श्रृंगमपुरके तिवारी कहाये विश्वा ३ । रामशरणके सुरेश्वर और ग्रहपति दो पुत्र हुए, सुरेश्वर मन्मथारिपुरके दीक्षित विश्वा २ । ग्रहपति चरखारीके अवस्थी कहाये विश्वा ५ । शिवशरणके गिरधारी और यज्ञपति दो पुत्र हुए, गिरधारी सुन्दरपुरके दुवे विश्वा २ । यज्ञपति यज्ञपुरके अवस्थी कहाये विश्वा २ । हरिभजनके एक पुत्र शिवशंकर पालीके अवस्थी कहाये विश्वा २ । शिवभजनके कलानिधि और भुवनैन दो पुत्र हुए, कलानिधि तिलसराके अवस्थी विश्वा २ । भुवनैन अम्बरसरके अवस्थी कहाये विश्वा २ इस प्रकार धनंजय गोत्रमें ३ पीढी और १२ पुरुष वंशकर्ताओंका वर्णन है ।

इति धनञ्जयगोत्रवर्णनम् ।

अथ वत्सगोत्रव्याख्यानम् ।

ब्रह्माजीके वंशमें वत्स मुनि परम प्रतापी हुए, उनके वंशमें बहुत काल पीछे माधवनन्दजी परप्रतापी और महाविद्वान् हुए, यह चोकलीमें रहनेके कारण चोकलीके तिवारी कहाये वि० ३ । माधवानन्दके मदनगोपाल और गोवर्द्धन दो पुत्र हुए, मदनगोपाल सांथिनके तिवारी वि० ३ । गोवर्द्धन अर्गलपुरके तिवारी कहाये विश्वा २ । मदनगोपालके कसनी, रोहन, झुन्नी और गयादत्त यह चार पुत्र हुए, कसनी बन्धनके तिवारी विश्वा ७ । रोहन रौतापुरके तिवारी विश्वा २ । झुन्नी रायपुरके तिवारी विश्वा २ । गयादत्त मकनपुरके तिवारी कहाये विश्वा २ । कसनीके मौजीराम, जीवन और बद्री यह तीन पुत्र हुए, मौजीराम आकापुरके पांडे विश्वा १ । जीवन वत्सपुरके मिश्र विश्वा २ । बदरी हिंगुलपुरके मिश्र कहाये वि० २ । रोहनके शोभाराम और रुराई दो पुत्र हुए शोभाराम सिमौनीके सुकुल विश्वा ४ । रुराई हथमरियाके दीक्षित कहाये विश्वा १ । झुन्नीके गणेशदत्त, सूर्यप्रसाद और शिवानन्द यह तीन पुत्र हुए, गणेशदत्त [illegible]नाके दुवे विश्वा २ । सूर्यप्रसाद रायपुरके दुवे विश्वा १ । शिवनन्द चौकलीके दुवे कहाये विश्वा २ । [illegible]गादत्तके रामदयाल और गौतम यह दो पुत्र हुए, रामदयाल हिरौलीके सुकुल विश्वा ४ । गौतम जयपुर पाठक कहाये विश्वा ३ । मौजीरामके मुन्ना, गिरधर, खूबी और गोपाल यह चार पुत्र हुए, मुन्ना जानाक्षीके पांडे विश्वा ३ । गिरधर भदरसीके पांडे विश्वा ४ । खूबी सेढरपुरके पाठक विश्वा ४ । गोपाल मस[illegible]नपुरके पांडे कहाये विश्वा ४ । गणेशदत्तके एक पुत्र चिन्तामणि चौकलीके अग्निहोत्री कहाये विश्वा ४ [illegible]र्यप्रसादके एक पुत्र मोहन स्यूरहाके दुवे कहाये विश्वा ३ । शिवानन्दके एक पुत्र भार्गव हुए, जो शिवरा[illegible]रके दुवे कहाये वि० ४ । गोपालके शंकर, शिवनन्दन और परमसुख यह तीन पुत्र हुए, शंकर रावत [illegible] पाल वि० ४ । शिवनन्दन चौकलीके पांडे वि० ४ । परमसुख ठकुरियाके पांडे कहाये वि० ४ । मोह[illegible] हीरा जगदेव, सुखमन, सिताव और बलदेव यह पांच पुत्र हुए, हीरा नौनायेंके पांडे वि० ४ । जगदेव [illegible]दास, पुरके पांडे वि० ४ । सुखमन सिमौनीके दुवे वि० ४ । सिताव म्यौसरिहाके दुवे वि० ४ । [illegible]लदेव स्यूलिहाके दुवे कहाये वि० ४ । भार्गवके मौरिहा, नगऊ, शिरोमणि, सुखराम और चन्दन यह पां[illegible] पुत्र हुए, मौरिहा फफूंदके रावत कहाये वि० १ । नगऊ पडरी नेवलाके पांडे वि० ४ । शिरोमणि चौ[illegible]कि [illegible]उपाध्याय वि० २ । सुखराम बन्धनाके पाठक वि० ७ । चन्दन मियांगंजके पाठक कहाये वि० [illegible]

सितावके एक पुत्र परम अर्गलपुरके दुवे कहाये वि० २। इस प्रकार वत्स गोत्रमें सात पीढीतक ३८ पुरुषा वंशवृद्धिकर्ता लिखे गये हैं।

इति वत्सगोत्रव्याख्यानम्।

अथ वशिष्ठगोत्रव्याख्यानम्।

प्रजापति ब्रह्माजीके पुत्र वशिष्ठ ऋषि हुए जो सूर्यवंशके पुरोहित थे। उनके वंशमें बहुत काल पीछे अतिप्रतापी महानन्द नामक पंडित हुए वह मौरायेंके एकावशिष्टी चौबे कहाये वि० ३। महानन्दके एक पुत्र महिमान हुए सो मोतीपुरके चौबे कहाये वि० ३। महिमानके काशीराम और प्रयागदत्त दो पुत्र हुए, काशीराम गोधनीके चौबे वि० ३। प्रयागदत्त मितपुरके चौबे कहाये वि० ३। काशीरामके राघव और भगीरथ दो पुत्र हुए, राघव जलारीके दुबे वि० ३। भगीरथ लहरपुरके दुबे कहाये वि० २। प्रयागदत्तके आनन्द, नारायण और नंदराम तीन पुत्र हुए, आनंद हन्नूपुरके तिवारी वि० १। नारायण ख्यूराके चौबे वि० १। नन्दराम ख्यूराके पाठक कहाये वि० १। राघवके महावीर और भवानी दो पुत्र हुए, महावीर ब्रह्मशिलाके दीक्षित वि० २। भवानी वंगरियाके दीक्षित कहाये वि० २। आनन्दके एक पुत्र वंशी सगुनापुरके दीक्षित कहाये वि० ३। नारायणके नथमल और जमदग्नि दो पुत्र हुए, नथमल आंटीपुरके चौबे वि० ३। जमदग्नि डौंडियाखेरेके चौबे कहाये एकावशिष्टी वि० २। भवानीके सोहनी और मोहन दो पुत्र हुए, सोहनी रामपुरके अवस्थी वि० २। मोहन सगुनापुरके दुबे कहाये वि० ३। मोहनके एक पुत्र गोवर्द्धन कन्नौजके चौबे कहाये वि० ३। इसप्रकार वशिष्ठ गोत्रमें सात पीढीतक १७ पुरुषा वंशवृद्धिकर्ता लिखे गये हैं।

इति वशिष्ठगोत्रव्याख्यानम्।

अथ कौशिकगोत्रव्याख्यानम्।

महाराज गाधिके पुत्र विश्वामित्रजी जो तपोबलसे ब्रह्मर्षि पदको प्राप्त हुए, उन ऋषिका एक नाम कौशिक भी है बहुतकाल पीछे इस वंशमें देवकीनन्दन नामक एक पंडित दो वेदके ज्ञाता हुए और भदेसी ग्राममें निवास करके अनेक ब्राह्मणोंको बुलाय पुत्रेष्टियज्ञ किया, ब्राह्मणोंने इनको पुत्र होनेका आशीर्वाद देकर अवस्थीकी पदवी दी, सो यह भदेसीके अवस्थी कहाये वि० ३। देवकीनन्दनके एक पुत्र शोभादत्त भदेशीके अवस्थी कहाये वि० २। शोभादत्तके विश्वम्भर और वैजनाथ दो पुत्र हुए, विश्वम्भर मुर्चापुरके अवस्थी वि० २। वैजनाथ पिहानीके अवस्थी कहाये वि० २। विश्वम्भरके रतिनाथ चिन्तामणि यह दो पुत्र हुए, रतिनाथ कंपिलाके त्रिगुणायत वि० ३। चिन्तामणि इटावाके त्रिगुणायत कहाये वि० ३। वैजनाथके गिरिजापति, द्वारका, कुंजू, बलदेव और नासिकेत यह पांच पुत्र हुए, गिरजापति ऐठानके तिवारी वि० २। द्वारका कपूरथलाके पाठक वि० १। कुंजू कलिङ्गके दीक्षित वि० १। बलदेव जिलहपुरके तिवारी वि० २। और नासिकेत इटावाके दुवे कहाये (१ वि०) चिन्तामणिके किशोर, गदाधर और गोपी यह तीन पुत्र हुए, किशोर कलिंगके मिश्र वि० ३। गदाधर संकेतपुरके मिश्र वि० ३। गोपी वहिरामपुरके मिश्र कहाये वि० २। नासिकेतके एक पुत्र भगोले, शिवराजपुरके दुवे कहाये वि० ३। भगोलेके सुधाकर और शक्तिधर दो पुत्र हुए, सुधाकर शिवराजपुरके राउत वि० १। शक्तिधर ख्यूराके अग्निहोत्री कहाये वि० १। इस प्रकार कौशिक गोत्रमें छः पीढीतक अठारह पुरुषा वंशवृद्धिकर्ता लिखे हैं।

इति कौशिकगोत्रव्याख्यानम्।

अथ कविस्तगोत्रव्याख्यानम् ।

श्रीब्रह्माजीके वंशमें कविस्तजी परम तेजस्वी हुए, उस वंशमें पंडित योगराजजी परम प्रतापी हुए, योगराजजीके भद्रशील और महीधर दो पुत्र हुए; भद्रशील नसुराके दुवे वि० ३ । महीधर विलखारीके पाठक कहाये वि० ३ । महीधरके किन्नर और कन्दर्प दो पुत्र हुए, किन्नर घाटमपुरके पाठक, वि० ३ । कन्दर्प विलखारीके पाठक कहाये वि० २ । किन्नरके हरदेव नामक एक पुत्र हुए सो नानामऊके पांडे कहाये वि० २ । कन्दर्पके जानकीनाथ, जयराम और कुन्दन यह तीन पुत्र हुए, जानकीनाथ किनावांके त्रिगुणायत वि० १ । जयराम गुगुरहाके दुवे वि० २ । कुन्दन विट्ठलपुरके चौबे कहाये वि० १ । जयरामके मान्धाता खेतली और रंगनाथ यह तीन पुत्र हुए, मान्धाता चंचेडीके चौबे वि० २ । खेतली कजरीके अवस्थी वि० ३ । रंगनाथ भटपुरके दुवे कहाये वि० २ । कुन्दनके चुन्नी, पुखराज और शक्तिधर यह तीन पुत्र हुए चुन्नी मंगलपुरके मिश्र वि० २ । पुखराज चिलौलीके दुवे वि० २ । शक्तिधर शीतलाके अग्निहोत्री कहाये वि० २ । इस प्रकार कविस्त गोत्रमें ५ पीढी तक १४ पुरुष वंशवृद्धिकर्ता लिखे गये हैं ।

इति कविस्तगोत्रव्याख्यानम् ।

अथ पाराशरगोत्रव्याख्यानम् ।

श्री वेदव्यास मुनिके पिता पराशरजीके वंशमें शक्तिधर पंडित परम प्रतापी हुए, सो नागपुरी पराशरी दुवे कहाये वि० ३ । शक्तिधरके महेश्वरी नामक एक पुत्र हुए, सो नागपुरी शुक्ल कहाये वि० ३ । महेशदत्तके हरिभजन, शिवभजन और रामभजन यह तीन पुत्र हुए, हरिभजन नागरपुरके दुवे वि० ४ । शिवभजन रामपुरके सुकुल वि० ४ । रामभजन नागपुरके तिवारी कहाये वि० ३ । हरिभजनके सधारी महतू और गोविन्द यह तीन पुत्र हुए; सधारी सिमोनीके पाराशरी दुवे वि० १ । महतू नरवरपुरके परा० दुवे वि० १ । गोविन्द वसहीके परा० दुवे वि० १ । शिवभजनके शंकर विहारी और परमानन्द यह तीन पुत्र हुए, शंकर सिमोनीके पाराशरी अवस्थी वि० २ । विहारी सिमोनीके पाराशरी मिश्र वि० २ । परमानन्द सिमोनीके पाराशरी दीक्षित कहाये वि० २ । रामभजनके विष्णुदत्त और पीतम दो पुत्र हुए, विष्णुदत्त गुदरियापुरके शुक्ल वि० २ । पीतम पहाडपुरके तिवारी कहाये वि० २ । विहारीके कामता और कालीचरण दो पुत्र हुए, कामता पटनेके मिश्र वि० २ । कालीचरण सिमोनीके पाराशरी पाठक कहाये वि० २ । इस प्रकार पाराशर गोत्रमें पांच पीढी तक १९ पुरुष वंशवृद्धि कर्त्ता लिखे गये हैं ।

इति दशगोत्रवर्णनम् ।

विशेष वक्तव्य ।

इस प्रकारसे यह १६ गोत्र कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंमें मुख्य कहे जाते हैं । इनमें पहले लिखे हुए छः गोत्र षट्कुल कहाते हैं, शेष दश गोत्र धाकर कहेजाते हैं, इसके सिवाय ५६ गोत्र और भी हैं जिनका ब्यौरा उन उन वंशावलियोंमें मिल सकता है इसमें सन्देह नहीं कि अब भी कान्यकुब्ज जातिमें ब्राह्मणत्व विशेषरूपसे झलकता है और खान पान आचार विचारमें कुछ २ शुद्धता है, परन्तु वरके ऊपरकी ठहरौनी जात्यभिमान और अविद्या इस जातिमें इतनी वढी हुई है कि इस जातिको रसातलमें लिये जाती है, घरमें चूल्हेपर तवातक साबित नहीं है कुलीनताके अभिमानसे अपने पुत्रोंको पढाते तक नहीं कि हम पढाकर क्या करेंगे कुलीनताकी खोजवाले आवेंगे और हजार बारहसौ दे जायेंगे आनंद करेंगे इस चक्रमें कितनीही कन्या धनाभावसे क्वारी रह जाती है, और कितनेही दशगोत्री वालक कुमारही रहजाते हैं सभा भी वनती हैं पर ठीक उद्योग न करके विवाहादिके समय उसी कुरीतमें वहती रहती हैं, भगवान्

इन लोगों पर कृपा करके इन्हें सुमति दें जिससे यह जाति अपने पुत्रोंको विद्यादान करैं करावैं; और ठहरौनी जैसी महा अनर्थकारिणी कुरीतिको अपनेमेंसे निकाल बाहर करैं । निर्धन भ्राताओंकी कन्याओंके विवाहमें योग्य दान लें दें तो देशका कल्याण हो सकता है ।

अथ सरयूपारीणब्राह्मणोत्पत्तिः ।

सरयू नदीके उत्तर किनारेको लोकमें सारव कहते हैं, वहांके उत्पन्न हुए ब्राह्मणोंकी सारव संज्ञा है इसीसे, यह ब्राह्मण सारवापारीण वा सरयूपारीण वा सरवरिया नामसे संसारमें विख्यात है, इनमें भी गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य, पराशर, सावर्णि, काश्यप, वत्स, भरद्वाज, कौशिक, उपमन्यु, वशिष्ठ, घृतकौशिक, गार्ग्य, कात्यायन, गर्दभीमुख, भृगु, भार्ग, अगस्त्य, कुंडिन, तथा और भी अनेक गोत्र देखे जाते हैं, इनमें त्रिकुल, त्रयोदश तथा तृतीय श्रेणी यह तीन भाग हैं, गर्ग, गौतम, शांडिल्य, भरद्वाज, वत्स, घृतकौशिक, गार्ग्य, सावर्ण्य, गर्दभीमुख, सांकृत, कश्यप इन ग्यारह गोत्रोंसे तीन और तेरह, अर्थात् सोलह घर इन ब्राह्मणोंके भेद कहे हैं, गर्ग गौतम और शांडिल्य इन तीन कुलोंकी सन्तति त्रिकुल या प्रथम श्रेणीमें गिनी जाती है, पयासी, समुदार, धर्मपुरा, चौराकांचनी (गुर्देवान) वृहद्ग्राम (वडगो) माला, पाला, पिण्डी, नागचोरी, इटाये, त्रिफला तथा इटिया, यही तेरह स्थान हैं, इन स्थानोंवाले दूसरी श्रेणीके हैं, इस प्रकारसे यह सोलह भेद हुए । अगस्त्य, कुण्डिन्य, पाराशर, वशिष्ठ, भार्ग, कात्यायन, गार्ग्य, उपमन्यु, कौशिक तथा भृगु, और इनके सिवाय अन्य गोत्रवाले सरयूपारीण तीसरी श्रेणीमें गिने जाते हैं, खोरिया, कोडरिया, अगस्तयार, सिंघनजोडी, नैपूरा, करैली, हस्तग्राम, गुरौली, चारपानी, मीठावेल, सोनोरा, मार्जनी, पोहिला, कोडीराम, कुसोरा, पिपरासी यह इनके स्थान हैं; इनमें गर्ग वंशवाले शुक्ल, वयसी, मधुबनी, मार्जनी, धरमा, भरसी, पयासी ग्रामोंके ब्राह्मण मिश्र कहाते हैं । सरया, सोहगौरा, धतुरा, चेतिया, गुरौली, पाला, टाडा, मिण्डी, नहौली, पोहिला, चौरा तथा सिंहनजोडी ग्रामोंके ब्राह्मण द्विवेदी और त्रिवेदी कहाते हैं । इटिया, माला, नागचोरी, हस्तग्रामधमौली, चारपानी, त्रिफला, इटार और अगस्तपार ग्रामोंके ब्राह्मण पाण्डेय कहाते हैं । कांचनी अर्थात् गुर्देवान, वृहद्ग्राम अर्थात् वडगो, मीठावेल, कोडारि, समुदार और सरार ग्रामोंके ब्राह्मण द्विवेदी कहाते हैं । नैपुरा तथा पिपरासी ग्रामोंके ब्राह्मण चतुर्वेदी कहाते हैं, सोनारा ग्रामके पाठक, खोदिया और लखमाके उपाध्याय और करेली ग्रामके ओझा कहाते हैं । कौंडिन्य गोत्रके शुक्ल मिश्र और त्रिवेदी कहाते हैं, इसके सिवाय और भी अनेक उपनाम हैं, यद्यपि सब ब्राह्मण समान कुलमें हैं, परन्तु पीछे कर्मवश उनमें भेद होगये, प्रथम उत्पत्ति कुलीन–जिनकी उत्पत्ति आरंभसे उत्तम रूपसे चली आती है, दूसरे द्व्यामुष्यायण अर्थात् दत्तक क्रीतक आदिरूपसे दूसरे कुलोंमें प्राप्त हुए तीसरे पंक्तिपावन हैं जिनकी स्थितिसे दूषित ब्राह्मणोंकी पंक्ति भी पावन हो जाती है यह सब वेद वेदांतके पारगामी और सदाचारनिष्ठ होते थे, छहों अंगोंका ज्ञाता दूसरा विनयी अर्थात् विनयसम्पन्न, तीसरा योगी, चौथा सम्पूर्ण शास्त्रोंका जानने वाला, पांचमां यायावर अर्थात् एक रात्रिसे अधिक एक स्थानमें न रहनेवाला, ऐसे ब्राह्मण पंक्तिपावन कहातेहैं, तथा अठारह विद्याओंमें किसीएकका ज्ञाता कर्मयुक्त पंक्तिपावन है, सातवां त्रिणाचिकेत तीन अग्नि अर्थात् गार्हपत्य दक्षिणाग्नि तथा आहवनीयका उपासक, तीनों वेदोंका ज्ञाता, आठवें धर्मशास्त्रका ज्ञाता, नौमें नीति शास्त्रका ज्ञाता भी पंक्तिपावन है, शास्त्रज्ञ एक ब्राह्मणभी पंक्तिदूषकोंमें वैठजाय तो पंक्ति पावन करता है, गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य, भृगु, सावर्णि, वत्स, भरद्वाज, कश्यप, गर्दभीमुख तथा गार्ग्य गोत्रके ब्राह्मणोंमें पंक्तिसंज्ञाका विरल प्रचार है, इनका विवाहसम्बन्ध और भोजन

परस्पर ही होता है, जो ब्राह्मण पंक्ति सीमाको उलंघन कर बाहरके ब्राह्मणोंमें विवाह करते हैं, उनकी त्रुटी संज्ञा है। सरयूपारीणोंमें पंक्तिमूल जिनकी कुलीनता आरंभसे चली आती है, यथा नगर, नदौली, वेयरी, बृहद्ग्राम, भरसी, धतुरा, मलांव, पिपरा, धर्मपुरा, सोदिआ, लखिमा आदि दूसरे पंक्तिसंज्ञक अर्थात् स्थितिपंक्ति यथा मधुबनी, रतनमाला, सिरजम, सरया, सोहगौरा, चेतिया, वल्हआदि तीसरे त्रुटि अर्थात्–पंक्तिसे च्युत, जैसे पयासी, पिण्डी, बरपार आदि यह तीनों भेद ब्राह्मणोंके ज्ञान तथा मर्यादाके हेतु हैं, पंक्तिके सब ब्राह्मण देशकी सीमाके बाहर भी पंक्तिके घरोंको पाकर परस्पर कन्या सम्बन्ध करलेते हैं। पंक्तिके घरोंके सिवाय उत्पत्ति कुलीन आदि ब्राह्मण कन्याका सम्बन्ध सरवार देशकी सीमाके भीतर अपने तथा देशमर्यादाके हेतु परम्पराके कारण स्वदेशमें ही करते हैं, परन्तु पुत्रका विवाह स्वदेशके बाहरभी करलेते हैं, सरयूपारके देशोंमें कुछ ब्राह्मणोंके नामान्तमें धरआदि संज्ञा लगती है, उसका कारण यह है, कि वडगो–अर्थात् बृहद्ग्राममें भरद्वाज कुलके एक ब्राह्मण वास करते थे इसी ग्रामसे जाकर कुछ ब्राह्मण कुटुम्बसहित सराग्राम जो तप्ती नदीके किनारे है, उसमें निवास करनेलगे, कालान्तरमें राजद्वेषके कारण सराग्रामके समस्त निवासियोंका क्षय होगया, परन्तु उस कुलकी एक गर्भिणी वधू जो पहलेसे ही अपने पिताके घर चलीगई थी वचगई, जिसके उदरसे एक पुत्रने अपने नानाके यहां जन्म लिया, आठ वर्षकी अवस्थामें जब उस बालकको कुछ बोध हुआ, तब उसने अपनी मातासे पिता आदिका नाम पूंछा, तब माताने रोरोकर सारा वृत्तान्त कहा, वह तेजस्वी बालक इस बातको सुनकर वडा क्रोधित हुआ, और अपने मित्र साथो नानक एक ग्वालेको लेकर उस ग्राममें जहां उसके कुटुम्बका क्षय हुआ था पहुंचा, और इस भूमिको देख शोकाकुल हो कहने लगा, जब पूर्वपुरुषोंका यहां क्षय हुआ है तब मैंभी अपने प्राण यहीं त्यागन करूंगा, ग्वालेने उसको बहुत समझाया, परन्तु जब वह किसी प्रकारसे न माना, तब ग्वालेने कहा तो नदीमें स्नान करके तुमको यह काम करना उचित है यह सुनकर बालक नदीमें स्नान करने चला गया ज्योंहीं ग्वालेने देखा कि वह आंख ओलट हुआ त्योंहीं ग्वालेने आत्मघात कर लिया, जब वह ब्राह्मणकुमार स्नान करके आया अपने मित्रकी यह दशा देखकर वडा दुःखी हुआ, और फिर धैर्य धर अपनी पैतृकभूमिमेंनिवास करना निश्चित किया, इस प्रकार स्वभूमि, धारण करनेसे उसका नाम धरणीधर हुआ, उस दिनसे उसके वंशजोंके नामान्तरमें धर संज्ञा लगाई जाती है और इस कुलमें साथोनामक ग्वालेका पूजन उसी समयसे होता है, इसी सराग्रामसे पंक्तिका प्रचार हुआ है, गोरक्षनाम ब्राह्मणके चार पुत्र हुए, राम आदि उनके नाम हुए, उनके वंशजोंके अन्तमें तबसे राम आदि संज्ञा लगाई जाती है सरया ग्राम निवासी अपने वंशके अन्तमें यह लगाते हैं. दूसरे सोहगौराग्रामके ब्राह्मणोंमें कोई २ अपने नामके अन्तमें कृष्णशब्द लगाते हैं, इससे अपनेको कृष्णवंशोत्पन्न सूचित करते हैं, तीसरे मणिकुलोत्पन्न धतुरा नामके ब्राह्मण अपने नामके अन्तमें मणिशब्द लगाते हैं, चौथे नाथ कुलोत्पन्न चेतिया ग्रामके ब्राह्मण अपने नामके अन्तमें नाथशब्द लगाते हैं। ऊपर कहे हुए चारों कुलके ब्राह्मण अपना गोत्र श्रीमुख शाण्डिल्य, कहकर उच्चारण करते हैं, यह श्रीमुखसंज्ञा व्यवहारमात्रकी हैं, और यह श्रीमुखसंज्ञा वत्स्य, आश्वलायन, बोधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन, तथा गोत्र प्रवर दर्पण कारादि मुनियोंके ग्रन्थोंमें तो नहीं देखी जाती पर प्रतिष्ठामात्रके लिये लगालिया जाता है। त्रिकुलवालोंमें तो रामकृष्ण, मणि तथा नाथ शब्द लगाये जाते हैं। उन्हीं शब्दोंसे वह त्रिकुलमें समझे जाते हैं, नांदौली ग्राममें एक नन्ददत्त नामक ब्राह्मण रहते थे, उनके वंशमें मेरु, फेरु और सुखापति यह तीन पुत्र हुए इनमें दो पुत्रोंके नामान्तमें नाथ और पतिशब्द प्रचलित हुआ, वह अब तक उनके वंशजोंमें चलता है,

फेरुके वंशजोंके अन्तमें नाथ और पिण्डीग्रामनिवासी सुखापति वा सभापतिके वंशधर अपने अपने नामोंको अन्तमें पतिशब्द लगाते हैं, ग्रामका नाम पिण्डी इस कारण हुआ कि गौतमकुलके पंक्ति ब्राह्मणोंने सभापतिके हाथसे जलसे सानी सतुओंकी पिण्डी भोजन की और उनको पंक्तिमें मिलाया. गर्दभीमुख नामके समान पांच गोत्रकार ऋषि पांच पृथक् २ कुलोंमें उत्पन्न हुए हैं अर्थात् गर्दभी भृगुवंशमें, गर्दभीमुख वशिष्ठ, गर्दभी विश्वामित्र, गर्दभ आंगिरस तथा गर्दभी मुख कश्यपकुलमें हुए हैं, इससे नादौली ग्रामवासी ब्राह्मणोंके गोत्र गर्दभीमुख कहे जाते हैं । (न कि गर्धभमुख) इसके अन्तमें शाण्डिल्यशब्दकी योजना अनुचित बताई जाती है।

अब प्रवरोंका निरूपण करते हैं।

आंगिरस और भृगुके सिवाय यदि प्रवरके ऋषियोंमें एकभी प्रवर्षि समान दीख पड़ें तो सगोत्र कहना चाहिये. हरित, संकृति, कण्व, रथीतर, मुद्गल, विष्णुवृद्ध यह छः ऋषि स्वक्षत्रियकुलसे अंगिरस पक्षमें जानेके कारण केवलाङ्गिरस कहे जाते हैं, और वीतहव्य, मित्रयु, शुनक तथा वेणु यह चार भृगुपक्षमें जानेके कारण केवल भार्गव कहे जाते हैं। गर्गवंशमें, गार्ग्यगोत्री, इटिआ और कोंडरि ग्रामोंके ब्राह्मणोंके पंच प्रवर अर्थात् अङ्गिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, गार्ग्य और श्यैन्य हैं। सो नौरा, खोरिया, वडगांव इन तीनों गांवोंके ब्राह्मणोंके भरद्वाज गोत्र और आंगिरस, बार्हस्पत्य, भरद्वाज, यह तीन प्रवर हैं। इन ब्राह्मणोंका समान गोत्र होनेसे विवाहसम्बन्ध वर्जित है । भरद्वाज, गर्ग, रौक्षायण और यह चारों भारद्वाज कहे जाते हैं, इनका भी परस्पर विवाह नहीं है, गौतमकुलमें उत्पन्न प्रथमकक्षाके त्रिकुल ब्राह्मणोंके अन्तर्गत तथा कांचनी, अर्थात् गुर्दवान, और दूसरी श्रेणीके अन्तर्गत ब्राह्मणोंका भी गौतम गोत्र है, और यह त्र्यार्षेय कहाते हैं, इनके प्रवर आंगिरस, औतथ्य, गौतम हैं, इनका भी परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं। सरैय्या, सोहगौरा, धतुरा, चेतिया, गुरौली, पाला तथा चौरा ग्रामोंके ब्राह्मणोंका शाण्डिल्य गोत्र है, और पिण्डीग्रामके ब्राह्मणोंका गोत्र गर्दभीमुख है, यह दोनों गोत्री त्र्यर्ष कहाते हैं, और इनके प्रवर काश्यप, असित, देवल, अथवा शाण्डिल्य असित देवल है। त्रिफला नैपुराग्रामोंके ब्राह्मणोंका कश्यप गोत्र है, और यह त्र्यार्षेय कहाते हैं। इनके प्रवर कश्यप आवत्सार और असित हैं। शांडिल्य कश्यप और गर्दभीमुख इन तीनों ब्राह्मणोंके ग्रामोंका समान प्रवर गोत्र होनेसे विवाह सम्बन्ध नहीं होता। कश्यप, निध्रुव, रेभ, तथा शाण्डिल्य, यह चारों समान गोत्र होनेसे परस्पर विवाह सम्बन्धके योग्य नहीं हैं । भार्गवकुलमें उत्पन्न वत्सगोत्री ब्राह्मण चारग्रामोंमें वास करते हैं। पयासी, समुदार, नागचौरी, पोहिला, चारपानी, और ईटार ग्रामवाले ब्राह्मणोंका सावर्णि गोत्र है, भृगुसावर्णि और वत्सगोत्रोंके पंचप्रवर भार्गव, च्यावन, आप्नवान और्व और जामदग्न्य है । इन गोत्रोंमेंभी परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होता। भृगु, जामदग्न्य, वत्स, इन तीनोंकी संज्ञा श्रीवत्स कही जाती है। उसी प्रकार भार्गव, च्यवन, आप्नवान, उर्वेज, सावर्ण्य, जीवन्ति, जाबालि, ऐतिशायन, वैरोहित्य, अवव्य, मंडुज अनन्तर अर्थात् पहलेके योगसे जो उत्पन्न हुए हैं, आर्ष्टिसेन, देवरात और अनूप यह सब सगोत्री हैं। समान प्रवर होनेसे इनका परस्पर विवाह नहीं है। माण्डव्य, दर्भ संज्ञक, रैवतके साथ भृगु तथा जामदग्न्यादिका भी विवाह सम्बन्ध नहीं है । मलाव ग्रामके ब्राह्मणोंका गोत्र सांकृत है, और इनके तीन प्रवर आङ्गिरस, साङ्कृत्य, और गौरवीत हैं। धर्मपुरा ग्रामके ब्राह्मणोंका गोत्र घृतकौशिक तथा प्रवर वैश्वामित्र घृतकौशिक है। कुसौरा और पिपरासी ग्रामोंमें कात्यायनगोत्रके ब्राह्मण निवास करते हैं, इनके तीन प्रवर

वैश्वामित्र, कात्य और आक्षील है, मीठाबेल ब्राह्मणोंका कौशिक गोत्र है, इनके वैश्वामित्र आश्मरथ और वाधूल यह तीन प्रवर हैं, कात्यायन कौशिक और घृतकौशिक यह तीनों एकही गोत्रवाले होनेसे इनमें विवाहसम्बन्ध नहीं है, करैली ग्रामके ब्राह्मण अपने ग्रामको छोडकर अन्यत्र निवास करते हैं इनका उपमन्यु गोत्र, और वासिष्ठ, ऐन्द्र, प्रमद, और भारद्वसव्य यह तीन प्रवर हैं। मार्जनीग्रामके ब्राह्मण वशिष्ठगोत्री हैं, यह अपनेको त्र्यार्षेय कहते हैं, इससे इनके वाशिष्ठ, आत्रेय, जातूकर्ण यह तीन प्रवर हैं, हस्तग्राम घमौलीके ब्राह्मणोंका पराशरगोत्र तथा वाशिष्ठ शाक्त और पाराशर्य यह तीन प्रवर हैं। कुण्डिन गोत्रके ब्राह्मणोंके वाशिष्ठ मैत्रावरुण और कौण्डिन्य यह तीन प्रवर हैं, वशिष्ठ, कुण्डिन, उपमन्यु और पराशर इन चारोंके समानगोत्र होनेसे इनमें परस्पर विवाहसम्बन्ध नहीं होता। वेनके पुत्र पृथु हुए इनकी कन्याके एक पुत्र वसु हुआ, वसुके पुत्र उपमन्यु कहे जाते हैं उन्हींसे गोत्र चला है मित्रावरुणके एक पुत्र कुण्डिन एकार्षेय हुआ, इनके वंशवाले वासिष्ठनामसे प्रसिद्ध हुए। अगस्त पार ग्रामके निवासी ब्राह्मणोंका अगस्त्य गोत्र है। यह त्र्यार्षेय हैं अर्थात् आगस्त्य, माहेन्द्र और मायोभूव यह तीन प्रवरवाले हैं बेलग्रामके ब्राह्मणोंका भरद्वाज गोत्र और आङ्गिरस, बार्हस्पत्य तथा भरद्वाज यह तीन प्रवर हैं, सरयूके दक्षिण तटवर्ती कोई २ ब्राह्मण अपनेको मीठाबेल ग्रामवासी भरद्वाज गोत्री कहते हैं, पर मीठाबेलके ब्राह्मणोंका कौशिक गोत्र और वैश्वामित्र, आश्मरथ तथा वाधूल यह तीन प्रवर हैं। सो इनसे नहीं मिलते, विष्टौली, हरपुर, सिंहनजोडी, आदि ग्रामोंके ब्राह्मण जो सरवार देशमें रहते हैं वे अपना गोत्र भार्गव बताते हैं, और पंचप्रवर कहते हैं, पर भार्गवनामक गोत्र कहीं शास्त्रोंमें नहीं पाया जाता, पर सम्भव है कि विष्टौली ग्रामवासी ब्राह्मणोंका गोत्र भार्गव हो। अङ्गिराके दो पुत्र वत्स और भार्ग भृगुके पक्षमें प्राप्त होकर वत्स और भृगुके पुत्र भार्गव कहाये। जिनके भार्गव च्यावन आप्नवान् और्व और जामदग्न्य यह पांच प्रवर है, इस भांतिसे वत्स गोत्रवालोंके दो भेद हुए, यथा जामदग्न्यवत्स तथा अजामदग्न्यवत्स, जिनको गोत्र स्मरण न हो वह शास्त्रसम्मतिसे कश्यपगोत्र जानलें, वा अपने पुरोहितके गोत्रको अपना जानें, परन्तु आचार्यके गोत्र और प्रवरोंमें विवाह न करें, इसमें यह श्लोक प्रमाण है (अविज्ञातः स्वगोत्रश्चेद्ववेदाचार्यगोत्रकः। आचार्यगोत्रप्रवरोद्वाहोप्यस्मिन्न सम्मतः॥ मत्स्य०) आपस्तम्ब कहते हैं (एकार्षेया वाशिष्ठा अन्यत्र पराशरेभ्यः) अर्थात् वशिष्ठगोत्रवालोंका वाशिष्ठही एक प्रवर है, इसके पीछे पराशर-उपमन्यु तथा कुंडिन होते है, । यह हिरण्यकेशिकी सम्मति है, अत्रिकी कन्यामें विवाहसे पूर्व वशिष्ठजीसे जातूकर्ण उत्पन्न हुए। विवाह होनेपर कन्याका गोत्र पतिका गोत्र होता है, विवाहसे पहले पिताका गोत्र होता है, इसकारण जातूकर्णके प्रवरमें अत्रि और वशिष्ठ दोनोंही आये, इससे जातूकर्णकी सन्तान अत्रि तथा वशिष्ठ कुलमें विवाह नहीं करसकती, कारण कि यह दोनों ओरके हुए, लौगाक्षि साकृत और वशिष्ठ तथा कश्यपमें इनका विवाह सम्बन्ध वर्जित है, लौगाक्षि कश्यपके पुत्रका यज्ञोपवीत वशिष्ठजीने किया, प्रथम जन्म कश्यप कुलमें होनेसे रात्रिमें कश्यपके घर और वशिष्ठजीके यज्ञोपवीत करानेसे दिनमें वशिष्ठजीके समीप रहते थे इनके वंशज इसीकारण कश्यप और वशिष्ठमें होनेसे द्वामुष्यायण कहाये, प्रयोगपारिजात और आपस्तम्बसूत्रके अनुसार कश्यप, रेभ, रैभ्य, शाण्डिल्य, देवल, असित, सांकृत, पूतिमाष, अवत्सार और निध्रुव इन दश कश्यप गणोंका परस्पर विवाह सम्बन्ध वर्जित है, यह सरयूपारीणोंका वंश निरूपण किया।

इति सरयूपारीणब्राह्मणोत्पत्तिः।

अथ गौडब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम् ।

बंगदेशसे लेकर अमरनाथ पर्यन्त गौड देशकी स्थिति है ऐसा एक श्लोक आदिगौडदीपिकामें लिखा है, यथा हि-

गौडदेशं समारभ्य भुवनेशान्तगः शिवे ।
गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्याविशारदः ॥

मध्यदेशके अवान्तर आरण्यदेश जिसको हरियाना और जंगलदेश कहते हैं, तथा दिल्लीका प्रान्त सुनपत, पानीपत, करनाल, कुरुक्षेत्र, फल्गु, कैथल, यमुनाके प्रान्तका देश, हस्तिनापुर, मारवाड, झुंझनु, फतेपुर, शेखावाटी, पुष्कर आदि प्रान्त, मत्स्य, विराट, भिवानी आदि स्थानोंमें गौडब्राह्मणोंका निवास है । अयोध्याके उत्तर सरयू नदी और सरयूके उत्तर सरवार तथा गौड देश है, यह ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्डके रचयिताका मत है । मत्स्यपुराणमें श्रावस्तीपुरीका वर्णन गौडदेशमें किया गया है, यथा हि-

श्रावस्तश्च महातेजा वत्सकस्तत्सुतोऽभवत् । निर्मिता येन श्रावस्ती गौडदेशे द्विजोत्तमाः ॥ मत्स्य अ० १२ श्लो० ३०.
उत्तराकौशले राज्यं लवस्य च महात्मनः । श्रावस्ती लोकविख्याता श्राविता च लवस्य च ॥ वायु. भाग. २ अ. २६ श्लो. १९८.

यह श्रावस्तीपुरी गौडदेशमें इस समय भी सरयूनदीके उत्तर गौंडा नगरके समीप वर्तमान है, जिसदेशकी सीमा पूर्वमें गंगा और गण्डकीका सङ्गम है, पश्चिम और दक्षिण दिशाओंमें सरयू है, उत्तरमें हिमालय है इसके मध्यकी भूमिका नाम गौड देश है गण्डकी नदीके पश्चिमकी भूमि गौडदेश कहाती है, इस स्थानमें जो ब्राह्मण सृष्टिके आरम्भसे निवास करते हैं वे आदिगौड कहलाते हैं, कहा जाता है कि लगभग एक सहस्र वर्ष बीते हैं कि बंगदेशके राजाओंने पांच गौड ब्राह्मणोंको कार्यवश बुलाया था और दान मानसे सन्तुष्ट कर वहां रक्खा, तबसे इन लोगोंका स्थान वहां भी पाया जाता है; परन्तु वास्तवमें यह बंगनिवासी नहीं हैं; ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्डमें लिखा है कि आर्यावर्तका जनमेजयनामक एक राजा था, उसने यज्ञ करनेकी इच्छासे १४४४ शिष्योंके सहित बटेश्वरमुनिको बुलाकर यज्ञ किया, और बहुत दान दक्षिणा दी. जब अवभृथ स्नानके पीछे बटेश्वरमुनिको दक्षिणा देने लगे, तब उन्होंने राजप्रतिग्रहको स्वीकार न किया और आशीर्वाद देकर जानेलगे तब राजाने पानके बीडोंमें एक एक ग्रामका दान लिखकर मुनिशिष्योंको चलते समय एक एक बीडी दी उन शिष्योंने आनंदसे ग्रहण करली जब वे मुनिशिष्य नदीपार होने लगे तब उनके पैर जलके भीतर प्रविष्ट होने लगे, तब उन्होंने विचारा कि हमारा जलके ऊपरका गमन कैसे नष्ट हुआ ? तब बीडी खोलकर देखें तो उसमें ग्राम दान लिखा देखकर जाना कि राजप्रतिग्रहके कारण जलके ऊपरकी गति नष्ट हुई, तब वे लौटकर सब राजाके पास गये, और कहा तुमने ऐसा क्यों किया, तब राजाने बहुतसी स्तुति करके कहा बिना दक्षिणाके यज्ञ भी सफल नहीं होता; इस कारण मैंने ऐसा किया, यह कह उनको अपने गौडदेशमें रख लिया, तबसे वे ब्राह्मण वहां रहने लगे और आदिगौड कहाये. इनमें भोजन आचारकी न्यूनता है, पक्वान्न बंजार तकका खा लेते हैं, स्पर्शादिका दोष कम मानते हैं, इनमें प्रायः शुक्लयजुर्वेदी मध्यन्दिनीशाखावाले बहुत हैं, सामवेदी भी हैं । देशान्तरमें आसपदादिको अवटंक और मूल कहकर वर्णन करते हैं ।

संख्या	अवटंक	पद	वेद	शाखा	सूत्र
१	किरीट		यजुः	माध्यन्दिनी	पारस्कर
२	हरितवाल	मिश्र	य०	मा०	पा०
३	इन्दोरिया	जोशी	य०	मा०	पा०
४	बेरवाल	जोशी	य०	मा०	पा०
५	मेवड		य०	मा०	पा०
६	आचोल्या	जोशी	य०	मा०	पा०
७	सुरेला	जोशी	य०	मा०	पा०
८	पाडोनोता	जोशी	य०	मा०	पा०
९	नारस्या	पुरोत	य०	मा०	पा०
१०	पंचारया	जोशी	य०	मा०	पा०
११	इच्छावत		य०	मा०	पा०
१२	तालोदिया		य०	मा०	पा०
१३	अटान		य०	मा०	पा०
१४	कुंडालका		य०	मा०	पा०
१५	गिंडा		य०	मा०	पा०
१६	नोपोलिया	जोशी	य०	मा०	पा०
१७	तुंगा	जोशी	य०	मा०	पा०
१८	टिकावत	जोशी	य०	मा०	पा०
१९	चिवाड	जोशी	य०	मा०	पा०
२०	निवाड	जोशी	य०	मा०	पा०

इसके सिवाय देशवाली ब्राह्मण और पछाडे ब्राह्मण यह भी गौडजातिके दो भेद हैं, इनमें देशवाल और छाडोंका परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं है, देशवालियोंमें मिश्र, तिवारी, पुठिया, चौनोहरिया, गौतम, दुबे आदि होते हैं, और यह अपनी जातिमें प्रतिष्ठित गिनेजाते हैं, प्रायः यह भी यजुर्वेदी और सामवेदी होते हैं, एक जाति इनमें कुस्नोंकी है, वह ब्राह्मणोंके सिवाय दूसरोंका अन्न नहीं ग्रहण करते, पर अब यह अनपढ होनेसे सन्मानमें गिरते जाते हैं, इस जातिमें यज्ञोपवीतमें कुछ विशेष खर्च होता है, पर प्रायः विवाहके समय यज्ञोपवीत करते हैं, जो बहुत कुरीति है, और बालकका छोटी उमरमें ही विवाह करदेते हैं, यहभी प्रथा ठीक नहीं है। पर अब कुछ २ सुधरते जाते हैं, भगवान् समस्त ब्राह्मण भ्राताओंको कर्मनिष्ठ और विद्यानिष्ठ होनेकी सुमति दें।

अब श्रीगौडादिकी उत्पत्ति कहते हैं।

गुजराती श्रीगौड ब्राह्मन मेडतवाल और खडोडे आदि ब्राह्मणोंका वर्णन करते हैं, विक्रम संवत् ११९०¦मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी गुरुवारको गुजरात देशाधिपति महाप्रतापी राजा सिद्धराजके अपने गुजरातदेशमें दो सौ ब्राह्मणोंको दान मान और ग्रामादि देकर श्रीगौड ब्राह्मणोंकी जाति और उनका कुलगोत्र आचार गुजराती सम्प्रदायके अनुसार स्थापन किया। पूर्वमें यह भी सब गौड थे, और कन्नौजके श्रीहस्तनगरमें इनका निवास था, वहां काल

पड जानेसे यह मालवेमें आकर रहे; वहांसे इनको राजा विजयसिंहने बुलाकर अपने यहां बसाया, इनकी लक्षेश्वरीनामक लक्ष्मी कुलदेवी है, इनके भी नये पुराने अनेक भेद है । ग्राम और वृत्तिके अनुसार इनके भी आस्पद आदि हुए, इनमें नये २२ घर हैं और ग्यारह मध्यम है; इनमें मेडतवासी ब्राह्मणके वंशमें जो हुए वह मेडतवाल ब्राह्मण कहाये, इसका अभिप्राय यह है कि; मालवेमें जो ब्राह्मण मेडत (मेंरठ) से आये वे मेडतवाल कहाये. श्रीगौडोंमें जो भेद हैं सो यह है । मालवी श्रीगौड मालवदेशसे आये, यह वर्णाश्रम धर्मका भलीभांति पालन करते हैं, मेडतवाल मेरठसे आये, प्रवालिये श्रीगौड वागड निवासी हैं, ये प्रायः धर्मकर्मसे प्रीति कम रखते हैं, मालवियोंमें नये पुराने दो भेद हैं, उनमें नयोंमें चार भेद हैं, खरौला ग्राममें रहनेसे खारौला श्रीगौड, खरसोदमें रहनेसे खारसोदिये श्रीगौड प्रसिद्ध हैं, इनमें शूद्रकन्यासे विवाह करलेनेसे एक डेरोला श्रीगौड कहाते हैं, पर यह सबसे पृथक् हैं । पहले यह सब गौड ब्राह्मण काश्मीरदेशके निवासी थे, लक्ष्मीके शापसे धनहीन होकर देशसे बाहर आये और अनेक प्रान्तोंमें फैलगये कोई मालवेमें कोई मारवाडमें कोई कोई वागडमें जा बसे, श्रीहट्ट ग्रामके निवासके कारण इनमें श्रीशब्द संयुक्त करदिया गया है, डेरोले और प्रवालिये इन दोको छोडकर इनका परस्पर विवाह सम्बन्ध होता है। लक्ष्मी कुलदेवीकी पूजा होती है, घृतपान होता है ।

श्रीगौडोंके गोत्र प्रवर और टंक लिखते हैं ।

संख्या	टंक	गोत्र	प्रवर	आस्पद.	
१	वडेलिया	कुशकुस	३	पाठक	
२	माद्रणिया	वत्सस्	५	जोशी	उ०
३	छालेचा	कौशिक	३	दुबे	उ०
४	काश्मीरा	गर्ग	३	जोशी	उ०
५	मोटाशिया	कृष्णात्रेय	३	दुबे	उ०
६	मोटाशिया	चन्द्रात्रेय	३	दुबे	उ०
७	नाहापला	भरद्वाज	३	पाठक	उ०
८	माढासिया	कात्यायन	३	पाठक	उ०
९	कपटाबुठिया		३	दुबे	उ०
१०	कपटाल्हिहा		३	दुबे	उ०
११	मोड्या		३	पाठक	उ०
१२	कपटा	अत्रि	३	दुबे	उ०
१३	मुंडालोढा	मौद्गल	३	पंड्या	उ०
१४	पंडोलिया	यास्क	३	दुबे	उ०
१५	धोलकिया	शांडिल्य	३	दुबे	उ०
१६	कपटाबोटलिया	अत्रि	३	व्यास	उ०
१७	शिहोलिया	वशिष्ठ	३	दुबे	उ०
१८	मसूडिया	पाराशर	३	जोशी	उ०
१९	मेटलाद	अत्रि	३	पंडया	उ०
२०	सुंदरिया	वामकक्ष	३	व्यास	उ०

२१	कपटाटिपारिया	वत्सस्	३	जोशी	उ०
२२	दर्भावत्या	भरद्वाज	३	जोशी	उ०

अथ जीर्णक्रमः।

१	वज्रालिया	वत्सपी	५	दुवे
२	धोलकिया	वत्सपी	५	उपाध्याय
३	उपलेटा	वत्सपी	५	पाठक
४	ढिंढाणी	वत्स	५	जोशी
५	धाराशिणा	भरद्वाज	३	पंड्या
६	चिंकणवारा	भरद्वाज	३	व्यास
७	चंचोलिया	भरद्वाज	३	दीक्षित
८	भडकोदरा	भरद्वाज	३	महता
९	कर्षडी	कश्यप	३	व्यास
१०	सांगर्मी	चन्द्रात्रेय	३	जोशी
११	ढुंडःवा	कृष्णात्रेय	३	जोशी
१२	चांगडिया	शाण्डिल्य	३	जोशी
१३	भागलिया	हारीत	३	पंड्या
१४	भालजा	व्यास	३	दीक्षित
१५	खेडाला	विन्दुलस	३	देवा
१६	गंभीरिया	कौशिक	३	जोशी
१७	संघाणिया	मौनस	३	जोशी
१८	लांछला	गौतम	३	"
१९	जम्बूसरा	कौशिक	२	दीक्षित
२०	धाराशिणिया	शांडिल्य	३	जोशी
२१	धनसरा	कश्यप	०	"

मेडतवालक्रमः।

१	जरगाला	अत्रि	३ पंड्या				
२	खलासिया	सांकृत	तिवाडी	३	बलायता	सांकृत	पंड्या।
४	सिहोरिया	"	पंड्या	५	बणोयला	"	"
६	हरेसदा	"	"	७	वेटला	"	"
८	घामणोदरिया	"	"	९	मेहलाण	"	"
१०	नवमोसा	"	"	११	नलतडाकठगोला	"	"

इति श्रीगौडभेद वर्णन।

अन्यभेद वर्णन।

षडशीवंशजानां हि नामानि प्रवदाम्यहम् । पराशराच्च पारीको विप्रो जातो महामनाः। दधीचेर्दाइमो विप्रो जातो वैश्यपुरोहितः । गौतमादादिगौडाश्च विप्रा जाता महौजसः। खडेलवालेति द्विजः खारिकात्समजायत । सारासुराच्च विप्रेन्द्रो जातः सारस्वतस्तदा । सकुमार्गात्ततो जातः सुकुवालो द्विजोत्तमः ।

अव छः वंशवाले ब्राह्मणोंको कहते हैं; पराशरसे पारीक, दधीचसे दाइमा ब्राह्मण वैश्यपुरोहित हुए, गौतमसे आदि गौड वडे प्रभाववाले हुए, खारिकसे खंडेलवाल, सारसे सारस्वत, और सकुमार्गसे सुकुवाल हुए।

अथ, वारह प्रकारके गौड ब्राह्मणोंका वर्णन ।

पद्मपुराणके पाताल खण्डके नामसे ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्डमें कहा है—

मण्डपाचलसान्निध्ये मंडपेश्वरसन्निधौ । गौडास्तेपि च माण्डव्यशिष्यास्ते गुरवः स्मृताः॥ माण्डव्यास्तत्र श्रीगौडा गुरवः शंसितव्रताः। गौतमो दत्तवांस्तेषां गुर्वर्थं तानृषीन् विभुः ॥ श्रीगौडास्तत्र शिष्यान्वै गुरवस्ते तपस्विनः। श्रीहर्षेश्वरसान्निध्ये गतवानृषिसत्तमः। श्रीगौडास्तस्य वै शिष्या गुर्वर्थं संप्रकल्पिताः । चतुर्थं तु सुतं तस्य हारीताय ददौ पुनः ॥ गृहीत्वा गतवान् सोऽपि देशे हर्याणके शुभे । हर्याणाश्चैव श्रीगौडा गुरुत्वे संप्रणोदिताः ॥ देशेऽर्बुदे महारण्ये वाल्मीकाश्रमसंज्ञके। वाल्मीकाश्चैव गुरवो मुनिना संप्रकल्पिताः । वासिष्ठा ऋषिशिष्याश्च वसिष्ठस्य महात्मनः । सौरभेये शुभे देशे सौरभा गुरवः स्मृताः ॥ अष्टमं तु सुतं तस्य दालभ्याय ददौ ततः । तच्छिष्याश्चैव दालभ्या गुरुत्वे ते प्रकीर्तिताः ॥ ततस्तेभ्यो ददौ हंसान् शिष्यांश्च याजनानि वा। विप्रास्तु सुखदाश्चैव सुखसेना महौजसः ॥ दशमं तस्य पुत्रं तु भट्टाख्यमुनये ददौ । तान् गुरुत्वेन संपाद्य भट्टनागरसंज्ञकाः ॥ एकादशं तु पुत्रं तु सौरभाय ददौ ततः। सूर्यध्वजाश्च तच्छिष्या गुरुत्वे ते प्रकल्पिताः ॥ द्वादशं तु सुतं तस्य माथुराय ददौ ततः । माथुरीयाश्च गुरवो वर्तन्ते वहवः स्मृताः॥

पूरा विवरण इन श्लोकोंका कायस्थ उत्पत्ति प्रसंगमें मिलैगा यहां केवल गौडमात्रका प्रसंग लिखते हैं, चित्रगुप्तके वारह पुत्र वारह ऋषियोंको सौंपे गये हैं, उनके वंशके ब्राह्मण शिष्य और कायस्थ उन उन

नामोंसे विख्यात हुए हैं। यहां गौडोंका वर्णन करतेहैं। मंडपाचलके समीप माण्डव्य ऋषिके वंशमें जो हुए वे माण्डव्य श्रीगौड कहाये, इनको मालव्य श्रीगौड भी कहते हैं, इनमेंसे कुछ लंमित नगरमें रहनेसे लंमित कहाये, इन ऋषिके पास चित्रगुप्तका एक पुत्रभी रहा, वह और उसकी जातिके नैगम कहाये, यह विस्तार कायस्थ उत्पत्ति प्रसंगमें देखो। गौतम ऋषिके वंशधर गौतमगौड कहाये, श्रीहर्षके वंशधर सरयूतट निवासी श्रीहर्ष गौड कहाये, इनमें आवे श्रीगङ्गातटमें निवासके कारण गङ्गापुत्र कहाये, हारीत ऋषिका आश्रम हर्याणा देशमें था, इनके वंशधर हर्याणा गौड कहाये, आबूगढके समीम वाल्मीकि आश्रम था, उनके वंशधर वाल्मीकि गौड कहाये, वशिष्ठके वंशधर वासिष्ठ गौड कहाये, सौभरि ऋषिका आश्रम सौरम देशमें था, उनके वंशधर सौरम गौड कहाये, दुर्ल्लक देशमें दालभ्य ऋषिका आश्रम था, उनके वंशधर दालभ्य गौड कहाये, यह अहिस्थली और कुंडलिनीमें भी रहे, हंसऋषिका आश्रम हंसदुर्गके समीप था, इनके वंशधर सुखसेन गौड कहाये, भट्टकेश्वरके समीप भट्टऋषिका आश्रम था, इनके वंशधर भट्ट गौड ब्राह्मण हुए, सौरभेश्वरके समीप सौरभऋषिका आश्रम था, इनके वंशधर सूर्यध्वज गौड ब्राह्मण हुए, माथुरेश्वरके समीप माथुर ऋषिका आश्रम था वहीं मथुरा नगरी है, इनके शिष्य माथुर चौबे वा माथुर गौड कहाये, इसप्रकारसे बारह ऋषियोंके वंशधर बारह नामके गौड कहाये, चित्रगुप्तके बारह पुत्र भी इन्हीं बारह ऋषियोंकी सेवामें रहे इन्हींसे उनके भी बारह नाम हुए, और इन ऋषियोंके वंशधर उन १२ कायस्थोंके पुरोहित हुए। परन्तु पद्मपुराणमें बहुत खोज करनेपर भी हमको यह श्लोक नहीं मिले और इनकी रचना भी कुछ नव्यपन लिये हुए हैं, परन्तु उत्पत्ति प्रसंग देखनेसे यहां लिखे गये हैं।

इति द्वादशगौडब्राह्मणोत्पत्तिः।

अथ सनाढ्य ब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरण।

सनाढय ब्राह्मण भी गौड सम्प्रदायके अन्तर्गत हैं, इसमें सन्देह नहीं, सनाढ्य संहितामें इनका वर्णन है तिसका सार कहाजाता है।

सनाढ्या ब्राह्मणाः श्रेष्ठास्तपसा दग्धकिल्बिषाः। सच्छब्देन तपो ग्राह्यं तेनाढ्या ये द्विजोत्तमाः। ते सनाढ्या द्विजा जाता ह्यादिगौडा न संशयः।

सनाढ्य ब्राह्मण बडे तपस्वी होनेसे श्रेष्ठ कहेगये हैं, भागवतादिमें सन् शब्दसे तपस्याका ग्रहण किया है उससे जो आढ्य हो वह सनाढ्य कहे जाते हैं, कहा जाता है कि जब श्रीरामचन्द्रजी रावणको मारकर अयोध्यामें आये, उससमय यज्ञकरनेके निमित्त ब्राह्मणोंको बुलाया, यज्ञान्तमें जब ब्राह्मणोंको दक्षिणा देनेलगे तब कुछ ब्राह्मणोंने तो दक्षिणा नहीं ली परन्तु साढे सातसौ ब्राह्मण जो यज्ञमें वरण लेकर बैठे थे, उन्हें साढे सातसौ ग्राम दक्षिणामें दिये, वे ग्रामोंके नामोंसे उपनामवाले पृथिवीमें विख्यात हुए, सनाढयोंमें बडी विचित्रता यह है कि कहीं इनका कन्यासम्बन्ध कान्यकुब्जोंमें और कहीं गौडोंमें होता है, परस्पर तो होताही है। गोत्रादि इनके सब पंच गौड जातियोंके हैं।

अत्र साढे तीन कुलकी गोत्रावली कहते हैं ।

पाराशराः	आगस्त्याः	काश्यपाः	वात्स्याः ३ ॥
पांडे { जरौली, परा, ओयरा, वछिय	शंखधार { अनवी, दहेनी, परशारी, सोनायी	मिश्राः { शरहा, रेहरिया, वेटहा, तारापुर	मिश्राः { कटैया, डूंगरपुर; कटिहा { गंधर्वपुर, (च्यवनाः)

अब मध्यदेशवासी सनाढ्योंके भेद लिखते हैं ।

देवपुरके रहने वाले आकरही तीन वेदके पढने वाले त्रिवेदी, दुर्वार, पीडाहरगा, खणग्रामके निवासी हे । जोषी, गोट्टपुरके रहने वाले वरुआ खद्रिकाके पुरोहित, त्रिपाठी, जोरीग्रामके कोतवाल, इटायाके वदौआके मिश्र, धामपुरके मिश्र, टोरग्रामके त्रिपाठी, लखीपुर ग्रामके नौ पुत्र त्रिपाठी नामसे विख्यात है । करहलग्रामके भटेले, गडवार पुरके गेलचिया वृगमा ग्रामके शांडिल्य, वडेपुरके असपा, सरायग्रामके कटारे, गगरौलीके गगरौलिया, कांकरौलीके कांकरौलिया, युगग्रामके मुचोतिया, बछगैजाके बछगैजा, बैदेलाके बैदेले, कंजोलीके कंजोलिया, ठमीलाके ठमोले, गिदरौली ग्रामके गिदरौलिया, कुमार ग्रामके कुमार, भिरथरीके भिरथरी, करसौलीके करसौलिया, पचौरी ग्रामके पचौरिया, बुधैली ग्रामके बुधेलिया, दुगौलीके दुगौलिया, दुगरौलीके दुगरौलिया, नारौलीके नारौलिया, भूसौरीके भूसौरिया, मटावनके दीक्षित, परवारी ग्रामके परवारिया, महावनीके चौवे, पटसारीके पटसारिया, हरेलाके हरेले, गोवरेलाके गोवरेले, चुरारीके चुरारी, दुगरौरीके दुगरौरी, वैदेलाके वैदेले, अन्य सेठिया, उदेनिया, इटाया ग्रामके त्रिगुणायी, दण्डोघट्टके दाण्डोतिया, परतानपुरके राजोरिया, नौचढेरपुरके दोरिया, जरासे ग्रामके कांकरा, व्यासग्रामके व्यास, कोई जगनवंशी अटसारके पांडे, कोई उपाध्याय, मत्सना ग्रामके त्रिपाठी, इटावाके सावर्ण्य, औरैयाके औरैय, मेरापुरके घृतकौशिक, वटिग्रामके लहरिया, धन्नग्रामके करैया, स्वक्कीनिवारीके टेहगुरिया, मेरहा ग्रामके मेरहा, कोई जरौलिया, रेहरिया, काश्यप गोत्रके सरहैया, वत्सगोत्रके कटैया, च्यवन गोत्रके करिहाके मिश्र, वात्स्यगोत्री डूगरिया, अगस्त गोत्रके उपाध्याय, कोई हेरेनिया, कोई भारद्वाज, पटोलिहा, श्रोत्रिय, अग्निहोत्री, वालकीव्यास, विनतरे वरुणा, पायक, गुवरेले, कमरवहा, कुसुवा, मेहरे, भारद्वाज, वैशंधरे वदोल, वरवा, अवोल ग्रामके अवोले, वरनारके वरनारिया, चन्द् ग्रामके वरू, टाकुके टांकु, ठमोलाके ठमेले, रावत ग्रामके रावत, अक्खाग्रामके अक्खे, कीर्ति ग्रामके कीर्तिया, समरी ग्रामके समरिया, अण्डोलीके आण्डोलिया, उदेनीके उदेनिया, अस्थानीके आस्थेनिया, उपाध्याय, दूसरे उपमन्यु जनूथर्याके जनू, औदगाके औदगा, वखानीके वखनिया, उमग्रके कुमरिया, हुचोरीके हुचोरिया, हुचवारीके हुचवारिया उचैनीके उचैनिया, इसीप्रकार उटमरिया, हुच्छिता, उच्छ्रिता, महामौजी, सुकुलके कारण सुकुल, समाधीके कारण समाधिया, सहोनिया, कहेनिया, साजोलिया, साकोलिया, सावर्णिया, सोती, षट्कर्मके अनुष्ठाता, षट्नावलि, सेमरिया, औरैया, करसौलिया, कानोरिया, आगरौवा, रीलौवा, जोमसी, धुरैले, आधुनिया, अगनैया, होविया, अरेलिया, कामकर्या, कांकोलिया, कुम्भवारिया, कैलारिया, कुकरेलिया, कोत्रादिया, करोलिया, कतरेनिया, करहेरिया, करौलीके करौलिया, काश्यप वंशके काशिप, कोई करनिया, कपैरला, कुलवानी, कुलवान, कांकरा, करोर, कुसौलिया, कमैय्या, विघरैया, विघरीलिया, वेदसार, भगोसा, भगोलिया, नाहिला, विनहेरिया, विवहैरी, नवग्रहेया, नवासिया, नैजसैया, विपर्या, नसौचा, नगाइवा, नैनेरिया,

नोनहेरिया, विदाहरिया, कोई दीक्षित, कोई उचरिया, घेरिया, जमोलिया, तुटोतिया, मुखरैया, महलोनिया, मरैया, मुखरैया, अवरैया, कोई मुद्गल, कोई मुडेनिया, मुखैया, मुद्गरैया, सिसेधिया, सिरोहिया, वरौलिया, शाण्डिल्य, शांडिया, सूरोतिया, सूरोटिया, सूरजिया, नामनीया, (यह वामन मंत्रके उपासक हैं) घटोलिया, घरवासिया, कीरतिया, चौथरियां, चौरासिया, चौबे, चरौलिया, चरौरिया, चन्द्रोठिया, चलैया, चांदसोरिया, स्यारहिया, विचनगा, चुगला, वेवा, हरिया, चाहिया, चौधिया, निखिया, निहरिया, हेरिया, गारिया, इन्द्रा इखरिया, झगरिया, झुठैया, झाषेनिया, चलैया, ढंकारिया, अष्टक धारिया, ठठोलिया, ठंठोलिया, भांरिया, दीवरा, रावत,उमैया, डुंगवारिया, डुंगचारा, डुंगरोलिया, तुरौलिया, ढुंडिया, ढाढू, ठमोले, ऊडोचिया, तोहिया, तैहरैया, वरनैया, आइया, ठुठिया, ठौंठानिया, पाइसा, (रावत) रैवारा, (राजोरिया) राजगीया, रौरहीया, रौखिलीया, विधिभेदिया, साजोलिया, तिगुनायी, त्रिशूलिया, तीखे, तपरैया, "तैहरैया, तेहरिया" पलैया, चटसालिया, सेनत्रैया, विप्रैया, सुफलफलिया, लवानिया, अतैय्या, यज्ञिया, तिहोनगुरिया तिहोनपालिया, निरयंतिया, तामोलिया, विप्रिया, नृदनंगिया, सतरंगिया, भिरहेरिया डचेलिया, दुगोलिया, दुरवारा, दुसेटिया, धामोटिया, धनहेरिया, धर्मध्वजीया, भारग्रामिया, औरोलिया (मटेलें) मेलेनिया, मचोडया, भामेलिया, हरदेनिया, हरसानिया, हरखैया, परखैया, वसैया, गुलपारिया, दांता, गुणेचिया गुणनीया (वसैया) चिरंजीया, होकृशीया, श्रीयाथाना, पाथानिया, सुयशिया, अवस्थी, दुवे, (इनका कृष्णात्रि गोत्र है) वुधोलिया, डीलवाडिया, बुधकैया, वुधोलिया, पेखडे, खेमरैया, औरगिरिया, खिडपांसिया, स्वाहैरया, खोइया, चनगीया, प्रनासिया, द्विधागुधनिया, सहिटाटिया, गिलोडिया, गिरिसैया, गांगोलिया, बुटोलिया, वसेठिया, डीलवारिया, विरहेरिया, विरहरूपिया, वदेदिया, सवारिया, नदैया, पीचुनिका, पंचगैया, पिपरौलिया, परसैया, देखैया, षट्कर्मीया, थपैया, थापकिया, थूनिया, स्नेहिया, अदिया, र ुनाथिया, मानिया, नरहेरिया, सतसैया, दोजेनिया, (दीक्षित) दुरसारिया, औरोलिया, मसैनिया, मटेले, वाचेडीया, माईमेडी, हरदौनीया, हरसानीयका, गिलौठिया, रक्षपालिया, वालौठिया, वेशीडया, गुलपारिया, गडैत्रीया, गुननायी, (वसैया) चिरंजीया) हौकृषीया) त्रादीया, मीरिहेरिया, (भारग्रामके निवासी) सुजसीया, सानसैया, दौनैनीया, दौषता, दुर्हारिया; (रक्षपालीया)गीलौठिया, (वालौठीया) वसडा, लावार, मुधौलिया, वुधिकैया; खेमरय्या, ओरगैय्या,पडयालिया, सौहरैया, खोइया, नवनीयका,सीहंटीया,गीलौठीया,गीरसैय्या,गांगोलीया, वुठौलीया, ससष्टीया, डीलेवारीयका, विरहैरियका, विरहैरूवका, नवेदीया, सवारीया, वदैया, पूर्वनीया; पचगव्या, पिपरौलीया, दोपपीया, सजौलीया, निहौनगिरिया, त्रिहौल्पालिया, निखरैया, रदतंगीया तामोठीया, विप्रिया, त्रहैमैत्रीया, सत्रगीया, दुवे, दुवोल्या, दुरवारक, घुसेठीया, धामौठीया, धानेरिय, धर्मध्वजीया, दाछरा, दारखारीया, गगुपीया, द्राखेनीया, ललीया, टंकारिया, रीठौठिया, गाठौलीया· खरेरीया, साखीसीपुरिया, वखरोरी ग्रामके वखरोरिया, डंडोचीया, ठकौली ग्रामके ठाकोलीया, खरौटिया, कीटमाया, करहरीया, भमालीया, हुंचुगिरिया, हुरगरिया, पिपरौलीया, ननदवैया, भटवालीया, कवैया, चांदोरिया, चांदसूरीया; सीहरा, गोले, चौवे, डेहरवारे, दुहार, हरदैनीया, ववेसी ग्रामके ववेसीया, वाइसा, मठवारा, भमरेले, गुलपारिया, वरेखरहरीया, तैहेलेना, गैहनर्या, अडवीया, मघेसीया, वरोरीया, चरनावलिया, वाम्हारीया, मातरोलीया, हथनीया, असतानीया । और भी अनेक प्रकारकी अलवाले सनाढ्य हैं, सातसौ ग्रामवासी होनेसे इनका सप्तशती नाम है, यह सब ग्रामके नामसे विख्यात हैं। इसप्रकार यह सनाढ्य वंशकी परम्परा ग्रामोंके नामसे है । भाषा कवितामें इसका सार इस प्रकार है ।

कमइटिहुबगुरिया महीसुरसाहिबारीजोय । सुविदित उपाध्याय नामते यहि धरातल मधिसोय ॥ पांडे विशुचि अति पांडुपुरके सतत बुधजन जान । लवकुशी मिश्र कहावहीं जिन कंजभद्र बखान ॥ ते मिश्र मीठे प्रथित जे द्विज स्वर्णपुरके वासि । चाडरिपुरस्थ न वदत तिगुना प्रयत बुधिराशि॥बारी निवासी चतुर्वेदी दुबे विद्याधाम। तिन दुबे के सहोदर अवस्थी वेदविदगुणग्राम ॥

दोहा—त्रिपुरपुरी भूपुर प्रवर, श्रेष्ठ त्रिपाठि महान ।
चूरकोरपुरके विदित, पाठक विज्ञ सुजान ॥
दीक्षितयुत द्विज सप्तशत, महीमान सब कोय ।
है सनाढ्यकुल कमलरवि, साढेदश घर जोय ॥

यह सनाढ्योंका वंश निरूपण किया सनाढ्य संहितामें यह लिखा है कि यह वंशावली भविष्यपुराणमें है परन्तु भविष्यपुराणमें हमको यह वंशावली देखनेमें नहीं आई ।

इति सनाढ्यवंशोत्पत्तिः।

अथ उत्कलब्राह्मणनिर्णयः।

इलः किम्पुरुषत्वे च सुद्युम्न इति चोच्यते । पुनः पुत्रत्रयमभूत् सुद्युम्नस्यापराजितम् ॥ (मत्स्य. अ. १२ श्लो. १६)
उत्कलो वै गयस्तद्वद्धरिताश्वश्च वीर्यवान् । उत्कलस्योत्कला नाम गयस्य तु गया मता ॥ १७ ॥ हरिताश्वस्य दिक् पूर्वा विश्रुता कुरुभिः सह । इत्थं राष्ट्रत्रयं जातं पौरवं समनुत्तमम् ॥ १८ ॥
तेषामेकस्तु राजेन्द्र उत्कलश्चेति चोच्यते । (शक्तिसंगमतंत्रे देशव्यवस्थाखंडे)
जगन्नाथः प्रान्तदेशस्तूत्कलं परिकीर्तितः । तस्य देशे जानपदा ब्राह्मणा व्रतशालिनः ॥ ते द्विजाश्चोत्कला जाता संज्ञा इत्थं प्रकीर्तिता ॥

इक्ष्वाकुके वंशमें उत्पन्न हुए, इलसे जो सुद्युम्न नामसे विख्यात है उसके महापराक्रमी उत्कल, गय और हरिताश्व यह तीन पुत्र हुए, इनमें उत्कलने उत्कल, गयने गया बसाया और हरिताश्वने पूर्वमें निवास किया. तीनोंके नामसे तीन देश विख्यात हुए. उनमें जगन्नाथ प्रान्तमें उत्कल देश है; वहांके व्रतशाली ब्राह्मणोंकी संज्ञा उत्कल कही जाती है ।

अथ मैथिलब्राह्मणोत्पत्तिः ।

गण्डकीतीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे । विदेहभूः समाख्याता तैरभुक्ताभिधः स तु ॥

गण्डकीके किनारेसे पूर्व चम्पारण्यके अन्ततक विदेह भूमि कही जाती है; इसको इस समय तिर्हुत कहते हैं, विकुक्षिके छोटे भ्राता निमिके वंशका वृत्तान्त ऐसा है कि इन्होंने गौतम ऋषिके आश्रमके समीप जयन्त नगर बसाया इन्हींके वंशमें राजा जनक हुए हैं; इनको यज्ञमें शाप हुआ जिससे यह विदेह कहाये इनके शरीरके मथन करनेसे महाराज मिथि प्रगट हुए, जसा कहा जाता है-

अरण्यां मथ्यमानायां प्रादुर्भूतो महायशाः ।नाम्ना मिथिरिति ख्यातो जननाज्जनकोऽभवत् । राजासौ जनको नाम विख्यातो भारतेऽखिले ॥ (वायुपु० खं. २ अ. २७.)

अरणीसे शरीर मथनेके कारण मिथि नामक पुरुषका जन्म हुआ, जन्म होनेसे जनक कहाये इन्होंने अपने नामसे मिथिलापुरी बसाई, राजा जनकके अश्वमेघ यज्ञोंमें सहस्रों ऋषियोंका समागम हुआ था; उस समय शास्त्रार्थमें याज्ञवल्क्यजी सब ऋषियोंसे श्रेष्ठ समझे गये और याज्ञवल्क्यजीके शिष्य अनेक ग्रामोंको लेकर उस देशमें निवास करने लगे।

ते सर्वे मैथिला जाताः स्वाध्यायव्रतशालिनः ।

और मैथिल देशमें निवास करनेके कारण वे सब ब्राह्मण मैथिल कहाये । यह ब्राह्मण अबतक भी बडे विद्वान् शास्त्रज्ञाता होते हैं,परन्तु मत्स्यभोजनकी कुप्रथा इनमें बढी हुई है इसको त्याग देना ही उचित है ।

इति पञ्चगौडोत्पत्तिः ।

एक चक्र लिखते हैं जिससे देशोंके नाम और उनका स्थापन तथा ब्राह्मणोंके नामारंभ जाने जाते हैं ।

वैवस्वतमनु ।

इला वा सुद्युम्न
|
पुरूरवा
|
भीम
|
कांचनप्रभा
|
जह्नु
|
सुहोत्र
|
अजक
|
बलाकाश्व
|
कुश
|
कुशनाभ
|
वायुने इनकी सौ कन्या कुब्ज करदीं इससे देशका नाम कान्यकुब्ज हुआ यही नाम ब्राह्मणोंका हुआ ।

उत्कल

{ उत्कल देश वसाया ब्राह्मण उत्कल हुए

इक्ष्वाकु
|
निमि
|
मिथिर
|
मिथला वसाई मैथिल ब्राह्मण हुए.

सर्याति
|
सुकन्या च्यवन
|
दधीच
|
सारस्वत
|
इनसे सारस्वत वंश चला

कर्णाटकाश्च तैलङ्गा द्राविडा महाराष्ट्रकाः । गुर्जराश्चेति पंचैव द्राविडा विन्ध्यदक्षिणे ॥

अथ कर्णाटकब्राह्मणोत्पत्तिः ।

कृष्णानदीके दक्षिण ओर सह्याद्रि पर्वतसे पूर्व हिमगोपालसे उत्तर और द्रविडके पश्चिममें कर्णाटक देश है । एक समय वहांके राजाने महाराष्ट्र देशसे ब्राह्मणोंको बुलाकर अपने राज्यमें बसाया और उनको

अनेक ग्राम दानमें देकर अपने यहां दान मान सन्मानसे रक्खा तथा कावेरी तुंगभद्रा कपिला आदि नदियोंके किनारोंके वासस्थान देवमंदिर भी उनको दिये. बहुत काल निवास करने और उस देशके आचार विचार स्वीकार करनेसे उनकी उपाधि कर्णाटकी ब्राह्मण हुई,इनके छः भेद हैं । सवासे १ षष्टिकुल २ व्यासस्वामिमठसेवक ३ राघवेन्द्रस्वामिमठसेवक ४ उडपीतुलमठस्वामिसेवक ५ इनमें उत्तरादिमठसेवक सर्व श्रेष्ठ हैं, यह शैव और वैष्णव दोनों सम्प्रदायोंमें होते हैं । इनमें वैष्णव वैष्णवोंके साथ और शैव शैवोंके साथ खान पानका व्यवहार रखते हैं, उडपि, तुलव, मठस्वामिके सेवकोंका विवाह सम्बन्ध अपने वर्गमें होता है, सवासे कर्णाटक और षष्टिकुल कर्णाटक इन दोनोंका परस्पर व्यवहार सम्बन्ध होता है; तथा उत्तराधिमठसेवक व्यासस्वामिमठसेवक इनका भी परस्पर विवाह सम्बन्ध होता है । इसमें कर्णकमागोल, कुंड, आदि अनेक भेद हैं । देशमें प्रमाण "कृष्णाया दक्षिणे तद्वद्द्राविडात्पश्चिमोत्तरे । महाराष्ट्रात्पूर्वभागे त्रिलिङ्गाद्दक्षिणे तथा ॥ पश्चिमे किञ्चिदेवैष प्रभूतधनधान्यवान्।देशःकर्णाटिकः प्रोक्तः प्रशस्तः पुण्यकर्मणि॥"

अथ तैलंगब्राह्मणोत्पत्तिः ।

"उत्कलादक्षिणे तद्वद्द्राविडादुत्तरेऽपि च । पूर्वोत्तरायां ककुभी यः कर्णाटकदेशतः ॥ महाराष्ट्रात्पूर्वभागे पश्चिमे च समुद्रतः । तैलङ्गदेशो विख्यातः प्रभूतधनमंडितः ॥" अर्थात्—उत्कलके दक्षिण द्राविडके उत्तर कर्णाटकके पूर्वोत्तर वे महाराष्ट्रके पूर्व समुद्रके पश्चिम अर्थात्-श्रीशैलसे चोलास्थानके मध्यतक तैलङ्ग देश है, पुरानी कथा है कि, जैमुनि देशमें एक धर्मवृत्त राजा था, वह योगबलसे नित्य प्रभात काशी स्नानको जाया करता था । रानीने राजासे हठ की कि मैं भी आपके साथ नित्य काशी चला करूंगी, राजाने यह बात स्वीकार की और रानीको भी प्रतिदिन लेजाने लगा, एक दिन रानी काशीमें ही रजस्वला हुई और राजाने तीन दिन काशीमें रहना निश्चय किया, इसी अवसरमें शत्रुओंने राजाका नगर आ घेरा, राजाने योगबलसे सब वृत्तान्त जानकर ब्राह्मणोंसे कहा न जानेसे नगर शत्रुओंसे पीडित होता है जानेसे पत्नीको यहां छोडना पडता है, क्या करूं तब ब्राह्मणोंने राजाको उस अवस्थामें पत्नी सहित स्वदेश गमनकी व्यवस्था दी, इस पर राजा प्रसन्न हुआ और चलते समय कह गया कि कभी समय पडने पर हमारे यहां आना, राजाने घर जाकर शत्रुको जीता धर्मराज्य करने लगे, एक समय काशी क्षेत्रमें अकाल पडगया तब बहुतसे ब्राह्मण राजाका वचन स्मरण कर जैमुनि नगरमें गये, राजाने उनका बडा सन्मान किया और उनके खान, भोजन, स्थानादिका सब प्रबन्ध करदिया उस समय उस नगरके दक्षिणी ब्राह्मणोंने इन उत्तरवासियोंका सन्मान देख इनसे द्वेषभाव माना, और जहां तहां शास्त्रार्थ करना आरंभ करदिया, राजाके सामने भी बडाई छुटाईपर शास्त्रार्थ आरंभ किया, तब राजाने एक घडेमें सर्प बन्द करके कहा जो कोई सत्य बता देगा इसमें क्या है वही बडा समझा जायगा, उन जैमुनि ब्राह्मणोंने कहा हमारी सम्मतिसे इसमें सर्प, तब उत्तरवासी विचारने लगे हम क्या कहैं तब उसी समय ब्रह्मचारीके वेशमें ब्रह्मण्यदेव प्रगट हुए और उन उत्तरदेशी ब्राह्मणोंसे कहा मैं विप्रविनोदी वंशमें उत्पन्न हूं और तुम्हारी ओरसे मैं इस घटके भीतरका वृत्तान्त कहे देता हूं, तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो, ब्राह्मणोंने उस बालकमें चमत्कार देखकर यह बात स्वीकार करली, और बालकने राजाके समीप जाकर कहा कि मैं उत्तरदेशीय ब्राह्मणोंकी अनुमतिसे कहता हूं इस घडेके भीतर सुवर्णकी श्रीकृष्णजीकी मूर्ति है, राजाने जो हँसकर पात्र खोला तो उसमें निश्चयही सुवर्णकी मूर्ति दीखी, इसपर जैमुनि ब्राह्मण पराजित होकर चलेगये, और राजाने बडे सन्मानसे उत्तरवासियोंको रक्खा और ये उत्तरीय तैलंग कहाये। इनमें छः भेद हैं उसका इतिहास इस प्रकार है कि तैलंग देशमें एलेश्वरोपाध्याय नामक एक ब्राह्मण था-

उसकी एक कन्या अत्यन्त सुन्दरी थी, एक समय कल्याणपंत नाम स्वर्णकार दूर देशका रहनेवाला इनके पास आकर ब्राह्मण बनके विद्या पढने लगा, उपाध्यायने उसकी सुमति विचार कर उसे अपनी कन्या दे दी और कन्याके प्यारके कारण उसे अपने घरमें रखलिया, कुछ समय बीत-नेपर कल्याणपन्तके पुत्र हुआ, जब बालक सोलह वर्षका हुआ तब मंगलसूत्रके समय सुवर्णकी परीक्षा करने के समय यह बात जानीगई कि कल्याणपन्त सुनार है, उपाध्यायको यह जान-कर बडा दुःख हुआ और उन तीनोंको अलग रखकर विद्वानोंको बुलाकर सभा कराई और शुद्धिका उपाय पूछा, तब पंडितोंने कहा हम सबमें आप बडे हो आपही इसका निर्णय करो. यह सुनकर उपाध्याय बोले कि थोडे दिनोंका संसर्ग होता तो प्रायश्चित्त लगता, यहां तो चालीस वर्ष संसर्गको होगये इस कारणमें इस विषयमें जाति विभाग करता हूं, जो ब्राह्मण अपने संसर्गके नहीं है परदेशके हैं वे वेल्लाटि अथवा वेलनांडी नामसे प्रसिद्ध होंगे (वेल—बहिर्भाग नाडू—देश अर्थात्—देशसे बाहरके) और उनमें भी जो पहले स्वग्राम दग्ध होनेसे यहां आकर रहे वे 'वेगिनाडू' (वेगी—दग्ध, नाडू-देश) कहावैंगे और जो थोडे समयसे स्वदेशाधिपतिके मरण होने और देशमें अनाचार आदि होनेसे यहां आकर रहे हैं वह 'मुर्किनाडू' नामसे विख्यात होंगे (मुर्कि—मरण, नाडू—देशाधिपति अर्थात्—देशाधिपतिके मरण दुःखसे जो देशको छोडकर यहां आरहे वे मुर्किनाडू कहाये) फिर तीन देशोंसे आये द्विजोंसे ऋग्वेद पाठी ब्राह्मणोंने कहा तुम 'कर्णकर्मा' अर्थात् (कर्मकरनेमें कुशल) नामसे विख्यात होंगे, अपने संसर्गी जो हैं वे तिलं-गाणि नामक जातिसे प्रसिद्ध होंगे और छठी कासलनाडू नामक जाति प्रसिद्ध हो, इस प्रकार जातिके छः भेद स्थापन किये, इनमें ऋग्वेदी और आपस्तम्बी विशेष हैं याज्ञवल्क्य सम्बन्धी वाजसनेयी न्यून हैं, इनका विवाह सम्बन्ध निज २ वर्णनमें होता है अन्यत्र नहीं इस प्रकार उपाध्यायन छः भेद स्थापन किये, पीछे तैलंग ब्राह्मणोंमें वाजसनेयि शाखा वालोंमें अनुमकुडलु और कोतकुडल यह दो भेद हुए, यह ब्राह्मणोंको अखलु भी कहते हैं, दुवलु अर्थलु ऐसे दो भेद हैं अर्थात्—यह इनके दूसरे नाम हैं, और आर्योंका उपदुरीवारु नामसे व्यवहार है, काकुल पाटि वारु, बढमाह इस प्रकारके और भेद हैं, इनमें नियोगी ब्राह्मणोंके चार भेद हैं, आसवेल नियोगी १ पाकनाटि नियोगी २ पेसलवाई नियोगी ३ नन्दवर्यु नियोगी ४ इनके विवाह सम्बन्ध भी स्ववर्गमें होते हैं। कहीं २ पाकनाटि नियोगी और आरवेल नियोगी इनका परस्पर सम्बन्ध होता है, इनके और भी भेद हैं, तैलंग ब्राह्मणोंके यजमान वेरिवार शूद्र जाति, नायडशूद्र मुद्दलादिशूद्र और वैश्यनामधारक कोमटी जाति वाले हैं।

इसी जातिमें गोस्वामी वल्लभाचार्यजीका प्रादुर्भाव हुआ है। वेल्लारि जाति तैलंग ब्राह्मण लक्ष्मणभट्ट हुए इनके पिता गणपति भट्ट और पितामह गङ्गाधर भट्टने अनेक सोमयज्ञ किये थे उसी पुण्यके प्रतापसे करखंब ग्रामनिवासी लक्ष्मणभट्टकी पत्नी इल्लमागा गर्भवती हुई जब सातवां महीना प्रारंभ हुआ तब लक्ष्मणभट्टजी यज्ञपूर्तिमें ब्राह्मण भोजन करानेकी इच्छासे बन्धुवर्गोंके सहित काशीको चले और हनुमान घाटपर एक स्थानमें डेरा किया और ब्राह्मणभोजन कराया। पीछे काशीमें यह समाचार फैला कि कोई यवन काशीपर आक्रमण करैगा यह समाचार सुन यह अपने देशको लौटे और अठारवीं मंजिलमें जब चम्पारण्य पहुंचे तब वहां इनकी पत्नीके नौमाससे पूर्वही गर्भ का प्रसव हुआ उस समय संवत् १५३५ वैशाख कृष्ण एकादशी रविवार था, पिताने बडा आनंद मनाया यह चम्पारण्य नागपुरके आगे रायपुर नाम ग्रामसे ७ कोस पूर्व है, अब इसको चम्पाझर कहते हैं, वहांसे इनको लेकर लक्ष्मण भट्ट काशी आये और इन्होंने सब विद्या माध्वानंदतीर्थके पास पढी और महाप्रभुजीने अनेकोंको परास्त किया और पंढरपुरके राजाको अपना सेवक करके पृथिवीकी परिक्रमा की, मधुमंगल ब्राह्मण

की कन्या महालक्ष्मीसे विवाह किया,संवत् १५६९ भाद्रकृष्ण दशमीको इनके पुत्र जन्मा, जिनका गोपी-नाथ नाम हुआ यह थोडे कालही भूमिपर विराजे तब महाप्रभु चरणाद्रिमें चले आये यहां इनके संवत् १५७२ पौष कृष्ण नवमी शुक्रवारको विठ्ठलनाथका जन्म हुआ, इनके सात पुत्र हुए, उनमें वडे पुत्र श्री गिरिधरजी संवत् १५९७ कार्तिक सुदी१२ को जन्मे, श्री गुसाईंजीने इनको आचार्य गद्दी और गोवर्द्धन-नाथकी मुख्य सेवा सौंपी, दायमागमें मथुरेशजीका स्वरूप दिया, दूसरे पुत्र गोविन्दरायजी संवत् १६०० मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमीको जन्मे,दायमागमें श्रीविठ्ठलेशरायका स्वरूप मिला,तीसरे पुत्र श्रीवालकृष्ण-जीका जन्म संवत् १६०६ आश्विनकृष्ण त्रयोदशीको हुआ, इनको श्रीद्वारिकानाथजीके स्वरूपकी सेवा मिली. चतुर्थ पुत्र श्रीगोकुलनाथजीका जन्म संवत् १६०८मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमीको हुआ इनको सेवाके लिये श्रीगोकुलनाथजीके स्वरूप मिला पंचम पुत्र रघुनाथजीका जन्म संवत् १६११ कार्तिकसुदी १२ को हुआ इनको सेवाके निमित्त श्रीगोकुलचन्द्रमाजीका स्वरूप मिला. छठे पुत्र यदुनाथजीका जन्म संवत् १६१३ चैत्रसुदी ६ को हुआ.जब दायभागमें इनको श्री वालकृष्णजीका स्वरूप देने लगे तो छोटा स्वरूपजानके नहीं लिया.इनके वंशमें वहुत समयके पीछे काशीस्थ श्रीगिरिधरजी महाराजने श्रीमुकुन्दराय-जीका स्वरूप लिया है; इस प्रकार अरेलग्राममें छः पुत्रोंका जन्म हुआ; पीछे श्रीमद्गोस्वामी विठ्ठलनाथजी उस ग्रामसे उठकर श्री गोकुलमें आकर रहने लगे और श्रीनाथजीकी सेवाका वहुत वडा विस्तार किया जिससे इनका यश समस्त देशमें व्याप गया, वीरवल, टोडरमल आदिने शिष्यता स्वीकार की, दूसरी भार्यामें सप्तम पुत्र श्रीघनश्यामजी संवत् १६२३ मार्गशीर्षकृष्ण १३ को जन्मे. इनको दायमागमें श्री मदनमोहनजीका स्वरूप दिया, इस कारण वल्लभसंप्रदायमें सात गद्दी हैं. इन्होंने सुबोधिनी आदि कई ग्रन्थ बनाये और वे श्रीविठ्ठलदासजीको सौंप काशीजीमें आये और संन्यास ग्रहणकर ४० दिनपर्यन्त निराहार रहकर भगवद्धामको पधारे। लक्ष्मणभट्टके साथमें जो ब्राह्मण थे उनमें कितने एक कर्णाटक द्रविड और तैलंग थे, गोकुलमें भी ब्राह्मणोंका समाज वहुत रहा, भारद्वाजगोत्री श्रीविठ्ठलनाथजी मुख्य हुए, पीछे विठ्ठलनाथजीके वंशस्थ पुरुषोंने मेवाडमें श्रीएकलिंगेश्वर क्षेत्रके अन्तर्गत सिहार नगरीमें श्रीनाथजीकी स्थापना करके निवास किया, वहां ब्राह्मणोंके उपनाम कहे हैं। रेहि, पंचनदी, लदार्व, सिन्हरी, कांठो-ढय, वोटी, श्रीमच्चक्रवर्ती, नरी, भदरसा, कंजा, शिघोरी और नड़ी और दिल्लीके वादशाहने जो ग्राम प्रसन्न होकर ब्राह्मणोंको दिये उन ग्रामोंके नामसे उनके नाम विख्यात हुए, यथा गिद्दा,लंवुक, जोगी, याहि,तिघर आदि कर्णाटक द्रविड जो ब्राह्मण वहां जाकर रहे वे भी उन २ नामोंसे विख्यात हुए, अपने २ वर्गमें इनका भी कन्याविवाह सम्बन्ध होता है, वे कर्णाटक,द्रविड,गोकुल, मथुरा, वृन्दावन, व्रज, कामवन,आमेर, मालवा, वूँदी, रतलाम, अनूपशहर, काशी, प्रयाग, वीवीपुरा, वुंदेलखण्ड आदि नगरोंमें रहे और उन २ नामोंसे विख्यात हुए, यह तैलंग ब्राह्मणोंके अन्तर्गत भट ब्राह्मणोंका वंश कहा।

इति श्रीवल्लभाचार्योत्पत्तिः।

अथ द्रविड ब्राह्मणोत्पत्तिः।

पूर्वी विन्ध्याचलके उत्तर भागमें नर्मदा नदीके किनारेपर निवास करनेवाले ब्राह्मणोंमेंसे कुछ ब्राह्मण दक्षिणयात्रा करते हुए द्रविण देशमें आये, वहां पाण्ड्य द्रविड देशका राजा था, उसने इन ब्राह्मणोंका तेज प्रताप देखकर वहुत सन्मान किया, और ग्रामादि देकर उनको अपने स्थानमें रक्खा और क्षेत्रा-दिका दान दिया, वे पूर्वमें तो उत्तरी भाषा वोलनेवाले थे, पश्चात् वहां निवासके कारण कहींकी भाषा बोलने और वैसे ही आचार पालनमें तत्पर हुए, वे ब्राह्मण वेंकटाचल, कांची मंडल प्रभृतिसे

कावेरी, कृतमाला, ताम्रपर्णी, कुमारीटोंक पर्यन्त व्याप्त हैं वे सब द्रविड कहाते है, उनमें सम्प्रदाय तथा ग्राम भेदसे अनेक भेद हुए हैं, यथा पुदुर द्राविड, तुंसंगुठ, द्राविड चोलदेश द्राविड, तुर्पुनारि, द्राविड, कानसिम द्राविड, अष्टसाहस्र द्राविड, त्रिसाहस्र द्राविड, साहस्र द्राविड, कंडूमाणिक्यक, बृहच्चरण, औत्तरेय, दाक्षिणात्य द्राविड, चार प्रकारके माध्यम द्राविड, मुक्काण द्राविड, चार प्रकारके शोलिया द्राविड यडहाल द्राविड, तिलंग द्राविड, पंचरात्र द्राविड, आदिशैव द्राविड, तीन प्रकारके कांचि वटारण्य, पक्षितीर्थ निवास भेदवाले, चार प्रकारके वरमा द्रविड तन्ना इयार द्रविड, तल्लीमुवाईर द्रविड, इस भांति चौवीस प्रकारके द्रविड उस देशमें प्रसिद्ध है, इनका विवाहसम्बन्ध स्ववर्गमें होता है, कितनोंका भोजन सम्बन्ध स्ववर्गमें, कितनोंका अन्यवर्गमें भी है।

इति द्रविडब्राह्मणोत्पत्तिः।

अथ महाराष्ट्रब्राह्मणोत्पत्तिः।

महाराष्ट्र देशके पूर्वमें विदर्भ अर्थात् वरार पश्चिममें सह्याद्रि पर्वत, नासिक, त्र्यम्बक,इगतपुरी,खंडाला और सतारा, उत्तरमें तापी नदी, दक्षिणमें हुबली धारवाड ग्राम है, पूर्वमें प्रतिष्ठानपुरके अधिपति पुरूरवाराजाके वंशमें महाराष्ट्र नामक एक राजा था, उसका बडा राज्य था, इसीसे उस देशका नाम महाराष्ट्र हुआ,उस राजाने यज्ञ करनेके निमित्तसे दीक्षा ली, और उत्तर दिशाके ब्राह्मणोंको बुलाया उन ब्राह्मणोंने विधिपूर्वक यज्ञ कराया, राजाने प्रसन्न हो उनको बहुतसा दान दिया, पीछे उनको ग्रामादि देकर अपने नामसे उनको निवास कराया, तबसे वह महाराष्ट्र ब्राह्मण कहाये इन्हींको दक्षिणी ब्राह्मण कहते हैं,इनमें जाति भेद नहीं होता शाखाभेद होता है,ऋग्वेदी यजुर्वेदी सामवेदी आपस्तम्बी आदि अनेक भेद हैं, कन्यासम्बन्ध अपनी शाखामें करते हैं, भोजनसम्बन्ध सब शाखाओंमें होता है, नागर खण्डमें इनका कुछ वृत्तान्त है,गुजरात देशमें वडनगर एक गांव है वहां रुद्रकोटि तीर्थ है,अनगिन्त दक्षिणी ब्राह्मण एक समय उन रुद्रके दर्शनको घरसे चले और सबने आपसमें शपथ की कि जिस किसीको शिवजीका दर्शन सबसे पीछे होगा, वह पापी और जातसे वाहर कियाजायगा, तब शिवजीने उनकी भक्तिसे प्रसन्न होकर एक कोटि रूप धारणकर उन करोड ब्राह्मणोंको एकसाथ दर्शन दिया, तबसे उस स्थानका रुद्रकोटि हुआ अब इनका अल्ल गोत्रादि लिखते हैं।

संख्या	उपनाम	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	कुलदेवी
१	जोशी	भरद्वाज	३	यजु०	माध्यन्दिनी	मातापुरी
२	गीते	वच्छस	३	य०	”	”
३	बिडवाई	उपमन्यु	३	य०	”	”
४	कांयदे	हारितस	३	ऋ०	शाकल	बालाजी
५	मूले	कश्यप	३	य०	माध्यन्दिन	नृहरि
६	वैद्य	गार्ग्य	५	य०	”	गणपति
७	गोहे	पराशर	३	य०	”	केशवगोविन्द
८	जोशी	कृष्णात्रि	३	य०	माध्य०	मल्लारी
९	पाठक	वच्छस	३	य०	”	गणपति
१०	देशपांडे	सांख्याय०	३	य०	”	व्यंकटेश

११	शुक्ल	हरितस	३	ऋ०	शाकल	महालक्ष्मी
१२	वंडवे	काश्यप	३	ऋ०	शाकल	महासरस्वती
१३	पुंड	कौशिक	३	यजु०	आपस्तम्ब०	तुलजापुरी
१४	धर्माधिकारी	जामदग्न्य	५	ऋ०	शाकल	मातापुरी
१५	गुरुजी	गार्ग्य	५	य०	कण्व	"
१६	महाजन	वत्सस	५	य०	"	"
१७	कुलकर्णी	अत्रि	३	य०	"	गोपालकृष्ण
१८	राळेगणकर	मौनभार्ग	३	ऋ०	शाकल	तुळजापुरी
१९	अग्निहोत्री	काश्यप	३	य०	आपस्तंब	तु. को. योजे
२०	मूले	कृष्णात्रि	३	य०	माध्य०	सप्तशृंगी
२१	पिंगळे	हारित	३	य०	आपस्तम्ब	तुळजापुरी
२२	माळेराव	कौंडिन्य	३	ऋ०	शाकल	रासीन
२३	वैद्य	गार्ग्य	३	य०	आपस्तम्ब	मातापुरी
२४	देसाई	मौनभार्ग्य	३	ऋ०	शाकल	बोधन
२५	कानगो	भरद्वाज	५	य०	आपस्तम्ब	मातापुरी
२६	रहकोले	भरद्वाज	३	यजु०	आपस्तम्ब	मातापुरी
२७	लामगावकर	धनंजय	३	ऋ०	शाकल	मातापुरी
२८	कुलकर्णी	जमदग्नि	५	ऋ०	शाकल	सप्तशृंगी
२९	पाटील	विश्वामित्र	३	ऋ०	शाकल	मातापुरी
३०	स्मार्त	वशिष्ठ	१	ऋ०	शाकल	मातापुरी
३१	जोशी	वच्छस	५	य०	कण्डव	मातापुरी
३२	मूले	श्रीवत्स	३	य०	आपस्तम्ब	कुन्दनपुर
३३	हडगे	कश्यप	३	ऋ०	आश्वलायन	बोधन
३४	मदन	अत्रि	३	य०	आपस्तम्ब	कुन्दनपुर
३५	वांडो	मौनभाग	५	ऋ०	शाकल	आपनी
३६	भगवन	कौंडिन्य	३	ऋ०	शाकल	रासनिवो
३७	जोशि	लोहित	३	य०	माध्यन्दि०	कोल्हापुर
३८	जोशी	भरद्वाज	३	ऋ०	शाकल	योगेश्वरी
३९	पन्नावरि	शांडिल्य	३	ऋ०	शाकल	कोल्हापुर
४०	सामक	हारितस	३	साम०	राणायणी	मातापुर
४१	लेकुरवाले	वात्स्यायन	५	य०	माध्यन्दि०	मोहनीराज
४२	पंचभैया	उपमन्यव	३	य०	माध्यन्दि०	मोहनीम्हा
४३	ऋषि	भारद्वाज	३	य०	माध्यन्दि०	साकांत
४४	धर्माधिकारी	उपमन्यव	३	य०	माध्यन्दि०	मोहनीराज

संख्या	उपनाम	गोत्र	प्रवर
४५	रनभोर	काश्यप	३
४६	करन्दिद	विश्वामित्र	३
४७	दवडे	गौतम	३
४८	वोवडे	काश्यप	३
४९	गोजे	काश्यप	३
५०	देवदास	काश्यप	३
५१	फचर	काश्यप	३
५२	विचारे	भरद्वाज	३
५३	फावले	वच्छस	५
५४	सप्तऋषि	उपमन्यु	
५५	दल्लाल	गार्ग्य	५
५६	देव	भरद्वाज	३
५७	मोकरे	कौशिक	३
५८	मौजे	भारद्वाज	३
५९	लोले	काश्यप	३
६०	शाहणे	शांडिल्य	३
६१	चादुपाले	पाराशर	३
६२	लघु	वशिष्ट	३
६३	सावले	काश्यप	३
६४	खादार	काश्यप	३
६५	फायदे	कौशिक	३
६६	सोगदे	धनंजय	३
६७	समुद्र	मौनन	३
६८	राणे	अत्रि	३
६९	आवारे	काश्यप	३
७०	आंचवले	मुद्गल	३
७१	जिराफे	काश्यप	३
७२	आदनने	मुद्गल	३
७३	कंठ	वच्छस्	३
७४	गोरटे	कौशिक	३
७५	वोल्हे	भरद्वाज	३
७६	दलडरान	वशिष्ठ	३
७७	गाढाले	भारद्वाज	३
७८	पाफले	काश्यप	३
७९	सीवपाटकी	वशिष्ठ	३
८०	रेवते	गौतम	३
८१	भडके	गौतम	३
८२	कमलपाटकी	कृष्णात्रेयय	३
८३	निझ	काश्यप	३
८४	सोनटके	वच्छ	३
८५	वेदरी	वशिष्ट	३
८६	अवटी	काश्यप	३
८७	वारगजे	कृष्णात्रि	३
८८	हडप	वशिष्ठ	३
८९	शुक्र	मौनस	०
९०	गाजरे	उपमन्यव	३
९१	गजगटं	भार्गव	३
९२	कोलेश्वर	काश्यप	३
९३	चतुर	कृष्णात्रि	३
९४	तांभोली	मुद्गल	३
९५	डुकरे	वशिष्ठ	३
९६	तवनीसु	काश्यप	३
९७	मोताले	जातूकर्ण	०
९८	वाव	विदर्भ	०
९९	उपासनी	गौतम	३
१००	तिलिवे	भारद्वाज	३
१०१	पाठक	भारद्वाज	३
१०२	सेवाले	व्याघ्रपात्	०
१०३	रोधे	गार्ग्य	५
१०४	वोलप	कौडिन्य	३
१०५	काथे	अत्रि	३
१०६	यज्ञोपवीतम्	मार्कण्डय	०
१०७	आपटे	धनंजय	३
१०८	गायधानी	सांकृत्य	३
१०९	सीगणे	वच्छ	५
११०	वोधले	काश्यप	३
१११	तानवडे	कृष्णात्रि	३
११२	कली	भरद्वाज	३

संख्या	उपनाम	गोत्र	प्रवर
११३	डोंगरे	पाराशर	३
११४	विजापुरे	वशिष्ठ	३
११५	भोलेराव	पैंग्य	३
११६	एकबोटे	वशिष्ठ	३
११७	सरोक	गर्ग	३
११८	मुकुटकर	लोगाक्षि	३
११९	काकडे	गर्ग	३
१२०	वैद्य	वशिष्ठ	३
१२१	नीसीदे	गौतम	३
१२२	शुक्ल	शाण्डिल्य	३
१२३		कात्यायन	३
१२४	मांडे	कश्यप	३
१२५	थठ	भारद्वाज	३
१२६	आयाचित	वशिष्ठ	३
१२७	मगरी	काश्यप	३
१२८	चौक	यास्क	३
१२९	मुजुमदार	विश्वामित्र	३
१३०	परसायू	माण्डव्य	३
१३१	सेटे	कौशिक	३
१३२	क्षीरसागर	वशिष्ठ	३
१३३	औताडे	भरद्वाज	३
१३४	महाजनजाहरी	श्रीवच्छ	३
१३५	पिलपिले	गौतम	३
१३६	मटंली	कृष्णात्रि	३
१३७	उल्हे	भारद्वाज	३
१३८	कापशे	कौंडिन्य	३
१३९	कोरडे	कौंडिन्य	३
१४०	आमीर	भरद्वाज	३
१४१	धुळे	काश्यप	३
१४२	टोवरे	काश्यप	३
१४३	रोटे	गौतम	३
१४४	खिडवाई	शांडिल्य	
१४५	महात्मे	वच्छ	५
१४६	नवग्रहे	आंगिरस	३
१४७	वाकडे	पराशर	३
१४८	सावकार	काश्यप	३
१४९	भोपे	भारद्वाज	३
१५०	वेणी	भारद्वाज	३
१५१	पतकी	गौतम	३
१५२	परमार्थी	आत्रेय	३
१५३	सोनटे	मौनख	३
१५४	पंजपारे	प्रथमात्र	०
१५५	पावड	उपमन्यव	३
१५६	डुबे	काश्यप	३
१५७	व्यापारी	आत्रे	३
१५८	वेटो	पाराशर	३
१५९	पितले	वच्छ	५
१६०	मानके	विश्वामित्र	३

इति उपनाम ।

इस जातिके यजमान साढे बारह जातिके हैं वे सब शूद्र वर्ग हैं उनका वर्णन महाराष्ट्र क्षत्रिय वंशावलीके पीछे लिखा है ।

अथ तापीतीरस्थकाष्ठपुरवासिब्राह्मणोत्पत्तिः ।

स्कन्दपुराणान्तर्गत तापीमाहात्म्यमें रुद्र कहते हैं । एक समय भगवान् रामचन्द्रजी तापीके समीप जब वनमें आये तब वहां श्राद्ध करनेके निमित्त हनूमानजीसे एक शिला मंगाई और उसपर श्राद्ध किया।

वने काष्ठपुरं चोक्त्वा स्थापिता द्विजसत्तमाः ।

और उस स्थानका नाम काष्ठपुर रखकर वहां ब्राह्मणोंका स्थापन किया वे काष्ठपुर वासी ब्राह्मण कहाये । यहां स्नान दानका बडा पुण्य है, यह महाराष्ट्र सम्प्रदाय है ।

अथ औदीच्यसहस्रब्राह्मणोत्पत्तिः।

पुराणसार संग्रहके तथा श्रीस्थलप्रकाश ग्रन्थके लेखसे विदित है कि संवत् ८०२ में चावडावन राजाने पाटन शहर बसाया उसके वंशमें सौलंकी क्षत्रियवंशी चामुंड राजा हुआ, चामुंडके एक पुत्र मूलराज हुआ, मूलराजने बहुतकाल पर्यन्त राज्य किया, पीछे वह अपनी विरक्ति प्रगट करके उद्धारका उपाय सोचने लगा, गुरुके कहनेसे उसने उत्तराखण्डसे ब्राह्मणोंको बुलाया और सिद्धपुर क्षेत्रदर्शनकी लालसासे विमानोंमें बैठकर ब्राह्मण वहां गये।

गंगायमुनयोः संगाद्ग्रामं पंचोत्तरं शतम्।
च्यवनस्याश्रमात्पुण्याच्छतं वै सोमपायिनाम् ॥
सरय्वाः सिन्धुवर्यायाः शतं च धूतपाप्मनाम्।
वेदशास्त्ररतानां च कान्यकुब्जाच्छतद्वयम् ॥
तिग्मांशुतेजसा तद्वच्छतं काशिनिवासिनाम्।
कुरुक्षेत्रात्तथा द्वाभ्यामधिका सप्तसप्ततिः ॥

प्रयागसे १०५ च्यवनके आश्रमसे १०० सरयूके किनारेसे १०० कान्यकुब्जसे २०० काशीसे १०० कुरुक्षेत्रसे ७९ ब्राह्मण आये।

समीयुर्मुनिपुत्राश्च गंगाद्वाराच्छतं द्विजाः।
नैमिषाच्च समीयुर्वै शतं च क्रतुवेदिनाम् ॥
तथा चैव कुरुक्षेत्राद् द्वात्रिंशदधिकं शतम्।
इत्थं समागता विप्राः सहस्राधिकषोडश ॥

गंगाद्वारसे १०० नैमिषारण्यसे १०० कुरुक्षेत्र प्रान्तसे १३२ इस प्रकार १०१६ ब्राह्मण आये राजाने उनका बडा सत्कार किया, और उनको अनेक प्रकारके दान देने लगा, ब्राह्मणोंने कहा हम प्रतिग्रह नहीं करेंगे, तुम घर जाओ हम तो यहां तीर्थमें कुछ काल निवास करेंगे। राजा यह सुन दुःखी हो घर चला आया कुछ कालमें वे ब्राह्मण स्त्रियोंको अग्निहोत्र सौंपकर पांच रात्रिके निवास करनेको दधीचिके आश्रममें गये, इस अवसरमें राजाने अनन्त वस्त्रालंकार उनकी स्त्रियोंको दान करनेके निमित्त अपनी रानीके हाथ भेजे, जिस समय वे स्त्री रानीको देखने लगीं और वस्त्राभूषण देखकर लुभाई, रानीने कहा यह मैं विष्णु देवकी प्रीत्यर्थ तुम्हारे लियेही लाई हूं, स्त्रियोंने वे सब वस्त्रालंकार ग्रहण किये, परन्तु जब ब्राह्मण अपने आश्रमोंमें आये तब वे अपनी स्त्रियोंसे बोले यह कहांसे आये, स्त्रियोंने जब वृत्तान्त सुनाया तब क्रोधकर उन्होंने मूल राजाके नाश करनेके निमित्त हाथमें जल लिया, तब स्त्रियें बोलीं यदि तुम राजाको शाप दोगे तो हम प्राण त्यागन करेंगीं, तुम राजासे इच्छित पदार्थ ग्रहण करो; यह सुना

ब्राह्मणोंने क्रोध शान्त किया, राजा यह वृत्तान्त सुनतेही ब्राह्मणोंके पास आया और बडे दान मानसे उनको सन्तुष्ट किया और सुवर्णके सिंहसनों पर बैठाकर कार्तिक पूर्णिमाको उन ब्राह्मणोंको सिद्धपुरका दान कर दिया, दश ब्राह्मणोंको काठियावाडके अन्तर्गत सिहोर ग्रामका दान किया।

श्रीस्थलादष्टकाष्ठासु ग्रामांश्च विविधांस्तथा।
चन्द्रसप्तैकसंख्याकान् ब्राह्मणेभ्यो ददौ नृपः॥
इत्थं पंचशतेभ्यश्च दानार्थं पुनरुद्यतः।
अथ सिंहपुरादष्टकाष्ठासु स्वर्णसंयुतान्॥
एकाशीति शुभान्ग्रामान्ब्राह्मणेभ्यो ददौ ततः।
इत्थं पंचशतेभ्यश्च भूसुरेभ्यो नृपोत्तमः॥
राज्ञा पदातिदानैश्च सहस्रं तोषिता द्विजाः।
ततो जाता द्विजेन्द्रास्ते सहस्राख्या महर्षयः॥
उदीच्यास्तत्र चान्ये ये मुनिपुत्राः सुबुद्धयः।
एकीभूत्वा स्थिताः सर्वे तस्मात्ते टोलकाः स्मताः॥

सिद्धपुरकी अष्ट दिशाओंमें अनेक ग्राम हैं उनमें ४७९ ब्राह्मणोंको २७१ ग्रामका दान दिया, इस प्रकार ५०० ब्राह्मण सिद्धपुर संप्रदायी, सहस्र औदीच्य हुए, फिर सियोरेके आठ दिशाओंमें जो ८१ इक्यासी ग्राम थे वह ४९० ब्राह्मणोंको दिये, यह ५०० ब्राह्मण सिहोर सम्प्रदायी कहाये, इस प्रकार यह सहस्र औदीच्य ब्राह्मण हुए, और जिन सोलह ब्राह्मणोंने राजप्रतिग्रह नहीं किया और टोली बांधकर बैठे वे टोलक औदीच्य ब्राह्मण कहाये, गोत्रादि इनके जो भेद हैं सो चक्रमें समझ लेना।

श्रीस्थलसिद्धपुरका २१ पदका कोष्टक ।

संख्या	अवटंक	गोत्र	प्रवर संख्या	वेद	शाखा	कुलदेवी	गणपति	यक्ष वा शिव	भैरव	शर्म
१	देव	भार्गव	६	ऋक्	आश्वलायनी	आशापुरी	वक्रतुंड	वीरेश्वर	आनंद	सोम
२	प्रथमं पदं	पुत्राय दत्तं द्वितीयं	पित्रे दत्तं अतद्वः	पद या गोत्र— ऋादिकं	एकमेवास्ति					
३	पंडया	कौशिक	३	ऋग्वेद	आश्वला०	विघ्नेश्वरी	महोदर	सोमेश्वर	कालभैरव	विष्णु
४	त्रिवाडी	वल्लभ	५	सामवेद	कौथुमी	महागौरी	विघ्नविना०	देवेश्वर	कालभैरव	दत्त
५	दुवे	गौतम	३	ऋग्वेद	आश्वला०	हिंगलाज	महोदर	सोमेश्वर	असितांग	सोम
६	ठाकुर	वच्छस	६	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	भद्रकाली	विघ्नविना०	वीरेश्वर	काल	भव
७	दुवे	पाराशर	३	यजु०	मा०	मा	बहुरूप	वीरेश्वर	काल	सोम
८	उपाध्याय	कश्यप	३	यजु०	मा०	उमा	महोदर	कुबेर	वटुक	सोम
९	दुवे	भारद्वाज	३	यजु०	मा०	चामुंडा	महोदर	वीरेश्वर	असितांग	सोम
१०	दुवे	शांडिल्य	३	यजु०	मा०	महालक्ष्मी	गजकर्ण	सोमेश्वर	वटुक	भव
११	पंडया	शौनक	३	यजु०	मा०	महागौरी	विघ्नविना०	सोमेश्वर	रुरु	दत्त
१२	त्रिवाडी	वशिष्ठ	३	सामवेद	कौथुमी	शुभ्रा	वक्रतुंड	सोमेश्वर	भीषण	भव
१३	ठाकुर	मौनस	३	यजु०	मा०	वारपीठ	महोदर	वीरेश्वर	महाकाल	विष्णु
१४	जानि	गर्ग	३	यजु०	मा०	अंबा	वक्रतुंड	नागेश्वर	वटुक	सोम
१५	दुवे	कुच्छस	३	यजु०	मा०	उमा	महोदर	सोमेश्वर	वटुक	सोम
१६	दुवे	उदालक	३	यजु०	मा०	उमा	महोदर	सोमेश्वर	वटुक	सोम
१७	दुवे	कृष्णात्रेय	३	यजु०	मा०	शुभ्रा	बहुरूप	वीरेश्वर	असितांग	दत्त
१८	दुवे	कौंडिन्य	३	यजु०	मा०	महाकाली	लम्बोदर	वीरेश्वर	वटुक	दत्त
१९	पंडया	माण्डव्य	३			महागौरी	प्रसन्नवदन	वीरेश्वर	वटुक	दत्त
२०	उपाध्याय	उपमन्यु	३	ऋग्वेद	आश्व०	बहुस्मरा	विघ्नविना०	सोमेश्वर	आनंद	भव
२१	दुवे	श्वेतात्रि	३	यजु०	मा०	जया	एकदन्त	सोमेश्वर	रुरु	दत्त

इनमें तीन औदीच्य ब्राह्मणोंका परस्पर भोजन और विवाह सम्बन्ध किया हुआ रूढि और शास्त्रसे बाधक नहीं है, यदि कोई बाधक मानतेहों तो उनको विचारना चाहिये कि गुजरात प्रांतमें औदीच्यकी कन्या टोलकियोंमें और टोलकियोंकी कन्या औदीच्योंमें हैं. १०१६ औदीच्य जो वसे पीछे उनके इष्टमित्र जो आये, वह निकृष्ट जातियोंका आचार्यत्व करनेलगे, इस कारण ऊपर लिख तीन कुलोंके साथ उनका भोजन विवाह सम्बन्ध नहीं रहा; वे कुनवी गौर, गोला गौर, काछिया गौर, ग्रन्थप गौर, मरजी गौर, कोली गौर, मोची गौर, कहाये। गौर, कच्छि, वागडिया, पार करिया,खरडी, संवा, कालावाडी, संवा, सुखसंवा इन नगरोंमें जाकर उन्होंने निवास किया, और भिन्न २ आचार होनेसे सबका संवा (समूह) पृथक् हुआ, और जो मारवाडी औदीच्य गुर्जर देशमें रहे, वे छोटे संवा कहेजाते हैं और जो मारवाड अन्तर्वेद मध्यदेश मालवामें रहे, वे वड संवा कहाये, राजाकी दी हुई पदवीका नाम अवटंक कहाता है। इनमें मुख्य राजाके अधिकारी ठाकुर कहाते हैं, राजकर्मचारी महता कहाते हैं, पंचकुलमें मुख्योंको पंचोली चतुर योधाको भट कहते हैं, राजगुरुको रावल, शुद्ध आजीविका वालेको शुक्ल कहते हैं; पुराण कथा वांचने वालेको व्यास कहते हैं, शेष नाम दुवे आदि प्रसिद्ध हैं।

अब टोलक औदीच्य ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं। औदीच्य प्रकाशमें मुनि और सुमेधा संवादमें कहा है कि, टोलक ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति किस प्रकार है, इसपर सुमेधाने मुनियोंसे कहा कि, कुछ मुनिपुत्र जो अपनी टोली बांधे दान प्रतिग्रहके भयसे पथक् वैठे थे, शिवजीकी आज्ञासे मूल राजाने उनको बुलाकर बडा सन्मान किया, और मनइच्छित मांगनेको कहा तब वे ब्रह्मतेजके वृद्धिकी इच्छा करके बोले कि लोकमें जिसको खंवात कहते हैं उसको स्तंभतीर्थके सहित तथा ग्रामों सहित दान करो राजाने तत्कालही छः ब्राह्मणोंको साठिघोडोंके सहित स्तम्भ तीर्थका दान किया, और खंवातकी आठों दिशाओंमें ब्राह्मणोली आदि चौदह ग्रामोंका दान किया, इस प्रकार सोलह ब्राह्मणोंको दान किया, तथा उनकी स्त्रियोंको भी वस्त्रालंकारसे भूषित किया, तथा चार लाख गौओंका दान किया, इनको जो ग्राम दिये गयेहैं उनमें १३ को पादर और तीनको उपपादर कहते हैं, एक सरखेज दूसरा उत्तर संडा और तीसरा अंकलाव कहाता है, उत्तर संडाके उपाध्याय कश्यप कहाते हैं, शेष दो अवतार भेद हैं और छठे कनीज ग्रामके व्यास जो अपना ग्राम त्यागकर अहमदाबादके विविपरामें आकर रहे इस कारण उनका नाम. वीपरा पौलस्ती पडा उसमें के जो महमदावाद; आलिद्रा, वास्तना, नायका, मारवाड, विरमगांव, हाटकी, रडु, धोलकाके इत्यादि स्थानोंमें जाकर रहे, वे उनके नामसहित पौलस्ती कहे जाते हैं; मातरके जानिके चार भेद हैं. जानिभट, शुक्ल और आकचीआ; डभाण ग्रामके उपाध्याय पद वदलकर भट पण्ड्या और शुक्ल इस प्रकार कहे जाते हैं, खेडाके पंड्या कुलका पद परिवर्तित होकर व्यास हुआ है, और वे यजुर्वेद छोडकर ऋग्वेदी हुए हैं, खंवातके कृष्णात्रि पण्ड्या त्रिपण्ड्याकी तीन शाखा हुई, जो पांचा दसा वीसा कहाती हैं, ब्राह्मणोंमें मौलापण्डया पूर्वी उत्तम हैं, परन्तु विद्याहीनता और कुग्राम वासके कारण हीनत्वको प्राप्त होगयेहैं, टोलकिये ब्राह्मणोंका यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखा है, यदि दूसरी शाखावाले दीखें तो जानना कि यह सिद्धपुरसे आये हैं, आगे इनका कुलचक्र लिखते हैं।

गो०	दि०	सं०	ग्राम नाम	अवटंक	गोत्र	प्रवर	वेद	शा०	कुलदेवी	गणपति	भैरव	शर्म	नदीशिव
		१	खंबात २	पंड्या १	कृष्णात्रिशो:	३	य०	मा०	शुभ्रा	वक्रतुंड	काल	सोम	महीसागरसंगम
७	ई०	२	ब्राह्मणोली	पंड्या	कश्यप	३	,,	,,	उमा	एकदंत	आनंद	मित्र	नीलकंठकोटेश्वरौ
३	अ०	३	हारेयाली	पंड्या	कश्यप	३	,,	,,	उमा	,,	,,	,,	,,
५	ई०	४	खेडा	,,	,,	३	,,	,,	क्षेमप्रदा	विघ्नराज	संहार	दत्त	वाजखेडीसंगमें वात्रकनदी
२	अ०	५	सिन्धुवा २	पंड्या १ पंड्या २	वशिष्ठ	३।३	,,	,,	भद्रकाली	वक्रतुंड	कृष्णआनंद	दत्त	महिनदी
					वत्स				उमा	एकदन्त		मित्र	
८	पू०	६	कनीज	व्यास	पौलस्त्य	६	,,	,,	गौरी	एकदन्त	भीषण	भव	महेश्वरिनदी
४	ई०	७	मातर	जानि	शाण्डिल्य	३	,,	,,	शुभ्रा	गजकर्ण	महाकाल	विष्णु	वात्रकनदी
५	उ	८	डभाण	उपाध्याय	भारद्वाज	३	,,	,,	चामुण्डा	महोदर	आनन्द	मित्र	खेडीवासलीनदी
४	ई०	९	भरकुंड	व्यास	आंगिरस	३	,,	,,	क्षेमकरी	विघ्नराज	संहार	दत्त	वात्रकनदी
८	पू०	१०	महुधा	व्यास	कश्यप	३	,,	,,	अन्नपूर्णा	महोदर	आनंद	मित्र	मनोहरनदी
३	नै०	११	ऋगुण	जोशी	सांकृष्य	३	,,	,,	महालक्ष्मी	गजकर्ण	भीषण	भव	महीनदी
५	ई०	१२	दरेवो १	कश्यप	कश्यप	३	,,	,,	शिवा	ढुंढिराज	आनंद	मित्र	खेदीनदी
			पुरोहित	पुरोहित	,,	३	,,	,,	गौरी	,,	भीषण	भव	,,
९	ई०	१३	कोचरप	व्यास	वच्छस	६	,,	,,	उमा	एकदंत	,,	,,	साभ्रमती

१ उत्तरखंडा २ सरखेज ३ अंकलाव यह तीन उपपादर हैं।

गुर्जर सम्प्रदायान्तर्गत टोलकिया ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति पूर्ण हुई।

अथ नागर ब्राह्मणोत्पत्ति ।

स्कन्द पुराणके नागर खण्डसे सार ग्रहण कर नागर ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहता हूं । शौनकके पूछनेसे सूतजीने कहा कि, आनर्त देश जहां इस समय द्वारका है इस वनमें शंकरका निवास है, वहां शूलपाणि भगवान्ने अपने स्वरूपविशेष लिङ्गका पात किया, और वह भूमिको भेदकर पातालमें प्रविष्ट होगया, इस कारण वहां अनेक उत्पात हुए, तब इन्द्रादिक देवताओंने आनकर कहा आप इस अपने चिह्नरूप तेजको धारण कीजिये, तब भगवान् बोले इस मेरे स्वरूपकी जगत् पूजा करै तो मैं इस तेजको आकर्षण करूं, ब्रह्माजी बोले प्रथम मैं ही पूजा करता हूं पीछे सब जगत् करैगा यह कहकर ब्रह्माजीने पूजा की और पीछे सुवर्णका एक लिंग ब्रह्माजीने वहां स्थापन कर उसका नाम हाटकेश्वर रक्खा, और पातालमें उसका पूजन चार पदार्थका देनेवाला है, शंकरने अपने ज्योतिर्लिंगको जिस मार्गसे उद्धार किया, उसके नीचेसे जलकी धारा निकली, वह भूमिके ऊपर जाकर गंगा कहाई, इस हाटकेश्वरके दर्शन करनेसे और वहांकी गङ्गामें स्नान करनेसे सहस्रों प्राणी स्वर्गमें गमन करनेलगे, तब इन्द्रने उस तीर्थको मृत्तिकासे भर दिया, यह देख नागोंने यहां एक बिल बनाया और पातालसे निकलकर इस भूमिमें गमनागमन करने लगे (ततो नागबिलं ख्यातं सर्वस्मिन्वसुधातले) उसी दिनसे पृथ्वीमें वह स्थान नागबिल नामसे विख्यात हुआ, जब इन्द्रको वृत्रासुरके वधसे ब्रह्महत्या लगी, तब नागबिलके मार्गसे पातालमें जाकर गङ्गास्नान कर शंकरका पूजन कर ब्रह्महत्यासे मुक्त हुआ, फिर यह बात विचारकर कि जो इस मार्गसे स्नान करैंगे सबही शुद्ध होजायँगे, इन्द्रने हिमालयके रक्तशृंग नामक पर्वतखंडसे उस मार्गको बन्द करदिया, पीछे उस पर्वतपर अनेक मंदिर और तीर्थ हुए, उस देशका चमत्कार नामक एक राजा कुष्ठरोगसे पीडित था, एक मुनिके आदेशसे राजाने उस पर्वतपर स्थित शंखतीर्थमें स्नान किया तत्काल राजाका रोग दूर होगया, तब प्रसन्न हो राजाने वहांके ब्राह्मणोंसे कहा आपकी कृपासे मेरा रोग दूर हुआ, इसकारण आप मन-इच्छित दान ग्रहण करो, उन्होंने कहा हम राजप्रतिग्रह नहीं लेते हैं तुम आनंदसे घर जाओ. राजा उदास हो अपने घर चला गया, वे ब्राह्मण अपने तपोबलसे आकाशमार्गसे तीर्थोंमें जाया करते थे, एक समय वे पांच दिनके लिये पुष्कर क्षेत्रको गये, जब राजाने यह बात जानी कि ७२ ऋषियोंमें इस समय कोई नहीं है, तब उसने अपनी दमयन्ती रानीको भूषण वस्त्र लेकर ऋषिपत्नियोंको प्रलोभन देनेको भेजा वहां रानी अनेक वस्त्रालंकार लेजाकर बोली आज विष्णुप्रबोधिनी एकादशी है, विष्णुकी प्रीतिके अर्थ तुम चाहै जितने वस्त्रालंकार लेसकती हो. चार स्त्रियोंके सिवाय सब तपस्वियोंकी स्त्रियोंने बडे चावसे वे वस्त्रालंकार ग्रहण किये, जिन चार स्त्रियोंने नहीं लिये उनके पति चारों ब्राह्मण शुनःशेफ, शात्रेय, बौद्ध और दांत आकाशमार्गसे अपने आश्रममें आये । और अडसठ ऋषिपत्नियोंके प्रतिग्रह करनेके कारण आकाश गति नष्ट होनेसे पैरों आनेलगे, उन चारों ब्राह्मणोंने अपनी स्त्रियोंसे राजाकी रानीका यह वृत्तान्त जान क्रोधकर उसको शाप दिया कि तैंने यह आश्रम प्रतिग्रहसे दूषित किया इस कारण तू पाषाणकी शिला होजा, रानी तत्काल शिला होगई । राजा यह जानकर ऋषियोंको प्रसन्न करनेके निमित्त चला, तत्काल वे चारों ऋषि राजाका आगमन विचार अपनी स्त्रियों और अग्निहोत्रके सहित कुरुक्षेत्र चलेगये, राजाने उस शिलारूप रानीके निमित्त वहां मन्दिर बनवाकर वहां पूजाका प्रबन्ध किया, पीछे कुछ दिनोंमें वे ६८ ब्राह्मण वहां पहुंचे और वस्त्रालंकारसे युक्त देख स्त्रियोंसे पूछा तब उनसे कारण जानकर वे भी शाप देनेको उद्यत हुए तब स्त्रियोंने कहा यदि राजाको शाप दोगे तो हम प्राण त्यागन करैंगी तब ब्राह्मणोंने वह जल पृथिवीपर डालदिया जिसके कारण वह पृथिवी दग्ध होकर ऊपर होगई और ब्राह्म-

णोंने क्रोध त्यागन किया, राजा यह जानकर वहां गया और ब्राह्मणोंकी बडी प्रार्थना की, तब ब्राह्मण बोले तेरे कारण हम यहां रह गये, इस कारण यहां एक नगर बनाकर तुम उसका दान करो, राजाने एककोस लम्बा चौडा एक नगर बनाकर कोट बांधकर तीन मार्ग और चार मार्गोंसे युक्त करके अडसठ घरोंमें सब पदार्थ भरकर शास्त्रानुसार चमत्कारपुरका दान करदिया, और आप तपस्या करनेको बैठ गया, पीछे तपस्यासे शंकर प्रसन्न हुए, और अचलेश्वर नामसे वहां निवास करनेका वचन दिया, चैत्रकृष्ण चतुर्दशीको उस पुरकी प्रदक्षिणासे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है। उन अडसठ ऋषियोंने यह प्रतिज्ञा की कि यदि जब २ हमारे घरोंमें विवाहादि कार्य सम्पन्न होगा पहले दमयन्तीका पूजन करैंगे, कन्या पहले दमयन्तीका दर्शनकर पीछे वेदीमें जायगी तो पतिको अत्यन्त प्यारी होगी. इसदिनसे नागर ब्राह्मण और वैश्योंमें दमयन्तीका पूजन होता है, इस प्रकार चमत्कार पुरमें अडसठ गोत्र स्थापन हुए, और उनमेंसे चार गोत्रवाले सर्पोंके भयसे चलेगये, और शेष चौंसठ उसी स्थानमें पूर्वोक्त आठ वंश उच्च कोठिके अष्टाकुल हुए, सर्पोंके भयका कारण ऐसा लिखाहै कि, आनर्त देशमें एक प्रभंजन नामक राजा था उसके वृद्धावस्थामें एक पुत्र हुआ जिसको ब्राह्मणोंने गंडान्त योगमें जन्म लेनेके कारण सर्वनाशी बताया, तब वह राजा चमत्कारपुरमें तपस्वियोंके पास आकर अपने सब वृत्तान्त सुनाकर प्रार्थना करने लगा तब तपस्वी बोले कि हम १६ ब्राह्मण प्रतिमास तेरे पुत्रके कल्याणार्थ शांति करैंगे, राजाने सामग्री भेजदी, शान्तिका उपचार करने पर भी राजमहलमें आधिव्याधि बढने लगी, तब ब्राह्मण ग्रहोंको शाप देनेको उद्यत हुए, तब अग्निने प्रकट होकर कहा कि, ग्रहोंका दोष नहीं है तुम १६ ब्राह्मणोंमें एक त्रिजात नामक ब्राह्मण बडा निकृष्ट है उसके दोषसे ग्रह आहुति नहीं लेते, उसको त्याग कर शांति करोगे तो शांति होगी, और उसके नीचत्वकी परीक्षा यह है कि, इस स्वेदके जलमें तुम सब कोई स्नान करो, इसमें जो त्रिजात होगा उसके तत्काल विस्फोटक रोग होगा; तब शुद्धिके निमित्त ब्राह्मणोंने उसमें स्नान किया, तब उनमेंसे एकके विस्फोटक रोग होगया वह तत्काल लज्जित होकर पुरके बाहर चलागया, और पन्द्रह ब्राह्मणोंके जप हवनसे राजकुलमें शांति हुई, इधर वह त्रिजात ब्राह्मण वनमें जाकर विचारने लगा, कि माताके व्यभिचार दोषसे मैं इस दशाको पहुंचा, पश्चात् विचार करके तपस्या करनेको बैठा, इधर चमत्कार पुरमें नहुष वंशका एक क्रथनाम ब्राह्मण था, उसने नागपंचमीके दिन नागतीर्थपर खेलते हुए एक नागबालकको लकडीसे मारडाला उसकी माता उस बालकको ले रोती हुई पातालमें अनन्तके सन्मुख गई, तब शेषने नागोंका विलाप सुनकर कहा पृथ्वीके ऊपर हाटकेश्वर क्षेत्रके समीप जाकर जिसने इस बालकको मारा है, नाग उसको नष्ट करके समस्त चमत्कार पुरको भस्म करदें. नागोंने तत्काल अपने विषसे चमत्कार पुरको नष्ट करना आरंभ किया, मृत्युसे बचे शेष ब्राह्मण नगर छोडकर भागने लगे, यह दशा जातिभाइयोंकी देखकर वह त्रिजात रोने लगा तब उसने शिवजीकी स्तुति की और शिवने प्रसन्न हो उससे वर माँगनेको कहा तब उसने कहा हमारा पुर नागोंने वेर लियाहै, इसकारण वहांके सब नाग क्षय होजायँ और ब्राह्मण फिर निवास करैं, यह वर दो; शंकर बोले सब नागोंको मारनातो उचित नहीं है, पर मैं एक मंत्र देता हूँ जिसके शब्द सुनने मात्रसे नाग विषरहित होजायंगे. तुम ब्राह्मणोंके साथ जाकर यह शब्द उच्चारण करो, जो नाग इस मंत्रको सुनकर पातालमें प्रवेश नहीं करैंगे; वे सब विषरहित हो जायँगे।

न गरं न गरं चैतच्छ्रुत्वा ये पन्नगाधमाः।
तत्र स्थास्यंति ते वध्या भविष्यन्ति यथा सुतः॥

न गरं, विष नहीं है ऐसा सुनकर जो नीच सर्प वहां रहेंगे वे अवश्य बधको प्राप्त होंगे, यह सुनकर त्रिजातने अन्य ब्राह्मणोंके साथ न गरं न गरं ऐसा कहते उस स्थानमें प्रवेश किया और उस मंत्रके श्रवण

मात्रसे सब नाग पातालमें चलेगये, उसदिनसे चमत्कार पुरका नाम वृद्ध नगर या वडनगर पडा और त्रिजातको मुख्य मानकर वे सब ब्राह्मण वहां निवास करनेलगे, उपमन्यु, क्रौंच और कैशोर्य गोत्रके ब्राह्मण सर्पोंसे नष्ट हुए, शुनकादि गोत्रके उनके पितर थे और त्रिजात ब्राह्मणके संग जितने गोत्रके ब्राह्मण आये, उनका वृत्तान्त चक्रमें लिखा गया है ।

संख्या	गोत्र	पु० सं.	संख्या	गोत्र	पु०सं०
१	कौशिक	२६	३२	नैध्रुव	५५
२	काश्यप	८७	३३	पैंनित	७०
३	लक्ष्मण	२१	३४	गोभिल	५
४	भारद्वाज	३	३५	पिकाश	५
५	कौडिन्य	१४	३६	औशनस	३
६	रैभ्य	२०	३७	दाशर्स	३
७	पाराशर्य	८	३८	लौगाक्ष	६०
८	गर्ग	२२	३९	रैणिस	७२
९	हारीत	२३	४०	कापिल	७७
१०	भार्गव	२५	४१	शार्कराक्ष	७७
११	गौतम	२६	४२	श्लैणाक्ष	७७
१२	आयुमायन	२०	४३	शार्कव	१००
१३	माण्डव्य	२३	४४	दार्व्य	७७
१४	बह्वृच	२३	४५	कात्यायन	३
१५	सांकृत्य	१०	४६	वैदक	३
१६	वशिष्ठ	१०	४७	कृष्णात्रेय	५
१७	आंगिरस	५	४८	दत्तात्रेय	५
१८	आत्रेय	१०	४९	नारायण	१००
१९	शुक्लात्रेय	१०	५०	शौनकेय	०
२०	वात्स्य	५	५१	जालब्रा	०
२१	कौत्स	२	५२	गोपाल	०
२२	शाण्डिल्य	५	५३	जामदग्न्य	०
२३	मौद्गल्य	२०	५४	शालिहोत्र	०
२४	बौधायन	३०	५५	कर्णिक	८
२५	कौशल	३०	५६	भागुरायण	०
२६	अथर्व	५५	५७	मात्रिक	०
२७	मौनस	७७	५८	त्रैण्व	०
२८	याजुष	३०	१	उपमन्यव	०
२९	च्यवन	३७	२	क्रौंच	०
३०	अगस्ति	३२	३	कैशोर्य	०
३१	जैमिनि	१०	५९	भार्गवद्वितीय	५

उन कौशिकादि गोत्रोंके ४८ संस्कार विधाताने कहे हैं, यह त्रिजात ब्राह्मण ब्रह्माजीके वरदानसे भर्तृयज्ञ नामसे विख्यात हुआ, नगरमें रहनेवाले नागर ब्राह्मण विख्यात हुए, इनके दश भेद और चौंसठ गोत्र हैं, त्रिजातने पन्द्रह सौ ब्राह्मण लाकर वसाये, पर जैसे पूर्वमें अडसठ ब्राह्मणोंका लाभ अधिकार था, इन पन्द्रह सौका सामान्य और मध्यम रीतिसे हुआ, पीछे और वहुतसे ब्राह्मण यहां आनकर रहे। इस स्थानमें शंखतीर्थ, ब्रह्मदेवमंदिर, वालमंडनतीर्थ, मृगतीर्थ, विष्णुपदतीर्थ, गोकर्णतीर्थ, नागतीर्थ, सिद्धेश्वर, महादेव, सप्तर्षितीर्थ, आगस्त्याश्रम, चित्रेश्वरपीठ ऐसे अनेक तीर्थ हैं। एकसमय दुर्वासाजी उसनगरमें आये और देवमंदिर बनानेके लिये उन्होंने वहांके ब्राह्मणोंसे भूमिकी याचना की. पर ब्राह्मणोंने कुछ उत्तर नहीं दिया तब क्रोधकर दुर्वासाने शापदिया कि तुम सब मन्दोन्मत्त होकर पिता पुत्रतकसे छूट जाओगे, ऐसा कहकर जब दुर्वासा जानेलगे तब एक सुशील ब्राह्मणने उठकर उनको रोका और कहा आप यहां देवालय निर्माण करैं, तब दुर्वासाने वहां देवकी स्थापना की। इधर ब्राह्मणोंने यह वात जानकर कि सुशीलने दुर्वासाको भूमि दी है, तब उन्होंने क्रोधकर कहा आजसे उस ब्राह्मणका नाम दुःशील होगा, और नगरसे वाहर निवास होगा तब उसने पुरके वाहर अपना स्थान वनाया, उसके वंशधर तबसे वाह्यनागर वा वारड नागर हुए. अब यहांके तीर्थोंको सुनो, धुंधमारेश्वर, ययातीश्वर, चित्रशिला, जलशायी, विश्वामित्रकुंड, त्रिपुष्कर, सारस्वत, उमामहेश्वर, कलशेश्वर, रुद्रकोटेश्वर, भ्रूणगर्त, उज्जयनी पीठ, चर्म, मुण्डा, साम्बादित्य, वटेश्वर महादेव, नरादित्य सोमेश्वर, नलतीर्थ, शर्मिष्ठा तीर्थ, परशुरामडोह, चमत्कारेश्वरी देवी, आनर्तेश्वर महादेव, स्कन्दशक्ति, यज्ञभूमि, विवाहवेदी, रुद्रशीर्षशिव, वालखिल्याश्रम, सुवर्णाश्रम, महालक्ष्मी, आमवृद्धा देवी, श्रीमातृः पादुका, ब्रह्मतीर्थ, ब्रह्मकुंड, गोमुख लोहयष्टिका, कामप्रदा देवी, राजवापिका, श्रीरामेश्वर, आनर्त तीर्थ, अम्बादेवी, रेवतीदेवी, भट्टिकातीर्थ, कात्यायनी देवी, क्षेमकरी देवी, शुक्लतीर्थ, मुखारतीर्थ. कर्णोत्पलतीर्थ, अटेश्वर महादेव, याज्ञवल्क्याश्रम, पंचपिंडा, गौरी, वास्तुपाद, अजाग्रह, दीर्घिका, धर्म्मराजेश्वर, मिष्टान्नेश्वर, तीनगणपति, जावालेश्वर, अमरकुण्ड, रत्नादित्य, गर्ततीर्थ, इत्यादि अनेक हैं इनमें स्नानकरने और दर्शन करनेसे अनेक मनोकामना पूरी होती हैं, हाटकेश्वर सबमें मुख्य हैं, इनमें गर्ततीर्थनिवासी ब्राह्मणोंसे ब्रह्मलोकसे लौटे हुए राजा सत्यसंधका संवाद हुआ कि आप हमको पुर बनाकर दान करो, राजाने कहा मैं तो सब त्यागकर तपस्या करता हूं,आप इन मेरे दिये चमत्कार पुरमें रहने वाले नागर ब्राह्मणोंकी सुश्रूषामें रहो तब नागर ब्राह्मण उनको बडनगरमें लेगये, और उनकी सम्मतिसे सब कार्य करनेलगे, और उनकी वडी वृद्धि हुई। नागर वनिये और चितोड नागर वनिये यही गर्त तीर्थवासी कर्मत्यागी ब्राह्मण हैं, अब वाह्यनामक नागर ब्राह्मणोंके भेदका निरूपण करते हैं। एक पुष्पनामक ब्राह्मणने एक ब्राह्मणका वधकर, उसकी स्त्री और धनको ले शुद्धिके लिये हाटक क्षेत्रमें आय ब्राह्मणोंसे प्रायश्चित्त पूछा सब नागरोंने उसका तिरस्कार किया, परन्तु एक चण्डशर्मा ब्राह्मणने कहा कि, पुरश्चरणसप्तमीका व्रत करनेसे इस पापका क्षय होगा, पुष्प तो इस व्रतके आचरणसे शुद्ध होगया और अपने धनका छठा भाग चण्डको दिया, इसपर नागरोंने पंचायत करके उसको जातिच्युत करदिया, और यह भी नियम किया कि जो कोई इसके साथ सम्बन्ध करैगा वह हमारे समूहसे वाह्य होगा, पुष्पने सूर्यकी तपस्या की, और उसके कल्याणका वर मांगा, भगवान्

भास्करने कहा ब्राह्मणोंके वचन तो मिथ्या नहीं हो सकते; परन्तु यह नागर ब्राह्मणोंके भेदमें बाह्य नागर नामसे पृथिवीमें विख्यात होगा, इसके पुत्रादिक जो होंगे उनका भी राजसभामें मान्य होगा, यह कहकर भगवान् सूर्यदेव अन्तर्धान हुए। तब पुष्पने चण्डसे सब वृत्तांत कहा, और उसको साथले नगरसे बाहर हुआ और सरस्वतीके दक्षिण तटपर महत् स्थान बनाकर दोनों शंकरकी आराधना करने लगे, वहां चण्डने नगरेश्वर महादेवकी स्थापना की, पुष्पने पुष्पादित्य सूर्यदेवकी स्थापना की, चण्डशर्मा की शाकंभरी स्त्रीने सरस्वतीके तटपर दुर्गा देवीकी स्थापना की उस दिनसे वहां शाकंभरी देवी प्रसिद्ध हुई, और बाह्यनागरोंका वह स्थान पुत्रपौत्रादिसे विशेष वृद्धिको प्राप्त हुआ। एक समय विश्वामित्रके शापसे सरस्वती नदी रुधिरवाहिनी हुई, इसकारण वहां राक्षसोंका निवास विशेष रूपसे होनेलगा और ब्राह्मणोंको भी भक्षण करनेलगे, तब बाह्यनगर वह स्थान छोडकर दूर चले गये, तब कांदिशीक नागरोंका भेद पृथक् हुआ समयपर सरस्वती शापकी अवधि पूरी होनेसे फिर स्वच्छ हुई. एक समय ब्रह्माजीने हाटकेश्वरमें यज्ञ किया तब कैलाससे अडसठ मात्रिकायें आई। ब्रह्माजीने उन अडसठ देवियोंको नागरोंके अडसठ गोत्रमें स्थापन किया, और कहा विवाहादि मंगलकार्यमें जो तुम्हारी पूजा होगी उससे तुम तृप्त होगी. पूजा न करनेसे अनिष्ट होगा, तबसे वहां देवियोंने निवास किया। इनमें अष्टकुली ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं, अष्टकुलकी उत्तमतामें यह कथा है कि, एक समय इन्द्रने भगवान् विष्णुसे कहा कि, श्राद्ध करनेसे जहां मुक्ति हो सो कहिये, विष्णुजीने कहा हाटकक्षेत्रमें कन्या संक्रांति होनेपर चतुर्दशी या अमावस्यामें अष्टकुली नागरोंसे श्राद्ध करानेसे मनोकामना सिद्ध होगी। हाटकक्षेत्रमें उत्पन्न हुए वे ब्राह्मण आनर्त राजाके दानके भयसे हिमालयपर तपस्या करते हैं, उनसे श्राद्ध कराओ यह सुनकर इन्द्र हिमालयपर जाकर उन ब्राह्मणोंसे बोले, तुम श्राद्ध करानेको हाटकेश्वर महादेवके क्षेत्रमें चलो, यदि न चलोगे तो तुमको शाप दूंगा। तब वे कश्यप, कौंडिन्य, औक्षणश, शार्कव, द्विप, कपिष्ट और उपिक यह आठ गोत्रवाले ब्राह्मण इन्द्रके साथ गया कूपमें आये और इन्द्रको श्राद्ध कराया, जिससे देव पितर जो प्रेतरूप हुये थे उनकी मुक्ति हुई, और इन्द्र बहुत प्रसन्न हुए, बालमंडन तीर्थके समीप इन्द्रने शंकरकी मूर्ति स्थापन की आघाट नामका एक उत्तम नगर वहांके निवासियोंको दिया। पीछे अष्टकुली ब्राह्मणोंको बुलाकर कहा यह शंकरकी पूजा आप संभालो और बारह ग्राम आपको देता हूं तब इन ब्राह्मणोंने इस देवधनको स्वीकार न किया, और कहा इससे हमारा कल्याण न होगा। उनमेंसे देवशर्माने हाथ जोडकर कहा यह आपकी देवपूजाका कार्य मैं चलाऊंगा, पर आप मुझे पुत्र दीजिये। इन्द्रने प्रसन्न होकर कहा तुम्हारा पुत्र वंशवृद्धि करनेवाला सत्यसंध बडा विख्यात होगा, और मैंने जो चतुर्वक्रेश्वर महादेवकी पूजाके निमित्त बारह ग्राम दिये हैं, इनमें जो ब्राह्मण रहेंगे वे मांगलिक कृत्योंमें इनका श्राद्ध करके नांदीश्राद्ध करेंगे तो कोई विघ्न नहीं होगा अन्यथा विघ्न होगा। शेष सप्तकुली ब्राह्मणोंको इन्द्रने कहा यद्यपि इनको लक्ष्मीकी प्राप्ति होगी, परन्तु निर्धन ही रहेंगे, और निष्ठुर होकर भक्तोंका त्याग करेंगे, यह कहकर इन्द्र अपने स्थानको गये।

अब नागर ब्राह्मणोंका भेद वर्णन करते हैं। प्रथम बहत्तर गोत्रके जो ब्राह्मण बडनगरमें रहे वे बडनगरे कहेजाते हैं। उनमें भिक्षुक और गृहस्थ यह दो भेद कहेजाते है। विलासनगरके ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति इस प्रकार है, जो पृथिवीराजरायसेमें लिखी है, कि संवत् ९३६ में गुजरातमें वीलसदेव नामक एक राजा था, उसने अपने नामसे एक वीसलपुर नामक नगर बसाया और पाप दूर होनेके निमित्त वहां एक यज्ञ किया, उसमें बडनगरे ब्राह्मण आये थे, राजाने उनसे दान लेनेको कहा उन्होंने निषेध किये पीछे

राजाने ताम्बूलमें वीसलनगर उनको लिखकर दे दिया जब उनको विदित हुआ तब अपने सम्बन्धियोंका उसमें निवास कराया। यह नगर सिद्धपुरसे दक्षिणामें बारह कोस है बडनगरसे पूर्व पांच कोस है वे वहांके निवासी उसदिनसे विसलनगरे ब्राह्मण विख्यात हुए, उनमें दो संघा हैं एक विसलनगरा दूसरा अहमदाबादी, इनमें परस्पर कन्याका लेन देन नहीं है, फिर वीसल देवने ब्राह्मणोंको साटोद, कृष्णोर साचोर यह तीन ग्राम बीडेमें दान दिये, उस दिनसे साटोदरे कृष्णोरे और साचोरे नागर विख्यात हुए यह पहले सब बडनगरे थे, परन्तु अब पृथक् होगये हैं, पीछे कहे बाह्यनागरोंसे बारडनागर एक जाति प्रगट हुई हैं, उसका विवरण इसप्रकार है कि, अन्य ज्ञातिके ब्राह्मणकी कन्याके साथ व्याह करके पीछे ज्ञातिमें दंड देकर जो रहतेहैं, वे बारड हैं पीछे दुर्वासाने जो पृथ्वीके निमित्त प्रश्न किया, उसका उत्त सुशील ब्राह्मणने दिया इसकारण उसके वंशके ब्राह्मण प्रश्नोत्तरे कहाते हैं,कोई कहते हैं आहिच्छत्र ग्रामक रहनेवाला एक ब्राह्मण एक समय घरसे बाहर यात्राको गया, मार्गमें रात्रिको ग्रामान्तरमें टिका, रातमें एक राक्षस आकर उसे घरके एक बालकको उठा लेगया, इस ब्राह्मणने अपनी मंत्रविद्याके सामर्थ्यसे बालकको राक्षससे प्रत्याहरण किया, पिशुन अर्थात् दुष्टसे हरण किया इस कारण, उस वंशके पिशुनहर नागर हुए, यह पिशुन हरही प्रश्नोत्तर नामसे विख्यात हुआ है, बाह्य नगरमेंही कांदिशीकभेद है वेही कदाचित् प्रश्नोत्तरे हो सकते हैं, उनमें अष्टकुली बडनगरे उत्तम कहेजाते हैं क्षेत्रस्थापनाके समय ब्राह्मणोंके ८४ गोत्र थे, उनमें १२ गोत्र खडायते ब्राह्मणोंके निकलजानेसे शेष ७२ गोत्र रहे, उनका वर्णन नागरोंके प्रवराध्याय ग्रन्थमें लिखा है, सो देख लेना। नागरोंकी उत्पत्तिका वर्णन नागरखंडके १९३-१९९ अध्यायमें लिखा है, इनमें अब अपने वर्गमें ही भोजन सम्बन्ध होता है अन्यमें नहीं, तथा अपने वर्गमें ही कन्यादन करते हैं बडनगरे विलासनगरे तो एक एकके घरमें जलपानतक नहीं करते, सूरतमें जलपान कर लेते हैं। दक्षिण हैदराबाद मैसूरमें भोजन व्यवहार है, परन्तु यथार्थमें धर्म स्थिति जिसमें रहे वही बात उत्तम है। इति नागरभेद वर्णन।

इति पंच द्रविडाः।

सं.	अवटंक	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	देवी	गण	देवता	भागज	शर्म
१	देवपञ्चक	प्रौक्ष्ण	वसिष्ठशक्तिपराशर	यजु०	माध्य०	भागरी	खासला	हाटकेश्वर	झालापाटण	शर्म
२	दुवे	कपिष्ठला	..			"	"	"		गो २२
३	मेतातलखा	आकुभाण	वशिष्ठकौडिन्य मैत्रावरुण	य०	मा०	"	"	"		दत्त
४	पंड्या भूधर	भरद्वाज	भरद्वाजआंगिरस बार्हस्पत्य	ऋ०	आश्व०	"	"	"		तात
५		शर्कराक्ष	भृगुच्यवनआप्नुवानौ-र्वजामदग्नि	ऋ०	आश्व०	"	"	"		मित्र
६	वासमेडा साके	गौतम	गौतमआंगिरस औतथ्य	य०	मा०	"	"	"	"	दत्त
७	जानि	गार्ग्य	अङ्गिरसभरद्वाजबार्हस्पत्यच्यवन गङ्गा.			"	"	"	"	शर्म
८	त्रावडी	कौडिन्य	वसिष्ठकौडिन्य मित्रावरुण	सा०	कौषीतकी	"	"	"		दत्त

इति नागराणां गोत्रप्रवरनिर्णयचक्रम् ।

अथ खडायत ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं ।

पद्मपुराणके कोटि अर्बुद महात्म्यमें लिखाहै कि, जिससमय विष्णुभगवान्‌के कर्णमल (श्रुतिमल वेदोच्चारणके अशुद्ध दोष) से मधुकैटभ उत्पन्न हुए, उससमय भगवान्‌ने कोटयर्क (प्रकाशमय) रूप धारण कर उसका वध किया, तब ब्रह्माजीने स्वयं स्तुतिकरके उस स्वरूपकी मूर्ति स्थापन की, श्वेतमूर्ति नंद सुनंदसे संयुक्त स्थापन की, कार्तिकशुक्ल एकादशीके दिन यह रूप प्रगट हुआ, उनके पूजन करने और गणेशका अर्चन करनेसे अनेक मनुष्य स्वर्गमें गमन करनेलगे, भगवान् विष्णु और गणेशजीने निज अंशसे रहनेका वचन दिया ।

तत्र कृता महापूजा कोटयर्कस्य महात्मनः । खण्डपूर्वैर्द्विजैः सर्वैर्वैष्णवैश्च महात्मभिः ॥

सबसे प्रथम खंडशब्द पूर्ववाले द्विजों अर्थात् खडायत ब्राह्मणोंने और वैष्णवोंने भगवान्‌की पूजा की. एक समय एक देवशर्मा ब्राह्मण तीर्थयात्रा करते २ सरस्वति नदीके किनारे जाय, वहां उसने दुर्गादेवीकी

पूजा की, पीछे वहांसे बारह योजन दूर कोट्यर्क तीर्थकी महिमा सुनकर अपनेमें शक्ति न देख देवीकी प्रार्थना की, तब देवीने महावीरजीके द्वारा उसको वहां पहुँचाया और उसको वहां रहनेको कहा. तबसे वहां उस देवशर्मासे प्रतिष्ठित होकर महावीरजी विराजे वहां कपालेश्वर शंकर विराजमान हैं। दूसरी कथा इसप्रकार है कि, विद्या विनय सम्पन्न एक धीर नामक ब्राह्मण था, वह एकसमय वडनगरमें आया वहां उसने हाटकेश्वर भगवान्का दर्शन करके स्तुति की कि, मैं दरिद्रता और जातिके विरोधसे बहुत दुःखी हूँ, आप कृपा करें, तब भगवान् शंकरने कहा तुमको सुख होगा, और कहा कपालमोचनके समय मैंने तुम अठारह ब्राह्मणोंका यज्ञके निमित्त समागम किया और यज्ञके उपरान्त वर मांगनेको कहा तब वे स्वयं निश्चय न करके स्त्रियोंसे पूछने गये और स्त्रियोंसे खटपट करने लगे इस कारण—

ततस्ते ब्राह्मणाः सर्वे स्त्रियः प्रष्टुं गृहे गताः। ताभिः सार्द्धं खट्टपट्टे संप्रवर्ते पुनः पुनः॥ ततः सर्वे द्विजा जाताः खडायतेति संज्ञया।

उन सबका खडायत नाम हुआ उनके वंशभी खडायत कहाये, और अठारह ब्राह्मणोंको मैंने दो दो सेवक वडनगरसे बुलाकर दिये; वे खडायत वैश्य कहाये, इनके कर्म पुराणोक्त मंत्रोंसे होते हैं, परन्तु विवाह चतुर्थी कर्ममें चरुभक्षणके समय वाल नामक धान्यकी दालका चरु बनाकर ग्रहशांति पूजा हवन नहीं होता कोई रामेश्वरकी पूजा करते हैं। पीछे एक नगर बनाकर ब्राह्मणोंको दिया, सब प्रसन्न हुए, पर तैंने मेरा वचन नहीं सुना, इस कारण तू दरिद्री हुआ अब तुम कोटयर्क तीर्थमें कपालेश्वरके समीप निवास करो, वहां तुम्हारे सब दुःख दूर होंगे, शंकर यह कहकर अन्तर्धान होगये, ब्राह्मण उस क्षेत्रमें जाकर कष्टसे मुक्त हुआ। खडायते ब्राह्मणोंके गोत्र इस प्रकार हैं। जनक, कृष्णात्रेय, कौशिक, वशिष्ठ, भरद्वाज, गार्ग, वत्स यह सात गोत्रहैं। और वाराही, खराननना, चामुण्डा,बालगौरी, बंधुदेवी,सौरभी,आत्मछन्दा यह सात कुलदेवी हैं। कपालेश्वर नीलकंठेश्वर चर्मक्षेत्र सूर्यक्षेत्र श्रीगलितेश्वर शकलेशतीर्थ; वाल्मीकिजीका आश्रम भी यहां है, खंडूर भी यहीं है। इति खडायतविप्रोत्पत्तिः।

इति गुर्जरसम्प्रदायः।

अब वायडा ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं।

वायुपुराणमें मारुतकी उत्पत्ति प्रसंगमें लिखी है।

अत्रेरभून्महातेजा वाडवो मानसः सुतः।
तमुवाचात्रिस्तनयं प्रजाः सृज ममेच्छया॥

ब्रह्माजीके पुत्र अत्रि, अत्रिके वाडव नाम एक मानसी पुत्र हुआ, ऋषिने उसको प्रजा उत्पन्न करनेकी आज्ञा दी तब वाडवजीने एक लक्ष वर्षपर्यन्त तपस्या की तब ब्रह्मादिक देवताओंने वरदान मांगनेको कहा तब सूर्यके समान प्रकाशमान वाडव ऋषिने विष्णु आदि देवताओंसे कहा कि यदि आप प्रसन्न होकर वर देते हो तो यही दीजिये कि पृथिवीमें मानसी सृष्टिकी वृद्धि हों। तब देवताओंने कह तुमको अयोनिसंभव दर्भके संतान होंगे। जब वायुदेव शरीरी बनकर उत्पन्न होंगे तब उनकी शुश्रूषाके निमित्त तुम्हारे दर्भसे उत्पन्न पुत्र होंगे। चौबीस ब्राह्मण, अडतालीस वैश्य, शूद्री भार्याके सहित वर्तमान होंगे।

तेषां समुद्भवाः सर्वे वणिजो वायडाभिधाः।
भविष्यंति द्विजाः सर्वे तन्नामानो विचक्षणाः॥

फिर अडतालीस वैश्योंसे चौबीससहस्र वायडा वैश्य होंगे और चौबीस दर्भके ब्राह्मणोंसे १२ द्वादश सहस्र ब्राह्मण भूमिमें उत्पन्न होंगे, तबतक तुम यहां वडी वापी निर्माण कर निवास करो, चार कुंड यहां विश्वकर्माजी निर्माण करेंगे।

वायडाख्यं पुरं श्रेष्ठं वणिग्विप्रविभूषितम्।

वायड नामका एक नगर वैश्य और ब्राह्मणोंसे विभूषित होगा, और यह तीर्थ होगा, यह कहकर जब देवता चले गये तब वे ऋषि वहां निवास करने लगे, पीछे जब दितिके गर्भसे ४९ मरुद्गण जन्मे तब उनके पोषणके निमित्त इन्द्रने वाडवऋषिको बुलाकर कहा तुम दर्भसे २४ वायडे ब्राह्मण और उनके सेवक वायडे वैश्य शूद्र भार्यायुक्त दुगुने उत्पन्न करो।

वायडाख्या भविष्यन्ति सर्वेषां देवता मरुत्।

यह सब वायडा नामसे विख्यात होंगे और सबके देवता मरुत् होंगे,पहले चौबीसकी मर्यादा स्थापन की है, इस कारण चौबीस सहस्र ब्राह्मण, अडतालीस सहस्र वैश्य होंगे, कुलदेवता तुम्हारी स्थापन की हुई वापी होंगी, ब्राह्मण यहां आनकर चौलकर्म करेंगे यह सुनकर वाडवादित्यने ब्राह्मण और वैश्योंको भार्याके सहित उत्पन्न किया, ब्रह्माने भाद्रपद शुक्ल षष्ठीको उन बालकोंको स्नान कराया, इसकारण वह स्नापिनी षष्ठी कहाई और सातवें महीने चैत्र शुक्ल षष्ठीको दोलारोहण कराया, इसकारण वह हिण्डोलनी षष्ठी कहाई। उस दिनका उत्सव करनेसे वायुरोगकी पीडा नहीं होती। वहां वाडवादित्यके तपोबलसे विश्वकर्माने वायडोंके निमित्त बडा स्थान निर्माण किया, वहां १२ मातृका और १२ महादेवके निवास स्थान हैं; अम्बिका, माटवला, खाटवला, अखिला, जाखिला, त्र्यम्बजा, त्र्यम्बजा, आख्यता, नयना, सिद्धमाता, आशापुरी,श्रीरंजना,यह बारह मातृका और रामेश्वर, भीमेश्वर, त्रिरेश्वर, पावनेश्वर,विश्वेश्वर, वालुकेश्वर, उत्तरेश्वर,बिल्वकेश्वर, सिद्धेश्वर, कर्दमेश्वर, नीलकण्ठेश्वर, हनुमदीश्वर यह बारह महादेव हैं। विवाहमें सब चौहट्टेमें जाकर स्नान करते हैं, क्षेत्रपालकी पूजा बलि करते हैं।

इति वायडविप्रवणिगुत्पत्तिप्रकरणम्।

अब उनेवाल (उन्नत) वासी ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं, यह उन्नत क्षेत्र भी तीर्थ है, इसके उत्तरमें ऋषितोया नदीके तटपर ब्राह्मणोंने ब्रह्मेश्वर नामक शिवकी प्रतिष्ठा की है, जहां विद्या और तपसे ऋषि बडे उत्कृष्ट हैं।

उन्नामितं पुनस्तत्र यत्र लिंगं महोदये।
तदुन्नतमिति प्रोक्तं स्थानं स्थानवतां वरम्॥

उसे उन्नतस्थान कहते हैं; जहां शङ्करकी लिङ्गरूप मूर्तिकी पूजा साठ सहस्र वर्ष तपस्या करके ऋषियोंने बड उत्साहसे की इस कारण उस स्थानका नाम उन्नत हुआ। शंकरने वहांके ब्राह्मणोंकी बडी भक्ति देखकर विश्वकर्मा द्वारा एक नगर निर्माण कराया, और यह पश्चिम समुद्रके समीप काठियावाडमें देवबाडा ग्रामके पास जिसको ऊना कहते हैं, वही नगर है, इसीके चारों ओर नग्नहर देश है, जहां शंकर दिगम्बर रूप से विचरे हैं, वहांके ब्राह्मणोंको शिवजीने जब यह नगर दान किया तबसे उसमें निवास करने वाले ऊनेवाल ब्राह्मण कहाये, यहां शंकरका पूजन होता है, यह भी तीर्थ है।

इत्युन्नतवासिब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम्।

अब गिरिनारायण ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं ।

प्रभासखण्डके वस्त्रापथक्षेत्र माहात्म्यमें लिखा है—नारदजी बोले—

महापुण्यतमेक्षेत्रे शुचौ वस्त्रापथे द्विजाः ।
गिरिनारायणास्ते वै निवसंति पितामह ॥
गिरिनारायणाख्या वै कथमेषामभूत्किल ॥

हे पितामह, वस्त्रापथमें जो गिरनारे ब्राह्मणोंका निवास है उनकी उत्पत्ति कहो, उनका यह नाम कैसे हुआ ? ब्रह्माजी बोले, एक समय भगवान् विष्णु और शंकर चन्द्रकेतु राजाके ऊपर कृपा करनेके निमित्त रैवताचलपर स्थित हुए, और विचारनेलगे ब्राह्मणोंके बिना हमारी स्थिति कैसे होसकती है यह विचारकर आपने रूप ब्राह्मणका स्मरण किया,और आप गिरिनारायण दामोदर नाम धारणकर रैवता· चल पर्वतपर आये, और हिमालयकी गुहाआदिमें बैठनेवाले ऋषियोंके पास आकर कहा हे मुनीश्वरो ! शिव और विष्णु प्रत्यक्ष मूर्ति धारणकर रैवताचलपर बैठे है, वहां जाकर तुम उनका दर्शन करो, वहां जाकर ऋषियोंने गिरिनारायण नामसे स्तुति की तब भगवानने दर्शन दिया और कहा तुम सबको यहां निवास करना उचित है और मैंने अपना नाम गिरिनारायण धारण किया है तुम्हारो भी—

गिरिनारायण इति समाख्या कथिता मया ।
यथा त्वहं तथाऽप्येते गिरिनारायणाः कृताः ॥

यहां रहनेसे गिरिनारायण संज्ञा होगी और चन्द्रकेतु राजा यहां आनकर तुमको ग्राम देगा, और अश्व- मेध यज्ञ यहां चन्द्रकेतुका पुत्र करेगा, चौसठ गोत्रोंके ब्राह्मणोंको चौंसठ ग्राम देगा और मै वामन रूपसे यहां एक वामननगर बनाऊँगा, जो वावनस्थी (इससमयकी वनस्थली) नामसे विख्यात होगा, यह जूनागढसे पश्चिम चार कोस है, अब तुम यहां निवास करो, समय समय पर मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा, भगवान इसप्रकार ब्राह्मणोंकी स्थापना करके अन्तर्धान हुए, रविवारको रेवती नक्षत्रमें रैवताचलपर्वतके ऊपर रेवतीकुण्डमें स्नान करके राधादामोदरका दर्शन करना यह पांच रकार दुर्लभ है ।

गिरिनारायण ब्राह्मणोंके शाखा अवटंक गोत्रादिका चक्र ।

सं०	अवटंक,	ग्रामादि	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा
१	जानि	जेतपराघोडादरा	भारद्वाज	३	य०	माध्यन्दिनी
२	भट	सिंधाजीया	भा०	३	ऋ०	आश्वलायन
३	जोशी	पाणिछन्दा	भा०	३	य०	माध्यन्दि०
४	जोशी	बामावडामाधव०	भा०	३	य०	मा०
५	जोशी	दिवेचा	भा०	३	य०	मा०
६	जोशी	सोमपुरा	भा०	३	य०	मा०
७	मेता	पसवलिया	कश्यप	३	य०	मा०
८	भट	कंसादिया	कश्यप	३	य०	मा०
९	जोशी	स्वस्थानिया	कश्यप	३	य०	मा०
१०	परोत	लिबोडिया	कौच्छस्	३	सा०	कौथुमी

११	ठाकर	चाट	कौच्छस्	३	ऋ०	आश्व०
१२	तिवाडी	"	कौच्छस्	३	सा०	कौथु०
१३	ठाकर	वाघेरा	कौच्छस्	३	य०	मा०
१४	व्यास	दात्राणीय	कौरवस्	३	य०	मा०
१५	पंड्या	मगजूपरा	कौरवस्	३	य०	मा०
१६	जोसीओसा	खेरिया	कौरवस्	३	य०	मा०
१७	ठाकर	वामणसिया	मौनस	३	य०	मा०
१८	ठाकर	मारडिया	सदादस	३	य०	मा०
१९	ठाकर	माडेरा	सदामस	३	य०	माध्य०
२०	ठाकर	खेरिया	सदामस	३	य०	मा०
२१	जोशी	खांमलिया	सदामस	३	य०	मा०
२२	जोशीभट	शाकलिया	वशिष्ठ	१	य०	मा०
२३	उपाध्या०	माधुपुरा	वशिष्ठ	१	य०	मा०
२४	पाठक	चोरवाडा	कृष्णात्रेय	३	य०	मा०
२५	पुरोहित	माधुपुरा	कृष्णात्रेय	३	य०	मा०
२६	ठाकर	नगरौत	कृष्णा०	३	य०	मा०
२७	०	पठियार	कृष्णा०	३	य०	मा०
२८	जोशी	पाजोधा	कृष्णा०	३	य०	मा०
२९	जोशी	पिखोरिया	कृष्णा०	३	य०	मा०
३०	ठाकर	चोपडा	शाण्डिल्य	३	य०	मा०
३१	ठाकर	ठिलाकर	शांडिल्य	३	य०	मा०
३२	उपाध्याय	वालनामित्रा	शाण्डिल्य	३	य०	मा०
३३	ठाकर	कंकासिया	वत्स	५	साम०	कौथुमी०
३४	पंड्या	गिदंडिया	वत्स	५	साम०	कौथु०
३५	भट	कोठदिया	वत्स	५	साम०	कौथुमी०
३६	आवडि	मदेश्वर	कौशिक	३	मा०	म०
३७	जोशी	वगसदिया	कयसि	१	मा०	म०
३८	जोशी	लौडिया	भारद्वाज	३	य०	मा०
३९	जोशी	कांकडिया	कौरवस	३	य०	मा०
४०	होजा	खेरिया	कौरवस	३	य०	मा०
४१	उपाध्याय	कोशिकेया	कृष्णात्रि	३	य०	मा०
४२	जानि	पीपलिया	भारद्वाज	३	य०	मा०
४३	जोशी	मीठापरा	भारद्वाज	३	य०	मा०
४४	ठाकर	आहिरिया	सदामस	३	य०	मा०
४५	ठाकर	मांडेरा	सदामस	३	य०	मा०

४६	जोशी	चोरवाडा	भार	३	य०	मा०
४७	जोशी	मोडविया	वत्सस	५	सा०	कौथु०
४८	पंड्या	माधुपुरा	सदामस	३	य०	मा०
४९	जोशी	पठियारमाधुपुरा	कृष्णा०	३	य०	मा०
५०	नायक	माधुपुरा	कृष्णा०	३		
५१	जोशी	बुधेचा	कश्यप	३	य०	मा०
५२	जोशी	आजिकिया	कृष्णा०	३	य०	मा०
५३	जोशी	पाखरिया	कृष्णा०	३	य०	मा०
५४	दुवे	"	"	"	"	"
५५	कलकिया	"	"	"	"	"
५६	पाठक	वालदरा	काश्यप	३	य०	मा०
५७	व्यास	धिवोडिया	०	०		
५८	जोशी	लाटोदरा	शाण्डिल्य	७	साम०	कौथु०
५९	ठाकुर	पसेजिया	०	०		
६०	प्रोत	भालकिया	काश्यप	३	य०	मा०
६१	प्रोत	आजकिया	काश्यप	३	य०	मा०
६२	उपाध्या	टिडसरिया	भारद्वाज	३	य०	मा०
६३	जोशी	मलालिया	०	०		
६४	पंड्या	खिलखिल	भारद्वाज	३	य०	मा०
६५	पंड्या	मीतिया	०	०		
६६	पंडया	वारडला	भारद्वाज	३	य०	मा०
६७	पंडया	नगिचरणी	०	०		
६८	पंडया		शाण्डिल्य	३	य०	मा०

अन्य उत्पत्ति ।

गिरनार--यह काठियावाडमें जैनसम्प्रदायक एक तीर्थ है,यहां गुजरात देशमें ८४ प्रकारके गुजराती ब्राह्मणोंमेंका एक भेद है गिरनारगढसे निकास होनेके कारण यह गिरनार कहाये.इनके दो भेद हैं एक जूनागढ गिरनार दूसरे चोरवदा गिरनार, अर्थात् जो जूनागढके आसपास हैं वे जूनागढगिरनार कहाते हैं, चोरवदनामक कसबेके रहनेवाले हैं वे चोरवदनामक गिरनार कहाते हैं, चोरवदनगर पटन सोमनाथ और मंगलौरके बीचमें है और अ जकग्रामसे निकास होनेसे तीसरा भेद अजक्य गिरिनार कहाता है अजवध श्रेणीको एक विद्वानने निम्नश्रेणीका लिखा है. इनमें बहुतोंका शुक्ल यजु तथा सामवेद है ।

अब कंडोल ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं ।

स्कन्दपुराणमें स्कन्दजी शिवजीसे पूछते हैं—

कण्डूलस्थानपर्वस्य माहात्म्यं वद शंकर ।

हे शंकर! आप कण्डूल स्थान पर्वका माहात्म्य कहिये । सौराष्ट्रदेशान्तर्गत पांचालदेशमें वडवाडगांवसे वायुकोणमें बारह कोस पर कण्वाश्रम जिसको इस समय कंडोल कहते हैं वर्तमान है, वहां कण्व ऋषिका

निवास था. एक समय उस स्थानमें मान्धाता राजा दर्शनको आया और ऋषिसे कुछ कार्य सम्पादनके लिये कहा तब ऋषिने कहा मैं यहां एक नगर स्थापन करना चाहता हूं आप उसकी रक्षा करना. राजा स्वीकार कर चले गये, फिर ऋषिने भगवान भास्कर और महावीरजीका स्मरण किया, वे दोनों आये तब ऋषिने नगर बसानेकी इच्छा प्रगट करके दोनों देवताओंसे रक्षा चाही, दोनोंने स्वीकार किया, और महावीरजी बोले मैं ब्रह्माजीकी आज्ञासे यहां आया हूं, आप इस स्थलमें अठारह सहस्र ब्राह्मण और ३६ सहस्र वैश्य स्थापन करो चारों युगमें इस स्थानका नाम क्रमसे कण्वालय, कलुषापह, कापिला और कलिमें कण्डूल नाम होगा, यहां ब्रह्मकुंडके स्नानसे अनेक पाप दूर होंगे.तब महावीरजीके यह कह कर चलेजानेपर कण्वजीने ब्राह्मणोंके लानेके लिये गालवजीको आज्ञा दी, गालवजी प्रभास और रैवताचल पर होते हुए सरस्वतीके किनारे रहनेवाले ब्राह्मणोंके पास आये और इनकी स्तुति की तब प्रसन्न होकर ब्राह्मणोंने गालवसे वर मांगनेको कहा तब गालव बोले यदि आप प्रसन्न हैं तो हमारे गुरुदेव एक स्थान बनाना चाहतेहैं, इसलिये आप सब वहां चलें, तब वचनबद्ध होनके कारण ऋषियोंने वहां जाना स्वीकार किया, इतनेमें सौराष्ट्रदेशके यज्ञोपवीतधारी बहुतसे वैश्यभी वहां आये, उन्होंने गालवको देखकर कहा हमको महावीरजीने इस स्थानमें आनेकी प्रेरणा की है,तुम्हारी जो इच्छा हो सो कहो, हम सेवा करैंगे, गालवजीने कहा पांचालदेशमें कण्वनाम महाऋषि है, पापापनोदनतीर्थपर उनका स्थान है, वह एक नगर स्थापन करना चाहते हैं, आप ३६ सहस्र वैश्य इन ऋषियोंके साथ चलकर वहां निवास करैं,वैश्योंने उनके वचन गौरवसे यह बात स्वीकार की, गालवजी सबको लेकर गुरुके पास आये, कण्व ऋषि बडे प्रसन्न हुए और गालवजीसे वर मांगनेको कहा तब गालवजी बोले यदि गुरु मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो इनमेंसे छः हजार मेरे नामसे स्थापन किये जांय,गुरुने तथास्तु कहा, विश्वकर्मासे नगर बनवाय वहां सब ब्राह्मणोंको स्थापन किया और यज्ञ करके वह नगर ब्राह्मणोंको दान कर दिया, और अठारह गोत्र उन ब्राह्मणोंके किये, छत्तीस सहस्र वैश्य इनके सहायकरूपसे स्थापित किये, वहां सूर्यदेवने साक्षीरूपसे व कुलार्करूपसे रहना स्वीकार किया, सब देवताओंने अपने २ नामसे वहां तीर्थ स्थापन किये, गालवके स्थापन किये गालववैश्य कहाये, गालववैश्य कानोंमें कुंडल पहरते हैं, और कपोला वैश्य भी उन्हींका नाम है ।

गालवस्थापिता ह्येते गालवाः सन्तु नामतः । त एवापि कपोलाख्याः कपोलाद्भुतकुण्डलाः ॥ प्राग्वाडाः स्युरभिख्याता गुरुदेवार्चने रताः । येषां प्राग्वा भवेद्वाडो मदीयस्थापनात्मकः॥ ते प्राग्वाडा अमी ज्ञेयाः सौराष्ट्रा राष्ट्रवर्द्धनाः ॥

और जो प्राग्वाड व वैश्य गुरुसेवाके निमित्त विचरते हैं वे प्राग्वाडव नामसे विख्यात हैं, इनका वाडा (रहनेका समूह) (प्राक्) पूर्व दिशामें है, इस कारण यह प्राग्वाडव कहाते हैं,दूसरा नाम सोरठ वैश्य है यद्यपि इनके भी अनेक गोत्र हैं, तथापि जो ब्राह्मणोंके गोत्र हैं वही इनके जानना, चामुण्डा अम्बिका गंगा महालक्ष्मी कलेश्वरी भोगादेवी वरा घावा, यह इनकी कुलदेवी हैं, वैश्योंसे कण्वने कहा तुम निष्कपट भावसे ब्राह्मणोंकी सेवा करना. और ब्राह्मणोंसे कहा तुम्हारे गौतमादि अठारह गोत्र प्रवर और वेद शाखा इस प्रकार होंगी यह बात नीचे लिखे चक्रमें समझ लेनी ।

मदीयस्थापनायोगात्सर्वे काण्वा भवन्ति हि ।

मेरी स्थापनाके योगसे वे अठारह सहस्र ब्राह्मण सब काण्व अर्थात् कण्डोलिया ब्राह्मण होंगे, और सदाचारी होंगे, चामुण्डा, सामुद्री देवी, रजकायलि मातर, नित्या, मण्डिता, सिद्धा, पिप्पलवासिनी, यह

आपकी कुलदेवी होंगी, तुम जहां निवास करोगे कुलदेवता पूजित होकर वहीं तुमको फल देंगे, इति कण्डोलब्राह्मणोत्पत्तिः।

इति गुर्जरसंप्रदायः।

कंडोलब्राह्मणोंका गोत्र अवटंक चक्र।

	अवटंक	गोत्र	वेद	शाखा
१	पण्ड्या	गौतम	य०	मा०
२	०	सांकृत	०	०
३	जोशी	गार्ग्य	सा०	कौ०
४	भट	वत्स	य०	मा०
५	पंड्या	पाराशर	य०	मा०
६	जोशी	उपमन्यु	य०	मा०
७	व्यास	उपमन्यु	य०	मा०
८	अध्यारु	उपमन्यु	य०	मा०
९	०	वंदल	य०	मा०
१०	०	वशिष्ठ	य०	मा०
११	०	कुत्स	य०	मा०
१२	०	पोल्कस		
१३	०	काश्यप	य०	मा०
१४	०	कौशिक	य०	मा०
१५	०	भारद्वाज		
१६	०	कपिष्टल	अथर्व	मा०
१७	०	सारंगिरि	अथर्व	मा०
१८	०	हारीत	सा०	कौ०
१९	०	शाण्डिल्य	सा०	कौ०
२०	०	सनकि	य०	मा०
२१	अध्यारु०	वत्स	य०	मा०

इति कण्डोलजातिब्राह्मणानां गोत्रादिचक्रम्।

गढवाली वा पर्वती ब्राह्मण।

पर्वती ब्राह्मणोंके तीन भेद पाये जाते हैं। सुरोला, गंगाड्डी और खश। एक राजा कनकपाल जो चन्दपुरगढमें रहता था, उसके वंशधर सुरोला कहाते है, जहां उसका निवास था. उनकी सन्तानविशेषकर कुछ ऐसे विभागमें रहती थी जो कि अब चांदपुरीके परगनेमें विख्यात है,जैसे पट्टी,तेली,सिली,कपूरी, सिरगांव और रामगढ उनमेंसे जो दूसरे उनके साथ आये थे और जो उनके वंशधरोंमें थे,जैसा कि सुरोलके भाइयोंका गोत्र था, वही उनके साथ थे, परन्तु जो नीचेके मुल्कमें बसे थे वे गंगाड्डी कहाये गंगाड्डी वा गंगाराहीके अर्थ गंगाकी घाटीके रहनेवाले हैं, राजा जिन ब्राह्मणोंके हाथका भोजन करता था, जो कि ब्राह्मण ऊपरके देशमें उसके साथ रहते थे,उनके साथ और कोई ब्राह्मण भात आदि रसोई नहीं खाते थे

और जो ब्राह्मण नीचेके भागमें रहते थे उनको ऐसे भोजनके बनानेका अवसर ही नहीं पडता था, इस प्रकार इन दो ब्राह्मणोंके बीचमें अन्तर पड गया, और सुरोला ब्राह्मणोंकी जाति दृढता पकड़ती गई जो देशके ऊपरी भागमें रहते थे, वे गंगाड़ी ब्राह्मणोंके हाथके बनाये चावलोंके खानेमें असम्मत थे, यद्यपि प्रथम वह एक ही जाति थी, परन्तु पीछेसे यह दो जाति बन गई ।

यद्यपि गंगाड़ी ब्राह्मणोंमें और उनमें बहुत ही कम अन्तर है, तो भी इस जातिका प्रत्येक पुरुष शिष्टाचारसम्पन्न है । सुरोला ब्राह्मण गंगाड़ीकी कन्यासे विवाह कर सकता है, परन्तु इस प्रकारसे वह गंगाड़ीकी सन्तति कहा जाती है । चाहे वे जातिके दायभागी ही क्यों न हों ।

खस वा खसिया ब्राह्मण शूद्रके हाथका खाते हैं, इनके भेद घोवल, घटियारी, कनयानी, गरवाल, मुनवाल, पपानोई, उपरेती, चौवाल, कुठारी, घुसरी, दौर्त्रास, सनवाल, थुत्तीला, पान्डी, लोमडारी, चवनराज, फुलौरिया, ओलिया, ननियाल, चौदासी, दलाकोटी, बुढलाकोटी, धुलारी, धुराती, पंचोली, बनेरिया, गरमोला, बलौनियां, बिरारिया, बनारो आदि हैं, तथा इनका सम्बन्ध भी शूद्रोंमें पाया जाता है ।

सुरौला ब्राह्मणोंकी जातिका विवरण इसप्रकार है ।

१ नौतियाल–इनकी पुरुषा नौतीपट्टी तल्लीचांदपुरके ग्राममें रहते थे, इस कारण इनका नाम नौतियाल पडा, यह नीलकण्ठ देवीदाय गौड ब्राह्मणोंकी सन्तान हैं, जो गौड देश बंगाल प्रान्तसे आकर वहां रहे थे, ऐसा विदित होता है कि सन् ७०० ईसवीमें यह चांदपुरके राजा कनकपालके साथ पूजा करनेके निमित्त आयेथे । यह पूजा करनेमें टिहरी और गढवालमें विख्यात हैं ।

२ दोवाल–यह इस निमित्त कहातेहैं कि, यह दोवपट्टी, तल्ली चांदपुरके गांवके रहनेवाले हैं. यह अपनेको कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंके वंशधर कहते हैं, कि दासपाल और कर्मजीत दो ब्राह्मण कन्नौजसे आये थे यह भी राजा कनकपालके साथ थे, ऐसा मालूम होताहै कि यह राजकुमारके साथ किसी ऊंचे पदपर थे और इनके पास बहुत धन था, इन्होंने बहुत अच्छे २ मंदिर बनवाये, जो श्री नगर और उसके दूसरे प्रान्तमें उन्हींके नामसे अबतक विद्यमान है ।

३ खानीराई–यह नाम इसकारण हुआ कि खनौरा ग्राम सिली चांदपुरकी पट्टीमें है इससे इनका या नाम हुआ । यह अपनेको गौडब्राह्मणोंके वंशधर कहते हैं, जो कि धारंगधर और महेश्वरनामसे विख्यात थे, यह राजा कनकपालकी गढवालकी चढाईमें विद्यमान थे, इनके वंशधरोंमें से बृटिश गवर्नमैण्ट अपने यहां कानूगोरखती है ।

४ रतूडी–यह नाम इसकारण पडा कि सिली पट्टी चांदपुरके समीप रतूडाग्राम है वहां के यह निवासी है और अपनेको आदिगौडकी संतान बताते है यह लोगभी पुजारीकार्य करतेहैं, और गौड देशसे कनकपालके साथ आना बताते हैं, यह अपना निवास १२०० बारहसौ वर्षका बतातेहैं ।

५ गैरौला–इनका निकास गैरौली ग्राम पट्टीतल्ली चांदपुर है यह भी अपनेको आदिगौडकी सन्तानह बताते हैं, और गयानंद तथा विजयानन्दके वंशधर अपनेको कहते है, यह भी राजा कनकपालके साथ आये थेऔर गढवालकी उच्चश्रेणिके मुखियाओंमें गिने जातेहै ।

६ दीमरी डीमरी–इनका निकास दिमार ग्राम पट्टीतल्ली चांदपुरसे है, यह अपनेको द्रविड ब्राह्मण होनेकी उपपत्ति रखते हैं । इनका कर्तव्य बद्रीनाथजीकी सेवा पूजाका है, यह भी कनक पालके साथ आये और राजाकी कृपासे इस मंदिरकी सेवा पूजा पाई ।

७ थापलायल–इनका निकास थापलीग्राम पट्टी सिली चांदपुरसे है यह भी अपनेको आदिगौड ब्राह्मणोंकी संतान कहते हैं, जैचन्द्र, माइचन्द्र और जैपाल यह अपने स्थानसे निष्कासित किये गये

और यह गौड कहाये, यह ग्यारहसौ ११०० वर्षके निवासी विदित होतेहैं, और पुजारी पनका आधिपत्य करते हैं।

८ माइथानी–इनका निकास माईथाना ग्राम पट्टीतल्ली चान्दपुर है, यह भी अपनेको आदिगौड कहतेहैं, इनके पुरुषा रूपचन्द नामक राजा कनकपालके समयसे चांदपुर गढमें बसे थे, और यह भी पूज के काममें आरंभसेही संलग्न हैं।

९ बिजलावार–एक बैजू नामक गौड ब्राह्मण ११०० वर्षके लगभग हुआ। पर्वतपर आनकर बसा, उसकी सन्तान बिजलवार कहाई।

१० हतवाल कोटयाल–यह भी गौड ब्राह्मणोंके वंशधर सुदर्शन और विश्वेश्वर दो भाई ९०० वर्षके लगभग हुए यहां आनकर बसे थे। हथवल और कोटयाल कहाये, इनमें पहले तो हट और दूसरे कोटी पट्टीदसौलीमें बसे और नौतयाल ब्राह्मणोंसे इस जातिके पुरुषाओंने मिलाप करके तथा राजासे मिलाप करके एक पर्वतकी बडी चटान जिसको ब्रह्मकपाल कहते हैं वहांकी पूजाका अधिकार प्राप्त किया।

११ सोती वा सुती इस जातिके ब्राह्मण लगभग १२ वर्ष हुए कि गुजरातसे आनकर गढवालमें रहे थे, और इनका कर्म भी पूजारियोंके समान था। सिवाय इन जातियोंके नीचे लिखी गुरेला ब्राह्मणोंको गढवाली जातियां हैं, दाई उनदीले मालती, लेम्वाल, लखेरा, माजखोला, गुजयालदी, गर्दे, द्वढगया वीर, पाटी, मसेता, डूंडी, मदूरी, भटोला, चमोली, गोस्वाल, वर्षवाल, वगीसारी आदि यह सब जतियां भी आई और चांदपुर गढमें राजा कनकपालके साथ इस जातिके मनुष्योंने कुछ भलाई करके अपना नाम प्रसिद्ध किया।

नीचेकी जातियाँ गंगारही ब्राह्मणोंमें विख्यात हैं।

१ वुधाना–इस जातिका निकास वुधानी पहीचालनसूनसे है। वहांके अधिपति कृष्णानन्द थे, यह भी अपनेको आदिगौड कहते हैं, और वारहसौ वर्षका आवाद हुआ बताते हैं। ऐसा विदित होता है कि उस समय यह लोग संस्कृत और ज्योतिषके बडे प्रेमी थे। यह बहुतसे विद्यार्थियोंको यह विद्या पथते थे जिसके कारण राजाकी इनपर बडी कृपा थी, इस जातिमें विद्याके कारण बहुतसे सभ्योंसे सरकारी मालगुजारी नहीं लीजाती थी।

२ डंडवाल–इनका निकास डंगीगांव पट्टी असवल सूनसे है। यह अपनेको द्रविड वंशसे मानते हैं और १२०० वर्ष हुए दक्षिणसे आया मानते हैं, यह भी पूजा किया करते हैं, और यह अपनेको धरनीधर हिर्मी पिर्मीको सन्तान कहते हैं। जो पहले गढवालमें आकर बसे थे।

३ सुकुलानी–इनका निकास ग्राम सुकलाना जो टिहरी राजकी असूरकी पट्टीमें है, यह अपनेको कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहते हैं। और एक सहस्रवर्षके लगभग आया हुआ बताते हैं, यह पुराने राजाओंके यहां मंत्रीका काम करते थे, यह अपनेको केशरचन्द्र और रामेश्वरके वंशधर कहते हैं।

४ अनयाल–यह अपनेको मैथिल ब्राह्मण कहते हैं। कोई ४०० वर्ष हुए कि यह ऊनीगांव पट्टी इड़वालस्यूनमें आकर बसे थे। यह यंत्रमंत्रविद्यासे अपनी आजीविका करते हैं, और गढवाल निवासी अपने पूर्वपुरुषाको लछमन बताते है।

५ घिलदयाल–यह अपनेको आदिगौड कहते हैं। यह अपनेको ऋषभदेव और गंगदेवकी सन्तति कहते हैं। कोई ८०० वर्ष हुए कि यह गढवालमें आनकर बसे हैं, इनको संस्कृतका बडा प्रेम था। और राजपुरुषोंके साथ इनका घनासम्बन्ध था। घीरीगांवमें रहनेके कारण यह घिलदयाल कहाये।

६ घोंदयाल-इनका निकास घोंद गांवसे है। इनके पुरुषा ईजू, वीजू और रूपचन्द इस ग्राममें रहते थे। यह अपना सम्बन्ध गौड ब्राह्मणोंसे बताते हैं और अपने पुरुषाओंको राजपूतानेका वासी मानते हैं, और २०० वर्ष हुए गढवालमें आया बताते हैं राजाकी कृपासे वे बहुतसे गांवोंके अधिपति होगये। दूंढ याल सूनके समान इस ग्रामके यह लोग थोकदार समझते जाते हैं, और पूजाभी करते हैं।

७ नौदयाल-यह आपनेको हरिहर और शशधर दो भाई जो गौड ब्राह्मण थे उनकी सन्तान बताते हैं। पहले यह चिरिंगामें रहें पीछे तीनसे वर्ष नीचे नोदीगांव पट्टीचपरकोटमें आकर वसे और नौदयाल कहाये यह खस रजपूतोंके पुरोहित हैं।

८ मामगाई-यह एक गौडब्राह्मण सक्ननी जो कि गौड ब्राह्मण उज्जैनका निवासी था उसकी औलाद अपनेको बताते हैं और ३०० वर्षसे गढवालमें निवास कहते हैं, उसके पुत्र शीतळ, विधिजोत, वीरस् और डीवू यह मालती ग्राममें रहते थे. इनके चचा, मामाके नामसे यह मामगाई कहाये यह भी खस राजपूतोंके पुरोहित हैं।

९ नैथानी-इनका निकास नैथाना गांव पट्टी सनयारसूनसे है। यह भी पूरनमल और इन्द्रपाल दो कान्यकुब्ज भाइयोंके वंशधर हैं और ७०० वर्षसे अपना आगमन बताते हैं, पूजा आदि कार्य करतेहैं।

१० जोयाल-इनका निकास जीवाई ग्राम पट्टी वंमरसूनसे है। यह अपनेको दक्षिणी महाराष्ट्रकी सन्तान कहते हैं, इनके पुरुषा वासुदेव और विजयनन्द विलिहार दक्षिणसे कोई ३०० वर्ष हुए आकर वसे थे।

११ चंदोला-यह जलन्धरी ब्राह्मण पंजाबके वंशधर हैं। थोला मोला और मूलराज यह तीन भाई कोई ४०० वर्ष हुए चन्दोसी जिला मुरादाबादसे गये थे।

१२ वर्थवाल-यह जाति गौडब्राह्मणोंकी वंशधर है, चार भाई अवल, सवल, सूरजकमल और मुरारी कोई ५०० वर्ष हुए गुजरातसे आयेथे, वर्थवाल ग्राम पट्टी ढांगूमें है उसीसे यह अर्थवाल कहाये।

१३. कुकरैती-यह गुरूरपट्टीके निवासी हैं; कोई ६०० वर्ष हुए एक वीलवाल ब्राह्मण जो कि विलीहाट दक्षिणसे आया था, वह कुकरकट्टा ग्राममें रहनेके कारण कुकरैती कहाया, राजाके यह कृपापात्र रहे और राजपूत तथा खशोंका पौरोहित्य करते हैं।

१४ वासमुना-यह भी अपनेको गौडब्राह्मण रुक्मनीकी सन्ततिमें बताते हैं जो कि ४०० वर्ष हुए उज्जैनसे गढवालमें आयाथा, उसके तीन पुत्र हरदेव, वीरदेव, और माधोदास. घसमान, गांव पट्टी मोहरसून परगना चौकोटमें निवास करनेके कारण वासमुना कहाये, यह भी राजपूत और खसोंके पुरोहित हैं।

१५ कैथोला-यह गुजराती भाटकी सन्तति हैं, आद्द ताद्द रामवितल रामदास और नरायन दास-भाट गुजरातसे ६०० वर्ष हुए आये और राजपूत तथा खशोंके भाट कहाये।

१६ जोशी-यह लोग कमायूँके रहनेवाले और पूजाकर्म करनेवाले हैं, यह २०० वर्ष हुए कमायूंसे गढवालमें पहुंचे, यथार्थमें यह द्रविड ब्राह्मण हैं जो कि दक्षिणसे आये थे और गढवालमें इस खानदानके नौरंगदेव, स्योरंगदेव आये थे, यह वास्तवमें ज्योतिष विद्याके ज्ञाता हैं।

१७ धानी-यह भी गौड ब्राह्मण हैं, विष्णुदास, किशनदास और हरिदासके वंशधर हैं। दोसौ वर्षसे गढवालमें वसे हैं, इनका कार्य भी पुजारीपन है।

१८ सूयाल–यह गुजराती भाटोंके वंशधर हैं, और तीन भ्राता सूई, वाजल और वैजनारायण जो लगभग ५०० वर्ष के गढवालमें पहूंचे हैं यह भी पौरोहित्य वा पूजाकार्य कर्ता हैं।

१९ वौढाई–यह जातिभी गौड नौटियाल ब्राह्मणोंके वंशधर हैं, वह गांव बैठालमें कोई ६०० वर्ष हुए, आनकर वसेथे और इनका भी उपरोक्त कार्य है।

२० दोवरयाल–यह जाति कोई छः सो वर्ष हुए पंजाबसे आनकर वसी थी, और दोवरागांवमें आनकर रहे। यह जलंधरी ब्राह्मण हैं, पूजा आदि इनका कृत्य है।

२१ पानौली–यह अपनेको गौड ब्राह्मणोंके सम्बन्धका कहते हैं, यह गढवालमें कोई ८०० वर्षके लगभग हुए आया बताते हैं, यहभी एकप्रकारसे पौरोहित्य कर्म करते हैं।

२२ सुन्दरयाल–यह भी दक्षिणी भाटजाति हैं। यह गढवालमें कोई ३०० वर्ष हुए। दक्षिणसे आकर वसे हैं। और महीदेव सबसे प्रथम सुन्दरौलीमें आकर बसे थे।

२३ फलास–यह गुजरातके भाट गढवालमें कोई ६०० वर्ष हुए आनकर बसे थे।

२४ मिश्र–यह महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं कोई १०० वर्ष हुए कमाऊंसे आकर गढवालमें बसे हैं।

२५ किमोथी–यह द्रविड ब्राह्मण दक्षिणसे आकर कोई १२०० वर्ष हुए गढवालमें आकर वसे थे।

२६ पूर्वियां–यह भी कनोजिये ब्राह्मण कन्नौजसे आयेहुएहैं, और कमाऊके गांवपाटियामें कोई १००० वर्ष हुए वसे पीछे कोई १०० वर्ष हुए गढवालमें गये और अब वहां पूर्विये कहाते हैं।

२७ कोठारी–यह कमायूंसे कोई २०० वर्ष हुए गढवालमें गये हैं,यह सुकुल वंश कहा जाता है।

२८ वदोला–यह एक ओजल नामक गौड ब्राह्मण का वंश है यह उज्जैनसे कोई४०० वर्ष हुए आकर वसा है, और गांव व दोली यही बिचला उदयपुरमें निवासके कारण वदोला कहाये।

२९ अन्थबाल–यह पंजाबके जालन्धरी ब्राह्मणोंकी सन्तान हैं और १०० वर्षसे वहां इनका निवास है, इस जातिका नाम यह इसकारण हुआ कि यह ग्राम अनैथ पट्टीकपालसूनमें आकर प्रथम बसे थे।

३० बोखण्डी–यह महाराष्ट्र ब्राह्मण विलिहार दक्षिणसे आये हैं कोई ३०० वर्ष हुए. यह बोखण्डी खातीकी पट्टीमें आकर वसे थे इसकारण वोखण्डी कहाये।

३१ जोगदीन–यह कमायूंके पंठा हैं यह चार भाई प्रेमा, पदेना, मनीराम और देवदीन २०० वर्ष हुए गढवालमें जाकर वसे थे और तोलासेलाकी पट्टी जोगदीमें निवास करनेके कारण जोगदीन कहाये।

३२ मालकोटी–यह अपनेको गौडब्राह्मणोंके वंशधर कहतेहैं, और ३०० वर्षसे गढवालमें वसेहैं, इनके पुरुषा सदाल नामपुरकी पट्टी मालकोटमें आकर वसेथे इसकारण यह मालकोटी कहाये.

३३ वालोदे–एक चन्द्रशाखन नाम द्रविड ब्राह्मण ९०० वर्ष हुए दक्षिणसे आकर यहां वसे और वलोदे कहाये।

३४ घनसाला–कहतेहैं भग्रदेव और समनदेव गौडब्राह्मण गुजरातसे आये थे (गुर्जरगौड) और ३०० वर्ष हुए यह वसे.

३५ मारद्वल–यह दौराहटाकमायूंसे आकर २०० वर्षसे बसे हैं यह भी गौडसन्तान हैं और पूजापाठ करते हैं।

३६ देवरानी आल्ह और ताल्ह गुजरातके दो भाट थे कोई ४०० वर्ष हुए गुजरातसे आकर वसे हैं।

३७ नौनी–कहाजाताहै यह गोवर्द्धनके सन्तान हैं जोकि एक साठी ब्राह्मण गुजरातसे आकर नौनगांव सितोसियूनकी पट्टी में आकर बसा था इसको ९०० वर्ष व्यतीत हुए हैं यह भी पूजापाठ करते हैं।

३८ पोखरयाल–यह जाति एक विलिहाट दक्षिणनिवासी बीलवाल ब्राह्मण गरुरासेनके हैं, वंशधर ४०० वर्षसे यह इस देशमें स्थित है और पूजापाठ करते है ।

३९ पन्थारी–कहाजाता है दोभाई अन्तू और पन्तू जलन्धरसे आये हुए जलन्धरी ब्राह्मण थे, यह चौकोटके पन्थारग्राममें ३०० वर्ष हुए आनकर बसेथे यह भी पूजा पाठ करते हैं ।

४० मुसरहा } यह दोनों जातिके जलन्धरी ब्राह्मण पंजाबसे आकर कोई ५०० वर्षके लगभग इस देशमें
४१ वालोनी } बसे हैं ।

४२ बीजोला } यह दोनों उज्जैनसे आये द्रविडब्रह्मणकी जातिहै पर यह विदित नहीं हुआ किनिवासकहां आकर
४३ भादौला } किया.यह गंगारी ब्राह्मणोंकी जातिके भेद हैं इनके सिवाय और भी बहुतसी जातियां अपनेकों गंगारी ब्राह्मण कहती हैं पर वास्तव में वे हैं नहीं पर वे कहते हैं हम भी ग्रामोंके नामसे ही नामवाले हैं.कुछ दूसरे भी वंश हैं पर वे ब्राह्मण है जैसे चौकरहा, नौगाईं, धनसाला, सुन्दली, कठौलिया, परोरिया, भूरदोला, धमवान, खेतवाल, बिदवाल, भदवाल, कोटया, बूदरी, मदोलिया, कुलासरी, वालोदी, जालोदरी, जकवाल· बिलारिया, कोटवाला, सेलिया, भादाला, त्रोतयाल, गानेयाल, त्रिजोला, थुरुदी, कुरहा, खुनतयाल, कुन्दारा, औरखारी, मुन्दयाथि, कन्दयाल, दुरारा, बूदान, फरसोला, नोला, कुलयाल, खनसिली, पानूली, सिटवाल, डूंगरयाल, पुरवान, बीलवाल, कनी, छगला, भटवान, सेतरो, खगोरा, समारी, दर्दगाल, संगारी लुसाई, वरसोतिया, शृंगवाल, चोकयाल, कन्धारी, धमकयाल, नागवाल, बंगथाली, सारंगवाल, बिजराकोट, थालासी, खानाई, ऊपारती, भंगवान, डंकोटी, कुसूवाल, नगरसाली, तिमिरवाल, चितवन, चौदयाल आदि नामवाले हैं ।

नीचीं लिखी जातिके खस ब्राह्मण हैं ।

पण्डा (किदारनाथके) जैसे हागवंस, रूवारी, कपरान, सुन्वारा, भीरहा, वात्रीलवाल, दुरपाल, (श्यामके भक्त) श्याम कहाते हैं ।

राय या भाट ।

यह गढवाली ब्राह्मणों का वर्णन हुआ !

पर्वतनिवासी ।

कूर्माचलीयब्राह्मण । +

ब्राह्मण–जो देशसे आकर यहां बसे हैं उनमें विद्या इत्यादि शुभगुण होनेसे यहां चन्द्रवंशी राजाओंके गुरु पुरोहित, उपाध्याय, आचार्य, वैद्य, ज्योतिषी, मंत्री, दर्बारी हुए, इन्हींकी सन्तान कुमाऊंकी उच्च ब्राह्मण जाति हुई वे पंत-पांडे, जोशी, भट्ट, उप्रेती, पाठक, मिश्र इत्यादि कहलाते हैं । कुछ इनकी सन्तान आदिम ब्राह्मणोंसे मिल गई. उनके आचार विचार सम्बन्ध उन्हींके तुल्य होगये है, अधिकांश पंत पांडे इत्यादि उच्च कक्षा में है । इस समय भी शिक्षित सभ्यनेता यही लोग हैं अंगरेजीविद्यामें भी निपुण हैं उच्चराजपदोंमें हैं ।

पन्त–भारद्वाजगोत्री (भारद्वाजांगिरस बार्हस्पत्येति त्रिप्रवर · माध्यन्दिनी शाखी) महाराष्ट्रजातिके पं. जयदेव पन्त दक्षिण कोंकण (कोतवान) देशसे १० वीं शताब्दिमें कालीजीके दर्शनार्थ गंगोलीमें

\+ ग्राम सिलाटी जिला नैनीताल निवासी पं. रामदत्तज्योतिर्विद द्वारा प्रेषित ।

आये–सामयिक मणकोटी राजाने रिवाडी ग्राम जागीरमें दिया और ठहरा दिया पीछे उप्रडा ग्राम दिया दश पीढियों के बाद सरम, श्रीनाथ, नाथू, भौदास ये चार घराने हुए। तीन घरानेके मांस नहीं खाते चौथे (भौदास) घरानेके खाते हैं। सर्वत्र कुमाऊंमें पन्थ वा पन्त कहलाते हैं। कुमाऊंके राजाके गुरु राज–वैद्य, पौराणिक हुए अब नोकरी पेशा है।

पन्त (पाराशरगोत्री) जयदेव पन्तके साथ उनके बहनोई दिनकरराव पाराशरगोत्री दक्षिण कोंकण देशसे आये। मणकोटी राजाने (कोटचूडा) ग्राम जागीर दिया। गंगोलीके चिटगल, कालीशिला ग्रामोंमें पाराशरी पन्त रहते हैं।

(पाण्डेय)।

भारद्वाजगोत्री पांडे। अवधसे श्रीवल्लभ उपाध्याय बदरीनाथ यात्राको आये, गणनाथमें अनुष्ठान किया; उनकी विद्वत्ता और यांत्रिक सिद्धियां देखकर कुमाऊंके राजाने सत्रह आली जमीन जागीर दी, और विनयपूर्वक ठहरालिया, गुरुपद भी दिया। पाटिया, पिलखा, भौंसोडी, कसून, त्यूनरा आदिके पांडे कहलातेहैं उक्त ग्रामोंमें रहते हैं। कांडे लोहनामें रहनेवाले काण्डपाल वा कन्याल तथा लोहनी कहलाते हैं। लोहेका हवन करनेसे लोहहोत्री वा लोहनी कहलाये।

गौतमगोत्री पांडे। सारस्वत ब्राह्मण पं. बालराजपांडे ज्वालामुखी कांगडा पंजाब प्रांतसे यात्रार्थ आये। काली कुमाऊं दरबारमें पोंहचनेपर राजाने रोकलिया "धोली" ग्राम जागीर दिया। पुरोहित भी बनाया। इनके ४ पुत्र हुए बडे भाईकी सन्तान धोलीके पांडे, दूसरे भाई दानाग्रामके पांडे, तीसरे पल्यूंके पांडे हैं महादेवकी सन्तान नैपालराज्यमें है। पांडे खोला, संग्रोली, दौराई जि. मेरठमें भी यही पांडे हैं।

वत्समार्गव गोत्री पांडे और मिश्र। पधीमिश्र--कोट कांगडेसे राजा संसारचन्द्रके समय आये, राजाके वैद्य हुए इनकी सन्ततिमें अनूपशहरके मिश्र हैं। सीराके और मझेडाके पांडे भी इसी कुलमें हैं।

काश्यपगोत्री बरखोरा पांडे। महनीपांडे कन्नौजसे आये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे इनके सिंह और नृसिंह दो पुत्र हुए। पांडे ग्राम सिलौटीमें सिंहकी सन्तान हैं–बेडती पानमें नृसिंहकी सन्तान है राजाने बरखोरा ग्राम जागीर दिया, बरखोरा पांडे इस हेतु कहलाये।

उपमन्युगोत्री मिश्र और वैद्य-

उपमन्यु गोत्री श्रीनिवास द्विवेदी प्रयागसे कालीकुमाऊंमें आये। पांडे कहलाये, राजाके वैद्य हुए मिश्र और वैद्य पांडे कहलाते हैं। दिवतियाके मिश्र कुञ्जके वैद्य हैं, छखाता में भी यही वैद्य हैं। शिमलटिया पांडे। राजा सोमचन्द्रके समय राजगुरू पांडे कुमाऊंमें अवधसे आये। शिमला, सालम, ढोलीग्राम अल्मोडाके चम्फनौला मोहल्लेमें रहते हैं कुमाऊंके सब लोग इनका बनाया भोजन खा सकते हैं पांडे कहलानेवाले और भी कुछ ब्राह्मण हैं उनका ठीक २ परिचय नहीं मिला।

जोशी [ज्योतिषीका अपभ्रंश जोशी है]

गर्गगोत्री सुधानिधि चौबे अवध देशके उन्नाव जिलेमें दधियाखेडाके रहनेवाले राजा सोमचन्द्रके साथ दशवीं शताब्दीमें झूसीसे कुमाऊंमें आये, राजज्योतिषी और राजमन्त्री चतुर्वेदीजी हुए। ज्योतिषी होनेसे जोशी कहलाये। सेलाखोला, झिजाड कलौन कोतवाल ग्राम आदिके जोशी इसी कुलमें हैं। यह घराना कुमाऊंका मुख्य राजमन्त्री रहा। यह दीवान जोशी कहलाते हैं, अनेक विद्वान् राजनैतिक नेता इनमें हुए, वर्तमान समयमें भी अनेक उच्च राजपदोंमें हैं अंग्रेजीके अनेक ग्रेजुएट हैं। चौबे गर्ग गोत्री वंशमें हैं, यह कान्यकुब्ज चौबे हैं।

आंगिरसगोत्री जोशी। अवधसे नाथूराज विजयराज दो भाई कत्यूरी राजाके समय यात्रार्थ आये राजाने दरबारका ज्योतिषी नियत किया सेडीग्राम जागीर दिया, माला सर्र और मल्लीके जोशी इसी कुलमें हैं इनमें नामी २ ज्योतिषी हुए। अब भी अनेक अच्छे २ ज्योतिर्विद् इस कुलमें हैं। सन् १६२६ से मल्लीके जोशी दीवान कहलाये.

मालाके जोशियोंका तिथिपत्र प्रसिद्ध रहा। कौशिकगोत्री जोशी-पं० कृष्णानंदजोशी कौशिकगोत्री डोटी नैपालराज्यसे देवदर्शनार्थ आये गंगोलीके माणकोटी राजाने भेरंगमें पुष्करी (पोखरी) ग्राम दिया, राज्यका ज्योतिषी बनाया। राजा राजबहादुर चंद्रके समयसे चन्द्रराजाओंके ज्योतिषी हुए। भेरंगके जोशी कहलाते हैं दरबानाके शिलोटी ग्राममें भी रहते हैं। अच्छे २ नामी ज्योतिषी इस कुलमें हुए, इनका पंचांग भी कुमाऊंमें मुख्य है। यह ज्योतिषी कृष्णानंदजी वंगदेशी नदियाके कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे।

उपमन्युगोत्री जोशी-प्रयागराजके समीप जयराज मकाऊ ग्रामके रहनेवाले श्रीनिवास द्विवेदी १४ वीं शताब्दीमें राजा थोहरचन्द्रके समय कुमाऊंमें आये, राजाने चौकीगांव दिया। काशीसे ज्योतिष पढआये जोशी कहलाये, चन्द्रराजाओंके मंत्री हुए, यह कुल भी दीवान कहलाता है, इनमें अनेक विद्वान् और उच्च राजकर्मचारी हुए, दन्यामें रहनेसे दन्याके जोशी कहेजाते हैं, ललोटा जोशी। पचारद दुवे कान्यकुब्ज सकुटुम्ब बदरीनाथ यात्राको आये; मणकोटी राजासे ज्योतिषकी वृत्ति मिली, लटोली प्रभृति ५ ग्राम जागीर मिले ललोटा जोशी कहलाते हैं, ज्योतिषकी वृत्ति करते हैं। अनेक नामी विद्वान् ज्योतिर्विद् इनमें हुए हैं। भारद्वाजगोत्री जोशी-कन्नौजके निकट असनी ग्रामके निवासी त्रिवेदी लंकराज शुक्ल यात्रार्थ इधर आये; कुमाऊंके राजाने शिलग्राम जागीर देकर रोक लिया, ज्योतिषके विद्वान् थे, अल्मोडा और निसोत्तमें रहते हैं, चीनाखाणके जोशी उच्चराज पदोंमें हैं। मकेडी, खेर्द-जोशी खोलामें रहते हैं ज्योतिष वृत्ति और नौकरी वृत्ति करते हैं।

त्रिपाठी।

गौतमगोत्री त्रिपाठी। दक्षिण गुजरात देश "अमलावार" वडनगरके निवासी सामवेदी श्रीचन्द्र त्रिपाठी गौतमगोत्री चन्द्रराज्यके आरंभमें बदरिकाश्रमकी यात्राको आये, कत्युरी राजाने इनकी अनेक सिद्धियां देखकर रोक लिया, अल्मोडाकी भूमि जागीरमें दी। कुमाऊंके अनेक ग्रामोंमें और अल्मोडामें यह त्रिपाठी रहते हैं अनेक विद्वान्, कर्मकाण्डी, वैदिक, पौराणिक, पंडित इनमें होते रहे।

भट्ट।

विश्वामित्र गोत्री अच्युत भट्ट दक्षिण तैलंगदेशसे मणकोटी राजाके समय कुमाऊंमें यात्रार्थ आये इनको शास्त्रज्ञ देखकर राजाने रोक लिया यह विसाड पल्यूं, खेती ग्राम सेरमें रहते हैं। अच्छे विद्वान् इस कुलमें होते रहे है। कुछ लोग डोटी नैपालको गये, भट्ट तीन प्रकारके यहां वसे हैं। उपरोक्त वंशके अतिरिक्त दो प्रकारके भट्ट और भी हैं इनके भिन्न २ गोत्र हैं पञ्च द्राविड ब्राह्मण भट्ट-दक्षिण द्रविड देशसे राजा भीष्म चन्द्रके समय कुमाऊंमें आये, दर्वारने हलवाई नियुक्त किया, यह कुल हलवाईका पेशा करते हैं।

मध्यदेशके आये हुए भट्ट ब्राह्मण वागेश्वरादि तीर्थोंके तटोंमें रहे, वे ग्रहण तथा शनिका दान लेनेकी वृत्ति करते रहे।

उप्रेती।

दक्षिण द्रविड देशके महाराष्ट्र ब्राह्मण शिवप्रसाद मणकोटी राजाके समय यात्रार्थ आये, काली देवीके दर्शनको गंगौली गये, राजाने उप्रेडा ग्राम देकर विनय पूर्वक रोक लिया। राजाके मंत्री हुए। चन्द्र

और गोर्खा राजाओंने भी अनेक ग्राम दिये. खेती, सुपाकोट, बांक विण्डा इत्यादि ग्रामोंमें रहते हैं, उप-रेती व उप्रेती कहे जाते हैं ।

पाठक ।

शांडिल्य गोत्री कान्यकुब्ज पाठक आस्पद नरोत्तम वेदपाठी अवधसे शांडीपाली ग्रामके रहनेवाले यात्रार्थ आये । राजाने मणिकानली ग्राम दिया फिर पठक्यूडा ग्राम चन्द राजाओंने दिया ।

पाटणी ।

अवधसे-कान्यकुब्ज ब्राह्मण मिश्र आस्पदके कुमाऊं सोरमें वंस राजाके समय आये, चन्द राजाओंने पीछे पाटण ग्राम दिया, यह पाटणी कहे जाते हैं ।

अवस्थी-मैथिल ब्राह्मण कत्यूर राजाके समय अस्कोटमें आये यह रजवार दरबार के पुरोहित हैं ।

झा वा-ओझा-तिर्हुत मिथिलासे नैपाल होते हुए अस्कोटमें पहुंचे रजवारमें वृत्ति मिली ।

उपाध्याय-नैपालसे आये, यह कर्मकांडी ब्राह्मण हैं ।

कोठारी-कोंकण दक्षिण देशसे सूर्यप्रसाद दीक्षित आये, कुठारका काम राजाने दिया, कुठारी कहे जाते हैं ।

कर्नाटक-कृष्णात्रिगोत्री वसिष्ठ कर्नाटक दक्षिण कर्नाटक देशसे आये, कुमाऊंमें रहे उनके कुलमें कर्नाटक हैं । विष्ट, मनटीनया, पनेरु दक्षिणसे आये, वडुवा शंकराचार्य स्वामीके साथ आये ।

ब्राह्मणोंकी अनेक जातियां पेशेके और ग्रामके नामसे प्रसिद्ध हैं । रानीका गुरु, गुरु रानी, मठरक्षक, मठपाल, दुर्गापाल, हरी वोला, वेल्वाल हैडिया सनवाल इत्यादि पेशेके और ग्रामके नामकी संज्ञा कई सैंकडों हैं । अधिकांश कान्यकुब्ज, महाराष्ट्र, सारस्वत, मैथिल, गौड, द्राविड यहां पाये जाते हैं । यहां की संज्ञा ब्राह्मणोंकी देते हैं यथा-

कपिलाश्रमी तोलिया
दुर्गापाल वमेटा * इत्यादि ग्रामके नामसे या पेशेसे ये जाति हुई हैं । कान्यकुब्जादिके वंशज ये
मठपाल गरजोला सब ब्राह्मण हैं गौड़ सनाढ्य भी इनमें मिले हुए हैं । ठीक २ पता नहीं
सत्ती नैलिया लगता करीब २ सौ तीन सौ से अधिक संज्ञा याचक ब्राह्मण यहां हैं,
सुनाल पलडिया मुख्य २ का हाल ऊपर आगया है ।
विल्वाल भसाल
दिम्वाल नन्याऊ
सनवाल टुमका
सुपाल खोलिया *
गुनी दाणी

मूलनिवासी यहांके राजी किरात भिल्ल हूण शक डोम आदि हैं । राजी (वनमानुष) वत् हैं ।

मध्यकालमें राजपूत खाशिया तीन सहस्र वर्षके रहनेवाले राजपूत वंशसे हैं । आदम पर्वती ब्राह्मणोंमें कराव होता है, यह हल भी जोतते हैं । खश ब्राह्मण खश पुरोहित पीतलके आभूषण पहनते हैं, इससे पीतलिया ब्राह्मण कहाते हैं ।

अथ श्रीमालिब्राह्मणोत्पत्तिः ।

स्कन्द पुराणके कल्याण खंडमें लिखा है कि-एक समय गौतम ऋषिने हिमालयके समीप भृगुतुंग क्षेत्रमें शिवजीकी आराधना की शंकरने वर मांगनेको कहा तब गौतमजी बोले, ऐसा स्थान वताइये जहाँ

निर्भय होकर तपस्या करूं, तब शिवजीने कहा सौगन्धिक पर्वतके उत्तर अर्वुदारण्यसे वायव्य कोणको जाओ, वहां त्र्यम्बक सरोवरके समीप आश्रम बनाओ, वह जगत्प्रसिद्ध तीर्थ होगा। तब गौतमजीने वहां जाकर कठिन तपस्या की तब ब्रह्मादिक सब देवतोंने आकर वर दिया कि, आजसे यह गौतमाश्रम नामसे विख्यात होगा, और सब देवता, यहां निवास करेंगे, यह कहकर देवता चलेगये इसी आश्रमका नाम श्रीमाल क्षेत्र हुआ है, उसका कारण यह सुनाहै कि भृगु ऋषिकी अद्वैतरूपिणी श्रीनाम की एक कन्या थी, नारदजीने विष्णु भगवान्के निमित्त उस कन्याके देनेको कहा, भृगु सम्मत हुए, तब भगवान् विष्णुने नारदके वचनसे माघ शुक्ल एकादशीको उसका पाणिग्रहण किया। तब नारदजी बोले भगवन्! अब इस वधूको त्र्यम्बक सरोवरमें स्नान करायाजाय तब यह अपने स्वरूपको पहचानेगी; स्नान करतेही वह दिव्यगात्र अर्थात् लक्ष्मी स्वरूपको प्राप्त होगई, सब देवता विमानोंमें बैठ स्तुति करने लगे। तब लक्ष्मीने देवताओंसे कहा जैसा यहांका आकाश विमानोंसे शोभित है, वैसी यहांकी पृथ्वी घरोंसे शोभित होजाय, अनेक गोत्रके ऋषि मुनि यहां आवैं, मैं उनको यह भूमि दान करूंगी, अपने अंशसे मैं यहां निवास करूंगी, देवताओंने तथास्तु कहा। विश्वकर्माने वहां सुन्दर नगर बनाया तब ब्रह्माजी बोले-

श्रियमुद्दिश्य मालाभिरावृता भूरियं सुरैः।
ततः श्रीमालानाम्ना तु लोके ख्यातमिदं पुरम्॥

श्रीके उद्देश्यसे देवताओंकी विमानमालासे यह पृथिवी व्याप्त हुई है इसकारण श्रीमाल नामसे यह नगर विख्यात होगा। इसी अवसरमें विष्णुजीके दूत अनेक ऋषि मुनियोंको बुलाकर लाये। कौशिकी; गंगा तटवासी गयाशीर्ष, कालिंजर, महेन्द्राचल, मलयाचल, शूर्पारक, गोकर्ण, गोदावरी, प्रभास, उज्जयंत, गोमती, नंदिवर्द्धन, सौगन्धिक, पर्वत, पुष्कर, वैडूर्यशिखर, च्यवनाश्रम, गंगाद्वार, गंगा यमुनाके समीपवर्ती देशोंसे, प्रयाग, कुरुक्षेत्र, जामदग्न्यपर्वत, हेमकूट, सरयू, सिन्धु समीपी आदि अनेक तीर्थोंसे ४५००० सहस्र ब्राह्मण आये। उनको बडे सत्कारके साथ घरोंमें सब सामग्री रखकर लक्ष्मी दान करनेलगी। और सबसे पहले गौतमकी पूजाकी इच्छा की, इसका सिंध देशवासी ब्राह्मणोंने विरोध किया, तब आंगिरस ब्राह्मणोंने कहा तुम महातपस्वी गौतमका विरोध करते हो, इसकारण तुमसे वेद पृथक् होजायगा, वे यह सुनकर चले गये, वे सिंधुपुष्करणे कहातेहैं। जब लक्ष्मीने वह पृथिवी ब्राह्मणोंको दान दी और साथमें चार लाख गायें दीं। वरुण देवताने उससमय लक्ष्मीके वक्षस्थलमें १००८ सुवर्णके कमलोंकी माला पहराई, उसके पत्रोंमें स्त्रीपुरुषोंके प्रतिबिम्ब दीखने लगे; और वह प्रतिबिम्बके स्त्रीपुरुष भगवतीकी इच्छासे कमलोंसे बाहर प्रगट होआये. और लक्ष्मीसे कहा हमारा नाम और कर्म क्या है, भगवती बोली हे प्रतिबिम्बोत्पन्न ब्राह्मणो तुम नित्य साम गान किया करो, और इस श्रीमाल क्षेत्रमें कलाद नामवाले (जिनको त्रागड सोनी कहते हैं) होंगे; और ब्राह्मणोंकी स्त्रियोंके आभूषण बनाना तुम्हारा काम होगा।

श्रीमाले च ततो यूयं कलादा वै भविष्यथ। भूषणानि द्विजेन्द्राणां पत्नीभ्यो रत्नवंति यत्। कर्तव्यानि मनोज्ञानि संसेव्याश्च द्विजोत्तमाः॥

इसप्रकार वे प्रतिबिम्बसे उत्पन्न ८०६४ कलाद त्रागड ब्राह्मण हुए, उनमेंसे वैश्यधर्मी सोनी हुए, वह पटनी सूरती अहमदावादी खम्भाती ऐसे अनेक भेदवाले हुए, यह जिन ब्राह्मणोंके पास रहे उन्हींके

नामसे कलाद त्रागड ब्राह्मणोंका गोत्र चला । इसप्रकार यह त्रागड ब्राह्मणभी अध्ययन करते और भूषण बनाते रहे, फिर ब्राह्मणोंके धनादि रक्षाके लिये विष्णुने अपनी जंघासे गूलर, दंडधारी दो वैश्य उत्पन्न किये और उनको ब्राह्मणोंकी सेवामें लगाया, गोपालन व्यापार उनका कार्य हुआ और ९०००० नव्वे सहस्र वैश्योंने वहां निवास किया, और उनके स्वामी ब्राह्मणोंके गोत्रसे उन वैश्योंके गोत्र हुए, उस नगरके पूर्ववासी प्राग्वाट पोरवाल कहाये, दक्षिणके पटोलिया, पश्चिमके श्रीमाली, और उत्तरके उर्वला कहाये ।

प्राग्वाटादिशि पूर्वस्यां दक्षिणस्यां धनोत्कटाः ॥
तथा श्रीमालिनो याम्यामुत्तरस्यामथो विशः ॥ ४७ ॥

फिर उनके पुत्र पौत्रादिसे वह वंश वृद्धिको प्राप्त हुआ । फिर भगवान्‌ने उन ब्राह्मणोंको वस्त्रादि प्रदान करनेकी इच्छासे वैश्योंको जंघासे उत्पन्न किया, और उन ब्राह्मणोंकी सेवामें नियुक्त किया, उन्हीं ब्राह्मणोंके गोत्र उनके गोत्र हुए, और वे पटवा गुजराती वैश्य कहाये, वे सब कोई ब्राह्मण और वैश्य भगवान्‌के अन्तर्धान होनेपर उस श्रीमाल क्षेत्रमें निवास करने लगे · इसक्षेत्रमें अनेक तीर्थ हैं, विवाहमें कुलदीपकी पूजा होती है, एक पात्रमें शंख लालसूत्र मिश्री लाल पीताम्बर बादाम वस्त्र कौशेय जल दुग्ध पात्र कुमकुम पुष्प इत्यादि पदार्थ लेके कन्याके घर आते हैं । शंखका जल कन्यापर छिडककर वह वस्त्रादि तिलककर कन्याको देते हैं, और जबतक वर कलेवा करै, वधूको गुप्त स्थानमें रखते हैं, इसी प्रकार कन्याकी माता कुमकुम पुष्प म्होड, नारियल,लाल साडी, पानसुपारी, फूल, चावल, गुड, कंकोडी, नेत्रों जन, मशी यह लेकर वरके स्थानपर जाती हैं । इस प्रकार पहला फेरा होता है, दूसरे फेरेमें साघेकी गठडी तीसरेमें घृतपात्र, चौथेमें गुडपात्र, पांचवेंमें मृत्तिकापात्र, छठेमें बरी पापड, सातवेंमें सेव लेजाती हैं, इस प्रकार वरकी माताको तिलक कर फिर घरको लौटती हैं, पीछे कन्याकी माता अपने घर आय शुद्ध भूमिकर लाल सूतकी वत्ती बनाय घीका दीपक बालतीहै । इसकी पूजासे देवता पितर प्रसन्न होते हैं, विवाहमें शंखका शब्द और वेदपाठ होता है वर अपने घरसे कम्बल ओढ शस्त्र हाथमें लिये चोरके समान कन्याके घर जाकर गोधूमकी पिट्ठीकी बनी हुई गौरीको लेकर अपने घर आता है फिर वरघोडेके समय वह गौरी और नारियलको लेकर विवाहको आता है, आधीरातके समय वरकी माता और स्त्री घरमें मंगलद्रव्योंसे स्नान करके वह पहले दी हुई दो साडी पहन मंगलद्रव्य ले एक स्त्रीके हाथके जलपात्र झारी और नारियल, दूसरीके हाथमें दीपपात्र लेकर कन्याके घर प्रवेश करती है, कन्याकी माता मध्यमार्गसे उनकी अगौनी कर लेजाती. और वेदीमें खडाकर तिलक करतीहै, वही सुपारी आदि परस्पर ली दी जाती हैं, जलपात्रमें जल और दीपकमें परस्पर घृत डालती हैं, परस्पर गुड खिलाती हैं, कन्या और वरकी माता दीपक ले चार प्रदक्षिणा करतीहैं. फिर आलिंगन करके विदाके समय कठिनतासे हाथ छुडा कर घरको आतीहैं, फिर १०८ दीपक रखना, गोधूमपिष्टके बनाते, जलकुंडा करते इत्यादि अनेक कुलाचार करतेहैं, अब इनके कुलप्रवर गोत्रादि कहतेहैं । वर्तमान कालमें ब्राह्मणोंके चौदह गोत्र हैं,परन्तु मूल ग्रन्थमेंअठारह हैं,प्रथम काश्यप गोत्र और तीन प्रवरहैं।काश्यप वत्स और नैध्रुव उनकी कुलदेवी योगेश्वरी है,सो सब चक्रमें आगे लिखतेहैं,यह अठारह गोत्र त्रागड और श्रीमाली ब्राह्मणोंके जानने । श्रीमालियोंके चौदह गोत्रोंके नाम स्पष्ट हैं,शेष अंगिरसादि गोत्रवालोंका वंश नहीं मिलता, लक्ष्मीके विवाहमें जो ४९००० ब्राह्मण आये, वह सब श्रीमाली कहाये, उनके साथमें श्रीमाली वैश्य पोरवाल वैश्य, श्रीमाली सोनी, पटवे, गाठे और गूजर आदि भी वहां रहनेवाले श्रीमाली नामसे अभिव्यक्त हुए, विवाहादिमें इनसे कर लिया जाता है । इनमेंसे ९००० ब्राह्मण भोजक हुए, जो इस समय जैन धर्म पालन करते हैं, इनकी वृत्ति श्रावक लोगों-

की है, ओसवाल वैश्योंके उपाध्याय गोर कहाते हैं, वह वैश्योंके हाथका भोजन करते हैं ९०००श्रीमाली सुमारे गुजरातमें आये सो कच्छ गुजरात और काठियावाड़में रहते हैं, यह घोघारी, खम्भाती, सूरती, अहमदावादी आदि भेदोंसे विख्यात हैं । शेष ३९००० मारवाड मेवाड जोधपुर आदि स्थानोंमें आरहे, यह मारवाडी श्रीमाली कहेजाते हैं । इनमें एक भेद दसकोसी श्रीमाली कहाता है, एक श्रीमाली ब्राह्मण एक विधवा स्त्रीको लेकर दूसरे ग्राममें जारहा, पीछे सन्तान होनेपर अपनी योग्यतावाले ब्राह्मणसे विवाह करते हैं, वे दसकोसी श्रीमाली कहाते हैं, यह अहमदावाद जिलेमें पाये जाते हैं, श्रीमालियोंमें चौदह गोत्र और दो वेद हैं, उनमें सात गोत्रके यजुर्वेदी हैं, उनके नाम गौतम, शाण्डिल्य, चन्द्रास, जलवान, मौदुलास वा मौद्गल(मुद्गल)कपिंजलस, और हरितस हैं, सामवेदी भी सात गोत्रके हैं उनके नाम शौनकस्, भरद्वाज पराशर कौशिकस् वत्सस् औपमन्यव और कश्यप हैं, इनका विवाह सम्बन्ध स्ववर्गमें होता है, यह कोकिल ऋषिके मतको मानते हैं, इनमें मरनेके पीछे स्त्री अपने पिताके गोत्रमें मिलती है, वह ४९ सहस्रसे अधिक जो पांच सहस्र ब्राह्मण आये सो पुष्करणे वा पोकरणे ब्राह्मण कहाये ।

ते तु पुष्टिकराः प्रोक्ता उत्तमाधमभेदतः ।
ये गौतमापमाने तु वेदबाह्या द्विजैः कृताः ॥ ६० ॥

उसमें भी भेद हैं जो सैंधवारण्यवासी ब्राह्मण आये थे और गौतमके अपमान करनेसे ब्राह्मणोंने उनको वेदबाह्य किया, तो वे ब्राह्मण सिंधदेशमें जाकर रहे सो उत्तम, और देशवाली मध्यम कहाये, यह लौकिक बात है । कमलके प्रतिबिम्बसे जो उत्पन्न हुए वे कशाद त्रागड ब्राह्मण कहाये ।

पद्मानां प्रतिबिम्बैश्च ये चोत्पन्ना द्विजातयः ।
ते त्रागडाः समाख्याता द्विजा ह्येव न संशयः ॥

श्रीमालक्षेत्रका नाम भिन्नमाल हुआ है, इसका कारण यह है कि, कुण्डगा नामक एक श्रीमाली ब्राह्मण गुजरात देशमें सौगंधिक पर्वतसे एक इक्षुमती नामक कन्याको व्याह करके लाया, और कहा कि मैं पातालसे कंकोल नामक नागकी कन्याको व्याहकरके लाया हूँ, यह सुन कर सब श्रीमालियोंने उसको धन्यवाद दिया, उसीसमय एक सादिका नामक राक्षसी जो श्रीमालियोंकी कन्याओंको हरण-कर कंकोल नागके स्थानमें छोड आती थी उनके लिये कुण्डपाके पुत्रोंने नागराजकी प्रार्थना कर उन कन्याओंके विषयमें कहा कि आपने हमारे कुलकी कन्याओंकी रक्षा की है, इस कारण विवाहा-दिमें श्रीमाली मात्र आपका पूजन करेंगे ऐसा कहकर उन कन्याओंको नागराजके वहांसे लेआये, तबसे आजतक श्राद्ध तथा विवाहोंमें कंकोल नागका पूजन श्रीमाली करते हैं, पीछे श्रीमालनगर उजाड पडारहा, श्रीपुंज नामक आबूके राजाने उसे बसाया, भोजके समयमें माघ कवि इसी वंशमें हुआ है, प्रबोधचिन्तामणिमें लिखा है कि यह कवि खर्चीला बहुत था, भोजराजने उसको लाख रुपये दिये थे, तो भी उसकी मृत्यु धनके कष्टसे हुई, तब राजाने क्रोधकर श्रीमाल नगर वासियोंको धिक्कारा, और उस नगरका नाम भिल्लमाल वा भिंडमाल रक्खा, जब अनहलवाला पाटण बसा तब भिल्लमाल टूटा और जो श्रीमाली पाटनमें आकर बसे, वह कुलदेवी महालक्ष्मीकी मूर्ति साथ लेते आये, और उसीकी पूजा होती है । यह श्रीमाली और त्रागड ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कही । यह लेख ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्डका है ।

काची श्रीमाली ।

यह कच्छदेशमें श्रीमाली ब्राह्मणोंका एक उपभेद है ।

श्रीमाली ब्राह्मणोंके गोत्र अवटंक शाखा वेद प्रवर कुलदेवीके निरायिका कोष्टक ।

सं०	अवटंक	उपनाम	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	कुलदेवी
१	ओझा	टोकर	सनकस	गृत्समद	साम.	कौथुमी	वरयक्षिणी
२	त्रिवाडि	टोकर	"	"	"	"	वीजयक्षिणी
३	त्रिवाडि	वालासरा	"	"	"	"	"
४	जोशी	चीपि	"	"	"	"	"
५	त्रावाडि	वाकुलिया	"	"	"	"	"
६	व्यास	वाकुलिया	"	"	"	"	"
७	ओझा	"	"	"	"	"	"
८	व्यास	उवलिया	"	"	"	"	"
९	दुवे	मटकई	"	"	"	"	"
१०	तिवाडी	सांगडा	"	"	"	"	"
११	त्रवाडी	जेखलिया	"	"	"	"	"
१२	दुवे	उमामणा	"	"	"	"	"
१३	ओझा	भोपाल	भारद्वाज	आंगिरस	साम वा	कौथुमी	बंधुदेवी
			वार्हस्पत्य	यजु० वा०			
			भारद्वाज			माध्य०	
१४	त्रिवाडी	भोपाल	"	"	"	"	"
१५	व्यास	भोपाल	"	"	"	"	"
१६	मोहित	डाभिया	"	"	"	"	"
१७	व्यास	चोखाचटणीरिणा	"	"	"	"	"
१८	त्रवाडी	कोठिया	"	अग्नि०भार०	साम वा	"	"
				वार्हस्पत्य	यजु०		
१९	जोशी	भोपाल	"	"	"	"	"
२०	दुवे	नवलखा	"	"	"	"	"
२१	व्यास	"	"	"	"	"	"
२२	ओझा	"	"	"	"	"	"
२३	दुवे	फाडिया	"	"	"	"	"
२४	दुवे	नरेचा	"	"	"	"	"
२५	पंड्या	नरेचा	"	"	"	"	"
२६	ओझा	नरेचा	"	"	"	"	"

सं०	अव०	उप०	गो०	प्र०	वेद०	शा०	कुल०
२७	ओझा	गरिया	”	”	”	”	”
२८	वोहोरा	पेटा	”	”	”	”	”
२९	त्रवाडी	गाधेया	पाराशर ३	वशिष्ठशक्ति	साम	कौथुमी	वरुण
३०	व्यास	गाधेया	पाराशर	”	”	”	”
३१	त्रवाडी	कोटिया	”	”	”	”	”
३२	त्रवाडी	त्रंडिसा	”	”	”	”	”
३३	त्रवाडी	लाडआ	”	”	”	”	”
३४	त्रवाडी	नरेचा	”	”	”	”	”
३५	त्रवाडी	उपलिया	”	”	”	”	”
३६	ओझा	शल्या	कौशिक	उ०विश्वा० देवराज औदालक	साम	कौ०	सिद्धा
३७	त्रवाडी	काणोदरा	”	”	”	”	”
३८	अवस्ति	शल्या	”	”	”	”	त्र्यम्बका
३९	त्रवाडी	शल्या	कौशिक	प्रवर ३	”	”	व्याघ्रेश्वरी
४०	जोशी	सनखलपुर	”	”	”	”	”
४१	जोशी	वडवाणिया	”	”	”	”	”
४२	जोशी	आंशलिया	”	”	”	”	”
४३	जोशी	नरेचा	”	”	”	”	”
४४	ठाकर	डिमिया	”	”	”	”	”
४५	ठाकर	शिरखटिया	”	”	”	”	”
४६	”	”	”	”	”	”	”
४७	दुवे	वौरसधा	”	”	”	”	”
४८	त्रिवाडी	कुदाली	”	”	”	”	”
४९	दुवे	पहाडकुड	”	”	”	”	”
५०	दुवे	उपरससाकुमार	”	”	”	”	”
५१	दुवे	केशिविकार	”	”	”	”	”
५२	दुवे	झो०	”	”	”	”	”
५३	दुवे	झमडुआत्र	”	”	”	”	”
५४	दुवे	शिरखडिया	”	”	”	”	”
५५	दुवे	मुंडिया	”	”	”	”	”
५६	दुवे	माकडिया	”	”	”	”	”
५७	ठाकुर	उनामणा	”	”	”	”	”
५८	ठाकुर	वलुरिया	”	”	”	”	”
५९	दुवे	टोटाणिया	”	”	”	”	”

सं०	अव०	उप०	गो०	प्र०	वेद०	शा०	कुल०
६०	वोहरा	चमारिया	कौशिक	प्रवर ३	साम	कौथुमी	देवी
६१	पोहोरा	पुंतार	"	"	"	"	"
६२	मोहित	पारकरा	"	"	"	"	"
६३	प्रोहित	हाल	"	"	"	"	"
६४	प्रोहित	२॥सनापरा	"	"	"	"	"
६५	पंड्या	धोडिया	"	"	"	"	"
६६	पंड्या	जोऊरिया	"	"	"	"	"
६७	पंड्या	माद्रडिया	"	"	"	"	"
६८	त्रवाडि	शिखुड्डिया	"	"	"	"	"
६९	त्रवाडी	दशोत्तरा	वच्छस५भृगु	च्यवन ५	साम	कौथुमी	आत्मदा
७०	अग्निहोत्री	दशोत्तरा	वच्छस ५ और्व	अग्नि ५	साम	कौथुमी	देवीनदी
७१	अवस्थी	दशोत्तरा	"	जमदग्नि	"	"	बनागनी
७२	दुवे	कोडिया	"	जमदग्नि	"	"	वानानणी
७३	दुवे	दशोत्तरणिया	"	"	"	"	"
७४	जोशी	पडेचा	"	"	"	"	"
७५	दुवे	पडेचा	"	"	"	"	"
७६	त्रवाडी	सामला	"	"	"	"	"
७७	त्रवाडी मेहेर	औपमन्यव ३	अगस्त्य	अरुण	साम	कौथुमी	नदिवागिनी
७८	त्रवाडी	जाजरला	अगस्त्य	इध्मवाह	साम	कौ०	नदि०
७९	त्रवाडी	आद्या	कश्यप	कश्यप वत्सनैधृत	"	"	योगेश्वरी
८०	त्रवाडी	करचडा	"	"	"	"	"
८१	त्रवाडी	द्रहवाडिया	"	"	"	"	"
८२	त्रवाडी	वाडमुहालिया	कश्यप	प्रवर३	साम	कौथुमी	योगेश्वरी
८३	त्रवाडी	पावडी	"	"	"	"	"
८४	जोशी	चंड	"	"	"	"	"
८५	जोशी	पंचपीडिया	"	"	"	"	"
८६	व्यास	पुरेच्या	"	"	"	"	"
८७	वोहोरा	पुरेच्या	"	"	"	"	"
८८	भट	वोरमा	"	"	"	"	"
८९	अवस्ती	लोह	"	"	"	"	"
९०	वोहरा	वावडिया	"	"	"	"	"
९१	जोशी	गौतम्रीवा	गौतम	८गौतमऔतथ्य आंगि०	यजु०	माध्यन्दिनी	महालक्ष्मी
९२	दुवे	गौतम्रीवा	"	"	"	"	"

सं०	अव०	उप०	गोत्र०	प्रवर	वे०	शा०	कु०
९३	दुवे	लंपाडवा	,,	,,	,,	,,	,,
९४	दुवे	साछलवाड़िया	,,	,,	,,	,,	,,
९५	दुवे	पुछत्रोड	,,	,,	,,	,,	,,
९६	ठाकर	लापसा	,,	,,	,,	,,	,,
९७	वोहोरा	पीड़िया	शाण्डिल्य३	आत्रेय	आचनरैभ्य	,,	क्षेमकरी
९८	दुवे	पेसा	,,	,,	,,	,,	,,
९९	दुवे	काक्तिडिया	,,	वाभाशैल्यदे.	शांडिल्य	,,	,,
१००	दुवे	धोंघलवाडिया	,,	वा दे०	असितमाण्डव्य	,,	,,
१०१	वोहोरा	धोंघलवाडिया	,,	,,	,,	,,	,,
१०२	पंड्या	धोंघलवाडिवा	,,	,,	,,	,,	,,
१०३	दुवे	आशोल्या	,,	,,	,,	,,	,,
१०४	दुवे	वेलडिया	मौद्गलस् ३	आंगिरस भारमा मौद्गल	यजु०	मा०	चामुण्डा
१०५	दुवे	चापानेरिया	,,	,,	,,	,,	,,
१०६	दुवे	गोधा	,,	,,	,,	,,	,,
१०७	दुवे	हाडिया	चांद्रास १११	नउमवाआत्रेया		,,	महालक्ष्मीवा
१०८	दुवे	अरण	,,	गाविष्टपूर्णेति	,,	,,	चामुंडायक्षिणी
१०९	दुवे	केलवाडिया	,,	,,	,,	,,	,,
११०	दुवे	वातडिया	,,	,,	,,	,,	,,
१११	दुवे	भाटिया	,,	,,	,,	,,	,,
११२	दुवे	वौनेया	,,	,,	,,	,,	,,
११३	दुवे	जोशी वातड	,,	,,	,,	,,	,,
११४	दुवे	कोचर	लवणस१२	नढमवा ३	,,	,,	दुर्गा वा चामुंडा
११५	व्यास	घालोद्रस्	वालोद्रसन	उतथ्य	आंगिरस	,,	,,
११६	दुवे	पाठक	लौडवान	,,	,,	,,	,,
११७	दुवे	पानोलिया	कपिंजलस्		वसिष्ठ	भारद्वाज	,,
११८	दुवे	कोचर	,,	इन्द्रप्रमद	य०	मा	चा०
११९	मेहेता	रमणेवा	,,	,,	,,	,,	,,
१२०	दुवे	पुराणेचा	,,	,,	,,	,,	,,
१२१	दुवे	जीवाणेचा	,,	प्रवर ३	,,	,,	,,
१२२	दुवे	खांडिया	,,	,,	,,	,,	,,
१२३	दुवे	जमिया	,,	,,	,,	,,	,,
१२४	ओझा	घाघलिया	,,	,,	,,	,,	,,

सं०	अव०	उप०	गो०	प्रवर	वे०	शा०	कु०
१२५	दुवे	वालिया	"	"	"	"	"
१२६	दुवे	रेटिया	"	"	"	"	"
१२७	दुवे	उपाध्या	"	"	"	"	"
१२८	दुवे	पाठक	"	"	"	"	"
१२९	दुवे	वदरखाना	"	"	"	"	"
१३०	जोशी	स्वयंदेव	"	"	"	"	"
१३१	व्यास	स्वयंदेव	"	"	"	"	"
१३२	ओझा	आचडिया	हारित	पंचप्रवर	"	"	"
१३३	दुवे	पाठक	"	"	"	"	"
१३४	दुवे	चरूचा	"	"	"	"	"
१३५	दुवे	आचडिया	"	"	"	"	"
१३६	दुवे	चोकना	"	"	"	"	"
१३७	दुवे	कुंतेचा	"	"	"	"	"
१३८	दुवे	शिलेत्रा	"	"	"	"	"
१३९	होता	७वलासणा	शिरोरोहिया रठभद्रिया लाम	शिप्मुंडिया		मनमुंडिया न्याचेष्टा	

१४ गोत्र अल्ल ।

सं०	अवटंक	उपनाम		कुलं०
१	त्रवाडी	टीकर	१०	
२	ओझा	त्रिपा	१२	
३	व्यास	माधे	५	वटयक्षिणी
४	ओझा	शल्या	८	कमला
५	त्रवाडी	दशोत्तर	६	वालगौरी
६	त्रवाडी	मेहेर	१	नागिनी
७	त्रवाडी	जाजरोला	१२	योगेश्वरी
८	दुवे	नपंटया	६	अरिष्टा
९	दुवे	०	४	महालक्ष्मी
१०	दुवे	काकडिया	४	क्षेमकरी
११	दुवे	कामेर	३	चामुण्डा
१२	दुवे	कलवाडिया	४	
१३	दुवे	पंतोनिया	१०	
१४	ओझे	०	१	

श्रीमालीब्राह्मणोंकी चौदह छकडीयोंके नामका कोष्टक ।

सामवेद छकडी					यजुर्वेद छकडी	
१ भोपाल	१ लाहा	१ चामुंडा	१ गोधा	१ परेचा	१ उपरसता	१ मटाकिया
२ रोकर	२ भाद्रडिया	२ चडक	२ कोचर	२ पहत्तर	२ गंगाठ	२ उनमक्षिया
३ शला	३ लघु	३ मनमुडिप	३ मनभात्र	३ खजुरिया	३ कोरका	३ सहीसरा
४ गावरेज	४ पावडात्र	४ कटिया	४ पेय	४ टंकसाली	४ कोटसुहा	४ वेणंगणा
५ कणाद्र	५ लाडआ	५ कातेचा	५ करत्रोह	५ करचंडा	५ झझुवाडिया	५ मशकमुकीया
६ मेहेर	६ काश्यप	६ रुपेचा	६ हारि	६ खांडा	६ करयणिया	६ पाहणकुट

सामवेदछकडी. यजुर्वेदछकडी.

१ दशोत्र	२ खाजलिया	१ मानवेचा	१ फटिया	१ खाकमीचा	१ छडगणा	१ रंकासणा
२ ऐयात्र	२ पडशल्या	२ मठधालेचा	२ राणिया	२ पूरना	२ दातिया	२ मलिया
३ जादरोला	३ चित्रोडा	३ कुत्तेचा	३ नरेचा	३ चारैंना	३ घसकरा	३ नरउदय
४ डवलाय	४ कपिंछलार	४ आजरामारि	४ लपाडआ	४ चडा	४ मीनीसात्र	४ बकरा
५ वाकलाया	५ बलवाटिया	५ माक्षिया	५ गौतमा	५ चोखना	५ चालुआ	५ उणा
६ भामट	६ उपरसा	६ फलपद्दुआ	६ लापसा	६ मुंडा	६ चांचणचोर	६ नवलखा

सं०	गोत्र	प्रवर	शर्म	देवी	गणपति	यक्ष	शिव	भैरव
१	सनकस्	सहोत्र गोचर्मद गृत्समंद	नंद	वरुणार्चि	अननीन	वरस	वनकेश्वर	आनंद
२	भारद्वाज	आंगिरस बार्हस्पत्य भारद्वाज	शिव	बंधुयक्षिणी	उधियादुधीय	रामेश्वर	नवलक्षेश्वर	ईशान
३	पाराशर	वशिष्ठ शक्ति पाराशर	त्रति	वटयक्षिणी कमली	नर्क	चित्रश्वर	पारेश्वर	सिद्धिदास
४	कौशिक	आंगिरस् देवराज औद्दालक	भव	बालगौरी	स्वग	कामेश्वर	त्र्यम्बकेश्वर	काल
५	वत्सस	भृगुच्यवन आप्नुवा० और्व जम०	मित्र	नागिनी	गोवत्सल	मनमजी	धारेश्वर	मंगलमूर्ति
६	उपमन्यव	औपमन्यव भृगु० और्व	भूत	योगेश्वरी	सिद्धविनायक	उपयी	भुरभुरेश्वर	वटुक
७	काश्यप	काश्यप वत्स नैध्रुव	भूत	अरिष्टा	मृत्यु	लक्ष्मणेश्वर	कश्यपेश्वर	जटिल
८	गौतमस्	गौतम आंगिरस औतथ्य	दास	महालक्ष्मी	साध्य	दमयन्तीश्वर	चंडेश्वर	ग्रामपाल
९	चान्द्रस	आत्रेय औतथ्य गौतम	नाग	क्षेमकरी	ढुंढिराज	देव	प्रभूतेश्वर	रुद्रचन्द्र
१०	शांडिल्य	आशैल देवल शांडिल्य	सोम	चामुंडा	उदय	त्रिशूल	जडेश्वर	असितांग
११	लौडवान	आंगिरस औतथ्य लौडवान्	गुप्त	वरानना	कर्म	धनेश्वर	भूतेश्वर	प्राणदास
१२	मौद्गलस्	आंगिरस भाडम मौडलस	धीश	वरानना	आय	हर्यस्	गंगेश्वर	देववत्सल
१३	कर्गिजलस्	वशिष्ठ भारद्वाज इन्द्रप्रमद	दत्त	सुरभविग स्थग्य	अभय	दुर्धर	नागेश्वर	रक्तांग
१४	हरितस्	हरितस् १	देवी	दत्तचंडी	अजन	सूर्य	जागेश्वर	वटपाल

वाल्मीकिगोमित्रीयरव्यालयब्राह्मणोत्पत्तिः ।

पद्मपुराणके पातालखंडमें लिखाहै कि-

तत्रैकदा तु वाल्मीकी रामाल्लब्धधनो महान् । श्रीमद्रामसहायेन सर्वसंभारसम्भृतः ॥ सरस्वत्यग्निकोणे तु कृत्वा स्थानमनुत्तमम् । उत्तमं मंडपं कृत्वा गौतमादीन् महामुनीन् ॥ वाल्मीकिर्वरयामास क्रतुजातस्तथोत्तमः ॥

वाल्मीकिजीने रघुनाथजीसे बहुतसा धन पाकर सरस्वतीसे अग्निकोणमें यज्ञ करना आरंभ किय और गौतमादि मुनियोंका वरण किया । वह आश्रम ३६ कोस चौडा और ५२ कोस लम्बा था । वाल्मीकिजीने यज्ञ करके गौतमादि ऋषियोंसे प्रार्थना की कि जिस प्रकार मेरे आश्रमकी प्रतिष्ठा हो, सो कार्य होना चाहिये । तब ऋषियोंने कहा ऐसा ही होगा ।

सर्वे ते शिष्यलक्षैकमुत्तमा वेदवित्तमाः। तेषां विहितसंख्यानां गोत्राणि विमलानि च ॥ त्रयोदशशतान्युच्चैः संजातानि महात्मनाम् । पंचाशच्च सहस्राणि गोरक्षणनियोजिताः ॥ गोमित्रीयास्ते विज्ञेयाः सर्वदा विबुधोत्तमैः । अष्टौ च चत्वारिंशच्च ब्राह्मणानां सहस्रशः ॥ रव्यग्रे प्रेषिता ह्येते ते वै रव्यालयाः स्मृताः ।

उन ऋषियोंके पास उस समय एक लाख शिष्य थे उनमेंसे उन्होंने पचास सहस्रको गोरक्षामें नियुक्त किया, वे सब गोमित्रीय ब्राह्मण कहाये, अडतालीस सहस्र सूर्यके सन्मुख भेजे गये वे रव्यालय कहाये । उन सबकी निर्मलगोत्र संख्या तेरह सो थी शेष दो सहस्र जोरहे वे वाल्मीकिनामसे विख्यात हुए ।

वाल्मीकास्ते तु विज्ञेया विख्याता भुवनत्रये ।

इन ब्राह्मणोंका शुक्ल यजुर्वेद, माध्यन्दिनी शाखा है, कोकिलमुनिका मत—यह मानते हैं, इनके सेवक ग्यारह सौ कायस्थ भी वाल्मीक कायस्थ कहाये, इन ब्राह्मणोंका निवास वाल्मीकपुर (वालम) में है हलसे भूमिशोधनके कारण इनका नाम हलहल भी कहते हैं, यह कर्मनिष्ठ सात्विकी और दयालु होते हैं, अब इनके नाम गोत्रका चक्र लिखते हैं-

वाल्मीकिब्राह्मणानां गोत्रचक्रम् ।

सं०	गोत्र	प्रवर
१	भारद्वाज	०
२	वशिष्ठ	वशिष्ठ
३	काश्यप	काश्यपवत्सनैध्रुवाः
४	गार्ग्य	काश्यपवत्सध्रुवाः
५	आत्रेय	आत्रेयअर्चनानाराशावाश्वाः
६	गौतम	०
७	वत्स	०
८	कौण्डिन्य	वशिष्ठमैत्रावरुणकौण्डिन्याः
९	भार्गव	भार्गवच्यवनाप्तवान्आष्टषेणअनुपेक्षाः
१०	मुद्गल	आंगिरसब्राह्ममुद्गलाः
११	जमदग्नि	जमदग्निभार्गवऔर्वाः
१२	अंगिरस	अंगिरसब्राह्ममुद्गलाः ।
१३	कुत्स	मांधाताअंगिरसकौत्साः
१४	कौशिक	०
१५	विश्वामित्र	विश्वामित्रदैवतदैदश्रवसाः
१६	पुलस्त्य	०
१७	अगस्त्य	विश्वामित्रस्मररथवार्धुलाः
१८	शांडिल्य	०
१९	कात्यायन	भार्गवच्यवनऔवजमदग्निवत्साः

इति वाल्मीकिब्राह्मणोत्पत्तिः ब्रा०उ०मार्तण्ड० ।

अथ शाकद्वीपिब्राह्मणोत्पत्तिः ।

भविष्यपुराणके १३३ अध्यायमें कहा है–

कृष्णपुत्रोऽतितेजस्वी साम्बो जाम्बवतीसुतः । सूर्यस्य च महाभक्तः प्रासादं स चकार ह ॥

कि कृष्णके महातेजस्वी जाम्बवतीसे उत्पन्न पुत्र साम्बने सूर्य देवकी भक्तिके निमित्त एक बडा महल बनाया, उसमें भगवान् सूर्यकी मूर्ति स्थापित की, और पूजाके निमित्त गौरमुखऋषिसे कहा, उन्होंने कहा हम मन्दिरकी पूजाका प्रतिग्रह नहीं करैंगे, तब साम्बने इसके निमित्त सूर्यका आराधन किया, तब प्रसन्न होकर सूर्यदेव कहने लगे–

ममार्चनेऽस्मिन् द्वीपे तु ह्यधिकारी न कोपि च । शाकद्वीपे ते वसन्ति वर्णाश्चत्वार एव च । मगश्च मगसश्चैव मानसो मन्दगस्तथा ॥

अर्थात् मेरे पूजनका अधिकारी यह कोई नहीं है शाकद्वीपमें चार वर्ण मग, मगस, मानस और मन्दग यह निवास करते हैं, इनको तुम यहां लाकर वसाओ ।

साम्बः सूर्यवचः श्रुत्वा चारुह्य गरुडं द्रुतम् । शाकद्वीपात्समानाय्य चाष्टादशकुलोद्भवान् ॥ कुमारान् स्थापयामास चन्द्रभागानदीतटे । ते तु नित्यं पूजयन्ति सूर्यं भक्तिपुरःसराः ॥

साम्ब यह वात सुनकर गरुडपर चढकर शाकद्वीपको गये और शाकद्वीपसे १८ कुलके कुमारोंको लाकर चन्द्रभागा नदीके किनारे स्थापन किया, वे सूर्यभगवानकी नित्य पूजा करने लगे ।

तन्मध्ये मन्दगाश्चाष्टौ मगाश्च दशसंख्यकाः । ततः साम्बो भोजकन्याः समानाय्य प्रयत्नतः ॥ मगाख्यदशविप्रेभ्यो दत्तवान् विधिपूर्वकम् ॥

वे साम्बपुरमें निवास करने लगे, उन अठारहमें आठ कुल मन्दगवर्णोंके शूद्र थे, और दश कुल मगवर्णके ब्राह्मणवर्ण थे, साम्बने भोजवंशकी कन्याओंसे उन ब्राह्मणकुमारोंका विधिपूर्वक विवाह कर दिया ।

ततो जाताश्च ये पुत्रास्ते तु भोजकसंज्ञकाः । ब्राह्मणेन समानाश्च कार्पासव्यंगधारकाः ॥ वेदपाठविपर्यासान्मगास्ते परिकीर्तिताः । भोजने मौनिनः सर्वे ऋषिवत्कूर्चधारकाः ॥ वर्चाचाश्चाष्टवर्षे च ह्यमाहकविधारकाः । सव्याहृतेर्हि सूर्यस्य गायत्र्या जपतत्पराः ॥ अग्निहोत्ररतास्सर्वे मद्यं संस्कारपूर्वकम् । सौत्रामणौ ब्राह्मणवत्पानं

कुर्वन्ति ते मगाः ॥ अष्टभ्यः शककन्याश्च दत्तास्ते शूद्रकाः स्मृताः । तेऽपि सूर्यस्य भक्ताश्च मंदगा नात्र संशयः ॥

उन कुमारोंके जो बालक उत्पन्न हुए वे भोजक कहाये, वे सब ब्राह्मणोंके समान कर्म करनेवाले हुए, कपासका बना भीतरसे पोला सांपकी कैंचलीके समान यज्ञोपवीत सरीखा वस्त्र धारण करते हैं, यह १३२ अंगुलका उत्तम, १२० का मध्यम और १०८ का अधम होता है, यह अव्यंग आठवें वर्षमें धारण कराते हैं, वेदका उलट पुलट पाठ करनेसे यह मगनामसे प्रसिद्ध हैं, भोजनके समय मौन रहते, ऋषियोंके समान डाढी रखते हैं, वर्च अर्थात् सूर्यकी अर्चा कहते हैं, उनके पूजक होनेसे यह वर्चार्च्य कहे जाते हैं, आठवें वर्षमें अव्यंग धारण करते हैं, अमाहक पठितांगसार अव्यंगका पर्याय है, मैथुन और सूतकके समय यह उतारदिया जाता है, यह तीनों व्याहृतिपूर्वक सूर्यगायत्री जपते और अग्निहोत्र करते हैं, अभिमंत्रित मद्य सौत्रामणिके समान पीते हैं. जो आठ कुलके ये उनको शकोंकी कन्या दीगई वे शूद्रकुल हुए, वे भी सब सूर्यके भक्त हुए परन्तु मंदगही कहाये।

इति शाकद्वीपब्राह्मणोत्पत्तिः ।

अथ शुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मणोत्पत्तिः ।

१२२० शालिवाहनशाके में प्रतिष्ठानपुर (मुंगीपहन) का एक राजा जिसका नाम बिम्ब था उसने कोंकणदेशमें जाकर राज्य किया, और पीछे अपने गुरु रघुनाथके पुत्र पुरुषोत्तमको उस देशमें बुलाकर उनको उत्तरकोंकणकी सब वृत्ति दी, पुरुषोत्तमजीने प्रतिष्ठानपुरसे अपने सब इष्टमित्रोंको वहां बुलालिया, और इसप्रकार विशेष वृत्ति मिलनेसे शुक्लयजुर्वेदियोंका वहां समूह एकत्र होगया, पीछे राजाकी मृत्यु होनेपर भी इनकी वृत्ति पूर्ववत् चलती रही, पीछे जब चित्तपावन पेशवाका राज्य हुआ, उस समय वेन राजा कोंकणस्थ चित्तपावन ब्राह्मण थे, उन्होंने अपनी पंक्तिमें महाराष्ट्र ब्राह्मणोंको भोजनके निमित्त आग्रह किया जब दक्षिण कोंकणमें यह बात उठी तब उत्तर कोंकणकी वृत्ति वाले पुरुषोत्तमभट्टके संबन्धी शुक्लयजुर्वेदियोंके संग कराडे और चित्तपावनोंका बहुत विरोध हुआ कुछ दिनों पीछे उत्तर कोंकणमें वसाईके निकट पलशीवन कुट्ट गांवमें एक तुकंभट अग्निहोत्री रहते थे, १६६८ शाकेमें चित्तपावन और कराडोंने उनका अग्निहोत्र भंग किया. तब तुकंभटने अपने शुक्लयजुर्वेदियोंको साथ लेकर सतारेमें पहुंचकर छत्रपतिसे अपना दुःख निवेदन किया, और छत्रपतिजीने निर्णय करके उनका अग्निहोत्र फिर चलवाया, परन्तु वहांके लोग इनको पळशीकर नामसे पुकारने लगे, और कोई २ दक्षिण कोंकण इनको ईर्षासे पलशी नामसे पुकारनेलगे, परन्तु यह शुक्लयजुर्वेदी अद्यापि उत्तर कोंकणमें रहते हैं और इस समयभी उत्तम कर्मकाण्डमें रत रहते हैं। इस समय यह महाराष्ट्र सम्प्रदायके अन्तर्गत हैं, इन माध्यान्दिनीय शुक्लयजुर्वेदी ब्राह्मणोंका उपनाम तथा गोत्र और कुलाचार सब देशस्थोंके समान है, महाराष्ट्रोंसे इनका भोजन और कन्यासम्बन्ध होता है।

इतिशुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मणोत्पत्तिः ।

अथ म्होडब्राह्मणोत्पत्तिः।

पद्मपुराणके पातालखंडमें लिखा है कि जब महाराज युधिष्ठिरने धौम्यऋषिसे गुजरात देशके धर्मारण्य तीर्थका माहात्म्य पूछा तो उन्होंने कहा उस स्थानमें ब्रह्माजीने बडी तपस्या की और विष्णु भगवानके वर मांगनेके उपरान्त तीनों देवताओंने वहां निवास करनेको तीन गुणोंके सहित निर्माण किया।

गणैस्त्रिभिस्त्रिभिः कालैर्ब्राह्मणाः प्रकटीकृताः। अष्टादशसहस्राणि त्रैविद्यास्ते द्विजोत्तमाः॥

अर्थात् तीनों गुणोंके सहित१८०००सहस्र ब्राह्मण उत्पन्न किये वे इससे त्रैविद्य त्रिवेदी म्होड ब्राह्मण कहाते हैं,इनमें छः सहस्र विष्णुने, छः सहस्र ब्रह्माने,और छः सहस्र शंकरने उत्पन्न किये,यह सात्त्विक राजसिक तामसी हुए, इनकी सेवाको शूद्र और वैश्य उत्पन्न किये इनके चौवीस गोत्र हैं सो चक्रमें लिखतेहैं।

त्रिवेदी म्होडब्राम्हणोंका गोत्रचक्र

संख्या	गोत्र प्रवर	देवी	वेद	शाखा	गुण	
१	गार्ग्यायनस्-भार्गवच्यवन आप्नुवान् और्व जमदग्नि५	शांता	साम	कौथुमी	सात्त्विक	उत्तम
२	गांगानस-विश्वामित्र विल्वकात्यायन ३	सुखदा	यजु	माध्यन्दिनी	राजस	मध्यम
३	कृष्णात्रेय-आत्रेय और्ववान् शावाश्व३	भट्टयोगिनी	य०	मा०	तामस	अधम
४	माण्डव्य- भार्गव च्यवन शांत आप्नुवान् जामदग्नि५	धारभधारिका	य०	मा०	ता०	अ०
५	वैशम्पायन-आंगिरस अम्बरीष यौवनाश्व ३	लिम्बजा	य०	मा०	ता०	अ०
६	वत्स-भार्गव, च्यवन,आप्नुवान्, वत्स पुरोधस ५	आनजा	य०	मा०	सा०	उ०
७	कश्यप-कश्यप वत्स नैध्रुव३	गोत्रडा	०	०	ता०	अ०
८	धारणस-अगस्ति दातृव्य इध्मवाह ३	छत्रजा	य०	मा०	सा०	उ०
९	लौगाक्षि-काश्यपावत्सार शारस्तम्ब ३	महायोगिनी	य०	मा०	रा०	म०
१०	कौशिक-विश्वामित्र देवरात उद्दालक ३	यक्षिणी	य०	मा०	रा०	म०
११	उपमन्यु-वसिष्ठ प्रमह भारद्वाज ३	गोत्रडा	य०	मा०	रा०	म०
१२	वात्स्यायन-भार्गव च्यवन दांत आप्नुवान् भारद्वाज ५	भट्टारिका	य०	मा०	रा०	म०
१३	वत्सर-भार्गवादि पंच ५	चंडिका	य०	मा०	सा०	उ०
१४	भारद्वाज-आंगिरस बार्हस्पत्य भारद्वाज ३	श्रीमती	०	०	सा०	उ०
१५	भार्गेय-भार्गेय गांगीय शंषणिः ३	सिंहारोहा	०	०	रा०	म०
१६	शौनक-भारद्वाज गृत्समद शौनक ३	महाकाली	य०	मा०	ता०	अ०
१७	कुशिक-विश्वामित्र देवरात उद्दालक ३	तारणा	,,	,,	ता०	अ०
१८	भार्गव-भार्गव च्यवन जैमिनी आप्नुवान मथि ५	चामुण्डा	,,	,,	ता०	अ०
१९	पैंग्य-अत्रि आर्चिः कण्व ३	द्वारवासिनी	,,	,,	सा०	उ०
२०	आंगिरस-आंगिरस औतथ्य गौतम ३	मातंगी	,,	,,	रा०	म०
२१	अत्रि-आत्रेय और्ववान शावश्व ३	चन्द्रिका	,,	,,	सा०	उ०
२२	अघमर्षण-भारद्वाज गौतम अघमर्षण ३	दुर्गा	,,	,,	सा०	उ०
२३	जैमिनी- विश्वामित्र देवरात उद्दालक ३	विशालाक्षी	,,	,,	रा०	म०
२४	भार्ग्य-भार्गव च्यवन आप्नुवान ३	नंदा	,,	,,	रा०	म०

ब्रा० उ० मार्तण्डमें लिखाहै त्रैविद्यब्राह्मणोंके बकुला नाम स्वामी हैं, इनका निवास वहां मोढेरपुरमें हुआ वहां अनेक देवी देवताओंका निवास हुआ मातंगीदेवीका इनके विवाहादिमें विशेष पूजन होता है। ब्रह्मावर्तके अन्तर्गत सरस्वतीके दक्षिण तटपर है। कलिमें यह धर्मारण्य मेहेरपुर है, जब रामचन्द्रजी धर्मारण्यकी यात्रा करते यहां आये तब एक रात रहे वहां रातको एक स्त्रीके रोनेका शब्द सुनपडा जब रामचन्द्रजीने जाकर रोनेका कारण पूछा तब उसने कहा मैं इस पुरकी अधिष्ठात्री श्रीमाता हूं, ब्राह्मण चलेगये उनको लाकर बसाइये, तब रामचन्द्रजीने वहां त्रैविद्यब्राह्मणोंको लाकर बसाया और गोभुजवैश्योंको भी फिर स्थापन किया ब्राह्मणोंको एक ताम्र पत्र ग्राम प्रदान सम्बन्धमें लिखादिया भगवान् रामचन्द्र तीर्थयात्रा करके घरको लौट गये, जब कलिके आरंभमें आमनामक बौद्धधर्मी राजा इस देशका हुआ, तब उसने रामचन्द्रका वह ताम्रशासन नहीं माना, और ब्राह्मणोंसे कहाया तो हनूमानजीके दर्शन कराओ नहीं तो ग्राम छीनलूंगा, तब उनमें पन्द्रह सहस्र ब्राह्मण तो प्रारब्धको प्रबल मान कर्त्तव्यमूढ हो बैठरहे, कि अब इस ग्राममें हमारा अंश नहीं रहा, शेष तीन सहस्रोंने कहा तुमने शास्त्रमें पारंगत होकर प्रारब्धको ही मुख्य माना इससे तुम चातुर्वेदी म्होड नामसे विख्यात होगे, परन्तु हम उद्योगको मुख्य मानकर जायगे और हनूमानजीका दर्शन करैंगे, और ६४ गोत्रके ७२ वर्गोंमेंसे एक एक को साथ चलनेके लिये कहा कि जो कोई अपने वर्गसे नहीं आवेगा वह स्थान और अपने वर्गसे भ्रष्ट समझाजायगा न वैश्योंसे वृत्ति मिलेगी न विवाह सम्बन्ध होगा, यह सुनकर चतुर्वेदी ब्राह्मणोंके घरोंसे वीस बलात्कारसे और त्रिवेदी म्होडोंमेंसे ग्यारह ब्राह्मण भक्तिसे हनूमानजीके दर्शनको निकले, उसमें वह वीस तो मार्ग में ही बैठ गये कि दर्शन हो या नहीं, पर ग्यारह जितेंद्रिय होकर रामेश्वरको गये, और वहां अन्न जल त्यागकर बैठे, तब हनूमानजीने दर्शन दिया, और उनका दुःख देख अपने दाहिने बायें अंग के दो रोम देकर कहा, कि राजाकी यह बायें अंगको रोम दिखाना जब वह क्रोध करै, तो कहना तेरा राज्य भस्म हो, और तुम नगरके बाहर चले आना, जब नगर जलै और राजा शरण हो तब दूसरी पुडिया डालनेसे शांति करदेना; वे चिह्न लेकर ब्राह्मण ग्राममें आये, और राजाको चमत्कार दिखाया राजाने अपराध क्षमा कराया, और धर्मारण्यके सिवाय सुखवासपुर एक और ग्राम उनके रहनेको दिया, चातुर्वेदी सुखवासपुरमें रहे, कुछ सीतापुर और कुछ श्रीक्षेत्रमें जा रहे उनमेंसे जो बीस चतुर्वेदी ब्राह्मण अधविचमेंसे फिर आयेथे, वे दोनों जातियोंसे पृथक् हो आचार भ्रष्ट होनेसे जेठी मल्ल म्होड ब्राह्मण कहाये, कितने एक नीच जातिके पुरोहित हुए, मल्ला म्होडोंके गोत्र पहले कहे हैं, इनकी कुलदेवी लिम्बजाशक्ति धर्मेश्वर महादेवसे पश्चिमकी ओर इसका स्थान है। तथाहि—

चातुर्वेद्या महाराज संस्थिताः सुखवासके। केचित् सीतापुरे वासं श्रीक्षेत्रे चापरेऽवसन्॥ हनूमन्तं प्रति गता व्यावृत्य पुनरागताः॥ केचिन्मल्लाश्च संजाताः केचिच्छौंडिकयाजकाः॥

उनमें जो ग्यारह वे इयार्गणं नामसे विख्यात हुए, वे स्थान वृत्तिसे दूर होकर साभ्रमती नदीके किनारे और ऊपर जहां तहां निवास करनेलगे, यह जो त्रिवेदी म्होड ब्राह्मण थे इनके घरमें गायें बहुत थीं उनके चरानेके निमित्त विद्याहीन ब्राह्मणोंके मूर्ख बालक नियुक्त किये, वे सब गोंडोंमें ही रहते थे, ग्रामकी कुमारी तथा विधवायें उनको अपने घरोंसे भोजन लेजाती थीं, दोष संसर्गसे कुछ उनमें कन्या और विधवायें उनके संसर्ग हो गर्भवती हुईं, यह देखकर उनके माता पिताओंको बडा दुःख हुआ और उन्हों

ने वे कन्या और विधवा जिन २ से दूषित हुई थीं उन २ को देदीं, उनकी वो कानीन और गोलक संतान धेनुज म्होड नामसे विख्यात हुई, और वह उनकी जातिसे भिन्न हुई, पूर्व ब्राह्मणोंका उनके साथ विवाहादि सम्बन्ध बन्द होगया। यह मोहेरपुरके पूर्व सात कोसपर धेनुज नगरमें रहते हैं। यह ब्राह्मणत्वसे गिरगये हैं।

भिन्ना जातिस्तथैतेषां सम्बन्धो नैव तैः सह। धेनुजा ह्मोडसंज्ञा ये लोके विख्यातकीर्तयः॥ धेनुजाख्यं पुरं तत्र स्थापितं वासहेतवे।

और दूसरे म्होड ब्राह्मणोंके त्रिपाला म्होड, खीजडिया, संवाके म्होड, तांजलिये म्होड, और सुरती कपड वंजी, सरसेजी, कच्छी, हालारी, घोघारी, आदि देश ग्राम भेदसे अनेक सम्वाके भेद हैं, इस ह्मोड जातिमें अहमदाबादके पास सरखेज ग्राम है, वहां सामवेदी शिवराम ह्मोड ब्राह्मण अच्छे पंडित थे, इन्होंने शांतिचिन्तामणि आदि कई ग्रन्थ बनाये, इन ब्राह्मणोंके दिव, कोडिनार, जूनागढ, कूतियाणु, पोरबंदर, झालावाड, हलवद, धागद्रु, मोरबी, बीकानेर, राणेपुर, सियोर, भावनगर, अहमदावाद, सूरत, घोलका, भरुच, अंकलेश्वर, विरमगांव, काशी, जामनगर, मांडवी, भुज, नगर यह चौविस ग्राम हैं, इनमें यह अपनी आजीविका करते हैं।

इति ह्मोड ब्राह्मणोत्पत्तिः। (गुर्जरसंप्रदायः)

अथ झालोराब्राह्मणोत्पत्तिः।

ब्राह्मणोत्पत्ति सारसंग्रहमें लिखा है कि विवाह समयमें प्रजापतिका वीर्य उमाके अवलोकनसे पतित हुआ उस समय सत्य कहनेसे शंकरने कहा—

यावन्त्यः सिकता रेतसाप्लुताश्चतुरानन।
तावन्त एव मुनयो भवन्तु तव तेजसा॥

कि तुम्हारे वीर्यसे इस रेतके जितने कण भींगेंगे उतनेही तपस्वी वालखिल्यनामके प्रगट होंगे, ऐसे कहतेही ८८१२८ तत्त्वज्ञाता ऋषिकुमार प्रगट होगये, और जहां वह प्रगट हुए वह आश्रम पांच कोसके मध्यमें वाल्यखिल्य आश्रम कहाया, उनमेंसे ६००००साठ हजार सूर्यकी उपासना करते हुए, सूर्य लोकमें गये। ४९५ ने गङ्गा यमुनाके मध्यमें तप किया, वे अन्तर्वेदी ब्राह्मण कहाये।

(गंगायमुनयोर्मध्ये तेपुस्ते परमं तपः)

परे नव सहस्राणि जम्बुवत्यास्तटे गताः॥ रक्षिता गरुडेनैव पतमाना द्विजोत्तमाः॥ ततः पञ्चशतान्येव पंचयुक्तानि वै द्विजाः॥ द्वारकायां गतास्ते वै रक्षार्थं स्थापिता हरेः॥ अष्टादश सहस्राणि ह्यष्टाविंशच्छताधिकाः॥ ते सर्वे मुनिशार्दूलाश्चक्रुः स्वाश्रममुत्तमम्॥

९ नौसहस्रने जम्बुवतीके किनारे तप किया वेजम्बु ब्राह्मण कहाये, पांचसौ ब्राह्मण द्वारकामें गये वे गुगुली ब्राह्मण कहाये॥ १८१२८ अठारह हजार एकसो अट्ठाईस जो आश्रम करके रहे वे गारीला ब्राह्मण कहाये, गारीले ब्राह्मणोंके १२८ गोत्र हैं शेष एकसौ पचपन गोत्रोंका विभाग वैदिक ग्रन्थोंमें है ६०००० में से ३२ ऋग्वेदके गोत्री, ३२ शाखा हैं वह इस प्रकार हैं, काश्यायण, आग्रयण, आग्रायण, वा ग्रीवायण,

बृहत्, घाम, च्यवन, वसुहारुणि, सत्यश्रव, उत्तश्रव, उद्दालक, बृहत्तर, धूम्रायण,वृहद्रश्नु, गर्हित,काष्ठायन, शाकटायन, मण्डूक, नैध्रुव, मरीचि, शाकल्य, काश्यप, वात्स्य, शौशिर, मुद्गल,आत्रेय,गोलक, जातूकर्ण, रथीतर, अग्निमाहर और बलाक।

यजुर्वेदियोंके ३३ गोत्र और ८६ शाखा हैं वे गोत्र इस प्रकार हैं; पौलस्य, वैजभृत्, क्रौंच, सातुनी, चपल, धावमान, माण्डव्य, गौतम, गार्गि, कात्यायन, भरद्वाज, पाराशर्य, अग्निमान्, अनुलोम्य, शाण्डिल्य, पौलिश, पुशल, चान्द्रमास, अरुण, ताम्रायण, काण्वायन, अर्म, वत्सनरायण, जामदग्नि, वशिष्ठ, शक्ति, पतञ्जलि, भालवि, हारुणि, भार्गव, पौण्ड्कायण, सायकायणिः।

इसी प्रकार सामवेदके ३२गोत्र१३शाखा हैं वे इस प्रकार हैं। विश्वामित्र,देवराज,चितिद,गालव,कुशिक, कौशिक, धुद्रन्त, सांतस, उदधि, खलवानैल, जावालि, याज्ञवल्क्य, आङ्गुल,साहुल, सैंधवायन, गोभिलायन, शौरकि, लांगलि, कुथम, औदल, सरलद्वीप,अंशम, अपावयन, वेदवृद्ध,वैशाख, भाजुकि,लोमगायन, लौगाक्षि, पुष्पजित्, कंदु, राणायणयन।

इसीप्रकार आथर्वणोंके ३१ गोत्र और नौ शाखा हैं.औतथ्य,गौतम,वात्स्य, सौदेव, वर्चस, शाण्डिल्य, कपि,कौडिन्य,माण्डव्य,त्र्यारुणि, कौनक,नोलक,औदवाह, वृहद्रथ,शौल्कायन, संविद्य, सोमदत्ति,सुशर्मक, सावर्णि, पिप्पलाद, हास्तिन, शांशपायन, जांजलि, मुञ्जकेश, अंगिरा, अग्निवर्चस, कुमुद, आदिगुह, पथ्य, रोहिण, रौहिणायन, यह इकतीस गोत्र हैं, यह सब एकसौ अट्ठाईस होतेहैं,परन्तु सात गोत्र उसी समय नहीं रहे इससे १२१ रहे झालोरामें रहनेसे झारोला ब्राह्मण कहाये उनके १२८ गोत्र हैं।

जम्बु ब्राह्मणोंके वैगायन, वीतिहव्य, पौल, अनुसातिक, शौनकायन, जीवन्ति, कावेदी, पार्पति, वैहेति, निर्विरूपाक्षि, आदित्यायनि, मृतमार, पिंनाक्षि, जहिन, वीतिन, स्थूल, शिखापर्ण और शार्कराक्ष यह १८ गोत्र हैं।

अन्तरवेदी ब्राह्मणोंके व्याघ्रपाद, उपवीर, लैलव, कारलायन, लोभायन, स्वतिकार, चान्द्रालि,गाविनी, शैलेय, सुमना और धृति यह ग्यारह गोत्र हैं।

गुग्गुली ब्राह्मणोंके कौडिन्य, शौनक, वात्स्य, कौत्स, शाण्डायनीक यह पांच गोत्र हैं, २८३ गोत्र होतेहैं।

ब्रह्माजीने कालोरा ग्राममें रहनेवाले ब्राह्मणोंके निमित्त एक कलशमें होमकरके १८१२८ कन्या उत्पन्न कीं, और उनसे उनका विवाह करदिया, वे सब झालोरा कहाये, इनका स्थान इससमय शमीदूर्वा नामसे विख्यात है, इसको जाल्योदरमी कहते हैं। इति झालोरा ब्राह्मणोत्पत्तिः। (गुर्जरः)

अथ गुग्गुलीब्राह्मणोत्पत्तिः।

स्कन्दपुराणान्तर्गत द्वारका माहात्म्यमें लिखा है कि-

ब्रह्मविष्णुशिवैश्चैव वरान् दत्त्वा महर्षयः। स्थापिता द्वारकायां च देवदेवेन विष्णुना॥ स्वीयाश्रमविशुद्ध्यर्थं समिद्गुग्गुलजुह्वकाः। सर्वपापविनिर्मुक्तास्तेन गुग्गुलिकाः स्मृताः॥

जिससमय वालखिल्य ऋषियोंको वरदान दिया उससमय भगवान विष्णुने कुछ ब्राह्मणोंको द्वारकामें स्थापित किया उन्होंने वहां अपने आश्रमकी शुद्धिके लिये समिधा और गूगलसे होम किया, वह इस कर्मसे सब पापसे रहित हुए, और गुगली ब्राह्मण कहाये, यह द्वारिकामें श्रेष्ठ ब्राह्मण निजकर्ममें

तत्पर हुए, इनको दान देनेसे द्वारकाकी यात्रा सफल होतीहै। इनका यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखा और कुलदेवता श्रीद्वारकाधीश हैं, २७ अवटंक हैं, इनमें बारह नष्ट होगये है १५ मिलते हैं जो मिलते हैं उनके नाम लिखते हैं।

१	मीन	८	भट	१५	घेमटा
२	वायडा	९	चुवानभट	१६	ठाकोर
३	पाढ	१०	पढीयार	१७	चारणवोरठाकोर
४	पाठक	११	मांडियार	१८	घेघटाठाकोर
५	पुरोहित	१२	उपाध्याय	१९	कणवीगोरठाकोर
६	जोशी	१३	व्यास	२०	होराठाकोर
७	द्विवेदी	१४	घटकाई	२१	पिंडारियाठाकोर

इति गुग्गुलब्राह्मणोत्पत्तिः।

अथ चित्तपावनकोंकणस्थ ब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम्।

स्कन्दपुराणके सह्याद्रि खण्डमें महादेवजी कहते हैं कि एकसमय परशुरामजी समुद्रसे भूमि मांगकर शूर्पारक क्षेत्रमें निवास करतेहुए वहां ब्राह्मण स्थापनकी इच्छा करनेलगे और प्रभात समयमें सागरके किनारे खडेथे कि–

चितास्थाने तु सहसा ह्यागतांश्च ददर्श सः।
का जातिः कश्च धर्मश्च क स्थाने चैव वासनम्॥

कैवर्तका ऊचुः–

ज्ञातिं पृच्छसि हे राम ज्ञातिः कैवर्तकेति च।
तेषां षष्टिकुलं श्रुत्वा पवित्रमकरोत्तदा॥
ब्राह्मण्यं च ततो दत्त्वा सर्वविद्यासु लक्षणम्।
चितास्थाने पवित्रत्वाच्चित्तपावनसंज्ञकाः॥ १७॥

वहां अकस्मात् चिताभूमिके निकट कुछ पुरुष आकर खडे हुए, उनसे परशुरामने पूछा तुम कौन हो वे बोले हम कैवर्त हैं, हमारा साठ गांवका समूह है, परशुरामने चितास्थान पर उनको अपने तपोबलसे ब्राह्मणत्वमें परिवर्तित किया और चितास्थानपर पवित्र होनेसे चित्तपावन उनका नाम रक्खा, वे सब परशुरामकी कृपासे गौर वर्ण और विद्या सम्पन्न होगये, उनको चौदह गोत्र और साठ उपनाम दिये, पीछे प्रारब्धयोगसे उन्होंने परशुरामकी ही परीक्षा करनी चाही तब परशुरामके शापसे ही वे निन्द्य और सेवा कर्म परायण हुए, पीछे परशुरामजीने इनको चिपलोन नाम ग्राममें बसाकर यथा स्थानमें गमन किया, इनमें बहुतोंका तैत्तिरीय शाखा सम्बन्धी यजुर्वेद है यह लोग व्यापारनिष्ठ और गुणी होते हैं भोजन व्यवहार इनका महाराष्ट्रोंमें होता है। कन्यासम्बन्ध कोंकणस्थोंमें होता है; माधव कृत शतप्रश्नावलीमें ऐसा लिखा है कि सह्याद्रिके पश्चिम ओर गृहस्थी वेद शास्त्र सम्पन्न चौदह ब्राह्मण रहते थे, दैव योगसे सागरतीरवासी वर्वरम्लेच्छ उनको पकडकर लेगये (नीता सागरमध्यस्थैर्म्लेच्छैर्वर्वरकादिभिः) और उनकी संगतिसे वे कर्मभ्रष्ट होगये; उनकी संतानें हुई पीछे वे अपना ब्राह्मणत्व विचार परशुराम

की शरणमें गये और परशुरामने अपने तपोबलसे उनको शुद्ध किया उनके पूर्वोक्त चौदह गोत्र और साठ उपनाम दिये, इनकी चित्तशुद्धि की, इसकारण इनका नाम चित्तपावन हुआ, तैत्तिरीय और शाकल यह इनकी दो शाखा निर्धारित कीं, इनका एक भेद कर्कल है वह मत्स्यभोजी कन्याविक्रयकर्ता पक्षीपालक और मधुरभाषी होते हैं, सह्याद्रि खण्डका २२ वां अध्याय इस विषयमें देखना चाहिये, इसमें तीसरा भेद किरवंत है यह पानोंका व्यौपार करनेके और उनके कीडे मारनेके कारण किरवन्त कहाये और निन्द्य हुए, कोई किलवन्त भी कहाते हैं, जवल और कुडव ऐसे इनके दो भेद और हैं, यह समान प्रवरमें कन्यासम्बन्ध कर लेते थे इससे एक भेद सप्रवर हुआ ४१० शाकेमें इस दोपसे यह मुक्त हुए हैं। इति कोंकणस्थचित्तपावनब्राह्मणोत्पत्तिः।

अथ गोत्रप्रवरचक्रम्।

संख्या	उपनाम		गोत्र	गोत्रसंख्या	संख्या	उपनाम		गोत्र	गोत्रसंख्या
१	चितळे	१	अत्रि	१	२५	आचारी	१	कौण्डिन्य	३
२	आठवले	२	अ०	२	२६	माल्शे	१	वत्स	१
३	फडके	३	अ०	३	२७	उकिडवे	२	व०	२
४	मोने	४	अ०	४	२८	गांगल	३	व०	३
५	जोगळेकर	५	अ०	५	२९	जोशी	४	व०	४
६	वाडदेकर	६	अ०	६	३०	काळे	५	व०	५
७	चिपळूणकर	७	अ०	७	३१	घाघरेकर	१	व०	६
८	चाफेकर	८	अ०	८	३२	सोहनी	२	व०	७
९	चोळकर	९	अ०	९	३३	गोरे	३	व०	८
१०	दामोळकर	१०	अ०	१०	३४	दामोळकर	४	व०	९
११	मांडमोके	११	अ०	११	३५	किडमिडे	१	विष्णुवर्द्धन	१
१२	पेंडसे	१	जमदग्नि	१	३६	नेने	२	वि०	२
१३	कुण्टे	२	ज०	२	३७	परांजपे	३	वि०	३
१४	भागवत	२	ज०	३	३८	मेंहदळे	४	वि०	४
१५	वाल	१	ब्राभ्रव्य	१	३९	मंडलीक	१	वि०	५
१६	वेहरे	२	वा०	२	४०	देव	२	वि०	६
१७	काळे	१	वा०	३	४१	वेलणकर	३	वि०	७
१८	वैशंपायन	१	नैतुंदन	१	४२	लिमये	१	कपि	१
१९	मांडमोके	२	नै०	२	४३	खांबेटे	२	क०	२
२०	भिडे	१	नै०	३	४४	माइल	३	क०	३
२१	सहस्रबुद्धे	२	नै०	४	४५	जाइल	४	क०	४
२२	पिंपळखरे	३	नै०	५	४६	काळे	१	क०	५
२३	पटवर्द्धन	१	कौंडिन्य	१	४७	विद्वांस	२	क०	६
२४	फणशे	२	कौं०	२	४८	करंदीकर	३	क०	७

संख्या	उपनाम		गोत्र	गोत्रसंख्या
४९	मराठे	४	कपि	८
५०	सान्ये	५	क०	९
५१	रराटे	६	क०	१०
५२	भागवत	७	क०	११
५३	दलाल	८	क०	१२
५४	चक्रदेव	९	क०	१३
५५	धारप	१०	क०	१४
५६	आचवल	१	भारद्वाज	१
५७	टेण्डे	२	भा०	२
५८	दरवे	३	भा०	३
५९	धंधाल	४	भा०	४
६०	वांगुरडे	५	भा०	५
६१	रानडे	६	भा०	६
६२	गोळे	१	भा०	७
६३	वैद्य	२	भा०	८
६४	मनोहर	३	भा०	९
६५	घैसास	४	भा०	१०
६६	सोवनी	५	भा०	११
६७	जोशी	६	भा०	१२
६८	आखवे	७	भा०	१३
६९	राहाळकर	८	भा०	१४
७०	कण्या	९	भा०	१५
७१	करवे	१	गार्ग्य	१
७२	गाडगीळ	२	गा०	२
७३	लोंढे	३	गा०	३
७४	माटे	४	गा०	४
७५	दावके	५	गा०	५
७६	जोशी	१	गा०	६
७७	थोरात	२	गा०	७
७८	घाणेकर	३	गा०	८
७९	खंगले	४	गा०	९
८०	केलणकर	५	गा०	१०
८१	गोरे	६	गा०	११
८२	वझे	७	गार्ग्य	१२
८३	मुसकुटे	८	गा०	१३
८४	सुतार	९	गा०	१४
८५	वैद्य	१०	गा०	१५
८६	वेडेकर	११	गा०	१६
८७	भट	१२	गा०	१७
८८	भागवत	१३	गा०	१८
८९	म्हसकर	१४	गा०	१९
९०	केतकर	१५	गा०	२०
९१	दावके	१६	गा०	२१
९२	राजमाचीकर	१७	गा०	२२
९३	गद्रे	१	कौशिक	१
९४	वाम	२	कौ०	२
९५	भाद्रे	३	कौ०	३
९६	वाड	४	कौ०	४
९७	आपटे	५	कौ०	५
९८	बर्वे	१	कौ०	६
९९	वापये	२	कौ०	७
१००	भावये	३	कौ०	८
१०१	आगाशे	४	कौ०	९
१०२	गोडबोले	५	कौ०	१०
१०३	पाळन्दे	६	कौ०	११
१०४	देवधर	७	कौ०	१२
१०५	सटकर	८	कौ०	१३
१०६	कानिटकर	९	कौ०	१४
१०७	देवल	१०	कौ०	१५
१०८	वर्तक	११	कौ०	१६
१०९	खरे	१२	कौ०	१७
११०	शेंड्ये	१३	कौ०	१८
१११	कोलटकर	१४	कौ०	१९
११२	फाटक	१५	कौ०	२०
११३	खुले	१६	कौ०	२१
११४	लावणेकर	१७	कौ०	२२

संख्या	उपनाम		गोत्र	गोत्रसंख्या
११५	लेले	१	कश्यप	१
११६	गानू	२	क०	२
११७	जोग	३	क०	३
११८	लवाटये	४	कश्यप	४
११९	गोखले	५	क०	५
१२०	दातार	१	क०	६
१२१	करमरकर	२	क०	७
१२२	शिंत्रे	३	क०	८
१२३	जोशी	४	क०	९
१२४	वेलणकर	५	क०	१०
१२५	भानु	६	क०	११
१२६	छत्रे	७	क०	१२
१२७	खाडिलकर	८	क०	१३
१२८	पालकर	९	क०	१४
१२९	ठोंसर	१०	क०	१५
१३०	ओगले	११	क०	१६
१३१	विव्हलकर	१२	क०	१७
१३२	वडवे	१३	क०	१८
१३३	कान्हेरे	१४	क०	१९
१३४	मटकर	१५	क०	२०
१३५	फाळके	१६	क०	२१
१३६	सुंकले	१७	क०	२२
१३७	भट	१८	क०	२३
१३८	तरणे	१९	क०	२४
१३९	दामोदर	२०	क०	२५
१४०	भेलाढ	२१	क०	२६
१४१	कुडवें	२२	क०	२७
१४२	वेंद्रे	२३	क०	२८
१४३	कायशे	२४	क०	२९
१४४	साठे	१	वशिष्ठ	१
१४५	वोडस	२	व०	२
१४६	ओक	३	व०	३
१४७	वापट	४	व०	४
१४८	वागुल	५	व०	५
१४९	धारप	६	व०	६
१५०	गोकटे	७	व०	७
१५१	भामे	८	व०	८
१५२	पोकसे	९	व०	९
१५३	विंसे	१०	व०	१०
१५४	गोंवडे	११	व०	११
१५५	कारलेकर	१	व०	१२
१५६	दातार	२	व०	१३
१५७	दांडेकर	३	व०	१४
१५८	पेंडसें	४	व०	१५
१५९	घारपुरे	५	व०	१६
१६०	पर्वत्ये	६	व०	१७
१६१	अभ्यंकर	७	व०	१८
१६२	दांत्ये	८	व०	१९
१६३	मोडक	९	व०	२०
१६४	सांवरकर	१०	व०	२१
१६५	मातखंडे	११	व०	२२
१६६	दाणेकर	१२	व०	२३
१६७	कोपरकर	१३	व०	२४
१६८	वैद्य		व०	२५
१६९	विनोद		व०	२६
१७०	दिवेकर		व०	२७
१७१	नातु		व०	२८
१७२	महाबल		व०	२९
१७३	साठये		व०	३०
१७४	राणे		व०	३१
१७५	सोमण		शांडिल्य	१
१७६	गांगल		शां०	२
१७७	भाटये		शां०	३
१७८	गणपुले		शां०	४
१७९	दामले		शां०	५
१८०	जोशी		शां०	६
१८१	परचुरे		शां०	७
१८२	थत्ते		शां०	८

संख्या	उपनाम	गोत्र	गोत्रसंख्या	संख्या	उपनाम	गोत्र	गोत्रसंख्या
१८३	ताम्हनकर	शां०	९	२०३	पाटणकर	शां०	६
१८४	टफले	शां०	१०	२०४	शिंत्रे	शां०	७
१८५	आंबडेकर	शां०	११	२०५	व्यास	शां०	८
१८६	धामणकर	शां०	१२	२०६	घनवटकर	शां०	९
१८७	तुळपुळे	शां०	१३	२०७	लावणेकर	शां०	१०
१८८	तीवरेकर	शां०	१४	२०८	पद्ये	शां०	११
१८९	माटे	शां०	१५	२०९	मये	शां०	१२
१९०	पावगी	शां०	१६	२१०	चेहरे	शां०	१३
१९१	डोंगरे	शां०	१७	२११	रिसवुड	शां०	१४
१९२	केळकर	शां०	१८	२१२	सिद्धये	शां०	१५
१९३	विद्वांस	शां०	१९	२१३	उपाध्ये	शां०	१६
१९४	काळे	शां०	२०	२१४	राजवाडकर	शां०	१७
१९५	माइल	शां०	२१	२१५	सिधोरे	शां०	१८
१९६	भोमळे	शां०	२२	२१६	कौंझकर	शां०	१९
१९७	सहस्रबुद्धे	शां०	२३	२१७	पलनिटकर	शां०	२०
१९८	काणे	शां०	१	२१८	वाटवेकर	शां०	२१
१९९	टिळक	शां०	२	२१९	नरवणे	शां०	२२
२००	कानडे	शां०	३	२२०	पावसे	शां०	२३
२०१	नित्सुरे	शां०	४	२२१	कोपरकर	शां०	२४
२०२	गोडसे	शां०	५	२२२	माटे	शां०	२५

गोत्रसंख्या	उपनामसंख्या	गोत्र	प्रवरोंके नाम
१	११	अत्रि०	आत्रेयार्चनानसश्यावाश्वेति ३
२	३	जामदग्न्य	
३	३	बाभ्रव्य	
४	५	नैतुंदन	
५	३	कौडिन्य	
६	९	वत्स	भार्गवच्यवनाप्नवानौर्वजामदग्न्येति पंच भार्ग-वौर्वजामदग्न्येति त्रयः
७	७	विष्णुव.	आंगिरसपौरकुत्सत्रासदस्येत्येति०
८	१४	कपि	आंगिरसबार्हस्पत्यकापेयेति अन्यान्यपि त्रीणि पक्षाणि सन्ति।
९	१५	भारद्वाज	आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजेति त्रयः।
१०	२२	गर्ग	आंगिरससैन्यगार्ग्येति ३, पंच वा।

११	२२	कौशिक	विश्वामित्रदेवरातोद्दालकेति त्रयः ३ ।
१२	२९	कश्यप	कश्यपवत्सनैध्रुवेति त्रयः ।
१३	२१	वशिष्ठ	वशिष्ठशक्तिपराशरेति त्रयः ।
१४	४८	शाण्डिल्य	असितदेवलशांडिल्येति त्रयः ।

अथ षष्ट्युपनामचक्रम् ।

१ अभ्यंकर	१६ गाडगीळ	३१ ताम्हनकर	४६ वत
२ आठवले	१७ गडवोले	३२ तुळपुळे	४७ भाडभोंके
३ आचवल	१८ गोखले	३३ थत्ते	४८ मराठे
४ उकिडवे	१९ गांगल	३४ दर्वे	४९ माइल
५ करवे	२० घेघाल	३५ दावके	५० रानडे
६ करंदीकर	२१ घांगुरडे	३६ धामणकर	५१ लिमये
७ काळे	२२ चितळे	३७ नेने	५२ लोंढे
८ कारलेकर	२३ चांपेकर	३८ नातु	५३ वेलणकर
९ किडमिडे	२४ छत्रे	३९ परांजपे	५४ वैशंपायन
१० कुंटे	२५ जोशी	४० पटवर्द्धन	५५ शित्रे
११ केळकर	२६ जोग	४१ फडके	५६ साठे
१२ कोकेकर	२७ जोगळेकर	४२ फणशे	५७ सोमण
१३ खाडिलकर	२८ टेंडे	४३ वे	५८ सोवनी
१४ खोत	२९ टकले	४४ वाळ	५९ सोहनी
१५ गणपुले	३० डोंगरे	४५ वेहरे	६० सहस्रबुद्धे

इति चक्रम् ।

बंगाली ब्राह्मण ।

वंगदेशमें राठी और वारेन्द्र वैदिक प्रकृति कई एक श्रेणीके ब्राह्मण निवास करते हैं । उनमें राठीय ब्राह्मण विशेष सम्मानित और संख्यामें अधिक हैं । इन्होंने कान्यकुब्ज देशसे वहां गमन किया है । यह किस समय और क्यों वहां गये सो विस्तारसे कहते हैं।

बौद्धधर्मके प्रादुर्भाव कालमें उसके अप्रतिम तेजके प्रभावसे वंग विहारादि देशोंमें सनातन आर्यधर्मकी प्रभा प्रायः अस्तमित होगई थी । नये धर्मके प्रतिघातसे प्राचीन आर्यधर्म थरथर कम्पित होता था । लोकमें उस समय नये धर्ममें अनुराग होने लगा था । वैदिक क्रियाकाण्ड भयके कारण लोप होने लगा, जब कालक्रमसे भगवान शंकराचार्यने जन्म ग्रहण कर १०३२ मतोंका निराकरण कर बौद्धोंको सर्वथा पराजित किया; और आर्यधर्मकी उन्नति होने लगी । जिस समय महाबल पराक्रान्त राजा आदिशूर वंग सिंहासनपर विराजमान थे, उस समय ब्राह्मणोंके धर्मकी अवस्था शोचनीय थी । एक समय राज आदिशूरने पुत्रेष्टि यज्ञ करनेकी इच्छा की, परन्तु देखा कि; बंगालमें उस समय ब्राह्मणगण वेदादि शास्त्रोंसे अनभिज्ञ, आचारभ्रष्ट और ब्राह्मण्यशक्तिविहीन थे । उनके द्वारा यज्ञ सम्पादन वा कार्यसिद्धिकी संभावना न जानकर वेदपारगामी, यज्ञकार्यविशारद, सद्वंशभूत पांच ब्राह्मणोंके भेजनेको कान्यकुब्जाधिपति महाराज वीरसिंहके निकट दूत भेजा । कान्यकुब्ज राजाने उनकी प्रार्थनाके अनुसार वेदविशारद, क्रिया

दक्ष, महाप्रभावशाली पांच गोत्रके पांच ब्राह्मण भेज दिये। इन ब्राह्मणोंने शके ९९९ में उस देशमें गमन किया था। "आदिशूरो नवनवत्यधिकनवशती शताब्दे पञ्च ब्राह्मणानानयामास"। विद्यासागर-कृत कृष्ण-चरित्र।

कान्यकुब्जात्समानीतान्दूतेन द्विजपंचकान्। वेदशास्त्रेष्ववगतान्सर्वास्त्रे च विशारदान्॥ गोयानारोहितान्विप्रान्खड्गचर्मादिभिर्युतान्। पत्तिवेशान्समालोच्य विषादो जायते हृदि॥ अश्रद्धा जायते राज्ञ इति ज्ञात्वा द्विजोत्तमाः। आशीर्वादार्थनिर्माल्यं मल्लकाष्ठोपरि स्थितम्॥ तदा काष्ठं सजीवं स्यात्फलपल्लवसंयुतम्। इति दृष्ट्वा नृपस्तस्मिन्कम्पान्वितकलेवरः। स्तोत्रं च बहुधा तेषामकरोत्स नृपोत्तमः॥

इति देवीवरघटककृतकारिका।

देवीवर-घटककृत-कारिकामें लिखा है। कान्यकुब्ज देशसे दूतोंके द्वारा बुलाये हुए वेदशास्त्रमें निपुण, संपूर्ण अस्त्रोंमें पण्डित, ढाल तल्वार लिये, बैलोंकी गाडीमें बैठे, पांच ब्राह्मणोंको राजद्वारमें उपस्थित हुआ देखकर दूतोंने राजासे कहा। राजा उनके वीरवेशकी कथा सुनकर दुःखी हुआ। वे ब्राह्मणश्रेष्ठ राजाकी अश्रद्धाभावको जान गये। उसको आशीर्वाद देनेको जो निर्माल्य लाये थे वह निकटवर्ती एक मल्लकाष्ठके ऊपर स्थापन कर दिया। उनका ऐसा अद्भुत प्रभाव था कि अर्घस्थापनमात्रसे ही वह शुष्क मल्लकाष्ठ उसी क्षणमें फलपत्तोंसे शोभित होकर सजीव हो उठा। यह देखते ही वह नृपश्रेष्ठ भयसे कम्पित शरीर होकर उन ब्राह्मणोंकी अनेक प्रकारसे स्तुति करने लगा।

तब ब्राह्मणोंने प्रसन्न होकर राजाको आशीर्वाद दिया फिर राजाने उन पांच महापुरुषोंके द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराया, इस यज्ञके अमोघ प्रभावसे संवत्सरमें राजाको पुत्र हुआ। उस समय राजाने विविध प्रकारकी सामग्रीसे उन ब्राह्मणोंको तृप्त कर अपने देशमें रहनेका बडा अनुरोध किया। वह राजाकी भक्ति और विनयसे संतुष्ट होकर वहां रहनेकी इच्छा करते हुए राजाने पञ्चकोटि, कामकोटि, हरिकोटि, कंकग्राम और वटग्राम ये पांच ग्राम उनके निवास करनेको दे दिये। जिनमें वे निवास करने लगे, इन पांच महापुरुषोंसे वंगदेशमें राढी वारेन्द्र श्रेणीके ब्राह्मण समूह उत्पन्न हुए और उनके सहित जो पांच जन अनुचर थे उनके सकाशसे उस देशमें कायस्थ जन उत्पन्न हुए।

भट्टनारायणो दक्षो वेदगर्भोऽथ छान्दडः। अथ श्रीहर्षनामा च कान्यकुब्जात्समागतः॥ शाण्डिल्यगोत्रजश्रेष्ठो भट्टनारायणः कविः। दक्षोऽथ काश्यपः श्रेष्ठो वात्स्यः श्रेष्ठोऽथ छान्दडः॥ भरद्वाजकुलश्रेष्ठः श्रीहर्षो हर्षवर्द्धनः। वेदगर्भोऽथ सावर्णो यथा वेद इति स्मृतः॥ पञ्चकोटिः कामकोटिर्हरिकोटिस्तथैव च। कंकग्रामो वटग्रामस्तेषां स्थानानि पंच च॥

इति कुलदीपिका।

कुलदीपिकामें लिखा है । भट्टनारायण, दक्ष, वेदगर्भ, छान्दड और श्रीहर्ष ये कानकुब्ज देशसे आये थे । कवि भट्टनारायण शांडिल्यगोत्री, दक्ष कश्यपगोत्री, छान्दड वात्स्यगोत्री, हर्षवर्द्धन हर्ष भरद्वाजगोत्री, वेदगर्भ सावर्णगोत्रमें उत्पन्न वेदकी तुल्य हुए । पञ्चकोटि, कामकोटि, हरिकोटि, कङ्कग्राम, वटग्राम ये पांच इनके स्थान थे ।

भट्टतः षोडशोद्भूता दक्षतश्चापि षोडश । चत्वारः श्रीहर्षाज्जाता द्वादशा वेदगर्भतः । अष्टावथ परिज्ञेया उद्भूताश्छान्दडान्मुनेः ॥

इति कुलरमः ।

भट्टसे सोलह पुत्र, दक्षसे सोलह, श्रीहर्षके चार, वेदगर्भके बारह और छान्दडके आठ सुयोग्य पुत्र उत्पन्न हुए इस प्रकार इन पांच महात्माओंसे ५६ पुत्र हुए हैं ।

इन ५६ को रहनेके निमित्त राजाकी आज्ञासे एक २ ग्राम मिला था । ये जिस २ ग्राममें रहे उनकी सन्तान उसी उसी गांवके नामानुसार बोली जाती थी । उनको गांई अर्थात् ग्रामवासी कहने लगे ।

भट्ट नारायणके १६ पुत्र थे । इन्होंने राजासे १६ ग्राम भेंटमें पाये थे इस कारण षोडशागांईकी उपाधि प्राप्त थी ।

वन्द्यः कुसुमो दीर्घाङ्गी घोषली वटव्यालकः । पारी कुली कुशारिश्च कुलभिः सेयको गडः ॥ आकाशः केशरी माषो वसुयारिः करालकः । भट्टवंशोद्भवा एते शाण्डिल्ये षोडश स्मृताः ॥

इति कुल दीपिका ।

कुलदीपिकामें लिखा है । वन्द्य, कुसुम, दीर्घाङ्गी, घोषली, वटव्यालक, पारी, कुली, कुशारि, कुलभी, सेयक, गड, आकाश, केशरी, माष, वसुयारी करालक ये शाण्डिल्यगोत्री भट्टके सोलह कुमार जन्मे थे ।

दक्षके सोलह पुत्र हुए उन्होंने सोलह ग्राम पाये । उनको भी सोलह गांवकी उपाधि प्राप्त हुई ।

चट्टोऽम्बुली तैलवाटी पोडारिर्हडगूढकौ । भूरिश्च पालधिश्चैव पर्कटिः पुषली तथा ॥ मूलग्रामी च कोयारी पलसायी च पीतकः । सिमलायी तथा भट्ट इमे काश्यपसंज्ञकाः ॥

इति कुलदीपिका ।

चट्ट, अम्बुली, तैलवाटी, पोडारि, हड, गूढक, भूरि, पालधि, पर्कटि, पुषली, मूलग्रामी, कोयारी, पलसायी, पीतक, सिमलायी, भट्ट ये कश्यपगोत्री दक्षके कुमार हुए ।

श्रीहर्षके चार पुत्र हुए उसके अनुसार यह वंश चार गांई कहाया ।

आदौ मुखटी डिण्डी च साहरी राइकस्तथा ।
भारद्वाजा इमे जाताः श्रीहर्षस्य तनूद्भवाः ॥

इति कुलदीपिका ।

मुखटी, डिण्डी, साहरी, राइक ये चार पुत्र भारद्वाज गोत्र श्रीहर्षके उत्पन्न हुए ।

वेदगर्भके बारह पुत्र हुए, उनके अनुसार इनको बारह गांई की उपाधि मिली ।

गांगालिः पुंसिको नन्दी घण्टाकुन्दसियारिकाः । साटो दायी तथा नायी पारी वाली च सिद्दलः ॥ वेदगर्भोद्भवा एते सावर्णे द्वादश स्मृताः ॥

इति कुलदीपिका।

गांगलि(गंगोली), पुंसिक, नन्दीग्रामी, घण्टेश्वरी, कुन्दग्रामी, सियारिक, साटे, दायी, नायी, पारीहाल, वाली, सिद्दल, ये विख्यात बारह पुत्र सावर्ण गोत्र वेदगर्भके हुए ।

छान्दडके आठ पुत्र हुए उनके अनुसार वे आठ ग्रामी कहाये ।

काञ्चिविल्ली महिन्ता च पूतितुण्डश्च पिप्पली । घोषालो वापुलिश्चैव काञ्जरी च तथैव च । सिमलालश्च विज्ञेया इमे वात्स्यकसंज्ञकाः ॥

इति कुलदीपिका।

काञ्चिविल्ली, महिन्ता, पूतितुण्ड, पिप्पली, घोषाल, वापुलि, कांजरी, सिमलाल ये वात्स्यगोत्री छान्दडके पुत्र हुए ।

आदिशूरके बुलाये ब्राह्मणादिके वंशोंके कई एक पुरुष गत होगये इन वंशोंको विद्याचर्चा और सदाचारका लोप होने लगा । इनके दोषोंके निवारणकी इच्छासे आदिशूरके दौहित्रवंशके अधस्तन सप्त पुरुष वंगाधिपति महाराज वल्लालसेनने कुलकी प्रथा संस्थापित की । उन्होंने नौ लक्षणोंको कुलीनताका गुण निर्धारित किया वे ये हैं ।

आचारो विनयो विद्या प्रतिष्ठा तीर्थदर्शनम् ।
निष्ठा वृत्तिस्तपो दानं नवधा कुललक्षणम् ॥

इति कुलदीपिका ।

कुलदीपिकामें लिखा है । आचार, विनय, विद्या, प्रतिष्ठा, तीर्थदर्शन, कर्मनिष्ठा, श्रेष्ठवृत्ति, तप, दान यह नौ कुलके लक्षण हैं। ब्राह्मणादि वंशोंमें जिनमें नौ गुण पाये गये उनको उस राजाने कौलीन्य पदवी प्रदान की । राढीय ब्राह्मणोंके ५६ ग्राम थे । उनमें बन्द्य, चट्ट, मुखटी, घोषाल, पूतितुण्ड, गाङ्गोली, कांजीलाल और कुन्दग्रामी ये आठ गांइ संपूर्ण रूपसे नवगुण-विशिष्ट थे इसकारण इनको कौलीन मर्य्यादा प्राप्त हुई । पालधी, पर्कटी, सिमलायी, वापुली आदि चौतीस गांइ । आठ गुण विशिष्ट थे, इसकारण इनको श्रोत्रिय संज्ञा प्राप्त हुई । और दीर्घाङ्गी, पारिहा, कुलमी पोडारी प्रभृति चौदह गांई न्यून गुणोंसे संयुक्त थे इस कारण इनकी गौण कुलीन संज्ञा हुई । इनके सिवाय वंशजनाम और प्रकारके ब्राह्मण हैं, ये सब कुलीन निकृष्ट वंशमें कन्या लेने देनेसे अपने माहात्म्यसे रहित होगये । उन्हींकी वंशज संज्ञा हुई है । वंशजोंकी मर्यादा गौण कुलीनोंके बराबर है ।

वारेन्द्र श्रेणीके ब्राह्मण ।

कान्यकुब्ज देशसे आया हुआ पंच ब्राह्मणरूप यह महावृक्ष बंगालदेशमें रोपित हुआ । राढी और वारेन्द्र श्रेणी उनकी दो शाखा मात्र हैं । दोनों श्रेणी ही आदिशूरके बुलाये पंचयाज्ञिक ब्राह्मणोंसे अपनी उत्पत्ति वर्णन करते हैं । राढीय कुल शास्त्रके मतसे पांच ब्राह्मणोंके नाम भट्टनारायण, दक्ष, वेदगर्भ, छान्दड और श्रीहर्ष हैं । और वारेन्द्रोंके मतसे उनके नाम नारायणभट्ट, सुसेन, पराशर, गदाधर और

गौतम हैं। परन्तु गोत्र दोनों पक्षोंमें एक ही प्रकार है। किस समय और किस प्रकार कान्यकुब्ज संतान दो श्रेणीमें विभक्त हुए इसका यथार्थ निर्णय करना कठिन है। कोई कोई अनुमान करते हैं कि, सात आठ पुरुषोंके उपरान्त कान्यकुब्ज गणकी विलक्षण वृद्धि हुई. तब उनके मध्यमें गृह विच्छेद प्रारंभ हुआ, तब वे दो भागोंमें विभक्त होकर पृथक् थक् दो स्थानोंमें निवास करनेलगे। जो राढदेश अर्थात भागीरथीके पश्चिम और गंगाके दक्षिण तीरके मध्यवर्ती स्थानोंमें निवास करने लगे उनकी राढीय संज्ञा हुई और जो वारेन्द्र देश अर्थात् पद्मा नदीके उत्तर एव करतोया और महानदीके मध्यवर्ती प्रदेशमें वास करने लगे वे वारेन्द्र नामसे अभिहित हुए। कोई कोई कहते हैं, इन महाराजा वल्लालसेनने कौलीन मर्यादा व्यवस्थानके पहले ब्राह्मणोंको दो श्रेणीमें विभक्त किया था। जो हो श्रेणी बन्धनसे प्रथम दोनों श्रेणीका ज्ञातित्वसम्बन्ध एकबार लोपसा होकर परस्पर आहार, व्यवहार, आदान प्रदानादि रहित होगया था। दोनों श्रेणीकी वर्तमान अवस्था देखनेसे यह एक ही आदिपुरुषसे सम्भूत हैं यह बात सहसा प्रतीत नहीं होती ॥

वारेन्द्रोंने भी राजाके समीपसे निवासके निमित्त एक एक ग्राम पाया था। उनमें एक शत गांई हैं, उनमें पंद्रह गांई प्रधान हैं। महाराजा वल्लालसेनने इनके मध्यमें भी कौलीन प्रथा स्थापित की थी सुतराम् इनके मध्यमें श्री कुलीन श्रोत्रिय और कष्ट श्रोत्रिय यह तीन श्रेणी हैं। मैत्र,भीम,रुद्र,बागची,संयामिनी, लाहिडी और भादुडी ये एक गांई कुलीन है। करंज, नन्दनावासी, भट्टशाली, चम्पटी, मम्पटी,लाडुली कामदेवक और आदित्य यह गांई सिद्ध श्रोत्रिय कहाये। अवशिष्ट ८९ गांई गौड और कष्ट श्रोत्रिय कहकर विख्यात हुए हैं। वारेन्द्रके वंशजोंको काप कहते हैं।

सप्तशती सम्प्रदाय।

पञ्च ब्राह्मणके आगमनसे पहले बंगदेशमें ब्राह्मणोंके सात सौ घर थे। यह विद्या ब्राह्मण्य और आचारादि विषयमें कान्यकुब्जोंसे न्यून थे। इनके गोत्र भी पंचगोत्रके बाहिर थे,इसकारण कान्यकुब्जोंके साथ जाति अंशसे इनका मिलन न हुआ। इनकी सप्तशती नामसे विख्यात एक पृथक् संप्रदाय अश्रद्धेय होकर निवास करती थी। इनके मध्यमें आरथ, बालखावि, जगाये, भगाये, पिखूरी, मुलकजूरी, गाई आदि इनकी उपाधि थी।

इस समय सप्तशती ब्राह्मण बहुत थोडे हैं, इससे बोध होता है कि कितने एक इनमेंसे कालक्रमसे राढी, वारेन्द्र और वैदिक श्रेणीमें मिल गये। कोई कोई नीच जातियोंका पौरोहित्य स्वीकार करके तथा कोई निकृष्ट दान ग्रहण करनेसे वर्णब्राह्मण कोई कोई अग्रदानी कोई कोई ग्रहविप्र नामसे विख्यात हुए, और जो उनमें विशेष तेजस्वी और समृद्धशाली थे उनके बीचमें दो चार घर अब भी स्वभावमें स्थिति करते हैं।

वैदिक-श्रेणी।

वैदिक नामसे प्रसिद्ध इस देशमें ब्राह्मणोंकी और एक संप्रदाय है। यह भी दो श्रेणीमें विभक्त है। दाक्षिणात्य वैदिक पाश्चात्य वैदिक। यह द्राविडादि दक्षिण देशनिवासी हैं और वहीं से आये हैं। वे दाक्षिणात्य वैदिक हैं, और जो वाराणसी आदि पश्चिम देशके निवासी अथवा दाक्षिणात्योंसे पीछे आये हे वे पाश्चात्य वैदिक कहे जाते हैं।

गदाधर।

बंगाल प्रान्तके नदिया जिलेकी राढी और वारेन्द्र ब्राह्मणोंकी साम्प्रदायिक अल्ल है।

विशेषाविवरण।

कुलीन-यह बंगाल प्रान्तके राढीय ब्राह्मणोंकी एकजातिका सर्वोच्च भेद है, राढीय ब्राह्मणोंके मुख्य भेद वंशज, श्रोत्रिय, कष्टश्रोत्रिय, सुधाश्रेष्ठी और कुलीन हैं, इनमें कुलीन सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं, यदि कोई कुलीन अपनी पुत्री किसी सुधाश्रेष्ठी कष्टश्रोत्रिय आदिको देना चाहै तो उसका कुलीनत्व सदाके लिये नष्ट हो जाता है, और यदि कोई श्रोत्रिय आदि अपनी कन्या किसी कुलीनको व्याह दे तो वह भी कुलीन हो जाता है, इससे कुलीनोंकी कन्याओंकी दशा उनके उत्तम मध्यमके पदविचारसे जो होती है वह कथनसे बाहर है, इनका विचार तो कान्यकुब्जोंसे भी बढकर माना जाताहै। राजा वल्लाल सेनने गुणोंके विचार पर वहांके ब्राह्मणोंके तीन विभाग किये कुलीन, श्रोत्रिय और वंशज. जो समीप्रकार कुलगुण सम्पन्न थे वह कुलीन, जो वेदपाठी कर्मठ थे वे श्रोत्रिय और जो साधारण स्थितिके थे वे वंशज कहाये। इनमें कुलीनोंकी मान मर्यादा बहुत बडी, यह कन्यादान कुलीनोंके सिवाय अन्यत्र नहीं करते श्रोत्रिय यदि अपनी कन्या इनको देना चाहे तो बहुतसा धन लेकर उसकी कन्याको व्याहते हैं। श्रोत्रिय आदि यह समझते हैं कि कन्या यदि कुलीनके जायगी, तो कन्याकी सन्तान भी कुलीन कही जायगी कुलीन ब्राह्मण सौ सौ दो सौ व्याह करते हैं और बारी २ फिर ससुरालमें जाया करते हैं प्रायः उन कन्याओंका समय पीहरमें ही बीता करता है और पतिदेव समय २ पर जाकर भेंट सत्कार लाते रहते हैं और इसप्रकारसे एक २ ससुरालमें वरसों बाद फेरा होता है, स्त्रियें अपने पतिको पति स्त्रीतकको पहचान नहीं सकते, एकपतिके परलोकगत होनेसे अनेकों विधवा हो जाती हैं, इन वंशोंमें कुरीतियें जो हो रही हैं यदि यह ठीक करदी जायँ तो ब्राह्मण जातिका बडा उपकार हो।

काप-यह भी बंगाली ब्राह्मण जातिका भेद है, यह वारेन्द्र समुदायके अन्तर्गत है। कहते हैं कि यह मंत्र बलसे मेघ वर्षा देते थे, इस कारण इनकी वारीन्द्र संज्ञा हुई, इनकी उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है कि मधु मोइत्र नामक कुलीन ब्राह्मणके कई स्त्री थीं। उनकी पहली स्त्रीसे काप हुए, यह मधुमुइत्र अतरई नदी (जो बंगाल स्टेट रेलवेसे मिलान करती है) के किनारेके एक नये गांवका रहनेवाला था। यह भी कुलीनोंके समान कई विवाहोंके अधिकारी हैं उनके प्रथम विवाह की आख्यायिका इस प्रकार है कि-एकसमय एक अकुलीन ब्राह्मण कुलीनोंके मध्यमें जीमनेको चला गया; वहां उसका अपमान हुआ तब उसने कुलीन होनेका प्रयत्न किया, और अपनी कन्या किसी कुलीनको देनी निश्चय कर अपनी स्त्री कन्या और गऊको साथले नावपर सवार होकर जहां मधुमोइत्र रहता था उसी गांवके किनारे गया उसने वहां मधुमोइत्र नामक कुलीन ब्राह्मणका पता पूछा, जिससे पूछा यह मधुमोइत्र ही था यह उस समय सूर्यको अर्घ देरहा था, इसने कहा मधु मैं ही हूँ कहिये क्या आज्ञा है। तब इस अकुलीनने कहा याती आप हमारी कन्या व्याह लें नहीं तो मैं यहीं कुटुम्ब और गौ समेत नावको डुबोकर मर जाऊँगा, मधु दयावान था, उसने इसकी करुणा भरी बात सुनकर दयार्द्र हो उस कन्यासे विवाह कर लिया मधुके पूर्व पुत्रोंने इस बातसे बहुत बुरा माना, और उसी दिनसे वे अपने पितासे पृथक् रहने लगे, उससमय वृद्ध मधुका पालन उसका एक कुलीन जीजा करता था, मधुने क्रोध करके अपने पुत्रोंको (काप) अर्थात् कर्तव्यविहीन कहकर पुकारा उस दिनसे यह वंश काप कहाया। यह वंश कुलीन और श्रोत्रियोंके मध्य माना जाता है।

गंगोली-यह बंगाल राढी ब्राह्मण समुदायका कुल नाम है, इसका अपभ्रंश अब गंगो है, यथा गंगोपाध्याय, यह कुल उस प्रान्तमें प्रतिष्ठित समझा जाता है, वल्लाल सेनने जिन ब्राह्मणोंको गङ्गाके समीपी

नगरोंकी उपाध्यायी दी थी, वे गंगोपाध्याय कहाये, कोई कहतेहैं इसका अपभ्रंश गंगोली हो गया है परन्तु अब तो गंगोली ही विख्यात पदवी है ।

कश्मीरी ब्राह्मण ।

कश्मीर देशनिवासी ब्राह्मण कश्मीरी ब्रह्माण कहातेहैं, सौन्दर्य विद्या सद्गुण सम्पन्नता इनमें इस समयतक वर्त्तमान है, इस जातिने आज तक भी हीनता नहीं दिखाई जैसा कि अन्य ब्राह्मण जाति दीन हीन होकर विचार रही है । यह अपनी मान मर्य्यादाको इससमय तक निवाह रहे हैं, इनका कुलपद पंडित कहाता है । दूसरे ब्राह्मणोंके समान इनके गोत्र प्रवर भी हैं इनका विवाह देखने योग्य होता है ।

गुह—यह दक्षिणी राठी ब्राह्मणोंके अन्तर्गत एक जाति है ।

अथ शुकब्राह्मणोत्पत्तिः ।

श्रीवेंकटेश माहात्म्यमें लिखा है कि छाया शुकके विवाह होनेपर उन्होंने वेंकटाचल पर्वतमें आके पद्मसरोवरके समीप कठिन तपस्या की ।

प्राप्य कृत्वा तपस्वींत्र सरोम्बुजदलैः सृजन् । समेयान्मानसान्पुत्रान-ष्टोत्तरशतं द्विजान् ॥

वहां कमलपत्रोंसे एकसौ आठ मानसी पुत्रोंको उत्पन्न किया, और भारद्वाजादि छः गोत्र उनके किये और वेंकटेशजीके अर्चनादिमें उनको नियुक्त किया, उसदिनसे ब्राह्मण तथा उनकी संतान शुक ब्राह्मण नामसे विख्यात हुई । यह द्रविड संप्रदायी हैं ।

अथ दधीचकुलोत्पन्नब्राह्मणाविवरणम् ।

दधीच संहितामें लिखाहै (जो कि नीलकंठ विरचित है) कि ब्रह्माजीने अथर्वण ऋषिको उत्पन्न करके कर्दमकी कन्या शांतिके साथ विवाह किया, उनके एक कन्या और एक पुत्र हुआ, कन्याका नाम नारायणी और पुत्रका नाम दधीच हुआ, यह भाद्र शुक्लाष्टमीको जन्मे थे, तृणविन्दुकी कन्या वेदवतीके साथ इनका विवाह हुआ, एक समय इनकी तपस्यासे भीत हो इंद्रने अप्सरा भेजी उनको देखकर ऋषि मोहित हुए उस समय उसका वीर्य स्खलित होने लगा, तब ब्रह्माजीने सरस्वतीको वीर्य धारणके लिये प्रेषित किया, और कहा यदि तुम यह वीर्य धारण न करोगी, तब पृथिवी भस्म हो जायगी, सरस्वतीने तत्काल जाकर अपने योग बलसे उस वीर्यको कंठ, कान, नाभि और हृदय इन चार स्थानोंमें धारण किया, और उस वीर्यसे चार पुत्र उत्पन्न हुए जो कंठसे उत्पन्न हुआ वह और उसके वंशके सब ब्राह्मण श्रीकण्ठ सारस्वत हुए, जो कर्णसे उत्पन्न हुए वह कर्णाटकसारस्वत, नाभिसे उत्पन्न हुआ सो सारस्वतोंकाअधिपति और हृदयपर वीर्यके गिरनेसे हरिदेव सारस्वत हुआ । इनके वंशको स्थिर रखनेका वर दे देवी स्वर्गको गई ।

कंठे जाताश्च श्रीकंठाः कर्णे कर्णाटकाः स्वयम् ॥ तव नाभौ च यो जातः सारस्वतकुलाधिपः॥हृदिजो हरिदेवोस्ति सर्वे सारस्वताः स्मृताः॥

पीछे ऋषिके औरससे तृणविन्दुकी कन्या वेदवतीमें पिप्पलाद ऋषिने जन्म ग्रहण किया, यह बडे तपस्वी हुए, इनका विवाह अनरण्य राजाकी पद्मा नामक कन्यासे हुआ, इनके इस स्त्रीमें वृहद्वत्स, गौतम, भार्गव, भारद्वाज, कौत्सस वा कौशिक, कश्यप, शाण्डिल्य, अत्रि, पराशर, कपिल, गर्ग, कनिष्ठ

वत्स वा: (मम्म) यह बारह पुत्र हुए, इनमें एक एकके बारह २ सन्तान हुई । और दधीचका वंश बहुत वढा, कल्पान्तरके भेदसे इनकी अनेक कथा हैं । अब छन्यात अर्थात् छः जात ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं, यह गौड जातिके अन्तर्गत हैं ।

ब्रह्माजीको वंशपरंपरामें एक ब्रह्मर्षि पुत्र हुआ, उनके वंशसे पारब्रह्म पारब्रह्मके कृपाचार्य कृपाचार्यके दो पुत्र हुए, इनमें छोटे शक्तिके पराशर नामादि पांच पुत्र हुए, पराशरके वंशमें पारिख, दूसरा सारस्वत, उसके वंशमें सारस्वत; तीसरा ग्वाल इसके वंशधर गौड, चौथा गौतम इससे वंशवर गुर्जर गौड, पांचवा शृंगी इसके वंशके सिखवाल ब्राह्मण हुए, दधीच कुलमें ही दायमा ब्राह्मण हुए । वह कथा ऐसीहै कि दधीच ऋषिकी सत्यप्रभा नामक स्त्री अपने पतिका परलोक गमन सुनकर अपने गर्भको पीपलके नीचे त्याग भस्म होगई, पीछे स्वर्गमें जाकर बालकके निमित्त बहुत दया आई, तब उसने देवीकी प्रार्थना की, मूल प्रकृतिने उसके वंशमें अपने पूजनका विशेष विधान स्वीकार कराकर उस बालकके पालनेको आई और पीपल वृक्षके नीचे उस वालककी स्थिति होनेसे उसका नाम पिप्पलाद हुआ, और दया पूर्वक पालित होनेसे उस वंशके ब्राह्मण दायमा कहाये, इनको कपालात्मा देवीका जो पुष्करसे वीसकोस हैं, अवश्य दर्शन करना चाहिये, इनके भी भेद ग्रामोंके नामसे हुए, दायमा ब्राह्मणोंके ग्यारह गोत्र माध्यन्दिनी शाखा शुक्लयजुर्वेद है. छन्यातोंकी उत्पत्ति जनश्रुति और भाटोंसे सुनकर लिखी गई, इनका एक भेद असोप मारवाडमें सुना जाता है ।

दायमा ब्राह्मणोंके गोत्रादिका वर्णन ।

संख्या	गौतमगोत्रशाखा १५	अवटंक	सं०	वत्सशाखा १७	अ०	सं०	भार्गवगोत्रशाखा १२	अ०
१	पाठोधा	जोशी	१	रतावा	व्यास	१	इनाण्या	व्यास
२	पलोड	,,	२	कोलिवाल	,,	२	पथाण्य	,,
३	नाहावाल	,,	३	वलदवा	,,	३	कासल्या	,,
४	कुम्भ्या	,,	४	दोलाण्या	,,	४	शिलणोधा	,,
५	कंठ	,,	५	चोलखा	,,	५	कुराडवा	,,
६	बुढाढरा	,,	६	जोपट	,,	६	जाजोधा	,,
७	खटोल	व्यास	७	इटोधा	,,	७	खेवर	,,
८	बुडबुणा	,,	८	पोलगला	,,	८	विसाव	,,
९	बगड्या	,,	९	नोसरा	,,	९	लाडनवा	,,
१०	वेडवन्त	,,	१०	नामावाल	,,	१०	वडागणा	,,
११	वानणसीदरा	,,	११	अजमेरा	,,	११	कडलवा	,,
१२	लेलेघा	,,	१२	कुकंडा	,,	१२	कापडोधा	,,
१३	काकडा	,,	१३	तरणावा	,,		कौच्छसगोत्रशाखा ११	
१४	गगवाणी	,,	१४	अवडिग	,,	१	डिडवाण्या	व्यास
१५	भुवाल	,,	१५	डिडियेल	,,	२	मालोधा	,,
			१६	मुस्या	,,	३	धावडोदा	,,
			१७	भग	,,	४	जाडल्या	,,

संख्या	अवटंक	संख्या	अवटंक	संख्या	अवटंक	संख्या	अवटंक
५	डोमा आचार्य	६	ल्यालि व्यास		काश्यपगोत्रशाखा ८।		आत्रेयगोत्रशाखा४
६	मुडेल ,,	७	वरमोय ,,	१	चोराईडा	१	सुदवाल
७	माणजवाळ ,,	८	इन्दोरवाल ,,	२	दिरोल्या	२	जुजणोद्या
८	सोसी ,,	९	हलसुरा जोशी	३	जामावाल	३	डुवास्या
९	गोटेचा ,,	१०	भटाल्या ,,	४	शिरगोडा	४	सुरुल्या
१०	कुदाऊ ,,	११	गदिया व्यास	५	रायथला		
११	त्रेतावाल ,,	१२	सोल्याणि ,,	६	वडवा		गर्गगोत्रशाखा १।
	भारद्वाजगोत्रशाखा १२।		पाराशरगोत्रशाखा २।	७	वलाया	१	तुलस्या
१	पेडवाल	१	भेडा	८	चोलक्या		
२	,, शुक्ल	२	पाराशच्या		शांडिल्यगोत्रशाखा ५।		
३	करेशा ,,		कपिलगोत्रशाखा १	१	खणा		
४	मालोवा ,,	१	चीपडा	२	वेडिया		
५	आशोपा ,,			३	वेड		मम्मशाखा-
				४	गोठडावाल		इस शाखाके लोग अनाचार-
				५	दहेवाल		के कारण म्लेच्छरूप हो गये।

दिसावालब्राह्मणोत्पत्तिः।

कहा जाताहै कि ब्रह्माजीने सृष्टिवृद्धिकी इच्छासे गुजरात देश में बनास नदीके समीप ब्रह्मक्षेत्रमें विश्वकर्मासे एक दर्शनपुर नामक सुन्दर नगर बनवाया, जो आवडीसा कहाता है, उसमें सिद्धमाताका मन्दिर निर्माण करके दर्भसे १८ सहस्र ब्राह्मण निर्माणकर उस नगरमें स्थापित किये, और सिद्धमाताकी उपासनाका उपदेश किया, पीछे देवताओंने उनको कन्या दी और भरद्वाज, वशिष्ठ, शाण्डिल्य, कौशिक, श्वेतमुख, पौलस्त्य, पराशर, और कश्यप इन आठ ऋषियोंसे ब्रह्माजीने कहा आप अपने नामके गोत्रोंसे इनका विवाह कराओ, ऋषियोंने वैसाही किया. देवकन्याओंने कहा जबतक इस वंशमें कोई प्रतिग्रह न लेगा तबतक हम यहां निवास करैंगी, पीछे उन ब्राह्मणोंकी सेवाके निमित्त ब्रह्माजीने ३६००० वैश्य स्त्रियों सहित सेवक रूपसे दिये, वे वैश्य दिशावाल कहाये, इन सबका ब्रह्मनाम गोत्र है, कलिने अपने आगमन कालमें ब्राह्मणका वेष धारणकर ब्राह्मणोंकी प्रतिज्ञा नष्ट करनेको दिसा नगरमें प्रवेश किया और उस नगरमें एक ब्राह्मणके यहां कन्यादान होरहा था वहां कलिराजने ब्राह्मणके रूपसे विवाद चलाया कि विनाप्रतिग्रहके विवाह नहीं होता, यद्यपि हम प्रतिग्रह नहीं करते हैं पर यदि यह ब्राह्मण प्रतिग्रह करैं तो हम भी करसकते हैं। उस समय दिसावाल वनियोंने प्रार्थना की वे ब्राह्मण कलिकी मायासे मोहित होगये, और दान लिया, कलियुग तो तत्काल अन्तर्धान होगया, पर ब्राह्मणोंके घरकी देवांगनायें तत्काल प्रतिग्रहदोषके कारण पतियोंको छोड स्वर्गमें गईं, तब दिसावाल वैश्योंपर ब्राह्मणोंने क्रोधसे आघात करना आरंभ किया, तब वे व्याकुल होकर जो दसाड नामक गांवमें रहे वह दसादिसावाल हुए, जो दिसामें रहे वे वीसा दिसावाल हुए, और जो दोनों गांवको छोडकर तीसरे गांवमें वसे वे पंचादिसावाल हुए, और यह कर्महीन होनेसे सत् शूद्र हुए, जब नवदुर्गामें ब्राह्मण देवीकी उपासनामें वैठे थे उस समय एक ऋषि

वायडापुरमें आये और उन्होंने वहांके ब्राह्मणोंसे विवाहार्थ एक कन्या मांगी, पर किसीने न दी, तब क्रोध से उन्होंने शाप दिया कि यहां की कन्याओंका पाणिग्रहण जो ब्राह्मण वायडा करेगा वह तत्काल मर जायगा यह जानकर ब्राह्मण बडे दुःखी हुए, और कन्याओंको साथ ले दीसा गांवमें आये और सिद्ध० माताकी स्तुति की, तब देवी बोली यहां १६ सहस्र कन्या तुम्हारे पास हैं, और दो सहस्र की कमी है, सो दो सहस्र झारोले ब्राह्मणोंकी कन्या एक दैत्य हरण करके लेगया है, उसको मारकर वे कन्या लाओ मैं सहायता करूंगी । तब वे ब्राह्मण उस दैत्यको मारकर वे कन्या लाये तब वायडे और झारोले दोनों कोटिके ब्राह्मणोंने मिलकर दिसावाल ब्राह्मणोंको उन अठारह सहस्र कन्याओंका संकल्प किया, इन दिसावाल ब्राह्मणोंमें धोरी चौधरी व्यास जोशी रावल पंड्या अध्यारु मेहता आदि अवटंक हैं । इति, यह भी गुर्जर सम्प्रदाय कहा जाता है ।

अथ खेडवाल ब्राह्मणोत्पत्तिः ।

गुर्जर देशमें एक ब्रह्मखेट नामक नगर है, उस देशमें वेगुवत्स नामक एक राजा इल्व नगर (ईडर) निर्माण करके रहता था, उसके कोई पुत्र न था एक समय उस देशमें द्रविड देशके ब्राह्मण तीर्थ यात्राके उद्देश्यसे आये, और अपना उत्तरीय वस्त्र नदीपर बिछाकर उन्होंने नदी पार की, राजाने नाविकोंसे य वृत्तान्त सुनकर उनको वहां बुलाया और पुत्र होनेके निमित्त उनसे पुत्रेष्टि यज्ञ कराया, जब दान लेनेका समय आया तब उन दोनों द्रविड भ्राताओंमेंसे बडे भाईकी इच्छा दान लेनेकी हुई, और चौदहसौ ब्राह्मण उसके साथी हुए, छोटे भाईने दान लेनेसे अनिच्छा प्रगट की, और उसके साथी २९० ब्राह्मण हुए, राजाने यह गडबड देख ईडरके द्वार बंद करादिये तिसपर भी वह २९० ब्राह्मणोंके सहित भीत लांघकर गांवके बाहर होगये, वे खेडेसे वाहर हो जानेके कारण खेडावाल ब्राह्मण कहाये, वे इस समय धर्मकर्मनिष्ठ गुजरातमें ओड, उमरेट प्रांतमें तैलंग, द्राविड देशमें चीनपट्टन, मदुरा, पंचनद, तंजापुर, तिणवल्ली आदि गावोंमें प्रसिद्ध हैं, राजाने इन ब्राह्मणोंको फिरमी ताम्बूलोंमें लिखकर लकारान्त चौवीस गांव दिये और चौदहसौ ब्राह्मणोंको सुवर्ण और गोदान देकर ब्रह्मखेटक पुरमें बसाया, राजाका मंत्री लाड वैश्य था, उसने इस जातिके ब्राह्मणोंको अपने पौरोहित्यमें वरण किया, खेडावाल ब्राह्मणोंमें एक खेटुआ ब्राह्मण. जाति है, यह औदुम्बर ब्राह्मणकी वृत्ति करते हैं ।

खेडावाल ब्राह्मणोंके ग्राम गोत्र प्रवरादिका चक्र ।

सं०	ग्राम	कुलदेवी	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा
१	मुरेली	उमादेवी	शांडिल्य	शांडिल्यअसित देवल	ऋ०	आश्व.
२	राहोली	मलावी	कम्पिल	आंगिरस बार्हस्पत्य च्यवन उपमन्यव समान	ऋ०	आ०
३	त्रिष्णोली	विश्वावसु	उपमन्यव	उपमन्यव वत्साश्रित भारद्वाज	ऋ०	आ०
४	त्रिणोली	कुलेश्वरी	चित्रानस	चित्रानस विश्वामित्र देवराज	ऋ०	आ०
५	आत्रोली	दिवाकरबाई	जातूकर्ण्य	जातूकर्ण्य विश्वामित्र वच्छस	य०	मा०
६	पंचोली	आशापुरी	भारद्वाज	भारद्वाज आंगिरस बार्हस्पत्य	ऋ०	आ०
७	सिंगाली	मोराही	उपनस	विश्वामित्र देवराज औदज	ऋ०	आ०
८	मोवोली	महालक्ष्मी	वत्सस	उरपराप्रत्र भारद्वाज जमदग्नि च्यवन	ऋ०	आ०
९	वडेली	चामुण्डेश्वरी	गौतम	गौतम आंगिरस औतथ्य	ऋ०	आ०
१०	कंगाली	महालक्ष्मी	शामानस	शामानस भार्गव च्यवन और्वजमदग्नि	ऋ०	आ०

सं०	ग्राम	कुलदेवी	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा
११	वृडेली	बडेयी	लम्बुकर्णस	लंबुकरण असित देवराज	ऋ०	आ०
१२	शिहोली	श्रिया	काश्यप	काश्यप अवछंद नैध्रुव	सा०	कौ०
१३	शियोली	महालक्ष्मी	कौडिन्य	कौडिन्य वशिष्ठ मित्रावरुण	ऋ०	आ०
१४	रेनाली	मूलेश्वरी	लातपस	बार्हस्पत्य सामानस इन्द्रवाह	य०	मा०
१५	लिहाली	रविदेवी	सजानस	आंगिरस गौतम भारद्वाज	य०	मा०
१६	नालोली	नित्यादेवी	बिल्वस	आगस्त्य वेनाद्य जानायत	अ०	सा०
१७	आदरोली	पिठायी	पौनस	आंगिरस बार्हस्पत्य आस्तीक	सा०	कौ०
१८	काल्लेली	कृष्णायी	कृष्णात्रि	अशिक विश्वामित्र देवल	य०	मा०
१९	मारेली	बिल्वई	गार्ग्यस	आंगिरस बार्हस्पत्य भारद्वाज	ऋ०	आ०
२०	भूपेली	बेहेमायी	मुद्गल	मुद्गल आंगिरस भारद्वाज	ऋ०	आ०
२१	खुटाली	मालाया	लौकानस	विश्वामित्र देवराज औद्दल	य०	मा०
२२	कालोली	पिठाई	बार्हस	३	अ०	सा०
२३	चंगेली	चंगेली	आंगिरस	अत्रि अर्चन शिवशिव	य०	मा०
२४	हिरोली	हिरायी	आंगिरस	आंगिरस नैध्रुव शौनक	य०	मा०

अथ रायकवालब्राह्मणोत्पत्तिः ।

पूर्व कालमें सत्यपुंगव नाम एक महर्षि थे वे १२९२ शिष्योंके संग नन्द्यावर्तमें निवास करतेथे, एक समय गुजरात देशान्तर्गत कठोदर गांवके राजाने यज्ञ करनेके निमित्त इन ऋषिराजको बुलाया, और यज्ञ कराकर उनको कठोदर,कुबेरथली,कणभार,कुजाडु,कलोली यह पांच गांव देकर शिष्यों सहित वहीं निवास कराया, मुनिराज लक्ष्मीकी आराधना करते हुए वहां रहनेलगे, एकसमय प्रसन्न हो जपके समय लक्ष्मीने आकर ऋषिसे वर मांगनेको कहा परन्तु ऋषिको उस समय निद्रा आगई थी, और लक्ष्मी अन्तर्धान हुई कि ऋषिकी आंख खुली, पीछे जागकर और लक्ष्मीका आगमन जानकर 'क रायः क रायः' ऐसा कहने लगे अर्थात् (लक्ष्मी वा धन कहां हैं)और शिष्योंसे कहा तुमने हमको जगाया नहीं इसकारण तुम सब रैक्ववास (रायकवाल) नामसे विख्यात होंगे अर्थात (रायः) लक्ष्मी (क) कौनसे स्थलमें, है ऐसे स्थानमें निवास होनेसे रैक्ववास नाम हुआ, इनके गोत्र कुत्स, वत्स,वशिष्ठ,गालव,भरद्वाज, उपमन्यव, कृष्णात्रेय, कश्यप,शांडिल्य, अत्रि, कुशिक, पाराशर, गौतम, गर्ग, उद्दालक, कौशिक, आंगिरस, कात्यायन यह अठारह हैं, कुलदेवी ललिताम्बिका, मूलनाथ शिव, स्थान कठोदरपुर, यजुर्वेद, माध्यन्दिनी शाखा, कोकिल मतको मानतेहैं, इनमें कुछ कालसे बडे छोटे दो तडे होगयेहें । संवत् १९३० मेषके सूर्य वैशाख शुक्ल पक्षमें द्वितीयाके दिन राजा रामने दोनोंको एकत्रित कियाथा । इति रायकवालोत्पत्तिः । गुर्जरसम्प्रदायः ।

अथ रोडवालादिब्राह्मणोत्पत्तिः ।

अब रोयडा, नापल, बोरसदा, हरसोरा, गोरवाल, बावीसा और गारुड ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं, पूर्वी औदीच्य ब्राह्मण जो सिद्धपुर क्षेत्रमें निवास करतेथे उनमेंसे कितने एक ब्राह्मण मारवाड देशमें गये, वहां जो रोयडा ग्राममें बसे वे रोयडा, दूसरे बजवाण गांवमें रहनेसे उसी नामसे युक्त हुए, यह बहुधा कृषि करते और कचित् १ पढते भी हैं, इनकी कुलदेवी राजेश्वरी है, इनका भोजन व्यौहार

वडादरा और म्होड ब्राह्मणोंमें होताहै, इससमय यह जाति गुजरात देशमें कठलाद, सरोडा, वीकानेर, महमदावाद, धोडासर इन पांच ग्रामोंमें निवास करती है, दूसरे पूर्वी सहस्र औदीच्य ब्राह्मणोंके दो बालक विद्यामें पण्डित हुए, गुजरात देशके एक राजाका ऐसा नियम था कि जो विद्वान स्त्रीसहित उसके यहां जाकर अपनी विद्याकी परीक्षा देता उसको ग्राम मिलता। इन दोनोंने विचारा कि हमारा विवाह नहीं हुआ है, राजा गृहस्थी हुए बिना ग्राम न देगा, इससे यह दोनों अन्य जातिकी स्त्रियोंको साथ लेकर अपनी भार्याकी समान सूचित करते हुए राजसभामें गये, तब राजाने इनकी विद्यासे प्रसन्न होकर एकको बोरसद दूसरेको नापल ग्राम दिया, नापलके अधिन दूसरे नौगांव थे, नापु, वोरियु, गाना, मोगरी, नावलि, वेमी, नोमेण, सिंगराय और पुरी उनके नाम थे, पीछे जब वे उन कन्याओंको त्यागने लगे तब उन्होंने कहा यदि तुम हमारा प्रतिग्रह न करोगे तो राजासे हम सब भेद खोल देंगी. तब भयसे उन्होंने उनको रख लिया, इससे वह अपनी पूर्व जातिसे वहिष्कृत हो नापल और वरसोदे कहाये, यह यजुर्वेदी माध्यन्दिनी शाखावाले हैं, इनका भोजन और कन्यासम्बन्ध अपने वर्गमें ही होता है, हरसोलेकी उत्पत्ति इसप्रकार है कि गुजरातमें हरिश्चंद्रपुर एक ग्राम है, वह इस समय हरसोल कहाता है, यह अहमदाबादसे ईशानमें २२ कोस है, कोई कहते हैं सामलाजी इसी पुरीमें विराजते हैं। रुद्रगया माहात्म्यमें इसका उल्लेख है, वहांके राजाने एक यज्ञ करके वह पुर उन ब्राह्मणोंको दिया जो ऋत्विक् हुए थे, इसकारण ग्रामके नामसे वे हरसौले ब्राह्मण कहाये, और उनके सेवक वैश्य भी हरसौले कहाये।

ब्राह्मणोंके मुद्गल, कौशिक, भारद्वाज, पाराशर, आदि छः गोत्र हैं। इनकी कुलदेवी अष्टादश हाथवाली सर्वमङ्गला है, सामलजीमें इनका दर्शन होता है, यह ब्राह्मण इससमय सूरत म्हाडबंदर खानदेश जिला निमाड काशी हरसौल आदि ग्रामोंमें पाये जाते हैं, गोरवाल, वावीसे ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति इस प्रकार है, कि एक समय उदयपुरके राजाने सहस्रऔदीच्य ब्राह्मणोंको बुला कर यज्ञ कराया, उसकी दक्षिणामें वावीस और गोलनामक ग्राम और बहुतसा सुवर्ण दान किया, वहां रहनेवाले वे ब्राह्मण उन्हीं २ ग्रामोंसे विख्यात हुए। वहां एक गरुडगलिये ब्राह्मण हैं। यह यथार्थमें गारुड थे यह ब्राह्मणोंमें निकृष्ट हैं, अधम चाण्डालादि जातियोंके यहां कर्म कराते हैं, तिथि ग्रह देखते हैं वह भी गुर्जर सम्प्रदायान्तर्गत हैं।

इति रोयडादि उत्पत्ति।

अथ भार्गवब्राह्मणोत्पत्तिः।

वायुप्रोक्त रेवाखण्डमें शंकर कहते हैं कि, रेवा नदीके उत्तरकी ओर भृगुजीने बडी तपस्या की और शंकरके वरदान तथा लक्ष्मीजीकी कृपासे वह स्थान भृगुक्षेत्र कहाया, एक समय भृगु और लक्ष्मीका कलह हुआ तब ब्राह्मणोंने भृगुके भयसे स्थानके भयसे असत्य बोला इस पर लक्ष्मीने वहांके चतुर्वेदी ब्राह्मणोंको शाप दिया कि तुममें एकता न होगी, और लक्ष्मी बहुत काल तुम्हारे यहां न रहेगी। इसपर उसी भृगुकच्छमें शंकरका भृगुजीने बडा तप किया तब शिवने प्रसन्न हो वर दिया कि यह स्थान वेदशास्त्रसम्पन्न ब्राह्मणोंसे संयुक्त होगा, पीछे भृगुकी ख्याति नाम स्त्रीमें श्रीनामक कन्या उत्पन्न हुई, उसका विवाह जब भगवान् विष्णुसे हुआ तब नारदादि ऋषि और सब देवता तथा कश्यपादि महर्षि वहां आये, तब लक्ष्मीनेविष्णुजीकी सम्मतिसे वहां बारह हजार ब्राह्मणोंको स्थापन किया।

ब्रह्मचर्यव्रतस्थानां पदं ब्राह्मजयैषिणाम् ।
द्वादशैव सहस्राणि सन्ति वै सुरसत्तम ॥

चौवीस सहस्र प्राजापत्य और बारह सहस्र ब्रह्मपदकी इच्छावाले वहां लक्ष्मीने स्थापन किये वे सब भार्गव ब्राह्मण कहाये ।

पंचत्रिंशत्सहस्राणि वैश्यानामत्र संस्थितिः ।
विश्वकर्मकृतानां च तेषु तिष्ठन्तु वै द्विजाः ॥

और पैंतीस सहस्र वैश्य विश्वकर्माने वहां उनकी सेवाको स्थापन किये वे भार्गव वैश्य कहाये यही गौनागौनी तीर्थ है वहीं इनके विवाह होते हैं ।

भृगुक्षेत्रे स्थिता ये तु भार्गवास्तत्र संज्ञया ॥

भृगुक्षेत्रमें रहनेके कारण यह भार्गव कहाते हैं, इन ब्राह्मणोंमें भी दसा वीसाभेद हैं, कामलेज ग्रामोंमें जो भार्गवोंका जथा है वे धर्ममें बडा आलस्य करते हैं, इनका भृगु क्षेत्री ब्राह्मणोंसे कन्या सम्बंध नहीं होता । भृगुक्षेत्रके ब्राह्मण स्वकर्मनिष्ठ हैं ।

इति भृगुब्राह्मणोत्पत्ति गुर्जर सम्प्रदाय ।

अथ मेदपाठब्राह्मणोत्पत्ति । (ब्रा० उ० मार्तण्डके मतसे)

अब मेवाडे ब्राह्मण और वैश्योंकी उत्पत्ति पद्मपुराणके पातालखण्डके एकलिंग क्षेत्र महात्म्यके अनुसार लिखते हैं । जब नारदजीसे तक्षक आदि नागोंने अपने वंशके विनाशका होनहार वृत्तान्त सुना तब वासुकी नाग मेवाडदेशमें जहां एकलिंगेश्वर महादेवजी विराजते हैं, वहां आनकर शंकरकी सेवा करने लगा, तब शंकरने प्रसन्न हो नागराजसे भावी उपद्रव शांतिके लिये कहा कि, मेरे स्थानके समीप तीर्थभूमिमें तुम एक पुर निर्माण करके वहां ब्राह्मणोंको स्थापन करो, वे तुमको आशीर्वाद देंगे उससे तुम्हारी शान्ति होगी और उन ब्राह्मणोंकी सेवाके लिये वैश्य सुतार आदि दूसरी जाति स्थापन करो मैं और कात्यायनी उस पुरमें निवास करेंगी, भट ब्राह्मणोंको दान देनेसे तुम भय हरण करनेवाले हुए, इस कारण उस पुरका नाम भयहर होगा, और हरके भक्त जो ब्राह्मण इसमें निवास करेंगे इस कारण इस पुरका दूसरा नाम भट्टहर होगा, और ब्राह्मण जो वैदिक मंत्रोंसे इसपुरका रक्षण करते रहेंगे, इस कारण इस पुरका नाम नागरभी होगा, और पुरके अनुसार ब्राह्मणोंके भी तीन नाम होंगे, भयहर, मेवाडे और नागर मेवाडे कहावैंगे । ऐसा कहकर शंकरने कुछ ब्राह्मणोंका दर्शन कराया और कहा यह चौवीस गोत्रके ब्राह्मण हैं, इनको श्रीभट्टहरपुरमें स्थापन करो, और इनकी सेवाके निमित्त चतुर्गुण वैश्य स्थापन करो, और उनसे आधे वास्तुविद्यामें कुशल, मेवाडे सुतार सुनार लुहार तम्बोली नापित सब स्थापन करो यह सब मेवाडे नामसे विख्यात होंगे ।

श्रीमद्भट्टहरेभट्टान्मेदपाठान्द्विजोत्तमान् ॥ ४७ ॥ चतुर्विंशतयो गोत्रपतयः पुण्यवृत्तयः । वणिजो भट्टसंयुक्ता मेदपाठाः पुनस्त्वमी ॥ शिल्पिनापि च ते भट्टमेदपाठा गुणान्विताः ॥ ५२ ॥

भट्ट मेवाडी ब्राह्मणोंके शिष्य दूसरी जातिके भी होंगे उनको मेरे समीप त्रयंवायपुरमें निवास कराना वेत्रवायमेवाडे (त्रवाडी मेवाडे) कहावैंगे, और चौरासी ग्रामोंकी वृत्ति करनेसे चौरासी मेवाडे कहावैंगे, यह भट्टमेवाडे ब्राह्मणोंकी आज्ञामें रहेंगे, इनमें एक चौथी ज्ञातिवाला भेद हुआ । जो चौवीस गोत्रसे पृथक् हुआ, अर्थात् प्रत्येक गोत्रसे पृथक् वृत्तिकरनेके कारण चौविसेनामसे विख्यात होगा और बंधुत्वकरणमें विख्यात होगा, सो—

स्वबंधुत्वेन विख्यातो बंधुलः पंचविंशकः । स्वतंत्रः स तु विज्ञेयो ज्ञातौ परमशोभनः ॥ भट्टो मुख्यतमस्तेषां गुरुत्वेनोपगीयते ॥९५॥

बंधुल ज्ञाति पंचीला ब्राह्मण होगा यह ज्ञाति भेद स्वतंत्र होगा । और परन्तु भट्ट मेवाडे इनके गुरुरूप रहेंगे, यह कह कर शंकर अन्तर्धान होगये, और विश्वकर्माको बुलाकार वासुकीने नगर निर्माण किया और यह सब जाति स्थापन की, श्रीभट्ट हरपुरका दान किया, इस क्षेत्रमें गणपति, कात्यायनी देवी, भट्टार्क, शिव, एकलिङ्ग महादेवजी मुख्य हैं, भट्टमेवाडे ब्राह्मण जो चौवीस गोत्रके हैं, उन सबोंकी बंधुकी समान प्रीति करनेसे रक्षण करनेसे बंधुल नामसे पंचीसा विख्यात हुआ, इनका भट्टमेवाडे ब्राह्मणोंमें भोजन व्यवहार जातिसम्बन्ध एकत्र होता है. कहीं विवाहसम्बन्ध अपने ही वर्गमें करते हैं, भट्ट मेवाडे वैश्य सुनार सुनार तम्बोली आदि जो स्थापन किये उनका कर्म उनके वर्णानुसार ही जानना, और जिस समय राजा जन्मेजयने सर्पसत्र किया था और आस्तीकद्वारा यज्ञ समाप्त हुआ, तब वासुकीने प्रसन्न हो वहां नागदहपुर निर्माण किया, और वहां कुछ ब्राह्मण और वैश्य स्थापन किये उन ब्राह्मण और वैश्योंका नाम नागदह हुआ ।

ततो नागदहं नाम पुरं निर्माय वासुकिः । ब्राह्मणान्कतिचित्तत्र स्थापयामास तत्पुरे ॥ ११० ॥ सेवायै द्विजवर्णानां वणिजो द्विगुणास्ततः । नागदाहेति नामानः स्थापिताः प्रत्यवर्तयन् ॥ १११ ॥

यह ब्राह्मण और वैश्य भट्ट मेवाडोंके आधीन रहे, एक मुखागर कहावत चली आती है कि, एक समय एक नागकन्याका विवाहोत्सव आरंभ हुआ, तब जो वर व्याहने आया, उसके मुखकी विषैली वायुसे व्याकुल हो गांवके द्वार (भगोल) तक भाग गया । इस कारण उसके अनुयायी और वंशके भटमेवाडे कहाये, तब उसके छोटे भाईने उससे विवाहकी इच्छा की वह भी विषैली वायुसे व्याकुल हो चौहट्टे तक भागगया । उसके वंशके चौरासी मेवांडे कहाये, तीसरा भाई मूर्छित हो भूमिपर गिरा तब नागकन्याकी सखी वोली जब ऐसा है तो तेरे साथ व्याह कौन करैगा ? तब नागकन्याने सोच विचार कर एक गुडका नाग बनाय विष उतारनेके लिये मूर्छित वरके ऊपर डाला, वह उठकर खडा होगया और उसने उस कन्याके साथ विवाह किया, उसके वंशके त्रिपाणी (त्रिवाडी) मेवाडे कहाये, इन त्रिवाडियोंमेंसे एकने म्होडब्राह्मणकी कन्यासे विवाह किया, और अपने जातिवालोंकी नसुनी इस कारण वे जातिसे पृथक् हुए और राजस मेवाडे कहाये, इन सबमें अबभी नागकी पूजा होती है, गुडमय नाग विवाहके समय षोडशोपचारसे पूजा जाता है व्याहके समय वर मूर्छित होकर पलंगपर लेट जाता है, दुलहन पास आकर गुडके छींटे देती है तब वर उठकर नागकी पूजा करता है पीछे विवाह होता है ।

मेवाडोंके गोत्र प्रवरादिका चक्र ।

सं० गोत्र प्रवर अवटंक

१ कृष्णात्रेय-कृष्णात्रेय, अर्चि, अजावत्स- श्चेति ।

२ पाराशर-वशिष्ठः सित्थः पाराशरश्चेति ।

३ कात्यायन-कपिलः,कात्यायनःविश्वामित्र- श्चेति ।

४ गर्ग-गर्गः च्यवनः अंगिरश्चेति ।

५ शाण्डिल्य-शाण्डिल्यः असितो देवलश्चेति ।

६ कुशक-कुशकः अघमर्षणः विश्वा- मित्रश्चेति ।

७ कौशिक-कौशिकः देवराजः विश्वामित्र- श्चेति ।

८ वत्स-वत्सः च्यवनः और्वः आप्नुवान् जमदग्निश्चेति ।

९ वात्स्य-वात्स्यः च्यवनः मोद्गलः जमदग्निः ईषवश्चेति ।

१० भारद्वाज-भारद्वाजःआंगिरसःवार्हस्पत्यश्चेति। पंड्या उपाध्या

११ गार्ग्य-गार्ग्यः च्यवनः आंगिरसः ईषः वार्हस्पत्यश्चेति ।

सं० गोत्र प्रवर अवटंक

१२ उपमन्यु-उपमन्युः उतथ्यः आंगिरसः भारद्वाजः वार्हस्पत्यश्चेति ।

१३ कौंडिन्य-कौंडिन्यांगिरसवार्हस्पत्याः ३ ।

१४ गौतम-गौतमाङ्गिरसौतथ्येति ।

१५ काश्यप-कश्यपः कुच्छुतमः मानातिः लोहितः भार्गवश्चेति । अध्यारु पंड्या ।

१६ माण्डव्य-माण्डव्यः मण्डकेयः विश्वामित्रश्चेति ।

१७ चन्द्रात्रेयः वत्सः कृत्स्नश्चेति ।

१८ भार्गव-भार्गवः च्यवनः आप्नुवान और्वः जमदग्निश्चेति

१९ गालव-गालवः तपयक्षः हारीतः उपकल्पितः जयन्तश्चेति ।

२० विष्णुवृद्ध-पौतुम्युः उत्पुत्रः सदस्यश्चेति ।

२१ मुद्गल-मौद्गल्यांगिरसवार्हस्पत्यश्चेति ।

२२ मौनस-मौनसभार्गव वैतष्वसश्चेति ।

२३ वार्द्धि-वार्द्धिः दालभ्यवार्हस्पत्याः ।

२४ अत्रि-अत्रिगाविच्छ पूर्वातिथ्यश्चेति ।

इति मेदपाटब्राह्मणोत्पत्तिः ।

पंचद्रविडमध्ये गुर्जराः ।

अथ मोतापालब्राह्मणोत्पत्तिः ।

स्कन्दपुराणके तापीमाहात्म्यमें रुद्रभगवान् कहते हैं कि, जब श्रीरामचन्द्रजी तापी नदीके समीप आये तब सुमन्तु ऋषिसे कहा मैं यहां स्नानकरके कुछ दान करूंगा तब ऋषिने कहा हम तो दान नहीं लेंगे पर हिमालयकी ओरसे कुछ ब्राह्मण यहां स्नान करने आये हैं, वे प्रार्थनासे दान लेलैंगे, रामचन्द्रजीने महावीरद्वारा उनको बुलाया और बडी प्रार्थनासे दान दिया और वहां एक रामसरोवर बनाकर उस तापीके किनारे मुक्ति स्थानमें जिसे अब मोतागांव कहते हैं अठारह सहस्र ब्राह्मणोंको स्थापन किया वे सब मोताल कहाये, उनके चरण धोनेका जो जल बहा उससे मुक्तिदा नदी बह निकली, इन मोताल ब्राह्मणोंका एक भेद ओरपाल कहा जाताहै, (तदोरुपत्तनं क्षेत्रं तदेव शिरसंयुतम्) वही नागतीर्थके निकट उरुपत्तन क्षेत्र है, इसीको ओरपाल कहते हैं यह शिरस गांवसे मिलाहुआ है, रामचन्द्र भगवानने इस स्थानमें भी ब्रह्माजीको बुलाकर १८००० अठारह सहस्र ब्राह्मणोंकी स्थापना की (सहस्राष्टादश विप्रा (माने)

स्थापयामास राघवः) यह सब ओरपाल मोताले कहाये । उस क्षेत्रका नाम रामक्षेत्र हुआ, इन सबकी, कण्व शाखा और सात गोत्र हैं । भारद्वाज, हारीत, गर्ग, कौडिन्य, कश्यप, कृष्णात्रेय और माठर । तापी और समुद्र संगम स्थानपरभी रामचन्द्रजीने गंगातटवासी ब्राह्मणोंको बुलाकर वहां यज्ञ करके स्थापन किया और भगवानकी आज्ञासे वहां गंगाजी प्रगट हुई ।

अष्टादश सहस्राणि गोत्राणि द्वादशैव तु ।
स्थापयामास रामोपि भुक्तिमुक्तिप्रदान्द्विजान् ॥ ४६ ॥

उस समय उन ब्राह्मणोंके बारह गोत्र थे परन्तु अब इनमें भी ऊपर लिखे सात गोत्र मिलते हैं, यह ब्राह्मण भी सिरस कहाये, मोता और पाल और सिरस यह तीन ग्रामके ब्राह्मण मोताले कहाते हैं, और कोकिल मुनिके मतको मानते हैं, इनकी स्त्री पतिमरजानेके पीछे फिर पिताके गोत्रमें मिल जाती है । श्रीमाली, दिसामाल रायकवाल और कंडोल ब्राह्मण भी कोकिल मतको मानते हैं यथा हि--

मौक्तिकादिद्विजाः सर्वे कोकिलस्य मुनेर्मतम् ।
मन्यन्ते ब्राह्मणाश्चान्ये तथा दिग्पालवासिनः ॥

इति मोतालादिब्राह्मणोत्पत्तिः । गुर्जरसम्प्रदायः ।

अथौदुम्बरकापित्थवाटमूलशृगालवाटीयब्राह्मणोत्पत्तिः । (ब्राह्मणोत्पत्ति मा०)

हरिवंशके भविष्यपर्वके नामसे लिखा है, जिस समय शंकरने त्रिपुरका वध किया तब उनमेंसे जो बहुतसे असुर बचे वे सब जम्बूमार्गमें जाकर ऋषियोंकी निवास भूमिमें वृक्षोंके आश्रित तप करनेलगे कोई उदुम्बर (गूलर) के वृक्षका आश्रय करके रहे, वे उदुम्बर गण कहाये, और जो कपित्थ (कैथ) के वृक्षका आश्रय करके रहें वे कपित्थगण कहाये । और कितने एक शृगाल वाटीमें तप करने वाले बडके झाडका आश्रय करके तप करने लगे वे वाटमूलगण कहाये, जब उनकी तपस्यासे ब्रह्माने प्रसन्न होकर वर मागनेको कहा उन्होंने अपने बदला लेनेकी इच्छा की तब ब्रह्माजीने कहा चराचरमें कोई शंकरसे बदला ले नहीं सकता, तब दैत्योंने पट्पुरमें जाकर शंकरका तप आरंभ किया, पीछे शंकरने प्रसन्न हो दर्शन दिया, और कहा जो कि तुमने मेरी भक्ति की है, और ऋषियों से दीक्षा ली है, तथा हिंसादिका त्याग किया है, इसकारण तुमको वर देता हूं कि तुम ऋषियोंके साथ स्वर्गमें गमन करोगे और शेष तपस्वी ब्रह्मवादी जो कपित्थका आश्रय करके रहेहैं उनको मेरे लोककी प्राप्ति होगी ।

औदुम्बरान्वाटमूलान्द्विजान्कापित्थकानपि ।
तथा शृगालवाटीयान्धर्मयुक्तान्दृढव्रतान् ॥

और उदुम्बर वृक्षके आश्रयवाले औदुम्बर, वाटमूल, कापित्थ, शृगालवाटीय, ब्राह्मण कहावेंगे और धर्मात्मा दृढव्रत रहेंगे, मेरा पूजन करनेसे इच्छित गति होगी, यह कहकर भगवान् शंकर अन्तर्धान हुए, और उन लोगोंके वंशधर कापित्थादि ब्राह्मण कहाये । पर यह कथा हरिवंशमें नहीं है ।

इति औदुम्बरादिउत्पत्तिः । द्रविडमध्ये गुर्जरसम्प्रदायः ।

अथ अनावाला भाटेला ब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम् ।

स्कन्दपुराणके उत्तरखण्ड अनादिपुर माहात्म्यमें लिखा है कि-

एकदा त्रिपुरं जेतुं शिवः सर्वार्थसाधनः । अष्टादशसहस्राणि ब्राह्मणान्ब्रह्मवादिनः ॥ वरयामास शान्त्यर्थमनादिपुरपत्तने ।

एक समय शंकरने अनादिपुरमें अठारह सहस्र ब्राह्मणोंका त्रिपुरवधके निमित्त वरण किया और त्रिपुरको मारकर वहां उन ब्राह्मणोंको स्थापन करके वहां तीर्थ स्थापन किये, पीछे वहुतकाल बीतनेपर वहांसे ब्राह्मण गंगाकिनारेको चलेगये, त्रेतायुगमें जब रामचन्द्रजीने तीर्थप्रस्तावमें व्रतके लिये तीर्थ पूछा तो अगस्त्यजीने कहा यहांसे अनादिपुर एक स्थान एकसौ बीस कोस है, आप वहांके ब्राह्मणोंको गङ्गातटसे लाकर स्थिर स्थापन करो और वहीं व्रत करो तब रघुनाथजीने हनूमानजीके द्वारा उन ब्राह्मणोंको बडी कठिनतासे बुलवाया, महावीरजी उनको गंगालाने की प्रतिज्ञासे बुला लाये । रामचन्द्रजीने उनका पूजन किया और चैत्रशुक्ल चतुर्दशीके दिन पृथिवीमें बाण मार कर गङ्गा प्रगट की वही रामगङ्गा कहलाई वहां श्रीरामचन्द्रजीने ग्यारह दिन यज्ञ किया, पीछे जब ब्राह्मणों को दान देने लगे तब उन्होंने दान लेनेसे सर्वथा असन्तुष्टता दिखाई, तब श्रीरामने कहा जो तुम लोग श्रुतिस्मृति विहित दान धर्म नहीं मानते तो आगेको तुम वेदाध्ययनसे हीन हो जाओगे, अध्ययन यज्ञ और दान यह तुम्हारे तीन रहेंगे, यह कह विश्वकर्माको बुलाय नगर बनवाय उन अठारह सहस्र ब्राह्मणोंको रहनेको दिया, उनमें एक भाग स्त्री विहीन था, उनके निमित्त नागकन्याको लाकर विवाह दिया, सीता महारानीने नागकन्याओंको मनुष्यरूप दिया, उन वंशोंमें आजतक कपालकी वेणीमें बाणाकारका चिह्न दीख पडता है, फिर रघुनाथजीने उन ब्राह्मणोंको नौसौ नौ ग्राम दिये, और बारह गोत्र अवटंक सहित किये, वे ये हैं कश्यप, रैभ्य, गौतम, पराशर, उशना, गालव, अगस्त्य, गार्ग्य, सांख्यायन, कण्व, और वच्छस, वसिष्ठ और नायक. दो इनमें अवटंक हैं, सूरत नगरके निकट तीन कोसपर एक बादियाव ग्राम है जिसको संस्कृतमें वादिताप्यक्षेत्र कहते हैं वहां संवरण राजाने तापीके साथ विवाह किया, उसमें आनादिपुरके १८००० ब्राह्मण बुलाये और वरणमें उनको एक सौ सोलह ग्राम दिये, तथा सम्वरणेश्वर महादेवका स्थापन किया, उनमेंसे दो गोत्रके ब्राह्मण वरियाव ग्राममें रहगये १० अनादिपुरमें चले गये, सर्वकार्यमें कुशल नायक कहाये, परिपूर्ण कुशल वंशी कहाये उनमें जिन्होंने दरिद्रोंकी दरिद्रता दूर की वे वारिण कहाये । तथा च-

नायकाः सर्वकार्येषु वशिनो विषयेषु च । निवारयन्ति ये तेषां दरिद्राणां दरिद्रताम् ॥ वारिणास्तेन ते प्रोक्ता वारिताप्ये स्थिता अपि॥ एवं नानाविधानास्ते काले भिन्नेन कर्मणा । वसंत्यद्यापि विख्यातेऽनावालेऽनादिपत्तने ॥

इसप्रकार वे सब अनादिपुर (अनावलाग्राममें) अद्यापि निवास करते हैं यह सब प्रतिग्रहसे पराङ्मुख हुए हैं । इन अठारह हजार ब्राह्मणोंमेंसे बारह हजार ब्राह्मणोंने जो नागकन्याओंका प्रतिग्रह किया और रामचन्द्रजीने नौसौ ग्राम दिये वे अबतक अनावले जिमीदार देसाई कहे जातेहैं और जिन्होंने नागकन्या तथा प्रतिग्रह दोनों स्वीकार न किये वे माटेले अनावला कहे जाते हैं । माटेला शब्द कर्मभ्रष्टताका

वाचक है । यह लोग कृषिकर्म करते हैं, इनमें कन्याविक्रयभी होता है, भाटेला देशाई अनावलाका भोजन व्यवहार एक पंक्तिमें होता है, कन्याव्यवहारमें भाटेलेके कन्या लेते हैं, देते नहीं ।

इति अनावलाभाटेला देशाई उत्पत्तिः गुर्जरसम्प्रदायः ।

अब दूसरे अनेक विध ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं ।

माध्यंजनाखिस्तिया ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति ।

यह ब्राह्मण तापीनदीके किनारे श्रीरामचन्द्रजीके स्थापन किये हुए हैं । यह श्रौतस्मार्त कर्ममें निष्ठ हैं, आचार और भाषाव्यवहार गुजराती और महाराष्ट्रोंका मिलकर है, इनकी बस्ती तापीनदीके निकट वर्ती ग्रामोंमें है, अब यह कर्म त्याग कर चुके हैं इस कारण व्यापारनिष्ठ हैं इस कारण खिस्तिये ब्राह्मण कहाते हैं, यह व्यापार नौकरी विशेष करते हैं, आचारसम्पन्न थोडे हैं ।

इति खिस्तिया ब्राह्मणाः ।

गयावालब्राह्मणोत्पत्तिः ।

विष्णु भगवानने गयासुरको दबाकर अपनी सेवाके निमित्त जो ब्राह्मण स्थापित किये वे गयावाल ब्राह्मण कहाये । यह विष्णुजीके वरदानसे छत्र चमर धारण करनेवाले बडे प्रतापी हुए, इनकी कृपासे पितृगणकी मुक्ति मानी गई है । इनके वचनोंसे श्राद्धकी पूर्ति मानीजाती है, गयामाहात्म्य इनके विषयमें देखना चाहिये ।

इति गयावालब्राह्मणाः ।

नार्मदीय ब्राह्मण ।

ओंकार तथा मांधातृ प्रान्तमें नर्मदातटपर निवास करते हैं, काम्बोज ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति इस प्रकार है कि ब्रह्मदेशसे ईशानकोणमें काम्बोज (कम्बोडिया) देश है, वहांके निवासी काम्बोज ब्राह्मण कहाते हैं, इस देशमें इरावती नदी वहती है, यह ब्राह्मण गौडाचारके समान हैं ।

सोमपुरे ब्राह्मण ।

सौराष्ट्र अर्थात् सोरठ देशमें सोमपुरी प्रभास पाटणमें सोमेश्वर महादेवजीके समीप चन्द्रमाने अपना क्षयरोग दूर करनेके निमित्त यज्ञ किया, और ब्राह्मणोंको वरण किया और उनको दान मानसे सन्तुष्ट किया, और उन ब्राह्मणोंका वहां निवास कराया, वे सब सोमपुरे ब्राह्मण कहाये ।

कपिलक्षेत्रके रहनेवाले कपिल ब्राह्मण कहाये, लाटदेशके लाट ब्राह्मण कहाये, नारदजीके स्थापित किये नारदीय ब्राह्मण कहाये, नादोर्थ, भारती, नन्दवाणे यह ब्राह्मणोंके नाम ग्रामभेदसे जानना, मैत्रायणी ब्राह्मण तापीतटनिवासी हैं ।

अब बत्तीस ग्रामभेदसे ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहते हैं ।

सह्याद्रि खण्डके प्रमाणसे कहाजाताहै कि, स्कन्दजी कहने लगे हैं मांगहके पुत्र मयूर नामक राजाने अहिक्षेत्रसे कुटुम्बसहित बुलाकर ब्राह्मणोंको स्थापन किया, और ३२ ग्राम देकर उनको उसी नामसे वरण किया । कदम्बकाननमें तीन, गोकर्णमें चार, युक्तिमतीके किनारे दो ग्रामोंको स्थापन किया । सीताके दक्षिण किनारे ध्वजपुरीमें ब्राह्मणोंको स्थापन किया, अजपुरीमें चार ग्राम करके स्थापन किया, अनन्तेशके समीपमें दश ग्रामोंको स्थापन किया, और नेत्रवतीके उत्तर किनारे एकग्रामको स्थापन करके उनके मध्य गजपुरीमें नृसिंहजीको स्थापन किया, जहां पूर्वमें सिद्धेश्वर और पश्चिममें लवणसागर है, उत्त-

रमें कोटिलिंगेश और दक्षिणमें सीता है, वह संसारमें वैकुण्ठ ग्राम नामसे विख्यात है, शेष नेत्रवतीके उत्तर किनारे नौ ग्रामोंको स्थापन करके वहां आयेहुए श्रोत्रिय ब्राह्मणोंको प्रदान करादिये, वह ब्राह्मण वहां आनंदसे रहनेलगे, पीछे राजा मयूरवर्मा अपने बालक पुत्र चन्द्रांगदको राज्य समर्पण कर तपस्या करने वनको चला गया, उस समय वे ब्राह्मण बालक राजाके राज्यसे चले गये, पीछे जब चन्द्रांगद बड हुआ तब उन ब्राह्मणोंको फिर प्रार्थना कर बुलालाया, और एक पुरचूडा श्रेष्ठ नगर बसाकर उनमें उन ब्राह्मणोंको स्थापन किया, और उन उन ग्रामोंके नामानुसार उनके नाम हुए यथा—

कारेऊनामके ग्रामे चतुर्भेदांश्च संख्यया । तथा कर्काटिमध्ये तु ह्यष्टभेदांश्चकार सः ॥ तथैव मरणे ग्रामे द्वितीयं भेदविस्तरम् । कानुवीनां तु मध्ये च भेदौ द्वौ द्वौ च पार्थिवः ॥ पांडिग्रामे वेद-संख्यास्तद्वत्कोडीलनामके । मागवे ग्रामके चैव वेदवद्भेदमंहसः । मित्रनाडुग्राममध्ये तद्वत्पार्थिवनन्दनः ॥ निर्मार्गकग्र ममध्ये चकार ऋषिसंख्यकम् । सीमन्तुग्राममध्ये तु नवभेदांश्चकार सः ॥ शिवव-ल्यां विशेषज्ञस्त्रिंशद्भेदं शतोत्तरम् । अष्टादशादि तद्वच्च चत्वारिंशच्च मध्यमाः ॥ अथाष्टावजपुर्यां च तथा नीलांबरे कृताः । कूटेष्टौ गृहभे-दाश्च द्वयं स्कन्दपुरे कृतम् ॥ पश्चिमे षोडश ग्रामा ह्येवं भेदान्वि भज्य च । श्रीपांडिग्राममुख्ये तु पंच भेदाश्चकार सः ॥ तथैव कौंडि-लग्रामे द्वौद्वौ भेदौ कृतौ मुदा॥कारमूरुग्राममध्ये द्वौ भेदावाह पार्थिवः तथैव चोज्जये ग्रामे भेदानाह स षोडश । तदर्धं कर्तुमार्गे तु भेदा नाह महीपतिः ॥ चीरकोडी ग्रामकोऽन्यं सदसद्भेदमाह सः ॥१०॥

अर्थात् कारेऊ ग्राममें चार भेद करके स्थापन किये वे कारेऊ ब्राह्मण कहाये, कर्काटी ग्रामके आठ भेदवाले कर्काटी ब्राह्मण कहाये, दो भेदवाले मरणग्रामके मरणनामवाले, कानुवीग्रामके दो भेदवाले कानुवी, पाडीग्रामके चार भेदवाले पाडी, कोडिलग्रामके कौडी (कोंकणदेशनिवासी) चार भेदवाले, मागव ग्रामवासी मागव, मित्रनाडुग्रामवासी मित्रनाडु, सातभेदवाले निर्मार्गक ग्रामके निर्मार्ग, नौभेदवाले सीमन्तुग्रामके सीमन्तु, एकसौतीस भेदवाले शिववल्ली ग्रामके शिववल्ली, अठारह, चालीस, तथा आठभेद वाले अजपुरी और नीलांबरमें बसनेवाले अजपुरी, आठ भेदवाले कूट ग्रामवासी कूट, दो भेदवाले स्कन्दपुरवासी स्कन्द, पश्चिममें सोलह ग्रामोंमें इस प्रकार निवास कराया, पांच भेदवाले पांडी ग्रामवासी पांडी, दो भेदवाले कौंडिल ग्रामवासी कौंडिल, दो भेदवाले कारमूरु ग्रामवासी कारमूरु, सोलह भेदवाले उज्जयग्रामवासीउज्जय, कर्तुमार्गमें इससे आधे इसीनामवाले चीरकोडी ग्रामवासी चीरकोडी ब्राह्मण कहाये।

वामीजुरुग्रामके तु द्विभेदं वै चकार सः । पुरग्रामे च चत्वारि वल्ल-मंजे त्रयं तथा ॥ हैनाडुग्रामके ग्रामे वेदवद्भेदमाचरेत् । तथैव इचुके

ग्रामे षड् भेदानाह भूमिपः। केमिंजे भेदमेकं च पालिंजद्वितयं तथा॥ शिरपाडिमहाग्रामे पंचभेदाश्चकार सः। कोडिपाडिग्राममध्ये भेदं स ऋषिसंख्यकम्॥

दो भेदवाले वामीजुरु ग्रामके वामीजुरु, चारभेदवाले पुर ग्रामके पुरग्रामी, तीन भेदवाले वल्लुमजग्रामवासी वल्लुमंजी कहाये। चारभेदवाले हेनाडुग्रामवासी हैनाडु, छः भेदवाले इचुक ग्रामवासी इचुक, एक भेदवाले केमिंज ग्रामवासी केमिंज, दो भेदवाले पालिंज ग्रामके पालिंज, पांचभेदवाले शिरपाडिके शिरपाडि, सातभेदवाले कोडिपाडिग्रामके कोडिपाडि ब्राह्मण कहाये। यह कोंकणदेशमें रहते हैं। इसप्रकार इनके ग्रामोंका ७३ संख्याका विस्तार है। ग्रामोंमें २०६ गृहभेदोंको इस राजाने स्थापन किया, परन्तु यह सब ३२ ग्रामवासी कहकर विख्यात हैं।

इति द्वात्रिंशद्ग्रामवासिब्राह्मणोत्पत्तिः। (ब्राह्मणोत्पत्तिमा०)

अगस्त्य ब्राह्मण–अगस्त्यगोत्री ब्राह्मण अपनेको अगस्त्यब्राह्मण कहते हैं, क्रतुऋषिने अगस्त्यके पुत्र दृष्मवाहको गोद लेकर अपना वंश चलाया यही अगस्त्य ब्राह्मण कहाये।

अथर्ववेदी–यह उडीसाके ब्राह्मणोंमें वेदानुसार एक जाति है।

अधिकारी ब्राह्मण–यह बंगाल तथा उडीसाके ब्राह्मणोंका एक भेद है यह प्रायः चैतन्यस्वामीके शिष्य होतेहैं यह उपाधिभेद है पहले इनके पूर्वज शास्त्रादिमें अधिकार रखतेथे इस कारण यह पदवी पाई।

अम्बलवशी–यह ट्रावनकोरके पुजारी ब्राह्मणोंकी संज्ञा है; कोई इनको नाम्बूरी जातिमें मानते हैं।

अष्टसहस्र–यह द्रविड ब्राह्मणोंका स्मार्त भेद है, यह आर्कट त्रिचनापोली तंजौर तिन्नावेली मदुरा आदि स्थानोंमें पाये जाते हैं। किनारी और तैलंगी भाषा बोलते हैं। शांकर और रामानुज दोनों सम्प्रदाय मानते हैं, मद्यमांसका किसीप्रकार सेवन नहीं करते। भौंके मध्य चन्दन या सिन्दूरका गोलाकार तिलक लगाते हैं।

अशूद्रप्रतिग्राही–वे ब्राह्मण जो शूद्रोंके यहांका दान नहीं लेते।

अरवतत्रकाल्ल–कर्णाटकी ब्राह्मणोंका एक भेद है। माधवाचार्यकी सम्प्रदाय है।

अरवेलु–यह तैलंगी ब्राह्मणोंका एक गोत्रभेद है।

अद्वैत–बंगाल प्रान्तमें सन्तीपुरके वारेन्द्र ब्राह्मण जीवब्रह्मकी एकता माननेसे अद्वैत संज्ञक हैं।

अहिनरू–महाराष्ट्रोंका कुलभेद है।

अराढय–एकप्रकारके तैलंगी उपब्राह्मण हैं यह अर्द्धमुंडित लिंगायत हैं।

आचारल्लू–दक्षिणप्रान्तमें श्रीवैष्णवब्राह्मणोंका एक भेद है।

आभीरगौड–जो गौड ब्राह्मण आभीरजातिकी पुरोहिताई करते हैं।

आयर–यह द्रविड देशके स्मार्त ब्राह्मणोंकी जातिका एक भेद है यह वर्माभी कहलाते हैं; इनके चोला, वर्मा, सवायर, जवाली, इनजे यह पांच भेद हैं।

आयंगर–दक्षिणी वैष्णवब्राह्मणोंका सरनमें आयंगर है यह भी विशेष प्रसंसनीय है।

उदेन्य–सनाढ्य ब्राह्मणोंके २४ कुलोंमेंसे एक कुल है।

ऋषि–कहा जाताहै इस नामकी एक जाति ब्राह्मणोंकी है पर हमारे देखनेमें नहीं आई यह तो एकप्रकारके ब्राह्मणोंका पद है।

इन्दौरिया-यह एक गौडब्राह्मणोंका भेद है, इन्दरगढसे निकास होनेके कारण यह इन्दौरिये कहाये।

उडिया-उडीसा देशके ब्राह्मण साधारणतः उडिया कहाते हैं, यह जगन्नाथपुरीमें रहते हैं। परन्तु इनका पद साधारण स्थितिका है।

उलचकामे-माइसौरमें कर्णाटकी ब्राह्मणोंका एक भेद है।

ओझा-यह मैथिल ब्राह्मणोंकी द्योतक एक पदवी है, परन्तु आजकल ओझासे तान्त्रिकोंका भी बोध होता है, इतनाही नहीं आजकल बढई लुहारभी अपना वंश ओझाओंसे मिलाकर मैथिल होनेका दावा करते हैं, खाती लोगोंको यह विचार करना चाहिये कि क्या आपको भी परशुरामजीका भय सवार हुआ था, जो यज्ञोपवीततक त्यागन करके पहिये बनाने लगे। हां जो यथार्थ ब्राह्मण हैं और प्रमाण रखते हैं उनसे हमको किसी प्रकारका इतराज नहीं है।

कनाराकामा-यह कनारी ब्राह्मणोंका एक भेद है, यह तैलंग देशके निवासी कनाराकाम ब्राह्मण वैदिक हैं, और तैलंगी कहाते हैं।

कन्यूडी-यह एक पहाडी ब्राह्मणोंकी कन्दूरी जाति है चांदपुरके परगनेमें कन्यूडा एक गांव है इसके निकासके कारण यह कन्यूडी कहाते हैं कोई इनको ब्राह्मण नहीं भी कहते हैं।

कमलाकर-यह महाराष्ट्र ब्राह्मणोंमें अल्लका एक भेद है।

कर्कल-चित्तपावन दक्षिणी ब्राह्मणोंकी अतिसमुदायकी अल्ल है।

(करता-महाराष्ट्रमें अधमश्रेणीके ब्राह्मण करता कहातेहैं यह पूना और खानदेशमें विशेषरूपसे रहतेहैं और कृषि करते हैं कोई इनको ब्राह्मण नहीं भी मानते बहुतकालसे इनका आचार भ्रष्ट होगया है।)

कत्थक-यह गायनसम्बन्धी कार्य करनेवाली एक जाति है और यह अपनेको ब्राह्मण कहतेहैं परन्तु दूसरे ब्राह्मण और इन लोगोंकी मानमर्यादामें बहुत भेद है, यह कत्थकगौड और कत्थकमैथिल दो प्रकारके भेदवाले हैं, यह राजपूताना युक्तप्रदेश बनारस बस्ती आजमगढ रायबरेली आदिस्थानोंमें पायेजातेहैं।

कुनबीगौड-यह पद उन गौड ब्राह्मणोंका है जो कुर्मी वा कुनबी लोगोंके यहां पुरोहिताई करते हैं।

कृस्नोरा-यह गुजराती नागरोंका एक भेद कहाजाताहै यह तीनों वेदोंके नामधारी हैं भिक्षुक विशेष हैं।

गिरि।

यह भगवान् शंकराचार्यके शिष्योंकी एक उपाधि जो संन्यासियोंको दीगई है उसका भेद है इस सम्प्रदायमें दस नाम हैं सरस्वती, भारती, पुरी, तीर्थ, आश्रम, वन, गिरि, आरण्य, पर्वत और सागर। इनमें सरस्वती, भारती और पुरी नामोंका सम्बन्ध श्रृंगेरी मठसे है। तीर्थ और आश्रमका सम्बन्ध द्वारिकाके शारदामठसे है। वन और आरण्यका सम्बन्ध जगन्नाथ पुरीके गोवर्द्धनमठसे है। गिरि पर्वत और सागरका सम्बन्ध हिमालयके जोशीमठसे है सिद्धान्त सबका एक है।

कोतवार-युक्त प्रदेशके मिर्जापुर प्रान्तमें इस जातिका निवास है। यह गौड ब्राह्मणोंका भेद है, कोई इसे पदवी कहते है।

अन्ध्रवैष्णव-यह रामानुजसम्प्रदायके तैलंगी ब्राह्मणोंकी अल्ल है।

अम्माको दागा-यह कुर्गदेशकी ब्राह्मणजाति है। यह कावेरी ब्राह्मणभी कहाते हैं। यह कुर्गके दक्षिणी पश्चिमी किनारोंपर रहते हैं। कावेरीको पूजते हैं, मद्यमांससेवी नहीं हैं।

कसलनाडू-तैलंगी ब्राह्मणोंकी अल्लका भेद है, कदाचित् यह शब्द कोसल नाडूसे बिगडा हो इनका निकास ओडप्रदेशान्तर्गत कोसला नगरी है। वहांसे यह तैलंगमें जाकर बसे हैं।

गणक-बंगाल आसाम उडीसामें यह उन ब्राह्मणोंकी संज्ञा है जो ज्योतिष शास्त्रसम्बन्धी कार्य करते हैं, यद्यपि ज्योतिःशास्त्रका विज्ञान बहुत उच्च है परन्तु अब तो राहुकेतु देखनेका काम साधारण रूपके गणकोंका रहगया है अब तो यह ब्राह्मणभी जो गणक हैं मध्यमश्रेणीके गिने जाते हैं। यही लोग पर्वतमें जोशी कहाते हैं। बंगाल आसाममें गणक, कहीं नक्षत्रब्राह्मण कहीं ग्रहविप्र कहीं ग्रहाचार्य और कहीं दैवज्ञ कहाते हैं "विप्रश्च ज्योतिर्गणनाद्वेदनाच्च निरन्तरम्। वेदधर्मपरित्यक्तो बभूव गणको भुवि"(ब्रह्म वै०) अर्थात् निरन्तर ज्योतिष गणनामें लगेरहनेसे और वेदधर्मका अनुष्ठान न करनेसे यह ब्राह्मण गणक कहाये।

गर्गवंशी-जो ब्राह्मण गर्ग ऋषिकी सन्तान हैं वे गर्गवंशी ब्राह्मण हैं, जो क्षत्रिय गर्गगोत्री हैं वे गर्ग-वंशी क्षत्रिय हैं। यह फैजाबाद आजमगढ सुलतानपुरमें विशेषरूपसे निवास करते हैं।

गिरधरोत व्यास-यह मारवाड प्रदेशमें पुष्करणे ब्राह्मणोंकी जातिअल्ल है। इन व्याससंज्ञक ब्राह्मणोंके आदिपुरुष गिरिधरजी राय थे यह अमरसिंहजीके यहां नौकर थे। जिन्होंने आगरेकी लडाईमें स्वामीके निमित्त प्राणत्याग करदिये थे युद्धके कारण इनका शव जलाया न जासका, इसकारण यह गाडेगये, वहां इनकी मानता होती है। श्रावण शुक्ला तृतीया इनकी स्मृतिसूचक तिथि मानी जाती है, उसदिन कोई त्यौहार इस वंशवाले नहीं मनाते न नया वस्त्र पहरते हैं। मारवाडमें दाहिनी ओरको चौंचदार पगडी बांधी जाती हैं। परंतु यह बांई ओरको चोंचरखकर पगडी बांधते हैं। राज्यसे इनको प्रतिष्ठा प्राप्त है।

गुरु-शिक्षक ब्राह्मणवंशके पुरुष गुरु कहातेथे परन्तु अब यह किन्हीं किन्हीं विप्रवंशोंकी जाति अल्ल होगई है।

गोस्वामी वा गुसांई-यह वैष्णवोंकी वल्लभाचार्य सम्प्रदायकी विशेषरूपसे पदवी है यह भी तैलंग ब्राह्मण हैं। एकभक्त इनमेंसे गोकुलमें आरहे उनके वंशज गोकुलिये गुसांई कहाये, इनका बडा ऐश्वर्य है, इनके उपास्य राधाकृष्ण हैं। दूसरी सम्प्रदायोंके आचार्य भी गोस्वामी कहातेहैं।

गौड ब्राह्मण-यह भी मध्यप्रदेशकी एक ब्राह्मणजाति है। जब्बलपुरसे नागपुर पर्यन्त गौड ब्राह्मणोंकी वस्ती है। इसकारण उस देशका नाम गौडवाना होगया है। कोई इनको काराब्राह्मण कहते हैं। कारण कि उसदेशमें जंगल बहुत है। कोई इनको 'गौर' अर्थात् शुक्ल वा शुद्ध नामसे पुकारते हैं अर्थात् यह सब माध्यन्दिन शुक्लयजुर्वेदाध्यायी कहातेहैं इनका सूत्र आपस्तम्ब है। कण्वशाखा है। इनमें कोई ऋग्वेदी आश्वलायन सूत्रवाले भी है।

गंगापुत्र-गंगायमुनाके किनारे रहनेवाली सामान्य एकजाति है। यह गंगायमुनाके किनारे घाटों पर बैठते हैं। स्नानको आये हुए यात्रियोंको चन्दन आदि देते हैं। यज्ञोपवीत पहराते हैं। असली गंगापुत्रकी उत्पत्ति तो संकरता लिये है। यथा हि-

लेटात्तीवरकन्यायां गंगातीरे च शौनक।
बभूव सद्यो यो बालो गंगापुत्रः प्रकीर्तितः॥

(ब्रह्मवैवर्तपु०)

लेटजातिके पुरुषसे तीवरकन्यामें गंगा किनारे जो पुत्र उत्पन्न हुआ वह गंगापुत्र कहाया । उसके वंशके सब गंगापुत्र कहाये । परन्तु अवघट घालियोंका काम गौडादि सब ब्राह्मण भी करते हैं । और अपनेको गंगापुत्र भी कहदेते हैं । इनको संकर वंशमें नहीं गिनना चाहिये ।

गंगारी–यह एक प्रकारके पर्वती ब्राह्मणोंका एक भेद है । यह गंगाजीके किनारे किनारे रहते हैं । इनमेंका एक भेद सारोला है । परसारोला इनसे उच्च गिनेजाते हैं, । सारोला उच्च नीचका विचार रखते हैं गंगारी नहीं रखते । सारोलोंका एक भेद गैरोला है, सारोलाका पुत्र वा कन्या यदि व्यभिचारसे उत्पन्न कन्या वा पुत्रसे व्याहीजाती है तब वह गंगारी गहरौला कहाते हैं और जब विवाहितासे उत्पन्न हुएके साथ विवाह होता है तब सारोला गंगारी कहाते हैं परन्तु अलखनन्दासे परली ओरके चारों वर्ण गंगारी कहातेहैं । इनमें से विडियाल कंसमर्दिनी के पुजारी हैं उनयाल महिषमर्दिनी कालिका आदिके पुजारी हैं इनके अनेक भेद हैं यथा विडियाल, दादाई, उनयाल, मलासी, कोयाल, सिमथल, कनपूडी, नौतयाल, थपलयाल, रातूरी, दोभाल, चमोली, हटवाल, ड्योडी, मालागुरी, कस्याल, नौनी, सोमाती, विजिलवार, धुरानस, मनरी, भदावाली, महीन्याके जोशी और डिमडी । गढवाली ब्राह्मणोंमें इनका वर्णन कर चुके हैं ।

गन्धर्व गौड–गुजरातमें गानेबजानेवाली ब्राह्मणोंकी एक जाति है ।

गन्धरवाल–यह कुरुक्षेत्रमें आदिगौडोंके कुलका एक भेद है यह प्रतिष्ठित समझे जाते हैं ।

अग्रभिक्षुः अग्रदानी, आचार्य ।

बंगाल प्रान्तमें जो ब्राह्मण मृतकके वस्त्रादिका दान लेते हैं । सूतकमें तथा दशमा सपिण्डीमें तथा आशौचमें जो ब्राह्मण हाथी घोडा पालकी डेरे आदिका दान लेतेहैं वे अग्रभिक्षु वा अग्रेदानीकहाते हैं । एकादशा तीजा आदि शाव आशौच है, उसमें दान लेनेके कारण ब्राह्मण जाती उच्चभावसे पतित हुई, और स्पर्शसे भी वंचित हुई । युक्तप्रदेशमें यह महाब्राह्मण वा कटया, वंगालमें अग्रदानी, उडीसामें अग्रभिक्षु और पश्चिममें आचार्य मानेजाते हैं । यह जाति इसमें तो सन्देह नहीं कि ब्राह्मण हैं परन्तु इनके यहां सदा मृतक आशौचका ही अन्न धन आता है, इसकारण यह ब्राह्मणोंके उच्च व्यवहारसे पृथक होगये हैं । इनका सम्बन्ध इन्हींके वर्गमें होताहै । प्रायः इनमें पढेलिखे लोग बहुत कम पाये जाते हैं, परन्तु अब कुछ लोग पढगये हैं, एक महाशयने आचार्य भास्कर नामकी एक पुस्तक हमारे पास भेजीहै । उसका सारांश यह है कि, हमलोग आचार्य हैं, और आचार्य एक बडे महत्त्वका पद है । (आचार्यवान् पुरुषो वेद) इत्यादि महत्त्वसूचक पद शास्त्रमें आयेहैं । तब हम आचार्य कहातेहुए निकृष्ट कोटिमें कैसे गिनेजासकतेहैं दूसरे ब्राह्मण भी तो तेरहवीं सत्रहवीं जीमते हैं, वे निकृष्ट क्यों नहीं इत्यादि इसपर हमारा कहना यह है कि, आचार्य शब्द जो शास्त्रोंमें आया है उस रूपमें तो कटया जाति नहीं अती, यज्ञोंमें आचार्य होतेहैं, शास्त्रोंके आचार्य होतेहैं, यथा साहित्याचार्य सांख्याचार्य आदि कर्मठाचार्य कर्मकांडि आदि वह आचार्यपद वेशक उस महत्वका है, परन्तु जो जाति केवल आशौच पर्यन्त सपिण्डी श्राद्ध तक ही दानादि ग्रहण करती है, शुद्धिके पीछे फिर किसी दानका अधिकार नहीं रखती । वह उत्तम कोटिमें कैसे होसकती है, क्योंकि ग्यारहवें दिनके श्राद्धमें कर्ता श्राद्धकरनेके पीछे फिरभी अशुद्धही है । यथा (आद्यश्राद्धमशुद्धोपि कृत्वा चैकादशेहनि । कर्तुस्तात्कालिकी शुद्धिरशुद्धः पुनरेव सः ॥ मिताक्षरा) फिर आशौचके अर्थ तो यही है कि, यह पुरुष अशुचि है, इसके यहांका भोजन पान

निषेध है, जब कि अशुचिके हाथका भोजन पान निषेध है, तब उस अवस्थामें आशौचका अन्नपान भोजन करनेसे मनुष्य उस अशुचिवालेके समान हो जाता है और फिर यह लोक आशौच अवस्थामें सबका अन्नादि ग्रहण कर लेते हैं तब फिर यह उत्तम कोटिमें आचार्य शब्दमात्रसे नहीं हो सकते मनुजी कहते हैं—

गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्। प्रेतहारैः समं तत्र दश-रात्रेण शुद्ध्यति॥

गुरुके मृतक होनेपर पितृमेध करता हुआ शिष्य भी प्रेतहारोंके साथ दशरात्रमें शुद्ध होताहै। तब जो निरन्तर प्रेत क्रियामें संलग्न हैं तब उनके साथ दूसरी श्रेणीके ब्राह्मणोंकी एक पंक्ति कैसे हो सकती है हां इनमें जो कोई विद्वान् होकर निरन्तर शुभ कर्मोंका अनुष्ठान करैं शास्त्रानुसार श्रेष्ठ दान लैं यजन याजन करावैं आशौचका अन्नपान न लैं तब स्पर्शादिकमें कुछ न्यूनता हो सकती है, परन्तु ब्रह्मवैवर्त कहता है—

लोभी विप्रश्च शूद्राणामग्रे दानं गृहीतवान्।
ग्रहणे मृतदानानामग्रदानी बभूव सः॥

जिन लोभी ब्राह्मणोंने शूद्रोंसे प्रथम दान लिया तथा मृतकका दान लिया वह अग्रदानी कहाये। हमने यह शास्त्रमर्यादासे लिखा है, किसीके साथ हमारा द्वेष नहीं है। न हम किसीकी उन्नतिमें बाधक हैं।

यहांसे आगे कोंकण आभीर भिल्ल ब्राह्मण पर्यन्त जो जातियें हैं तथा कुंड गोलक जातियें है यह बहुत कुछ ब्राह्मणत्व खोये हुए हैं, परन्तु यह वहां वहां ब्राह्मण कहे जाते हैं इस कारण हमने भी इनका स्वरूप लिखा है। यह ब्राह्मणब्रुव हैं।

अथ कऱ्हाडे ब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम्।

सह्याद्रि खण्डमें स्कन्दजी पूंछते हैं, हे देवदेव काराष्ट्र ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति कहो, वेदवती नदीके उत्तर और कृष्णा नदीके दक्षिण भागमें दशयोजनके मध्यमें कारोष्ट्र देश है उसदेशके ब्राह्मण कऱ्हाडे नामसे विख्यात हैं।

तद्देशजाश्च विप्रास्तु काराष्ट्रा इति नामतः।

इनकी देशमें निन्दा है नरबलिके कारण यह निन्दित हैं, इन्होंने व्यभिचारसे उत्पन्न रेतको रासभकी अस्थिसे प्रक्षेप किया।

खरस्य ह्यस्थियोगेन रेतः क्षिप्तं विभावकम्।
तेन तेषां समुत्पत्तिर्जाता वै पापकर्मिणाम्।

इस देशमें विकराल स्वरूपा मातृका पूजित होतीहै, यह ब्राह्मण प्रति वर्ष इन मातृकाकी पूजा करते हैं, इनका भोजन दूसरे ब्राह्मणोंकी पंक्तिके साथ नहीं है, पुरीश, अत्रि, कौशिक, वत्स, हारीत, शांडिल्य, माण्डव्य, देवराज और सुदर्शन यह इन ब्राह्मणोंके गोत्र हैं, इन्होंने गरदा देवीका यज्ञ किया था इसकारण इनकी सर्वत्र विजय हुई इससे यह देवीको नरबली देते थे, इनमें तीन असामियोंका नाम पद्या है, यह केवल गायत्रीके जाननेवाले हैं (पदमात्रं तु गायत्रीपारगाः कोंकणे स्थिताः) कथा इस प्रकारहै, कुमुद्वती नदीके किनारे सुमुख नाम एक ब्राह्मण रहता था, उसको कामदेवने प्रसन्न होकर वसन्तोत्सव नामक

एक गेंद दी, और ऋषि उस गेंदको लेकर वहां रहे, एक समय एक तरुण विधवा ब्राह्मणी उस आश्रममें आई, और ऋषिको नमस्कार करके खडी हुई ऋषि वोले तेरे पुत्र होगा, ब्राह्मणीने आश्चर्यसे कहा, पुत्र तो होगा पर देवीके वरदान से विष देनेमें कुशल होगा, कारण कि देवीने कहाहै पुत्रकी इच्छा हो तो प्रति तीसरे वर्ष मेरी प्रीतिके निमित्त विष दानका व्रत करना, ऋषि देवाज्ञाको वलवान् समझकर चुप होगये, पीछे उस गेंदको हाथमें लेकर पीछे गर्दभकी एक अस्थि वहां पडी थी उसको छुआकर उस गेंदको रखदिया, उस गेंदके स्पर्शसे एक बडा दढांग पुरुष उत्पन्न हुआ, और गर्दभके समान उसने शब्द किया, उसने ऋषिकी आज्ञासे उस स्त्रीसे रति की, उससे जो पुत्र हुआ वह खरसंभव गोलक कहाया, यह सब इस वंशके गोलक कहाये बलिदानके कारण हव्य कव्यसे रहित हैं। दूसरी कथा इसप्रकार है कि सह्याद्रि खंडके प्रथमाध्यायमें लिखा है परशुराम क्षेत्रमें नदीपुर नाम एक क्षेत्र है, वहां कर्मनिष्ठ ब्राह्मणोंका निवास था, उनमें अवगुणसम्पन्न व्यभिचारोत्पन्न एक ब्राह्मण था, उसकी सामीप्यतासे अन्य ब्राह्मण भी दोषी हुए, जब वह मरगया तब दूसरे ब्राह्मण अपनेको संसर्ग दोषसे भ्रष्ट हुआ जानकर शास्त्र प्रमाणसे प्रायश्चित्त करके कृष्णा नदीके तटपर कराड नामक क्षेत्रमें आकर रहे, इसकारण कऱ्हाडे कहाये।

करहाटाभिधे क्षेत्रे कृष्णातीरे गता यतः ।
भिन्ना ज्ञातिः साभवद्वै करहाटाभिधानतः ॥

उनमें जो भ्रष्ट हुए वे पद्या कहाये।

तेषां मध्ये च ये भ्रष्टास्ते पद्याख्या भवन्ति हि ॥

यह पद्या भी अपांक्त हुए, इनको एक वेदका अधिकार है, यह सांग ऋग्वेद पढते पढतेहैं, अपने पद (देश) में रहनेसे पद्ये कहाये करहाटमें रहनेसे कऱ्हाडे कहाये।

स्वस्मिन्नेव पदे वासात्ते पद्यास्तु प्रकीर्तिताः ।
करहाटे तु सत्क्षेत्रे करहाटाभिधाः स्मृताः ॥

यह शाके ९१९ में षट्कर्माधिकारी हुएहैं, गोत्र चन्द्रिकामें इनके गोत्र प्रवर लिखे हैं। अ० मा० पृ० ३३२ में देखो।

अथ तलाजियाब्राह्मणोत्पत्तिः ।

यह तलाजिया जाति नामसे ब्राह्मण हैं। स्कन्द पुराणका लेखहै कि जब रामचन्द्रजी शम्बूक नामक शूद्रको मारकर ब्राह्मणके बालकको जिवाय दोष शान्तिके लिये प्रभास क्षेत्रमें गये वहांसे सौराष्ट्र देशमें आये, जहां तराल नामक राक्षसोंको मारकर देवीने उसको भूमिमें गाड उसके ऊपर रैवतका शृंग स्थापित करके उसपर अपना स्वरूप द्वारवासिनी नामसे स्थापन किया, और वहांके धीवर गण बडी भक्तिसे देवीकी पूजा करते और लूटमार करतेथे, रामचन्द्रजीने वहां आयकर देवीका दर्शन किया और ब्राह्मण भोजन कराय उनको दक्षिणा दी पीछे महाराजने वहांके ब्राह्मणोंको सुवर्ण मुद्रा देनेका विचार किया. ब्राह्मणोंने यह सुनकर प्रसन्नतासे आगमन किया, लालचवश वहांके कुछ धीमर भी ब्राह्मणोंका वेप धारण करके उनमें आनमिले, तब रघुनाथजीने यह जानकर कि यह संकरता फैलानेवाले महाअपराधी हैं रामने उनके मारनेकी इच्छा की तत्काल देवीने प्रगट होकर कहा मेरे भक्तोंको आप न मारो रामने कहा आगे इनसे बडा अनर्थ होगा देवीने कहा।

ततो देव्यब्रवीद्राममेते ब्राह्मणवेशिनः ।
बंदिनः समजायन्तां सशिखाः सूत्रधारिणः ॥

यह सब लोग शिखा सूत्रधारी कलियुगमें वन्दी कहलावेंगे, और मेरे वरसे इनकी काया पलट होगी तब वे धीमर त्रिनामक ग्राममें गये वहां यज्ञोपवीत लिया द्विकर्ण ग्राममें कर्णवेध कराया उनके सात गोत्र स्थापित हुए, यह नाममात्र ब्राह्मण नाम मंत्रसे ही यज्ञोपवीत धारण करतेहैं ।

केवलं द्विजमात्रास्ते सोपवीताह्यमंत्रकाः ।
तडाडजा द्विजास्ते वै जाता रामप्रसादतः ॥

त्रिग्राम और द्विकर्णमें तिवारा करनेसे तडाजिये नामसे विख्यात हुआ इनको—

पादाङ्गुष्ठोदके दक्षे न श्राद्धे चाधिकारिता ॥

इनको ब्राह्मणोंके पाईतीर्थ लेनेका अधिकार नहीं और श्राद्धमें अधिकार नहींहै । यह गांव गुजरातके निकट गोलवाड देशमें भावनगरसे पश्चिम बारह कोसपर तुलजापुर वा तलाजा नामसे विख्यात है, इनकी कुलदेवी द्वारवासिनी है, इनका जथा इससमय तलाजा झांझमेर पीथलपुर सथरा उचडी आदि ग्रामोंमें है, रघुनाथजी इसप्रकार तीर्थयात्रा करके अयोध्यामें लौटे ।

इति तडाडजा ब्राह्मणोत्पत्तिः गुर्जरसंप्रदायः ।

गुरडा ।

यह राजपूतानेमें निम्न श्रेणीके ब्राह्मण कहाते हैं, वाभी बलाई ढेढ आदि अछूत जातियोंके यहांकी वृत्ति करनेके कारण यह निम्न श्रेणीमें गिनेजाते हैं, कोई इनको ब्रह्माजीके पुत्र मेघ ऋषिकी सन्तान मानते हैं, कोई कहते हैं इन्होंने मरी गायको उठाकर फेंका था, इससे यह पतित हैं, कोई कहते हैं यह गुरुभक्त होनेसे गुरडा कहाते हैं ।

अम्माकोदागा ।

यह कुर्ग देशकी ब्राह्मण जाति है, यह कावेरी ब्राह्मण भी कहाते हैं, यह कुर्गके दक्षिणी पश्चिमी किनारोंपर रहते हैं, कावेरीको पूजते हैं, मद्य मांससेवी नहीं ।

अथ कोंकणदेशस्थ ब्राह्मणोत्पत्तिः ।

सह्याद्रिखण्डसे लेकर संक्षेपसे लिखते हैं, शौनक कहते हैं कि—

केरलाश्च तुरंगाश्च तथा सौराष्ट्रवासिनः । कोंकणाः करहाटाश्च करनाटाश्च वर्वराः ॥ इत्येते सप्त देशाश्च कोंकणाः परिकीर्तिताः ॥

केरल, तुरंग, सौराष्ट्र, कोंकण, करहाट, कर्नाटक और वर्वर यह सात देश कोंकण कहाते हैं, एक समय महर्षि भार्गव शुक्तिमती नदीके किनारे स्नानके निमित्त गये वह स्नान कर रहे थे कि उस समय कुछेक गर्भवती विधवा स्त्रियें भूंकसे व्याकुल हुई वहां आई और ऋषिसे कहा कि हम ३२ ग्रामवासी श्रोत्रिय वंशकी स्त्री हैं परन्तु कर्म रेखासे हम विधवा हुई, और गर्भवती हो जानेके कारण बंधुजनोंने हमको त्याग दिया, अब हम आपकी शरण हैं यह दीन वचन सुन ऋषिने उनपर दिया की और क्रोश स्थानपर ले जाकर उनको वसाया और कहा—

क्रियतामत्र संवासः संततिर्वो भविष्यति । गोलका इति नाम्ना ते ख्यातिं यास्यन्ति निश्चयम् । अवैदिकी क्रिया सर्वा पुराणपठनं न च ॥ क्व लिंगस्पर्शनं योगः सर्वेषामत्रिगोत्रकम् ॥ पारशब्दं कारवेलं वामनं चोलुकं तथा । कपित्थं चेति पञ्चैव ग्रामाः स्युः सुखकारकाः ॥

तुम्हारी संतान गोलक नामसे विख्यात होंगी, वेद पुराणरहित सब क्रिया तुम्हारी होंगी, शिवलिङ्गस्पर्शका उनको अधिकार न होगा, सबका अत्रि गोत्र होगा, पार कारवेल वामन चोलुक कपित्थ इन पांच ग्रामोंमें यह सन्तति निवास करेंगी, नाम मात्रके ब्राह्मण होकर यह कलियुगमें विचरण करेंगे ।

पातित्यग्रामनामा वै भुक्तिमत्याश्च दक्षिणे । तत्राऽष्टौ ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः समायाताः सभार्यकाः ॥ शूद्राणां वाहका जाताः पतितास्ते न संशयः । पातित्यग्रामकोन्यस्तु कोटिलिंगेशसन्निधौ ॥ तत्र ये ब्राह्मणाः सन्ति तप्तमुद्रांकिताश्च वै । कूटसाक्षिप्रदानेन पतितास्ते न संशयः ॥ पातित्यग्रामकोन्यश्च वक्रनद्यास्तटे शुभे । तत्र विप्रा वेदबाह्यास्तन्तुमात्रा द्विजातयः ॥ गायत्रीजपमात्रेण ब्राह्मणा इति तान्विदुः । ख्याता लोकेषु सर्वत्र स्वग्रामाभिधयैव ते ॥

भुक्तिमतीके दक्षिण किनारे पातित्य ग्राम है वहां आठ श्रेष्ठ ब्राह्मण अपनी स्त्रियों सहित आये, वे शूद्रोंके वाहक होनेसे पतित होगये । कोटिलिंगेशके समीप दूसरे पातित्य ग्राममें जो तप्त मुद्रा भुजाओंमें लगानेवाले ब्राह्मण निवास करतेहैं,वे मिथ्या साक्षी देनेके कारण पतित होगयेहैं, वक्र नदीके किनारे दुसरे पातित्य ग्रामके निवासीब्राह्मण यज्ञोपवीत धारण मात्रके ब्राह्मण हैं,बस गायत्रीजप मात्रसे ही वे ब्राह्मण हैं, वे पातित्य ग्रामके नामसे पतित ब्राह्मणही कहातेहैं ।

कुडालकं च पदिकं मट्टिनागाभिधं तथा । रामेण निर्मिता विप्राः स्थिता ग्रामचतुष्टये ॥ षट्कर्मरहिता ये तु राजन्ते भुवनेश्वर । वक्ष्यामि राजशार्दूल ग्राममन्यं बहिष्कृतम् ॥ वेलंजीति तमित्याहुः सीतायाश्चोत्तरे तटे । कृत्वा मिथुनहत्यां च प्रचरन्ति नराधमाः ॥ गौराष्ट्रब्राह्मणाः सर्वे शुद्धिं प्रापुश्च यत्र वै । तदाप्रभृति तं ग्रामं वेलंजीति वदन्ति हि ॥ तत्र स्थितान् द्विजान् सर्वान्पतितान्प्रवदन्ति हि । तेषां दर्शनमात्रेण पातित्यं चानुयास्यति ॥

कुडालक पद्दिक मट्टिनाग ब्राह्मण रामके स्थापित किये इन चार ग्रामोंमें निवास करनेसे ग्रामके नामसे विख्यात हुए,यह भी छः कर्मोंसे रहित हैं,अब दूसरे बहिष्कृतोंको कहते हैं,सीताके उत्तर किनारे वलेंजी ग्राम म हैहांके निवासी ब्राह्मणोंने मिथुन हत्या की इसकारण वे वेलंजी ग्रामनिवाससे वेलंजी मिथुनहर ब्राह्मण कहाये,ये सब पतित हैं और इनका दर्शन भी अनिष्ट है ।

केरले संस्थिता विप्राः केरलास्ते प्रकीर्तिताः । तौलवे तौलवाश्चैव हैगा कोटास्तथैव च ॥ नम्बुरुब्राह्मणाश्चैव यम्बरादिद्विजास्तथा । परस्परं प्रकुर्वन्ति कन्यासम्बन्धमेव च ॥ हैगाख्या ब्राह्मणाश्चैव कन्यकाया ह्यलाभके । नैम्बुरुब्राह्मणानां वै कन्यां गृह्णन्ति केचन ॥

अर्थात्–केरलके रहनेवाले केरल, तौलवके तौलव, हैगाके हैगा, कोटाके कोटा, नैम्बुरुके नैम्बुरु, यम्बरादिके रहने वाले यम्बरादि ब्राह्मण कहाये, इनका कन्यासम्बन्ध परस्पर होताहै, जब हैगा ब्राह्मणोंको कन्या नहीं मिलतीं तब वे नैम्बुरु ब्राह्मणोंकी कन्या लेतेहैं इनमें किसीकी केरली, किसीकी तौलवी, और दूसरोंकी कर्णाटकी भाषा है।

इति कोंकण तथा पतितादिभेदः (ब्राह्मणोत्पत्ति मा०)

अथ देवरुखब्राह्मणोत्पत्तिः ।

वासुदेव चित्तले नामका एक चित्तपावन ब्राह्मण था, उसने बावडीकूप बनाकर अनेक धर्मानुष्ठान किये उसने बारह वर्ष तक देवीकी आराधना की, उसको वाक्सिद्धि हुएपीछे वह परशुराम क्षेत्रमें श्मशानके समीप एक सरोवर बनानेकी इच्छासे धनके मदसे मत्त हो गुणी ब्राह्मणोंतकसे मृत्तिका निकलवाने लगा, एकसमय देवरुखकी ओरसे वेदशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण समूह वहां आया, उनमें सब कन्हाडे थे, उन्होंने स्त्री पुरुषोंको मृत्तिका ढोतदेखकर उस ब्राह्मणसे पूछा यह क्या बात है, ब्राह्मणने सब वृत्तान्त सुनाया वे सुनकर बडे अश्चर्यमें हुए और उससे कहा तुमभी तो मृत्तिका निकालो, वासुदेवने प्रार्थना की पर वे बाद विवाद करनेलगे तब उस ब्राह्मणने शाप दिया तुम्हारी पंक्तिमें जो भोजन करेंगे तथा सहवास करेंगे वे दरिद्री होंगे और तुम भी तेजोहीन लोकमें नीच होगे, देवरुख प्रदेशसे आनेके कारण तुम्हारा नाम देवरुख होगा १४१९। शाकेमें यह चित्तपावनके शापसे देवरुख ब्राह्मण हुए।

अथ आभीरभिल्लब्राह्मणोत्पत्तिः ।

कहावत प्रसिद्ध है कि एकसमय भगवान् रामचन्द्र जब विन्ध्याचलके समीप तापीके तटपर आये तब एकसमय उनको भिल्लोंके समूहने आकर कहा हमारे कृत्यके निमित्त ब्राह्मणोंकी आवश्यकता है और तपस्वी ब्राह्मण हमारे कृत्यमें आते नहीं, इसकारण हमको ब्राह्मण दीजिये, यह सुनकर कृपा परवश हो रघुनाथजीने उनसे कहा मैं भूमिमें सात रेखा करताहूं तुम एक एकपर चढो तब जब वे पहली रेखापर खडे हुए तब रामचन्द्रने उनसे कहा तुम कौन हो वे बोले हम भिल्ल हैं, पर भिल्लकर्म छोडके शुद्ध स्वभाववाले हैं, दूसरी रेखापर खडे होकर अपनेको विश्वकर्मा जाती बताया, तीसरीपर शूद्र, चौथीपर सच्छूद्र, पांचवीपर वैश्य, छठींपर क्षत्रिय, और सातवीं रेखापर जब चढे तब अपनेको ब्राह्मण बताया और सर्वगुण सम्पन्न हुए तब रामचन्द्रजीने कहा भिल्ल जातिके कर्मधर्ममें तुम्हारा अधिकार होगा, तुम अभिल्ल और अमीर ब्राह्मण कहाओगे, कानुबाई रानुबाई कुलदेवी होंगी, विवाहादिमें इसीकी पूजा करना, नवरात्रमें प्रतिवर्ष नारा लपेटना, अखंड दीपक वालकर पूजा करना ।

इति भिल्लब्राह्मणोत्पत्तिः । (इति महाराष्ट्रसम्प्रदायः) ।

अथ पांचालउपब्राह्मणोत्पत्तिः (ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्डे)

अब शिवागमसे ÷ शैव पांचालोंकी उत्पत्ति कहते हैं।

पंचवक्त्रात्समुत्पन्नाः पंचाभिः कर्मभिर्द्विजाः ॥ मनुर्मयस्तथा त्वष्टा शिल्पिकश्च तथैव च ॥ दैवज्ञः पञ्चमश्चैव ब्राह्मणाः पंच कीर्तिताः ॥

अर्थात्–भगवान् शंकरके पांच मुखसे पांचकर्मवाले द्विज उत्पन्न हुए उनके नाम मनु,मय,त्वष्टा, शिल्पि और दैवज्ञ हुए, मनुका कार्य शास्त्रादिक निर्माण,मय–लोगोंके कार्यमें आनेवाले काष्ठादि पदार्थोंके निर्माता, त्वष्टा–लोकहितकारी पदार्थोंका निर्माता, शिल्पी—देवमन्दिरादिका निर्माता, दैवज्ञ–सुवर्ण आदि अलंकारोंका निर्माता हुआ तथाच—

मनुः संहारकर्ता च मयो वै लोकपालकः । त्वष्टा चोत्पत्तिकर्ता च शिल्पिको गृहकारकः ॥ दैवज्ञः सर्वभूषादिकर्ता वै हितकाम्यया ॥ ऋग्वेदश्च मनोश्चैव यजुर्वेदो मयस्य च ॥ सामवेदस्त्वाष्ट्रकस्य त्वथर्वा शिल्पिकस्य च । सुषुम्णाभिधवेदोसौ दैवज्ञानां प्रकीर्तितः ॥

मनुका ऋग्वेद, मयका यजु, त्वष्टाका साम, शिल्पीका अथर्व, दैवज्ञका सुषुम्णा (इनका रहस्य) नामक वेद है, यह सब उपब्राह्मणरूप हैं, अब ब्रह्मपांचालों का वर्णन करते हैं।

विश्वकर्मनिदेशेन पुरा सृष्टा विरंचिना । चत्वारो मनवो लोकनिर्मिताः सृष्टिहेतवे ॥ यो विरंचिः स वैराजः प्रजापतिरुदारधीः । अन्तराले गणानाञ्च वरिष्ठो लोककारकः ॥ वैराजस्य मुखाज्जज्ञे विप्रः स्वायम्भुवो मनुः । स्वारोचिषो मनुः क्षत्री ब्रह्मणो बाहुमण्डलात् ॥ रैवताख्यो मनुर्वैश्यो वैराजस्योरुमण्डलात् ॥ तामसाख्यो मनुः शूद्रो वैराजस्यांघ्रिमण्डलात् ॥

विश्वकर्मा जगदीश्वरकी आज्ञासे वैराज (प्रजापतिने) चौदह लोक निर्माण करके चार मनु उत्पन्न किये, उनके मुखसे ब्राह्मणकी सृष्टि करनेवाले स्वयम्भू मनु हुए, बाहूसे क्षत्रिय सृष्टिको उत्पन्न करनेवाले क्षत्रियरूप स्वारोचिष मनु हुए, ऊरूसे वैश्यसृष्टिको उत्पन्न करनेवाले वैश्यरूप रैवत मनु हुए और चरणोंसे शूद्र सृष्टिके करनेवाले तामस मनु हुए।

स्वायम्भुवस्य षट् पुत्रा ज्येष्ठोऽथर्वा प्रकीर्तितः । सामवेदो यजुर्वेदः क्रमादृग्वेद एव च ॥ वेदव्यासः पंचमोऽथ प्रियव्रत उदीरितः । एते षण्मुख्यविप्राश्च नृपविप्रानथो शृणु ॥ आद्यः शिल्पायनश्चैव गौरवायन एव च । कायस्थायन आख्यातस्ततो वै मागधायनः ॥

÷ शिवागमसे किस ग्रन्थका ग्रहण है यह ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्डमें नहीं लिखा लिंगपुराणमें यह कथा नहीं है।

अथर्वादय आद्याश्च मनोः स्वायम्भुवस्य ते । षट् पुत्रा मुख्यविप्राश्च कथिता वेदवादिभिः ॥ ऋग्वेदादिकवेदानामेषामध्ययनं स्मृतम् । ते मुख्यवेदिनः सर्वे मुख्यब्राह्मणसंज्ञकाः ॥ स्वायंभुवमनोः पुत्राः प्रोक्ताः शिल्पायनादयः । चत्वार उपविप्राश्च कथिता वेदवादिभिः॥ आयुर्वेदादिवेदानामेषामध्ययनं स्मृतम् । ते चोपवेदिनः सर्वे ह्युपब्राह्मणसंज्ञकाः ॥

अर्थात्-स्वायम्भु मनुके क्रमसे साम, यजु, ऋक्, अथर्व, वेदव्यास और प्रियव्रत यह छः ब्राह्मण हुए। यह मुख्य ब्राह्मण है। इनके पीछे चार उपब्राह्मण हुए, वे शिल्पायन, गौरवायन, कायस्थायन और मागधायन नामसे विख्यात हुए, और अथर्वादिक छः पुत्र मुख्य ब्राह्मण हैं वे वेदमंत्रोंके पढनेके अधिकारी है, शिल्पायनादि चार पुत्र उपब्राह्मण हैं, वे आयुर्वेद धनुर्वेद गांधर्ववेद और शिल्पवेदके पढनेके अधिकारी हैं, मुख्य ब्राह्मणोंका शिखा यज्ञोपवीत गायत्रीमें अधिकार है और—

तथा चैवोपविप्राणां गायत्रीश्रवणं स्मृतम् ॥

उपब्राह्मण गायत्री ब्राह्मणके मुखसे सुन सकते है।

अथर्वणस्योपवेदः शिल्पवेदः प्रकीर्तितः । तस्मादाथर्वणाः प्रोक्ताः सर्वे शिल्पिन एव च ॥ शिल्पायनस्य ये पुत्रास्तेषु ज्येष्ठश्च लोहकृत्॥ सूत्रधारः प्रस्तरारिस्ताम्रकारः सुवर्णकः ॥ पांचालानां च सर्वेषां शाखा वै वैश्वकर्मणी । तेषां वै पंचगोत्राणां प्रवरं पंचकं स्मृतम् ॥ तेषां वै रुद्रदेवत्यं त्रिष्टुप् छन्दस्तथैव च ।

अथर्वका उपदेश शिल्पवेद है इस कारण सब शिल्पी आथर्वण होते हैं इन उपपांचालोंमें शिल्पायनके पुत्र लोहकार, सूत्रधार, प्रस्तरारि (पत्थरकी नकाशी करनेवाला) ताम्रकार और सुवर्णक हुए, इन सबोंकी वैश्यकर्म शाखा, कौंडिन्य, आत्रेय, भारद्वाज, गौतम, काश्यप यह गोत्र और सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष, ईशान यह पांच प्रवर है, आश्वलायन, आपस्तम्ब, बौधायन, दाक्षायन और कात्यायन यह पांच सूत्र हैं, रुद्रदेवता त्रिष्टुप्छन्द और रुद्र गायत्रीका अधिकार है।

शिल्पवेदश्च शिल्पानां पंचानां परिकीर्तितः । अध्ययनं च तत्रैव संहितापंचकं स्मृतम् ॥ शिल्पायनसुतो ज्येष्ठो मनः शिष्यत्वमेत्य वै । पपाठ संहितामाद्यां धातुवेदस्य लोहकृत् ॥ सूत्रधारो द्वितीयोऽथ मयशिष्यत्वमादरात् । संहितां सूत्रधाराख्यामपठत् कोकमेव च ॥ शिल्पायनसुतस्तक्षा शिल्पेः शिष्यत्वमादरात् । सशैलसंहितां तस्मात्पपाठ भृगुनन्दन ॥ अथ ताम्रकरः शिष्यः शिल्पिकस्याभवत्पुरा । शिल्पायनसुतस्तूर्यस्त्वपठत्ताम्रसांहिताम् ॥ नाडिंधमोथ शिष्योभूद्दैवज्ञस्यैव पंचमः । सुतः शिल्पायनस्यैव पपाठ स्वर्णसंहिताम् ॥

इनको शिल्पवेदकी पांच संहिता पढनी चाहिये शिलायनके बडे पुत्रने मनुका शिष्य बनकर उनसे धनुर्वेदकी संहिता पढी सूत्रधारने मयका शिष्य बनकर सूत्रधार संहिता और कोक संहिता पढी, तक्षाने शिल्पीका शिष्य बनकर शैलसंहिता अध्ययन की। ताम्रकारने त्वष्टाका शिष्य बनकर ताम्रसंहिता पढी, स्वर्णकारने दैवज्ञका शिष्य बनकर सुवर्ण संहिता पढी इसप्रकार पांचोंने पांच शिल्पसंहिता पढीं, यह उपब्राह्मण पीछे भ्रष्ट होते २ सबकर्मोंसे रहित होगये, उससमय यह विश्वकर्माके मुखसे उत्पन्न हुए, मनु, मय आदि पांच देवतावाले थे।

नित्यं नैमित्तिकं कर्म द्विजातीनां यथाक्रमम् । पितृयज्ञं भूतयज्ञं दैवयज्ञं तथैव च ॥ जपयज्ञं ब्रह्मयज्ञं पंचयज्ञांश्चरन्ति वै । एवं त्रिविध आचारः कर्तारस्ते द्विजातयः ॥

पांचाल ब्राह्मणोंको तो षट् कर्म करनेका अधिकार है, यज्ञ करना, कराना, पढना पढाना, दान लेना देना यह षट् कर्म हैं, स्नान तीन कालकी संध्या अग्निहोत्र यह सब कर्म ब्राह्मणोंके हैं, नित्य नैमित्तिक कर्म पांचालोंको करने चाहियें, पितृयज्ञ (श्राद्धतर्पण) भूतयज्ञ (बलिहरण) देवयज्ञ (देवपूजन) जपयज्ञ (गायत्रीजप) ब्रह्मयज्ञ (वेदपाठ) यह सब कर्म ब्राह्मणोंके हैं, उपब्राह्मण पुराणोक्त कर्म करते हैं।

इति पांचाल उपब्राह्मणोत्पत्तिः ।

अथ कुंडगोलकब्राह्मणोत्पत्तिः ।

शूद्रकमलाकरमें यमका वाक्य है कि—

अमृते जारजः कुंडो मृते भर्तरि गोलकः। जारजातः सवर्णायां कुंडो जीवति भर्तरि ॥ मृते गोलकनामा तु जातिहीनौ च तौ स्मृतौ । असवर्णासु नारीषु द्विजैरुत्पादिताश्च ये ॥ परपत्नीषु सर्वासु कुण्डास्ते गोलकाः स्मृताः । मातृवर्णा न ते प्रोक्ताः पितृवर्णा न च स्मृताः॥ अविवाह्याः सुताश्चैषां बन्धुभिः पितृमातृतः ।

आदित्यपुराणे ।

चतुर्णामपि वर्णानां जीवतामन्यसंभवः ॥ कुंडस्तु संकरी ज्ञेयो मृतानामथ गोलकः ॥ जातिहीनः समातृणां ग्राहयेत्कर्मनामनी ॥ योज्यौ देवपुरे राज्ञा वर्णसंकरभीरुणा । कुंडो वा गोलको विप्रः संध्योपासनमात्रवित् ॥ स्नानभोजनसंध्यासु देवेषु संपठेच्च तत् । एवमेव द्विजैर्जातौ संस्कार्यौ कुंडगोलकौ ॥ मनुः—जातो नार्यामनार्यायामार्योदर्यो भवेद्गुणैः । जातोप्यनार्यादार्यायामनार्य इति निश्चयः ॥

अनयोः श्राद्धे निषेधमाह याज्ञवल्क्यः । रोगी हीनातिरिक्तांगः काणः पौनर्भवस्तथा । अवकीर्णी कुंडगोलौ कुनखी श्यावदन्तकः ॥ श्राद्धे वर्ज्य इति शेषः ।

परस्त्रियोंमें कुंड गोलक पुत्र उत्पन्न होते हैं, पति जीवित होते जार पुरुषसे जो पुत्र उत्पन्न होवै वह कुंड है और पतिके मरने पर जो जारसे उत्पन्न हो वह गोलक है, चाहै वे अपने २ वर्णमें उत्पन्न होवैं तथापि ये दोनों जातिसे हीन हैं, सब जातिकी परस्त्रियोंमें ब्राह्मणोंसे उत्पन्न होवैं वे कुण्ड गोलक कहे जाते हैं; उनका वर्णधर्म न मातासे मिलता है न पितासे। उनके साथ पूर्वके सम्बन्धियोंका विवाह नहीं होता; यह कुंड गोलक संकर जातिमें हैं, चारों वर्णोंमें पतिके जीते अन्य पुरुषसे उत्पन्न हुआ, कुण्ड और पतिके मरनेपर उत्पन्न हुआ गोलक कहाता है ऐसा आदित्यपुराणका लेख है । राजाको ऐसे पुरुषोंकी योजना देवद्वारमें करनी चाहिये, उनकी माताओंके नाम तथा कर्मोंसे इनके नाम कर्मोंकी व्यवस्था करनी। कुंड गोलक ब्राह्मणोंको स्नान संध्या भोजनके समय वंदीजन जैसा वचन कहना, सन्ध्योपासन मात्र करना कोई कहते हैं ब्राह्मणसे उत्पन्न कुंड गोलकका संस्कार करना। मनु कहते हैं, नीच स्त्रीमें उत्तम वर्णसे उत्पन्न हुए कुंड गोलक संस्कारके योग्य हैं, उत्तम वर्णकी स्त्रीमें नीचसे उत्पन्न कुंड गोलक संस्कारके के योग्य नहीं है। याज्ञवल्क्यने रोगी, हीनांग, अधिकांग (छंगा), काना, पौनर्भव, अवकीर्णि,कुंडगोलक, काले वा बुरे नखोंवाला, श्यावदंतक, काले दांतवाला इतने पुरुषोंको श्राद्धमें जिमानेका निषेध किया है।

इति कुंडगोलकोत्पत्तिः ।

इति श्रीमुरादाबादवास्तव्यविद्यावारिधिपण्डितज्वालाप्रसादमिश्र-संकलिते जातिभास्करे प्रथमः खण्डः समाप्तः। श्रीरस्तु.

अथ क्षत्रियखण्डारंभः ।

वाल्मीकि रामायण श्रीमद्भागवत और भविष्यपुराणसे क्षत्रियोंकी
वंशावली आरंभ करते और उनके वंश लिखते हैं ।

परावरेषां भूतानामात्मा यः पुरुषः परः । स एवासीदिदं विश्वं कल्पान्तेऽन्यं न किंचन॥ तस्य नाभेः समभवत्पद्मकोशो हिरण्मयः॥ तस्मिञ्जज्ञे महाराज स्वयम्भूश्चतुराननः । मरीचिर्मनसस्तस्य जज्ञे तस्यापि कश्यपः । दाक्षिण्यां च ततोऽदित्यां विवस्वानभवत्सुतः ॥ ततो मनुः श्राद्धदेवः संज्ञायामास भारत । श्रद्धायां जनयामास दशपुत्रान्स आत्मवान् ॥ इक्ष्वाकुनृगशर्यातिदिष्टधृष्टकरूषकान् । नारिष्यन्तं पृषध्रं च नभगं च तथा विभुः ॥

(भागवत ९ स्कन्ध १ अध्याय)

वेदप्रतिपाद्य क्षत्रिय जातिमें सर्वप्रथम सूर्यवंश विख्यात है, दूसरा चन्द्रवंश है, इन्हीं वंशोंके क्षत्रियोंके नामसे और भी अनेक वंश विख्यात हुए हैं इसकारण हम वंशावली लिखते हैं जिससे अपने २ पुरुषाओंका ज्ञान क्षत्रियोंको होता जायगा ।

श्रीनारायण ।
|
ब्रह्माजी
|
मरीचि ———————— अत्रि
|
कश्यप
|
विवस्वान
|
वैवस्वतमनु

इक्ष्वाकु	नृग	शर्याति	धंष्ट	करुष	नरिष्यन्त	पृषध्र	नभग	कवि	इल
विकुक्षिआदि १०० पुत्र		इसके वंश		इसके वंश-					
पुरंजय वा काकुत्स्थ		में आनर्तने		धर कारुष्क					
अनपृथु		कुशस्थली		उत्तरमें					
विश्वगंधि		बसाई		सूर्यवंशकी					
आर्द्र				शाखा नियत					
युवनाश्व				की					

श्रावस्त	नाभाग	त्रिशंकु	दिलीप
वृहदश्व	अम्बरीष	हरिश्चन्द्र	रघु
धुंधमार	सिन्धुद्वीप	रोहित (रोहितनगरका बसानेवाला)	अज
दृढाश्व	अयुतायु	हरित	दशरथ
हर्यश्व	ऋतुपर्ण	चम्प (चम्पापुरका वसानेवाला)	रामचन्द्र
निकुंभ	नल	विजय	
वहणाश्व	सवकाम	भरुक	
सेनजित	सुदास	वृक	
युवनाश्व	अश्मक	वाहुक (असित)	
मान्धाता	मूलक	सगर	
पुरुकुत्स	सत्यव्रत(दशरथ)	केशी	
अनरण्य	ऐडविड	असमंजस	
त्रिधन्वा	विश्वसह	अंशुमान	
त्र्यारुण	खट्वांग	दिलीप	
सत्यमत	दीर्घवाहु	भगीरथ	
		श्रुतसेन	

इक्ष्वाकुके दूसरे विकुक्षिके पुत्रका नाम निमि था, इन्होंने एक बार यज्ञ किया उस समय यज्ञमें वशिष्ठ और निमिका परस्पर क्लेश हुआ और दोनोंने दोनोंको प्राणरहित होनेका शाप दिया, तत्काल दोनोंने शरीर त्यागन करदिया, वशिष्ठजीने तो मित्रावरुणके वीर्यसे जन्म लिया, और निमिके जीवित करनेका उनके ऋत्विजोंने यत्न किया, तब निमिने कलेवर स्वीकार न करके सबके पलकोंपर निवास स्वीकार किया, तब ऋत्विजोंने अरणी द्वारा निमिका देह मथा, उस मथनसे जो पुरुष प्रगट हुआ वह मिथि हुआ, इनसे यह वंश पृथक् होकर निमिवंश कहाया और इन्होंने ही मिथिलापुरी बसाई ।

शिष्यव्यतिक्रमं वीक्ष्य निर्वर्त्य गुरुरागतः ॥ अशपत्पततोद्देहो निमेः पंडितमानिनः ॥ ४ ॥ निमिः प्रतिददौ शापं गुरवे धर्मवर्तिने ॥ तवापि पतताद्देहो लोभाद्धर्ममजानतः ॥ ५ ॥ इत्युत्ससर्ज स्वं देहं निमिरध्यात्मकोविदः ॥ मित्रावरुणयोर्जज्ञे उर्वश्यां प्रपितामहः ॥६॥ तथेत्युक्ते निमिः प्राह माभून्मे देहबन्धनम् ॥ ७ ॥

देवा ऊचुः—

विदेह उष्यतां कामं लोचनेषु शरीरिणाम् ॥ देहं ममन्थुः स्म निमेः कुमारः समजायत ॥ जन्मना जनकः सोऽभूद्वैदेहस्तु विदेहजः ॥१३॥ मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता ।

(भागवत नवमस्कन्ध अ० १३)

१ निमि
२ मिथि (मिथिला)
३ जनक
४ उदावसु
५ नन्दिवर्द्धन
६ केतु
७ देवरात
८ बृहद्रथ
९ महावीर्य
१० सुधृति
११ धृष्टकेतु
१२ हर्य
१३ मरुत
१४ प्रतीप
१५ कृतरथ
१६ देवमीढ
१७ विस्तृत
१८ महाधृति
१९ कृतिरात
२० महारोमा
२१ स्वर्णरोमा
२२ ह्रस्वरोमा
२३ सीरध्वज
२४ कुशध्वज
२५ धर्मध्वज
२६ कृतध्वज
२७ केशीध्वज
२८ बाहुमान (भानुमान)
२९ अरिष्टनेमि
३० श्रुतायु
३१ सुपार्श्व
३२ चित्ररथ
३३ क्षेमधी
३४ समरथ
३५ ऊर्ध्वकेतु
३६ सोमरथ
३७ सत्यरथ
३८ उपगुरु
३९ उपगुप्त
४० एनगुप्त
४१ युयुधान
४२ सुभाषण
४३ श्रुतसेन
४४ नयसेन (जय)
४५ विजय
४६ आर्द्र (ऋज)
४७ शुनक
४८ वीतहव्य
४९ धृति
५० बहुलाश्व
५१ कृति

(इति निमिवंशः)

चन्द्रवंशका वर्णन ।

ब्रह्माजी
|
अत्रि
|
समुद्र
|
चन्द्र इला
|
बुध
|
पुरूरवा
|
आयु
|
नहुष
|
ययाति

यदु	[इनके छः पुत्र हुए]	पुरु	तुर्वसु (उरउरस)
क्रोष्टु	शतजित वा सहस्रजित पांचवां	जनमेजय	वह्नि
वृजिन्वान	हैहय वेणुहयहय	प्राचीन वान	सुवह्नि (गोभानु)
स्वाहि	धर्मनेत्र (नौवां सन्तान)	प्रविधान	त्रिशानि
उषंग वा रुषद्गु	सहंता (सहन)	प्रवीर	करंधम

चित्ररथ	भद्रसेन	मनस्यु		मरुत
शशबिन्दु				
पृथुश्रवा	दुर्दम	चारुपद		यशमति (दुष्मन्त
सुयज्ञ	कनक	सुधन्वा		वरूथ(इनकेआठपुत्र)
उशना	कृतवीर्य	बहुगव	द्रुह्य	वभ्रु
तितिक्षु	सहस्रार्जुन(१००पुत्र हुए)	संयाति	सेतु	पुरदेश
मरुत	शूरसेन	अहयाति	आर (आरद्वान)	गान्धार
कम्बल	शूर			
बर्हिप	धृष्टि	रौद्राश्व	गांधार	गन्ध
				धर्म
रुक्मकवच	कृष्ण	घृताचि	धर्मसेन	धर्मवृत्त
रुक्मेषु	जयध्वज	रंतिनार	दृढसेन	प्रहित (प्रचेता)
पृथुरुक्म	कुन्ति		प्रचेता	
हविष्मान्	यंग	तसु	कान	समानर
ज्यामघ	तालजंघ (इनकी पांचशाखा)	सुमति	गोमान	कालानल
				सृञ्जय
मुव्यापि	वीतिहोत्र	रैभ्य	कृशानु	पुरंजय
विदर्भ	दष्ट			
		दुष्मन्त (दुष्यन्त)	करन्धम	जनमेजय
कौशिक	युवन (अनन्त)	(तीसरावंशधर)		महाशाल
लोमपाद	दुर्जय	भरत	मेरु	महामना
धृति		वितथ	मरुत	उशीनर
जीमूत		मन्यु	दुष्मन्त	नृग (इनके
ऋषभ		वृहत्क्षेत्र		नौ पुत्र)
			करुन (कुरुथान)	
		सुहोत्र		
			कालिंजर केरल	पाण्डु चोल

हस्ती

भीमरथ
नवरथ
दृढरथ
शकुन्ति
करंभक
कुरु
देवरात
देवक्षेत्र
मधु
कुरुवश
अनु
द्रवरस
पुरुहूत (पुरुद्वत)
पुरुहोत्र
अंशु
सत्वत
सात्वत
वृष्णी देववृध अन्धक

अजमीढ ऋक्ष

(अजमीढ) शान्ति जह्नु

शान्ति
सुशान्ति
पुरुजाति
बाह्यश्व
इसके काम्पील्य यवीनर बृहदश्व सृञ्जय सुकुल पांच पुत्र हुए
सुकुल
मौकुल्य
दिवोदास
मित्रायु
सोमक
सृञ्जय
चनु
सोमदत्त
सोमक
जन्तु
पृषत
सम्पत्
द्रुपद
धृष्टद्युम्न-द्रौपदी

जह्नु
अजकाश्व
कुश
वलाकाश्व
कुशिक (कुशांब)
गाधि
विश्वामित्र
देवरात
शुनःशेफ अष्टक

(ऋक्ष)
सम्वरण
कुरु
सुधनु परीक्षित

सुधनु
सुहोत्र
च्यवन
कृती
विभ्रिथ
उपरिचर
बृहद्रथ
कुशाग्र
वृषभ
सत्यहित
पुष्पवान
जह्नु
ऊर्ज
बृहद्रथ
जरासन्ध

परीक्षित
जह्नु
सुरथ
विदूरथ
सार्वभौम
जयसेन
राधिक
अयुतायु
क्रोधन
देवतिथि
ऋक्ष
भीमसेन
दिलीप
प्रतीप
शांतनु बाह्लीक
विचित्रवीर्य सोमदत्त
पांडु धृतराष्ट्र शल
अर्जुन भीम युधिष्ठिर दुर्योधन
अभिमन्यु नकुल सहदेव
परीक्षित

कृमि
दर्शन
शिवि
पृथुदर्भ
अङ्ग
अनव
दिविरथ
धर्मरथ
चित्ररथ
सत्यरथ
लोमपाद
पृथुलाक्ष
वय
दद्र
भद्ररथ
बृहत्कर्मा
बृहद्भानु
बृहत्

अग्निमित्र युधाजित कुकुर भजमान जयरथ

सिनी वृष्णि सुतवान (धृष्णु) विदूरथ

सत्यक चित्ररथ विलोमा शूर बृहद्रथ

आदि १२

युयुधन पुत्र कपोतरोमा शिनी विश्वजित

जय अनु भोज

कर्ण

कुणि अन्धक हृदिक

वृषसेन

युगन्धर दुन्दुभी देवमीढ

पृथुसेन

दरदोत (अहिद्योत) शूर

पुनर्वसु वसुदेव

आहुक श्रीकृष्ण

देवक उग्रसेन

कंस

हस्ती

अजमीढ	देवमीढ	पुरुमीढ
बृहदश्व	यवीनर	
बृहद्धनु	कृतमान	
बृहत्काय	सत्यधृती	
जेय	दृढनेमि	
विशद	सुदमा	
सेनजित्	सार्वभौम	
रुचिराश्व	मिहित	
पार	रुक्मन्त	
पृथुसेन	सुपार्श्व	
सुकृति	सुमति	
बलराज	सन्नति	
अनूह	कृति	
विष्वक्सेन	उग्रायुध	
उदकसेन	क्षेम	
मल्लाट	सुवीर	

दुर्बुद्धि रिपुंजय

(भीलोंके पूर्वज) बहुरथ

(मल्लाटके

१०० पुत्र)

श्रीरामचन्द्रजीके पश्चात् सूर्यवंश ।

श्रीरामचन्द्रजी	प्रतिकाश्व
कुश	सुप्रतीक
अतिथि	अरुदेव
निषध	सुनक्षत्र
नल वा नभ	पुष्कर
पुण्डरीक	अन्तरिक्ष
मेघधन	सुतपा
बल	अमित्रजित
शल	बृहद्राज
वज्रनाभ	बर्हकेतु
सोजन्स (शंखण)	कृतंजय
युषिताश्व	रणंजय
विधृति	संजय

हिरण्यनाभ शाक्य
पुष्य शुद्धोद
सुदर्शन सांगल
अग्निवर्ण असमंजित(प्रसेनजित)
शीघ्र रोमक
मरु सुरथ
प्रसुश्रुत सुमित्र
सन्धि (इसकी पांच पीढीके पीछे मेवाड्के राणा-
अमर्षण ओंका वंश आरंभ होता है)
अश्वान् महारथी
विश्वसह्व अतिरथी
प्रसेनजित् अचलसेन
तक्षक कनकसेन
बृहद्बल महामदनसेन
बृहद्रण सुदन्त
उरुक्रिय विजय वा (अजयसेन)
वत्सवृद्ध पद्मादित्य
प्रतिव्योम शिवादित्य
भानु हरादित्य
सहदेव सूर्यादित्य
बृहदश्व सोमादित्य
बाहुमान शिलादित्य
केशवगोठ दूलशील
नागादित्य सेनपाल
भोगादित्य खेमराज (पाण्डुशाखासमाप्त)
देवादित्य (दूसरावंश शेषनाग सम्बन्धी ।)
आशादित्य विसर्व
कालभोज वीरसेन
ग्रहादित्य शीर्ष
बप्पा-बापा-इसने अहंगमाल

सम्वत् ७७० में चित्तौर लिया ।

वैरजित (वैरिजित)

दिल्लीका चंद्रवंश ।

दुरवर
परीक्षित सोढपाल
जनमेजय शूरसेन
असमंजस सिंहराज
अधन अमरगोद
महाजन अमरपाल
यशरथ सरवहि
धृतवान पधरत
उग्रसेन मदपाल
शूरसेन तीसरावंश ।
श्रुतसेन महाराज
रसमराज श्रीसेन
वाचल महिपाल
सूतपाल महाबलि
नरहरदेव स्वरूपवर्ति
यशरथ नेत्रसेन
भूपत सुमुखधन
सेअवंश जेतमल
मेघावी कलंक
श्रवण कलमन्
कीकन सिरमर्दन
परदथ जयवंग
दस्तुनम हरगूज
अदेलिक हीरसेन
हन्तवर्ण अन्तिनय
धुन्धपाल (इसने राज्याधिकार सैनिक मंत्री को देदियां ।)

(चौथावंश।)
धुंधसेन
संघवज
महागंम
नद
जीवन
उदय
जेहुल
(यह अन्तिम राजा हुआ)
अनन्द
राजपाल
(यह पर्वतमें सुखवन्तके हाथसे मारा गया)

(चन्द्रवंशी मगधवंश। प्रथम)
मार्जारी
श्रोमापी
श्रुतश्रवा
अयुतायु
निरमित्र
सुनक्षत्र
बृहत्सेन
सतजित
श्रुतंजय
विप्र
शुचि
क्षेम्य
सुव्रत
धर्म
सुश्रम
दृढसन
सुमति
सुबल
सुनीय
सत्याजत
विश्वजित
रिपुंजय

(दूसरावंश।)
प्रद्योत (सुनकका बेटा)
पालक
विशाखयूप
राजक
नन्दिवर्द्धन वा तक्षक

(तीसरावंश।)
शेषनाग
किडक वा काकवर्ण
क्षेमधर्मा
क्षेत्रज्ञ
विधिसार
अजातशत्रु
दर्भक
अजय
नन्दिवर्द्धन
महानन्द
सुमाल्य

(चौथावंश)
चन्द्रमौरी वा चन्द्रगुप्त
वारिसार
अशोक
सुयशा
संगत
शालिशूक
सोमशर्मा
शतधन्वा
बृहद्रथ

(पांचवां वंश)
अग्निमित्र
वसुमित्र
भद्रक
पुलिन्द
घोष
वज्रमित्र
भागवत
देवभूति

(छठावंश।)
भूमित्र
नारायण
सुशर्मा

(सातवां वंश)
पु
कृष्ण (आंध्रवंश)
शान्तकर्ण
पूर्णमास
लम्बोदर
चिविलंक
मेघस्वाति
अनिष्टकर्म
हालेय
तलक
पुरीषभीरु
सुनंदन
चकोर
शिवस्वाति
अरिन्दम
गोमती (गोतमीपुत्र)
रीमान
मेदशिरा
स्कन्द
यज्ञश्री
विजय
चन्द्रविज्ञ
सलोमधी (पुलोमन)

इति प्राचीनवंशावलिः।

---

१ कुशके वंशमें नरवर और आमेरके राजा हैं, दूसरेमें कृष्णके सन्तान जिनमें जैसलमेरके राजा हैं, कुशकी सन्तान कछवाहे कहेजातेहैं, बडगूजर जो अब अनूप शहरमें वसतेहैं, अपनी उत्पत्ति उसीवंशसे वतातेहैं, अब हम उन २ क्षत्रियोंकी वंशावली कुछ लिखतेहैं जो इससमय क्षत्रियोंके नामसे प्रचलित है। यद्यपि मुख्यरूपसे ३६ जाति कहकर विख्यात हैं, परन्तु उनमें कुछ विशेष भी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकमें।

१ इक्ष्वाकु	१३ डावी	२५ अग्निपाली
२ सूर्य	१४ मकवाना	२६ वल्ला
३ सोम वा चन्द्र	१५ नरूका	२७ काला
४ यदु	१६ असुरिया	२८ मागडोल
५ चाहुमान (चौहान)	१७ सिलार वा सिलारा	२९ मोतदान
६ परमार	१८ सिन्द	३० मेहर
७ चालुक्य (सोलंकी)	१९ सेपट	३१ कुगैर
८ पडिहार	२० हनवान्हण	३२ कुर्जिया
९ चावडा	२१ किरजाल	३३ चाडलिया
१० डोडिया	२२ हुरैरा	३४ पोकरा
११ राठौर	२३ राजपाली	३५ निकुम्प
१२ गोहिल	२४ धानपाली	३६ सुलाल

चन्दवरदाईकी पुस्तकसे ।——	कुमारपालचरितसे ।	——गुजराती पुस्तकसे ।
१ रवि वा सूर्य	इक्ष्वाकु	गोतचार गोहिल
२ शशि वा सोम	सोम	अनिगोहिल
३ यदु	यदु	कट्टी वा काठी
४ ककुत्स्थ	परमार	किसैर
५ परमार	चौहान	निकुम्प
६ चौहान	चालुक्य	वरवेटा
७ चालुक्य	छिन्दक	वावस्वा
८ छिन्दक	सिलार (राजतिलक)	मारू
९ सिलार	चापोत्कट	मकवाना
१० अभीर	प्रतिहार	दाहिमा
११ मकवाना	कलंक	डोडिया
१२ गोहिल	कूर्पाल (कूर्पट)	वल्ला
१३ चापोत्कट	चन्देल	वघेल
१४ पडिहार	औहिल	यदु
१५ राठौर	पौलिक	जेठवा
१६ देवला	मोरी	जाडेजा
१७ टांक	मकवाना (चन्दुपाणक)	जिट
१८ सिन्धु	धान्यपालक	सोलंकी
१९ अनंग	राज्यपालक	परमार
२० पौतक	दहिया	काबा
२१ प्रतिहार	तुरुन्दलीक	चावडा

(चन्दवरदाईकी पुस्तकसे)	(कुमारपालचरितसे)	(गुजरातीपुस्तकसे)
२२ दधिखट्ट	निकुम्प	चूडासमा
२३ कारट्टपाल	हूण	खांट
२४ कोटपाल	वल्ला (छपी पुस्तकमें यह नाम नहीं)	खेरा
२५ हूल (हूण)	हरियड	रावली
२६ गौड	मोखर	मसानिया
२७ निकुम्प	पोखर (छपी पुस्तकमें विशेषनाम)	पालनी
२८ राजपालिक	सूर्य	हल्ला
२९ कनिवा (कविनीय)	सैंधव	झाला
३० कलचुरक वा कलचुरी	चंदुक	दाहरिया
इनमें चार कुल	राट	वाहुल्या
अग्निसे उत्पन्न	शक	सर्वेया (छत्रियतगसार)
होनेसे चन्द कविने	करपाल	पडिहार
वडे माने हैं।	दाउल	चौहान
३१ सदावर	अमंग	
	नंट (जट)	
३२ दोयमत्त		
३३ गोहिलपुत		
३४ हरितट		
३५ कमाप		
३६ मट (जट)		
३७ धान्यपालक		

(वीचियोंके भाटसे।)	(टाटसाहिबकी शुद्ध की हुई नामावली)		(दूसरे नाममें जो पायेजातेहैं वे विशेष हैं।)
गेहलाते	इक्ष्वाकु काकुत्स्थ वा सूर्य		शिशुनाग
परमाल	इन्दुसोम वा चन्द्र		मौर्य
चौहान	गहिलोत वा गहलोत	२४ शाखा	शुङ्ग
सोलंकी	यदु	४ शाखा	काण्व
राठौर	तुंवर	१७ शाखा	अन्ध्र
तवर	राठौर	१३ शाखा	गुप्त
वडगूजर	कछवाहा	०	यौद्धेय
पडिहार	प्रमार	३५ शा०	मौखरी
माला	चाहुमान वा चौहान	२६ शा०	लिच्छवी

यदु	चालुक्य वा सोलंकी	१६ शा०	मैत्रक
कछवाहा	परिहार	१२ शा०	वाकाटक
गौड (इनकी शाखा है)	चावडा	१ शा०	चन्देल
सेंगर	टाकटांक वा तक्षक		कल्चुरि (हैहय)
वल्ला	जिटजेटी वा जाट		पाल
खरवड	हन वा हूण		सेन (घरु)
चावडा	काठी		गंगावंशी
दाहिमा	वल्ला		कदम्ब
डाहिया	झाला	२ शा०	पल्लव
वैस	जेठवा वा कामरी		सेन्द्रक
गेहरवाल	गोहिल		सिन्द
निकुम्प	सर्वेया		वाण
देवट (देवडा)	सिलार		काकतीय
जोहिया	डाबी		इसके सिवाय और
सीकरवाल	गौट	५ शा०	भी प्रसिद्ध
दावी	डोडा वा डोड		कुल है
डोड	गेहरवाल		
मोरी	वडगूजर	३ शा०	
मोखरा (मोखरी)	सेंगर	१ शा०	
अमीर	सीकरवाल	१ शा०	
कलचुरक (हैहय)	वैस	१ शा०	
अग्निपाल	डाहिया		
अखरिया (वा सर्जा)	जोहिया		
हूल (हूण)	मोहिल		
मानतवला	निकुम्प		
नालिया	राजपाली		
चाहिल	दाहिमा	१ शाखा,	
	इसके सिवाय हूल शहित्म्या		

प्रत्येक वंशमें शाखा और गोत्रका उच्चारण होताहै, यह जानलेना एक बडी आवश्यक बात है, इससे वंशकी मुख्य २ बातें धर्मविषयक सिद्धान्त तथा आदि निवासस्थान विदित होजाताहै प्रत्येक राजपूतको इसका कंठरचना आवश्यक है, इस गोत्रका विवाह सम्बन्धमें बडा काम पडता है, वंश शाखा प्रशाखा (खांपो) में विभक्त होते हैं, उनके अन्तमें स्रोत आवत वा सोत पद पितृसूचक होते हैं, जैसे सक्तावत, चन्दावत कर्म सोत आदि, सक्तावत सक्ताके सन्तान, चन्द्रावत, चन्द्राके सन्तानादि जिन कुलोंकी शाखा नहीं है वे इकावा अकेला कहाते हैं।

वणिक् जातियोंकी बहुतसी नामावलीभी राजपूतोंके वंशसे निर्गत हुई है, इसविषयका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

सबसे प्रथम क्षत्रिय जाति सूर्य और चन्द्र इन दोही वंशोंमें विभक्त थी, पीछे उनमें विशेष पुरुषोंके महत्त्वसे अनेक नाम हुए, और इन दो वंशोंके साथ चार अग्निकुल मिलानेसे छः नाम हुए, और फिर चन्द्रसूर्य वंशोंकी शाखा प्रशाखा मिलकर छत्तीससे भी अधिक होगई।

१ गहिलोत गहलोत इस वंशके स्वामी और छत्तीस कुलके भूषण, सूर्यवंशी महाराणा चित्तौराधीश हैं, यह रामचंद्रजी के असली वंशधर मानेजाते हैं, सूर्यवंशी अंतिम राजा सुमित्र से इनका सम्बन्ध है, इनके कुलका विस्तारसे वर्णन मेवाडके इतिहास राजस्थानमें लिखा है, यहां हम उनके नाम और गोत्रके विषयमें कुछ लिखेंगे, जो कनकसेनके समयसे प्राप्त हुए हैं, और उन देशोंके आधीन रहे हैं, जिस राजाने दूसरीशताब्दीमें अपने असली राज्य कौशलदेशको छोडकर सौराष्ट्रमें सूर्य वंशको स्थापित किया।

विराटके स्थानपर जो कि पाण्डवोंके वनवास समयमें उनके रहनेका प्रसिद्ध स्थान था, इक्ष्वाकुके उस वंशधरने अपना वंश स्थापित किया, और उसके वंशधर विजयने थोडीसी पीढियोंके उपरांत विजयपुर (विराटगढ) स्थापित किया, येहि वल्लभीपुरके राजा कहाये, और एक सहस्र वर्षतक वल्लभी वा बालकराय उपाधिको सौराष्ट्रके राज्यवंशोंने क्रमशः धारण किया। गजनी वा गयनी उनकी दूसरी राजधानी थी, जहांसे अंतिम राजा शिलादित्य और उसका कुटुम्ब छठी शताब्दिमें पार्थियनों द्वारा बाहर किया गया, उसके ग्रहादित्य नामक पुत्रने ईडरका छोटासा राज्य प्राप्त किया, और इस परिवर्तनसे उसीके नामपर उस वंशका नाम पडगया और रामका वंश गहिलोत कहलाने लगा, पीछे ईडरके जंगलोंसे आहड वा आनन्दपुर जा बसनेके कारण यह नाम बदलकर अहाड़िया होगया, इस नामसे यह वंश बारहवीं शताब्दितक प्रसिद्ध रहा, जब ज्येष्ठ भ्राता राहपने बाहुबलसे मोरी राजासे छीनी, चित्तौड़की गद्दीका अपना स्वत्व त्यागकर डूंगरपुरमें अपना राज्य स्थापित किया, जो आजभी उनके वंशवालोंके आधीन है, और अहाडिया उपाधिको आजतक वे लोग धारण करतेहैं, उसके छोटे भ्राता महपने अपनी राजधानी सीसोद स्थापित की, जिसके कारण इस वंशका तीसरा नाम शिशोदिया होगया पर मुख्य गुहिलोत लिखा जाता है, यह चौबीस शाखाओंमें विभक्त है जिनमें अब थोडी शेष हैं।

१ अहाडिया	डूंगरपुरमें	१४ ऊहड	यह भी प्रायः मिलते नहीं
२ मांगलिया	मरुभूमिमें	१५ ऊसेवा	
३ सीसोदिया	मेवाडमें	१६ निरूप	
४ पीपाडा	मारवाडमें	१७ नादोड्या	यह प्रायः अब लुप्त हैं।
५ कैलाया	यह संख्यामें थोडे पाये जाते हैं प्रायः अब मिलते नहीं।	१८ नाधोता	
६ गहोर		१९ भोजकरा	
७ धोरणिया		२० कुचेरा	
८ गोधा		२१ दसोद	
९ मजरोपां		२२ भटेवरा	
१० भीमला		२३ पाहा	
११ कंकोट		२४ पूरोत	
१२ कोटेचा			
१३ सोरा			

यदु-भारतकी समस्त जातियोंमें यदुवंश बहुत प्रसिद्ध है। यह वंश चन्द्रवंशकी उच्चकोटिका है, यदुवंश क्षय होने पर कृष्णकी सन्तान जाबुलिस्तानतक गई, और गजनी तथा समरकन्दके देशोंको बसाया, और पीछे फिर भारतको लौटे और पंजाब पर अधिकार जमाया, पीछे मरुभूमिमें आये, और वहांसे लङ्गा, जोहिया और मोहिल लोगोंको निकालकर क्रमशः तन्नोट देरावल और सम्वत् १२१२ में जैसलमेर बसाया, जो कृष्णके वंशधर भट्टी (भाटी) लोगोंकी वर्त्तमान राजधानी है, यदुही नाम भाटी रूपमें परिणत होगया है, राठोरोंके आक्रमणसे यद्यपि इनका अधिकार कम होगया है पर, स्वभाव वही है. इसीकी एक शाखा 'जाडेजा' जाति है यह लोग अपनेको साम्यपुत्र कहते हैं, अब इस जातिके लोग कई कारणोंसे सिन्धके मुसल्मानोंसे ऐसे मिलजुल गये हैं कि अपना जाति अभिमान सर्वथा खोदिया है, यह सामसे जाम बन गये हैं और इनका एक छोटासा राज्य जाम राज्य कहलाता है, करौलीके राजा जिनकी मथुराजी जागीर है, इसी वंशके राजा हैं, मरहटोंके बडे बडे सरदार इसी वंशके हैं।

(यदुवंशकी आठ शाखा हैं।)

१ यदु	करौलीके राजा।
२ भाटी	जैसलमेरके राजा
३ जाडेजा	कच्छभुजके राजा।
४ समेचा	सिन्धके निवासी।
५ मुडैचा	अज्ञात
६ विदमन	
७ वद्दा	
८ सोहा	

तंवर वंशभी यदुवंशकी शाखामें माना जाता है, इसको ३६ राजकुलोंमें स्थान प्राप्त है; चन्द बरदाई इसको पाण्डवोंके वंशमें बतलाता है. महाराज विक्रमादित्य इसीवंशमें प्रगट हुए हैं, और इसी वंशके अनंगपाल तंवरने सम्वत् ८४८ में उजाड हुई दिल्लीको फिरसे बसाया था, इसकी बीसवीं पीढीमें दूसरा अनंगपाल हुआ, जिसने सम्वत् १२२० में निःसन्तान होनेके कारण अपने धेवते चौहान पृथिवीराजको दिल्लीके सिंहासन पर बैठाया। इस समय इनके अधिकारके ठिकाने तुंवरगढका इलाका था जो चम्बल नदीके दाहिने किनारे उसके और यमुनाके संगमकी ओर स्थित है, तथा जैपुर राज्यमें पाटन तुअर वाटीकी छोटीसी जागीर है, वहांका जागीरदार अपनेको इन्द्रप्रस्थके प्राचीन सम्राटोंका वंशधर मानता है।

राठौर, राठोरे-अपनेको श्रीरामचन्द्रके पुत्र कुशका वंशज कहते हैं परन्तु उनके भाट उनको कश्यपसे दितिकन्यामें उत्पन्न होना मानतेहैं परन्तु प्रमाणिक लोग राठौरोंको कुशिकवंशी मानतेहैं। यह चन्द्रवंशी अजमीढकेवंशधर कन्नौजके बसानेवाले कुशनामकी गद्दीके किसप्रकार अधिकारी हुए, इस वंशका अन्तिम राजा जयचन्द्र पृथिवीराजका पतन कराकर जब स्वयं गंगामें डूब मरा, तब इसका पुत्र सियाजी मरुस्थलीकी ओर चला गया वहां उसने मडोरके परिहारोंको नष्ट करके अपना राज्य स्थापित किया, मुगल सम्राटोंको आधी विजय इन्हींकी तलवारसे मिली है, राठोरोंकी २४ शाखा हैं।

धान्वल, मडेल, चकित, धूहडिया, खांखरा, वदूरा, छाजीरा, रामदेवा, कबरिया, हठूदिया, मालावन्त, सुण्डु कटेचा, मुहोली, गोगादेवा, महेचा, जयसिंहा, मुरसिया, जोरा इत्यादि इनका गौतम गोत्र, माध्यान्दिनीशाखा, शुक्र गुरु, गार्हपत्य अग्नि, पंखिनी कुलदेवी है।

कुशवहा (कछवाहा) यह कुशके वंशके हैं, । कोशल देशमें दो शाखा निकलीं जिनमें एकने सोन नदीके किनारे रोहतास बसाया, दूसरी लाहरके समीप कोहारीके दरोंमें जावसी कुछ समयके उपरान्त इन्होंने निरवर वा नरवरका प्रसिद्ध किला बनाया, जो नलके रहनेका स्थान था, जो इससमय सैंधियाके आधिन है, दशवीं शताब्दिमें इन्होंने अपने स्थानसे निकल मीनाओंको और बडगूजरोंको राजौरसे निर्बल करके और कुछ भूमि लेकर आमेरको स्थापन किया, इनके विभाग गडबड होगयेहैं परन्तु वर्तमान विभाग जिन्हें कोठरियां कहते हैं बारह हैं । इनमें ग्वालियरके कछवाहे दूबकुण्डमें कछवाहे नरवरके कछवाहे विख्यात हैं । ग्वालियर वालोंमें, लक्ष्मण, वज्रदामा, मंगलराज, कीर्तिराज, मूलदेव, देवपाल, पद्मपाल, महीपाल, त्रिभुवनपाल विजयपाल, शूरपाल, अनंगपाल इनके वंश मुख्य है । अग्नि-वंश जब कि क्षत्रिय जाति निस्तेज होगई तब ब्राह्मणोंने आबू पर्वतपर नैर्ऋत्य कोणमें एक कुण्ड खोदा, और दैत्योंको पराजीत करनेके लिये आहुति दी, पहले जो अग्निकुंडसे पुरुष निकला उसकी आकृति वीरों जैसी न थी, इसीसे ब्राह्मणोंने उसे द्वारपाल बनाकर बैठा दिया, फिर मन्त्र पढकर आहुति देनेसे एक पुरुष निकला और हथलेीसे बननेके कारण उसका नाम चालुक हुआ, फिर तीसरा पुरुष निकला उसका नाम परमार (पृथ्वीहार वा पडिहार हुआ) चौथी वार अग्निकुण्डसे एक पुरुष दीर्घकाय, उन्नत ललाटवाला प्रगट हुआ, यह धनुष्यबाण और तलवार लिये प्रगट हुआ, चतुराकृति होनेसे उसका नाम चौहान हुआ, और उसने दैत्योंको परास्त किया, परमार वा परिहार चालुका वा सोलंकी और चौहान यह अग्निवंशी हैं ।

परमार अग्निवंशियोंमें बहुत प्रभावशाली हुआ, अबतक कहावत चली आती है पृथिवी परमारोंकी है यह पुरानी कहावत है सतलजसे लेकर समुद्रतक इनका देश किसी समयमें था, इनके स्थान माहेश्वर धार, मांडू, उज्जैन, चन्द्रभागा, चित्तौर, आबूचन्द्रावती, मऊ, मैदाना, परमावती, ऊमरकोट, वेश्वरलो- द्रवा, पट्टन प्रसिद्ध हैं, ऐसा विदित होताहै इनकी राजधानी माहेश्वरपुरी सबसे प्रथम थी, धारानगर और मांडू इन्होंने बसाया था, इस वंशमें राजा भोज परमार ही था, परमार कुलकी ३५ शाखा हैं जिसमें विहल शाखा बहुत प्रसिद्ध है उनके नाम लिखते हैं ।

मोरी-इसमें चन्द्रगुप्त और गुहिलोतोंसे पहलेके चित्तौरके राणा हुए ।

सोडा-सिकन्दरके समयके सोगडी भारतकी मरुभूमि धारके राजा ।

सांखला-पूगलके जागीरदार मारवाडमें ।

खैर-इनकी राजधानी कैराडू ।

ऊमरा, समूरा-प्राचीनसमय मरुभूमिमें थे ।

वेहिल वा विहिल-चन्द्रावतीके राजा ।

मैपावत-मेवाडान्तर्गत बिजोल्याके वर्तमान जागीरदार ।

बुल्हर-उत्तरीय मरुभूमिमें ।

काबा-सौराष्ट्रदेशमें प्रसिद्ध और अब सिरोहीमें पायेजाते हैं ।

ऊमट-मालवाके अन्तर्गत ऊमट वाडेके राजा ।

रेहवर, दुण्डा, सोरटिया, हरेर-यह मालवाके अन्तर्गत ग्रासिये जागीरदार हैं ।

इनके सिवाय चौंदा, खेचड, खुगडा, बरकोटा,पूनी, सम्पल भीबा, काल्पुर, कालमोह,कोहला, पूसया, कहोरिया, धुंधदेवा, बरहर, जीप्रा, पौसरा, धूंता, रिकुम्वा, और टीका ।

चाहुमान या चौहान ।

चौहानोंका वंश अनहलसे लेकर पृथिवीराजके समय ३९ राजाओंमें समाप्त होता है, चौहानोंकी २४ शाखा हैं जिनमें बूंदीकोटाके राजवंश सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं जो हाडौती नामसे प्रसिद्ध हैं सांचौरके चौहान बहुतही प्रसिद्ध हैं गागरौन और राघोगढके खीची सिरोहिके देवडे जालौरके सोनगडे, लूणवाह और पावागढके पावेचे यह सब वीर पुरुष हैं २४ शाखाओंके नाम लिखते हैं. यह माध्यन्दिनी शाखावाले है, चौहान, हाडा, खीची, सोनगण, देवडा, पाविया, संचोरा, गाएलवाल, मदोरिया, निर्वाण, मालानी, पूर्बिया, सूरा, नादडेचा, संकेचा, भूरेचा, बालेचा, तस्सेरा, चाचेरा, रासिया, चांदू, नकुम्भ, भावर और बंकट ।

चालुक्य वा सोलंकी ।

सोलंकियोंका निवासस्थान लोकोट (लाहौर) कहा जाता है इनकी शाखा माध्यन्दिनी है, यह वंश सोलह शाखाओंमें विभक्त है ।

१ बघेल—बघेल खंडके राजा राजधानी बांधूगढ । पीथापुर थराद और अदलज आदिके राव ।

२ वीरपुरा—लूणावाडाके राव ।

३ बेहिल—मेवाडान्तर्गत कल्याणपुरके जागीरदार राव उपाधि युक्त ।

४ भूरता } जयसलमेरान्तर्गत वारूटेकरा
५ कालेचा } और बाहिरमें ।

६ लंघा—मुलतानके निकट रहनेवाले ।

७ तोगरू } पंचनदमें रहनेवाले स्वधर्मभ्रष्ट हैं
८ बिकू }

९ सोलके—दक्षिणमें पाये जाते हैं ।

१० सिरवरिया—सौराष्ट्र देशके अन्तर्गत गिरनारमें रहनेवाले ।

११ राओका—जयपुरमें टोंडाके इलाकमें रहनेवाले ।

१२ राणकरा—मेवाडके अन्तर्गत देसूरीमें रहनेवाले ।

१३ खरूरा—मालवा देशान्तर्गत आलोट और जावडाके निवासी ।

१४ तांतिया—चन्दभड सकुनवरी ।

१५ अलमेचा—भूमिहीन ।

१६ कलामोर—गुजरात निवासी ।

पडिहार ।

पडिहार वंशमें नाहड राव प्रसिद्ध हुआ है, मण्डोवर (मन्दोदरी) पडिहारोंकी राजधानी थी, यह मारवाडका मुख्य नगर था, यह जोधपुरके उत्तर पांच मीलमें है पडिहार वंश राजपुतानेमें विखस हुआ है, कोहारी, सिन्धु और चम्बल नदियोंके संगमपर इस वंशकी एक बस्ती है, पडिहारोंकी १२ शाखा थीं जिनमें मुख्य ईदा और सिन्थल थीं, इनके लोग लूनी नदीके किनारे पाये जाते हैं ।

चावडावंश–किसी समय बहुतही प्रसिद्ध था, इनका वंश मेवाडके पुरुषोंके संग विवाह सम्बन्ध करते देखा गया है, इनकी राजधानी सौराष्ट्रके समुद्री किनारेके पास दीव बन्दरका टापू था, यह सूर्यके उपासक कहेजाते हैं, चावडा वंशकी एक शाखा डावी कही जाती है।

टांक वा तक्षक–तक्षक एक बहुत पुराना राजवंश है, कोई २ इसको सीथिन वंशमें मानते हैं, राजस्थानके अनेकभागोंमें तुष्टा तक्षक और टांकजाति पाई जातीहै, तक्षकही नागवंश कहाता है, शालि॰ वाहन इसी कुलका माना जाता है आसेरगढ टांक लोगोंका निवासस्थान था, इसमें सहारन नामी एक पुरुषने अपनी जाति और धर्म दोनोंही बदल दिये,जिसके कारण इस जातिका नाम राजस्थानकी जातियोंसे मिट गया।

जाट–यद्यपि छत्तीस राजकुलोंकी सूचीमें जिट वा जाटने भी स्थान पाया है, परन्तु न तो कोई इन्हें राजपूत मानता है। और न इनका किसी राजपूत जातिके साथ विवाह होना पाया जाताहै, यह भारत भरमें फैले हुए हैं इनमें भरतपुरके राजा प्रसिद्ध हैं, शेष लोग खेती वाडीका काम करते हैं, इनके संस्कारभी लोप होगये हैं तथा इनमें कण्वर्भा होताहै इसकारण उत्तमकक्षासे गिरे जाते हैं, पंजाबमें जिट कहे जातेहैं, इनकी जाति वा आदि निवास स्थान सिन्धु नदीके पश्चिम तरफके देश माने गये हैं और इनको यदुवंशसे निकला हुआ मानते हैं, टाड साहब इनको यूची वा यूटी शाखामें मानते हैं यह तक्षककी शाखाभी माने जातेहैं तथा दन्तकथासे महादेवजीकी जटासे कोई इनकी उत्पत्ति मानते हैं पर एक शिला॰ लेखमें पाया जाता है कि जिटवंशी राजाकी माता यदुकुलकी थी जिसके कारण इनको ३६ राजकुलोंके मध्य स्थान मिलाहै, सन् ई० की पांचवीं शताब्दीमें यह पंजाबमें वस गये थे, सन् ४४० ई० में इनका राज करना भी पाया जाताहै, टाड साहबका कहनाहै जब यादव लोग शालिवाहन पुरसे बाहर हुए, तब वे शतलज नदी उतरकर मरुस्थलमें दाहिया और जोहिया राजपूतोंके आश्रित हुए, वहां देरावल राज॰ धानी स्थापित की, और यहीं किसी दवावके कारण उन्होंने यदु नाम छोड जाट नाम धारण करलिया हो तो क्या आश्चर्य है ! जिसकी यदुकुलके इतिहासमें वीस शाखा पाई जाती हैं,यह लोग बडे वीर होते हैं इन्होंने महमूदको बहुत सताया, और उसका अपमान भी किया था, इनका निवास सिन्धु नदीके पूर्वी किनारेपर था, महाराजा रनजीतसिंह इसी वंशमें थे, इस जातिके अकालीनामधारियोंमें अभी तक चक्र धारण किया जाताहै जिसका व्यवहार भगवान् कृष्णचन्द्रजीने स्वयं किया है।

हून वा हूण–कहा जाताहै कि यह सीथियनके मध्य भारतके बाहरकी जाति है, सौराष्ट्रके प्रायः द्वीपमें यह जाति पाई जाती है,वहीं कट्टी काठी मकवाणा बला जातियां भी मिलतीहैं श्वेतहूण लोगोंका अधिकार भारतके उत्तरी भागमें था इनका एक दल सौराष्ट्र और मेवाडमें भी बसा था।

दन्त कथाओंसे इनका निवास स्थान चम्बलके पूर्वी किनारे बाडोली नामक प्राचीनस्थानमें पाया जाता है, यहांके सिंगार चोरी नामक प्रसिद्ध मंदिरको हूण जातिके राजाका विवाहमंडप बताया जाता है भिसरोरमें भी इसका राज्य कहाजाताहै माही नदीके किनारे पर इनका एक गांव भी है।

कट्टी वा काठी–इनको भी ३६ राजकुलोंमें स्थान मिलाहै यह पश्चिमी प्रायद्वीपकी अत्यन्त प्रसिद्ध जातियोंमेंसे एक है जिसने सौराष्ट्रके नामको बदलकर काठीयावाड करदियाहै यह लोग सूर्यकी पूजा करतेहैं, शान्तिप्रिय कम होतेहैं, इनका कद छः फुट होता है यह बडे वीर होते हैं।

बला–इसको भी ३६ कुलोंमें स्थान मिला है भाट इनको ठट्टा मुलतानका राव कहतेहैं, यह सूर्यवंशी होनेका दावा करतेहैं, इनकी बस्ती सौराष्ट्र देशमें टांक थी, जिसे प्राचीन कालमें मोंगी पट्टन कहते थे

उसके निकटवर्ती देशोंको जीतकर उसने उनका नाम वल्ल क्षेत्र रक्खा तथा वल्लभीपुरभी वही कहाया, पर सौराष्ट्र प्रायद्वीपमें वल्ला अपनेको इन्दु वंशसे निकला मानते हैं, और अपनेको वाल्हीक पुत्र कहते हैं जो सिन्धुके किनारे आरोरके राजा थे कदाचित् यह सिशल्यके सन्तान हों कहीं इन्हींमेंसे निकली अपनी शाखा मानतेहैं, टाकका राजा वल्ला है।

झाला मकवाणा-यह जाति सौराष्ट्रके प्रायद्वीपमें वसी हुईहै इसजातिके लोग राजस्थानमें वहुत कम प्रसिद्ध हैं महाराणा प्रतापके समय इस वंशकी प्रतिष्ठा वढी, इसके कारण सौराष्ट्रके वडे भागोंमेंसे एकका नाम झालावाड होगया है जिसमें वांकानेर, हल्वद, और ध्रागदरा मुख्य है, इस जातिकी कई शाखा हैं जिनमें मकवाण मुख्य है।

जेठवा जटवा वा कमरी-यह लोग सौराष्ट्रमें ही प्रसिद्ध हैं बाहर नहीं, इस जातिके नामपर एक देश जेठवाड कहाता है इससमय इसके अधिकारमें प्रायद्वीप सौराष्ट्रके पश्चिमी किनारे पर है इसके राणाका निवास स्थान पोरवन्दर है, यह राजपूत कहाते हैं, इनके भाट १३० राजाओंकी गद्दी मानते हैं प्राचीन कालमें इनकी राजधानी गूमली थी, यह अपनेको हनूमान वंश मानते हैं।

गोहिल-यह राजपूत वंश एक प्रसिद्ध है यह भी सूर्यवंशी होनेका दावा करते हैं इनका निवास स्थान मारवाडमें लूनी नदीके मोडके समीप जूना खेडगढ था और वीस पीढी तक इनके अधिकारमें रहा, इनकी एक शाखा वगवामें रहा, दूसरी सीहोरमें रही, वहींसे भावनगर और गोवाका नगर वसाया, भावनगर माहीकी खाडीपर गोहिल जातिका स्थान है, और सौराष्ट्रके प्रायद्वीपका पूर्वीभाग गाहिलवाडा कहलाता है।

सर्वैया वा सरीअस्य-इस वंशके विषयमें इतनाही पता लगताहै कि भाटलोगोंने इनको क्षत्रिय जातिका सार लिखा है, यह अश्वजातिकी ही एक शाखा समझी जाती है।

सिलार वा सुलार-यह भी क्षत्रियजाति एक समय प्रसिद्ध थी, अनहिलवाडाके इतिहासमें लिखा है कि सिद्धराज जयसिंहने उसको अपने राज्यमेंसे निर्मूल करदिया था, अव यह वणिकोंकी ८४ जाति में एक लार जातिहै, विदित होताहै इस जातिके लोग वैश्य वृत्तिवाले होगये हों।

डावी-इसके विषयमें इतना ही कहाजाता है, एकसमय यह सौराष्ट्रमें प्रसिद्ध थी, यह यदुवंशकी ही शाखा कदाचित्‌हो, नतो अव इस जातिका राज्य है न कुछ लोगही हैं।

गौड-यह जाति किसीसमय राजस्थानमें वहुत प्रसिद्ध थी और वंगालके राजा इसी जातिके थे, और उन्हींके नामसे उनकी राजधानी लखनौतीका नाम पडा, पुराने इतिहासोंमें इस जातिको अजमेरके गौडकर के लिखा है, सन् १८०९ सैंधियाद्वारा यह राज्य नष्ट हुआ अन्तिम राजाका नाम राधिकादास था, इसकी अन्तहिर, सिलहाला, तूर, दुसैना और वोडाना यह पांच शाखा हैं।

डोड वा डोडा-इनका इतिहासविषयक वृत्तान्त वहुत कम पाया जाता है यह अपनेको अग्निवंशी मानतेहैं, कहते हैं जव अग्निकुंडसे क्षत्रिय उत्पन्न हुए, उस कुंडके समीप केलेकी डोडीसे एक पुरुष उत्पन्न हुवा, वह डोडिया कहाया, इनका राजा मालवेमें पिप्पलौदा है।

गेहरवाल-इन लोगोंका असली देश काशीका प्राचीन राज्य है, इनके वडे पुरुखाका खोरतजदेव नाम था जिसकी सातवीं पीढीमें जेसन्दने विन्ध्यवासिनीके स्थान पर वडा यज्ञ करके अपनी सन्ततिको वुंदेलाकी उपाधि दी, जिससे गेहरवाल नाम मिट गया, और बुन्देला उस महान् प्रदेशका नाम होगया, जिसमें उसकी अनेक शाखा वुन्देलखण्डमें चन्देलोंके विनष्ट स्थान पर रहती हैं, कालिंजर मोहिनी महोवा इनके अधिकारमें था. वुंदेला मानवीरका आधिपत्य १२०० ईसवीके लगभग

था, इनमें ओर्छाका राजा बडा भाग्यवान् बडा वीर था, इसका पुत्र दक्षिणमें औरङ्गजेबका अत्यन्त प्रसिद्ध सेनापति था, इससमय बुंदेला वंशके अनगिन्त लोग हैं, और गेहरवाल नाम तो असली निवास स्थानोंमें रह गया है।

बडगूजर—यह अपनेको सूर्यवंशी मानते हैं, और गुहिलोतों को छोडकर एक यही वंश ऐसा है जो अपनेको रामचन्द्रके बडे पुत्र लवसे निकला मानताहै इनके बडे बडे इलाके ढूंढाड में थे, और माचेडीके राज्यमें राजोरका पहाडी किला उनकी राजधानी थी, राजगढके सिवाय औरभी इनके इलाके थे, गंगाके किनारे अनूप शहर इन्होंने वसाया।

सेंगर—इनका राज्य जगमोहनपुर यमुनाके किनारे पर है।

सीकरवाल—यह वंश राजस्थानमें साधारण रहा, एक छोटासा इलाका चम्बलके दक्षिण किनारे यदुवाटीसे मिला हुआ सीकडवाल कहलाता है, जो अब ग्वालियरके इलाकेमें मिलगया है उसका यह नाम सीकरी नगर (फतहपुर) से पडा है जो पहले एक स्वतंत्र राज्य था।

बैस—इस जातिको भी ३६ राजकुलोंमें स्थान मिला है। यह सूर्य वंशकी शाखा मानी जाती है, इस वंशके असंख्य मनुष्य पाये जाते हैं, गंगायमुनाके बीचमें इनका बडा देश बैसवाडा कहाता है।

दाहिया—इस जातिका निवास सिन्धुके किनारे सतलजके संगमके निकट था. जैसलमेरके भाटियोंके इतिहासमें इनका लेख मिलता है, अब यह लोग नहीं पाये जाते।

जोहिया—यह भी दाहियोंके समीप रहते थे, प्राचीन इतिहासों में यह जंगल्देशके स्वामी कहे गये हैं, जिस देशके अन्तर्गत हरियाण, भटनेर और नागोर थे।

मोहिल—बीकानेर वर्तमान राज्यके स्थापित होनेके समयतक यहलोग बडे प्रदेशमें वसे हुए थे राठौरोंने इस जातिको विध्वंस किया और मालण मालाणी जाति मल्लिया जाति भी अब नष्ट होगई।

निकुम्प—यह गुहिलोतोंसे पहले मण्डल गढके स्वामी थे।

राजपाली—इसका उल्लेख वंशावली लिखने वालोंने राजपालिक वा केवल पालक नामसे किया है इसकी उत्पत्ति टाड साहब सीथियन लोगोंसे मानतेहे, यह जाति संभवतः पालीजातिकी शाखा है।

दाहिरिया—कुमारपाल चरित्रके आधारपर इसकी ३६ राजकुलोंमें गणना की जाती है, चित्तौडकी ख्यातिमें इसका कुछ उल्लेख पायाजाता है, दाहिर सिन्धदेशका अधिपति था, इसपर सन् हिजरीके ९९ वर्षमें बगदादके खलीफा सेनापति कासिमने आक्रमण किया और उसके साथ बडी निर्दयता की।

दाहिमा—एक बडी प्रबल राजपूत जाति थी, सात आठ शताब्दी वीत जानेपर ऐसी जातिका स्मरण लोप होगया, दाहिमा वयानेका स्वामी पृथिवीराजके बडे सामन्तोंमेंसे एक था, इस घरानेके तीन भाई पृथ्वीराजके यहां थे, बडा भाई कैमास, दूसरा पुण्डार और तीसरा चामुण्डराय था, शहाबुद्दीनने इसको खांडेराय लिखा है, पृथ्वीराजका पुत्र रेणसी चामुण्डरायकी बहनसे उत्पन्न हुआ था।

जिन राजपूत जातियोंकी कोई शाखा नहीं दी गई उनका वर्णन।

जालिया, पेशानी, सोहागनी, चहिर, रान, सिमाला, बोंटीला, गीचर, मालण, आहिर, हूल, वाचक, वट्टुर, केडच, कोटक, बूसा और विरगोता।

राजस्थानकी जंगली जातियां।

वागरी, मेर, काबा, मीना, भील, सेरिया, थोरी, खागर, गौड, भड, जम्बर, और सरूद।

खेतीकरनेवाली जातियां।

अमीर वा अहीर-ग्वाला कुर्मी वा कुलम्बी, गूजर और जाट।

महाराष्ट्रक्षत्रियजाति ।

महाराष्ट्र क्षत्रिय जातिमें ९६ कुल हैं प्राकृत ग्रन्थमें भविष्योत्तर पुराणका प्रमाण बताया है। इस प्रकार लिखाहै, कि, ब्रह्माजीसे अत्रि, अत्रिसे सोम, उनके बुध, बुधसे पुरूरवा, पुरूरवाका बडा पुत्र पुष्कर द्वीपमें रहनेवाला दक्ष हुआ, इनकी अदिति कन्या कश्यपको व्याही गई, कश्यप सूर्य हुए, इनके मनुके मनुके इलवादि राजा हुए, तथा इनके वंशमें मतिनार, अयुताचैन, महाभौम, अक्रोध, अजमल, श्रावण, अजंपाल, मयूरध्वज, भोज, हरिश्चन्द्र, सुधन्वा, भद्रसेन, सिंहकेतु, हंसध्वज, गन्धर्वसेन आदि अनेक राजा हुए, इनके वंशके सब सूर्यवंशी क्षत्रिय कहातेहैं। श्रावण राजाको युद्धमें प्रसन्न होकर, एक समय सूर्यने सोमप्रभा नामकी कन्यादी उससे सोमवंश चला, उसमें मांधाता, वसुसेन, मणिभद्र, भद्रपाणि, भद्रसेन, चन्द्रसेन, आदि कुलोंके विख्यात करनेवाले बहुतसे राजा हुए, यह सब सोमवंशी कहातेहैं, अब शेषका वंश कहतेहैं, सोमवंशी राजा मांधाताकी स्त्री भानुमती बडी पतिव्रता थी, परन्तु किसी कारणवश राजाने उससे समागम छोड दिया, एकदिन गंगास्नानको जाते समय रानीकी विश्वामित्र ऋषिसे भेंट हुई, उसने महर्षिसे अपना दुःख निवेदन किया, ऋषिने कमंडलका जल देकर रानीसे कहा कि पतिके मस्तकपर इस जलको डालोगी तो-पति वशीभूत होगा, जब घर जाकर रानीने पतिके मस्तकपर जल छिडका तब उसकी एक बूंद पृथिवीपर गिरी, वह भूमि भेदकर शेषके मस्तक पर गिरि, और शेषने तत्काल आनकर रानीको दृष्टिद्वारा गर्भाधान कराया राजा रानीके गर्भ है यह जानकर बडा क्रोधित हुआ, तब विश्वामित्रजीने राजासे आनकर सब वृत्तान्त सुनाया, तब राजा शान्त हुआ, रानीके शेषांशसे श्रीधर पुत्र हुआ, इस वंशमें गंगाधर, महीपाल, पुरन्दर नागोदर, वेणुवर, योनजावीर्य, हिरादर, दामोदर, नागानन, कार्तवीर्य, विजयाभिनन्दन, आदि क्षत्रिय हुए हैं, यह सब शेषवंश हैं। (अब यदुवंश कहते हैं,) चन्द्रवंशमें राजा ययाति हुए उनका पुत्र यदु हुआ उसके वंशके सब यादव कहाये, वे यदुवंशी बारह प्रकारके हैं, उनको आगे कहेंगे, दूसरे राजा कर्णध्वज, सुमति, वसुमति, गोपति, इत्यादि इसप्रकार सूर्य, सोम, शेष और यदु वंशके राजा भरतखंडके छप्पन देशोंमें राज करते हैं, कलियुगमें छानवे कुल हुए, परन्तु सोम सूर्य दोही कुल मुख्य हैं, उन औरोंका इन दोमें अन्तर्भाव है, सूर्यवंशी राजाओंके बारह, चन्द्रवंशियोंके २५, गोत्र सह्याद्रि खण्डमें लिखे हैं, भारद्वाज १ पूतिमाक्ष-२ वा (जमदग्नि), वशिष्ठ ३, काश्यप ४, हरित ५, विष्णु ६, ब्रह्म-(गौतम) ७, शौनक ८, कौंडिन्य ९, कौशिक १०, विश्वामित्र, ११ और माण्डव्य १२ यह १२ गोत्र सूर्यवंशके हैं, प्रभावती, कालिका, महालक्ष्मी, योगेश्वरी, इन्द्राणी, दुर्गा यह कुलदेवी हैं, तीन और पांच प्रवर हैं। सोम वंशियोंके प्रह्लाद, अत्रि, वशिष्ठ, शुक (सनत्कुमार), कण्व, पाराशर, विश्वामित्र, भरद्वाज, कपिल, शौनक, याज्ञवल्क्य, जमदग्नि, गौतम (ब्रह्म), मुद्गल (गार्ग्य), व्यास, लोमश, अगस्ति, कौशिक, वत्सस, पुलस्त्य, मकन, (माल्यवत), दुर्वासा, नारद, कश्यप, (शांडिल्य) और वकदालभ्य, यह २५ गोत्र हैं। योगेश्वरी, महालक्ष्मी, त्वरिताचण्डिका, यह कुलदेवी हैं, इनके कर्म पण्णवति कुल नामक प्राकृत ग्रन्थमें लिखे हैं; इनमें बहुतसे स्वधर्म त्यागसे पतित होगये हैं, सूर्यवंशके शिवादि सोमवंशीके भी शेषवंशी जनोंके यहां गणपतिकी उपासना है, इन्हीं कुलोंमें जो सूर्यवंशी गन्धर्वसेन राजा हुआ उस गन्धर्वसेनके छः पुत्र हुए, उनमें बडा भर्तृहरि हुआ, जो स्त्रीसे दुःखी हो वनको चला गया, छोटा भाई विक्रम गद्दीपर बैठा, इसकी

राजधानी उज्जैन हुई, इसका स्थानापन्न भोजदेव, भोजदेवके वंशसे भोंसले कुल प्रगट हुआ, इसने विदर्भ देशमें नागपुर अपनी राजधानी नियत की,शेषसे ब्राह्मणकी कन्यामें शालिवाहन उत्पन्न हुआ, इसके वंशमें कुमार राजा, और विक्रमके वंशमें सौकर यह दोनों दक्षिणप्रान्त गोमान्तक पर्वतके निकट राज्य करने लगे, सुर्वे पायगडमें, पवार अयोध्यामें, घोरपडे पैठनमें, शिन्दे ग्वालियरमें, सोलंकी दिल्लीमें, शिशोदे तुलजापुरमें, मोहिते मन्दसोरमें, चौहान पंजाबमें, गायकवाड गुजरातमें, सामन्त गोवा ग्राममें, म्हाडिक बागल कोटमें, तावडे इन्दौरमें, दाभाडे द्वारकामें, धुलप नासिक त्र्यम्बकमें, शिरके उत्तर" अहमदाबादमें, तुवार कर्णाटकमें, मोरे काश्मीरमें, यादव मथुरामें राज्याधिकारी हुए, यह कुलोंकी मुख्य गति हैं।

अब छ्यानवे कुलोंके नाम कहते हैं।

(कुलीसुर्वे) सूर्यवंशी अजपाल राजाके वंशमें जो हुए उनका नाम सुव हुआ, उनका वशिष्ठ गोत्र, महालक्ष्मी कुलदेवी, खेचरी मुद्रा, तारक मंत्र है, यह विजया दशमीके दिन खड्ग पूजते हैं,लग्नकार्यमें देवक कलंबके अथवा सूर्यफूल, तखतगद्दी अयोध्या पट्टन,पीलीगद्दी पीलीध्वजा लालघोडा इनके कुल छःहैं।सितौले, गवने, नाइक, घाड, रावत और सुर्वे यह क्षत्रियधर्म है। (पंवारकुल) सूर्यवंशी राजा मयूरध्वजके वंशी पंवार हैं, भारद्वाज गोत्र,कुलदेवता खांडेराव, अलक्ष मुद्रा, बीज मंत्र, विजया दशमीको तलवारका पूजन, पीली गद्दी, पीतध्वजा, पीतघोडा, सिंहासनगद्दी ,पायगड, लग्नकार्यमें देवक कलंबका, और तलवार धारके फूल होतेहैं। इनके सात कुल हैं, पालव, धारराव, दलवी, कदम्ब, विचारे,सालप, और पंवार। (भोसले कुल) सूर्यवंशी भोजराजका उपनाम भोसले शौनक शालकायन गोत्र, जगदम्बा कुलदेवी, भूचरी मुद्रा, तारक मंत्र, विजया दशमीको विछवा शस्त्रका पूजन, लग्नकार्यमें देवक शंखका पूजन, भगवी गद्दी, "भगवी ध्वजा, नीला घोडा, सिंहासनगद्दी" नागपुर, इनमें सकपालनकासे, राव और भोसले यह चार कुल हैं। (घोरपडेकुल) सूर्यवंशी हरिश्चन्द्र राजाके वंशमें हुओंका उपनाम घोरपडे, वशिष्ठ गोत्र, कुलदेवता खांडेराव, अगोचरी मुद्रा, पंचाक्षरी मंत्र, विजया दशमीके दिन कटार पूजन, लग्नकार्यमें रुईका देवक, सिंहासनगद्दी मुंगीपट्टन, श्वेतगद्दी, श्वेतध्वजा लालघोडा और मालप, पारथ, नलवड, और घोरपडे, यह चार कुल हैं क्षत्रिय धर्म। (राणाकुल) सुधन्वा नामक "सूर्यवंशी राजाके कुलका उपनाम राणा है, जमदग्नि गोत्र, माहेश्वरी कुलदेवी, चाचरी मुद्रा, षडक्षर मंत्र, विजया-दशमीको तलवार पूजना, सिंहासनगद्दी उदयपुर, लालगद्दी, लालध्वजा, लालघोडा, लग्नकार्यमें देवक-सूर्यकान्त अथवा वडका दुधे, सिगवन, मुलीक, पाटक और राणा,इनके ये पांच कुल हैं। इनका क्षत्रिय धर्म है। (शिन्देकुल) सूर्यवंशी राजा भद्रसेनके कुलवालोंका उपनाम शिन्दे है, इनका कौडिन्य गोत्र जोतिबा कुलदेवी, अलक्ष मुद्रा,तारक मंत्र, तख्त गद्दी ग्वाल्हेर, पीली गद्दी, पीली ध्वजा,पीला घोडा, लग्न कार्यमें देवक कलम्बका अथवा रुईका, विजया दशमीके दिन तलवार पूजा, यह शिन्दे (सिन्धिया) बारह भांतिके हैं पर उपनाम एकही है। कुर्वाशिन्दा, शिशुपालशिन्दा, महत्कालशिन्दा, नेकुलाशिन्दा, सकतालशिन्दा, जयाशिन्दा, विजयाशिन्दा, धुर्दयाशिन्दा, सितज्याशिन्दा, सिंगण वेलदेवक,वा कुर्वाशिन्दा, माखेल देवक, वा जयशिन्दा, कलवक देवक, और विजयाशिन्दा इत्यादि भेद हैं। (सोलंकी वंश) सूर्य वंशी हंसध्वज राजाके वंशधरोंका उपनाम सोलंकी है, उनका विश्वामित्र गोत्र, हिंगलाजमाता कुलदेवता, अगोचरीमुद्रा, बीजमंत्र, लग्नकार्यमें देवक कमल नालसहित अथवा सालुकीके पिच्छ, तख्तगद्दी दिल्ली नगर, पीली गद्दी, पीली ध्वजा, पीला घोडा, विजयादशमीके दिन खांडेका पूजन होताहै, इनके पांच

कुल हैं, सोलंकी चावमारे घाडवे घाव पाताडे अथवा पवोडे (सिसौदेकुल) सूर्यवंशी सिंहकेतु राजाके वंशधर उपनामसे सिसौदे कहाते हैं, गौतम गोत्र, कुलदेवी अम्बिका, भूचरी मुद्रा, पंचाक्षरी मंत्र, विजया दशमीको कटारपूजन, लग्नकार्यमें देवक हलदीका और कलंबका, सिंहासन गद्दी, तुलजापुर, इसमें पांच कुल हैं, पांचौ सिसौद हैं, वे सिसौदे अपराध मोयर जोशी और सावल हैं । (जगतापवंश) सूर्यवंशी राजा वसुसेनके वंशधरोंका उपनाम जगताप है, वकदालभ्य गोत्र, खांडेराव कुलदेवता, खेचरी मुद्रा, षडक्षरी मंत्र, सिंहासन भरतपुर, सफेदगद्दी, सफेद ध्वजा, सफेद घोडा, लग्नकार्यमें देवका कलम्बका और पीपलके पान, विजयादशमीको तलवारका पूजन, इसमें जगताप सेला म्हात्रे सितोले यह चार कुल हैं। (मोरवंश) सोमवंशी मांधाता राजाके वंशधरोंका उपनाम मोर, ब्रह्मगोत्र, खांडेराव कुलदेवता, अगोचरी मुद्रा, मृत्युंजय मंत्र, सिंहासनगद्दी कश्मीर, भगवागद्दी, भगवाध्वजा, भगवा घोडा, विजय दशमीको कटार पूजन, लग्नकार्यमें मोर पुच्छका देवक तीन सौ साठ, इसमें मोरे केशकर कस्पाते दरवारे यह चार कुल हैं । (मोहिते वंश) सोमवंशी सुमति राजाके वंशधरोंका उपनाम मोहिते हुआ । गार्ग्यगोत्र, खांडेराव कुलदेवता, अलक्ष मुद्रा, वीज मंत्र, सिंहासन गद्दी, मन्दसौर, श्वेत गद्दी, श्वेतध्वजा, श्वेत घोडा, लग्नकार्यमें कलंवका देवक, विजया दशमीको तेगेका पूजन, इसमें मोहिते माने कामरे कांटे काठवडे यह पांच कुल हैं, क्षत्रिय धर्म है । (चौहानवंश) सोमवंशी राजा मणिभद्रके वंशधर चौहान (चव्हाण) कहाते हैं, इनका कपिल गोत्र, जोतिवा कुलदेवता, तथा खांडेराव कुलदेवता, चाचरी मुद्रा, नृसिंह मंत्र, सिंहासन गद्दी पंजाव, पीली गद्दी, पीली ध्वजा, पीला घोडा, लग्नकार्यमें वासुन्दीवेल देवक, विजया दशमीके दिन खांडापूजन, इसमें चौहान चडप, वारंगे दलपते, यह चार चौहान हैं । (दामाडेवंश) सोमवंशी राजा भद्रपाणिके कुलमें होनेवालोंका उपनाम दामाडे है, इनका शाण्डिल्य गोत्र, जोतिवा कुल दैवत, अगोचरी मुद्रा, तारकमन्त्र, सिंहासन गद्दी द्वारका, लग्नकार्यमें कलंवका देवक, भगवागद्दी, भगवाध्वजा, पीलाघोडा विजया दशमीको कटारपूजन, इसमें दाभाडे निंबालकरराव रणादिवे यह चार कुल हैं । (गायकवाडकुल) सोमवंशी इन्द्रसेन राजाके वंशधर गायकवाड उपनामसे विख्यात हुए, सनत्कुमार गोत्र, कुलदेवता खांडेराव, भूचरी मुद्रा, मृत्युंजय मंत्र,सिंहासन गद्दी, गुजरात, भगवा गद्दी, भगवा निशान, भगवा अथवा लाल घोडा, लग्नकार्यमें गूलर अर्थात् उंवरेका देवक, विजया दशमीको तेगापूजन, इसमें गायकवाड, पाटनकर, कार्तवीर्य यह तीन कुल हैं । (सावन्तकुल) सोमवंशी भद्रसेन राजाके वंशधर सावन्त नामसे विख्यात हुए, दुर्वासा गोत्र, जोतिवा कुलदेव, चाचनी मुद्रा, नृसिंह मंत्र, सिंहासन गद्दी गोवा, (सावन्त वाडी) भगवी गादी, भगवा निशान, पीतपट्टका लोहवन्दी घोडा, लग्नकार्यमें कलम्ब और हाथी दांतका देवक, विजया दशमीको तलवारका पूजन, इसमें सावन्त, कम्वले, इनसुलकर और वाडगे यह चार कुल हैं, (म्हाडिकवंश) शेष वंशी कार्तवीर्य राजाके वंशधर म्हाडिक नामसे विख्यात हैं, मालवंत गोत्र, कात्यायनी देवी, खेचरी मुद्रा, पंचाक्षरी मंत्र, सिंहासन गद्दी वागलकोट, नीली गादी, नीली ध्वजा, नील घोडा, लग्नकार्यमें कलम्ब अथवा पीपलका देवक, विजया दशमीको कटार अथवा तलवारका पूजन, इसमें म्हाडिक, गयली, भागले, मोईर, ठाकुर यह पांच वंश हैं, (तावडे वंश) शेषवंशी नागानन राजाके वंशधर तावडे कहाये, इनका विश्वावसु गोत्र, अगोचरी मुद्रा, योगेश्वरी कुलदेवता, षडक्षरी, मन्त्र, सिंहासन इंदौर, सफेद गद्दी, सफेद ध्वजा, सफेद घोडा, लग्नकार्यमें कलम्बका या हलदीका अथवा पानका अथवा सोनेके पानका कुलदेवक होता है, विजया दशमीके दिन कटारका पूजन होता है, इसमें तावडे

सांगल, नामजादे, जावले, चिरफुले यह पांच वंश हैं । (धुलपधुले वंश) शेषवंशी महिपाल राजाके वंशधर धुलपधुले कहाये; इनका धुलप गोत्र, खांडेराव कुलदेवता, भूचरी मुद्रा, मृत्युंजय मंत्र, नासिक, त्र्यम्बक, विजयदुर्ग सिंहासन गद्दी, भगवी गद्दी,भगवी ध्वजा, भगवा घोडा,जरीपटका, लग्नकार्यमें रुलम्ब, लैंडपवारका वा लैंडसुनेका, हलदीका, वा केतकीके अन्तरभागका देवक होता है, विजया दशमीको खांडेका पूजन होता है, इसमें चार और किसीकी मतसे धुलप, धुमाल, धुरे, कासले और लेंडपवार यह कुल जानना। (वागवेवंश) गोती वा विजयाभिनंदन शेषवंशी राजाके वंशधर वागवे कहाये, इनका शौनक वा शौल्य गोत्र है, महाकाली कुलदेवता, भूचरी मुद्रा, नृसिंह मंत्र, तख्तगद्दी, कोटबूंदी,भगवी गद्दी, भगवी ध्वजा, भगवा घोडा, लग्नकार्यमें कलम्बका देवक, विजया दशमीको तलवारका पूजन, इसमें वागवे परब, मोकासी, दिवटे और वागवे यह चार कुल हैं। (शिरके कुल) यदुवंशी कर्णध्वज राजाके वंशमें शिरके विख्यात हैं, इनका शौनल्य वा शौनक गोत्र है, महाकाली कुलदेवी, सिंहासनगद्दी अहमदाबाद, शुभ्र गद्दी, शुभ्र ध्वजा,शुभ्र घोडा, जरीपटका, चाचरी मुद्रा, बीज मंत्र, लग्नकार्यमें कलम्बका देवक, विजया दशमीको खांडा पूजन, इसमें शिरके, फाकडे, शेलके, वागवान, गावंड, मोकला, यह छः कुल हैं। (तुवारवंश) यदुवंशी राजा जसुमति वंशधर तुवार कहलाये, उनका गार्गायन गोत्र, योगेश्वरी कुलदेवता, सिंहासनगद्दी कर्णाटक (सावनूर वंकापुर)हरीगद्दी, हरीध्वजा, पीलाघोडा, जरीपटका, भूचरी मुद्रा, नृसिंह मन्त्र, लग्नकार्यमें उदुम्बरका देवक, सोनेकी माला, अथवा रुद्राक्षकी माला अथवा कांदेकी माला, विजया दशमीके दिन तेगापूजन, इसमें तुवार, तामटे, वुलके, धावडे, मालपवार यह पांच कुल हैं। (यादव वा जादववंश) यदुके वंशधर यादव वा जादव कहाये, इनका कौडिन्य गोत्र, जोगेश्वरी जोतीबा कुलदेवी, तथा खांडेराव कुलदेव, सिंहासन मथुरापुरी, पीली गद्दी, पीला निशान, पीला घोडा अलक्ष मुद्रा, पंचाक्षरी मन्त्र, लग्नकार्यमें कलम्बका, आंबेका वा उदुम्बरका देवक, विजया दशमीके दिन तलवारका पूजन, इसमें बारह कुल हैं। यह सब क्षत्री धर्मके पालन करने वाले हैं, इनके संस्कार होते हैं।

महाराष्ट्र जातिकी सेवक साढे बारह जाति हैं वे कुछ शूद्र और कुछ अब शूद्रवत् हैं, यथा तिलोले अंजनवाडे, मराठे, आकरमासे, (ग्यारहमासे),गाडीवान्, पन्नासे, (पचासे), बालेघाटी, वैदेशी, वैजापुरी, कडूमाडी यह दो प्रकारके हैं, फुलमारी धामीमाली धनगर यह बारह हैं। दो प्रकारके खुटेकर हैं, गडकी धनगर, उसमें खुटेकर उत्तम कहे जाते हैं, हलकोंकी आधीजाति कही जाती है। इस प्रकार यह साढे बारह जाति हैं इनके उपनाम सेलके बोडेकर काले लाडाणां सिन्दे पवार माहे जादव इत्यादि इनका भोजन सम्बन्ध साढे बारह जातिमें है।

गहरवार।

यह एक क्षत्रियवंश है, गुहवाल वा गहरवार एकही नाम कहा जाता है। यह पूर्वकालमें गिरि गुहाओं में रक्षाके निमित्त रहा करते थे, इससे गहरवार कहाये, यह चन्द्रवंशी हैं, यदुवंशमें काशीका राजा दिवोदास हुआ, इनको गहवरकी पदवी मिली, अर्थात् इनके श्रेष्ठ ग्रह थे तबसे इनका नाम ग्रहवर हुआ, इसी वंशमें कन्नोजके राजा जयचन्द्र हुएथे, कोई कहते हैं कि, मुसलमानोंने जब कन्नौजको जीता तब जयचन्दके वंशधर घरसे बाहर हो जोधपुरमें चलेगये, घरसे बाहर होनेके कारण यह महरवार कहलाने लगे, राज धारागढ प्रयागादिमें निवास हैं।

इसप्रकार राजस्थानके क्षत्रियोंका वर्णन करके अब भारतके अन्य स्थानका भी निरूपण करते हैं। चन्द्रवंशमें इलाके द्वारा बुधसे पुरूरवा हुआ, और उसकी राजधानी इलावास जिसको अब इलाहाबाद कहते हुए उसके वंशके पुरुवंशी कहाये, गङ्गाके उसपार परगना ईल अबतक है वहां महादेवजीकी मूर्ति तथा चन्द्रमा और इलाकी मूर्ति है।

कह आये हैं कि (बाहू राजन्यः कृतः) भुजासे क्षत्रियोंकी उत्पत्ति है जो प्रजाको कष्टसे बचावै वह क्षत्रिय है।

राजा शामकारूप स्वर्गी क्षत्रिय हैं, कहते हैं इनके यहां सूरज वंशसे कोई संतति न थी, अनेक दान पुण्य किये, कुछ फल न मिला, दैवात् एक दिन बडी आंधी आई, और दो चार दिनका उत्पन्न हुआ एक बालक कहींसे उठकर आंगनमें आनपडा, राजाने उसको लेकर पालन किया, और कहा बालक स्वर्गसे गिरा है, इससे आजसे यह वंश स्वर्गीय कहावैगा।

गहरवार-राजा धरागढ जिला इलाहाबाद गहरवार है।

सरनत-राजा गोरखपुर इसी वंशमें है और यह उत्तम वंश है।

बिसेन-राजा महौली जिला गोरखपुर बिसेन है।

चमरगौर-अवधमें यह भी क्षत्रवंश हैं।

भटगौर- चमर गौरसे कुछ कम प्रतिष्ठामें हैं।

बामनगौर-यह खैराबाद इलाके बदायूंके हैं यह तीनों अपनेको बैस क्षत्रियसे कम नहीं मानते बैस डूंडाखेडाके निवासी हैं, कहा जाता है कि जिस समय मिरजा सालारमसऊद ख्वाहरजादे सुल्तान महम्मद गाजी बहरायचमें थे उस काल युद्धके समय क्षत्रियोंकी तीन गर्भवती स्त्रियोंमें से एकने चमारके, एकने भाटके और एकने ब्राह्मणके यहां जाकर शरण ली, और बच्चोंकी उत्पत्ति वहीं हुई, और पालेगये, जब मुसल्मानी फौज वहांसे हटगई तब यह प्रगट हुई, और जब परीक्षा करनेसे तीनों शुद्ध पाये गये और बालक अवस्थामें अनेक प्रकारकी सामग्री और अस्त्र शस्त्र सामने रखकर जब लडकोंकी परीक्षा कीगई तब सब से पहले जिस बालकको चमारने छिपा रक्खा था उसने तलवारपर हाथ लगाया इस कारण यह तीनोंमें उत्तम गिनागया और बिरादरीमें लिये गये।

जनवार-इस जातिके राजपूत मुकाम खैराबाद अवधमें जिमीदार हैं।

दगवंशी-परगना कुंडवार (अवध) के जिमीदार हैं।

बसैया-परगने खोआई इलाहाबादप्रान्तके निवासी हैं।

सौनक-परगना मण्डोई जि० मिरजापुरके निवासी हैं।

मौनस-यह चुनारगढ जि० मिर्जापुरमें निवास करते हैं, थोकके समान हैं।

उज्जैन-यह अपना वंश भोजसे मिलान करते हैं पर इसका प्रमाण नहीं मिलता, यह सेसराम बहुसैन पुरमें रहते हैं।

रुद्र-इनका वृत्तान्त विदित नहीं।

गौतम-यह कोई २ द्वाबेमें पाये जाते हैं।

बाजल-इनका वृत्तान्त विदित नहीं।

नागकेशी-यह नागपुर अपना स्थान कहते हैं।

घोसला यह दक्षिण निवासी हैं ।

राजपूत वा रजपूत--एक दूसरी प्रकारकी क्षत्रियमन्य जाति है ।

इसप्रकारसे क्षत्रियोंके पांचसौसे अधिक वंश प्रतिष्ठित हैं, पर ३६ तथा कहीं २ बावन वंशोंकी प्रतिष्ठा है, वेदप्रतिपाद्य क्षत्रियवंश द्विजन्मा कहाता है उनके कर्म संक्षेपसे मनुजी लिखते हैं-

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च ।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः ॥

(मनु०)

प्रजाकी रक्षा करना, दान देना, और वेद पाठ करना और विषयोंमें न लगना यह क्षत्रियोंके धर्म है, राजपूत योधाओंके लगभग एक सहस्रके वंश हैं असली संस्कार सम्पन्न क्षत्रिय बहुतही थोडे हैं, चन्द्र सूर्य यदु आदि की परंपरा--चली आती हैं, परन्तु आचरणोंमें अनेकभेद होगये हैं, पूर्वकालमें राजन्य, क्षत्र और क्षत्रिय शब्द इस जातिके निमित्त था पीछे यही शब्द क्षत्रिय ठाकुर और राजपूत नामोंमें बदलगया ।

वध्यतां राजपुत्राणां क्रन्दतामितरेतरम् ॥

(महाभा० द्रोणप० अ० ४१ श्लो० २१)

ब्राह्मणा राजपुत्राश्च । बाहू राजन्यः कृतः ॥

(यजु० अ० ३१)

इत्यादिसे प्रमाणित होता है कि, राजकुमार राजन्य आदि क्षत्रिय वाचक है, भारतमें कहीं २ राजपूत शब्दसे ठाकुर शब्दको बहुत उत्तम मानते हैं, राजपूत राजाकी सन्तान और ठाकुर भूमिपति होते हैं । यही लोग शुद्ध क्षत्रिय हैं, पंडित जोगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य एम. ए. डी. एल ने अपनी पुस्तक हिन्दूकास्ट्स ऐण्ड सेक्ट्समें लिखा है कि राजपूतोंको सब शुद्ध क्षत्रिय स्वीकार करते हैं इनको पंजाबके खत्रियोंसे नहीं मिलाना चाहिये जो साधारण रीतिसे वैश्य समझे जाते हैं ।

यद्यपि टाड साहबने किसी २ राजपूतको सिथिया देशवालोंके मेल झोलका बताया है, परन्तु प्रोफेसर कोवेल कहते हैं कि सब राजपूत शुद्ध हिन्दू है, पर इसबातका ध्यान रहे कि रजपूत शब्द उस राजस्थानकी शुद्ध जातिका बोधक नहीं है, जो जालौन, आगरा, फतहाबाद आदिमें पायेजाते हैं, पौराणिक प्रथानुसार वे संकर हैं उनका क्षत्रिय जातिसे सम्बन्ध नहीं है, इनका क्षत्रिय पिता और धोशूद्रा मा है रुद्रयामल तंत्रके अनुसार वैश्य पिता और अम्बष्ठ स्त्री है, असली क्षत्रिय जातिमें विवाहसम्बन्ध, माताकी सपिण्डता और पिताकी सात पीढी छोडकर होता है, इनका रंग गोरा, देखनेमें मनोहर, राजशक्ति सम्पन्न होते हैं, यवनोंने इनजातियोंको कलंकित करनेकी मिथ्या काल्पनिक कथायें लिखी हैं, शेरिंग साहब हिन्दूटाइम्स ऐण्ड कास्ट जि० १ भा० २ अ० १ पृ० ११७ में लिखते हैं कि संसार भरकी जातियोंके अच्छे घरानेमें ऐसा कोई घराना नहीं है जो भारतकी राजपूत जातिकी अपेक्षा अपने बडे वंशवृक्ष अथवा अत्यन्त प्रशंसित इतिहासका अभिमान रखताहो । टाड साहब कहते हैं इनमें परतंत्रता वा निन्द्य कोई आचरण नहीं है, गदरके समय गौडाके राजा देवीबख्स सिंहजी तथा बलरामपुरके राजा साहबकी वीरता और क्षत्रियत्वकी सराहना कौन न करैगा, क्षत्रियोंमें जैसा अध्यात्मज्ञान था वैसा ऋषियोंने भी कहीं २ नहीं पाया, उद्दालक आरुणि गौतम इसके साक्षी हैं, शुद्ध क्षत्रियवंश हम सब ३६ राजवंशको नहीं मानसकते, और न यही स्वीकार कर सकते हैं कि सीथियन जातिके बहुतसे लोग इनमें मिलजुल

गये हैं, नाम और आचरणके मिलानेके लिये यह बात क्यों न स्वीकार की जाय कि सृष्टि आरंभसेही जब क्षत्रिय जाति है,तब दूसरी बाहरकी जातियोंने संभवत: इनके आचरण स्वीकार करलिये हों,जिन जातियोंमें द्विजन्मा संस्कार नहीं ?जिन जातियोंमें कण्व धरेजा होता है, जिनमें माता पिताके गोत्र त्यागका विवाहमें नियम नहीं है, जिनमें परंपरासे वह सदाचार नहीं वह क्षत्रिय वंशमें परिगणत नहीं होसकते,प्रत्येक वर्ण जिसका नाम गोत्रादि स्मरण न रहाहो,उसके आचरणोंसे समझ लियाजाता है असल क्षत्रियोंसे.आजकल जो सूर्य चन्द्र यदु पुरुवंशी तथा परमार सोलंकी चौहान आदि हैं उनका वर्णन हम करचुके हैं, क्षत्रिय जातिके राज्य आजभी विद्यमान हैं, और उनके विवाह कर्मादि उनहीं वर्गोंमें होते हैं, पर एक बडे आश्चर्यका विषय है कि अनेक जातियां ;जिनका कहीं इतिहास पुराणमें कुछ पता नहीं है या तो ब्राह्मण या क्षत्रिय बननेका दावा करती हैं।

बनाफर देवसक-यह क्षत्रियोंकी एक जाति है आल्हा ऊदल इसी वंशमें उत्पन्न हुए थे ।

पनवार-यह मरवी प्रान्तमें पाये जाते हैं ।

समरथला-परगना मीराबाद (जलालाबादमें) जिमीदार हैं ।

झिकार बटेरा-इनकी जिमीदारी आंवला बदायु करोर रुहेलखण्ड आदिमें पाई जाती है यह वैसा क्षत्रियोंकी बराबरीका दावा करते हैं ।

दुंडेरिया-जालौन कूचविहारमें जिमिदारी करते हैं, यह अपनेको बुन्देलोंसे उत्तम मानते हैं ।

कोरई-यह अकबराबादके प्रान्तमें विशेष रूपसे रहते हैं इनके विवाह सम्बन्ध जाटों तकमें करते हैं इनकी कक्षा दूसरे क्षत्रियोंसे न्यून है ।

खेचर-यह भी न्यून कक्षाके समझे जाते हैं, भगवंतसिंह खेचर पराक्रममें विख्यात होचुकाहै, खेचरोंकी जिमीदारी कडामानकपुर और फतहपुर हसुआमें पाई जाती है ।

मालासुलतान-जगदीशपुर अवधमें इनकी जिमीदारी है ।

तिलोई-जाइस, सलोन, नसीराबाद, अवधमें जिमीदारी है ।

कनपुरिया-कानपुर प्रान्तके निवासी हैं ।

वीधरगोली-जिमीदारी पुरातन गढअमेठी आदि अवधमें हैं ।

वच्छगोती-इलाका बव्गढ, बकोडवार (अवध) में इनकी जिमीदारी है, अब इसकी दो शाखा होगई हैं एक राजा और एक दीवान कहातेहैं, जिमीदार हसनपुर बन्धवा (अवध) जबसे मुसलमान होगये तबसे वे खानजादे कहानेलगे, जिमीदार बनौधा इनकी बहुत प्रतिष्ठा करते हैं, राजा रामपुर तिलोई अमैठी और बनौधाको जबतक खानजादा राजका तिलक न करै, तबतक वह राजा नहीं होता ।

राजकुमार-बच्छगोतीकी शाखा हैं, जिमीदारी अलदेमऊ तथा परगना अलकली सोधरपुर सुलतानपुर इनकी पुरातन रियासत है ।

रैकवार-यह तथा परहारभी रिसायत अवधके जिमीदार हैं ।

गर्गवंशी-नरसिंहपुर तथा सुलतानपुर इस वंशकी जिमीदारी है ।

पनवार-जिमीदारी बडे आजमगढ है ।

थोक-इनकी रियासत ठरपुर जिला जौनपुर है यह राजकुमारोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट है ।

रघुवंशी-परगना मोतगीर (अवध) में इनकी रियासत है ।

खत्रीजाति ।

इससमय हम खत्रिय जातिपर थोडासा विचार करते हैं, कि यथार्थमें पहले क्षत्रिय थे और उस पदवीसे उतरकर व्यापार करते हुए अब वैश्य होगये हैं । इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं कि अनेक जातियां क्षत्रिय वंशसे निर्गत होकर भ्रष्ट होगई, और अपना गौरव खो वैठीं, और इसमें भी सन्देह नहीं कि इस समय जो चन्द्र, सूर्य, यदु, परमार, चौहान, सोलंकी, राठौर, आदि वंश राज्य कररहे हैं उनसे खत्रिय जाति पृथक् ही दिखाई देतीहै, कारण कि क्षत्रिय (खत्री) शब्द साधारण राजन्य मात्रकी संज्ञा है, पर विशेष संज्ञा इनमें चन्द्र सोमादि वंशकी परंपरासे प्रचलित नहीं है, बहुतोंका मत है कि यह क्षत्रिय वंशही विगडकर खत्री होगया है, और बहुतोंकी सम्मति है कि यह एक प्रकारके वैश्य हैं, बहुतोंका मत है कि परशुरामके समयसेही यह खत्रिय होगये हैं, हम इस विषयमें वर्द्धमानके मान्य राजा वनविहारी कपूरके ग्रन्थसे कुछ लेख उद्धृत करते हैं कि चार खत्री मिहर, कृपाकर, शखन, मार्तण्ड नामके हैं, इनका ही अपभ्रंश क्रमसे मिहरे, कपूर, खन्ने, और तंडन हो गया है, यह छत्रधारी होनेसे सब क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ गिने जाते हैं, खन्ने खौफसे आधे होगये, इससे मिहरे, कपूर, खन्ने ढाई घर अव्वल तिलक लगवानेके कारण परमोत्तम समझे जाते हैं, और बाकी आठ सूर्य वंशी सूर्य नामके हैं, जैसे श्रेष्ठ, धावन, महेन्द्र, बहुकर, चक्रावलि, करालाग्नि, सूर्य, सहस्रकर इन नामोंका अपभ्रंश होकर सेठ, धौन, महींद्र, वहोरे, चौपडे, कक्कड, सूर, सहगल, नामोंसे सब मिलकर बारहजाई सरनाम हैं, लौकिक उक्ति इन नामोंकी यह सुनी जाती है कि मिहर खत्री अपने वेटेको बडे अमीर खत्रीके घर व्याहनेको गये, उसने इतना अधिक दहेज दिया कि यह खुश होकर बहूको गोदमें ले मंडपके नीचे नाचने लगे, तबसे लोगोंने इनको मिहरे कहकर पुकारा, दूसरे(कृपाकर) हजारों दीन दुखिया मनुष्योंको खानेके सिवाय वर्तन कपडे भी दिया करते थे, इस कीर्तिसुगन्धसे लोग इनको कपूर कहने लगे । तीसरे साहब किसी धनाढ्य खत्रीके यहां व्याहनेको गये, वहां लडकेने कुछ भारी नेग मांगनेका झगडा उठाया, परोसा पकवाने सब सूखने लगा, लडकेके बापने झट लक्ष्मीनारायण कह खाना आरंभ कर दिया, तबसे लोग इनको खन्ने कहतेहैं, एकसौ पांच सारस्वत ब्राह्मणोंकी कन्याओंके विवाह कराने तथा पांचसौ पच्चीस सारस्वत कुमारोंके यज्ञोपवीत करादेनेसे श्रेष्ठ पद प्राप्त हुआ, इसका अपभ्रंश सेठ होगया, एक ब्राह्मणकी कन्या बहुत सुन्दरी थी, एक कन्धारी सिपहसालारने उसको देख पाया, उसने उसके बाप भाईसे मांगा, ब्राह्मणने नहीं दी तब तुर्कोंने उसके बाप भाईको मारकर कन्या कन्धारीको दी, कन्याने विष पानकर अपने प्राण देदिये, यह ब्राह्मण जिसके प्रोहित थे उन्होंने यह समाचार पाकर अपने सजातियोंको साथ लेकर तुर्कोंपर चढाई करके उस सरदारको आग लगाकर खाक करडाला, तबसे लोग इनको खक्कर पुकारने लगे, जिसका अपभ्रंश कक्कर होगया, लाला सरबनलाल टंडन रचित क्षत्रिय प्रकाशमें लिखा है, मिहिर नाम सूर्यका है, इसकारण सूर्यवंशी क्षत्रिय मिहरे कहाये, टंडन और टंटा दोनों एक धातुसे निकले हैं, और टंटा करने वालोंका अर्थात्-उन वीरोंका जो जिस कार्यको आरंभ करैं, उसमें कितनीही लडाई भिडाई क्यों न हों, परन्तु कार्यको पूर्णही करना, इसकारण टंडन संज्ञक हुए, खन नाम आधेका है जैसे यह घर तीन खनका है, और खण्डभी उसी धातुसे बना है, इससे यह खन्ने आधे हैं, और यही ढाई घर कहाते हैं, इसीप्रकार कोई सूरीको सूर्यसे उत्पन्न बताताहै कोई शूरताकी झलक बताताहै, कोई कपूरको चंद्र वंश कहताहै, कोई भसीनोंको भास सूर्यवंशी बताताहै, कोई वोहराको व्यूहरचनामें कुशल मानते हैं कोई सेहनीको सैनी सेनानी वा सेना नायतका अपभ्रंश मानते हैं उसीप्रकार धौन धावन दूत हलकोरसे

उप्पल उपल अर्थात् प्रस्तरसे, सरहीन, शूरिन् उपनाम योद्धा, इत्यादि नामोंके अपभ्रंश मानते हैं । पर दूसरे विद्वान् इस बातको नहीं मानते वह कहते हैं, कि चन्द्रवंशमें यदुके दूसरे पुत्र क्रोष्टुके वंशमें कृष्ण बलरामजी उत्पन्न हुए, इनकी पन्द्रहवीं पीढीमें सत्वत राजा हुए, इनके भजमान, अन्धक, देवावृध, वृष्णि और महाभोज हुए, अन्धकके कुक्कुर भजमान शमीक बलगर्वित नामक पुत्र हुए, कुक्कुरके वंशीही कौक्कुर कहाये, कौक्कुरका अपभ्रंशही यह कक्कड शब्द है, इस प्रकार यह यदुवंशी हैं, छः जातिके क्षत्रियोंमें एकजाति कक्कडोंको गिनी जातीहै, परन्तु वत्सकुलके सेठोंकी इस समयमें चौजातिके ढाई घर कुलीन क्षत्रियोंमें गणना होती है, आयुके वंशको पुराणोंमें श्रेष्ठ लिखा है, इसका ही बिगडकर सेठ होगयाहै, इन दोनोंके कुल पुरोहित जामदग्न्य वत्स गोत्रीय सारस्वत कुमडिये हैं, तालजंघ कुलके कुछ क्षत्रिय महर्षि और्वके समयसे वशिष्ठ कुलको मानने लगे, वही वंश अपनेको इस समय सेठ नामसे अभिहित करता है, दूसरे इनको असहनशीलताके कारण सेढी तालवाड कहते हैं, परन्तु आजभी इन कक्कड आदि कुलोंकी सेठ संज्ञा देखी जातीहै, वशिष्ठ वंशज पराशर गोत्रके तिक्खे सारस्वत इन ताल- जंघ वा तलवाडोंके पुरोहित है, इस समय तालवाड, उत्तम कुलवाले क्षत्रियोंकी चौजातिसे भिन्न भिन्न श्रेणीके अन्तर्गत समझे जाते हैं, कुलीन खत्रियोंमें आजतक हन्दा (हन्तकार) निकाला जाता है, पर इधर लोग इस रीतिका पालन नहीं करते, जिसके लिये पुराणोंमें लिखा है ।

ग्रासप्रमाणं भिक्षा स्यादग्रं ग्रासचतुष्टयम् ।
अग्राच्चतुर्गुणं प्राहुर्हन्तकारं द्विजोत्तमाः ॥

सोलह ग्रास अन्नका नामही हन्तकार है, पंजाबमें यह हन्तकार बराबर निकाला जाताहै, एक बादशाहके दीवानमिश्रने इस हन्दाको दीवानी होनेपर भी ग्रहण किया था, और बादशाहने इसी अप- राधमें उनकी जान लेली थी, अर्थात् खाल खिंचवा लीथी, तभीसे उनके वंशवालोंकी अल्ल खलखिंच हुई है, कुम्हाडिये यजमानोंमें स्कन्दकी पूजा कराते हैं, मिहरे शब्दके लिये विदित होताहै कि मिथिला शब्दसे मिहरा होगयाहै, मैथिल पोतरेसेही मिहरौतरे बनगयाहै, यह मैथिल क्षत्रिय मिहरोतरे जैतलियोंके यजमान है, जैसे वत्स कुलके सेठोंका वत्स गोत्र है, उसी प्रकार कौशल्य मिहरोंका कोशल्य गोत्र है, मिहरोंका गौतम है कारण कि जनकजीका भी गौतम गोत्र था, और शतानन्द इनके पुरोहित गौतमजीके पुत्र हैं, तथा डांगावाल मिहरौतरे टोभा पूजतेहैं, एक भेद सिनन्दियोंका है, मथुरामें मिहरो- तरोंका निवास बहुत कालका पाया जाता है, वहां एक मुहल्ला ढाई घरका कूंचा कहाताहै, और महतपुर नामसे एक बजार भी है, तथा मथुराके मेहरा आज तक कहाते है ।

झिंगणोंके यजमान खन्ने और टंडन हैं, यह आंगिरस भरद्वाज गणके क्षण्य गोत्रके कारणसे खन्ना और ताण्डिन गोत्रसेही टंडन कहाते हैं, प्रवररत्न और प्रवरमंजरीमें क्षण्य और ताण्डिन आदि गोत्रोंके प्रवर निर्णयमें (आश्वलायनेन केवलाङ्गिरसेषु पाठेऽपि आपस्तम्बकात्यायनाभ्यां भारद्वाजेषु पाठात् विष्णुपुराण- संवादाच्च भारद्वाजैरविवाहेति) लिखा है यद्यपि आश्वलायन इनको केवल आंगिरसोंमें गिन गये हैं परन्तु आपस्तम्ब और कात्यायन इनको भारद्वाजके गणोंमें मानते हैं, ऐसा ही विष्णुपुराणका लेख है. इनको भारद्वाजके गणसे इनका विवाह न होगा, क्षण्य गोत्रके कुलीन क्षत्रिय ही खन्ना कहाते हैं. इस क्षण्य गोत्रके भारद्वाजके अन्तर्गत माने जानेसे सूत्रकार कात्यायन और आपस्तम्बके मान्यमतानुसार भारद्वाज गोत्रके समान आंगिरस बार्हस्पत्य और भारद्वाज इनके तीनों प्रवर भी हैं, राजा वितथके समय राजवंशी

शाखामें पुरुवंशान्तर्गत इनकी उत्पत्ति है, इसी प्रकार ताण्डिन गोत्रके कारण टंडन संज्ञा हुई है, टोडरमल इसी वंशके थे, कंसवधनाटकमें इनको ऐसा लिखा है-

'तस्यास्ति तण्डनकुलमण्डनस्य'।

इससे विदित है कि यह तंडिन गोत्रके ही नामसे तण्डन कहाये हैं। इनके आंगिरस आमक्षय्य और औरुक्षय्य तीन प्रवर हैं यही इनका गोत्र है इस समय इनका केवल आंगिरस गोत्र कहा जाता है शुद्ध आंगिरसोंमें ही ताण्डिन गोत्रके प्रवरोंकी गणना की है। जिस समय दैवीशक्तिसे उत्पन्न जसराय अपनी माताके मुखसे कटुवचन सुनकर दीवार फोडकर भूमिमें प्रविष्ट हुआ, उस समय माताने उसकी चुटिया पकडली, परन्तु पुत्र भूमिमें प्रवेश करताही चलागया, माताके हाथमें केवल चुटिया रहगई, अन्तमें कुल पुरोहित बाबालाल्हके वहां आनेपर और देवीकी स्तुति करनेपर देवीके अवतारी पुत्र जसरायने उस स्थानको सिद्धपीठके समान चमत्कारी शीघ्र फल देनेवाला बनाकर बाबालाल्हके नामके पीछे अपना नाम जोडकर बाबा 'लाल्हजसरायका' इस नामसे दियालकी शिला पुजवायी, और अपनी चोटी लेनेके बदलेमें खन्नोंकी चोटी लेनेकी रीति चलाकर अपने वंशकी रक्षा कीगई दियालपुर लाहौरसे ४० कोसपर है, मुंडनके पीछे जो चोटी रखाई जाती है उसकी यह बात है वहां जाकर उतरवाते हैं पर अब तो प्रायः सभी वहां जाकर चोटी उतरवाते हैं, और बालेको छुआकर जनेऊ पहर लेते हैं, हम देखते हैं, प्रायः दूसरे कुलमी यज्ञोपवीत संस्कारको नाममात्र करते हैं इससे बडी हानिकी संभावना है और संस्कार हीनताही वर्णका लोप करनेवाली है, खन्ने और टंडनोंकी कुलदेवी और इनके मदनाई असीरत आदि लगायत पुरोहितोंके अनुसार सब माने जाते हैं, तिनोंके यजमान तालावाड हैं, यह तालजंघही तालावाड नामसे विख्यात हैं, इन तालवाडोंके सेठी चम्म आदि आठ परिवार भेद हैं, गोत्र इनका वशिष्ठ व पाराशरके गणसे भिन्न है तथा इनका गोत्र हंसवंश कहा जाता है, भृगु गणोंमें एक हंसजिह्व गोत्र है संभव है कि यह हंसजिह्व ही हंसरसन नामसे परिवर्तित होगया हो, कारण कि जिह्व और रसन एकही पर्यायवाचक हैं और भार्ग च्यवन दिवोदास अथवा भार्गव वार्घ्यश्व दिवोदासही इनके तीन प्रवर भी हैं, मोहले सारस्वतोंके यजमान शैगल क्षत्रिय हैं, यह अपनेको कौशल्य गोत्री कहते हैं, यह पंजाबकी अंधपरम्परा है कि जिसका गोत्र विदित न हुआ वह झट अपनेको कौशल्य गोत्री कह देता है, परन्तु काश्यपके नैध्रुवोंमें एक छागल्य गोत्र भी है कदाचित् छागल्यका अपभ्रंशही शैगल होगया हो इन यजमान और पुरोहित दोनोंकेही काश्यप अवत्सार और नैध्रुव यह तीन प्रवर हैं।

कपूर खत्री पम्बुओंके यजमान हैं पंबुआना देशके निकाससे वहांके सारस्वत ब्राह्मण पम्बू कहाते हैं पम्बुओंका गोत्र उपमन्यु है, वाशिष्ठ इन्द्रप्रमद और आभरद्वसु इनके तीन प्रवर हैं भगवती चण्डिका कुल देवी है, कपूर खत्रीभी अपना कौशल गोत्र कहते हैं, परन्तु वशिष्ठ गणके अन्तर कार्पूरि गोत्र है और वशिष्ठ इन्द्रप्रमद आभरद्वसु ही इनके त्रिप्रवर भी कुल पुरोहितोंके उपमन्यु गोत्रके समान ही हैं इनके नाई भाट आदि पम्बुओंके अनुसार ही माने जाते है, इस प्रचारसे खत्रियोंकी उत्तम मध्यम अधम अनेक श्रेणी हैं और कहते हैं कि बामन जाई अर्थात् इनकी बामन श्रेणी हैं परन्तु जो विषय पुराणोंमें नहीं आता है उसको जनश्रुति वा आधुनिक आधारपर लिखना पडता है। ×

× उपल यहभी खत्री जातिका उपभेद है बारह कुलोंमेंसे एक यह है। कोचडे यह खौचड खत्री जातिका बिगडा हुआ शब्द है।

अरोडवंश ।

अरोडवंशभी अपनेको खत्री कहताहै, उसकी उत्पत्ति इस प्रकार है कि चन्द्रका पुत्र बुध, उसका पुरूरवा उसका आयु, उसका नहुष, उसके यति, ययाति, संयाति, रायति, वियति, कृति यह पांच पुत्र हुए, ययातिके यदु यदुके सहस्रजित् सहस्रजित्के शतजित् उसके महाहय उसके धर्म उसके नेत्र उसके कुन्ति उसके सोहंयती उसके महिष्मान उसके भद्रसेनक उसके दुर्मद उसके कृतवीर्य उसके अर्जुन उसके ओड्र नामक पुत्र हुआ है, इसके वंशकेही अरोड कहातेहैं महाभारतमें औड्र देशका वर्णन इसप्रकार है ।

पाण्ड्याश्च द्रविडाश्चैव सहिताश्चोड्रकेरलैः ॥

सहदेवने दक्षिणदिशामें पाण्ड्य, द्रविड, उड्र और केरलदेशको जीता, महाभारत शांतिपर्व अध्याय ४९ श्लोक ६७–५४ तकमें लिखाहै कि परशुरामके भयसे बहुतसे क्षत्रिय पलायन करके जहांतहां निवासकर अपनेको छिपाकर रहे थे, पृथिवीने उससमय कश्यपसे कहा—

सन्ति ब्रह्मन् मया गुप्ताः स्त्रीषु क्षत्रियपुंगवाः । हैहयानां कुले जातास्ते संरक्षन्तु मां मुने ॥ अस्ति पौरवदायादो विदूरथसुतः प्रभो। ऋक्षैः संवर्द्धितो विप्र ऋक्षवत्यथ पर्वते ॥ तथा तु कम्पमानेन यज्वनाप्यमितौजसा । पराशरेण दायादः सौदासस्याभिरक्षितः ॥ सर्वकर्माणि कुरुते शूद्रवत्तस्य स द्विजः । सर्वकर्मेत्यभिख्यातः स मां रक्षतु पार्थिवः ॥ शिवपुत्रो महातेजा गोपतिर्नाम नामतः। वने संवर्द्धितो गोभिः सोऽभिरक्षतु मां मुने ॥ प्रतर्दनस्य पुत्रस्तु वत्सो नाम महाबलः। वत्सैः संवर्द्धितो गोष्ठे स मां रक्षतु पार्थिवः ॥ दधिवाहनपौत्रस्तु पुत्रो दिविरथस्य च । गुप्तः स गौतमेनासीद्गंगा-कूलेऽभिरक्षितः ॥ बृहद्रथो महातेजा भूरिभूतिपरिष्कृतः । गोलांगूलैर्महाभागः गृध्रकूटेऽभिरक्षितः॥ मरुत्वस्यान्ववाये च रक्षि-ताः क्षत्रियात्मजाः । मरुत्पतिसमा वीर्ये समुद्रेणाभिरक्षिताः ॥ एते क्षत्रियदायादास्तत्र तत्र परिश्रुताः । व्योकारहेमकारादिजाति-मित्थं समाश्रिताः ॥ यदि मामभिरक्षन्ति ततः स्थास्यामि निश्चला।

जिससमय परशुरामने पृथिवीको निःक्षत्रिय किया तब कुछ राजवंशके धुरंधर वनको चलेगये, उस समय राजाहीन पृथिवी कश्यपसे कहनेलगी मैं राजाके विना नष्ट हुई जाती हूं, मैंने स्त्रियोंमें बहुतसे राजवंश छिपा रक्खे हैं, हैहय वंशके क्षत्रिय स्त्रियोंमें छिपेहुए हैं पौर वंशके विदूरथका पुत्र रैवतक पर्वतमें है, इसीप्रकार महातेजस्वी पराशरने सौदासके वंशवालोंकी रक्षा की है वह पराशरकी सब प्रकार सेवा करता है, इसकारण उसका नाम सर्वकर्मा पडगया है, शिविका पुत्र राजा गोपति वनमें रहता है वह मेरी रक्षा करनेको समर्थ है, प्रतर्दनका पुत्र वछडोंके साथ वनमें निर्वाह करता है, गौतम ऋषिने दधि-वाहनके पौत्र और दिविरथके पुत्रकी रक्षा की है, वह गंगा किनारे निवास करते हैं, बहुत विभूतिवाले

महाराज बृहद्रथ गृध्रकूटमें निवास करते हैं, मरुत राजाके वंशवाले इन्द्रके समान पराक्रमी समुद्रके किनारे निवास करते हैं, यह क्षत्रिय वंशके धुरंधर जहां तहां निवास करतेहुए सुनार सौधकारादि जातियोंका आश्रय लेकर स्थित हो रहे हैं, यदि यह मेरी रक्षा करै तो मैं स्थित रह सकती हूं।

इन श्लोकोंको लेकर अरोडवंशी कहते हैं हममें भी बहुतसे सुनार आदि शिल्प कर्मका अनुष्ठान करते हैं, सिन्धमें अरोड लुहानेको कहते हैं, इससे विदित है कि परशुरामके समयसे वह लोग लोहकर्म करने लगे, आजतक इनका नाम लुहाना चला आता है, दूसरे इनमें यज्ञोपवीत होता चला आता है, दूसरे महाभारतके श्लोकोंसे पाया जाता है कि परशुरामके भयसे शिबिके पुत्र कहीं अपने राज्यमें छिपे, वत्स गंगा और जमुनाके मध्यमें जा छिपे, पीछे उनके नामपर वत्सराज्य स्थापित होगया, सौदास पांचालमें, बृहद्रथ चेदिमें, विदूरथ ऋक्ष पर्वतमें और दधिवाहनका पौत्र तथा दिविरथका पुत्र अंगदेशके समीपमें छिपे, मरुतने अपने रक्षाके निमित्त पश्चिम सागरके किनारे शरणली, और अर्जुनकी पांच गर्भवती स्त्रियें भी भागकर छिपीं, पर उनका यह नाम नहीं लिखा कहां छिपीं, परन्तु इतना लिखा कि उनको रक्षा स्त्रियोंने की यह स्त्रियें पर्वतादिमें रक्षा न मानकर राजधानीके उत्तर तथा पश्चिमकी ओर चलीं और उस स्थानमें जिसके अन्तर्गत आजकलका सिन्धका इलाका आजाताहै निवास किया, जब धीरे धीरे परशुरामका भय जाता रहा, तब सब प्रकारसे देशकी रक्षा असंभव होनेसे स्त्रियोंने स्वयं राज्य किया, और वह उसी समयसे स्त्रीराज्य कहाताहै, और भारतका परम गौरवका स्थान है कि पूर्वकालमें स्त्रियोंमें ऐसी बुद्धि थी कि वह स्वयं राज्यका शासन करसकती थीं, बृहत्संहितामें स्त्रीराज्यका उल्लेख है।

दिशि पश्चिमोत्तरस्यां माण्डव्यतुषारपातालहलभद्राः।
अश्मककुलूतलहडस्त्रीराज्यनृसिंहवनरवस्थाः॥

पश्चिम और उत्तरकी दिशामें अर्थात् वायव्य कोणमें माण्डव्य तुषार पातालहल भद्र अश्मक कुलूतलहड और स्त्रीराज्य आदि देश हैं, विदित होता है कि बहुतसे क्षत्रिय इस स्त्रीराज्यमें ही अपनेको छिपाकर शिल्पका काम करने लगे, और हेमकार धोकार आदिकी जातियोंमें रहनेलगे, और यह भी विदित होताहै कि कुछ छिपे हुए क्षत्रिय या क्षत्रियोंके बालकोंकी रक्षा पराशर गौतमादि ऋषियोंने की थी, और सहस्रार्जुनके वंशज तो स्त्रीराज्यमें रहनेसे संस्कारहीन होकर उड़ कहलाने लगे हैं ऐसा विदित होताहै उड़ अनादरे धातुसे उड़ बनता है लिखा है कि—

शनकैश्च क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः। वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च॥ पौण्ड्रकाश्चौड्रद्राविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः। पारदाः पल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खसाः॥

शनैः २ संस्कारके लोप होजानेसे और ब्राह्मणोंका संग न रहनेसे यह क्षत्रिय जातिही शूद्रके समान होगई, इनके भेद पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन होगये. कितने किरात, दरद और खस कहाये। ऊपर कह आये हैं कि पृथिवीने जब कश्यपजीसे राजोंको बुलानेको कहा तब—

ततः पृथिव्या निर्दिष्टांस्तान् समानीय कश्यपः।
अभ्यषिञ्चन्महीपालान् क्षत्रियान् वीर्यसम्मतान्॥

तब पृथिवीके बताये पराक्रमी राजोंको बुलाकर कश्यपजीने उन महाबली राजोंको फिर राज्योंमें अभिषिक्त किया, और वह हैहय कुलके ओड्रभी अभिषिक्त हुए जैसा (सन्ति ब्रह्मन् मया गुप्ताः) श्लोक पीछे लिख चुके हैं, स्त्रीराज्यके पूर्वभागमें ओड्रदेश है ओड्रनामके क्षत्रियोंके कारण यह देशभी ओड्र कहाताहै, यह हैहयवंशी ओड्रही कार्तवीर्यार्जुनके वंशधर हैं, इनका ओड्र क्षत्रियवंशका ही नाम आजकल अरोड प्रसिद्ध होगया है, इनका राज बहुत कालतक रहा है,यह लोग सिन्ध तथा उसके आसपासके देशोंमें राज करते आये हैं, कुछ समयतक परशुरामके समयतक लोहकारका काम करते रहे, इससे लोहाने भी कहलाने लगे पर प्रसिद्ध नाम अरोडही रहा ।

यहां हम थोडासा विचार आरंभ करतेहैं और उसविचारसे पाठकोंके आगे धरतेहैं कि आजकल सैकडों जातियें अपनेको क्षत्रिय कहतीहैं, और सबका यही उपालम्भ है कि परशुरामजीके समयसे हमारी यह दशा बदल गई है, हम रुजगारी होगयेहैं हम क्षत्रिय हैं हमारा यज्ञोपवीत कराओ इत्यादि । हमारा इस पर यह कहनाहै कि जो क्षत्रिय परशुरामके भयसे धुकार हेमकार आदि जातियोंमें छिपे थे तथा जो जंगलोंमें छिप गये थे, जब सब जातियोंको क्षत्रियोंके कश्यपजीने बुलालिया, और राज्यपर अभिषिक्त किया, तब उन २ के वर्गके सबही क्षत्रिय आगये होंगे, और अपना सत्व मिलतेही उन्होंने अपनेसे निकृष्ट कर्म वा आपद्धर्मको तत्काल त्याग दिया होगा, फिर वे क्योंकर धुकार हेमकार आदि जातिके अन्तर गिने जासकते हैं, ऐसा कोई पुरुष नहीं जो अपना महत्त्व न चाहै, आज भी यदि कोई ब्राह्मण सुनारका काम करनेलगे तोभी यह अपनेको ब्राह्मण कहता तथा उसका विवाहादि संस्कार सब ब्राह्मणोंमें ही होताहै, परन्तु दूसरे क्षत्रिय बननेवालोंमें ऐसा नहीं देखा जाता, क्या कारण है सुवर्णकारादिने परशु-रामका भय छूट जानेपर भी अपना धर्म पालन न किया, और जब कि ब्राह्मणका संग छूट जानेसे क्षत्रिय जाति शूद्रवत् होगई, और लाखों वर्षसे व्रात्य होगई, और काम्बोज, शक, यवनादि उसके नाम पडगये तो फिर किस मीमांसासे झटिति वह अपने स्वरूपको प्राप्त हो सकती हैं, जब कि किरात दरद आदि आजतक भी संस्कृत न होसके, जाति दो प्रकारकी है एक जन्मसे, दूसरी वह वर्ण कोई और हो काम कोई दूसरा करनेसे, वह उसी जातिका बोला जाताहै, जैसे हलवाई तम्बोली आदि, इसी प्रकार निर्णय करना चाहिये कि जन्मसे जाति क्या है, और यह स्वजातिका काम करता है वा अन्य जातिका, तथा कितने कालसे व्रात्यता है यह सब विचारकर वर्णोंकी व्यवस्था की जासकती है, पर हम इस समय देख रहे हैं लाखों वर्षोंके व्रात्य क्षत्रिय आदि धेलेके घीमें बन रहेहैं इससे देशका कल्याण नहीं है एकप्रकारकी संकरता होती जाती है इसकारण शुद्ध परंपरायुक्त क्षत्रियताका निर्देश इस समयतक चला आना जहां दीखै वहीं असलमें क्षत्रिय जानना और परंपरासे तो अब बिगडकर जो कुछके कुछ होगयेहैं उनका उसी श्रेणीपर पहुंचाना एक बडी कठिन बात है,और जब कि राज्य छुटेहुए क्षत्रियही फिर कश्यपजीने सब अपने राज्योंपर स्थापन करदिये तो फिर यह रोजगारी कौन रहगये, सम्भव है कि यह असली रोजगारी क्षत्रिय हों, इसीप्रकार टांकवंशवाले अपनेको क्षत्रिय कहते हैं, इनमें गोन्द्रे धीर मितु वेदी भल्ले डौरवी कहाते हैं, क्रमसे इनके गोत्र कश्यप, कौशल्य, भरद्वाज, मार्कण्डेय, रघुवंश और डौरवी हैं, यह भी परशुरामके भयसे टांकी देनेका काम करने लगे, और क्षत्रिय बतातेहैं. परन्तु फिरभी प्रश्न यही उठता है परशुरामका भय निवृत्त होनेसे यह अपनी पूर्वदशाको प्राप्त क्यों नहीं हुए ।

जाति निर्णय इससमय बहुत कठिन काम होगया है यदि स्पष्ट ही किसीको जातिके विषयमें कुछ कहदिया जाय और उसमें किंचिन्मात्रभी उनके लिये कुछ न्यूनता आतीहो तो बुरा माननेके सिवाय कोई

कोई तो अदालत जानेको तयार होजातेहैं, खत्रीजातिके विषयमें भी हम बहुतसा खंडन मण्डन देखतेहैं, वर्णविवेकचन्द्रिकामें लिखा है कि ब्रह्माजीकी जंघासे भलंदन नाम एक पुत्र हुआ उसकी स्त्री मरुवती थी, उसका पुत्र वत्सप्रीति उसका प्रांशु और प्रांशुके छः पुत्र हुए, मोद, प्रमोद, वाल, मोदन, प्रमर्दन और शंकुकर्ण इनमें प्रमर्दनके कोई पुत्र नहीं था, तब उसने शंकरकी तपस्या करके पुत्र होनेका वर मांगा उससमय शंकरने तथास्तु कहा.

अग्निकुण्डात्समुद्भूतास्त्रयः पुत्राः सुधार्मिकाः ।
अग्रवालेति खत्री च रौनियारेति संज्ञकाः ॥

तब अग्निकुंडसे धर्मात्मा तीन पुत्र हुए, उनके नाम अग्रवाल खत्री और रौनियार हुए, इसप्रमाणसे इनका वैश्यवर्ण होना विदित होताहै एक पुस्तकमें सर्कारीरिपोर्टोंके प्रमाणसे खत्रियोंको क्षत्रिय नहीं माना है, हम उसका थोडासा उल्लेख यहां करते हैं, डाक्टर ब्यूकनेनकी रिपोर्ट पृ० ४५६ में लिखाहै राजपूतोंको यहां और हरएक जगह सब जातियां खत्री कहती हैं यद्यपि यह अपनी उत्पत्ति अनेक प्रकारकी बतलाते हैं, परन्तु इनकी उत्पत्ति उन पुरुषोंसे नहीं है जो वेदोंमें ब्रह्माजीकी भुजाओंसे उत्पन्न हुए कहे गये हैं, रेवरेंडशेरिंगने खत्रियोंके विषयमें अच्छीतरह व्याख्या करनेमें असमर्थ होकर यह विचार किया है कि जातीय विचारसे इनकी उत्पत्तिका पता लगना दुस्तर है,तशरीहडलअकवाममें षट्त्री-अर्थात् जो छः कर्म करता हो वह खत्री कहाहै, अर्थात्-तीन कर्मोंका सम्बन्ध पिता क्षत्रियसे और तीन कर्मोंका सम्बन्ध वैश्या मातासे है मिस्टरनैसफील्डने कहाहै जो कि-सन् १८६९ ईसवीकी मनुष्य गणनाकी रिपोर्ट है वह लिखतेहैं कि एक सहस्र वर्ष बीते कि ठाकुर लोग अपने शत्रुओंसे परास्त हुए, उनकी स्त्रियोंने सारस्वत ब्राह्मणोंके यहां शरण ली, वे वहां रक्खी गई,और उनके समागमसे जो पुत्र हुए, वह खत्री नामसे पुकारे गये, यह जाति ठाकुरोंसे पृथक् है, सेनसेजरिपोर्ट१९६९क्रोडपत्र सफा३८सन्१८६९की रिपोर्टमें राजपूत पिता और वैश्या मासे खत्री जातिकी उत्पत्ति लिखीहै, तशरीहडलअकवाममें जो१८२९ में फारसी भाषामें लिखी गई है इस जातिको क्षत्रिय और वैश्यके मेलजोलसे बना लिखा है, उसमें यह लिखा है कि खत्री जातिकी उत्पत्ति, युयुत्सुसे है जो धृतराष्ट्रका दासीपुत्र था,जिसकी मा वैश्य जातिकी थी, उसी ग्रन्थमें यह भी लिखा है असली सारस्वत ब्राह्मण खत्रियोंके स्थानपर उनके हाथका बनाया भोजन नहीं करते, केवल खत्रियोंके पुरोहितही धनोपार्जनके लोभसे ऐसा करते हैं, इन पुरोहितोंके यज्ञोपवीत और मन्त्र ग्रहणभी खत्रियोंके सदृश होते हैं, परन्तु असली सारस्वतोंका खानपान उनके साथ नहीं, उनके कृत्य इनसे पृथक् यथायोग्य होतेहैं। जिसप्रकार रघुवंशी यदुवंशी आदि क्षत्रियोंके गोत्र पायेजाते हैं वैसे खत्रियोंके नहीं हैं।मिस्टर रिजलीने खत्रियोंके विषयमें लिखाहै कि इनकी उत्पत्ति ब्राह्मण वा क्षत्रियोंसे नहीं है,नदियाके पंडित जगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य एम, ए.डी.एल् इनकी उत्पत्ति क्षत्तृ(क्षत्तः शूद्र पिता-क्षत्रिया माता)इसरूपसे मानते हैं तथा वे इनको वैश्यजातिरूप बताते हैं और वह इनका गौरव सैनिक राजपूतोंके सदृश नहीं मानते,रिजली साहबने इसको व्यापारवाली जाति लिखा है,डाक्टरब्यूकेननने लिखाहै कि विहारमें आधे खत्री सुनार पायेजाते हैं, इमाइ उलसदतमें इनको द्रवपदार्थ, लाल वस्त्र, ऊनी वस्त्र, छींट, नडी, बूंटी, इत्र, घी, दाल, शहद, मोम, शक्कर इत्यादि बेचनेवाला लिखा है, मिस्टर किट्सनने लिखा है पंजाबमें खत्री व्यापारी हैं और बम्बईमें हम उनको रेसमका कपडा बुनते हुए पाते हैं, एक महाशय कहते हैं क्षत्रियोंको आपत्कालमें भी दान लेना नहीं चाहिये, पर ग्रन्थसाहबका सब चढावा खत्रियोंके

घरोंमें आता है, जो कि अपनेको पुरोहित कहते हैं, वृद्धोंके मरनेपर स्त्रियां गाती बजाती और कभी अश्लील गीत भी गाती हैं, इसमें सारस्वत ब्राह्मणभी खत्रियोंमें सम्मिलित हैं, यह रीति इन्ही दो जातियोंमें पाई जाती है, इसका धर्मशास्त्रमें अनुमोदन नहीं है, सन् १९०१ की मनुष्य गणनाकी रिपोर्टमें सुपरेंटेण्डेण्टने लिखा है कि में खत्रियोंको तीसरी कक्षामें रखता हूं, परन्तु यह विचारणीय है कि संयुक्तप्रान्त और अवधके राजपूत इस बातको कहते हैं, कि उनमें और खत्रियोंमें कभी किसीकालमें भी सम्बन्ध नहीं था, तथा बहुतसे अग्रवाल वैश्य अपनेको खत्रियोंसे उच्च समझते हैं इत्यादि—

यूनानियोंने खत्री ओआई नामक एक जातिपर विचार किया है, यूनानी लेखकोंके अनुसार जो मनुष्य रावी और व्यास नदियोंकी मध्यभूमिमें वसते थे, वे खत्री ओआई कहाते थे, इनकी राजधानी संगल थी। और एम क्रिन्डिल लेखकने यह भी लिखा है कि खत्री ओआई नाम खत्रियोंका स्पष्टतया बोधक है, जो टालमीके अनुसार जिसके प्रमाणपर मिस्टर एम क्रिण्डिलने उपर्युक्त वाक्य लिखा है, रावी और व्यास नदियोंके मध्यभूमिके राजा थे, यह देश इस जातिका असली घर था, इसके सिवाय वहां एक कथैया जाति (कथाइयन) रावी नदीके पूर्वी किनारेपर निवास करनेवाली बतायी है और इसमें क्षत्रियपनकी झलक पाई जाती है डनकरने लिखा है सिकन्दरने खदिआ जातिको जिसको यूनानवाले कथे ओआई कहते हैं उनकी राजधानी सकल संगलमें पराजित किया था, जिसको आजकल अमृतसर कहते हैं, प्रोफेसर एच. एच. विलसन प्राचीन लेखकोंकी वर्णन की हुई भारतवर्षीय जातियोंमेंसे कुछ जातियोंका पता यों बताते हैं, यह एक अद्भुत भौगोलिक क्रम है कि जिसमें एकही जाति हाइडास्पीजपर अथवा मोडचुरा या मथुरामें अथवा विन्ध्यके पहाडोंपर पाईजाय, टालमीकी वर्णन की हुई कास्पीरिआई जाति, डायोडोरसकी वर्णन कीहुई केथेरी जाति, और एरियनकी कथित केथर जाति जो मल्ली और ओक्सीड्रेसी अर्थात् मुलतान और कच्छनिवासी जातियोंके साथ सम्मिलित होकर सिकन्दरके विरुद्ध युद्ध करनेको उद्यत हुई थी या यों कहिये कि पश्चिमी भारतके क्षत्रिय वा राजपूत सब एक हैं, बहुतसे लोगोंका मत है कि एक ही प्रकारके नाम देश देशांतरोंमें विकृतरूप होगये हैं, और उसीसे लोगोंको अनेक प्रकारके भ्रम उपस्थित हुए हैं, इससे खत्रीओआई क्षत्रिय शब्दका यूनानी रूपान्तर अथवा अपभ्रंश होसकता है, एम क्रिण्डलने एक और जातिका वर्णन किया है, जिसको केट्रीवोनी केतृवति (खत्रिवनिया) का अपभ्रंश माना जासकता है, यह लोग भी कदाचित् खत्रियोंके अन्तर्गत हो इत्यादि—

दूसरे देशोंके लोग इस प्रकारकी खोज अटकलके साथ लगाते हैं पर जबतक धर्मशास्त्रका प्रमाण न हो तबतक यह बात प्रमाण कोटिमें नहीं मानी जाती कि खत्री जातिको संकर कहा जाय, यदि अपभ्रंशको ही मुख्यता दी जाय तो खत्री क्षत्रियका अपभ्रंश क्यों न माना जाय ? हां एक बात निःसन्देह विचार करनेकी है कि असली क्षत्रियोंसे इनका सम्बंध अब नहीं है, और बहुतकालसे नहीं है, सो इसका उत्तर हम यही देसकते हैं कि यह जाति बहुत कालसे अपने उस क्षत्र सम्बन्धी सत्वसे गिरगई जिस प्रकार और भी कितनीही जातियें अपने सत्वसे गिर गई हैं, इसीप्रकार जिन लोगोंने अपने पदसे गिरकर उसके फिर प्राप्त होनेकी इच्छा न की उनको खके स्थानमें फिर क्ष नहीं मिला, वर्णविवेक चन्द्रिकामें अग्रवाल और खत्रीको अग्निकुंड से उत्पन्न तथा एक भ्राता माना है और वैश्य कोटीमें स्वीकार किया है पर अग्निकुंडसे चार क्षत्रियोंकी उत्पत्ति हम पीछे भी लिख आये हैं, संभव है कि खत्रियोंने कुछ तेज सम्बन्धी कर्म किये हों पर इसमें सन्देह नहीं कि खत्री जातिमें परम्परासे यज्ञोपवीत चला आता है और प्रायः वैदिक संस्कार भी पाये जाते

हैं कितनीही क्षत्रिय जाति वैश्य तथा इससे भी अधम कोटिको प्राप्त होगईहैं और कितनीही दूसरी जातियें अपना सत्व छोड गिरती जारही है, इससे हमारी सम्मतिमें खत्री जाति असली क्षत्रियत्वसे अवश्यही रहित होगई है, तथापि क्षत्रिय जातिकी दूसरी कक्षामें इसका परिगणन हो सकता है। हमारा विचार केवल इतना है, कि प्रत्येक जाति अपने असली स्वरूपसे परिचित हो जाय जिससे वे अपने पूर्वजोंका स्मरणकर उनकी गौरव गरिमासे संयुक्तहो देशका मुख उज्ज्वल करैं, जिससे चारों वर्ण और चारों आश्रमोंकी मर्यादा अक्षुण्ण बनी रहै. ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्डमें जो क्षत्रियोंकी जाति खत्री कहाई है, उसका हेतु आगे लिखते है।

ब्रह्मक्षत्रोत्पत्तिः ।

(ब्रा० उ० मा०)

इन्हीं दधीच ऋषिने परशुरामके भयसे क्षत्रिय कुलकी रक्षा की है सिन्धु देशमें नगर नाम क्षत्रियोंकी राजधानी थी, जब परशुरामजी क्षत्रियोंका विध्वंस करते २ उस नगरमें आये, तब वहांका सूर्यवंशी रत्नसेन राजा अपनी गर्भवती पांचों स्त्रियोंको लेकर ऋषिके शरण हुआ, ऋषिने उसको अपने आश्रममें गुप्त रूपसे रक्खा, वहां चन्द्रमुखी, पद्मिनी, पद्मा, सुकुमारा, कुशावती इन पांचों स्त्रियोंके क्रमसे जयसेन, विन्दुमान्, विशाल, चन्द्रशाल और भरत ऐसे पांच पुत्र हुए, वे आश्रममें ऋषिपुत्रोंके साथ क्रीडा करनेलगे एक समय राजा ऋषिकी आज्ञा उल्लंघनकर वनमें आखेटको गया, वहां परशुरामके हाथसे उसका वध हुआ, यह समाचार पाय पांचों रानियां वहां गई और राजाके साथ सती होगईं, दधीच ऋषिने पांचों बालकोंका पालन किया, फिर एक समय परशुराम शंकित हो दधीचके आश्रममें आये और इन पांचों बालकोंको देखकर पूछा यह किसकेहैं ऋषिने उनको ब्राह्मण बताया, परशुराम बोले रूपसे तो यह क्षत्रिय विदित होते हैं, पर तुम ब्राह्मण बताते हो तो मध्याह्न सन्ध्या करके इनकी परीक्षा करूंगा, परशुरामके जाते ही ऋषिने उनको ब्रह्मत्व सूचक यज्ञोपवीत पहराया, और शिरपर हाथ धरके आशीर्वाद दिया कि तुम वेदज्ञ होगे, परशुरामके आनेपर जब बालकोंने सांग वेद सुनाया, तब भी वह कहने लगे. हे दधीच यदि आप इनके साथ एक संग भोजन कर लें तब मेरी शंका दूर हो; तब ऋषिने केलेका पत्ता मंगाय अंगुष्टसे मर्यादाकी रेखा करके उनके संग एक पात्रमें भोजन किया, तब परशुराम प्रसन्न होकर बोले, इनमेंसे एक बडे बालकको अपना शिष्य बनाने को लिये जाता हूं इसको सांग धनुर्वेद पढाऊंगा यह कहकर जयसेन (जयशर्मा) को लेगये, और गंडकीके किनारे कई वर्षतक उददेश दिया, और बारहवें वर्षमें गंडकीमें स्नान कराय समस्त धनुर्वेद अस्त्र शस्त्रों सहित उपदेश करदिया पश्चात् एक वृक्षकी छायामें शिष्यकी गोदीमें शिर रखकर ऐसा कह सोगये कि यदि कोई मुझे जगावेगा तो उसे शाप दूंगा, इस कारण तुम धनुषपर बाण चढाकर बैठो, यह कह परशुरामजी सोगये इधर इन्द्रने विचारा कि यदि इस क्षत्रिय कुमारको शाप न हुआ तो यह त्रिलोकीको दग्ध करदेगा, तब इन्द्रने कीट बनकर उसकी जंघामें काटा जिससे रुधिरकी धारा चलने लगी तो भी कुमार नहीं डिगा, परन्तु वह गरम रुधिर परशुरामके कर्णमें लगा जिससे तत्काल उनकी निद्रा भंग हुई, तत्काल क्रोध करके बोले जयशर्मा तू ब्राह्मण नहीं है ब्राह्मणका रुधिर ठंडा होता है तेरा उष्ण है तू क्षत्रिय है सत्य कह तब जयशर्माने कहा—

ब्राह्मणत्वं दधीचेश्च क्षत्रियो विषयात्तव ।
ब्रह्मक्षत्रोऽस्म्यहं जातो यथेच्छसि तथा कुरु ॥

मैं दधीचसे तो ब्राह्मण हूं, और आपके उपदेशसे क्षत्रियहूं इस कारण ब्रह्मक्षत्रिय हूं, अब जैसी इच्छा हो वैसा करो तब परशुरामने उसको क्षत्रिय जाना, परन्तु शिष्य समझकर मारा नहीं, और शाप दिया कि मेरी पढाई समस्त विद्या निष्फल हो जायगी ।

ब्रह्मक्षत्रियनाम्ना हि विचरस्व यथासुखम् ॥

तू संसारमें ब्रह्मक्षत्रिय नाम धारणकर सुखसे विचर, यह कह कर परशुरामजी तो महेन्द्र पर्वतपर चले गये, और जयसेन गौतमको साथ ले दधीचके आश्रममें आये, और सब वृत्तान्त सुनाया, और प्राण त्याग करनेको कहा, तब ऋषिने कहा व्याकुल मत हो तू एक पुरोहित बना उससे मन्त्र सिद्धि होगी, तब नृप कुमारने ऋषिको ही पौरोहित्य कर्म करनेको कहा, तब ऋषि बोले-

मद्वंशजो द्विजः कश्चित् त्वद्वंशः क्षत्रनन्दनः । तेऽन्योन्यं तु गुरुत्वेऽपि तथैव यजमानके॥ कुर्वन्ति चेद्विदा भेदं ते वै निरयगामिनः । तद्वंशब्रह्मक्षत्रो वा तथा सारस्वताह्वकः॥एकीकृत्य चरिष्यन्ति मद्वाक्यं नान्यथा भवेत् । सारस्वतस्य वंशस्य पादपूजापरो यदि ॥ भविष्यति च राजेन्द्र करिष्यामि गुरुव्रतम् ।

मेरे वंशका कोई भी ब्राह्मण और तेरे वंशका कोई भी क्षत्रिय हो यह परस्पर दोनों गुरुशिष्य भावसे रहैं, भेद रक्खैंगे तो नरक होगा तेरे वंशके ब्रह्मक्षत्रिय और मेरे वंशके सारस्वत दधीच यह दोनों कभी मेरे वचनोंको उल्लंघन न करैं, सारस्वतोंकी सदा पूजा करैं तो मैं तेरा पौरोहित्य स्वीकार करता हूं राजाने कहा यह सब होगा जो मेरे वंशके तुमको न मानें उनका वंश क्षय होगा, तब ऋषिने प्रसन्न हो राजाको हिंगुला देवीका (ॐ हिंगुले परमहिंगुले अमृतरूपिणि तनु शक्ति मन शिवे श्रीहिंगुलायै नमः स्वाहा) इस बत्तीस अक्षरवाले मंत्रका पांचों कुमारोंको उपदेश किया, बारह वर्षतक पांचों कुमारोंने हिंगुल क्षेत्रमें ऋषि सहित देवीकी तपस्या की, तब देवी प्रसन्न होकर बोली, परशुरामका शाप तो मिथ्या नहीं होगा, पर मैं तुमको अपना पुत्र करती हूं, तुम नग्न हो हाथमें फलपुष्पकी मुट्ठी बांध मेरे अंगमें प्रवेश करजाओ, इसके प्रतापसे भाइयों सहित सहस्र वर्षपर्यन्त नगर स्थानका राज्य करो, पश्चात् मोक्ष होगी, ब्रह्मक्षत्रियका कर्म करते रहो, तुम्हारी कुलदेवी कुलमाता मैं हूंगी, प्रतिवर्ष नवरात्रोंमें मेरी पूजा करना, हवन और ब्राह्मणभोजन कराना, मधु पायस घृतादिसे मेरा संतोष करना, मेरे मंत्रका आथर्वण ऋषि है, त्रिनेत्र चतुर्भुजका ध्यान करो, ऐसा करनेसे मैं प्रसन्न रहूंगी, मेरे आविर्भावके दिन शोक न करना, तुम्हारे उपरान्त दशराजा होंगे, पीछे निरस्त्र होकर भूमिमें विचरैंगे, उनकी आजीविकाके निमित्त विश्वकर्माको भेजूंगी, यह कह कर देवी अन्तर्धान हुई, जयसेनादिने वैसाही किया, पीछे नगरमें आय राज्य करनेलगे, पीछे उनके पुत्रोंका वंश बढा, छप्पन देशोंकी कन्या ग्रहण कीं, पश्चात् म्लेच्छोंने उनका राज्य हरण किया, तब वे विदूरथादिक स्त्री पुत्रोंको लेकर आशापूर्णा देवीकी शरण गये, तपस्यासे प्रसन्न हो देवी बोली, परशुरामके शापसे तुमको अस्त्र विद्या नहीं फलैगी, मै विश्वकर्माको बुलाती हूं,

यह तुम्हारे लिये उपाय कहैंगे, तब देवीके स्मरण करते ही विश्वकर्मांजी आये, देवीकी आज्ञासे विश्वकर्माने उनसे शस्त्रोंका पूजन कराय कहा, यह जाति ऋषि संसर्ग होनेसे मूर्धाभिषिक्त होगी, सब वेदोक्त कर्मका अधिकार होगा, हाथी घोडे रत्नपरीक्षा सुवर्ण चांदीके नाना शिल्पोंसे इनकी आजीविका होगी, यह कह विश्वकर्मा स्वर्गको गये, और देवी भी अपनेमें भाव रखनेका उपदेश देकर स्वर्गको गई, पीछे यह जाति शिल्प व्यापार करती हुई अनेक देशोंमें फैल गई, सम्भव है कि यह ब्रह्मक्षत्रिय जातिही इस समय खत्री नामसे प्रसिद्ध है कारण कि सब लक्षण मिलते हैं ।

जो जयसेन राजाके निमित्तसे ब्रह्मक्षत्रियोंकी उत्पत्ति कही गई है वे क्षत्रिय जाति गुर्जर सम्प्रदायमें प्रसिद्ध हैं, जो इस समय नासिक पूना आदि नगरोंमें महाराष्ट्रआदि सम्प्रदायोंमें दीखती हैं वे वहांके भेद हैं, भागवतमें लिखा है वैवस्वत मनुके पांचवें पुत्र धृष्टसे धार्ष्टयनाम क्षत्रियकुल उग्र तपस्यासे ब्राह्मणत्वको प्राप्त हुआ, इसी प्रकार नभगका पुत्र नाभाग, उसका अम्बरीष, उसका विरूप, विरूपका रथीतर, उसका जब कोई पुत्र न हुआ तब अंगिरासे अपनी भार्यामें राजाने पुत्र उत्पन्न कराये, वे क्षत्रोपेत आंगिरस कहाये, इत्यादि पुरुसे क्षेमकपर्यन्त भी वंश देवर्षि तुल्य हैं, जहां जिसका निकास हो वहांसे वह लेसकता है । [ब्रा० उ० मार्तण्डसे] इतिब्रह्मक्षत्रियवंशः ।

लवाणाक्षत्रियजाति ।

महाराज लवके वंशमेंही राठौर हैं यह सब सूर्यवंशी हैं, रत्नदेवी नाम इनकी कुलदेवी है, एक समय कन्नौजके राजा जयचन्दकी आज्ञामें जोधपुर था, उसके अधिकारमें वहां चौरासी जागीरदार थे, इनका एक समय राजासे विरोध होगया, तब राजाने उनके वधकी इच्छा की, तब दुर्गादत्त नामक एक सारस्वत ब्राह्मण दसौंदी (धनका दसवां हिस्सा लेनेवाला) जो राजाका बडा पूज्य था उसने जाके राजाका क्रोध शांत किया, राजाने कहा अभी तो नहीं पर छः महीने पीछे सरदारोंको मारूंगा, यह कहकर उन की जागीरें अधिकारमें करलीं, परन्तु दुर्गादत्तजीके फिर भी उनसे क्रोध शांतिके लिये प्रार्थना की, तब राजाने क्रोधित हो पंडितजीको अपने यहां आनेका निषेध करदिया, तब इन सरदारोंने दुर्गादत्तजीका बडा सन्मान किया, और कहा कि कोई चिन्ता नहीं हममेंसे जो कोई राजपर बैठैगा वहीं आपको अपना दसवां भाग देगा, आप हमारे कुलपूज्य हुए, यह कहकर सहायता न पानेके कारण वे सरदार सिन्धु देशमें चले गये, छः महीनेमें आठ दिन रहनेसे राजाने उस देशपर चढाई की, तब दुर्गादत्तने उन क्षत्रियोंसे कहा तुम सब सागरकी उपासना करो, और आप भी अन्नजल छोड सागरकी उपासना करनेलगे, तीन दिन पीछे समुद्रने दर्शन देकर वर मांगनेको कहा, तब सागरसे दुर्गादत्तने यजमानोंका अभय मांगा, सागरने कहा यहांसे एक कोशके अन्तरपर तुमको लोहेका गढ दीखैगा, उसमें जाकर रहो तुम्हारी जय होगी, वह गढ २१ दिन रहैगा पीछे गुप्त होजायगा, परन्तु इक्कीस दिनसे प्रथम उसमेंसे निकल जाना, लोहेके किलेमें वास करनेसे तुम्हारा नाम लोहावास होगा (उसीका बिगडकर लोवाणे हुआ है) तुम्हारी जातिका कुलदेव मैं हूंगा, अबतक लावाणे नदीमें इष्टदेवकी पूजा करते हैं, वे सब सरदार दुर्गादत्तके सहित किलेमें रहे, राजाने दसदिन किला घेरा, जब न टूटा तब लौट गया, यह सरदार अठारह दिनके पीछे किलेसे निकल आये, और वहां एक बडा गांव बसाया वह लोवाणोंका निवास स्थान है, पीछे उनकी सन्तानें बहुत हुईं, दुर्गादत्तजीकी आज्ञासे अपना वर्ग छोडकर

विवाह करना आरंभ किया (चौरासी सरदारने मुख चौरासी नाम । अपनो वर्ग तजि करो व्याहको काम) दुर्गादत्तके वचनोंसे उन्होंने वैसाही किया, उन सरदारोंके साथ जो सारस्वत ब्राह्मण आये थे उनके ९६ छयानवें मुख अर्थात् वर्ग थे, सो विवाहमें आचार्य दक्षिणाके निमित्त परस्पर कलह आरंभ होने लगा कारण कि इनके छयानवें वर्ग थे और सरदारोंके ८४ इस कारण बखेडा बढा, इसप्रकार देखकर दुर्गादत्तने ८४ वर्गोंको चौरासी सरदारोंके वर्ग दिये, और बारह वर्गोंको एक एक लक्ष देकर प्रसन्न किया, वे रुपया लेकर दूसरे देशोंको चलेगये, तबसे आजतक इनमें सारस्वतोंका मान चलता है,दुर्गादत्तके वंशके पुरुष दशौंदी, अजाजी और वागेट इन तीन नामोंसे विख्यात हैं, यह लेख हिंगुलाद्रि खण्डमें है ।

[ब्रा० उ०]

इस प्रकारसे अनेक नामधारी जाति हैं, परन्तु जो क्षत्रि वंशकी यथार्थ जागृति है उससे वे बहुत दूर हैं, क्षत्रिय वंश बहुत रूपोंमें विभक्त है, एक वंश जिसको घटोत्कच (घरूक) वंश कहते हैं यह भीमसेनके पुत्र घटोत्कचसे चला है, विजय मुक्तावलीमें घटोत्कचका नाम घरूका लिखा है यथा—

रहत कितेदिन जब भयो, ता काननके धाम ।
पुत्र हिडिम्बीके भयो, धर्यो घरूका नाम ॥

इस घटोत्कच वंशको भीमसेनके द्वारा होनेसे क्षत्रियत्व कहा गया है । स्कन्दपुराणके माहेश्वर खण्डके अध्याय साठमें घटोत्कचने श्रीकृष्णसे अपने वर्णधर्मके विषयमें पूछा तब श्रीकृष्णने उत्तर दिया कि—

तद्भवान् क्षत्रियकुले जातोऽसि कुरु तच्छृणु। बलं साधय पूर्वं त्वमतुलं तेन शिक्षय ॥२३॥ तद्भवान्बलप्राप्त्यर्थं देव्याराधनमाचर ॥ २५ ॥ नमस्कारेण मंत्रेण पंच यज्ञान्न हापयेत् ॥ २२ ॥

हे कुरु तुम क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न हुए हो, इससे तुम पहले बलकी साधना करो, देवीकी आराधना करो, नमस्कार मंत्रसे (यथा पुष्पं समर्पयामि नमः) पढकर पूजा किया करो और पंच यज्ञको किसी प्रकार न त्याग करो, इसने देवीका आराधन किया, इसका पुत्र अंजनपर्वा हुआ, जैसा भारतमें लिखा है-

घटोत्कचसुतः श्रीमान् भिन्नाञ्जनचयोपमः ।
ववर्षाञ्जनपर्वा स द्रुमवर्षं नभस्तलात् ॥

इस वंशवालोंके नामान्तमें सेन शब्द रहता है ।

इति घरूकवंश ।

गढवाली राजपूत ।

इनके भी तीन भेद हैं.पहली कक्षा,दूसरी कक्षा और तीसरे खस इनमें खस क्षत्रियोंके साथ पहलोंका दूसरोंका व्यवहार नहीं है । प्रथम कक्षाके राजपूतोंको लिखते हैं ।

१ वर्थवाल-यह धारानगर उज्जैनके पंवार राजपूतोंकी नसल से हैं, यह राजा कनकपालके साथ गढवालमें आये थे और यह स्थान वर्थ टोला नामपुरमें निवास करनेसे वर्थवाल कहाये और उससमय यह अनेक ग्रामोंके हलकेदार थे और वह स्थान वर्थवाल स्यून कहाता है, इस वंशके बहुतसे लोग थोकदार हैं ।

२ असवाल—यह चौहानवंशी हैं, दिल्लीके निकट रनथावो स्थानसे इनका निकास है, यह इस्वी ७०० में कनकपालके साथ गढवालमें आये, यह पूर्वमें अपनेको नागवंशी कहते थे, और नागर ग्रामके निवासी थे, गढवालका स्थान अब यही असवाल सियून कहाता है, उसीसे इनका नाम भी यही हुआ, यह सिलाकी पट्टीमें थोकदार हैं।

३ साजवान—यह साहजू राजपूतके वंशधर हैं, राजा कनकपालके साथ दक्षिणसे आये थे और अब थोकदार हैं।

४ सींकवान—यह चौहानवंशी राजा कनकपालके समय उज्जैनसे आये, और झिंकवाल सियूनमें बसे।

५ पुदयार विष्ट—यह भोजवंशी पहले कमायूंमें रहतेथे, और पीछे ६०० वर्षसे गढवालमें बसे।

६ कुवार—यह पवार जातिके राजपूत है राजा कनकपाल इनको अपने साथ लाये, और इनको अधिपति रूपसे जागीरें दीं, इनमें अब भी बहुतसे थोकदार है।

७ रौतेला—यह भी पवार जातिके क्षत्रिय हैं यह भी गढवालमें आनकर बसे और १४०० सौ वर्ष धारानगर छोडे हुए बताते है. इनकी थोकदारीमें बहुतसे पर्वतीस्थान हैं।

८ बूतोला रावत—यह दिल्लीके तुवार वंशसे हैं, जो अपनेको रघुवंशी कहते हैं वे गढवालमें ११०० ग्यारहसे वर्षसे अपना आगमन बताते हैं, और परगना घुधानमें थोकदार हैं।

९ रौथान—यह अपनेको राजा तुवारके वंशधर कहते हैं, जिसका आधिपत्य गढवालके कुछ भागमें हो गया था, यह गुसाईं कहाते है, और इनकी थोकदारी भी हैं।

१० इदवाल विष्ट—इनका बडा समूह हलका या पट्टी इदवाल सूनमें निवास करता है, पर इनको अपना वृत्तान्त विदित नहीं।

११ काफल विष्ट—यह जाति काफोल सिऊनकी पट्टीमें समूह सहित निवास करती है, कहांसे आये हैं इस बातको यह नहीं जानते।

१२ बागदगल विष्ट—यह भी अपना वृत्तान्त नहीं जानते।

१३ कन्दारी गुसाईं—यह अपनेको चन्द्रवंशी राजा जनमेजयके वंशधर कहते है, और पूर्वपुरुष कन्दारी उपदेव बताते हैं और १९०० वर्ष हुए दिल्ली प्रान्तसे इधर आया कहते हैं और थोकदार भी है।

१४ बंगारी राउत—यह २०० वर्ष हुए कमाऊंसे आना बताते हैं, और पूर्वनिवास कमायूंके कटयूरा स्थानमें था अब यह पट्टीबंगर सिऊनमें रहते हैं थोकदार हैं।

१५ रिंगवारा राउत—यह ५०० वर्ष हुए कमायूंसे गढवालमें गये यह कटयारा राजाके वंशधर अपनेको कहते हैं, और रिंगवाडी ग्राममें रहनेसे रिंगवारा रावत कहाये, अब भी यह इस ग्रामके थोकदार और मालिक कहाते हैं।

१६ गोरला रावत—यह पवार राजपूत ११०० वर्ष हुए धारानगरसे आये थे, यह बहुतसे ग्रामोंके अधिपति हैं, गोरली माण्डीसियूनके निवासके कारण यह गोरला कहाये।

१७ फर्सवान—यह अब समस्त गढवालमें फैले हुए पाये जाते हैं, सूर्यवंशी जातिके राजाके समयके हैं, पहले यह दोतीनैपाल और पीछे गढवालमें आये, इनको आये हुए १५०० वर्ष बीते हैं।

१८ नरवानी रावत—यद्यपि यह प्रथम कक्षाके राजपूत हैं, पर इनका वृत्तान्त विदित नहीं।

१९ तरयालठाकुर—इनका निवास स्थान तरयाल सून कहाता है इस समय पट्टी बनियाल सूनमें भी हैं और वृत्तान्त अविदित है।

२० प्यालठाकुर-यह विशेषकर पट्टी प्याल सूनमें रहते हैं अब यह पट्टी तोला उदयपुरमें सम्मिलित हैं, यह अपनेको अर्जुनका वंशधर कहते हैं, दिल्लीके पँवारोंके भी वंशधर कहाते हैं।

२१ वागरी नेगी या पुंडरनेगी-कहा जाता है कि यह वाढगसे आये है, और पहले मायापुर हरद्वारमें स्थित हुए थे, पीछे रामसिंह और दीपसिंह राजाके समीप आकर गढवालमें रहे, नेगीके अर्थ नीर है।

२२ कालाभंडारी-यह भी दिल्लीके पंवार कहे जाते हैं, सत्यजैसिंह और मीरमाधोसिंह कोई सातसौ वर्ष हुए काली कमायूंमें बसे, और कोई ४०० वर्ष हुए गढवालमें जाकर बसे, यह राजाके कोपाध्यक्ष वा भंडारी कहाते हैं, यह सूर्यवंशीय राजाके समय गये थे।

२३ माइया यह भी सोलर वंशीय हैं, रामसिंह, धामसिंह, केसरसिंह, दीपसिंह और रामचन्द्र यह पांचो भाई सुखेतसे कोई ३०० वर्षके लगभग हुए आकर बसे थे, और वहांके राजाके मिलिटरी महकमेमें अधिकारी रहे।

२४ चन्दे-यह पुराने राजा सूर्यवंशके वंशधर कमायूं निवासी हैं, इस वंशके गुरु ज्ञानचन्द चम्पावत वंशके थे गढवालमें कोई २०० वर्षसे आये हैं।

२५ मानरवाल-सूर्यवंशीय राजा कटचौरा जो कमायूंका शासक था, उस समय दो परिवार ब्रह्मदेव, और कल्याणसिंह कमायूंके मानून गांवमें बसे, और मानरवाल कहाये, वैजबहादुर और खड्गसिंह कोई २०० सौ वर्ष हुए कमायूंसे गढवालमें बसे हैं।

२६ शामोला वा छामोला विष्ट-यह उज्जैनके पवार कोई छः ६०० सौ वर्षसे गढवालमें बसे हैं इस परिवारका एक जन सद्रवाज चांदपुरके शामोला वा छामोला ग्राममें वसा, उसीके नामपर यह जातिका नाम हुआ, बहुतसे पुरुष बहुतसे गांवोंके थोकदार हैं, जो लंगर और उदयपुर प्रान्तमें हैं।

२७ मूना नेगी-कहा जाता है कोई छः सौ ६०० वर्ष हुए यह पटनेसे आये हैं, यह उस समय मगधदेशके राजाकी सन्ततिमें थे, पहले यह कमायूंमें बसे और २०० वर्ष हुए कि गढवालमें जाकर बसे हैं, इस वंशमें शिवचन्द, भूपचन्द, शिरवंकराज, वागीचन्द, जलामठाकुर नेगी पद पाये हुए हैं, जो अपने राजाओंके समयमें विख्यात थे।

अब दूसरी कक्षाके राजपूतोंको लिखते हैं।

१ कुन्ती नेगी-इस जातिके लोग नगरकोट पंजाबसे आकर गढवालमें बसे, जिसे कोई नौसे वर्ष हुए, वह कहते हे कि वह पूरनसिंह और करनसिंहकी पट्टीके रहनेवाले हैं, कुछ लोग इस जातिके धूंगी पट्टी और वोजलोटमें रहते हैं, जहांके यह मालिक और थोकदार हैं, इनका पद भी नेगी है, कारण कि यह पुराने राजाके यहां सेनामें स्थित थे, और इस गढवाल जिलेके चौथाई भागमें जो खोनतीके नामसे उनको दिया गया था रहते हैं।

२ सिपाही नेगी-कहा जाता है कि २०० वर्ष बीते हैं कि पंजाव कोगडे जिलेके दोमीचन्द और धानदामोदर दो जने यहांके राजाके यहां सैनिक काममें नौकर हुए, और नेगी पद मिला।

३ महार-कहा जाता है कि यह अहीर नन्दमहरकी सन्तानमेंसे हैं, यह पहले कोटलीगढ कमायूंमें और कोई ४०० वर्ष हुए गढवालमें बसे और तेजराज हेमराज और सील्हमहर यह तीन जने गढवालमें आये इस जातिके बहुतसे लोग विचले उदयपुरमें रहते हैं, इस जातिके बच्चे बालकपनसेही तर्कवादी होते हैं और इज्जत किया करते हैं।

४ वेदी खत्री–इस जातिके लोग भी नेगी कहाते है और राजाके यहां सेनाके कार्यमें भरती हुए, इस समय यह सिंहनेगी कहाते हैं, दोसौ वर्ष हुए शोनमल, राजमल और दयालसिंह पंजाबके नन्दपुर मखवालसे गढवालमें आये थे, जिससमय कि गुरु गोविन्दसिंह नानक शाहका मत प्रचार कर रहे थे उस समय यह गये हैं, यह सोलर जातिके हैं ।

५ सांगेला नेगी–यह जाट वंशके पुरुष हैं, और कोई दोसौ २०० वर्ष हुए कि सहारनपुरसे टिहरी रियासतमें बसे थे और वहां से ब्रिटिश गढवालमें आये ।

६ खाती–कोई तीन सौ वर्ष हुए कि यह जाति कमाऊंकी सिलौर पट्टीमें आकर बसी, यह आगरा प्रान्तके तुवार वंशमें अपनेको कहते हैं, जैराज केसरसिंह छैलू यह तीन पुरुष गढवालमें आकर बसे थे ।

७ भूलानी बिष्ट–यह अपनेको धारानगरके पंवार कहते है, और कमायूंमें आकर यह कत्यूरा कहाये, इस वंशके मोहनसिंह रावत कोई ५०० वर्ष हुए कमायूंसे जाकर गढवालमें बसे थे ।

८ खरकोला नेगी–सूर्यवंशी जातिके काटथूरा राजाकी जातिमें अपनेको यह बताते हैं, इस वंशक एक पुरुष सिंहदमन कोई ८०० आठसौ वर्ष हुए कमायूंसे आकर खरकोली बादलपुरमें आन कर बसा और वहांके कई ग्रामोंका थोकदार हुआ, यह यज्ञोपवीत नहीं पहरते ।

९ कोलयाल नेगी–यह भी कमाऊंसे गढवालमें आये है, इस वंशका सांमदेव नाम एक पुरुष तीनसौ वर्ष हुए वचन सियूनकी पट्टीकोलिमें आनकर बसा था, इस वंशके एक वंशधर पांच या छः ग्रामके थोकदार हैं, जहां वह अपना भूस्वामित्व रखते है ।

१० राना–दोसौ वर्षहुए यह पंजाबसे चलकर यहां बसे है, यह सूर्यवंशी राजाके यहां अधिकारी थे, जो पहले नागवंशी कहाता था, खान और प्रतपाल यह दो भाई यहां आनकर पहले बसे थे ।

११ रिखोला नेगी–यह पंवार राजपूतोंके वंशधर है, कोई ४०० वर्ष हुए भावसिंह और छूई इस वंशके यहां आकर बसे थे, इनकी थोकदारीमें कितनेही ग्राम हैं ।

१२ महता–इस जातिके पुरुष ब्रजपाल महताके वंशधर हैं, जो सहारनपुरके महता कोटसे कोई २०० वर्ष हुए यहां आकर बसे, कितनेक गांव इनकी हिस्सेदारी और थोकदारीमें हैं ।

१३ तिलाबिष्ट–यह शेपराज और कामराजके वंशधर है, जो कि तीनसौ ३०० वर्ष हुए चितौरगढसे गढवालमें आये थे ।

१४ मयाल राजपूत–सूर्यवंशी देवराज और मुहराजके वंशधर हैं यह अवधसे कमायूंके खैरागढमें आये, और कोई ३०० वर्ष हुए गढवालमें आये यह चौदकोटके मेलाई ग्राममें बसनेके कारण मयाल कहाये ।

१५ सौंतयाल नेगी–चन्द्रवंशी कीर्तिचन्द्र और भारचन्दके वंशधर सौतयाल कहाते हैं, कोई ६०० वर्ष हुए यह नैपाल दोतीसे चलकर गढवालमें बसे, यह सौंती ग्राममें बसनेसे सौतयाल कहाये, पैनोंकी पट्टीमें यह थोकदार और अधिपति हैं ।

१६–१७ जसधोरा और गुदोरा–इस वंशके पुरुष अपनेको चन्द्रवंशी राजा जनमेजयके वंशधर कहते हैं, इस वंशके यशदेव और गुरुदेव दिल्लीसे गढवालमें कोई एक सहस्र वर्ष हुए आये थे, इस प्रान्तके कितने ही ग्राम इनकी थोकदारीमें है ।

१८ कठूरो–सुर्यवंशी कटयेरा राजाके वंशमें यह अपनेको कहते हैं, और कमायूंके खैरागढसे तीनसौ वर्ष हुए अपनेको गढवालमें आया कहते हैं; उनकी थोकदारीमें अधिकाईसे ग्राम है ।

१९ चिन्तोला राजपूत-यह सूर्यवंशी रानाके वंशधर अपनेको कहते हैं, जो पांचसौ वर्ष हुए चित्तौरसे गढवालमें आये, और इस देशके राजाके यहां सेनाविभागमें स्थित हुए।

२० मोघारा रावत-यह अपनेको दिल्लीके जगदेव संवारके वंशज कहते हैं और कोई ४०० चार सौ वर्ष हुए दिल्लीसे गढवालमें आये, और सैनिक विभागमें प्रविष्ट होकर रावत पदसे सुशोभित हुए, और मौघारी गांवमें निवास करनेके कारण मोघारा राजपूत कहाये, इनके समूहका ग्राम मोघारस्यून कहाता है।

२१ दंगवाल-कहा जाता है इस जातिके लोग कटचूरा सूर्यवंशी राजाकी जातिके हैं और गढवालमें कोई ४०० वर्षके लगभग हुए आये हैं, यह दांग गांव गुरार सियूनमें हैं, जहां धामसिंह सबसे पहले आनकर बसे थे।

२२ खन्दवरी नेगी-इस जातिके लोग गढवालके राजाके यह मायापुर हरद्वारसे गये थे, और छःसौ ६०० वर्ष हुए सेनाविभागमें नौकर हुए, और खंदोरावास, काललीली, त्रिचले, उदैपुरमें आकर बसे थे।

२३ तुलसारा-कहा जाता है कि सूर्यवंशी कत्यूरा राजाके वंशके यह लोग हैं कोई सातसौ वर्ष हुए यह कमायूँमें आनकर बसे थे, इनका मुख्य पुरुष वाघसिंहजी गढवालमें गये थे।

२४ मैनकोली राजपूत-यह नरपतिके वंशधर हैं और कोई ३०० तीन सौ वर्ष हुए मैनपुरीसे आकर यहां बसे हैं।

२५ संगेला बिष्ट
२६ सङ्गेला नेगी
} इस जातिके लोग गुजराती ब्राह्मण स्वरूप बिष्टके वंशधर हैं जो कि ६०० वर्ष हुए गढवालसे यहां आये हुए हैं, यह भी अपनेको सैनिक विभागमें भरती कराकर विख्यातनाम हुए हैं।

२७ कलसयाल राजपूत-यह सूर्यवंशी राजा शक्तिशरूके वंशधर हैं, जो ४०० वर्ष हुए अवधसे आनकर यहां बसे हैं।

२८ दोरचाल राजपूत-यह एक सूर्यवंशी चौरम्बल राजपूतके वंशधर हैं, जो कि दोराहाट कमायूंसे कोई ६० वर्ष हुए आये हैं, यह बहुतसे ग्रामोंके थोकदार हैं।

२९ मनयारी रावत-इस जातिके लोग दिल्ली प्रान्तकी तुवार जातिके हैं, प्रवीन और नातागोत यह कोई छःसौ वर्ष हुए गढवालमें आये थे, और राजाके यहां सैनिक विभागमें भरती हुए, यह अब भी इन ग्रामोंमें सिपाही रूपसे स्थित हैं, और इन्हींके नामसे वह गांव पट्टीमनयारस्यून कहाता है।

३० गगवारी राजपूत-यह गढवाली राजाके वंशधर हैं, बहुतसे गांव इनके हैं, इन्हींके नामसे वह स्थान पट्टी गगरस्यून कहाता है, इस जातिके बहुत थोडे राजपूत ब्रिटिश गढवालमें पाये जाते हैं।

३१ मालेती राजपूत-यह अपनेको रानावंशी कहते हैं, कोई ४०० वर्ष हुए गढवालमें बसे हैं।

३२ मसोल्या रावत-यह बागदेव और शिवदेव पवारके वंशधर हैं, यह पांचसौ वर्ष हुए धारानगरसे आये हैं, इनकी थोकदारीमें अनेक ग्राम हैं, और इरिया कोटकी पट्टीके अधिकारी हैं।

३३ घायारा विष्ट-चौहानवंशी हीरानागकी यह सन्तान हैं, यह कोई ८०० वर्ष हुए दिल्लीसे इधर आये हैं, इराकोटकी पट्टीमें बहुतसे इस वंशके थोकदार हैं, और पैनोकी पट्टीका ब्यार गांव इन्हींके नामसे विख्यात है।

३४ जसकोटी राजपूत-यह वोंगा थेलरके वंशधर हैं, जो कि सहारनपुरके जिलेके पंडरकोट स्थानसे ४०० वर्ष हुए यहां गढवालमें आनकर बसे थे, और पायनोकी पट्टी जसकोटमें आके प्रथम निवास किया।

३५ गवीना राजपूत-यह दिल्लीके पंवार हैं, और धामसिंहकी सन्तान हैं और ९०० वर्ष हुए गवीनीगढ चौकोटमें आनकर बसे और गवीना कहाये।

३६ पटवाल राजपूत-यह प्रयागके समीप पातागढके रहनेवाले हैं, कोई दोसौ २०० वर्ष हुए दीवानसिंह भावसिंह कुमर गढवालमें आनकर बसे थे, इनके निवास स्थानका नाम पट्टी बतवालस्यून है।

३७ कथैत राजपूत-यह अपनेको वीर विक्रमादित्य नागवंशी राजाका वंशधर कहते हैं।

३८ खाती नेगी-यह लोग जम्बूसे आये हैं, और ९०० वर्ष हुए कमायूंमें बसे और ३०० वर्षसे गढवालमें बसे हैं, और ये अपनेको अपने पूर्व देशके राजाका वंशधर कहते हैं।

तीसरी कक्षाके जो खसराजपूत वा खसीया कहाते हैं वे नीचे लिखे जाते हैं।

बुंगेली, पानीसी, कन्यूरी, लूनछारा, कूमाल, संकरयारिस्तीवाल, डूंगरयाल, साकूलसिया, गथारी, खवस्या, चामकोटिया, विदवल, मालूनी, डिगोला, कोनैटो, मुरसल, धुलेखी, रोलयाल, खेतवाल, भिलगवाल, रायकवाल, रिवाल्टा, माटकोल, कातीला म्याल, सीसल, गुलेरी, कोरला, धूरिया, सिलवाल, चोरयाल, मटकाल, मलियाल, कारंगो, सुनाई, दानू, लुमतारी, माखूँदी, जेठा, शिकपाल, सोपाल, संगाली, कनासी, दारा, पैलो, वरियाल, नवासी, मदिया, झोगू, रैता, कनयोगी, किरमीलिया, कुरंगा, घपोला, ऐकचौदया, ऐकरौतया, खूनतारी, कारकी, सारकी, धेकवान्, चाकर, ध्यारो, सरयाल, वावलयाल, सुतार, वासती, कपरयाल, पट्टी, वगदीवान, खोरान, लंकवान्, रानैटा, बोरा, सेठी, नायक, भूरसुंडा, मूसानी, पाजाई, सिलाभावकीला, सामेर, सिलभंडारी, चारतोला, संतयाल, वागलाना, सिलौनी, डोगरा, दालासी, मांडेसा, जवारी, मूंडयापी, थापल, याल, ओझयारा, मांसोलया, कुकूलयाल, कुरलयाल, पोखरयाल, पेलोरा, उगोरा, रव्योसाली, खसली, कोटयाल, मैरवाल, जयंथवाल, चमोली, कोरसाला, कोलसयाल, खाली, भंगवाल, धामवान्, कोराला, नेगी, अयरवाल, सिलवाल, मतकोला, भाजवान्, सारेन, कोला, दालौनी, सीलोनी, मैचकोली, रंदवाल, तेला, मासैटो, रामोला, क्यारा, भदवा, पुसोला, भोलगाडा, कोरियाला तथा और भी बहुतसी जातियें हैं, यह अपने गढवाल निवासका कुछ भी वृत्तान्त नहीं जानते।

वैश्यजाति।

अग्रवाल, सरावगी, खत्री, धानपुरके चौधरी, पोखरी, भेलदा आदि कोई दो सौ वर्षसे गढवालमें आये हैं, यह वैश्य जाति हैं।

संन्यासी आदि।

गिरि, पुरी, रावल, नाथ, वन, भारती, आश्रम, खनतार, गुदार, जंगम, आराध्य, सरस्वती, स्वामी, तिरह, आरण्य यह लोग संन्यासी और पुजारी भी हैं इनमें रावल आदि कई एक अन्य कार्य भी करते हैं।

गुरुसिख वा डोमजोगी।

इनमें डोम संज्ञक जाति बाह्य है, यह अपनेको गुरु नानकजीका अनुयायी कहते हैं, और विश्व कहते हैं एक इनमेंसे ५० वर्षके लगभग हुए पंजाबसे आया था और बहुतसे डोमोंको शिष्य बनाया, जब वे शिष्य बन गये तब उन्होंने फिर पहले डोमोंके हाथका जल ग्रहण नहीं किया, वे लोग दयालो कहाते हैं, उनके निवास या मठ मानजी वा मनजी कहाते हैं।

विश्नोई ।

यह भी कुछ दिनोंसे गढवालमें चलेगये हैं, और विजनौरसे गये हैं यह किसी भी हिन्दू जातिसे कोई सम्पर्क नहीं रखते ।

भोटिया ।

भोटिया जातिके दो भेद हैं, तालचा और मारचा यह गढवालके निती तथा दूसरे उत्तरी विभागोंमें रहते हैं, यह अपनी कन्या चाहे अपने वर्गसे निकृष्ट वर्गमें दे दें, परन्तु कभी अपनेसे निकृष्ट वर्गकी कन्या नहीं लेते. यह दोनों प्रकारके भोटिये अपनेको राजपूत कहते हैं, परन्तु मारचा तिब्बतके हैं ।

डोम ।

यह एक जाति इस प्रान्तमें निवास करती है. और सब ग्रामोंमें दो चार निवास करते हैं, यह वीथ भी कहाते हैं, इनका कोई मुख्य कार्य नहीं हैं, न यह इस बातको मानते हैं कि वे कहींसे आकर यहां वसे हैं, अपने वंशके नामसे अपनेको अभिहित करते और हिन्दू धर्मावलम्बी हैं, यह लोग इस देशके आदिम निवासी कहे जा सकते हैं ।

कुमायूंके क्षत्रिय ।

राजवंश-कत्यूरी राजा पूर्वकालमें यहां खश जातियोंको जीतकर स्थापित हुआ, मनरवाल, रजवार इत्यादि इस कुलमें हैं दर्वार अस्कोटके रजवार इस कुलमें मुख्य हैं ।

चन्द्रराजा-चंद्रवंशी काश्यपगोत्री राजा सोमचन्द्र १० वीं सदीमें प्रयागके निकट झूसीसे कुमाऊंमें आये, सातसौ वर्ष इस वंशने राज्य किया, चन्द्रराजा कहे गये । राजा साहब अलमोडा और राजा काशीपुर इस कुलमें शेष हैं ।

रौतेला, कुंवर, गुसांई चन्द्र इत्यादि भी इसी वंशसे हैं । मणकोटी राजा वमराजा डोटी नेपालको गये । गोरखा भी राजच्युत होकर नैपालको गये ।

महर, फर्त्याल, इनको मूल पुरुष जगदेव धारा नगरीकी प्रमर वा पमार जातिका ठाकुर था, चन्द्रराजके सैनिक और थोकदार जागीरदार हुए ।

नेगी-दारा नगरसे आये, काश्यप, भारद्वाज, गौतम गोत्री हैं । कोई २ मेवाड राजपूतानेसे आये हुए चौहान हैं ये राजाके सैनिक हुए ।

विष्ट-चितौडसे आये राजा सोमचंद्रके दर्बारमें रहे वे काश्यप भारद्वाज और उपमन्यु गोत्री हैं । गैडाविष्ट, सौनविष्ट, डडेविष्ट, भिन्न रहें एक जाति विष्टकी गढवाल आई, जो गढवाली ठाकुर कहलाते है ।

भण्डारी-चौहान ठाकुर हैं, अवधसे आये मनर गांव मिला, इससे मनारी कहलाये ।

तडागी-धारानगरके ठाकुर थे, सोमचन्द्रके समय कुमाऊँमें आये सेनाध्यक्ष रहे । वोहरा, रावत, नपाल, पटवार, कार्की, कार्थी महर, जलाल इत्यादि अनेक जातियें राजपूतोंकी हैं । खश राजपूत प्राचीन कालकी खश जातिसे "मद्रःखशश्च काम्बोजे" "शका किरातानां यवनाः खशादयः" "किराता दरदा खशा" इत्यादि हैं । ग्राम और पेशेके नामसे अनेक संज्ञाकी जातियें ४-५सौसे अधिक पायी जाती हैं । उनमें कुछ देशी ठाकुर और कुछ खश राजपूतकी सन्तान हैं । भोटिया शक वा शोकपसे आये हैं, यह शौका कहाते हैं भिलम्वाल ज्वालामुखीसे आये हुए राजपूत हैं, गढवालसे गये रावत भिलम्वाल कहाते हैं । इसी प्रकार दाडमाके दडमाल भिल्लके भिलवाल कहाते हैं । चुकडायत देशसे आये नैनीतालके

नैपाली क्षत्रिय हैं, चौधरी चम्पावतके कन्नौजसे आये गंगोलीके मध्यदेशसे रियाडी और द्वाराहाटके पंजाब कोटकांगडासे आये दरबारका काम करनेसे दीवान कहाये।

किरार।

यह एक लडाकू जाति है, कोई इनको उपक्षत्रिय कहते हैं कोई शूद्र, पर यह अपनेको क्षत्रिय कहते हैं, इनके विषयमें एक कहावत प्रसिद्ध है कि–

जंगल जाट न छेडिये हट्टी बीच किरार।
भूंखा तुर्क न छेडिये होजाय जीका झार॥

कोरवा।

यह द्रविड देशकी एक जाति अपनेको कुरुकी सन्तान बताती है, यह युक्तप्रदेशमें निवास करती है, पर्वतोंपर भी निवास करतीहै, कोई इनको कोल किरातके भेदमें मानते हैं, इनमें क्षत्रियत्व नहीं पाया जाता।

कौशिक।

युक्तप्रदेश बलिया, बस्ती, आजमगढ, गोरखपुरमें इस जातिका निवास है, यह अपनेको क्षत्रिय कहते हैं, पर दूसरे लोग इनके विरुद्ध हैं।

खीची।

यह अपनेको चौहानकुल सम्भूत क्षत्रिय मानते हैं, इनका निकास लखनऊ जिलेके खिचवाडा देशके रघुगढसे है, वहांके यह जाति पंजाब प्रान्तकी ओर चली गई है।

खैरवा।

यह जाति झांसीके समीप निवास करती है, यह पन्ना नरेश छत्रसालसिंहजीके समय सन् १७०० में झांसीमें आयी थी, इनका विवाह गोत्र बचाकर होता है, खैर वृक्षसे सामग्री बनाकर बेचनेकी आजीविका करते हैं, अपनेको क्षत्रिय मानते हैं, कुछ लोग इनको क्षत्रिय नहीं मानते हैं।

गाडा।

इस समय यह जाति सहारनपुर और मुजफ्फरपुरके जिलोंमें बसती है, किसानी करती है, यह भी अपनेको राजपूत कहती है, परन्तु इस विषयका कोई प्रमाण इनपर नहीं न दूसरे लोग इनको क्षत्रिय मानते हैं।

ओड।

यह जाति अपनेको क्षत्रिय मानती है, बुलन्दशहर काठियावाड आदि जिलोंमें यह जाति पाई जाती है, परन्तु दूसरे लोग इनको शूद्र मानते हैं, राजपूतानेमें भी यह लोग पाये जाते हैं; यह बडी कठिनाईकी बात है; अनेकों जाति अपनेको क्षत्रियवंशी कहती हैं, पर सर्वथा संस्कारहीन पाई जाती हैं।

गौरुआ।

यह जाति है जिसमें विधवाविवाह होता है, यह अपनेको क्षत्रिय मानते हैं, यह वंश मथुरा आदि जिलोंमें भी पाया जाता है, कहा जाता है ९०० वर्षसे यह जैपुरमें आये हैं, इनके भेद कछवाहा सीसोदिया तथा जादायत आदि भी हैं, दिल्ली प्रान्तमें भी यह पाये जाते हैं।

कलहंस ।

अवधप्रान्त तथा गोंडा जिलेका भवानी पाडकुल भी इसी जातिके अन्तर्गत है, कहा जाता है इस ठाकुर जातिके किसी पुरुषने काले वा श्रेष्ठ हंस पाले थे तबसे इस जातिका नाम कलहंस होगया यह बस्ती बाराबंकी, गोंडा, बहराइच जिलेमें पाई जाती है, दूसरे लोग इनके क्षत्रियत्वमें शंका करते हैं ।

खांडायत ।

उडीसा प्रदेशकी यह एक जाति है, यह वहां क्षत्रियधर्मा अपनेको मानती है इनके दो भेद हैं, और इनमें तलवार धारण करनेवाले महा नायक खांडायत कहाये, और दूसरे चास खांडायत अर्थात् कृषि क्षत्रिय कहाये, यह महानायक पद वहां क्षत्रिय वंशका बहुत ऊंचा गिना जाता है, इनके यहां सब कार्य शास्त्रानुसार होते है, इनके यहांकी पुरोहिताई करनेवाले गुजराती ब्राह्मण भी खांडायत होते हैं, तथा उधरकी एक वैश्य जाति भी खांडायत कहाती है, काठियावाडमें भी अधिपति नायक उच्च श्रेणीके क्षत्रिय हैं ।

कांसार ढढेरा ।

जातिविवेकमें कालिका माहात्म्यसे श्लोक उद्धृत करके लिख हैं कि—

सोमवंशो महाराज कार्तवीर्यात्मजोऽर्जुनः । तस्यान्वये समुत्पन्ना वीरसेनादयो नृपाः ॥ १ ॥ तेषामप्यन्वये शूराः कांसवृत्त्युपजीविनः । कांसारा इति विख्याता कालिकायजने रताः ॥ २ ॥

अर्थात्-चन्द्रवंशी कार्तवीर्यका पुत्र अर्जुन हुआ, उसके वंशमें वीरसेनादिक राजा हुए । उनके वंशमें बहुतसे शूर कांसवृत्तिसे जीविका करने लगे, वे सब कांसार कहाये, कालिका पूजनमें तत्पर हुए ॥ २ ॥

अगस्तवार ।

यह जाति अपनेको राजपूत वंशमें बताती है, युक्तप्रदेश बनारसके हवेली परगनेमें इसका निवास पाया जाता है ।

अजूरी ।

यह बंगाल प्रान्तकी एक जाति है, यह अपनेको क्षत्रिय मानते हैं, परन्तु दूसरे विद्वान् इनको संकर जातिमें मानते हैं ।

अमेठिया ।

इस जातिके लोग लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, गोरखपुर आदि स्थानोंमें बास करते है, इनका निकास अमेठी जि० लखनऊसे बताया जाता है, किन्ही २ का कहना है कि यह विधवा राजपूत स्त्रीकी सन्तान है, कहा जाता है जब परशुरामके भयसे पतिके मारे जानेसे यह गर्भवती किसी चमारके यहां जा छिपी वहीं उसको चमारने गुप्तभावसे शुद्धता पूर्वक रक्खा । उसका पुत्र जो हुआ वह चमरगौड कहाया और उसके वंशधर अमेठिया क्षत्रिय कहाये ।

अहबन ।

यह अवध प्रान्तमें एक जाति निवास करती है, यह अपनेको नागवंशी क्षत्रिय कहते हैं ।

अहिवासी।

यह भी अपनेको नागवंशी क्षत्रिय कहते हैं, यह मथुरा, वंदायूं बरेली जिलेमें विशेष रूपसे रहते हैं कोई इनको सौभरि ऋषि जो यमुना किनारे काली घाटपर रहते थे उनकी सन्तान बताते हैं, जब वह वहांसे स्वर्ग सिधारे तब आश्रमकी रक्षाके लिये सर्पराजको छोड गये, कहते हैं उसके निवासके कारण वह सन्तान अहिवास कहाई।

अर्कवंश।

यह जाति भी अपनेको सूर्यवंशी कहते हैं, और अब यह अरख कहाते हैं, मिस्टर क्रूक साहबने सूर्योपासक तिलोकचन्द भाटके समुदायका नाम अर्कवंश लिखा है, दूसरे लोग इनके क्षत्रिय होनेपर आपत्ति करते हैं।

आसिया।

यह क्षत्रिय जाति कहलाते है, राजपूतानामें विशेष रूपसे निवास करते हैं, यह अपनेको कौसरवैये राजपूत कहते हैं, इनके आदि पुरुष आबूसराजी राजपूत थे, यह लोग अब चारणपनका काम करते हैं, यह परिहार क्षत्रियोंके पौलपात कहलाते थे, एक समय बारहट नामक पौलपात नाहडरावके पुत्र धूमकुंवरके साथ चौपड खेल रहा था उस खेलमें लडाई होगई, बारहटने धूमकुंवरको मारडाला, तबसे इनकी पौलपात छिनकर सिंढायचोंको मिली, जिसका यह प्रसिद्ध दोहा है।

धूमकुंवरने मारियो चौपड पासे चोल।
तिनदिन छोडी आसिया परिहारारी पोल॥

कठियारा।

यह जातिभी अपनेको क्षत्रिय वर्णमें बताती है, सनाढ्य ब्राह्मण इनके पुरोहित हैं, यह भी अपनेको कुशवंशी कहते हैं, इनके यहां अबतक कुशाग्रासका पूजन होता है, यह अपने हाथसे कुशा नहीं काटते हैं, बहुतसे लोग इनके क्षत्रियत्वके प्रतिकूल भी हैं।

कठेरिया।

यह जाति अपनेको सूरजवंशी क्षत्रिय कहती है, शाहजहांपुर, पीलीभीत, बदायूं, एटा, फर्रुखाबादमें इसका निवास है, बहुतसे लोग इनको क्षत्रिय वर्णमें नहीं मानते।

कनक्कन।

यह जाति मैसौर राज्यमें पढने लिखनेका काम करती है, वहां इनकी मान मर्यादा भी विशेष है, राज्यसे बहुतसे कार्य इनके हस्तगत हैं, यह भी अपना क्षत्रियवर्ण बताते हैं।

कर्नाम।

मैसौरके पूर्व दक्षिणी भागोंमें कर्नाम जातिका निवास है, यह भी कायस्थोंके समान वहाँ लिखने पढनेका काम करते हैं, अपनेको क्षत्रिय वर्णमें मानते हैं, इनके संस्कार भी सुने जाते हैं, अपनेको क्षत्रिय, कहते हैं पर दूसरे लोग इनको क्षत्रिय माननेमें आपत्ति करते हैं।

काकन।

युक्त प्रदेशके पूर्व भागमें इस जातिका निवास है, G.S.W.C.ने इस जातिको राजपूत माना है मिस्टर इलियटका भी यही मत है, इनके पूर्वज युक्त प्रदेशमें मऊ (अलदामऊ) से आये थे आजमगढके

काकन अपनेको विष्णुकुलके मयूरभट्ट नामक वीरपुरुषकी सन्तान मानते हैं, इनका आदिस्थान कपडी केदार है, दूसरे लोग इनको शूद्र कहकर मानते हैं।

काछी।

यह जाति अपनेको कछवाहा वंशकी शाखाका बताती है, कनौजिया, शाक्यसेनी, हरदिया, मुराव, कछवाहा, सलोडिया, अम्बर आदि इसके भेद हैं, एक काछी नामवाली शूद्र जाति है, वह इनसे पृथक् है, शाक्य वंशियोंकी राजधानी फरुखाबाद जिलेमें संकीसाथी जो फरुखाबादसे आठ कोस और मोटा स्टेशनसे तीन मील है, यह लोग अफीमकी खेती करते हैं, रायबरेली, आगरा, फरुखाबादमें विशेष रूपसे इनका निवास है।

काठी।

यह एक क्षत्रिय जातिका भेद है, बुन्देलखण्डमें इनका निवास है।

कान्हपुरिया।

रायबरेली, सुलतापुर, परतापगढ, प्रयाग, जौनपुरमें इस जातिका निवास है, यह अपनेको क्षत्रिय मानती है।

कासिप।

यह अपनेको कश्यप वंशीय क्षत्रिय कहते हैं, शाहजहांपुर खेडी आदि स्थानोंमें इनका निवास है, दूसरे लोग इनके क्षत्रियत्वमें आपत्ति करते हैं।

गोरछा।

यह भी अपनेको राजपूत कहते हैं, युक्तप्रदेशमें कोई ५०० संख्या इनकी हैं।

गोरखा।

पर्वतकी रहनेवाली यह एक क्षत्रिय जाति है, सम्भव है कि गहलोत वंशसे इसका निकास हो, परन्तु गोरखा शब्द यथार्थमें गोरक्षक पदसे बिगड कर बना है, और इनका यह लक्षण तथा शस्त्रधारण करना यह दोनों लक्षण क्षत्रियत्वके बोधक हैं।

गोंदो।

यह बंगालप्रान्तकी एक वीर जाति है, मुसलमानोंके समय इन्होंने बडी वीरता दिखाई थी, यह भी अपनेको क्षत्रिय कहते हैं।

गौराहर।

यह एक राजपूत वंश है यह जिला अलीगढमें निवास करते हैं, कहा जाता है कि चमरगौड क्षत्रियकी यह भी एक शाखा है, इसका आदि स्थान कनपूडी है।

गोयल।

राजपूतानेमें गहलोत वंशका एक भेद कहा जाता है, राजपूतानेमें मनुष्य गणनामें ७८१ पाये गये थे।

गौडक्षत्रिय।

यह भी क्षत्रियोंके ३६ भेदोंके अन्तर अपनेको मानते हैं, बंगालमें इनके वंशधरोंका राज्य था। पृथ्वीराज चौहानके पीछे अजमेरका अधिकारी यही वंश हुआ है, युक्तप्रदेशमें भटगौड, बामनगौड चमरगौड और कथेरियागौड इनके भेद कहे जाते हैं।

गौतमक्षत्रिय।

यह लोग अपनेको गौतमवंशी क्षत्रिय कहते हैं, कहा जाता है कि शृंगी ऋषिको कन्नौजके गहरवारवंशी अजयपालकी कन्या व्याही गई थी, प्रयागसे हरद्वार पर्यन्तका देश इनको दायजेमें मिला था, इनकी सन्तान क्षत्रिय धर्मावलम्बी कहायी, फतहपुरके समीप यह अर्गलके राजा कहाये परन्तु हमने ऐसा लेख किसी ग्रन्थमें नहीं पाया कि शृंगी ऋषि जो गौतमजीकी छठी पीढीमें थे, उन्होंने क्षत्रिय कन्यासे विवाह किया, और कहां शृंगीऋषि उनके कितने दिन पीछे गहरवार वंश यह बात ध्यानमें नहीं आती, इसमें कोई दूसरा कारण होगा।

गंगलावत पोता।

राजपूतानामें यह एक क्षत्रिय जातिका भेद कहा जाता है।

खारवार।

यह द्रविड देशकी एक जाति है, हजारी बागके जिलेमें खेरागढ एक कसबा है, इसी जातिके पूर्व पुरुषोंने इसको वसाया था, यह भी अपनेको क्षत्रिय मानते हैं।

कोलटा।

आसाम, व छोटा नागपुर इन स्थानोंमें इस जातिके लोग निवास करते हैं, यह अपनेको क्षत्रिय मानते हैं, पर दूसरे लोग इस जातिको शूद्र मानते हैं,परन्तु इनमें कहीं कहीं यज्ञोपवीत पाया जाता है।

किनवर।

यह युक्तप्रदेशकी एक जाति अपनी स्थिति रघुवंशी क्षत्रिय बताती है, गोरखपुर गोंडेके जिलोंमें इनका निवास है, दूसरे लोग इनको क्षत्रिय नहीं मानते हैं।

इति श्रीविद्यावारिधिपंडितज्वालाप्रसादमिश्रसंकलिते जातिभास्करे क्षत्रियखण्डः समाप्तः।

अथ वैश्यखण्डः।

यजुर्वेद और ऋग्वेद तथा अथर्ववेदमें वैश्य वर्णका प्रमाण मिलता है (ऊरू तदस्य यद्वैश्यः) ऋ० १०। ९०। १२ यजु० अ० ३१ मं० ११। अर्थात् वैश्य जाति उसकी दोनों जंघाओंसे उत्पन्न हुई है, अथर्वमें (मध्यस्तदस्य यद्वैश्यः) ऐसा पाठ दिया हुआ है शतपथ ब्राह्मणमें लिखा है (भूरिति वै प्रजापतिर्ब्रह्म अजनयत। भुव इति क्षत्रं स्वरिति विशम् एतावद्वै इदं सर्वं यद्ब्रह्म क्षत्रं विट्) अर्थात् भू यह शब्द उच्चारण करके प्रजापतिने ब्राह्मणको, भुव इस शब्दसे क्षत्रियको, और स्वः यह शब्द उच्चारण करके वैश्यको उत्पन्न किया, यह समस्त विश्वमंडल ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य है, कृष्णयजुर्वेदसे यह भी विदित होता है कि, गौ, अन्नादि वैश्यका सहजात है, अर्थात् आर्यजातिमें गोरक्षा अन्नादि आहार्य द्रव्यका योजन ही वैश्योंका कर्म है, यास्कके मतसे मध्यस्थानका अर्थ भूमि है, इससे स्पष्ट है कि भूमिकर्षण वा भूमिसे उत्पन्न हुए पदार्थोंके देश विदेशमें लाने ले जानेके लिये ही वैश्योंकी सृष्टि है. कृष्णयजुर्वेदमें वैश्यको ऋक्से उत्पन्न कहा है, वैश्य जगतीछंदसे उत्पन्न कहा है,इसीसे पारस्करके मतानुसार " विश्वारूपाणि प्रतिमुञ्चते०" इत्यादि मंत्रकी वैश्यवर्णको उपासना करनी चाहिये। ऋग्वेदमें वैश्य सावित्रीका वर्णन इस प्रकार है।

विश्वारूपाणि प्रतिमुञ्चते कविः प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे।
वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो विराजति॥

(ऋ० ५।८१।२) सविता देवता आत्रेय श्यावाश्वऋषिः । अर्थात् ज्ञानवान् सविताने स्वयं ही विश्वरूप धारण किया है, वही मनुष्य और चौपायोंका कल्याण विधान करते हैं, उन्हीं वरणीय सविता देवने स्वर्गलोकको प्रकाशित किया है, वही उषाके पश्चात् विराजित होते हैं, वही यजमानको स्वर्ग देते हैं। यही मंत्र वैश्य जातिका परम अवलम्ब है, सृष्टिके आरम्भमें वैश्यवर्णने भी एक दो मंत्रोंका दर्शन किया है।

भलन्दश्चैव वन्यश्च संकृतिश्चैव ते त्रयः ।
ते च मंत्रकृतो ज्ञेया वैश्यानाम्प्रवराः सदा ।

(मत्स्यपुराण अ० १३२)

भलन्द वन्द्य और संकृति यह तीन वैश्य मंत्रद्रष्टा हुए हैं, यों तो सब मन्त्रद्रष्टा ९१ हैं। वैश्य शब्दका संस्कृत पर्याय ऊरव्य, ऊरुज, अर्य, भूमिस्पृक्, विट्, द्विज, भूमिजीवी, व्यवहर्ता, वार्तिक, सार्थवाह, वणिक, पणिक, पाया जाता है, पुराणोंमें जम्बूद्वीपके सिवाय प्लक्षद्वीपमें ऊर्ध्वायन, शाल्मलिद्वीपमें वसुन्धर, कुशद्वीपमें अभियुक्त, क्रौंचद्वीपमें द्रविण, और शाकद्वीपमें दानव्रत वैश्योंका नाम है, जिन्दावस्तामें वास्त्रिय फसुयण्ट वैश्यजातिका नाम है।

अध्ययन यजन और दान, भागवतसे इनके तीन धर्म हैं, कृषि गोरक्षा वाणिज्य और व्याज यह चार इनकी जीविका हैं, इनके आश्रम तीन हैं ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ और गार्हस्थ्य, आपत्ति समय उपस्थित होनेपर वैश्य शूद्रवृत्तिद्वारा भी जीविका निर्वाह कर सकता है, परन्तु वह समय बीतते ही तत्काल वह वृत्ति त्याग देनी चाहिये, इसको उपनयनमें अधिकार है, बारहवें वर्षमें वैश्यजातिका यज्ञोपवीत होना चाहिये, चौबीस वर्षतक इनका समय बीतता नहीं है, इतने समय तक यज्ञोपवीत न होनेपर यह पतित होजाते हैं, इनका आशौच पन्द्रह दिनका है, विष्णुसंहितामें भी ऐसा ही इनके लिये लिखा है, क्षमा, सत्य, दम, शौच, दान, इन्द्रियसंयम, अहिंसा, गुरुसेवा, तीर्थपर्यटन, दम, सरलता, लोभत्याग, देवब्राह्मण पूजा और निन्दाका त्याग, यह वैश्य जातिके साधारण धर्म हैं।

आदि सभ्य जगत्के इतिहासमें फिणिक नामक जिस प्राचीन वणिक् जातिका उल्लेख पाया जाता है वह ऋक् संहिताकी पणिनामसे कही जातिका अपभ्रंश है (तं गूर्तयोनेमन्निषः परीणसः समुद्रं न सञ्चरणे सनिष्यवः । ऋ० १।५६।२) उस समयसे ही यह जाति गोरक्षा कृषिविभाग और वाणिज्य करते थे उपरोक्त कहे मंत्रमें धनार्थी पणिगण समुद्र तक वा सागरद्वारा यात्रा करके व्यापार करते थे ऐसा विदित होता है, अथर्ववेदसे पाया जाता है कि वैश्यगण यात्राके समय अग्नि इन्द्र आदि देवताओंकी स्तुति करते थे, नीचे लिखे मंत्रोंमें धनाहरण और क्रयविक्रयका आभास पाया जाता है।

१ सर्मी पणे रजति भोजनं मुषे निदाशुषे भजति सूनरं वसु । दुर्गे च न ध्रियते विश्व आ पुरुजनो ये अस्य तविषीम चक्रुधत ॥

ऋ० ।३४।७।

१ भावार्थः-कोई अधिक पण्य द्रव्यसे थोडे मूल्यके पदार्थको यदि प्राप्त करे और फिर वह मोल लेनेवालेके पास जाकर कहे कि मैंने तो यह वस्तु ऐसी नहीं बेची है, यह लो तो इतना और दो तो वह बेचनेवाला उस मोल लेनेवालेसे विशेष मूल्य नहीं लेसकता क्रय समयमें हुए समर्थ और असमर्थ वचन फिर नहीं बदलते।

२ भूयसा वस्नमचरत् कनीयोऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन् । स भूयसा कनीयो नारिरेचीद्दीनादक्षा विदुहन्ति प्रवाणम् ॥

ऋ० मं० ४ । २४ । ९

ऋग्वेद दशम मण्डलमें कृषिसम्बन्धी बहुत उत्तम वर्णन है, वैश्य जाति इस कर्ममें बहुत निपुण थी, यह युगारंभसे ही मांसभक्षणके विरोधी थे, और कुछ वैश्य जातियोंमें इस समयतक भी मांस भक्षण नहीं पाया जाता है, इनके द्वारा भारतीय सभ्यता दूर दूर फैली, और देशान्तरोंमें इनकी रहन सहनसे भारतका पता मिला, ऐतरेय ब्राह्मणमें करप्रदान और पराधीनता यह भी वैश्यके गुण लिखे हैं, तथा तिरस्कार सहन शक्ति भी लिखी है (यथा ते प्रजायामाजनिष्यतेऽन्यस्य बलिकृदन्यस्याद्यो यथाकामज्येयः ऐत० ७ । ५ । ३,

इसका अर्थ यह है कि वैश्य वाणिज्य करता हुआ दूसरे राजाको बलि देता है अर्थात् करप्रदान करता है, और दूसरे राजके अधीन होता है और उस राजाकी इच्छाके विपरीत करनेसे तिरस्कारका भाजन होता है ।

इस वैश्यजातिसे ही शैव, सौर, जैन, और बौद्ध धर्मकी विशेष पुष्टि हुई थी, बौद्धधर्म इनके कारण दूर २ तक फैल गया था, बहुतसे शैव और बौद्ध मतके मंदिर भारतमें ही नहीं चीन काबुल यवद्वीप सुमात्रा आदि भारतके महासागरके द्वीपों और अनुद्वीपोंमें सुशोभित हुए थे, आसाम, साम, कम्बोज, सिंहल आदि स्थानोंमें इन प्राचीन वणिकोंके वंशधरगण इस समयतक निवास करते हैं, गौतमधर्मसूत्रसे जाना जाता है कि कृषकगण राजाका एकादशांश अष्टमांश वा एक षष्ठांश कर देते थे गवादि पशु और सुवर्णपर $\frac{1}{50}$ अंश, पण्यद्रव्यपर $\frac{1}{20}$ अंश, मूल, फल, फूल, भेषज, लता, गुल्म, मधु, मधुमांस, तृण और इंधनपर $\frac{1}{60}$ अंश कर देना होता था, कर्मकार और शिल्पीगण चर्मकार महीनेमें एक दिन काम किया करते थे ।

उपासक दशासूत्र नामक जैनग्रन्थमें जो डेढ हजार वर्षका है, उसमें आनन्दनामक एक वैश्यकी कथा लिखी है कि उसने जैनशास्त्रानुसार यतिधर्म न ग्रहण करके पंच अनुव्रत धारण किया था. हिंसा, मिथ्यापन, प्रपंच सभी बातका उसने त्याग किया था, शिवनन्दा नामवाली उसकी धर्मपत्नी थी, चार करोड सुवर्णमुद्रा उसके कोषमें ४ करोड ब्याजमें थीं, और चार करोडकी उसके जिमींदारी थी, इसके अतिरिक्त उसके यहां चार दल गोमेषादि थी, जिसमें एक २ दलमें दश दश सहस्र गोमेषादि थीं; ५०० कोठी प्रत्येक कोठीके उपयुक्त १०० सौ सौ निवर्तन सामग्री विदेशवाणिज्यके लिये ५०० छकडे और देशी वाणिज्यके लिये भी ५०० शकट थे इसके अतिरिक्त जलपथमें वैदेशिक वाणिज्यके लिये चार जहाज, और स्वदेशी वाणिज्यके लिये भी चार जहाज प्रस्तुत रहते थे ।

इस साधारण वैश्यके इतिहाससे ही समझा जा सकता है कि एक समय वैश्य जाति कितनी समृद्ध शालिनी थी, मृच्छकटिक नाटकमें भी श्रेष्ठीचत्वर आदि कैसे २ धनकुबेरोंका वर्णन है, सोने चांदी जवाहरातोंसे उनके स्थान भर रहे थे, समयपर राजाधिराज भी इनसे ऋण लेते थे, इनमें अहंकारका लेश

---

२ यह इन्द्र व्यापारीके समान लुब्धकके भोजन धनको सम्यक् प्रकारसे हरण करता है और हवि देनेवाले यजमानको देता है अर्थात् अयज्वासे लेकर यज्वाको सुन्दर धन देता है, आपत्तिमें भी सब देनेवाले जिसको रखते हैं यह विहित कर्म न करनेसे इसे क्रुद्ध करते हैं ।

भी न था, यह स्वजातिपोषक, बडे २ देवालयोंके निर्माणमें दत्तचित्त देवगुरुमें भक्ति दिखाकर अक्षय कीर्ति स्थापन करगये हैं, शिव, विष्णु, जिन बुद्धोंके बडे बडे मन्दिरोंसे भारतवर्ष भरा पडा है, इस समय भी बडे २ मन्दिर तथा धर्मशालायें वैश्यजातिकी निर्माण की हुई हैं, प्रसिद्ध ऋषिकुल संस्था जो हरद्वारमें विद्यमान है विशेषरूपसे वह मारवाडी वैश्यजातिकी उदारतासे ही परिचालित होती है, इन्ही वैश्यजातिके प्रभाव और शिल्पियोंके कलाकौशलसे पाश्चात्य जगत्को भी चमत्कृत होना पडा है। प्राचीन वैश्यसमाजके विशेष सरलता आडम्बरहीनता और लक्ष्य वाणिज्य और कृषि था जिस कोटयधीश आनन्दकी कथा हम ऊपर लिख आये हैं, उसका आहार विहार बहुत ही सामान्य था उसको विशेष सुखभोगकी लालसा न थी, जैनग्रन्थमें उसके खाद्यव्यवहारकी जो सूची दी गई है वह इस प्रकार है।

आनन्द प्रातःकाल शय्या त्यागकर लालरंगका अंगोछा ले कर बैठता और दतौन करता था, उसके पीछे एक फल और आंवलेको पीसकर उसका रस पीता, उसके पीछे दो प्रकारका तेल शरीरमें लगाकर और एक सुगन्धित चूर्ण मलकर चार घडे जलसे स्नान करता फिर श्वेत जोडा धोती पहरकर व्यवहारके लिये कुंकुम, चन्दन कस्तूरी आदि गन्धद्रव्य शरीरमें लगाकर घरमें धूप जलाता था, और पूजाके लिये श्वेत कमल तथा दूसरी प्रकारके फूल भी लेताथा, उसके कानमें एक भूषण और हाथमें एक अंगूठी रहती थी, भोजनमें दाल, चावल, खिचडी, घी और बूरासे बनाया लड्डू, उडद, मूंग, भात इत्यादिका आहार था, पीनेके लिये वर्षाकालका जल, संग्रह रखता था, और पांच प्रकारके मसालेके पानसे अपने मुखको सुगंधित किया करता था, सब प्रकारके रस (गुड, दाडिम, आंवला, किरात, तिक्तादि) सिद्धान्न ताण्डुलादि तिल, पाषाण, लवण, नानाविध पशु, मनुष्य, सबप्रकारके वस्त्र, रक्तवस्त्र, सन और रेशमके वस्त्र, फल, मूल, औषधी, जल, लोह, विष, सोमरस, क्षीर, दधि, घी, तेल, कुश, कपूर आदि सुगन्धित द्रव्य, मद्य, माक्षिक, मधु, सोम, शस्त्र, आसव, सब प्रकारके वन्य पशु, दंष्ट्रावाले जीव, पक्षी, अश्व, अश्वतर, नील लाक्षा आदि व्यापारके द्रव्य मनुजीने निर्देश किये हैं, इनमें कुछ वस्तुओंका व्यवसाय वैश्यजातिके लिये निन्दित था, विशेषकर तैल, दुग्ध, लाक्षा, लवण, मांस, गुड और सिद्धान्न जो लोग बेंचते थे वे निन्दित गिने जाते थे, इसी कारण आपद्कालमें भी ब्राह्मण क्षत्रियके लिये इन वस्तुओंका व्यवसाय निन्दित कहा गया है॥

सद्यः पतति मांसेन लाक्षया लवणेन च। त्र्यहेण शूद्रो भवति ब्राह्मणः क्षीरविक्रयात्॥ इतरेषां तु पण्यानां विक्रयादिह कामतः। ब्राह्मणः सप्तरात्रेण वैश्यभावं नियच्छति॥ जीवेदेतेन राजन्यः सर्वेणाप्यनयं गतः।

मनु० अ० १०।९९

यदि ब्राह्मण मांस लवण और लाख बेचे तो तत्काल पतित होता है, और दूध बेचनेसे तीन दिनमें शूद्रभावको प्राप्त होजाता है, और यदि अन्य निषिद्ध द्रव्य इच्छा पूर्वक बेचै तो सातरातमें वैश्यभावको प्राप्त होता है, आपत्कालमें जैसी ब्राह्मणकी जीविका वैसी ही क्षत्रियकी है, परन्तु वह किसी प्रकार भी ब्राह्मणवृत्तिका अवलम्बन न करे।

यो लोभादधमो जात्या जीवेदुत्कृष्टकर्मभिः । तं राजा निर्धनं कृत्वा क्षिप्रमेव प्रवासयेत् ॥९६॥ वैश्यो जीवन् स्वधर्मेण शूद्रवृत्त्यापि वर्तयेत । अनाचरन्नकार्याणि निवर्तेत च शक्तिमान् ॥

मनु० अ० १०। ९८

यदि कोई अधमजाति उत्कृष्टजातिकी वृत्ति अवलम्बन करके जीविका करै तो राजा उसको निर्धन करके अपने देशसे निकाल दे, वैश्यगण अपने धर्मके द्वारा जीविका करै, आपत्कालमें शूद्रवृत्ति भी स्वीकार कर सकते है, परन्तु अनाचार वा उच्छिष्ट ग्रहण नहीं कर सकते, जब इस प्रकारकी कठिन आज्ञायें थीं, तब वर्ण धर्म और जातिके आचारविचार नियमबद्ध थे।

कृषिद्वारा सब प्रकारके शस्य उत्पादन गोमहिषादिपालन और अर्थकारी अन्तर्तथा बहिर्वाणिज्य ही वैश्यजातिकी उपजीविका थी, परन्तु इस समय यह हीन वृत्ति मानी जाती है, इसका कारण क्या है सो लिखते हैं। मनुजी कहते हैं—

वैश्यवृत्त्यापि जीवँस्तु ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपि वा । हिंसाप्रायां पराधीनां कृषिं यत्नेन वर्जयेत्॥कृषिं साध्विति मन्यन्ते सा वृत्तिः सद्विगर्हिता । भूमिं भूमिशयांश्चैव हन्ति काष्ठमयोमुखम् ॥

मनु० १०। ८३। ८४

यदि ब्राह्मण क्षत्रियको वैश्यवृत्तिसे ही आजीविका करनी पडे तो खेती वृत्तिको न करे, कारण कि इस कर्ममें हिंसा भी है, और इसमें बैल और हलोंके आधीन होना होता है, कोई कृषिको उत्तम मानते है, परन्तु सत्पुरुषोंने इसकी निन्दा की है, कारण कि लोहेके मुखवाला हल भूमि और भूमिमें रहनेवाले जीवों को नष्ट कर देता है।

यद्यपि यह विधान मनुजीने ब्राह्मण और क्षत्रियके निमित्त किया था, परन्तु धीरे २ वैश्यजातिने 'हिंसा' भयसे इस कर्मको निन्दित माना, और अन्नकी उत्तम उपार्जनका उसी समयसे सूत्रपात हुआ, जो कृषि वेद वेदांग धर्मसूत्रोंमें अति प्रशस्त मानी गई है, महाराज जनकने यज्ञ कार्यकी जिसे स्वीकार किया है, मानकल्पसूत्र गृह्यसूत्रादिमें जिसकी व्यवस्था है, उसको वैश्यजाति सर्वथा त्याग बैठी, और यह जगत्का हितकारी कार्य ऐसे अनपढ शूद्रजातिके पुरुषोंके हाथमें पड गया कि जिससे भारतवर्षके अन्नमें वृद्धि न होने पाई, यद्यपि इस समय हमारी सरकार बहुत कुछ सुबीता कर रही है परन्तु वे अनपढ क्या समझ सकते हैं, हमारा जहांतक अनुमान है यह बौद्धधर्म और जैनधर्मके अहिंसा परमो धर्म का प्रभाव है जिसके कारण खेती, गोरक्षा, पशुपालनादि धीरे २ वैश्यजातिसे उठ गया, जो कार्य वैश्य जातिके ऊपर निर्भर था, धनी होनेके कारण वह सब कार्य यह जाति क्रमसे त्यागने लगी, और बहुतसे व्यवसाय शूद्र और मिश्र जातियोंने ग्रहण कर लिये, केवल व्यापारसम्बन्धी थोडा कार्य और व्याज इसीपर इस जातिकी जीविका इस समय अवलम्बित है विक्रम संवत्की चौथी पांचवीं शताब्दी पर्यन्त वैश्यजाति परम उन्नत थी, उस समय जैन और बौद्ध धर्मका प्रभाव चमक रहा था, वैशाली, श्रावस्ती, पाटलिपुत्र, कान्यकुब्ज, उज्जयनी, सौराष्ट्र, पौण्ड्रवर्द्धन आदि व्यापारिक नगरोंमें ताम्रपत्र पाये गये हैं, उनसे वैश्य समाजकी उन्नतिका पता चलता है, उस समय इस शक्तिने क्षत्रियशक्तिका गर्व खर्व

करनेकी इच्छा की थी, जिस समय बौद्ध जैन क्षत्रिय राजाओंने वेदधर्म त्यागकी इच्छा की, उस समय ब्राह्मणशक्तिने वैश्य शक्तिमें समाश्रित हो गुप्तसम्राट् समुद्रगुप्तसे अश्वमेध यज्ञ कराया था, और वह अश्वमेध यज्ञ बौद्ध राजधानी पाटलिपुत्रमें अनुष्ठित हुआ था, यद्यपि अश्वमेधमें क्षत्रियका अधिकार है, परन्तु उस- समय घोषणा की गई थी पृथिवी क्षत्रियहीन है, इसकारण यह यज्ञ वैश्यद्वारा अनुष्ठित होता है (गुप्तवंश क्षत्रिय नहीं है यह बात बहुतसे शिलालेखोंसे स्पष्ट हो चुकी है, नहीं तो उसका कोई लेख अवश्य क्षत्रिय गौरव सम्बन्धी होता. पारस्करमें (गुप्तेति वैश्यस्य) । १ । १७ । ४ यह सूत्रका पिछला भाग है, वैश्यजातिके पीछे गुप्त पद लगा होता है यदि यह क्षत्रिय होता तो गुप्त उपाधि किसीप्रकार धारण नहीं करता, गुप्तसम्राटने उससमय पृथिवीके समस्त क्षत्रियोंको पराजित कर अपने अधीन किया था, पर उसके दरबारमें सनातन धर्म तथा बौद्धधर्म दोनोंहीकी प्रतिष्ठा रही, हां विक्रमीय सप्तम शताब्दीके आरंभकालमें पूर्वभारतके अधीश्वर चन्द्रगुप्त (शशांकनरेन्द्रगुप्त) ने ब्राह्मण भक्तिकी पराकाष्ठा और बौद्ध विद्वेषका ज्वलन्त दृष्टान्त दिखाया था, यह कन्नौज अधिपति हर्षवर्द्धनने इनको परास्त किया था, यह भी वैश्यही कहेजाते हैं, कारण वर्द्धन उपाधि भी वैश्योंकी ही है, यह शक्ति वैश्योंने थोडे कालमें संचय नहीं की थी, अवश्यही इसमें बहुत समय लगा होगा, जैसे अंग्रेज वणिक्जाति जिस उपायसे पृथिवीके समस्त स्थानोंमें जाकर धीरे २ अर्थ शक्ति सम्पन्न और अधीश्वर हुए हैं, उसी प्रकार भारतीय वैश्योंने शक्तिका संचय किया था, जिसप्रकार पणि जातिने वाणिज्य प्रभावसे दूर दूर जाकर यूरुप खण्डमें अधिकार और सुसभ्य राज्यप्रतिष्ठा प्राप्त कीथी. वैसी इच्छा भारतके अपर साधारण वणिक- गणोंने नहीं की। वे जानते थे कि, उनकी सुवर्णप्रसव करनेवाली भारत भूमिसे श्रेष्ठ स्थान जगत्में दूसरा नहीं है, इसीकारण वे महाद्वीप द्वीपान्तरोंसे रत्नसमूह लाकर जननी जन्मभूमिको समृद्धि शालिनी करनेमें प्रवृत्त हुएथे।

दो सहस्र वर्ष पहले भारतके वैश्यगण जर्मनीके उपकूलमें जाकर वाणिज्य करतेथे, उस पुरातन कालमें उत्तालतरङ्ग संकुल जापान उपसागरको पार करके अथवा आटलाण्टिक महासागरमें जाकर किसप्रकार वे लोग उपस्थित हुएथे, इसका ठीक निश्चय न पानेपर भी अनुवादक मर्फिसाहब अति चकित हुए हैं, जिसप्रकार यहांके वैश्य व्यापारी मिसर देशसे रत्नराशि व्यापारद्वारा लाया करतेथे, इस बातको भी उन्होंने स्वीकार किया है, अब पाठकगण जान सकैंगे कि, किस प्रकारसे वैश्यशक्तिका संगठन भारतवर्षमें हुआ था, गुप्त सम्राट्की चेष्टासे बहुतसे जैन वैश्यगण फिर अपने वैदिकधर्ममें आगयेथे; विक्रमकी पांचवीं शताब्दीमें चीनका परिव्राजक फाहियान जब भारतमें आया था तो उस समय उसने आर्यावर्तमें वैदिक और बौद्ध धर्मका प्रभाव समान देखा था, वह सिंहलमें जानेके लिये ताम्रलिप्त हिन्दू वणिकगण जिस जहाजमें बैठाथा, उसमें दोसौ यात्रियोंके बैठनेकी जगह थी, उनका लेख पढनेसे यह विदित होता है कि हिन्दू वणिकगण सिंहलहीसे महासागरके समस्त द्वीपमें गमनागमन करते थे, फाहियानने यव और बलि- द्वीपमें भारतीय वैश्योंका उपनिवेश देखा था।

वैश्यसम्राट् हर्षवर्द्धनके यत्नसे आर्यावर्तमें फिर कुछ दिन बौद्धप्रतिष्ठाका अनुराग दिखाई दिया, सम्वत् ७०९ में सम्राट् हर्षवर्द्धनकी मृत्युके साथ बौद्धधर्म अप्रसन्न होने लगा, जब सम्वत् ८९७ में कन्नौजके सिंहासनपर क्षत्रिय वीर यशोवर्म देव अधिष्ठित हुए उन्हींके साथ मानो वैदिक धर्मका फिर अभ्युदय हुआ, और बहुत प्रचार भी हुआ, उस समय पाटलिपुत्र गौड और ताम्र लिप्तिमें वैश्य समाज अति प्रबल था, उनमें वैदिकधर्मानुयायियोंकी संख्या अल्प थी। बौद्धोंकी अधिक थी, पाटलिपुत्रकी वैश्यजातिकी

चेष्टासे गोपाल मगधके अधीश्वर हुए, यह उनके पुत्र धर्मपालके शिलालेखसे विदित होता है, यशोवर्माके समान उनका समसामयिक आदि शूर गौडमण्डलमें साग्निक ब्राह्मण लाकर वैदिक धर्मप्रचारमें तत्पर हुआ था, किन्तु उसकी मृत्यु होतेही गोपालके पुत्र धर्मपालने आकर गौड राज्यपर अधिकार करलिया, पालवंशकी जातिका ठीक निश्चय तो नहीं होता तो भी इस जातिके साथ वणिक् वंशका योनिसम्बन्ध था, इसका प्रमाण गौडीय सुवर्ण वणिक्के कुल इतिहासका लेख है, प्रायः चारसौ वर्षतक पालवंशने गौडमण्डलमें आधिपत्य विस्तार किया था, उस समयभी यहांके वैश्यगण उत्तरमें चीन तिब्बत, पूर्वमें आसाम कम्बोज, दक्षिणमें यव, बलि, वर्णिओ, सुमात्रा आदि द्वीपोंमें तथा पश्चिममें सौराष्ट्र गुजरात आदि देशोंसे लेकर मिसर पर्यन्त जाते थे । मुसल्मानी राज्यसे अब तक भी यह गमनागमनकी रीति बन्द नहीं हुई है, तैलंग, तामिल, गुजराती, मराठी, पंजाबी तथा मारवाडी वणिकगण, आज भी अफरीका, अमरीका और यूरपके स्थान २ में जाकर पण्य द्रव्यका व्यवसाय करते हैं, परन्तु इनके निमित्त समुद्र यात्राकी प्रायश्चित्त व्यवस्था भिन्न प्रकारकी है, बंगालमें तो प्रकृत वणिक दिखाई नहीं देता वहांके वणिक् एक प्रकारके शूद्र कहे जाते हैं । उत्तर पश्चिम प्रदेशमें जिन वैश्यजातियोंका निवास है, वे बहुतसी श्रेणियोंमें विभक्त हैं,टाड्साहब एक जैन यतिकी सहायतासे वैश्यजातिकी एक सूची तयार करते थे उनको १८०० जातियोंकी सूची मिली, परन्तु पूर्तिका ठिकाना न जानकर वे उससे विरत हुए ।

वैश्य जातिकी संख्या विशेष है उनमें हम बहुतोंकी व्यवस्था लिखैंगे शेषके नाम और निवास लिखैंगे परन्तु हमारे उत्तर, पश्चिम तथा दूसरे देशोंमें भी सर्व प्रथम अग्रवाल वैश्य जाति समझी जाती है, इस कारण प्रथम उसीका उल्लेख करते हैं ।

अग्र वा अगरवाल ।

अग्रवालोंकी उत्पत्तिनामक ग्रंथमें लिखा है कि, वैश्योंमें जो पहला पुरुष हुआ उसका नाम धनपाल था ब्राह्मणोंने उसको प्रताप नगरके राज्यपर बैठाकर धनका अधिकारी बनाया, उसके आठ पुत्र और एक कन्या हुई कन्याका नाम मुकुटा था यह एक दूसरे याज्ञवल्क्य नामक महात्मासे विवाही गई, और आठ पुत्र शिव,नल,अनिल, नन्द, कुंद, कुमुद, वल्लभ,और शेखर नामसे विख्यात हुए, इनको अश्वविद्याके आचार्य शालिहोत्रके निर्माता विशाल राजाने अपनी आठ कन्या व्याह दीं, यही आठो वैश्य कुलकी मातृका हैं, पद्मावती, मालती, कांति, शुभ्रा, भव्या, भवा, रजा और सुन्दरी, यह उनके नाम हैं, इनका विवाह नामके क्रमसे हुआ,इन आठ पुत्रोंमें नल नामक पुत्र योगी और दिगम्बर होकर वनको चलागया, और सात पुत्रोंने सात द्वीपका अधिकार पाया, और पृथिवीमें इनका वंश फैल गया जम्बूद्वीपमें विश्यनाम राजा हुआ,जो आठ पुत्रोंमें शिवके कुलमें था,उस विश्यके वैश्य हुआ,उसके वंशमें सुदर्शन राजा हुआ उसके सेवती और नलिनी नामक दो रानी थीं उनका पुत्र धुरन्धर हुआ, धुरन्धरका परपोता समाधिनाम वैश्य हुआ,समाधिके वंशमें मोहनदास बडा प्रसिद्धहुआ,इसने कावेरीके किनारे श्रीरंगजीके अनेक मंदिर बनाये, इसका परपोता नेमिनाथ हुआ, इसने नैपाल वसाया, उसका पुत्र वृन्द हुआ, इसने वृन्दावनमें यज्ञ करके वृन्दादेवीकी मूर्ति स्थापन की, इस वंशमें गुर्जर बहुत प्रसिद्ध हुआ, जिसके नामसे गुजरात देश वसा, इससे आगे हरिनामक राजा हुआ,जिसके रंग इत्यादि सौ पुत्र थे, इसमें रंग राज्याधिकारी हुआ,शेषउसके भ्राता दुष्कर्मोंके कारण शूद्र होगये,फिर तप करके वे निजपदको प्राप्त हुए, उनके वंशजभी वैश्य कहाये, रंगका पुत्र विशोक हुआ, उसके मधु और उसके महीधर हुआ,इसने महादेवकी बडी आराधना की जिनके

वरदानसे इस वंशके लोग व्यवहारनिपुण और सच्चरित्र हुए । इसी वंशमें वल्लभ राजा हुआ, उसीके घरमें राजा उग्र बडे प्रतापी हुए, और दक्षिणदेशमें प्रतापनगर इनकी राजधानी थी, इनको नागलोकनिवासी राजा कुमुदकी माधवी कन्या व्याही गई, यही माधवी सब अग्रवालोंकी जननी है और इसी नातेसे यह सर्पोंको अपना मामा कहते हैं । इस राजासे इन्द्रने भी द्वेष माना, कारण कि उसकी इच्छा माधवीपर थी, राजा अग्रने तपसे महादेवजीको प्रसन्न कर इन्द्रको वशीभूत करनेका वर मांगलिया, शंकरने इस राजाको महालक्ष्मीकी उपासनाका उपदेश दिया, राजाने देवीकी आराधना की, देवीने प्रसन्न हो राजाको कोल्हापुर भेजा, और कहा वहां नागराजके अवतार राजा महीधरकी कन्याओंका स्वयंवर है, उनसे व्याह कर अपना वंश चलाओ, राजा देवीकी आज्ञासे कोल्हापुर गया, और उन कन्याओंके संग अपना व्याह किया, फिर दिल्लीके समीप आया, तथा पंजाबके शिरेसे आगरे तक अपना राज्य स्थापन किया और अपना वंश चलाया, फिर राजाने यमुना किनारे महालक्ष्मीकी तपस्या की देवीने वरदान दिया कि वंश तेरे नामसे विख्यात होगा, मैं तेरे वंशकी कुलदेवी हूँगी, दिवालीपर लोग मेरा उत्सव करैंगे, यह वर देकर देवी चली गई । अग्रका राज्य हिमालयसे पंजाबके समीपतक गंगायमुनाका मध्यदेश तथा मारवाड देशतक था, मुख्य अगरवालोंके देश आगरा (अग्रपुर) यह पूर्व दक्षिणदेशको राजधानी थी, दिल्ली गुडगांव जिसका शुद्धनाम गौडग्राम है, विशेषकर अगरवाले यहांकी माताको पूजते हैं, मेरठ (मयराष्ट्र) रोहतक (रोहिताश्व) हांसी (हिंसारि) पानीपत, करनाल, कोटकांगडा, (नगरकोट) यह अगरवालोंकी निवास भूमियें हैं, और अगरवालोंकी कुलदेवी महामायाका मंदिर यहां है, ज्वालाजीका मंदिर इसी नगरकी सीमापर है, मंडी, विलासपुर, गढवाल जींदशफीदम नामा नारनौल (नारिनवल) यह नगर राजधानीके अन्तर्गत थे, राजधानीका नाम अग्रनगर जिसे अगरोहा कहते हैं, था, आगरा और अगरोहा यह दोनों नगर राजा अग्रसेनके नामसे आजतक प्रसिद्ध हैं ।

राजा अग्रसेनने साढेसत्रह यज्ञ किये, अठारहवां यज्ञ जब आधा हो चुका, तब राजाको हिंसाकर्मसे ग्लानि हुई, तब राजाने वह यज्ञ वहीं समाप्त करदिया, और यह आन कर दी कि आजसे हमारे वंशमें कोई बलिदानवाला यज्ञ न करै, इस प्रकार गर्गजीने देखकर राजाको वर दिया कि, तुमनें साढेसत्रह यज्ञ किये हैं, इस कारण तुम्हारे साढे सत्तरह गोत्र होंगे, इन्द्रने प्रसन्न होकर राजाको एक अप्सरा प्रदान की, राजा अग्रके सत्रह रानी और उस अप्सरासे बहत्तर पुत्र और कन्या हुई, उन सबकी अग्रवाल (अग्रके बालक) ऐसी संज्ञा हुई, और सबको वैश्यपद दिया, साढेसत्रह गोत्रोंके नाम यह हैं । गर्ग, गोईल, गावाल, वातसिल, कासिल, सिंहल, मंगल, मद्दल, तिंगल, ऐरण, टैरण, टिंगल, तित्तल, मित्त, तुन्दल, तायल, गोमिल, और गवन, यह अठारह गोत्र हैं, गोइन, आधा गोत्र है, यह सब यज्ञोपवीतधारी विष्णु-परायण हुए, श्रीमहालक्ष्मी कुलदेवी हुई इनकी उत्पत्तिका एक दोहा भी है ।

वद मिगसर शनि पंचमी, त्रेता पहले चर्ण ।
अग्रवार उत्पन्न भये, सुनभाखी शिवकर्ण ॥

गौड ब्राह्मण इनके कुलपुरोहित हुये । ११९४ ई० शहाबुद्दीन गौरीने अगराहेको नष्ट कर दिया, बहुतसे लोग बाहर चले गये बहुतसे मारे गये । बहुतसी स्त्री सती होगई, जो अब तक पूजी जाती हैं, यही समय अगरवालोंकी विपत्तिका था इस समय बहुतोंने यज्ञोपवीत तोड डाले बहुतसे जैनी होगये, बहुतसे मारवाड और पूर्वमें जा बसे, उनके वंशमें पुरविये मारवाडी हुए, उतराधी तथा दक्षिणाधी

भी इसी प्रकार हुए, पर मुख्य अगरवाले पछाहीं कहाये, जो दिल्ली प्रान्तमें बच गये थे, अग्रका पुत्र विभु हुआ, बहुतकाल पीछे इस वंशमें दिवाकर राजा हुआ, यह जैनी होगया उसी समयसे अग्रवालोंमेंसे वेद धर्मकी निष्ठा घटी, परन्तु अगरोहा और दिल्लीवालोंने अपना धर्म न छोडा, आगे उग्रचन्द्रके समयसे इनका प्रभाव घटने लगा, और उस अवनतिके समय शहाबुद्दीनने चढाई की, पश्चात् मुगलोंके समय फिर अग्रवालोंकी वढती हुई, अकबरके यहां तो इनको मंत्रीतकका पद मिला । मुच्चशाहका नाम प्रसिद्ध है, मुच्चशाही पैसा इसीके नामसे चला था. गोत्रोंमें कुछ फेर बदल भी होगया है सो लिखते है–

गर्गवागर	कांसल	विंदल	कुंछल	सिंतल
गोयल	वासल	जिंदल	विंछल	गौलणगौण
मंगल	ऐरण	जिंजल	बुंदल	
सिंगल	ढैरण	किन्दल	मिंतल	

अथवा ।

गरगोत	तायलगोत	ऐरण	किन्घल	वार्च्छल
गोयलगोत	तरलगोत	ढैरण	किन्घल	सरसूगुण
सिंगलगोत	कासळ	सिंतल	कच्छिल	
मंगलगोत	वासल	मिंतल	हरहर	

अथवा ।

गर्ग	तायल	एरण	भाघल	गावाल
गोयल	तित्तल	ढेरण	तिंगल	गवन
सिंहल	कांसिल	तुंघल	किंवल	
मंगल	वांसिल	मित्तल	गोभिल	

इनके सिवाय जो अग्रवाल हस्तिनापुरसे दक्षिण वा पश्चिम शेखावाटी मारवाड गौडवाडमें निवास करते हैं, उनके नाम औरही प्रकारके होते है, यथा–बजाजनागौरी, पटवामेवाडा पसारी इत्यादि इस प्रकारसे अग्रवाल वैश्य सर्व श्रेष्ठ मानेगये हैं ।

अथ माहेश्वरीवैश्यउत्पत्ति ।

सूर्यवंशी राजाओंमें चौहान जातिके खड्गलसेन राजा खंडेला नगरमें राज्य करता था, इसका बहुत वडा प्रभाव था, यह बडा दयालु और न्यायपरायण था, परन्तु इसके कोई पुत्र नहीं था, एक समय राजाने बडे आदरमानसे ब्राह्मणोंको बुलाकर उनका बडा सत्कार किया, ब्राह्मणोंने वर मांगनेको कहा तब राजाने कहा महाराज मेरे पुत्र नहीं है कृपाकर पुत्र दीजिये तब ब्राह्मणोंने कहा तू शंकरकी उपासना कर तेरे पुत्र होगा, परन्तु सोलह वर्षतक वह उत्तर दिशाको न जाय । और सूर्यकुंडमें नहीं न्हाय, राजाने तथास्तु कहा । ब्राह्मण आशीर्वाद देकर विदा हुए, उस राजाके चौबीस रानियां थीं, उनमें चम्पावती रानीके पुत्र हुआ, तब राजाने बडा आनंद मनाया, और पुत्रका नाम सुजानकुंवर रक्खा, इस प्रकारसे आनंदसे दिन बीते १४ वर्षकी उमरमें उस कुमारको एक जैनने अपनी शिक्षासे शंकरमतके विरुद्ध कर दिया, जिसके कारण वह ब्राह्मणोंसे द्रोह करने लगा, तीनों दिशाओंमें घूमकर उसने ब्राह्मणोंको बडा दुख दिवाया । उनके यज्ञोपवीत तोडे गये, यज्ञयाग बन्द होगये, राजाके भयसे कुमार उत्तर दिशाको नहीं जाता था, पर प्रारब्ध वश उत्तरमें ब्राह्मणोंका यज्ञपूजन सुनकर वह वहां चलाही ।

गया और सूर्यकुण्ड पर जाकर पराशर गौतम आदि ऋषियोंको यज्ञ करता देख बडा क्रोधकर कहा कि इन ब्राह्मणोंको पकडो मारो, और सब यज्ञकी सामग्री नष्ट करदो, ब्राह्मणोंने यह वचन सुन राक्षस जान शाप दिया कि तुम सब जडबुद्धि पाषाणवत् होजाओ, वे तत्काल ऐसेही होगये, राजा और नगर-निवासी सुनकर बडे दुःखी हुए, राजाने तो अपने प्राण त्याग दिये, सोलह रानी राजाके साथ सती होगई, शेष उमराव आदिकी स्त्रियें ब्राह्मणोंकी शरण हुई, उन्होंने धर्मोपदेश देकर उनको शान्त किया, और सबको शंकरकी तपस्या करने कहा उन स्त्रियोंने शंकरकी बडी तपस्या की, जिसके कारण शिवपार्वतीने उनको दर्शन दे वर मांगनेको कहा, तब रानियोंने कुमर और उसके साथियोंको चैतन्य किया वे सब चैतन्य हो शिवजीको प्रणाम करनेलगे. एक मिश्रीलाल कायस्थ पुत्रका मदारथा सो कोतवाल हुआ। शंकरने कहा तुमने पूर्वकालमें क्षत्रिय होकर स्वधर्म त्यागन किया इसकारण तुम क्षत्रिय न होकर अब वैश्य पदके अधिकारी होंगे, सूर्यकुंडमें स्नान करो, इसमें नहातेही तुम्हारे हाथसे शस्त्र छूट जांयगे, सूर्यकुण्डमें न्हातेही तलवारसे लेखनी, भालोंकी डांडी और ढालोंकी तराजु बनाके वैश्यपद धारण किया, वह वहत्तर उमराव उन ऋषियोंमें एक एकके बारह २ शिष्य हुए, वही अब यजमान कहेजातेहैं, और फिर वे कुछ कालके पीछे खण्डेला छोडकर डीडवाना आवसे उन वहत्तर खांपके उमरावसे वे वहत्तर खांपके डीडू माहेश्वरी कहलाये,और महेश्वरियोंका बडा विस्तार हुआ,उन वहत्तर खापोंके नाम सोनी सौमानी, जाखेटा, सौढाणी, हुरकट, न्यातिहेडा, करव्वा, काकाणी, माहेँ, सारंडा, कहाल्या, गिलडू, जाजू, वाहेती, विदादा, विहाणी, वजाजू, कलत्री कासटँ, कचोल्या, कल्हाणी, ऊंबर, कावरा, डाड, डागा, नटाणी, राठि, विड्हला, दरकँ, तौसणीवल, अजमेरा, भंडारी, छपरवाल, मटङ् भूतडावंग, अहल, इंद्राणी, मुराड्यौँ, मन्साली, लढा, मालपाणी, सिकच्ची, लाहौटी, गदैय्या, गागराणी, खटव्वड् लखौटा, असावौँ, चेचाणी, मुडवन्या, गूघडा, चौख, चंडक, बलदवा, बालदौं, वूव, वामङ्, भंडोवरौँ, तौतला आगिवाल, आन्सौड्, प्रताणी, नाह्रूधर, नवालं, पलौंड, तापडा, मणियार, धूँत धूपड मोदानी ७२ ।

खांपखवानी ।

सोनी १ ।

पेढ सोनगरा मातासेवल्या धूम्रांस गोत्र माडल्यास ऋषि यजुर्वेद गुरु संखवाल, ओझा गुरूकी माता, फलोधी, गोत्र दमाइंस सोनी, सुगरा, जुगरा, (नुनरा गांव, सांभर, डकाचाखत्राज्यां) रामावत भानावत, कोठारी, (मेवाड, देवगढ इलासूवाथा)

सोमानी २

स्यामोजी पेढ सोलंखी मातावंधर गोत्र लियाइंस, (आसोपा १ गुरु दायमा आसोफा) (कुदाल २ गुरुदायमा कुदाल व्यास)

सोमानी	कयाल	सामरखाड	ग्यानेपोता	बीकानेर
आसोफा	पोता	नेडतासे	गेगाणी	बीकानेर
राय	मकड	मूंडवासे	कसेरा	डीडवाना
कोडयाका	साहा	मेडतासे	थिरराणी	पोकरण
कुदाल	आगडी	आसोप	खाडावाला	बूंदीसे
मरदा, रानीगांव	परसावत	फलोधी	झवरसोमाणि	सामरसे
मानानी बीकानेर	वालेपोता	जैसलमेर		

झामस्सोमाणीकी ख्याति परगना जोधपुरके गांव झावरमें सम्बत् ८३२ में सोमपालजी. सोमाणी इनके नाना जाजनजी झावरकी गोदी गये और सौनपालजीकी औलाद चली यह झांवरसामानी कहाये,इस खांपमें पांच साख चली ।

जाखेटिया २

जालिमसिंहजी पढे यादव माता सिसनाय; गोत्र सिलांस, सती सौढल गुरूका गोत्र सामलियां, सामालांस, माता जाखन, गांव मांडले, शाखा माध्यन्दिनी, प्रवर ३ गुरू पारीक, खटौड व्यास मूंढक्या-थामेकी यजुर्वेद, गुरूका थांभा गांव सामरमें कमलापतजीसे सम्बत् १४४४ में फटे, थाभा २ सिरासन, सामर २ खुलासा १ सामर (१) जेतारणा जोधपुर जैपुर रामसर इन स्थानोंमें है, सिरासना मारौठ मेडते सोजत इन स्थानोंमें है, गुरूके आदि वृत्त राजौदिया कायस्थकी एकही इस समय झंवदिया कायस्थ १ सजौदिया कायस्थ २ दोनोंकी है (आखेटिया हौलानी) भुवानी वाल ३

सौढानी ४

सोढीजी पेढ सोहड् माता जीण, गोत्र सोढांस गौरा भैरव गांव ऊमरकोट, यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखा प्रवर ३ सती जीर गुरु खंडेलवाल मुछाल त्रिवाडी देवीसंवाय (सोढानी दंताल डाखेडा हडकुटिया— यह गांव जैसलमेर इलाके मारवाडीमें हैं) ।

हुरकट ५

हीरोजी पेढ देवदा माता विसन्त गोत्र कश्यप,गुरु पोकर नावटु हुरकट थोलानी कयाल चौधरी (कयालग्राम) नावामें चौधरी सामरमें हो ।

न्याती ६

नाननसीजी पेढ निरवाण माता चांदसेन, गोत्र नानसेम सती नवासन (फोफल्याके गुरु पल्लीवाल धामट) गोत्र मुद्गलांश पारीकदे प्याउपाधा माता खीवज गात्रदेईमें न्त नातीकी है नाती इन्दौरमें । १ निकलंक २ फौफल्या ३ डंडी ४ ।

हेडा ७

हीरोजी पेढ देवडा माता, फलोधी गोत्र धनास वंवासगुरू संखवाल ओझा माता फलोधी, गुरुपल्लीवालधामट गोत्र मुद्गल हेडा (किसीस्थानमें संख वालओझा वृतलाटे और किसी जगह पल्लीवाल)

करवा ८

कुंवरसी पेढ कछावा माता कछावाय संचय गोत्र करवास प्रवर ५ सामवेद (गुरुपल्ली वालधामट कागाकी माता फलोधी करवा १ कागा २ काहोर ३ कीया ४ किकल ५ वाकलंकी)

कांकडी ९

कूकासिंहजी पेढ जौया मावा आमल, गोत्र गौतम और कपिल लावस्योपित्र, गूमरा भैरव, यजुर्वेद प्रवर ५ माध्यन्दिनी शाखा सती लांछन,गुरु गूजरगौड,सांभरा चोंवा,देवीकाडज, वा लांछन गोत्र गौतम । काकानी सामरा नाराणीवाल (कांकाणी गोत्र कपलांस, सांभरा माता लोसल)

मालू १०

मल्लोजी पेढ पंपार, माता संचाय, गोत्र खलास वा थेपडास गोपाल पित्र सामवेद प्रवर ३ (सारस्वत ल्होड ओझा मालूके) गुरु गूजर गौड गुनार्डा त्रिवाडी सावूके, गुरुदायमा मौज, पटव्यास नैलांके,

व्यासामें थावा ३ मूडवे १ अरडके २ रहन ३ एक थावा वालाके वंगाकी वृत्त है । वह व्यास कहलाते हैं माढ़ सावू घीया तेला. चौधरी लौंईवाल पूर्वमें कोईका रुजगारसे बजे।

तेलाका आश्रय-तेलामाता चांमुडा गोत्र कंवलास ।

सारडा ११.

सीहंजी पेढ पंवार माता संचाय, गोत्र थौवांडस सामवेद गुरु सारस्वत ल्होड ओझा नरडूसारडाके (गुरु पारीक वरना जोसी खरड सारडाके) गुरु पोकरण व्यास,पोकरण फलौवीका केलकेवाकी मारवाड मेवाड ढूंढाड वालके गुरु सारस्वत ल्होड ओझा ।

खरड सारडाकी व्रत पहले सारस्वत ओझाके थी पारीक वरना जोसी दुर्गा पोताके तीर्थपै पुण्य था, सो अवो पारीकवर्ण जोसी दुर्गा पोताका खर्ड सारडाकी व्रत है, सारडा, केला, कानूंगो, पढवा, सेठ, डीडवाना, नरड, मूंजीवाल, चौधरी, दादल्य, सेठी, रामदेवरे, खरड; कौठारी, मलीका मांगडा।

काहला १२.

काहोजी पेढ कछावा, माता लीकासन, सती चामुंडा और फलोधी गोत्र कागायंस भैरव, लौन्याना-जी गुरु दायमा, काकडा व्यास मिसर । गुरुदायमा, काठा तिवाडी गुरुके थांवे ३ मिसर डीडवाना, नागौरका थांवा, कहाडा, चहाडका, वहाडका ३

गिरडा १३.

गागजी पेढ गहलोत, माता मात्री,गौतम गोत्र, सती मात्री, गुरु सारस्वत, ल्होड ओझा, ऋषि इष्ट । गिलडा गहलडा गीगल मूथा मोदी ।

जाजू १४.

जूजोजी पैंठ सांखला, माता फलौधी, गोत्र वालांस, गोरा भैरव गुरू गूजरगौड, जांगला उपाध्याय,. कांचाकौला, सरस्या गुरूका थांवा ५ कौलासरया, मेगासरया, थिरपाल ३ वीसल्या-इसमें कैलासराकी वृत हैं, जाजू समदाजी सिंगी तुलावरया, करया जजनौत्या ६

समदानियोंकी ख्यात ।

गांव जांगलूका, जाजूहेमजी हरिधवल हरिपा-महिपाल भामनसी, नरायन, माधोजी समदरजी पीढी आठवीं, समदरजीसे समदाणी वसे समदरजीतक जाजू कहलातेथे ।

गुरूकी ख्यात ।

गुरू जांगला उपाध्यायका यह पहले गूजर गौडजोशी पिसागन्या कहलाते थे; केसोजी जोसी सांखलाके गुरू थे, इधर जांगलोंके और उनके गनायतोंसे परस्पर वैर था, इसकारण भयभीत हो महा-दुखी रहतेथे, एक समय अपने गुरू केशोजीके पास जाकर कहा आप सामन्त हो और हम आपके शिष्य हैं आप हमारी रक्षा करो,केसोजी बोले हम तो सामन्त हैं उनके पास सौ १००शूरमा हैं, तो बरा-बरी कैसे हो इसकारण छलसे मारना चाहिये,यह विचार सांखलोंने गनायतोंके पास जाकर कहा,सांखलोंके यहां ३५० कुमारी कन्या हैं उनका स्वयंवर रचा है, तुम चलकर विवाह करलो, ऐसा कह बरात सजाय एक वाग़रमें उतार नीचे वारूद बिछाय सुरंग लगा दी । तब वह सब ३५० कुमारी कन्या प्रणकर बोलीं यह सब कर्म हमारे नामसे हुआ है. यह सब अब हमारे पतिही मरे हैं यह कह कर सती होगई, और केशोजीको शाप दिया, कि तुम्हारा कुटुम्ब वार २ होजाय, उनका तो यह शाप था पर केशो

जीको यह आशीर्वाद होकर लगा, उनका कुटुम्ब पृथक् पृथक् होकर वृद्धिको प्राप्त हुआ, उस दिनसे यह गूजर गौड पिसांग्यासे गूजर गौड जोशी जांगडा उपाध्याय बजे फिर किसी दूसरे कारणसे कांच्या बजे, केसोजीके बारह बेटे हुए जिनका थांबा कौलजीका कौलासरया, मेगाजीका मेगासरया, थीरौजीका थिरपाल्या, वीसल-जीका वीसरया यह भोजग हुए देवपूजा करै हैं।

वोहती १९.

वेहडसिंहजी नृषाणपेढ, माता गोत्र भिन्न २ गौकन्या गुरु दायमा नवाल आचारज, गोत्र गोकलास, माता गोकन, डालागुरु माता सामन गोत्र चन्द्रास वाचान नेस, डांगरा गुरु—माता सौढर, मल्लुनगुरु फौंकरना व्यास—नावबंधरानी गुरु दायमा पलौंड व्यास, गोत्र राजांस माता दधवन्त, लोहानरवरा गुरु गूजर गौड गुनारडा तिवाडी गोपीनाथजी काथांवा वालाकी वृत खांप २ खंड लोहा गुरु पुष्करण छागानी कौलानी माता विजासन (वाघलागुरु संखवाल पीपाडा पंद्दा, माता सौधल, ढौले सरीसती महिपाल पितर कालभैरव गोत्र काश्यप, मालीवान भीलडीका व्यास इसमेंसे आधी खांप मानजे गढूलवाले व्यासको दी, अब मालीवालेका भाग दोनों बराबर बांटते हैं, नरवरा मुरका डाला लोया लाटूरा यह पांच खांप हैं, माई, गुरु-गूजर गौड गौना रडका तिवाडी माता गोत्र चन्द्रहास (डांगरा गुरु—माता, नाणनेवी सती सौढर गोत्र कश्यप, । जागा व्याहतेने और कापडी पृथक् खांप बताते हैं) खावानी गुरुदायमा पलौंड माता गाहल चित्तौडसे बजते हैं,) धौल गुरु गूज गौड गुनारडा, माता डाहरी, गोत्र हरदास (दरगड गुरु खंडवाल डीडवाना,माता लोईसन) (नगनेचा गोत्र कपिलांस) धूणवाल गुरु—माता डाहरी फांफट गोत्र हरदास । (मुसानी गुरु—गोत्रका वरस माता—) (नांवघरानी गुरु—मातागाहल) लौया गुरु—मातासवन गोत्रचन्द्रास नर वरा गुरु—माता साडास, गोत्र नंदास (वीला, वरंडा विलावडा माता बंधर) वाघला, खींवजा, नींवजा, नाननेचा, डांगरा ५ भाई हैं, माता ोढल (राईवाल, रांदड और गांधी यह तीन भाई हैं) (लौगर्ड मरविया धनाडी रूड्या चरखा यह पांच हैं) खूमडा वासानी नूगजा मालीवाल सूम मल्लु दरगड ७ मालान्या, मल्लड धन्नड मुलतानी मसाना यह पांच भाई हैं) सतूरा मातासवासन गोत्र खींवस रांस गांव सतूरसे, (तुरका—माता सावसन-नौगवांसे) (नरेडा ३—मातालिकासन—रथड ४—गिदौडा माता दायन) धनाडी तापडा नागौरसें।

वाहेतियोंके नामका चक्र।

अमृतपाल	जंगी	धेनोत	वरोदा	मल्लु	राधाणी	लोहया
कलडा	झीतडा	धोल	वठंडा	मल्लड	राईवाल	लोया
खडलोहा	डाल्या	नरेड्या	वाहेती	मसाण्या	रांधण्ड	सतूरया
खावानी	डांगरा ढांगरा नथड		वाघानी	मालीवाल	रूया	सकराणी
खींवजा	तापडा	नरवरा	वाघला	मालण्या	रूह्या	स्यहरा
खूनडा	तुरक्या	नावधर	वासाणी	मुरक्या	रूवल्या	सेसानी
मरविया	तूमड्या	नाडागर	विलावड्या	मुलतानी	रूड्या	हमीरपुरा
गांधी	दरगड	नागनेचा	वील्या	मुसाण्या	लटस्या	....
गिंदोडिया	धनड	नीमजा	बुगडाल्या	मोराणी	लीकासण्या	....
गोकन्या	धनानी	नोगजा	वेडीवाल	....	लोईवाल	....
चरखा	धूनवाल	पेडचीवाल	वंवडोता	रामाणी	लोगरड	....

विदादा १६

वृद्धसिंहजी पेढ सोढा माता पाढाय गोत्रगजांस,(सती आसापुरा किललके) (सती खूबडविदादाके, गुरूपारी खटोड व्यास पंडितजी काथांत्रा माता खूवान गोत्र धौलांस, विदादा, किलछ, विदादाने डीडवाना छोडा और गांव विदियाद वसाया ।

विहाणि १७

विहारीजी पेढ पंवार, माता संचाय, गोत्र वालांस, ऋषि कौशिक, सामवेद प्रवर, पांच शाखा अनन्त, सती लाखेचा, गुरु दायमा, वौरला तिवाडी विहाणी, पीथाणी, लौह्या, पीपाणी, वछाणी, गूजरका[1] सराफ, बडहका, लालाणीं, डीडवानाका इन्दौर मऊकी छावनीमें हैं १० पसारी डीडवानाका ग्राम सिरसामे है ११ लोईको डीडवानामें १२ पापडामेडते १३ गोवन्या ।

वजाज १८

वीजौजी पेढ भाटी माता जाहल, गोत्र मन्साली, भैरव झींटया, गुरु दायमा तिवाडी कंठ गोत्र गौतमस् थांवा २ सतीका, अटलाजीका वेहडया गोत्रे वच्छस् मातापाढाय सतीपाटल (मरचूना गोत्र आवलेंस माता लौसल) किस्तूरया गुरुका गोत्र गौतमस् माता लीकासन सती सुवरना ।

वजाज रौल्या मरचून्या धारूका गठूका गौधा किस्तूरिया वेहडया रामावत चामर मवदूका गौदावत लखावत हाडौतीमें ।

कलंकी १९.

कालूजी पेढ कछावा माता चामुंडा, चमलाय और पाटाय गुरू पारीक खटोला व्यास थांवा २ पंडितजीका वावरजीका गोत्र कश्यप, कलतरी और मच्छर जोधपुरमें हैं ।

कासट २०

केवाटजी पेढ पडिहार, माता चानन और संचाय,गोत्र आत्रसांस सामवेद, गोरा भैरव, खौमटा माता, जांनर्ण गुरु गूजरगौड लोयमा उपाध्याय,डीडवानाके कितने एक वदरचनन पल्लीवाल भी कासटकी वृत्ति खाते हैं यह चार हैं-कासट, कटसुरा, सुरजान और खोगटा ।

कच्योल्या २१.

कंवरसिंहजी पेढ तुंवार, माता पाढाय सती डासनी गोत्र सीळांस (राय० गुरु पुष्करने छांगानी) रूप० गुरु जौपट व्यास (सौनफूल) गुरु काटया तिवाडी, कचौल्या, राय, सौन, फूल, रूप, ९

कालाणी २२

कलौजी पेढ कछवाहा, माता चामुंडा सती पाढाय, गोत्र धौलांस, व कालांस, सामवेद शाखा अनन्त चैलक्य भैरव, कालाणीसती स्वयंपूजित है, गुरु पारीक खटोडा व्यास थांवा २ पंडितजीका वावरजीका (कालाणी मुरक्या काल्या) कालाणी, कलंत्री मुरक्या माता गुरु गोत्र एक है जिसके कारण परस्पर भाई चारा मानते हैं, इसके सिवाय अन्य भेद नहीं । गुरूकी विगत, पारीक खटौड व्यास थांवा २ पंडितजी वावरजी, पंडितजीके थांवेवालों की वृत्त खांप सात हैं, वावरजीके थांवे वालोंकी पांच खांप हैं पंडितजीके थांवे वालोंकी शेष खांप पांच (भंडारीराय और विदादा) दो खांप घट हैं सीरमें हैं उनका वरावर वांट है वे पांच कल्हानी कलंत्री, मुरक्या, गटाणी और कुलध्या पांच हैं ।

---

१ मरचून्या हाडौतीमें.

झंवर २३

झांझराजी पेढ यादव, माता गोत्र भिन्न २ गुरुदायमा आसोपा तिवाडी व्यास-खरड खूंचा, गुर पारीक अजमेरा जोशी (गायलवाल) माता गायल गोत्र झूंनांस नागल खरड माता सुद्रासन गोत्र मानत खूंच्यामाता गोत्र मंडवांस झालस्या-गोत्र मौवनास, गाहल वाल नागला नौसरया पौसरया खरड खूंच्या खीवंच्या ठींगा मुवाणी मौवण्यां मैवाणी जालरिया मनता डाणि चौधरी सौमाणी झंव (सौमाणी झंवर साख ९ टाले)

खरडझंवरोंकी ख्याति।

मरुधराके गांव आसोपमें नरड नौसरजी पोसरजी दो भाई थे, उसमें छोटे भाई पौसरजीने विदेशमें जाकर बहुत द्रव्य एकत्रित किया उसे नौसरजीके पास भेजकर लिख दिया कि इसको शुभकार्यमें व्यय कर दो, उन्होंने छोटे भाईके कथनानुसार नौसर सागर नामक तालाव बनवाया, यह बात सुनकर पोसरजीकी बहूने कहा कि कमाई तो मेरा पति करै, और उडावैं जेठजी, और अपना नाम प्रसिद्ध कर बडे सेठजी कहावैं, यह वचन सुनकर नौसरजीने इसको जुदी करके सरोवरके बीचमें पाल रखाकर नौसर सागर और पोसर सागर नाम रखदिया, जब कुछ दिनोंमें पोसरजी परदेशसे आये और सरोवरके बीचमें पाल देख रुष्ट होकर पूछनेलगे, यह क्या बात है, अपनी स्त्रीका अपराध समझकर उसे उसके पीहर सांभर ग्राममें भेजदिया, वह गर्भवती थी वहीं मायकेमें उसके पुत्र हुआ, और उसका नाम पर्वत रक्खा, जब गुरु आसोपा तिवाडी पोसरजीके पास जाकर पुत्रजन्मका रुपया १ मांगने लगे, तब इन्होंने कहा हमने उस स्त्रीको त्याग दिया है, वह हमारे योग्य नहीं है हम उसका रुपया न देंगे, यह सुनकर गुरू असोपा तिवाडीने भी उस पुत्रको त्यागकर उसकी वृत्ति छोड दी, वह लडका ग्राम सांभर अपनी ननसालमें पला और ननसालके गुरु पारीक अजमेरा जोशीको पूजने लगा, गुरुकृपासे वह बडा प्रतापी हुआ, दिल्लीके बादशाहका कामैती बना और (खड) घासकी मदत दी तबसे खरड झंवर नाम पडा, फिर चुनेंकी मुट्ठी उगाई, तबसे खुडंच्या कहाये और पर्वतसर नाम गांव बसाया।

कवरा २४.

कुंभोजी पेढ गहलौत माता सुसमाद, गोत्र अचित्रांस गुरु संखवाल, माडम्यां पालड्या आठारया खखांपके गुरुका गोत्र वशिष्ट, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा, तीन प्रवर फलौदी देवी, पालड्या गोत्र त्रिजैमान काल्ह पितर, देवगांव कावरा पालड्या चित्तौरसे चलकर मांगरास गांव टूकने बसाया। कावर माडम्या, पालडया, अठारया, मनत, सिंगी धौल कौठारी।

डाड २५.

डूंगोजी पेढ, दहिया माता मद्रकाली, सतीलीलासन, गोत्र आमरांस; झीतरो पितृकालभैरव, मंडोवरमें साम वेद, गुरु दायमा, नवाल आचार्य थे, पड्या माता वंघर काली सती चन्द्रकाली गोत्र लखासन डाड, थेपड्या २।

डागा २६.

डूंगाजी पेढ पंवार, माता संचाय, व वंघर व दववंत, गोत्र राजहंस, गुरु पारीक, गौलवाल व्यास द्वामणका मजीठ्या गुरु सारस्वत बढ ओझा, डागा केसावत विठाणी दरावस्या मुकनाणी मंडिया डूंच कोन्हाणी गौगणी न्हार मजीठ्या मौड (मेवाड मरोठमें) करनाणी भोजाणी दमाणी मेण्या मावाणी माडा।

गटाणी २७.

गटूजी पेढ गहलौत माता चामुण्डा, गोत्र ढालांस, ए० पडाइस, गुरु पारीक खटौड व्यास,माता पाण्डूखां माडतासे तीन कोस पश्चिम । गटाणी, मल्लक टोपीवाला साकरिया संकर मिलक । ९ ।

राठी २८.

रिडमलजी पेढ पंवार, माता संचाय, ओसिया स्थान, पीतवर्ण, गोत्र कपिलास, साम वेद, गणपति विनायक,गढरण थंभोर,भैरव बांदारापुरजी,नागौर शिववाडीमें गढके दक्षिण पश्चिमकोणमें,आदगुरु पल्लीवाल, गुरु पुष्करना, छांगाणी थांभा ४ की विगत१छागार्णी कौलाणी गडरिया दरासरी ४ । सातलाणी ।

श्रीचंदाणी	साहताणी	सुधाणी	कलाणी	गवलाणी	गोयंदाणी
चतुरभुजाणी	साल्हाणी	साहाणी	सुखदेवाणी	क्रमसाणी	गिरधराणी
गोपालाणी	चापसाणी	सावताणी	सालगाणी	सुजाणी	कौकाणी
गागाणी	गुलवाणी	जटाणी	सांगाणी	समाणी	सिंहाणी
खेताणी	गेगाणी	चौथाणी	जसवाणी	सादाणी	समाणी
करनाणी	खेमाणी	गोमलाणी	चौखाणी	जेसाणी	जालाणी
नेताणी	महराठाकुराणी	हरकाणी	नेतसौत	कहरा	सहाणी
जिन्दाणी	नापाणी	मथरार्णा	मुहलाणी		चतुरभुजौत
महरा	मोदी	जिवाणी	नाटाणी	मदवाणी	लखाणी
मदसुदनौत	वाजरावजरा	गांदी	जौधाणी	नानगार्णी	माघाणी
लखवाणी	धगडावत	त्रजारो	ईंदू	तहनाणी	पदाणी
मालाणी	लालाणी	मानावत	मीचरा		सराप
तेजाणी	पीपाणी	महेसराणी	दूलाणी	खेतावत	वगरा
(जेसलमेरमें)	साहा	तुलछाणी	वहगटाणी	मुलाणी	लुहलाणी
दूदावत	लखासरया	सिरचा	तिरथाणी	वेखटाणी	मुसाणी
देदावत	वरसलपुरया	कल्हा	दम्मवाणी	वनाणी	मुलताणी
श्रीचन्दौत	पूरावत	कौठारी	व्रजवासी	दसवाणी	
वीनाणी	मूंजाणी	करमचंदौत	टोलावत	चौधरी	सांवलका
देसवाणी	वसुदेवाणी	मींभांणी	कपूरचन्दौत	कल्लावत	रूडया
खटमल	देवराजाणी	वाधाणी	अरजनाणी	रामचन्दौत	मल्लावत
राहूडया	वापल	देवगटाणी	त्रिसताणी	आफाणी	लालचन्दौत
मौलावत	मडिया	वापेचा	दुढाणी	वछाणी	ऊधाणी
प्रतिचन्दौत	रामावत	लेखणिया	मराठी	द्वारकाणी	माकराणी
रंधाणीं	मानसिंगौत	लखावत	फांफट	करमा	धनाणी
भौलाणी	रतनाणी	फतेसिंगौत	पिचलाती	वेकट	राठी
घामाणी	मैजाणी	राधाणी अखेसिंगौत	रामसिंगौत	भागचंदौतमूथा	भइया
नथाणी	ठाकुराणी	रूपाणी	करमसौत	डौडमूथा	सूणा

विडहाला २९.

वेहडसिंहजी पेढपवार, माता संचाय, गोत्र वालास, ऋषि पिप्पलान, गुरु पुष्करणा, शेखावाटीमें गुरु आदि गौड वासौत्यागोत्र सांडास (वडालिया गुरु शंखवाल मरवरिया तिवाडी गोत्र झत्ररांस माता फलौधी विडहला चूस्या गांठा धूवरया मरूरया गौरया वडालिया)

दरक ३०.

दुरगसिंहजी खाची पेढ, माता मूसा गोत्र हरिदास, यजुर्वेद पंचप्रवर माध्यन्दिनी शाखा, क्षत्रपाल सौनेवोर्जी कमलानाम लक्ष्मी वालो पितर, गणपति विनायक, विष्णुनाम सारंगपाणी (दरकांके गुरु संखवाल हलद्या उपाध्याय जायलवाल) (हलद्याके) गुरु संखवाल हलद्याजोसी, मेवाडमें हीनागाम मांगरास पोटला पास भैरों, मोतीराम खुसाल नन्दराम आदि हैं, वह हलदा जोसी नामसे वाजते हैं, दरकामेंसे हलदा हलदीका व्यापर करनेसे वाजे, हल्याके घर विशेषकर हाडौतीमें हैं, वारां मांगरौल अणते गेते वूंदी पलायते वंदोरी जिला कोटामें हैं। वे दरक हलद्या मरचून्या कुठारी ग्राम राहयामें चौधरी मेडतामें हैं।

तोसणी वाल ३१

तेजसी पेढ चहुआन, माता खूंखर साती वांवली, गोत्र कौशिक, ऋषि पिप्पलान सांडो पितर कालभैरव पितर हमदमलाला वडा गाम मालवेमें अमझरा स्थान सतीगंगा आदूमाता भवानी, गोत्र वशिष्ठ, चूडाज ऋषि दगामाता, संचाय, (गुरुदायमा डीडवाचा तिवाडी गुरूकी माता दधवन्त) तोसणीवाल नागौरी, नेमर, मिज्याजी, मोदी, मूंजी, डामा, डामडी, लम्बू, सिंगी, दास, दगा झाल्स्या, जेनास्वा, मूंजी, माकरौद्या, कोठारी १७.

ग्राम तौसीणमें तौसणीवाल तौसा साहथा उसने सम्वत् ११३९ में कन्याका विवाह किया उसके समयसे चित्तौरसे स्त्रियोंका वरातमें जाना वन्द हुआ, उसकी वरातन स्त्रियां आईं वहां ७ स्त्रियोंने हठ किया कि पहली व्याहीके कंधेपर पगधरके फिर वधू रथसे नीचे उतरै, तोसा साहने कंधेपर पग नहीं धराया, और दसलाख मुहरका ढेर करादिया तव व्याहण (वधू) उसपर पगधरकर नीचे उतरी पीछे सव पंचोंको वुलाकर साहने स्त्रियोंके स्वभावकी वात कहकर स्त्रियोंका वरातमें जाना बंद करादिया।

अजमेरा ३२.

अजोजी पेढ चहुआंण; माता नौसल, गोत्र मानांस, ऋषि पिप्पलांस (गुरु पारीक, खटौड व्यास-) कुलध्या माता समराय गुरु पारीक खटौड व्यास, पंडितजीका १ (विनायक्य गुरु पारीकअजमेरा जोशी, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा, पंचप्रवर, कोंषा भैरव, शिव दुग्धेश्वर, गणपति ढुण्ढिराज) गोत्र वच्छांस सती सगत कंवार देवी गणपत (नौसरया गुरुदायमा गौठे चामाता नौवर) पौसरया, खरडखूंच्या यह कंवर है माता सुद्रासन, गोत्र पैण्यास अजमेरा कौढया, कुलध्या, कूकडया, राय रणदीता, धौल धौले- सरया, भगत, भगूत्या, डवकौड्या, डीडा, मानक्या, विन्यायक्या, नौसरया, पौसरय, खरड, खूंच्या पढावा।

ख्यातअजमेरा।

विनायक्या अजमेरमें पुहनाका, नाडा, वच्छका थांवेवाले जागा नहीं मांगते कारण कि सरवाडमें दो जागोंने प्राण त्यागन करदिया था, उन जागोंकी स्त्रियें सती हुई, जब यजमानने जागाजीको अपना पुत्र दत्तक देकर जागेका वंश रक्खा, तबसे इस थांबेका जागा मांगना छूट गया।

भंडारी ३३.

भंडलसिंहजी पेढ कछवाहा, माता नागनेचा, गोत्र कौशिक, गुरु पारीक, खडवड व्यास, (रायगुरु पण्डितजीका थांवा) गौकन्या गुरु गौड, तिवाडी माता गौकुल, (मिरच्या, लाठी, गुरुपारीका वामण्या, व्यास) माता लौहन भंडारी, भकावा, भूक्या, काला, गोरा, गोकन्या, गुलचक, मात्या लाठी राय, मिरच्या, नरेसण्या, नेनसर १३।

छापरवाल ३४.

छाजपाली पेढ सांखला, माता बंधर, गोत्र कौशिक, यजुर्वेद सती भद्रकाली (गुरुदायमा तिवाडी डीडवाना पौठ्या, छापरवार १ दुजरा दुसाज २)।

भरड ३५.

भैंरूजी पेढ भाटी, माता वीसल सतीमूंदल, गोत्र मटयास, सामवेद शाखा अनन्त प्रवर ३ (गुरुपल्लीवाल धामट गोत्र मुद्गल माती वीसल) दोहा-पनरासौ पंडोतरे, सुदसावण तिथि तेरा भाटीसूंभदड हुआ, जैसा जैसलमेर।

भटड	केला	चलवाणी	गांधी	मूहणदासो
सूंघा	कहरा	विच्छू	पीथाणी	महरा
लद्दड	वीसाणी	रामाणी	पुंगल्या, मा विरवन्त	
हलद	वीसा	जेठा	मल्लड्	

भूतडा ३६.

भूरसिंहजी पेढ सांखला माता खीवज, गोत्र अल्लसांस गुरु सारस्वत वदर १ पल्लीवाल चंनण, गुरु आवै सो पावै दोनों आवैं तो बांट बराबर दिया जाय, भूतडा, चांच्या, देवगटाणी, देवदत्ताणी चौधरी, जोधपुरमें।

वंग ३७.

वाघसिंहजी पेढ पडिहार, माता खांडले, सती कौठारी, धारादे महमल पितर, गोत्र सौढांस, ऋषि वालांस माध्यन्दिनी शाखा, रहणका थांवा, माता कल्याणी पूजी जाती है, मूंडवाके थांवेवाले माता खांड लको पूजते हैं, गुरु गूजरगौड, गौनारड्या तिवाडी व्यास गोत्र वच्छांस, वंग, छीतरका, सांवलका सौभावत, मौटावत, पारावत, पसारी मूंडवे, पटवारी मूंडवे।

अटल ३८.

अटलसिंहजी पेढ गहलौत माता संचाय, सती मात्री, गोत्र गौतम प्रथम गुरु गूजर गौड (पीछे पौकरण वट्ठु) जिसको इच्छाहो वही गुरु मानलेते हैं, कुछ प्रमाण नहीं है, मरोठिया गुरु गूजरगौड पंचोली वीजारण्यां मेवाडदेशमें चितौड गढके निकट है, गांव धनेतमें गुरु यजमान दोनों हैं। अटल, गौठ, णीवाल, मरौठिया।

ईनाणी ३९.

इन्द्रसिंहजी पेढ, ईंदा माता जैसल, गोत्र ससांस जैसलांस नगवाडया, माता मात्री, शाखा तैत्तिरीय कृष्णयजुर्वेद प्रवर ३ गुरु शंखवाल, गरवरिया तिवाडी। ईनाणी, नगवाडया २।

भुराड्या ४०.

भूरिसिंहजी पेढ चौहान, माता मुनधनी, गोत्र अचित्र, गुरुदायमा, नवाल आचार्य गुरुका गोत्र साढैलांस । भुराड्या, कौठारी, बंबू, भूंगड्या ।

भन्साली ४१.

भाउसिंहजी पेढ, वांस माता चामुण्डा, सती डाहरी गोत्र भन्साली भैरव लावस्यो १ सोन्याणों २ पित्रमोला गुरुदायमा, नवाल आचार्य भन्सालि १

लढा ४२.

लोहडसिंहजी पेढ, पंवार माता संचाय, सतीवंचर गोत्रसिलांस यजुर्वेद रामउपासना । (गुरु पारीक, गोलव्याल व्यास) वृत १ लढार लौगरड २ डांगा ३ । लढा, मौदी मूंजी, अठासंण्या, भाकरोद्या, हींग्या, दगड्या, दागड्या,धाराणी, झौला, चौधरी ।

मालपाणी ४३.

मालदेवजी पेढ भाटी, माता सांगल, गोत्र भटयास, गुरु पुष्करणा, छागार्णी कौलाणी (मालपाणी १ मूथा २ मौदी, जूहरी छलाणी. लौलण, भूरा यह नागौरमें हैं)

सिकची ४४.

संकरजी पेठ पंवार, माता संचाय, सती भात्रज गोत्र कश्यप, सिकची गुरु, पुष्करणा जोशी चोलटिया गोत्र पाराशर माता चामुण्डा सीलार गुरु बूजर गौड, उपाध्याय डीडवाना आचार्य गोत्र भारद्वाज । (सिकची, सीलार, सीलणी ३) सिकचियोंके रहनेके ग्राम हरदेसर, मोलेसर जगरामसर, दावदेसर, गरबदेसर, वरजांगसर, हरियासर, रूपालेसर, कीतऊसर, मग्गू , आसौफ, मणकपुर, धूंव्याडी, मूंडवे, काल्ह; कैकींद;मूरासौ, नाडोलाई भादल, रावड्यावास, डेगाणा उदैरामसर, मारौड, डीडधाणा, भीलाडा .राहण पालडीखोजी जीकी घडसर सहर ।

लाहोटी ४५.

लाभदेजे पेढलुँवार, माता चामुण्डा, गोत्र कागांस प्रवर ३ शाखा तैत्तिरीय; विसहर-गोत्र फौफडांस माता गाहल, गुरु सारस्वत; वडओझा, केलवाड्या, लाहौटी १ विसहर २ क्या ३, काहा ४.

दोहा- करणअंगसों वालचंद, सुत सूजा सुभियान ।
डाहौटी प्रथमादमें, दाददा ददई वान ।

गदइया ४६.

गोरोजी पेढ, गोयल माता, वंधर गोत्र गौरांस, यजुर्वेद, प्रवर ३, प्रथम गुरुदायमा, पढवाल ओझा गाडरमालाजीका थांवाकहा, अब सारस्वत गुरु है ल्हौड ओझा, शाखा अनन्त (सामवेद) गदइया १ चौधरी सोजतमें २ हींगरड ।

गगराणी ४७.

गंगासिंहजी पेढ, गहलौत, माता पाठाय, गोत्र कश्यप, (गुरु खंडेलवाल, नवाल जोशी, वीकनवाल दमागणका माता डाहरी,डौड्या १ बावरेच्या २)(गुरु सारस्वत ल्होड ओझा) डाडैया माता वागलेश्वरी, गोत्र आम्रांस,(वावरेच्या डौड्यामें सूनी कल्या माता वागलौंद गोत्र कपिलास) गगराणी गगड वावरेच्या डौड्या काला ५ ।

खटवड ४८.

खडगलसिंहजी पेढ सांखला माता नौसल्या, गोत्र मुंगास खटवड माता, पाढाय गोत्र निर्मलांस गुरुदायमा, खटौड व्यास, थांवा ४(गुरुदायमा काकडा मिसर व्यास) (काल्या गुरुदाय काटया तिवाडी व्यास) (मालाणी काहाल्या पहाडका गुरु दायमा काकडा व्यास, डीडवाना तथा नागौरका थांवा) (माला चाहडका तथा काहल्या गुरु दायमा काकडा नींवडीका थांवा) (मालासरचारायपुरसे गुरु खटवड व्यास कुलधरजीका थांवा, माता फलौधी गोत्र कालांस (खटवड) माल्हाणी माता, फलौधी पाढाय, गोत्र वच्छस, करवांस (माला माता पाडल गोत्र करत्रांस) (टुवाणी माता फलौधी गोत्र अविदित) (काल्या माता नानण सती लीकासन्) (लौसल्या माता, फलौधी गोत्र मूंगास, मौलसल्या माता पाढाय गोत्र नम्रांस ।

खटवड तौडा लोथा लौसल्या नरेसण्या भूतिया मालाणी मूछाल खड गांवी सराप भूरिया मौलसरया टुवाणी काल्या गहलडा पहाडका माला ।

लखोट्या ४९.

लोकासिंहजी पेढ पंवार मातासंचाय, सतीलाखेंचा गोत्र फाफडांस, भेरू काडम देसं, पितर वाल्क्यो गुरु सारस्वत, वडओझा, गोत्र रराइंस, १ लखोटया २ जुंगरांवा ३ भइया ४ मौठडया ५ मौनाणा ६ परसराम ।

असावा ५०.

आसपालजी पेढ, दहियामाता, आसावरी, गोत्रपचास, वालांस, नागमाता दूदल गुरुसंखवाल, नागला, तिवाडी, माता गुरुकी आसावरी, ऋषि दधसुर, आसाइस मंडौवरा, गुरु संखवाल मंडौवरा व्यास गोत्र खलांस गुरुका गोत्र. भारद्वाज यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखा, प्रवर ५ गुरुकी माता दूदेसर, असावा व्यपती नाग मंडोवरा ।

चेचाण ५१.

चन्द्रसेनजी पेठ दहिया, माता दधवंत, सती पाढाय व पाडल गोत्र सीलांस ऋषि अरडांस, पाटला भैरव, गुरु दायमा दाण्या व्यास आचार्य-रायके कचोल्याके गुरु दायमा काढया, तिवाडी, कचोल्या माता, पाढाय सती पाडल गोत्र सिलांस, चेचाणी दूदाणी कचोल्या, कलक्या, राय, खड ।

मानू धन्या ५२.

मोहनसिंहजी पेढ मोहिल माता मानूधनी, सती जाखन, गोत्र जैसलानी कपिल ऋषि (. गुरु दायमा जौपट व्यास. मानू धनाके) मानूधन्या गुरु खंडेलवाल, गोत्र पौलांस, कपिल ऋषि, माता सुरल्या गुरुदायमा जौपट व्यास , मानूधनाकी वृत्ति तो खंडेलवालोंको दी, शेष सात खांप दायमा जौपट व्यासकी रहीं, यथा मानूधन्या, मानूधना, चौधरी, स्याहर, वरडचोल्या सूम, सिंगी, हीरा ८।

मूधड़ा ५३.

मावोसिंहजी पेढ मोहिल, माता मूंदल, गोत्र गोवांस, गुरु सारस्वत, वड ओझा, केलवाड्या मेरू रेण्या, गांव रेणकाथावाका गुरुका गोत्र भारद्वाज, माता फलौधी थांवा केलवाडया रेण्या ठिलीयाल भटनेरा हिरण्या ।

१ मूधडा	१० भौराणी	१९ अटरेण्या
२ मोराणी	११ राजमहूता	२० प्रहलादाणी
३ मोदी	१२ गौराणी	२१ पसारी
४ माहलणा	१३ उलाणी	२२ छोटापसारी
५ ससाणी	१४ डौड्या	२३ कौठारी
६ सांभण्या	१५ ढेड्या	२४ वारीका
७ सकराणी	१६ चौधरी	२५ वावरी
८ भाकराणी	१७ चमड्या	२६ वलंडिया
९ भराणी	१८ चमक्या	२७ दम्मलका

चौखडा ५४.

चौखसिंहजी पेढ सींदल माता जीवण,गोत्र चन्द्रांस पितर जाली जितस्यो भैरव यजुवद प्रवर ३ सती झींण गणपति गणाधीश, गुरु गूजरगौड, गोनरड तिवाडी (चौखडा १) जैराम साहने अनेक यज्ञ और धर्मके काम किये, चौख नगरमें निवास किया कीर्ति जगतमें फैली ।

चण्डक ५५.

चोपसिंहजी पेढ चहुआन्, माता आसापूरा संचाय, गोत्र चन्द्रांस, सामवेद, प्रवर ३ (तैत्तिरीय शाखा) वा अनन्तशाखा (पूंगल्या माता विस्वत गोत्र कछवाइंस) पूंगलिया माता देल गोत्र वत्स पितरं चानणेश्वर (गुरु पल्लीवाल धामट) गुरुका गोत्र मुद्गल ।

१ चंडक	७ प्रगाणी	१३ भाह्या
२ गौराणी	८ प्रहलादाणी	१४ सागर
३ मुलतानी	९ पूंगलिया	१५ सांवल
४ मुकनाणी	१० पटवा	१६ सुखाणी
५ मीमाणी	११ वीझाणी	१७ सुन्दराणी
६ माधाणी	१२ भीपाणी	१८ जोगढ

बलदवा ५६.

वाघोजी पेढ पंवार, माता हिंगलाद, सती गांगेय गोत्र बालांस, सामवेद (वा यजु०) प्रवर ३ वाजसनेयी शाखा, लटराभैरव, वलदला माता, गांगलेस पूजै, गुरु शंखवाल पंडित (वेडीवाल गुरु गूजर गौड, डीडवाना उपाध्याय आचार्य गोत्र भारद्वाज, माता सीदल शाखा माध्यन्दिनी) वल्दवा, पडवार, पेडीवाल, रावदाणी कलाणी वेडीवील ६ ।

वालदी ५७.

वालोजी पेढ वडगूजर माता गारस, गोत्र लौरस, सामवेद पित्रा गांगो, गोत्र वच्छस्, चन्द्रांस् मातालैसल वालौसी गुरु दायमा वैरढया व्यास तिवाडी कौकाणी (चन्दवान्या श्रीधाराके वृत्त नहीं वालदी १)

बूब ५८.

बाघोजी पेढ पंवार माता भद्रकाली गोत्रमूसाईस गुरु सारस्वत ल्हौड ओझा अजमेरका थांवा रोब जोधपुर वाले बटाते हैं, यह जोधपुरका गढमें चामुंडा माताकी पूजा करते हैं, इनकी खांपमें बांट नहीं है, बूब बैरव्या ।

बांगरड ५९.

बावसिंहजी पेढ, बंडागूजर माता संचाय, सती धाडाय गोत्र चूडांस, गुरु सारस्वत, खुवाल जोसी गोत्र चन्द्रांस गुरु शंखवाल बांगरडा जोशी मंडौवरा तापड्यागांव डीडवानामें तापडका रोजगार करते हैं, उसी नामसे बजते हैं, बांगरड, तापड्या २.

मंडावेरा ६०.

मांडोजी पेढ, पडिहार माता धौलेश्वरी रुई गोत्र वच्छांस, धौलेसरया माता धौलेश्वरी, गोरामैरव यजुर्वेद मंडोवरकी माता रुई हैं, जिसकारण वे नीचे रुई नहीं बिछाते हैं, आदि गुरु शंखवाल, मंडोवरासे वृत्त छोडदी, गोत्र भारद्वाज, शाखा माध्यन्दिनी, यजुर्वेद, प्रवर ५ माता दूदेसर, अंत गुरु दायमा, गदइया व्यास, मंडौवरा १ मातेमरया २ धौले ३ सरया ४ ।

तोतला ६१.

तोलोजी पेढ चहुआन, माता खूंखर, गोत्र कपिल, यजुर्वेद, शाखा माध्यन्दिनी, ऋषि कपिल,मारीच पितर जालौ, साम पितर, जालौ, सामरनराणाके बीचमें स्थान है, गुरू गूजर गौड, गोना खडात्रिवाडी, तोतला, बडहका, नानला पटवारी मिलाडेमें है, सांभरन राणाके बीचमें खोगटा और तोतलकी आमने सामने बरात आनई, परस्पर मार्ग मिलनेके लिये युद्ध हुआ, जिसमें बरके सिवाय तोतलाकी बरात सब मारी गई, तब उसने दिल्ली जाकर बादशाहसे सहायता लेकर खोंगटासे वैर लिया, फिर जालाजी सांभर नराणके बीचमें खडा गड गया, यह जालाजी पीर नामसे प्रसिद्ध हो पूजे जाते हैं,अब तोतला और खोखताकी परस्पर यह रीति है कि जहां तोतलाजीमें यदि खोगटा परसे वा समीप पंगतमें जीमनेको बैठ-जाय तो तोतलाको वमन होजाती है, इनका परस्पर सगापन भी करना निषिद्ध है, ऐसा करनेसे तिष्ठते नहीं, कारण कि हाडवैर है ।

आगीवाल ६२.

आगोजी पेढ,भाटी माता भैंसाद, गोत्र चन्द्रांस; सामवेद (तैत्तिरीय शाखा) प्रवर ३ गुरू शंखवाल, आगीवाल ।

आगसूंड ६३.

अगरोजी पेढ तुंवर, माता जाखन, गोत्र कश्यप, गुरु दायमा, डीडवाना तिवाडी रामजीका थांवा ३ वृत्त (पाण्डया १ पौंठ्या २ रामाजीका) पाण्डया पौंठयाके वृत्त नहीं, आगसूड १ ।

परताणी ६४.

पूरोजी पेढपंवार माता संचाय, गोत्र कश्यप; गुरु पौकरणा, विसा प्रोत, (पारानोग्याके वृत्त नहीं परताणी पूदपाल्या दानडया) ।

नावंधर ६५.

नवनीतसिंहजी पेढ निरवाण माता धरअल गोत्र वुग्दालभ्य अथर्ववेद नंदरांस ऋषि गुरुपल्लीवाल धामट, गुरका गोत्र मुद्गल ।

नागेंधर	धाराणी	मौडाणी	पनाणी	गांधी ।
धराणी	धरिण	मीमाणी	स्याहरा	
धीराणी	दुढाणो	धनाणी	राय	

नवाल ६६.

नाननसिंहजी नृवाण पेढ माता नवासन सती जाखल गोत्र नानणांस गोरा भैरव (नवाल गुरु दायमा नवाला आचारज) खुवाल० गुरु गूजरगौड, तिवाडी माता, खूंखर, जाखड भैरव, चैलक्यो, वालक्यो पिता—(नवाल खुंवाल ३ मालीवाल)

फलौड ६७.

पालोजी पेढ पडिहार; माता चामुण्डा, गोत्र साण्डास, गुरु गूजर गौड, आचार्य डीडवाना (पलौड लौसल्या गुरु दायमा पलौड व्यास गोरा भैरव) (चितलंग्या गुरु दायमा; पलौड आचार्य गोत्र कौशिक) (रावल्या गुरु दायमा कूम्याजोसी) (मकड गुरुपारीक तिवाडी—) (जेथल्या गुरु गूजरगौड आचार्य डीडवाना १९टी)

(खांप)	(माता)	(खांप)	(माता)	(खांप)	(माता)
पलौड,	नौसल	चावंडया	चामुंडा	फौगीवाल	नौसल
चितलंग्या	नौसल	कांकरया	सौढण	फौफल्या	०
रावल्या	नौसल	मकड	०	जैथल्या	दौस
लौसल्या	नौरुल	केरुा	०	वापडौता	पंचायम
जुजेसरया	जूजेसरी	सेठी	दायमा	डौडया	पंचायम
गहलडा	जूजेसरी	चापटा	सौढणा	मूंजीवाल	०
पर्चास्या	जूजेसरी	मौडा	०	०	०

तापडया ६८.

तेजपाल पेढ चहुवाण, माता आसापूरा, सती समराई, गोत्र वीपलान मूगंड, गुरु दायमा चौलख्या पुरोहित, गोत्र प्रौवणांस, माता संचाय तापड्या गुरु सारस्वत वदर (पल्लीवाल चनण) पुरोहितोंमें जो आवै सो नेग पावै, दोनों आवैं तो बराबर पावैं खांपनाम तापड्या, छाछया खांप दो हैं (तापडया मूंमरडं छाछ्या २)

मिणियार ६९.

मौवणर्जा पेढ मौहिल माता दायम, कौशिक गोत्र, पसारी पीपाडमें हैं, गुरुदायमा तिवाडी पौठ्या १ मिणियार २ पसारी ३ वरधू ४ माझ्या ५ खर नाल्या ६ मनक्या ।

धूत ७०.

धूरसिंहजी पेढ, धांधलमाता, लीकासण, गोत्र फाफणांस, यजुर्वेद, चीथरयोभैरव, जालौपितर, गुरु सारस्वत, गुडगीला आचार्य ।

धुपड ७१.

धीरसिंहजी पेढ, धांवल माता फलौंधी, गोत्र शीर्षस्, वालक्यौ भैरव गुरु दायमा, ईदाण्या जोसी, पितर परवौ १ धूपड २ धूत ३ ।

मोदानी ७२.

माघोजी पेड मोहिल, माता चामुंडा, वंधरजोखण, गोत्र सांडास, महनाणा गुरु सारस्वत, वडओझा, गुरु दायमा, पलौड व्यास तिवाडी (इष्टी मेरता नगरमें) (मंडिया नागौरमें) थांवा छापर १ रौडू २ लाडणू ३ सांतका इसमें सांतेके थांवे वालोंकी वृत्त नहीं, मोदी १ वंव मातादाखन २ महदाना माता वंधर ३ महनाणा ४।

१ पौरवार ७३.

पूरोजी पेढपडिहार माता मात्री (मातर) गोत्र नानांस, गुरु सारस्वत, त्रिगुणायत, माता भद्रकाली, सती मात्री १ पौखार २ परवाड ३ दागडा, मैरोंदामें, मेंडतापरगनेमें ख्यात, दागडया लढामें १ परताण्यामें २ पौरेवालमें ३ खांप हैं।

२ देवपुरा ७४.

दीपोजी पेढ, दाहिया कुसुंवीवाल, अश्वपति वंश, माता पाढाय, गोत्र पारद, गुरु दायमा, नवल आचार्य, आदि गुरुने वृत्त छोडदी, अब गुरु पारीक ब्राह्मण हैं, कौशिक व्यास, पुरोहित आमलीवाला, धाणपीका थांवा है। देवपुरा कुसुंवीवाल। यह वडे ठाठवाटसे कन्नौजको छोडकर दिल्लीमें आनकर बसे, दहियावंशमें कुसुंभीवाल हुये, इनके साथ भारी भीड थी, यह पृथ्वीराजके समीप आनकर रहे, उसी समय राजवाई पीथलका विवाह हुआ, रावल समरसी व्याहने आये और दहेजमें दीपकुलभान दीवानको मांगा, तब दीवानके मिलनेसे अनेक म्लेच्छोंको नष्ट किया, देवपुर जीतनेसे इनकी देवपुरा छाप हुई, और देश २ में यश छागया, दीपाजीके वेटे सिंहजीने रावलसमरसीको दिया। (पाटकंवर अरु कुम्भ-गढ धराखजानावींग चार रतन (चित्रकोटका समप्यातोनेसाग) इस प्रकार कुसुम्भी वालसे देवपुरा कहाये।

३ मंत्री ७५.

मानोजी पंवार पेढ, मातासंचाय, जात ओसवाल, चौपटा तिनमेंसे धरम पालजी चौपडा मंत्री हुआ, गोत्र कचलांथ सामवेद गुरु सारस्वत वड ओझा (मंत्री १)

संवत् ४२५ माह शुक्ल पंचमीको साह चौथजी राठीने नगर औसियामें वैश्य यज्ञ महोत्सव किया इस समय ८४ ग्रामके महेश्वरी वुलाये गये, और अपने मित्र ओसवालजातीय धर्मपालको वुलाया, यह मरुस्थल चोपडा ग्रामके रहनेवाले थे; उन्होंने वैश्योंको वडी उज्ज्वल क्रियासे भोजन करता देखा, तव प्रसन्न होकर उन्होंने राठीजीसे कहा हमको भी माहेश्वरी करलो, तव इन्होंने धर्म पालको पंचोंसे सम्मति ले माहेश्वरी वना लिया, और जैनधर्म छुडाकर वैष्णवधर्म धारण कराया, और इनको मंत्रिपद दिया. तवसे मंत्रिगोत्र प्रचलित हुआ, इनके रहनेका गांव मेरता पारेवा, मूण्डाड भकरी सावर आदि है, गांव सावर संकेतावतोंमें दोसती हुई, लाडमदे कुमारी थी वर तोरणके नीचे आकर स्वर्गवासी हुआ उसके साथ सती हुई, दूसरी पाटमदे सती हुई। यह दो पूजी जाती हैं।

४ नौलखा ७६.

नौलसिंहजी जादव पेढ, माताशढाय, गोत्र कश्यप (आदि गुरु दायमा, तिवाडी कंठ) कितने एक पारीक गुरुको पूजते हैं, गुरु गूजर गौड, वीरका डीडवाना १ नौलका २ नौगजा।

दूसरी ख्यातें।

१ सारडा अपने नानाके यहां मालदेके गोदी गया, वह मूल सारडा कहाया और सगाईमें पांच साख हुई।

२ वाहेती वाघला अपने नाना माल्के गोदी गया, वह वावला कहाया, साख पांच हुई ।

३ सौमाणी नानरे झंवराके गोदी गया, वह झंवर सौमाणी कहाया, साख ५ हुई ।

४ सारडा रूपचंद्रजी सांभरसे कालनियाके गोदी गया, वह कालाणी सारडा कहाये, साख पांच, गुरु पारीक खटोडा, व्यास ननसालके हुए ।

५ माणुधन्या कर्नीरामजी सांभरमें कालनियामें गोदी गये । सो काल्हाणी माणुधन्या कहाये साख ५ टालके समपन करै ।

इसप्रकारसे नागौरमें धेवता नानाके गोदी अभीतक आता है और भी कई स्थानोंमें बेटीका पुत्र और अपना पुत्र दोनोंका सत्व दत्तकमें बराबर मानते हैं ।

धाकडमहेश्वरी ।

डीडू महेश्वरियोंमेंसे फटकर धाकड महेश्वरी, खंडेलवाल महेश्वरी, मेडतवाल व टूकवाले इत्यादि बोले जाते हैं, डीडू और इन महेश्वरीयोंमें परस्पर रोटी बेटीका व्यवहार नहीं है, गोत्र वोंक उनके यही हैं, यह जैपुर, तथा टोंक राज्यमें वगरू,महला, निमाडे,रानीखडेमें और कुछ चित्तौरके समीप निवास करतेहैं, यहां ७०० सातसौ घर हैं, टोंक राज्यमें लघुजातिके संग भोजन करनेसे लघु कहाये, गुजरातमें धाकड गढमें माहेश्वरी जाति निवास करती है । इनकी भी वहत्तर खांप हैं; यह डीडू कहाते हैं, एक समय राजाने इनपर क्रोध किया तब सबने देशत्यागकी इच्छा की, उनमेंसे वीस कुल फुटगये, धाकेगढमें रहे; शेष सब कुल वहांसे चलेगये; इन वीसमें बारह और मिलकर सब ३२ होगये,इन सबके उपनयन होता है, इनका गोत्र लिखते हैं ।

१ चंडक	९ भन्साली	१७ कावरा	२५ धारवा
२ सौमाणी	१० वासट	१८ साकौन्या	२६ धारवाल
३ डाड	११ वायती	१९ थीवा	२७ मौरी
४ झंवर	१२ भूवडे	२० लौहाती	२८ मौहता
५ बजाज	१३ टावाणी	२१ नागौरी	२९ मतीवार
६ राठी	१४ डागा	२२ मरगौती	३० मेडतवार
७ मालपाणी	१५ भटड	२३ लाड	३१ गूगले
८ जाखडे	१६ तौसनीवाल	२४ वघेरलाल	३२ कुलम ।

यह विशेषकर नर्मदाके दक्षिण तट खंडवा वुरहानपुर इलाकेमें निवास करते हैं, और खंडवेमें नीचे लिखे गोत्रवाले निवास करते हैं, ओंकार, मालवी, चंडक, शिवाजी, गंगाराम, चौधरी, सौमाणी, भागाजी, तिला, साडाड, रामाजी, हरचंद, मनीराम, सीताराम, झंवर, रघुनाथजी, मानक, रामगोपाल, बजाज, ओंकार, चौदरूसा, शंकरदास राठी, रामासा, भाई लछीराम, मालपाणी, पदमासा, केनीराम, गोविन्दराम, मालवी, वाहेती, नंदराम, गोविन्दराम, काल्सा, जाखेटे, मौती, मूवडे, गोविन्दराम, कासीराम, सदोबा, नानाचुला, मटक, देवा, वुगलाल, तौसणीवाल, नागौरी, मंजाधर, गंगाराम, सदोबा बघेरवाल, मंडलोई, नानापदम, इतने गोत्र हैं, इनका खानपान, चालचलन, गुजरात काठियावाडके समान है ।

महाजनमाहेश्वरी पोकरागोत्र ।

पोकर माहेश्वरी डीडू महेश्वरियोंमेंसे १४ मनुष्य धर्मारूढी प्रपंचसे धडाडालकर अलगनाम पोकरा

पौकरजीसे बोले गये उन्होंने यह अपने अपने नामसे गोत्र नियत किये यथा कावस्या, चंदेस्या, साहा बीगाया, डंडवाड्या, सिंगौल्या, दौडवास, धुतावत, बलवल्या, काचरवास; सांमरया, कीचक । शेष, अविदित हैं ।

खंडेलवाल माहेश्वरीवैष्णव ।

इनमें कुछ गोत्र डीडू महेश्वरियोंके हैं, कुछ खंडेलवाल श्रावकोंके हैं,

कूदावाल	अटौल्या	झालाणी	नानवा	वंब	मामोड्या
कूदावत	आलड्या	टोडवाल	नाणीवाल	वेद	मोरवाल
खटवाड्या	आमेरया	ठकरया	पचलोड्या	बुसर	मेठी
खीरावाल	अमेरिया	ठेटार	पूलवाल	भामला	रावत्या
खुटौटा	औड	डांस	पीतल्या	भूकमरिया	रावत
खेरुण्या	कलका	ताम्य	पाटोद्या	भंडारी	राजोस्या
गंगाइच्या	कटारया	तामी	पावूवाल	महता	लांबी
गोविंदराज्या	काठी	तामोर्डी	वडोरा	मझाल्या	सांवरया
वीया	कायथवाल	तोडावाल	वसूरया	माड्या	सारव्ण्या
वीयाराय	काट	दुसज	बजरगण्या	माणकवोरा	सेठी
धीयाकाटया	काठया	धामणी	वतवाडी	माली	सिरोया
जसौरया	कांचीवाल	नारायणीवाल	वामी	माचीवाल	सोक्या
झंगाण्या	कूड्या	नाटाणी	विंवल	मुकमाद्या	हलद्या

साडेवारह न्यात ।

यह अपने २ देशकी प्रथाके अनुसार मानी जातीहैं, और उनका भोजन व्यवहार उनकी रीतिके अनुसार होताहै, यथा श्रीश्रीमाल, श्रीमाल, अग्रवाल, ओसवाल, खंडेलवाल, बघेरवाल, पल्लीवाल, पौरवाल, जेसवाल, महेश्वरी डीडू, हूमड, चौरंडिया यह बारह न्यात मध्यदेश मालवेकी हैं. किसी देशमें नीचे लिखी साढे बारह न्यात मानी जाती हैं, ओसवाल, श्रीश्रीमाल, श्रीमाल, बघेरवाल, पलीवाल चित्रवाल, पौरवाल, मेडतवाल, खंडेलवाड, ठंठवाल, महेश्वरी, हरसौरा । यह बारह न्यात गौडवाड गुजरात काठियावाडकी है, यहां अग्रवाल नहीं हैं, चित्रवाल सामल गिनेजातेहैं, खंडेल जैनी हैं ।

दूसरी रीति ।

एक समय खंडेला नगरमें खंडप्रस्थ राजाने वैश्ययज्ञ किया, वहां चौरासी जात तो पक्के भोजनमें सामिल थी पर खंडेलवालोंमें खंडेलवाल महाजन, खंडेलवाल ब्राह्मण और खंडेलवाल खाती यह तीन शामिल थे, तब राजाने विचार किया कि इन तीनों जातियोंके सामिल जीमना उचित नहीं, तब कच्ची पक्की दोप्रकारकी रसोई करवाई, तब खंडेलवाल ब्राह्मण और खाती तो पक्कीमें चलेगये, और महाजन साढे बारह न्यात कच्चीमें जीमें, वे दोनों अपनी २ जातमें रहे, और खंडेलवाल महाजनोंमें जीमनेलगे, बेटी व्यवहार अपनी जातिमेंही रहा, भोजन सबमें शामिल हुआ, जो जाति जहांसे, आई उसका वर्णन इसप्रकार है । राजपुरा राजपुरसे काठाडा खाटूगढसे, टिटौडा टीटौंगढसे, पौकरा पौकरजीसे माहेश्वरी डीडू डीडवानासे, खंडेलवाल खंडेलासे, पल्लीवाल पालीसे, बघेरवाल बघेरासे, जायवाल जायलसे, मेडतवाल मेडतासे, ओसवाल औसियासे, श्रीमाल भीनमालसे ।

चौरासी जातिकी नामावली।

एक समय गौडवाड देशमें पद्मावती नगरीके पौरवाल महाजनने बडा द्रव्य खर्चकर यज्ञ किया, उसमें चैरासी जातिके वैश्य आये उनके नाम लिखते हैं, सबको आने जानेका खर्चा दिया गया।

१ अगरवाल–अगरोतासे
२ अडालिया–आडनपुरसे
३ अजोधिया–अयोध्यासे
४ अजमेरा–अजमेरसे
५ अवकथवाल–आवेरआमानगरसे
६ ओसवाल-ओसियानगरसे
७ कठाडा–खाट्सै
८ कांकरिया-करौलीसे
९ कपोला-नगरकोटसे
१० ककस्थन–वालकुंडासे
११ कटनेरा-कटनेरसे
१२ खटवा-खेरवासे
१३ खडायता-खडवासे
१४ खेमवाल–खेमानगरसे
१५ खंडेलवाल–खंडेलासे
१६ गाहिलवाल-गोहिलगढसे
१७ गंगराडा-गंगराडसे
१८ गोलवाल-गोलगढसे
१९ गोगवार गौगासे
२० गिंदौडिया–गिंदौड देवगढसे
२१ चतुरथ–चरणपुरसे
२२ चकौड–रणथंभ चकावा गढ (मल्हारीसे)
२३ चित्तौडा–चित्तौरसे
२४ चौरंडिया–चावंडियासे
२५ जालौरा–सोमनगढसे (जालोरासे)
२६ जायलवाल-जायलसे
२७ जेसवाल–जेसलगढसे
२८ जम्बूसरा–जम्बूनगरसे
२९ टीटोडा-टीटोडसे
३० टंटोरिया-टटेरानगरसे
३१ ढूसर-ढाकलपुरसे
३२ दसौरा-दसोरसे
३३ धाकड-धाकगढसे
३४ धवलकोष्ठी–धोलपुरसे
३५ नारनगरेसा-नरानपुरसे
३६ नागर-नागरचालसे
३७ नेमा–हरिश्चन्द्रपुरीसे
३८ नवांभरा–नवसरपुरसे
३९ नरसिंहपुरा–नरसिंहपुरसे
४० नागिन्द्रा–नागेन्द्रनगरसे
४१ नाथचल्ला–सीरोहीसे
४२ नाछेला–नाडोलाईसे
४३ नोटिया-नोसलगढसे
४४ पलीवाल-पालीसे
४५ पंचम-पंचमनगरसे
४६ परवार-पारानगरसे
४७ पौकरा-पोकरजीसे
४८ पौरवार-पोरेवासे
४९ पौसरा–पौसरनगरसे
५० वघेरवाल-वघेरासे
५१ वदनोरा-वदनोरसे
५२ विदियादा-विदियादसे
५३ वरमाका-ब्रह्मपुरसे
५४ वोंगार-विसलापुरीसे
५५ भवनगे-भावगरसे
५६ भूंगडवार-भूरपुरसे
५७ महेश्वरी–डीडवानासे
५८ मेडतवाल–मेडतासे
५९ माथुरिया-मथुरासे
६० मौड-सीधपुर पाटनसे
६१ माडलिया-मांडलगढसे
६२ राजिया-राजगढसे
६३ राजपुरा-राजपुरसे
६४ लवेचू-लावानगरसे।
६५ लाड–लांवागढसे
६६ श्रीमाल–भीनमालसे
६७ श्रीश्रीमाल–हस्तिनापुरसे
६८ श्रीखंड-श्रीनगरसे
६९ श्रीगुरु-आभूताडौलाईसे
७० श्रीगौड-सीधपुरसे
७१ सांभरा-सांभरसे
७२ सडौइया–हिंगलादगढसे
७३ सरेडवाल–सादडीसे
७४ सौरठवाल-गिरनारसे
७५ सेतवाल–सीतपुरसे
७६ सौहितवाल-सौहितसे
७७ सौनैया-सौनगढ जालौरसे
७८ सौरंडिया-शिवगिरावसिवानसे
७९ सुरन्द्रा-सुरेंद्रपुर अवन्तिसे
८० हरसौरा-हरसौरसे
८१ हूमड-सादवाडासे
८२ हलद-हलदानगरसे
८३ हाकरिया-हाकगड नलवरसे

इस प्रकार पद्मावतीमें यज्ञ हुआ, पद्मावती नगरके वैश्योंने यज्ञके उपरान्त पौरावार पदवी पाई। यह गौड्वाडकी चौरासी जाति हैं।

गुजरातदेशका चौरासीन्यात।

१ अगरवाल	१९ गसौरा	३७ डीडू	५५ वेडनौरा	७३ वाचडा
२ आनेरवाल	२० गूजारवा	३८ डीसावाल	५६ भारीजा	७४ श्रीमाली
३ आढवरजी	२१ गौयलवाल	३९ तीपौरा	५७ भागरवाल	७५ श्रीश्रीमाल
४ आरचितवाल	२२ नरसिंहपुरा	४० तेरौढा	५८ भुंगरवाल	७६ सारविया
५ ओसवाल	२३ नेफाक	४१ दसारा	५९ मुंगडा	७७ सिरकरा
६ औरवाल	२४ नागर	४२ दोइलवाल	६० मानतवाल	७८ साचोरा
७ अंडौरा	२५ नागेन्द्रा	४३ पदमोरा	६१ मेडतवाल	७९ सुररवाल
८ कडेरवाल	२६ नाथौरा	४४ पलेवाल	६२ माड	८० सौनी
९ करवेरा	२७ चहत्रवाल	४५ पुष्करवाल	६३ मीहीरिया	८१ सौजतवाल
१० कपौल	२८ चित्रौडा	४६ पंचमवाल	६४ मेहवाडा	८२ सौहरवाल
११ काकलिया	२९ जारौला	४७ बरूरी	६५ मंडाहुल	८३ स्तवी
१२ काजौहीवाल	३० जीरणवाल	४८ वटीवरा	६६ मंगोरा	८४ हरसौरा
१३ कंवोवाल	३१ जेलवाल	४९ वाईस	६७ मौड	
१४ कौरटावाल	३२ जम्बू	५० वावरवाल	६८ मांडलिया	
१५ खडायता	३३ जेमा	५१ वामनवाल	६९ मेंडोरा	
१६ खातरवाल	३४ झलियारा	५२ वाग्रीवा	७० लाड	
१७ खीची	३५ ठाकरवाल	५३ वाहोरा	७१ लाडीसाका	
१८ खंडेलवाल	३६ डींडोरिया	५४ वालमीवाल	७२ लिंगायत	

दक्षिणकी चौरासी न्यात।

१ कपोला	१३ गोलवाल	२५ टकचाल	३७ नेमा	४९ बदवइया
२ कटनैरा	१४ गगेरवाल	२६ टंटारे	३८ नोटिया	५० बडेला
३ ककस्थन	१५ गोगवार	२७ नरोडा	३९ पलीवाल	५१ वंहडा
४ कमाइया	१६ गोलपुर	२८ दसोरा	४० परवाल	५२ वागरोरा
५ कठनेरा	१७ गिंदौडिया	२९ धवल	४१ पर्वाछिया	५३ वावरिया
६ काकारिया	१८ चक्रचाप	३० धाकड	४२ पहासिया	५४ विदियादा
७ कारिनराया	१९ चक्रोड	३१ नरासिंहपुरा	४३ पितादि	५५ वुढैल
८ कंदोइया	२० चतुरथ	३२ नरसिया	४४ पंचम	५६ वैस
९ खडागते	२१ चौरडिया	३३ नगया	४५ पोसरा	५७ वौगार
१० खण्डवास्त	२२ जनोरा	३४ नागौरी	४६ पोरवाल	५८ वद्याका
११ खंडेलवाल	२३ जालोरा	३५ नाथचल्ला	४७ बवरवोल	५९ भवनगेह
१२ खरवा	२४ जेसवाल	३६ नाछेला	४८ वपर्छवाल	६० माकरिया

६१ भूगढवाल	६६ मोडमांडलिया	७१ श्रीमाल	७६ सोरठेवाल	८१ हरसोरा
६२ महता	६७ मेडतवाल	७२ श्रीगुरु	७७ सिंगार	८२ हांकोरिय
६३ मठिया	६८ राजिया	७३ सडोइया	७८ सेतवाल	८३ हूमड
६४ मावा	६९ लनेचू	७४ सरडिया	७९ सौनेया	८४ अग्रवार
६५ मांडलिया	७० लाड	७५ स्वरिद्ध	८० हरद(अवकथवाल अष्टवार अस्तकी अडालिया)	

अथ मध्यप्रदेशकी ८४ न्यात।

१ अगरवाल	१८ खंदणउडा	३५ नागेन्द्रा	५२ गयेच	६९ लाखमखा
२ बालन	१९ गौभू	३६ नाडरा	५३ वास	७० लाड
३ अजतवाल	२० गजेरा	३७ पधवता	५४ वाल्मीक	७१ श्रीमाल
४ अठगाढिनी	२१ गोलेचा	३८ पचाटा	५५ मल	७२ श्रीश्रीमाल
५ अलदउदर	२२ चउचरव	३९ पंचम	५६ भटेवरा	७३ सलाडे
६ गठचन्न	२३ चितौडा	४० पांतीवाल	५७ भागऊ	७४ सत
७ ओसवाल	२४ जल्हरी	४१ पौकरवाल	५८ भुगत	७५ सरखरेल
८ कथौला	२५ जम्बूसरा	४२ पौरवाल	५९ अग्राडी	७६ सहडेवाल
९ कटीवाल	२६ जालोरा	४३ प्रवरा	६० मथपुर	७७ सुराणी
१० कगोल	२७ जीगीपारीजी	४४ प्रद्मण	६१ महेश्वरडीड	७८ सान
११ कन्हया	२८ जायलवाल	४५ प्रहराव	६२ मेडतवाल	७९ सौधतवाल
१२ कवीठर	२९ नचवरा	४६ फठ्या	६३ मौड	८० हलौरा
१३ कसौला	३० तलनडा	४७ वमीवाल	६४ मांडारा	८१ हरसौरा
१४ कुंथतरा	३१ धाकड	४८ ववेरवाल	६५ मंडौहड	८२ हूमड
१५ खडायता	३२ नार्णावाल	४९ वम	६६ मंडोरा	८३ होहल
१६ खडलवाल	३३ नर्गसिंहपुरा	५० वसमी	६७ रासीवाल	८४ हौहरण
१७ खेटवाल	३४ नागर	५१ वायेटा	६८ रागौरा	

ओसवाल महाजन वैश्य।

राजा उपलदे पवार ओसिया नगरका राजा था, परन्तु राजाके कोई पुत्र नहीं था, राजाने देवीकी प्रार्थना की देवीकी कृपासे राजाके एक पुत्र हुआ, उसका नाम जयचन्द्र रक्खा, उसी समय. ऋषिराय रत्न प्रभु ८४शिष्योंके साथ उस नगरमें पधारे और शिष्यके निमित्त आज्ञा दी कि पवित्र भोषत नगरसे लाओ, परन्तु किसीने इनको भोजन न दिया, तब एक ब्राह्मण इस शिष्यको अपने यहां लेगया, और बडी भाग्यकी सराहना करके खीरखांडका भोजन दिया, दो शिष्य वह पदार्थ लेकर गुरुके पास गये, गुरुजीने कहा तुमने बडी देर की, शिष्यने कहा महाराज किसीने कुछ नहीं दिया, केवल एक ब्राह्मणने इतनी शुश्रूषा की तब गुरुजीने ध्यान धरकर कहा यहां एक लाख घर हैं और भरेपूरे हैं वहांकी यह दशा है, यह कह-उस पदार्थको वहीं रखकर राजाके पुत्रको शाप दिया कि वह चेतनारहित हो जाय, तत्काल ऐसाही हुआ सारे नगरमें हाहाकार मच गया, राजा तत्काल शापके समाचार सुनकर गुरु देवके चरणोंमें जापडा, और पुत्र जीवित होनेके लिये बडी विनय की, ऋषिने कृपाकर पुत्रको जिवादिया, तब घरघर महामंगल

छागया, राजा ऋषिके सामने हाथ जोडकर खडा होगया और कहा जो आज्ञा हो सो करूं ऋषिराजने और कुछ न कहकर राजाको जैनधर्मकी दीक्षा दी, और राजाके जैनधर्म स्वीकार करतेही तब प्रजावर्ग भी जैनी होगये, फिर वह ओस्यासे उठकर भीनमालमें बसे क्षत्रिय अठारह शाखके हुए, वह स्थान पहला ओसवाल कहाया, इसमें पंवार शिशोदिया, सिंगाला, रणथंमा, राठौर, वंचाल, बचाला, दया, भाटी, सौनगरा, कछावा, धनगोड, जादम, झाला, जिंद खरदरापाट, यह सब जैन धर्मावलम्बी हुए, फिर पंवारोंके शासनकालमें कुछ लोग वैष्णव हुए, इस प्रकार उस नगरके वैश्यमी कोसवाल नामधारी जैनी हुए, और वहांके नरपतियोंके गौत्र जैनी होनेसे इनके भी वही गोत्र हुए आज भी यह लोग बडे धनी हैं ।

इनकी उत्पत्तिका समय संवत् २२२ है, ओसिया नगरके राजा उपलदे पंवारकूं रतनप्रभुजीने उपदेश दिया, और पहला गोत्र कांकरिया प्रगट किया, पोछे जाति नाम और ग्रामके नामसे संवत् १७०० तक १४४४ नामतक सुनेजाते हैं कुछ विख्यात लिखते है । श्रीहेमचन्द्र सूरिजीने मलधारको शिष्य किया वह छाकेड राठौर वंश. चीपड, माता, संचिकाय, डांगी, धाकड, दूंगड, धूप्या, पींपाडा नवलखा माता, आसापुरा, कूकड, चीपडा, गणध, चौपडा, सांड, यह पांच गोत्र भाई हैं, कूकड गोत्रसे चार गोत्र और प्रगट हुए, पामेचा पौकरण मातासंचाय, संवत् २४२ में प्रगट हुए, मरडयासौनी, पौकरणा, राठौर, ग्रामहटा, साहको दीक्षा दी. बडौला, मातावर, बल, (वरडिया बरड, बाघमार. माता संचाय, आश्विनशुक्ला और चैतशुक्ला नौमी पूजी जाती है चौरबडिया, मातासंचाय, ४ गोत्र भाई हैं, आमदेव, गादिया, गोलेचा और पारख, भैसासाहके वंशमें चौरवेडिया गोत्र प्रगट हुआ, मटा, खाव्या, भीलमाल, गोखरू, नपावत्या, सांखला, सुरपुरया सुकलेचा वापणा, वौल्या, सेठिया, दक सीयाळ, सालेचा ४० पूनमिया, नावेडा, हींगण, लूनिया, आलावत, पालावत, थरावत, मौहिबाल, खुडद्या, टोडरवाल्या ९० माधौटिया, गडिया, गौढवाडया, पटवा, गांग, दूधेडिया, संगवीं, सांडळ । साड, सियाल ६० सालेचा पूनम्या, यह साड आदि चार भाई हैं, साडल वौरद्या, बरड ६३ माता आसापुरा हलका पूजन, आश्विन और चैत्र शुक्ला नौमी पूजी जातीहै । बावेला चहुआन मुनिचन्द्र सूरिजी चक्रेश्वरी देवीका पूजन, नगरओसिया, मद्यमांसका त्याग, संवत् २४२ के पीछे भीनमाल आया, संवत् ९९१ में पंचोलपनेका काम पंचोली वावेल० संगवी वावेलमेंसे संवत् १२७९ में वावेल गुसजनी कहाये, मलधारगच्छको रत्नप्रभुने दीक्षा दी ।

तेल्या तेलरा कलहेडा, पारसनाथजीके यहां तेल लिया जाता था मंदिरके लिये तेल खरीदा जाता था, संवत् १९२० जिस समय रानाजीने नाम कढाया तो तेला तेलरा कहाया. श्रीहेमचन्द्र सूरिने विज्ञान दिया, सोलंकी राजा सिधराव सौलंकीकोदीक्षा दी उसे छोहोरया ७० तातेढ गोत्र चला माता संचाय लढा माहेश्वरीको विज्ञान दिया संवत १०१६ में । देवीपूजा इनके यहां आश्विन और चैत्रशुक्ला नौमीको होती है, नावेडा, भीमनाल ग्रामको बोध दिया, मलधारगच्छ खाटेडगोत्र, कावड्या आकामार्गे पटविद्या, नेणेसरमाता अम्बिका डूंगरवाल नगवत्या ९० सन्तनाथके प्रसादसे ज्ञान हुआ, नादेचाको नंदरायने दीक्षा दी, विजयागच्छ (सौनगरा चहुआन संवत् १९३२ विजयगच्छ (८३ सचेती

कोचर—यह भी इस जातिकी बोकहैं किसान एक चिडिया पाली थी तभीसे यह बाकें हुआ कोठारी—सावलदास कोठारीके समयसे यह बौक चला है।

दिल्लीवाल पंवार मातासचेती मलधार पुनमियागच्छ) लौढामाता वडवलपूजा आश्विनशुक्ला ९ चैत्रशुक्ला अष्टमी । श्रीश्रीमाल श्रीमाहाल, गेवरिया शाखा, माताब्रह्मशांत, चैत्रशुक्लानौमी आश्विनशुक्ला नौमीकी पूजा होती है, संवत् २४२ में मलधार गच्छको ज्ञान दिया, दिल्लीवाल मातासंचाय चैत्रशुक्ला ९ तथा आश्विनशुक्ला नौमीकी पूजा ओसियाछोडके भीनमाल जावसाया वरिणी भटा ९० संवत् ४४४ में दीक्षित हुआ (पूर्वमहेश्वरी मूंधडा पुत्रदायिनी, वौलीग्राम भटागोत्र) वीराणी वीराजीसूं वीराणी हुआ, यह दो प्रकार हुए (बाफणको हेमचन्द्रजीने ज्ञान दिया बाफणामें ३२ गोत्र हैं, मातासंचाय श्रीरत्नप्रभुजीसे दीक्षित सचेती माता संचाय संवत् २४२ । सुराणा सांखला पंवार जगदेवने हेमचन्द्र सूरिजीसे बोधलिया, जयदेवके पुत्र सूरिजी और मधुदेवजी हुए, सूरिजीका सुराणा सांवलजीका सांखला, मातानुसार्णी और लौसल संवत् १०३२ में अब पांचवां कहते हैं, सुराणा, सांखला, ककरेचा फलौदिया, नखत, (नुरपुरचा माता आसापूरा) सुकलेचा, शिशौदिया, बप्पारावलको बोध दिया, बापाके तीनपुत्र हुए, राका, माफ और श्रवण रांकाका रावल डुंगरपुर ग्राम माफका, राणाजी चितौर गादी श्रवण की सिसौदिया नाहार १०० साह लक्ष्मणजी महेश्वरी मूंधडा, जिसके सूंडाजी गुरुप्रतापसे पुत्र हुआ, नाहारनेचुंगी तिनसे नाहार श्रीमलधारगच्छ संवत् १०३२ । बापणा पंवार वंश मातासंचाय आश्विनशुक्ला नौमी पूजती हैं, आचार्य हेमचन्द्र सूरिजीने ज्ञान दिया, रांकावांकाको, रांकाजीका रांका वांकाजीका दकवलभी ग्राम रांकाजीका वौंक रांका, काला, गोरा सेठी, पावरा, (वांकादक) यह छः गोत भाई हैं, दक संवत् १२७५ में तेज पालजी वसन्तपालजीकी पांतीमें जीमें, मलधारगच्छ पंचमकी तब बातपाली हेमचन्द्राचार्यजीने विज्ञान दिया. खीमसरा खटवड मातालखानस संवत् २४२ मलधारगच्छ भट्टारक हेमचन्द्र सूरिजीने दीक्षा दी, खींवसर ग्राम वासखेममें मिला, जिससे खटवडखींवसरा कहाये, खींवसरा शाखा गांव खाटूमें पूरणमलजी पंवारने बोध दिया (वंव ११० पंवार संवत् २१२ मिति माह शुदि १४ शनिवार भट्टारकजी श्रीहेमचन्द्र सूरिजीने ज्ञान दिया, ववेरेग्राममें साहनरायणदासजीका कुष्ठ निवारण किया, और उनको श्रावक धर्म धारण कराया, उनके पुत्र १६ हुए उनके १६ गोत्र हुए, वंवमाय आलावत, पालावत थरावत, मौहीं वाल, खुड्या, दौडरवाल, माधौडिया, गडिया, गोंडवाड्या, पटवा, वीरावत, दूवेडिया, गांग गौत्र इन सोलह गोतोंकी माता संचाय है, आश्विनशुक्ला ९ चैत्रशुदी ८।९ पूजी जाती हैं । गांव वंवेरासे उठकर गांव गोधांणीमें आया, देवलकराया समेत शिखरजी आबूजी गिरनारजी,दादा ऋषभ देवजीकी यात्रा की, संवत् ४९२ में पुण्य क्रिया कुष्ट निवारण हुआ, गौत्रगोत्र स्थापन किया गुरुका पद पूजन किया, गुरुने कल्पसूत्र मोतियोंकी माला चन्द्रवा ७ मोहर २५ रुपया १०००० चेला १९ भेंट किया, उस समयसे मलधारगच्छका श्रावक अंगीकार किया, पुण्य यथा गोत्र १६ (१२६ गेलडा गहलौतवंश नागौर नागौरग्रास संवत् १६९२ मातादाहिमा पूजी जाती है, भट्टारकजी श्रीहेमचन्द्र सूरणजी नागौर आये, तब गहलौत गुरुका घोडा देवनोसे मोहरोंका तोबडा भरके चढादिया, घोडेने मोहरें नहीं खाई तब गुरुने कहा तोबडा गहलडा है घोडा तो दाना खाता है तबसे गहलडा गोत हुआ, माता जायमा पूजी जाती है आश्विन शुदि ९ और चैत्र शुदि ८ पूजी जाती है । पगारया, खेतसी, मेडतवाल, शंकरदासजीके प्रोहित शंकरदास ब्राह्मणने भीनमाल नगरमें शिवधर्म द्वारा दिया और जैनमत धारण किया, कुष्ट रोग निवारण हुआ, उनके खेतसी और पगारसी दो पुत्र हुए, पगारसीका पगारया खेतसीका खेतसो गोत्र हुआ, पीछे मेडतवाल

हुआ इन तीनोंमें माता सौहिल पूजी जातीहै मिती आश्विन शुक्ला ६ और चैतशुक्ला ६ पूजी जाती हैं मलधारगच्छको आचार्य श्रीहेमचन्द्रजीने बिज्ञान दिया ।

जैनमतके ८४ गच्छ ।

१ अनपुरा	१८ गंधार	३५ घुंघरवार	५२ वाघेरा	६९ भुजाहरा
२ आगमियां	१९ गुदावाल	३६ घोषवाल	५३ वाइट	७० मुहडासी
३ उठविया	२० चितवाल	३७ नागौरी	५४ विगडा	७१ मोमडिया
४ ऊसगच्छा	२१ चित्रवाल	३८ नागदी	५५ विजोहरा	७२ मोरेवडाल
५ कनरसा	२२ चीतोडा	३९ नाणावाल	५६ वुतपुरा	७३ रूदेलिया
६ काछलिया	२३ छांतरीवाल	४० नागरकोटी	५७ वोकडिया	७४ रेवइत्रा
७ कावोना	२४ जगायन	४१ नाडुलिया	५८ वोरसडा	७५ साधुपुनमियां
८ किरेडिया	२५ जांगल	४२ नेगमिथा	५९ भरवछा	७६ सांडोग
९ कुंचडिवा	२६ जालोरा	४३ पंचवल्हण	६० भरनरा	७७ साचोरा
१० कोरावाल	२७ जीरावास	४४ पलीवाल	६१ मावटगा	७८ सिंघाती
११ कोछीपूरा	२८ जीणहारा	४५ पालनपुर	६२ भिन्नपाल	७९ सिद्धपुरा
१२ खरतर	२९ डाकोडवा	४६ पुनतरा	६३ भीमसेनी	८० सुराणा
१३ खम्भायती	३० तपा	४७ वरडवा	६४ मंडार	८१ सुपादिया
१४ खंभानिया	३१ तीकडिया	४८ वडगछा	६५ मलधार	८२ सेवता
१५ गुवेलिया	३२ दासरुवा	४९ वहेडिया	६६ महघर	८३ संगडिया
१६ गछवाल	३३ दौथदणी	५० वडोदिया	६७ मसैनियां	८४ हंसारिया
१७ गंगेसरा	३४ धर्मधा	५१ ब्रह्माडिया	६८ मांडलिया	

गच्छोंकी उत्पत्तिका समय ।

संवत् ९९४ में प्रथम पौसालमंडीलगच्छ हुआ ।

संवत् १००१ में खतरगच्छ उज्ज्वल महात्मा कहाया ।

संवत् १२१४ में आचल्यगच्छ हुआ ।

संवत् १२३४ में नागौरी तपाहर सौरागच्छ स्थापन हुआ ।

संवत् १२५० में आगमिया पुनमियां महात्मा हुआ ।

संवत् १२६५ में तपः प्रथम तपगच्छ चित्रवांद दोनोंके तपकरनेसे तपोगच्छ हुआ ।

संवत् १५२७ में तरयंति तरे उदैपुरिया भवसरिया हुआ ।

संवत १५२३ में महताळूकासे लूकागच्छ हुआ ।

संवत् १५३१ में स्वयंलूका हुआ ।

संवत् १५१८ में कुंवरमति हुआ ।

संवत १५७२ में तपाजतीने क्रियाकर उद्धार किया ।

संवत् १५८३ में आनन्दविमलक्रिया उद्धार किया ।

संवत १५७६ पायचन्द्र क्रिया उद्धार किया ।

संवत् १६४४ बीजामतीलुकामेंसे है।
संवत् १६०२ आंचलिया क्रिया उद्धार की।
संवत् १६०५ खरतर क्रिया उद्धारी।
संवत् १७३५ लुकामेंसे ढूंढा बीजामती दो निकले ढूंढा।
संवत् १७३५ हाजी साधुकी औषधीसे प्रगट हुआ.

दसमत।

आंचलियामति, पाइचन्दमति, काजामति, पाटनियामति, लुकामति, साकरमति, कौथलामति, कडात्रामति, आतममति बीबामति, लुकामेंसे निकले।

गोरारा महाजन।

श्रावक तीन प्रकारके होते है, गोरारे, गौलसिंघारे, गोलापूर्व, यह भेद हैं, इन लोगोंका जैनमत है, इनका रहना ग्वालियर इटावा आगरेके इलाकेमें है, इनके २२ गोत्र सुनाई आते हैं। पावेके सेंगेई, गयेलीके समई पेरिया, वेदगोत, नखेदपुरखेद, सिमरैया, चौधरी, कूकन्या, उद्यागोत, तसठिय, बडसइया, तेतगुरिया, चौधरी आंतरीके, चौधरी वरादके, सराफगोत, अवदइया, डनसइमा गोत, कौसाडिया, सौहाने जमसरिया, चौधरीजासूद, चौधरीकौलसे, घरेइयागोत।

बघेरवाल ५२ गोत्र।

बघेरवाल महाजन गांव बघेरामें राजा वृद्धसेनके समयमें.

बावन गोत्र प्रगट भये उनका नाम।

१ अजेपुरा गोत	१४ भाडाग्या गोत	२७ वनवाडचा गो०	४० पापल्या गो०
२ कटास्या गोत	१५ जिठालीवाण गो०	२८ धौल्या गो०	४१ भूगखाल०
३ कोटिया गोत	१६ सथूग्या गोत	२९ पगाग्या गो०	४२ खुरलाया गो०
४ खटग्रड गोत	१७ जोगिया गोत	३० बौरखंडचा गो०	४३ गंवाल गोत
५ लावावास गोत	१८ निगोत्या गोत	३१ दीवडचा गो०	४४ ठगगोत गो०
६ सालून्या गोत	१९ कावरिया गोत	३२ वरमूड्या०	४५ सौराया गो०
७ धनौत्या गोत	२० ठाइया गोत	३३ तातहड्या०	४६ केतग्या गोत
८ सावधरा गोत	२१ कुचीलिया गोत	३४ मंडाया गो०	४७ वहारिया गो०
९ वावन्या गोत	२२ मादलिया गोत	३५ वालदचट०	४८ सीलौस गो०
१० सीघडातौड गो०	२३ सेठिया गोत	३६ पीतल्या०	४९ खरडचा गो०
११ वागडचा गोत	२४ सुइवाल गोत	३७ दगौग्या गो०	५० चमांग्या गोत
१२ हरसौरा गोत	२५ सांमन्या गोत	३८ भून्या गो०	५१ साहुन्या गोत
१३ सादूला गोत	२६ सखागग्या गोत	३९ देहतौडा०	५२ अविदित गो०

नरसिंहपुरा महाजनचैनी गोत्र।

भट्टारक श्रीरामसेनजीकी स्थापना १०८ इनकी उत्पत्ति नरसिंहपुरा नगरसे है। भट्टारकजी श्रीरामसेनजीके उपदेशसे जैनधर्म त्यागकर नृसिंहधर्म धारण किया–

खडनर	वारणी देवी	खलण गोत	कंटेश्वरी देवी
पुलपगर	पावई देवी	खांभी गोत	अरवासन देवी
भीलडहौडा	अवाई देवी	हरसौल गोत	चक्रेश्वरी देवी
विमडिया	धरु देवी	नागर गोत	नीणेश्वरी देवी
पवलमथा	पवाई देवी	झडपडा गोत	पिशाची देवी
पद्दतह	पलवी देवी	जसौहर गोत	झांझणी देवी
सुमनौहर	सौहनी देवी	चारौड गोत	पिपला देवी
कलसधर	मौरिण देवी	कथौटिया गोत	पिरण देवी
कुंकूलौ	चक्रेश्वरी देवी	पंचोल्ल गोत	मौरण देवी
कौरठेय	बहुरूपिणी देवी	मौकरवाडा	०
सापडिथा	पद्मावती देवी	वसौहरा गोत	सीवाणी देवी
तेलियागोत	कांतेश्वरी देवी	रयणपारखा	रयणी देवी
वलौला गोत	अंबा देवी	अमथिया	रोहिणी देवी
		मुद्रपसार	भवानी देवी

खडलवाल।

धन विषयमें वा आचार व्यवहारमें खंडेलवाल भी अग्रवालोंसे किसी प्रकार कम नहीं हैं, जयपुर राज्यके खंडेलानगरके नामसे इस सम्प्रदायका खंडेलवाल नाम हुआ, एक समय खंडेला नगरी राजपूत शेखावतोंका केन्द्रस्थल थी. संवत् १ में जिनसेनाचार्य ५०७ मुनिराज साथ लेकर माघ शुदी पंचमीको खंडेलानगरमें आये उस समय वहांका खंडेलगिरि नाम राजा सूर्यवंशी चौहान राज्य करता था, उसमें ८३ गांव लगते थे, उस समय वहां घरघर महामारी विसूचिका फैल रही थी। जिसके कारण देशमें हाहाकार मच रहा था; अनेक उपाय करनेपर भी जब महामारी शान्त न हुई तब राजा उन ५०० मुनिराजोंकी शरण गया और बडी प्रार्थना की, तब ऋषिराज बोले जैनधर्म स्वीकार करो, देश २ में भगवानकी प्रतिमा पधराओ शान्ति होगी, राजाने ऐसाही किया, और देशभरमें शांति हुई, ८२ क्षत्रिय और दो गांवके सुनार हाजिर थे, सब श्रावक धर्ममें दीक्षित हुए, राजाका साहागोत सौठीलारात साह कहाया, शेष गांवोंके नामसे गोत हैं, साहकी देवी चक्रेश्वरी है, शेष तिरासी ठाकुरोंकी देवी अपने राजकुलकी हैं और गांवके नामसे गोत्र चले और ८४ नाम हुए, उनके गोत नीचे लिखते हैं।

सं०	गोत्र	वंश	उत्पत्तिग्राम	देवी
१	साह	चौहाणा	खंडेले	चक्रेश्वरी
२	पाटणी	तुंवर	पाटणी	आवणा
३	पापडीवा	चौहण	पापरी	चक्रेश्वरी
४	दोसी	राठोर	सेसणि	जमवाइ
५	सेठी	मोरवंशी	सेठौल	पद्मावती
६	भौसा	चौहाण	भावसो	चक्रेश्वरी
७	चादिवार	चन्देल	चीदवारी	मातणी
८	मौठा	ठीमर	मौठोल	ओराली

सं०	गोत्र	वंश	उत्पत्तिग्राम	देवी
९	नरपत्या	सीरई	नरपत्य	ओमणी
१०	गाधा	गौड	गोधाणी	नांदणी
११	अजमेरा	गौड	अजमेर	नांदणी
१२	दरडोद्या	चोहाण	गाधहौ	चक्रेश्वरी
१३	गदिया	चोहाण	गधिहौ	चक्रेश्वरी
१४	पाहाड्या	चौहाण	पहारी	चक्रेश्वरी
१५	भूंछ	सौरईसूर्यवं०	भूछड	आमणी
१६	वज्र	सुनाल	खंडेले	मोहणी
१७	राराराऊ	राठोड़	खंडेले	मोहणी
१८	वज्रमहराया	सुनार	खंडेले	मोहणी
१९	पाटोदी	तुंवर	पाटोद	पद्मावती
२०	गंगवाल	कछावा	गंगवाणी	जमवाई
२१	पांड्या	चोहाण	पाडरीगूंथे	चक्रेश्वरी
२२	बीलाला	टीमर	वझिविला	औसली
२३	बिनाइका	महलौत	विनारल	चौथी
२४	वीरलाल	कुरुवंशी	लाडिविला	सानली
२५	वाफलीवाल	मोहल	वोकाली	जीणी
२६	सौनी	सोरई	सोनाही	आमणी
२७	कासलीदा	सोहिल	कासली	जीणी
२८	पांपल्या	साराइ	पापली	कनहड
२९	सौगाणी	कोटलू.वं.	सौगाणी	जमुनाती
३०	झाझरी	कछाहा	झंझरी	लोहणी
३१	पाला	कुरुवंशीझा	कुरुवंशी	आमणी
३२	वेद	सोरई	पावड	पावाडी
३३	टुंग्या	पवार	टौगे	सीतल
३४	वोहोरा	सोटा	वोडड	लोहणी
३५	फाला	कुरुवंशी	कुरुवंशीझः	आरोली
३६	छावरा	चोहाण	छावड	आमणी
३७	लोहाग्या	सोरई	हैहज	लोसली
३८	लुहाड्य	मोरवावंशी	लाहड	आमणी
३९	मडशाली	सोलखी	मडशाली	आमणी
४०	दगडद्या	सोलंखी	दगरौंदी	पद्मावती
४१	चौधरी	तुंवर	चौधरी	

सं०	गोत्र	वंश	उत्पत्तिग्राम	देवी
४२	पोडल्या	गहेलोत	पोटल	चौथी
४३	दगडचा	सौढा	गदीड	श्रीदेवी
४४	सांवुण्या	सौढा	सांवूण	शलराई
४५	नोपडा	चंदेल	अनोपगढ	मातरी
४६	मूलराज्य	कुरुवंशी	मूलराज	सोनली
४७	निगोत्या	गौड	नगोंती	नादणी
४८	पिंगल्या	चोहाण	पिंगल	चक्रेश्वरी
४९	मूलण्या	चोहाण	मूलनका	चक्रेश्वरी
५०	वनमाल्या	चोहाण	वनमाला	चक्रेश्वरी
५१	अरडका	चोहाण	अरडका	चक्रेश्वरी
५२	रावत्या	ठींमरसोम	रावत्यो	अरोली
५३	मोदी	टीमरसोव	मोधी	अरोली
५४	कोकरोज्या	कुरुवंशी	कोकराज	सोनली
५५	राजराज्या	कुरुवंशी	जगराज	सोनली
५६	छाहडचा	कुरुवंशी	छाहडी	सोनली
५७	टुकडचा	वुजलवंशी	डुकडी	हेमादेवी
५८	गोतवंशी	दुजली	गोतडी	हेमादेवी
५९	वारेपंडचा	दूजिल	वोरखंड	हेमादेवी
६०	सरपत्या	गोहिल	सरपती	यजीणिदेवी
६१	चरकण्या	चोहाण	चरकोनी	चक्रेश्वरी
६२	सावड	गौड	सरवाड	नांदणी
६३	नगोद्या	गौड	नगद	नांदणी
६४	निरपोल्या	गौड	विरपल	नांदणी
६५	पितल्या	चोहाण	पितलगाव	चक्रेश्वरी
६६	कलभान	दूजिल	कुलभाना	हेमालदेवी
६७	कडुवान	गौड	कडवागरी	नांदणी
६८	सोमसा	चोहाण	सौभासका	चक्रेश्वरी
६९	हलव्या	मोहिल	हलचोनी	गीणिदेवी
७०	सोमगद्या	गहिलोत	सावद	चोथिदेवी
७१	वेप	सौढा	वावला	तकरारी
७२	चौवोस्या	चोहाण	चौरारो	चक्रेश्वरी
७३	राजहंस्या	सोढा	राजहंस	संकाइ
७४	अहंकान्या	सोढा	अहंकार	संकाइ

स०	गोत्र	वंश	उत्पत्तिग्राम	देवी
७५	मुसावरी	कुरुवंशी	मुसावर	सोनली
७६	सोलससा	साठा	मारवेश्वर	संकाई
७७	भंगड्या	टीमर	भंगड	आरोली
७८	लहाड्या	मोरवंशी	लाहेड	लोसणी
७९	खेत्रपाल्या	बीजौल	खेत्रपाल	हेमादेवी
८०	राजभड्या	कछाहा	भूराइ	जमवाई
८१	जमत्रीजा	कछाहा	जलवानी	जमवाई
८२	जलत्रीजा	कछाह	नछवानी	जमवाई
८३	वैनाड्या	दीपर	वनपड	आरोली
८४	कठीवाल	सोठा	लटवो	आरोली

अथ षड्दर्शनानां षण्णवतिभेदाः ।

अथ जैनभेदाः ।

१ चौदसिया
२ पुनमिया
३ आगमिया
४ आंचलिया
५ बुटिया
६ ऊकट

अथ दिगंबराः ।

१ काष्ठ शृंगी
२ मयूर शृंगी
३ हिमाद्रूडा
४ नठात्राजागरिया
५ जागरिया
६ परणिया
७ वैसगरि
८ वैद्य
९ दूत
१० पुजारा

इति जैनभेदाः ।

अथ वौद्धभेदाः ।

१ चांदा
२ सानघडिया
३ दमडा
४ डांगरा
५ भूदतवाल
६ कमालिया
७ मूलथाणिया
८ पेटफोडा
९ भाड
१० चिट
११ पाइमा
१२ दुरा
१३ मरोडा
१४ गुणघुली
१५ जगहीचया
१६ वोगचेडिया

इति वौद्धभेदाः ।

अथ चार्वाकभेदाः ।

१ जोगी
२ हरमेखलिया
३ इंद्रजालिया
४ नागदामनि
५ तोतलमति
६ माटमतिया
७ उरुकुलमती
८ गोमभनिया
९ नमोधनेतरि
१० रसाणिया
११ धनुर्वादिया
१२ भिक्षु
१३ तुम्बर
१४ मंत्रवादि
१५ शास्त्रकमि
१६ यात्रदायक
१७ नोरसिया

इति चार्वाकाः

अथजैमिनिभेदाः ।

१ ब्राह्मण
२ वास्तिय
३ अग्निहोत्री
४ दीक्षित
५ याज्ञिक
६ उपाध्याय
७ आचार्य
८ व्यास
९ ज्योतिषी
१० पंडित
११ चतुर्मुखपा०
१२ कथकः
१३ केहुलिया
१४ वैष्णव
१५ कउतगियः
१६ वडुमा
१७ माट

इति जैमिनि० ।

अथ सांख्यभेदाः ।

१ भगवन्	९ छंगा
२ त्रिदंडीयः	१० गुगलिया
३ स्नातकाः	११ ढंभिंक
४ चांद्रायणः	१२ गलवहडिया
५ मौनिया	१३ शंखिया
६ गुणिया	१४ कलेसरिया
७ कविया	१५ अवतारिया
८ कुराडा	१६ स्वामिया
	१७ नागरिया

इति सांख्यभेदाः ।

अथ नैयायिकभेदाः ।

१ भरडाः	९ नग्नाः
२ शैवाः	१० अयाचकाः
३ पाशुपताः	११ एक भिक्षु
४ कापालियाः	१२ धाडिवाहा
५ घंटालाः	१३ आमरी
६ पाहूया	१४ पथियाणा
७ आकडाः	१५ मटपति
८ केदारपुत्राः	१६ चारर्पी
	१७ कावमुखा

इति षड्दर्शनानां षण्णवतिभेदाः समाप्ताः ।

वेलके गुथेहुए सातशतसंज्ञावली पत्र.

श्री.	**क.**	काकडा	कील्पा
श्रीचंदाणी	कौठारी	कदसूरा	कीपा
श्रीचंदौत	कौठारी	केसावत	कर्मसौत
अ.	कौठारी	करनाणी	करनाणी
अजमेरा	कौठारी	कांकन्या	कहरा
आगीवाला	कौठारी	कान्हाणी	क्रमसानी
आमखड	कौठारी	किसतन्या	कालाणी
आसवा	कौठारी	केरा	कलावत
आसौफा	केला	कर्मचन्दौत	कला
अठासण्या	कला	कपूरचन्दौत	करमा
अठेरण्या	केल	काल्या	करवा
अपेसिंगौत	क्याल	कौज्या	कौकाणी
अठास्यां	कयाल	कूकड्या	करणानी
अग्रपाल	काला	कुलध्या	काहौर
अरजनाणी	कदाल	कलाणी	काग्या
अटल	कसेरा	कांकाणा	किलल
ई.	कोडयाका	कःलाणी	कसुवावाल
ईनाणी	कूया	कलंत्री	कुचकुच्या
उ.	काहा	कलंक्या	कुंभ्या
ऊलाणी	कानूंगा	कांकांणी	**ष.**
ऊनवाल	कचोल्या	कवरा	षरड (सारड)
ऊंधार्णी	कासद	कंसूम	षरड (षठवड)

परड (ऊवर)
पडर(चेचाणी)
पूंच्या
पुवाल
पागदा
पटमल
पावर
पेमाणी
पेताणी
पटवड
पेतावंत
पोडावाला
परनालिया
पावाणी
पींवड्या
पूमडा
पलीवाल

ग.

गगराणि
गींदौड्या
गरविया
गायलवाल
गंगड
गौन्या
गिलगिलिया
गौकन्या
गुडचक
गीगरा
गुलचट

घ.

वीया
वरडौल्या
घूवन्या

च.

चोधरी
चोधरी
चोधरी
चोधरी
चोधरी
चोधरी
चोधरी
चोधरी
चोधरी
चोधरी
चिगनौंडा
चरषा
चोंपडा
चहाडका
चिमक्या
चमड्या
चेनान्या
चितलंगी
चापटा
चांवंडया
चतुरभुजाणी
चमार
चापसाणी
चौषाणी
चंडक
चांच्या
चेचाणी

छ.

छापरवाल
छाछ्या
छींतरका
छुन्या

ज

जाजू
जेथल्या
जाषेठिया
जेषाणी
जुजेसस्या
जौला
जटाणी
जेठा
जालाणी
जिंदाणी
जूहरी
जेरामा
जजनोत्या
जुगरामा

झ.

झवर
झीतड्या
झारलरिया
झालरिया

ट.

टौपींवाला
टीलावत
टुवाणी

ठ.

ठाकुराणी
ठींगां

ड.

डागा
डावा
डामडी
डौडा
डाड
डडी
डाणी
डापेडा
डाल्या
डांगरा
डौडया
डौडमहूता
डचक्यौड्या

ढ.

ढेढ्या
ढौली

त.

तुलावडया
(जाजू)
तापड्मा (वागई)
तापडया
तौसणीवाल
तहनाणीं
तैला
तेजाणी
तौडा
तिरथाणी
तौतला
तुलाछाणी
तूमड्या
तुरक्या
तौरण्या

थ.

थिरराणी
थेपड्या

द.

दागड्या
दादड्या
दमाणी
दमाणी
देवगठाणी
देवदताणी
दुठाणीं
दुरगाणीं
दरक
दगडा
दादल्या
दमलका

दास
दग्गा
दरावन्या
दुजारा
दुरावत
दुसाज
द्वारकाणी
देवराजाणी
देवावत
दूदार्णी
देसवाणी
दंताल
दरगण
देवपुरा
दिहराजार्णी
दसवार्णी

ध.

धूपड़
धूत
धोलेसरया
धारूका
धीरण
धौल
ध्रौल
धौल
धारार्णी
धीरार्णी
धीपर्णी
धरार्णी
धनार्णी
धनार्णी
धनार्णी
धनद
धंणवाल

न.

नौसन्या
नौसन्या
नावघर
नरेसण्या
नुगरा
नरड
नागोरी
नेत्रर
न्हार
नगवाड्या
नेसतौत
नाटार्णी
नौलपा
नेतार्णी
नथार्णी
नानगाणी
नरेशणी
नापाणी
नानधराणी
नाग
नोगजा
नवाल
नगपोच्या
न्याती
निकलंक
नरार्णीवाल
नरवर
नाडागट
नेणसर
नरेड्या
नांगल्या

प.

पसारीवंम
पसारी (मिणीया)
पसारी (विहाणी)
पसारी (मूंघणां)
पुंगल्या
पूल्याछौ
पूगल्या
'जलिया
पूनपाल्या
परसावत
परमसमा
पांत्या
पनार्णी
पीयाणी
पापड़्या
पलौड
पार्चीस्या
प्रतिसिंगौत
पदार्णी
पीनार्णी
पूरावत
पडच्चीवाल
पीपाणी
प्रगाणी
पौसन्या
पौरवार
परवार
पटवारी (साडरा)
पटवा (वंग)
पटवा (तोवल)
पट (चंडक)
पट (सारडा)
प्रहलादाणी
प्रहलादाणी
पडवाल
पेड़िवाल
परताणी
'पालाब्य

फ.

फौफल्या
फौफल्या
फौगीवाल
फतेसिंगौत
फांफट
फूलकचौल्या

व.

वजाज
वेहेड्या
वेजारा
वाडरड
वनाणी
वत्रागणी
वौथाणी
विसहर
वगढाणी
वापेचा
वालेपौता
वावरी
विसताणी
वंग
वसदेवाणी
वेकट
वडिया
वाघेका
व्रजवासी
विहाणी
वडहका
वाजरा
वछाणी

चापडौता
वेजारा
विठाणीं
वहाडका
वाहेती
वील्या
वावलाणीं
वासाणी
वुगडाल्या
वटंडया
वायाणी (रागी)
वाया (वोहवी)
वायला (राग)
वावला (वाहोति)
वंत्र
वंवू
वूव

भ.

भौलाणी (राठी)
भौलाणी (हुरकट)
भाकराणी (राठी)
भाक (भूत्रड)
भाकरोघा (लठ)
भाक (तौसणी)
भया (राटी)
भया (चंडक)
भया (लपौष्य)
भगत (झंवर)
भ (कावरा)
भूरा (मालपानी)
भन्साली
भलीका
भराणी
भावनात

मांगडया
भैराणी
भूत
भकड
भौजाणी
भूरिया
भौजाणी
भटड
भाला
भूतडा
भंडारी
भागचंदौत
भकावा
भिचलाती
भूक्या
भीषाणीं
भुराडूमा
भुवानीवाल
भगूत्मा
भूल्या

म.

मेंडौवरा
मांनाणीं
मडदा
मजीवाल
मक्या
मकर
मिरच्या
मात्या
मातेसरया
महेसराणी
मूंजी
मौराणी
मूघाड

मीचरा
माहलाणा
मरौडी
मलावत
मल्ल
मलड
माल
मिज्यानि
मौडा
मोहाणी
मेण्या
माडा
मंजीडा
मडिया
मुकनाणीं
मुंद्याणीं
मालीवाल
मावाणी
महराठाकुराणी
मेडिया
मथराणी
माघाणी
मानावत
मरचूचा
मदसुदनौत
मानसिंगौत
महरा
मरौठिया
माराणी
मछर
मैदानी
महदाणी
मांडम्या
मुरक्या

मालपाणीं
मैनाणा
मैठड्य
मूंगड
मेमाणी
मुत्राणीवाल
माणम्या
मंत्री
मुकनाणी
मांधीणा
मणियार
माइम्या
महरा
मनक्या
मूणदासौना
मूछाल
मौलासरया
मांणूघण्या
माघूघणा
मामौली
माणक्या
मालाणी
मालाणी
मालाणी
मीमाणीं
मीमाणीं
मुलतानी
मुलतानीं
मुलतानी
मौदी
मौदी
मौदी
मौदी
मौदी

मलक नटाणीं
मीलक
मीमाणीं
मूलाणी
मुडुलाणीं
मुसाणी
मुसाणी
मौड
मूथा

र.

राय
राय
राय
राय
राय
राय
रूप
रुड्या
रूड्या (वाहेती)
रामावत (रोगी)
रामावत् (वजाज)
रूपार
रूया
रूधा
रावाणी
रामाणी
रणदोता
राघवणी
राह्न्या
राईवाल
राजमहूता
रावत्या
रौल्या
रामचंदौत

राहूडा
राठी
रतनाणी
रांदरड
रूपाणी
रदाणी
रधाणी
रेणीवाल
रीमाणी

ल.

लोहौटी
लठा
लौईवाला
लंवू
लालावत
लौईक
लपावत
लेषणिया
लषासचा
लौगई
लाठी
लदड
लपौव्या
लौलण
लटुन्या
लीकासण्या
लालचंदौत
लषाणी
लूलाणी
लूणाणी
लषवाणी
लालाणीं
लौलाणी
लौवा (पाहेती)

लोरविहाणी
लौसल्या (पटवड)
लौंस (पलौड)
ललाणी
लालणियां

स.

सौनी
सारडत
तमवाणी
सेठ
सोमावत
सुरमा
संतुन्या
साह
सातसाणी
सूंवा
स्याहार
सिंधी
सूम
सीलाणी
सीलार
सौटाणी
सिकची
सहणा
सौनकचाल्या
सुजाणी
सुरचा
साहणी
साहताडी
सुरजन
सीहाणीं
सेठी
समाणी
संकर

सकरव
सालाणी
सेणां
सागर
सावल
सुन्दराणी
सीघड्मा
साहा
सांवलका
सादाणी
सामाणी
सावताणीं
स्यहरा
सोन
सैमाणी
सौमाणी
सकराणी
सकराणी
सेसाणी
सेसाणी
सिंगी
सिंगी
सिंगी
सुवाणीं
सुवाणी
सराफ
सांमरया
सांमरया
सकरेण्या
सावू
सावूण्या
सरवइया
सुजाणी

ह.

हेडा

हींग्या
हींगडे
हरकाणीं
हौलणी
हडकुटिया
हरकेट
हलद्या
हौलासरया
हरिदालौत
हरचन्दाणी
इति

अथ दिल्ली मंडलके संपूर्ण जातिके महाजन ।

श्रीमाल
श्रीश्रीमाल
श्रीखंड
श्रीखंडा
श्रीगौड
गोलवाल
मोंगवाल
गंमरवाल
गोधराल
गोलाल
गुढेल
गाहोई
गंगराडा
गोलाचाडा
गोलराड
गूजरा
मींदौडिया
गुरवार
गीगन्धु
गोल्पुरा

गौलसिंघाडे
गौलापूर्व
गोरारेजैनी
छींपी
चौरंड्डिया
चौरडिया
चीतौडा
चक्कड
चतुरथ
चुडेलवाल
चौकसा
चकचाप
श्रीगुरु
कटाडा
कठनेरा
कांकरिया
कखस्तन
चित्रपाल
चाल
जम्बूसरा
दायलवाल
जालौरा
जानौरा
जादू
जेसवाल
जोजरा
जोधपुरा
जुइवाल
झालरा
टगचाल
टींटोडा
टंटेरिया
डीडू
डिडउम्मर

डूसर
दूसर
तनवाल
तरौंरा
दंसवास
देहीवाल
दसौरा
दीसावाल
दिल्लीवाल
धाकड
कपौला
कूसन्या
कुरंदवाल
कोहले
कौनढ
धवलकौस्टी
नरनाया
नरसिवा
नरसिंहपुरा
नाराणीवाल
नवामरा
नातिया
नागर
नारनगरेसा
नागिंद्रा
नाथचल्ला
नाछेला
नागोरी
नेकवर्न
नेमा
नौटिया
पल्लीवाल
पदमावतिपार

पोरवार
पसापा
पवारछिया
पारख
पिबादि
परवाल
पौहकवाल
पौसरा
पंचम्
कंदोइया
कमोइया
कारेगराथा
कौमठी
कसारा
पंवाड
पोकरा
वघेरवाल
वारछवाल
वरमाका
वदवइया
वरैया
वदनौरा
वडगूजर
वहोरिया
विरमाका
वगौला
वालमीकि
वागडिया
वण्हिया
वीजावरगी
विदियाद
वैंस
वैशंपायन
वेदवर्गी
वेहड्या

वैराठिया	महागदे	लौहिता	सौंहार
वोगार	माहया	लहेलवाल	हरसौरा
वमर	माटिया	सडीइया	हलदिया
वडेला	मूरले	संवीधिया	हरद
भटनेरा	मेरतुवाल	संगनार	हाकरिया
भवनगे	मेवाडिये	सरावगी	हूमड
कथार	मौडचतुर्वेद	साढ	अजमेरा
कागटवाल	मौडमांडल	सिरौहा	अवकथवाल
कंसवे	रत्नकरा	सुखंडरा	अगरवाल
कसुंबीवाल	राजपुरा	सुराम	अजौधिया
कसरवानी	रंगीलपुरा	सुनवानी	अडालिया
भाकरिया	राजिया	सुरंद्रिया	अट्ठसका
माठिया	राजकुली	सेरिया	अहिछते
भावसाररगारे	खंडेलवाल	सौहिले	अष्टवार
भांग	खेढावाल	सोरठवाल	अस्तकी
भूंगडवाल	खेमवाल	सोहिलवाल	आनंदे
भूरला	खंडेर	सौधितवाल	आरौडा
भुजपुरे	खटौडा	सैारंडिया	ओसवाल
भटेरा	रायकवाल	सानेइया	अंड्डवाल
मत्तवाल	राजूत्याती	खतूरी	इन्द्रपुरा
मलिनघोर	रस्तौगी	खंडवस्त	इक्ष्वाकुवंशी
महत्या	लवेचू	खरुवा	उत्तवाल
माहेश्वरी	लवाणा	खडायते	उम्मर
माथुरिया	लाड	गोइलवाल	उदेपुरा
पाहुरे	लिङ्गावत	सौरमिया	

गहोई ।

यह एक वैश्य जातिका उपभेद है, यह जाति बुंदेलखण्ड मुरादाबाद झांसी जालौन ललितपुर आदि नगरोंमें विशेष रूपसे निवास करती है, इसका मुख्य निवास बुन्देलखण्ड है, पिंडारियोंके आक्रमणमे दुखी होकर वह जाति देश देशान्तरोंमें फैल गई है, कोई कहते हैं अपनेको व्यापार कुशल रखनेके कारण प्रत्येक विषयको यह गुप्त रक्खा करतेथे, इसकारण लोग इनको गुप्तही कहने लगे, पीछे गुहोई गहोई और गही नाम पडगया, एक पानडे ब्राह्मणने विपत्ति कालमें इनकी बडी रक्षा की थी, इनके बारह गोत्र और १०२ अल्ल कहीजाती हैं, वासिल, धोयल, गंगल, वंदल, जैतल, कंथिल, काछिल, वाछिल, कश्यप,

भूरल, पाटिया, और सिंगल । विवाह इनमें गोत्र बचाकर होताहै, यह प्रायः वैष्णव धर्मावलम्बी होते हैं परन्तु कहीं २ आचारभ्रष्ट भी हैं, कुलदेव इनके विहारीजी हैं, युक्तप्रदेशमें यह जाति कोई ४० सहस्र है, कोई इनमें यज्ञोपवीतधारी हैं कोई नहीं हैं, इनके यहां ब्राह्मण पकान्न भोजन करतेहैं, गौड ब्राह्मण इनके पुरोहित है, पोरवाल, पुरवार, खरौवा, पोरवाल वैश्योंके साथ इनका पकान्न भोजन व्यवहार है, बूंदेलखंडमें पाटिये ब्राह्मण इनके यहांका दान पुण्य लेतेहैं ।

द्वादशश्रेणी (बारहसेनी)

राजा वल्लालसेनके समय जो जाति विभाग हुआ था, उससमय वैश्य जातिकी चौदह श्रेणीतकका पता लगता है, चौसेनी, बारह सेनी, दस्से, इत्यादि नामोंसे यह लोग प्रसिद्ध हैं, और सब वैश्य हैं, इनके संस्कारभी होतेहैं, और सब व्यापार तथा दुकानदारी करते हैं, इनके गोत्र अल्लु आदिमी हैं, और विवाह सम्बन्ध आदि गोत्र बचाकर करतेहैं ।

पल्लीवाल ।

मारवाड और जोधपुर राज्यके अन्तर्गत पल्लीनगरमें निवास करनेके कारण यह सम्प्रदाय पल्लीवाल नाममे विख्यात हुई, इसदेशके निवासी ब्राह्मण भी पल्लीवाल नामसे विख्यात हैं ११९६ खृष्टाब्दमें राठौड राजाने पल्ली नगरमें अधिकार किया, उससे बहुत पहले यह नगर एक वाणिज्यकेन्द्र माना जाता था, यह जैन और वैष्णव मतावलम्बी हैं, आगरा और जौनपुर विभागमें बहुसंख्यक पल्लीवालोंका वास है ।

पुरावाल ।

गुजरातके पोरवा पोरवन्दरके वास होनेसे यह पुरावाल कहकर प्रसिद्ध हैं, इससमय ललितपुर, झांसी, कानपुर, आगरा, हमीरपुर, बांदा जिलेमें, इसजातिके बहुत लोग रहते हैं, यह यज्ञोपवीत धारण नहीं करतेहैं, श्रीमाली ब्राह्मण इनका पौरोहित्य करते हैं, अहमदाबादके विख्यात धनी महाजन भागुबाई पुरोवाल वंशोत्पन्न हैं ।

माटियागण राजपूताना वासी हैं, यह अपनेको राजपूत बताते हैं । किन्तु भट्टि जातीय राजपूतोंसे यह सर्वथा पृथक् हैं, यह जाति विलायती कपडेकी सौदागरी करती है, बम्बई पंजाब और करांची बंदमेंही इनका प्रधान वास है ।

अग्रहारी ।

बनारस विभागमें बहुसंख्यक अग्रहारी निवास करते हैं, यह निरामिषाशी और उपवीतधारी हैं, आरा जिलेके निवासी अग्रहारी शिष्य धर्मावलम्बी हैं, परन्तु वर्णविवेकचन्द्रिकामें इस जातिमें सांकर्य पाया जाता है, यथा (अग्रवालस्य वीर्येण संजाता विप्रयोषिति । अग्रहारी कसवानी माहुरी संप्रतिष्ठिताः) अग्रवालसे ब्राह्मणीमें अग्रहारी कसवानी और माहुरी हुए परन्तु यह विलोम होनेसे वैश्य न होने चाहिये, परन्तु यह वैश्य हैं, इससे उपरोक्त वचनमें शंका होती है । कोई कहते हैं इन्होंने भोजनमें सबसे पहले खालिया इससे अग्रहारी हुए, कोई अगरोहा निवासी मानते हैं, गवर्नमेंटने इसको छठी श्रेणीके वैश्योंमें आमिलीमें लिखा है इनका खान पान उज्ज्वल है ।

धूसर ।

दिल्ली और मिर्जापुरके मध्यवर्ती गंगाके निकट प्रान्तमें इनका निवास है, गुरगांव जिलेके निकट रिवाडी नगरके धोरे धूसी नामक गण्डशैलके नामसे यह धूसरी वा धून्सी नामसे प्रसिद्ध हुए, यह सब वैष्णवमता-

वलम्बी हैं, यह बडे धनशाली भूम्यधिकारी हैं, प्रसिद्ध हैमूवैश्य इसी वंशका था, जिसने सवालाख फौज लेकर बादशाहका मुकावला किया और ९६४ में गिरफ्तार होकर मारागया, कसवे रिवाडीके समीप गुडगांवके समीप धूसी है उस स्थानमें च्यवन ऋषि तपस्या करते थे कहाजाता है, धूसर उन्हींके वंशज हैं, उस पर्वतपर एक तालाव और मठ है, और मठके द्वारपर एक चिह्न गौका है, वहां इस जातिके लोग दर्शनको जाते हैं, और सरोवरमें स्नानकर दर्शन करते हैं, कार्तिक और वैशाख शुक्ल पूर्णिमाको यहां मेला होता है।

उसमार वैश्य।

आगरा और गोरखपुरके मध्यस्थित भूभागमें और कानपुरके जिलोंमें इस श्रेणीके वैश्य निवास करते हैं, विहार प्रान्तमें भी इनके दस पांच घर हैं, पिताकी मृत्यु न होनेतक यह यज्ञोपवीत धारण नहीं करते हैं।

कुंवार वैश्य।

कहाजाता है एक वैश्य वर्णकी स्त्री दैवी इच्छासे गर्भवती हुई उसके वंशज कुमारवैश्य कहाते हैं।

खोवी।

ग्वालियर प्रान्तमें यह जाति पाई जाती है और वहां दूकानदारी करते हैं।

रस्तोगी।

उत्तरके देश तथा लखनऊ, फतहपुर, फर्रुखावाद, मेरठ, आजमगढ आदि युक्तप्रदेशके प्रधान नगरोंमें इस जातिका विशेष निवास है, कलकत्ता और पटनेमें भी वाणिज्यके लिये यह लोग जा वसे हैं, यह विशेषकर वल्लभ सम्प्रदायके शिष्य हैं, उसमार वैश्योंके समान यह भी पिताकी मृत्यु होनेपर यज्ञोपवीत पहरते हैं,इनमें आमठी, इन्द्रपति और मनहारिया नामसे तीन थोक हैं।

कसरवानी और कसौधन।

युक्तप्रदेश और विहार प्रान्तमें इनका विशेष निवास है, इनमें सामान्य दूकानदारीका व्यवसाय है, किन्हीका कहना है कि कांस निर्मित द्रव्यके व्यवसायी कंसवणिक कहाये, सम्भवतः उसी नामके विगड जानेसे यह कांसर वा कसरवानी प्रसिद्ध हुए, कोई ऐसाभी कहते हैं कि कसौधन शब्द कसानधन शब्दका अपभ्रंश है, कसरवाणीभी कृष् वणिक् शब्दका अपभ्रंश है, इनमें शिक्षा कम ग्रहण करते हैं, यह यज्ञोपवीत भी अवतक नहीं पहरते, कोई २ विधवाविवाह करते हैं, वनारसी कसरवाणी रामोपासक हैं, मिर्जापुरमें विन्ध्यवासिनीकी पूजा करते हैं, किन्तु पशुवलि न करके उसको देवीके समीप छोड देते हैं। लखनऊ, फैजावाद, जौनपुर, और मिर्जापुरमें यह विशेष, है, कसौधन जौनपुरियोंका विवाह मिर्जापुर और जौनपुर तथा प्रयागमें होता है, कसौधन लखनौके अच्छे घरानेमें हैं, फैजावादी इनसे न्यून हैं।

लोहिया।

प्रधान रूपसे लोहेका व्यवहार करनेसे यह जाति लोहिया कहाई, इनमें कोई २ वैष्णवधर्मी होते हैं कोई २ यज्ञोपवीतभी पहरते हैं।

सौनियां।

सुवर्णवणिक वंगालके सुवर्णवणिक सम्प्रदायके समान यह धनशाली नहीं हैं, वनारसी सौनियांगण गुजरातसे यहां आकर वसे हैं, स्वर्णका क्रय विक्रय करना इनका काम है।

शूरसेनी।

मथुरा देशका प्रथम नाम शूरसेन था, वहींके निवाससे यह शूरसेनी कहाते हैं।

वरसेनी।

मथुराके समीप वरसानेके निवासी वैश्य वरसेनी नामसे प्रसिद्ध हैं, यह धनवान हैं, मथुरा प्रान्तमें इस जातिके बहुत लोग निवास करते हैं।

अयोध्यावासी।

अयोध्यामें निवास करनेके कारण यह वैश्य अयोध्यावासी कहाये, युक्तप्रदेशके अनेकस्थान और विहार प्रान्तमें इनका निवास है।

जैसवार।

अयोध्याके समीप रायबरेली जिलेके सालौन विभागके जैस परगनेमें वास होनेसे यह जैसवार कहातेहैं।

महोविया

हमीरपुर जिलेके महोबा नगरके रहनेवाले महोविया वैश्य कहाते हैं।

महुरिया।

विहार और गंगा यमुनाके अन्तर्वासी वणिक् महुरिया नामसे प्रसिद्धहैं, कोई २ इनको रस्तोगी वैश्यों की शाखा समझतेहैं, यह कृषक गणोंको मंजूरी देकर ईखकी खेती करातेहैं,और खांडका व्यवसाय अधिक करतेहैं,इनमेंभी शिष्य सम्प्रदायके समान तमाखू नहीं पीतेहैं तमाखू पीनेवाला जातिसे बाहर करदिया जाताहै।

वैश्यवनिया।

विहार प्रान्तमें इनका वास है,यह पीपल और कांसी आदिके वर्तन वेचते हैं, कोई कोई खेतीभी करते हैं। कमाऊंकी वैसवावाई जातिमें और इनके आचार व्यवहारमें कोई भेद नहीं है।

काठवैश्य।

विहार प्रान्तमें इनका निवास है, यह पण्यद्रव्यका क्रय विक्रय करते हैं ऋणदान तथा कृषि इनका प्रधान व्यवसाय है, मैथिल ब्राह्मण इनके पुरोहित होते हैं, इनका आशौच तेरह दिनका होता है।

जमर्यवैश्य।

युक्तप्रदेशके इटावा जिलेमें इनका निवास है, यह अपनेको प्रह्लादका वंशधर बताते हैं।

लोहना।

यह भाटिया जातिकी अन्यतम शाखा है, सिन्धु प्रदेशमें इनका निवास है।

रेवाडी।

गुडगांव जिलेके रिवाडी नगरमें इनका आदिम निवास है, गया जिलेमें भी इनकी कुछ वसतीहै, यह सूती कपडेका व्यवसाय करते हैं।

काणु।

यह सामान्य: दूकानदार और खाद्य द्रव्य बेचते हैं।

रातगा (रोहितकी)।

मुरादावाद और उसके प्रान्तमें यह लोग विशेषकर पाये जातेहैं, । इनमें कितने एक यज्ञोपवीत भी पहरतेहैं यह अपना निकास रोहतकसे बताते हैं, कोई अपनेको रोहित वंशी कहते हैं।

रस्तोगी ।

रोहतकी और रस्तौगी एकही रूपमें माने जाते हैं, पश्चिममें अधिक पाये जाते हैं अग्रवालोंके समान स्वच्छता और व्यवहार मानते हैं।

वैष्णव ।

वैष्णव नामधारीभी एक प्रकारके वैश्य होते हैं, इनके आचार विचार मामूली वैश्यों जैसे होते हैं ।

रू ।

यह अकबराबाद और उसके समीपमें बहुतायतसे पाये जातेहैं दुकान और व्यापारिक धन्धा करतेहैं ।

पुरवार ।

यहभी वैश्योंकी एक अच्छी जातिहै, यह वैष्णव होते हैं,तथा दुकानदारी और व्यापार करते हैं ।

साध ।

फर्रुखाबादमें यह जाति पाई जातीहै,एक मुहल्ले सधवाडेमें इनके अनेक घर पाये जाते हैं, यह अपनेको वैश्य कहतेहैं, उसमें यदि अन्य वर्णका कोई पुरुष मिलजाय तो वह साधा कहलाता है ।

उमर ।

यहभी अपनेको वैश्यवर्ण कहते हैं, इनमें तीन श्रणी हैं, तिल, उमर, दूध, उमर, और दूसरे कोडा, जहानाबाद, फतहपुर आदिमें तिलउमर भलेपुरुष गिने जातेहैं, इनमें विधवा विवाह नहीं होता, शेष दो श्रेणियोंमें होता है ।

उनाया ।

उनाया एक प्रकारके अपनेको वैश्य कहतेहैं, कोई२ कायस्थोंमें इनको बनातेहैं, पर यह बारह जातिके कायस्थोंमें नहीं हैं ।

माहुर वा माथुर ।

इन वैश्योंके भेदही माहुर माहौर माथुर हैं कोई तीन वारे सातवारे कोई चौसैनी कोई दलपतिया बढपातिया) गुल्हरे श्यौहर विथमी आदि अनेक नामोंसे पुकारे जातेहैं,इस माहुर जातिके लोग आगरा, एटा, अलीगढ,चन्दोसी, फर्रुखाबाद, धौलपुर, रिवाडी, अलवर और मुरादाबादमें निवास करते हैं, परन्तु भिन्न २नामोंसे पुकारे जानेके कारण अनेक भागोंमें विभाजित होनेके कारण एक दूसरेसे पृथक् होरहे हैं, परन्तु अब कुछ २ सम्मिलित होते जाते हैं।

१ श्रेणीमें आगरा पिनाहट इरादत्त नगर और शमसाबाद आदि स्थानोंमें अपनेको माथुर वैश्य कहते हैं ।

२ श्रेणीमें ऊंचागांव, वहादुरपुर, रुस्तमगढ, फर्रुखाबाद, उब्बारागंज आदि स्थानोंमें रहते हैं ।

३ श्रेणीके लोग चन्दोसी, मुरादाबाद, रिवाडी, हसनपुर आदि स्थानोंमें वसते हैं और सातवारे माहौर चढपतिया गुलहरे चौसैनी और श्यौहर आदि कहाते हैं ।

४ एकदल अलवर जयपुर चित्तौर आदि स्थानोंमें निवास करता है मथुराप्रसादसे इरादात नगरवालोंने कहा है हमलोग माथुरवैश्य हैं, माथुरका बिगडकरही माहुर होगया है, इसलिये अपनेको माथुर कहना ही उचित है, कारण कि पूर्वमें कलाल भी अपनेको माहौर कहते हैं, एक माथुर वैश्य ला० गुलबरायने कहा कि माथुर वैश्यनाम १९४२ में रक्खा गया, कहा जाता है कि प्रतापसिंहको अनन्त रुपया देनेवाला इसी माहुर वंशका था। कहाजाता है कि इनके पूर्वज मथुरापुरिके बीच मौहौरे पौरिमें

रहते थे, और उस पौरिसे निकलकर इधर उधर बसे तब माहुर कहलाने लगे परंतु इस बातसे यह सिद्ध होता है कि हम चन्द्रवंशी हैं महाउरकी सन्तान, इस महाउरसे चन्द्रवंशका तीसरा कुल उत्पन्न हुआ है। महाउरु चन्द्रवंशी ययातिका तीसरा पुत्र था यह नाम यथार्थमें उरु है कोई २ इसको तुर्वसु भी कहते हैं, इससे विदित होता है कि यह उरुवंशी जिसका राज्य मथुरा आदि स्थानोंमें था उसके वंशजही माहौर कहाये।

१६६९ में जहांगीरके समय धौलपुरमें रम्माशाहने एक मंदिर बनवाया था उसमें जातिका नाम माहुर-माथुर ऐसा स्पष्ट खुदा हुआ है, एक नगर राजपूतानामें महोर है एक साहब कहते हे राजपूतानेका वाचक माहौर है यहांसे निकले हुए लोग माहुर कहाये, परन्तु जो नीच जातियां यहांसे वाहर हुईं वे माहौर सुनार, माहौर कोली, माहौर वढई कहाये, मध्व राजपूताना माहौर कहाते है, एकमत ऐसा ही है माहौर महत्त्वप्रकाशमें ३६ राजकुलोंमें एक माहौर Mahor जाति नम्बरमें ३० में पढी है, इससे वे लोग अपनेको क्षत्रिय होनेका प्रमाण देते हैं, पर हमारी समझमें क्षत्रिय होनेका इस जातिमें कोइ पुष्ट प्रमाण नहीं। समस्त असली क्षत्रिय यज्ञोपवीतधारी होते हैं, पर हमने स्वयं देखा है अबसे वीसवर्ष पहले इनमें सौ पीछे पांचभी यज्ञोपवीतधारी नहीं थे, रीति रिवाज वैश्योंकीसी है, इनमें जोकराव या धरेजा करलेते हैं वह कचे कहाते है, कोई महावर और हौरमा माहुर एकही मानते हैं यह वडी भूल है महावर जाति माहुर जातिसे पृथक् है।

कमलापुरी जौनपुरी वैश्य।

यह वास्तवमें कमलापुरके रहनेवाले हैं पीछे जौनपुर आरहे इनमें कुछ धनीभी है और कमलापुरी उपनाम जौनपुरी कहाते हैं, वाचस्पत्य बृहदभिधानमें कमलापुरका वर्णन है (कमलालये महालक्ष्मीः कमलाख्यो महेश्वरः) राजतरंगिणीमें तरंग ४ श्लोक ४२४ (रजा मल्हाणपुरकृच्चक्रे विपुलकेशवत् । कमला सापि नाम्ना स्वयं कमलाख्यं पुरं व्यधात्) कर्मविपाक संहिताके नवतिशत (१९०) अध्यायमें (पश्चिमायां महादेवि जवनस्य पुरं महत्) इन प्रमाणोंसे जवनपुर और कमलपुर पाया जाता है। वैश्य लोग लक्ष्मीके पूजन करनेवाले होते हैं,लक्ष्मीका नाम कमला है, कमलापुरके रहनेसे कमलापुरी कहाये, मलन्दन और काश्यप आदि इनके गोत्र हैं।

कथवनियें।

यह विहार प्रान्तकी वैश्यजाति है, उनमें कुछ खेतिहर भी हैं, किन्हींको इनके वैश्यत्वमें सन्देह है।

कमाठी।

यह तैलंगदेशकी प्रतिष्ठित वैश्योंकी एक जाति है वहां ये अग्रवालोंके समान उच्चश्रेणीके वैश्य माने जाते हैं, यह कहीं लिंगायत कहीं भास्कराचारी और कहीं शंकराचार्यके अनुगामी हैं, यह अभक्ष्य भक्षण नहीं करते हैं,किन्हीका कहना है कि यहे मातुल कन्याके साथ विवाह करलेते हैं।

कपडिया।

यह जाति कहीं कपडिया कहीं खपरिया बोली जाती है, कहीं यह भिक्षावृत्ति कहीं व्यापारी कहाते हैं, कपडेकी गांठ लादते तथा विसांतगीरीका काम करते हैं, और वैश्य कहाते हैं।

कुरुवार।

यह जाति एटा, बरली, वदायूं,सीतापुर, मुरादाबाद, आदि जिलोंमें निवास करती है, वदायूंके जिलेमें विशषरूपसे है,यह कहीं करवाहिर, कहीं करवार, कहीं कुरवार कहाते हैं।

कोमाठी।

यह गुजरात देशकी एक उच्च वैश्य जाति है, यह तैलंगियोंसे मिलती है, हलवायीपनका काम भी करती है, इसके हाथका पक्का भोजन वहां सब कोई करते हैं।

कंगोरा।

यह दक्षिणदेशीय एक वैश्योंकी जाति है, इसका दूसरा नाम वोगडा है यह लोग पीतलका काम करते हैं यह अपनेको वैश्य कहते हैं, परन्तु कोई इनको क्षत्रिय और कोई शूद्र कहते हैं।

गुडिया।

उडीसा प्रान्तमें हलवाईका काम करनेवाली एक वैश्य जाति है, गुडकी मिठाई बनानेके कारण इसका गुडिया नाम हुआ।

गारत।

यह राजपूताना प्रान्तकी एक वैश्य जाति है, इसमें बहुत छोटी अवस्थामें कन्याका विवाह करते हैं, इसमें सहस्र पीछे सौ विधवा बताई जाती हैं।

गौरी।

यह भी तैलंग जातीय कमाठी जातिका एक भेद है यह लोग बडी शुद्धतासे रहते हैं।

अढ्य।

बंगाल प्रान्तीय सुनार वनियोंका एक भेद है।

उर्वेला।

एक गुजरात देशकी एक वैश्य जाति है वह लोग यज्ञोपवीत पहनते हैं व्यापारमेंभी प्रवीण हैं।

कपोला वैश्य।

यहभी गुजराती वैश्योंकी एक जाति है, इनके आहार व्यवहार शुद्ध हैं यह वैष्णवधर्मावलंबी हैं कुछ जैनी भी हैं कपोलाजातिके पुरोहित भी कपोला ब्राह्मण होते हैं, इनका वृंतान्त इस प्रकार है कि कण्व ऋषिकी आज्ञासे गालवऋषि सौराष्ट्रदेशमें गमन करके वहांसे शीलसंपन्न ३६ सहस्र वैश्योंको कण्डव ऋषिके आश्रममें लेआये, वहां ऋषिने कंडोल क्षेत्रमें इनको कण्डोल ब्राह्मणोंकी सेवाके लिये स्थापन किया, उनमें छः सहस्र वैश्य तो गालव वैश्य कहाये,और इनमें प्रत्येक वैश्य कानोंमें कुंडल पहरे हुएथे, उससे उनके कपोल शोभायमान थे, इस कारण उन सबका नाम कपोला वैश्य हुआ।

राजाशाही।

राजाशाही नामकी एक वैश्य जाति है, यह अपनेको पूर्वमें क्षत्रियवंशी बतलाते हैं, आचार विचार वैश्यों जैसे हैं।

साहू।

कुमायूंके वैश्य साहू कहाते हैं, यह भारद्वाज कश्यप और गर्ग गोत्री हैं जो वदायूंसे आये कुमारसेनी हैं। ढुलघारिया, जगाती, कुमैयां, गंगोला, आदि अग्रवाल वैश्य हैं।

वर्णवाल।

वर्णवाल जातिकी उत्पत्ति इस प्रकारसे लिखीगई है कि समाधि नाम वैश्य जिसका नाम दुर्गापाठमें लिखा है उसके गुणधी और मोहन दो पुत्र हुए, मोहनके नेमि,उसका पुत्र वृन्दक,नेमिका वृन्द,इसके वंशमें

गुर्जर हुआ, इसके वंशमें होरो, उसके रंगादि सौपुत्र, रंगका विशोक, उसके महीधर, उसके वल्लभ, उसके अग्र हुआ जिससे अग्रवाल हुए, समाधिके दूसरे पुत्र गुणाधीशके धर्मदत्त और शुभंकर दो पुत्र हुए, धर्मदत्तके वंशमें वैश्यवाल हुआ (इस वंशके पुरुष नीच कर्मसे शूद्रवत् होगये, और वे पर्तनीक कहाते हैं, और वेही वैश्य वनिया कहाते हैं) यथाहि-

परं चास्यान्वये जाता वैश्या निम्नेन कर्मणा।
बभूवुः शूद्रवत्सर्वे पर्तनीत्यपि ते भुवि॥

वर्णवालचन्द्रिका।

शुभंकरने अपनी जातिसे अलग होकर पेरी नगरीमें अपना निवास किया, पीछे यह कांचपुरमें आकर शंखनिधि वैश्यका मंत्री हुआ, शंखनिधिने प्रसन्न होकर इसको अपनी कन्या ब्याह दी, उसका नाम चन्द्रवती था, वह उस भार्याको लेकर कावेरी नदीको पारकर अपने स्थानपर आया, और महादेवजीकी तपस्या की, शिवजीने उसको वर दिया, शंकरके प्रसादसे उसके तेन्दूमल नाम पुत्र हुआ।

तेन्दूमलस्य पुत्रोऽभूद्वाराक्षो नाम वैश्यकः।
तद्वंशे वर्णवालोऽभून्मतिमाँल्लोकविश्रुतः॥

तेंदूमलका पुत्र वाराक्ष हुआ, उसके वंशमें वर्णवाल नाम बडा बुद्धिमान् पुत्र हुआ, इसके वंशके पुरुषों द्वारा ३६ कुल प्रतिष्ठित हुए।

वर्णवाल वैश्योंके पुरोहित गौड ब्राह्मण हैं, यह लोग वाणिज्य जिमीदारी दूकानदारी भी करते हैं, विद्याभी पढते, मुहम्मदकासिमके भयसे देश छोडकर भागेहुओंके सिवाय अन्य जन यज्ञोपवीत भी धारण करते हैं, इनके रहनेके स्थान मुख्यरूपसे मुंगेर, पटना, हाजीपुर, गोरखपुर, छपरा, वालिया, जौनपुर, रसडा, वकसर, सम्भल, वरेली, मुरादाबाद मिर्जापुर, वेतिया, मोतीहारी, बनारस, आजमगढ, भागलपुर, वुलन्दशहर, इत्यादि स्थान हैं, वैष्णव और शैव इनकी उपासना है, इनके सात गोत्र हैं।

वात्सल, गोइल, गोबील, अगर, सगर, और काश्यप, इनके छत्तीस कुलोंके नाम इस प्रकार हैं। वदउया, ववुकनसीया, मालहन, नेरीया, पठसरिया, मनीया, सेठ, नागर, नेरचैया, लोखरीया, खेलाउन, ककरीया, वजाज, ठेलरीया, मनहरिया, सरोतन, सीमरीया, जैखरीया, सोनपुरया, खरवसया, कासाजीया, चौधरीया, काठरिया, पंचलोखरीया, कुलीनमुरत, टेक मनीया; मकरीया, ढींगा, जेरफुरीवा, नागर, रुपीहा, मीरीचीया, नमलीन, आद, वटराट।

यह कहीं वरनवाल और कहीं वरनवार भी कहे जाते हैं इसका वृत्तान्त यह है कि द्वाराक्षनाम राजाकी राजधानी (वरन जिसे अब बुलन्दशहर कहते हैं) थी यहां जो उनके सन्तान हुई सो वरनवाल कहाई (वाल नाम बालकका है) वडे होनेपर वरनवार कहाये, इसमें दो थोक है, एकका दूसरेसे मेल नहीं है। वर्णवालचन्द्रिका इस जातिका प्रमाण भविष्य पुराण और राजतरंगिणीका लिखा बताती है।

रौनियार वैश्य।

वर्णविवेकचन्द्रिकामें लिखा है-

अग्निकुण्डात्समुद्भूतास्त्रयः पुत्राः सुधार्मिकाः।
अग्रवालेति खत्री च रौनियारेतिसंज्ञकाः॥

अर्थात् ब्रह्माके ऊरुदेशसे भलन्दन हुए उसकी मरुत्वती स्त्री थी उससे वत्सप्रीति पुत्र हुआ, उसके प्रांशु, उसके मोद, प्रमोद, वाल, मोदन, प्रमोदन, शंकुकर्ण यह छः पुत्र हुए, प्रमर्दनके कोई पुत्र नहीं था, उसने अपनी स्त्री चन्द्रसेनाके साथ वद्रिकाश्रममें तप किया, शिवजीने उसको वर दिया और यज्ञ-करनेपर अग्निकुण्डसे अग्रवाल, खत्री और रौनियार नामक तीन पुत्र हुए, परन्तु वेदान्तरामायणनामसे एक ग्रन्थ कुछ काल हुए छापा गया है उसमें रौनियार वैश्योंको क्षत्रियसे वैश्य होना लिखा है कि यह परशु-रामके भयसे इधर उधर भाग करके देशमें रौनियार कहाये ।

अथ च रमणकाख्यं देशमेत्य न्यवात्सुः परशुधरभयाद्ये क्षत्रियाः सूर्यवंश्याः । जगति हिरण्यारारश्चेति ते ख्यातिमापुस्त्वथ च रमण-हारा रौनियाराश्च वैश्याः ॥

परशुरामके भयसे जिन सूर्यवंशी क्षत्रियोंने भागकर रमणक द्वीपमें निवास किया तव वे संसारमें रमण-हार वा रौनियार नामसे विख्यात हुए, कथा इस प्रकार है कि जब परशुरामने क्षत्रियोंको मारनेकी प्रतिज्ञा की तब सब राजा इधर उधर पलायन करने लगे ।

केचिद्याता मरुस्थल्यां सिन्धुतीरं परे गताः । महेन्द्राद्रिं रमणक-देशं चानुगताः परे ॥ १ ॥ अथ दक्षिणतो भूत्वा विन्ध्यमुल्लंघ्य सत्वरम् । ययौ रमणकं देशं तत्रत्या क्षत्रिया अपि ॥ २ ॥ सूर्यवंश्या भयोद्विग्नास्तं दृष्ट्वाभ्यवदन्मिथः । समायातोयमधुना जीवनं नः कथं भवेत् ॥ ३ ॥ समेत्य निश्चितं सर्वैर्जीवनं वैश्यधर्मतः । इत्या-पणेषु राजन्यास्ते चक्रुः क्रयविक्रयम् ॥ ४ ॥

कोई मरुस्थलीमें कोई समुद्रके किनारे गये, कोई महेन्द्र पर्वतपर और कोई रमणक देशमें चले गये ॥ १ ॥ जब परशुरामजी विन्ध्याचलको लांघकर दक्षिणमें रमणक देशमें पहुँचे ॥ २ ॥ तब वहांके सूर्यवंशी क्षत्रिय भयसे व्याकुल होकर बोले, यह यहां भी आये, अब हमारा जीवन कैसे होगा ॥ ३३ ॥ तब सबने विचारकर वैश्यवृत्ति तत्काल अवलम्बन की, लेन देन करने लगे, परशुरामने जब यह देखा तब बडा क्रोध किया तब वे पलायन करने लगे ॥ ४ ॥

अथ रामोपि तान् दृष्ट्वा कपटं बुबुधेऽखिलम् । तानुवाचाथ धूर्ताः स्थ राजन्या सूर्यवंशजाः ॥ १ ॥ स्वीकृत्य वैश्यतां क्षत्राद्धर्माज्जाता बहिः स्वयम् । भयाच्छस्त्राणि संत्यज्य संजाता वैश्यमानिनः ॥ २ ॥ अस्तु वो न हनिष्यामि शपामि श्रूयतामिदम् । वैश्या भवत राजन्य न कदाचिदवाप्स्यथ ॥३॥ वैश्या रमणहाराश्च वैश्यवर्गेषु चोत्तमाः । इमं देशं परित्यज्य मगधान्यात माचिरम् ॥ ४ ॥

परशुरामजीने उनका कपट जानकर उनसे कहा तुमने सूर्यवंशमें होकर कपट किया ॥ १ ॥ और स्वयं क्षत्रिय होकर वैश्यत्व स्वीकार किया और भयसे शस्त्र त्यागकर वैश्यमानी हुए ॥ २ ॥ इसकारण

मैं तुमको न मारकर शाप देता हूं तुम वैश्य होकर फिर कभी क्षत्रिय नहीं होगे ॥ ३ ॥ तुम वैश्य रमणहारकर कहावोगे, वैश्योंमें अच्छे गिने जावोगे अब इस देशको छोडकर शीघ्र मगधदेशको जाओ ॥ ४ ॥

व्युष्य तत्रोपवीतादिसंस्कारान् कुरुतानिशम्। काले जपत सावित्रीं तथा वो न त्यजेद्रमा ॥ ५ ॥ धनिनः सखिनः स्युश्च संस्काराँस्त्यज्यतां पुनः। सन्ध्याकर्मविहीनानां दारिद्र्यं वो भविष्यति ॥ ६ ॥ मिथ उद्वाहकर्माणि कर्वन्तस्थास्यथाञ्जसा। एवमुक्त्वा तु वचनं रामो वनमथाविशत् ॥ ७ ॥ वैश्यभावं समासाद्य ततस्ते क्षत्रिया भुवि। न्यवात्सुर्मगधं देशं मुनिना निर्भयाः कृताः ॥ ८ ॥

वहां रहकर तुम अपने यज्ञोपवीतादि संस्कारोंको करो, सावित्रीका जप करो तो तुमको लक्ष्मी त्यागन नहीं करैगी ॥ ५ ॥ तुम धनी और सुखी होगे, संस्कार न करोगे तो दरिद्र हो जाओगे ॥ ६ ॥ परगोत्र बचाकर विवाह करो, ऐसा कहकर परशुरामजी वनको चलेगये ॥ ७ ॥ वे क्षत्रिय पृथिवीमें वैश्यभावको प्राप्त होकर मुनिसे निर्भर हुए मगधदेशमें रहने लगे ॥ ८ ॥

श्रीमान्मूलकवंशजो नरपतिः खट्वांगनामा जनाञ्छ्रुत्वेत्थं नृपपंक्तितो नरपतींस्तान्वैश्यभावं गतान्। शापादेव बहिश्चकार रुरुधे सम्बन्धमेषां नृपेष्वेवं ते नृपवंशजा नृपतयो वैश्या बभूवुर्भुवि ॥ ९ ॥

इस वृत्तान्तको मूलकवंशके राजा खट्वांगने लोगोसे सुनकर उन रमणक देशवासी क्षत्रियोंको वैश्यभावमें प्राप्त हुआ जानकर परशुरामजीके शापके कारण क्षत्रियोंकी पंक्तिसे बाहर कर उनका क्षत्रियोंसे सम्बन्ध रोक दिया, और इस प्रकार वे वैश्य हुए।

इस कुलका वेद और गोत्र–

यजुर्वेदोऽस्ति चास्माकमीशावास्याशिफा खलु। प्रणवः परमेशस्तु कुलदेवोऽस्ति निश्चयः ॥ १० ॥ गोत्रं काश्यपमेतत्तु गोप्यं ते कथितं मया ॥ ११ ॥

पिता पुत्रसे कहता है हमारा यजुर्वेद ईशावास्य उपनिषद है, प्रणव परमेश्वर कुलदेव है, गोत्र कश्यपादि है, यह सब गुप्त रहस्य तुमसे कहा। मेरी सम्मतिमें यह रौनियार वैश्य अवश्य हैं, परन्तु वेदान्त रामायण बहुत आधुनिक और थोडे पढे हुएकी रचना है इससे क्षत्रियसे वैश्य होना समझमें नहीं आता।

गुजराती वैश्य।

श्रीमाली ओसवाल खंडेलवालके सिवाय गुजरातके दूसरे देशोंमें भी कुछ और वैश्य पाये जाते हैं, नागर (दासविश) देसवाल, पुरवाल, गुर्जर, मोध, लाड, झरोल सौराठिया, खडैता, हरसोरा, कपोल, उरवल, पटोलिया, श्रयाद, खदतिया, वनिया, इनके यहां इसी नामधारी ब्राह्मण यजन कराते हैं, गुजराती वैश्य वैष्णव वल्लभाचारी हैं, और यज्ञोपवीत धारण करते हैं।

दक्षिण भारतके वैश्य ।

दक्षिण और मद्रास प्रान्तमें सेठी और लिङ्गायत यह दो वैश्यजाति प्रधान हैं, नागति और कोमति वैश्य थोडे हैं, इनके सिवाय तेलगू देशमें एक प्रकारके वैश्य निवास करते हैं, सेठी वणिक श्रेष्ठी वणिक है यह व्यापारनिरत और धनशाली हैं, कुछ तो आमिष भक्षण करते हैं कुछ नहीं भक्षण करते अपने ही वर्गोंमें विवाह करते हैं, कोई इनमें यज्ञोपवीत पहरते हैं, कोई नहीं पहरते हैं, परन्तु दक्षिणी इनको वैश्य स्वीकार नहीं करते, यहांतक कि द्राविडी वैदिक इनका अन्नदानतक ग्रहण नहीं करते ।

नटकुटाई सेठी सब श्रेष्ठियोंमें प्रधान हैं, आदि निवासस्थान इनका मदुरा नगर था, यह पढने लिखनेके विशेष पक्षपाती नहीं हैं, वाणिज्य कार्यके उपयोगी तैलगू वा तामिली भाषा सीख लेते है, इनमेंकी कोई शाखा विद्यामें विल्लौर और ब्राह्मण जातिके वाद अपना अधिकार रखती हैं, इस समयमें कृष्णां, नैल्लूर, कुणापा, कर्णूल, मद्रास, मदुरा, कोयम्वातोर, आदि जिलोंमें वहुतसे सेठी रहते हैं, मद्रासमेंही सात लाख हैं, इनके सिवाय ब्रह्मदेश कलकत्ता वम्बई और मलावार प्रान्तमें वहुतसे सेठियोंका निवास है ।

मैसूरमें लिंगायत वैश्य वहुत रहते हैं, लिंगायत और तैलगु खेतीके व्यवसायी हैं, कहीं यह स्वयं खेती करते कहीं मजुरोंसे कराते हैं, तेलगुमें कोमतिगण विशेष हैं, और सब यज्ञोपवीत पहरते हैं, इनमें गावुरि कलिंगकोमती, वरैकोमति, वलिजीकोमति और नागरकोमति यह पांच थोक हैं, गावुरि मांसभक्षण नहीं करते किन्तु दूसरे चारथोक आमिषाशी हैं । कलिङ्गकोमति और गावुरि शंकर अद्वैत मतको मानते हैं दूसरे लिंगायत और रामानुजी हैं, वेरकोमतियोंमें अधिकांश लिंगायत हैं, कोमतिगण वेल्लरी प्रान्तके गुटी नगरके प्रधान मठाध्यक्ष भास्कराचार्यको अपनी समाजका गुरु मानते हैं, ब्राह्मण इनका पौरोहित्य करते हैं, पर वेदके मंत्रोंसे संस्कार नहीं कराते और यह मातुल कन्याको विवाह लेते हैं ।

उडीसाके वैश्य ।

उडीसामें दो प्रकारके वैश्य रहते हैं, एक सुनार वनियां दूसरे पोटली वनियां, पुटली बनियें बंगालके गन्धवणिकोंके समान हैं, यह पोटली बांधकर द्रव्यादि विक्रय करते हैं, इसकारण पोटली नामसे विख्यात हैं, पोटली वनियोंकी अपेक्षा यहांके सुनार वणिक विशेष धनशाली हैं, उडीसाके वैश्य अन्य स्थानोंके वैश्योंकी अपेक्षा व्यवसायमें हीनतर हैं, कारण यह है कि इनके पास धन नहीं है, यहांका व्यवसाय विदेशी जनोंके हस्तगत है, यह लोक तो उसका उपसत्वभोगी हैं, यह अन्यस्थानोंसे पदार्थ लाकर अन्य स्थानोंमें वेचना जानेते ही नहीं ।

वंगालके वैश्य ।

भारतके सभी स्थानोंमें वैश्य जातिका निवास है वणिक वंगालके, पहले देश विदेशोंमें फैले हुएथे, इस समय भी लक्षोंव्यवसायजीवी वैश्य गौड वङ्गमें निवास करते हैं, प्रथम सब प्रकारके द्रव्योंका व्यवसाय शुद्ध वैश्योंके हाथमें था, परन्तु वैसेही नामधारी दूसरी प्रकारके वैश्य भी अब पाये जाते हैं, गन्धवणिक, सुवर्णवणिक, वारुई साह वणिक, (पूर्व वंगालके साह महाजन) तैल वणिक आदि पूर्वमें प्रकृत वैश्य थे इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

गन्धवणिक् ।

अनेक प्रकारके गन्धद्रव्य वेचनेके कारणही यह गन्धवणिक कहावे, तिलकराम कविने इनकी उत्पत्ति इसप्रकार लिखी है कि, महादेवजीके विवाहमें गन्धकी आवश्यकता होनेसे ब्रह्माजीने कहा कि विना गन्धके विवाह नहीं होसकैगा तब शिवजीने विचारकरके आत्मासे देश, करतलसे शंख, नाभिमूलसे आवट

और चरणसे क्षत्रिय नाम पुरुषको उत्पन्न किया, और सभास्थलमें इनका नाम पद्मानन, पद्मसखा, पद्मनाभ और पद्मोत्पल हुआ; इनके विषयमें एक गांधिक कल्पवल्ली नामक संस्कृत ग्रन्थ है,जो तिलकराम-का बनाया है, उसमें लिखा है—

विरञ्चेरीरितं श्रुत्वा धूर्जटेर्ध्यायतोऽभवत् । ललाटतो देशदासः शंखभूतिस्तु वक्षसः॥ नाभेरावटदत्तश्च वैश्यवंशविवर्द्धनः। विष्वट-गुप्तनामाभूत्पादमूलादुदारधीः॥

अर्थ इसका ऊपर होही चुका है, परन्तु ग्रन्थकारने यह नहीं लिखा कि हरगौरीके विवाह समयकी यह किस पुराणकी कथा है लिख देनेसे इस मतकी पुष्टि हो सकती थी।

ताम्बूलवणिक्।

जिसप्रकार गन्धवणिककी उत्पत्ति है उसीप्रकार ताम्बूल वणिककी उत्पत्ति शिवजीके पसीनेसे लिखीहै। जिस समय समुद्र मन्थनसे उत्पन्न हुए विषको पीकर भगवान् शंकर सोगये, तब पार्वतीने उनको आनकर जगाया, और उनके मस्तकका पसीना पोंछकर ताम्र पात्रमें रक्खा, और उसमें अपने अंगसे मैल डाला तत्काल उसयोगसे एक बालक उत्पन्न हुआ, उसका नाम शिवख्याति हुआ पार्वतीने नागकन्या हिमवती से उसका विवाह किया, उसके एक पुत्र हुआ शंकरने सब लक्षण सम्पन्न जानकर उसका नाम ताम्बूल पुत्र रक्खा, इसप्रकार शिवख्याति पिता और हिमवतीसे इस ताम्बूल वणिक जातिकी उत्पत्ति हुई, तिली बारुई आदि जातिकी उत्पत्तिके विषयमें भी ऐसाही कहा जाताहै, यद्यपि किस पुराणकी यह कथा है ऐसा उल्लेख नहीं है, परन्तु ऐसा बोध होता है कि बौद्धधर्मके अवसानमें जो वैश्यगण शैवधर्म परायण हुए उनकी उत्पत्ति शंकरसे उपपादन करनेके निमित्त यह कथा प्रचार की गई हो, परन्तु जातिमाला आदि ग्रन्थोंमें जो ताम्बूल वणिक आदिकी उत्पत्ति लिखी है, उससे तो यह प्रकृत वैश्य नहीं मानेजाते वरन् इनमें संकरता लिखी गई है।

हां धर्मसूत्र धर्मशास्त्र महाभारत आदि ग्रन्थोंके देखनेसे जाना जाता है, कि पूर्वकालमें वैश्यजाति एक एक द्रव्यका व्यवसाय करती थी, उसीसे उस जातिके उस व्यवसायके नामसे नाम पड गये, परन्तु पीछे उत्पन्न हुई संकर जातियोंको जब कुछ मुख्य आजीविका निर्दिष्ट हुई तब वह व्यापार उन उन जातियोंका होगया। जिसप्रकार बंगालके राढीय वारेंद्र और वैदिक ब्राह्मण एक ब्राह्मण होनेपर भी भिन्न २ श्रेणियोंमें विभक्त और अपने २ थोकमें विवाह करते हैं, उसीप्रकार सुवर्णवणिक गंधवणिक ताम्बूलवणिक एक होनेपर भी पृथक् २ जातिमें विभक्त होगये थे, ऐसा पूर्वकालके शुद्ध वैश्योंका सत्व था, परन्तु जातिमालामें तो अब यह जाति दूसरे रूपकी लिखी हुई है।

सुवर्णवणिक, और गन्धवणिकोंका कहना है जब कि गौड देशका राजा वल्लालसेन था, उसने बङ्गाल-की समस्त वैश्य जातिको श्रौताचारहीन देखकर शूद्रत्वमें परिणत करदिया, इस विषयमें गोपालभट्टरचित और आनंदभट्टरचित वल्लालचरित्रका प्रमाण दिया जाता है, परन्तु बहुतसे विज्ञ पुरुष इस बातको प्रमाण नहीं मानते। उसमें लिखा है कि वल्लभानन्द नामवाले एक सुवर्ण वणिकसे बल्लालसेनने रुपया उधार मांगा था, परन्तु उसने नहीं दिया, इस कारण राजाने क्रोध कर इस समस्तजातिके यज्ञसूत्र उतरवाकर पतित कर दिया, परन्तु इसमें हमको इतना विचार अवश्य उदय होता है कि एक शास्त्रज्ञ राजा एक

व्यक्तिके द्वेषसे समस्त जातिको पतित करदे यह समझमें नहीं आता, हां यदि स्वयं आलसी होकर कोई जाति अपना आचार लोप करदे तो उसमें राजाका क्या वश है ।

यह सोचनेकी वात है जब पालराज गणोंके आधिपत्यमें गौड देशमें तन्त्रविद्याका अत्यन्त प्रचार होगया था, और तन्त्रविधिमें यज्ञोपवीतकी विशेष आवश्यकता नहीं होती इसकारण वङ्ग जातिमें बहुत पुरुषोंने यज्ञ सूत्रका परित्याग करदिया, जिन लोगोंका यह कहना है हमारी समझमें यह युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता, कारण कि कितने एक तन्त्रोंमें भी तान्त्रिक रीतिसे यज्ञोपवीतका विधान पाया जाताहै, हां यह हो सकता है कि बौद्धधर्मकी प्रबलता होनेसे वैदिक आचारमें न्यूनता आई, और जो बौद्ध होगये उन्होंने तो छोडही दिया शेष जनोंने भी उपासनाका ध्यान और आचार त्यागमें निन्दा न देखकर यज्ञसूत्रका त्याग करदिया, जब कि बहुतसे बौद्धधर्मावलम्बी वैश्य अवभी पायेजाते हैं, सम्भव है यह लोगभी होगयेहों जो कुछ हो तथापि बहुत समयसे यह जाति शिवजीको मानती चली आती है, कदाचित् चीन परिव्राजक फाहियानने हिन्दुवणिक जाति कहकर इन्हींका उल्लेख कियाहै, चण्डीमंगल या मनसामङ्गल आदि ग्रन्थोंमें गन्धवणिक विशिष्ट व्यापारी कहकर उल्लिखित हुए हैं, यह जाति एक समय शाक्तभी रही थी इसका परिचय मनसामंगलके नायक चन्द्र और चण्डीमंगलके नायक श्रीमन्तके पिता धनपतिके चरित्रसे पाया जाता है, इससमय वैष्णव धर्मावलम्बी होने पर भी यह लोग गन्धेश्वरी देवीकी पूजा करते है ।

राजा बल्लालसेन बौद्ध तान्त्रिक थे, और उनके पुत्र लक्ष्मणसेन ब्राह्मणमंडलके अनुगामी थे, पिता पुत्रमें जब विरोध खडा हुआ तव अगत्या राजाने हिन्दुतान्त्रिक मत ग्रहण किया, तव वे ब्राह्मण उनके अनुगामी हुए, और उन विद्वान् ब्राह्मणोंकी सहायतासे राजाने नवीन कुलपद्धति निर्माण की परन्तु उससमय भी वैदिक ब्राह्मण वारेन्द्र कायस्थ और वैद्यगण उसमें सम्मत न हुए, परन्तु धीरे २ उच्च जातिसे भी यज्ञोपवीतका लोप होनेलगा, जब द्विजोंका यज्ञोपवीत देखकर लोग हास्य करने लगे तव ब्राह्मणोंको छोडकर अन्य जातियोंमेंसे यज्ञोपवीतका लोप होनेलगा, और (युगे जघन्ये द्वे जाती ब्राह्मण शूद्र एव च) कलियुगमें ब्राह्मण और शूद्रके सिवाय दूसरी जाति नहीं है यही श्लोक प्रमाण रूपसे वंगमें भी प्रचार पाने लगा, इसके थोडेही कालपीछे महामति हलायुधने यह घोषणा की थी कि (वेदार्थज्ञानपराङ्मुखस्य ब्राह्मणस्य शूद्रत्वम्) वेदार्थज्ञानपराङ्मुख ब्राह्मण शूद्रत्वको प्राप्त होगा, इस वाक्यने ब्राह्मण जातिका तान्त्रिक कालमें यज्ञोपवीत लोप होने नहीं दिया ।

जो लोग तान्त्रिक कालमें वैदिक प्रक्रिया त्यागकर तन्त्रद्वाराही सब कार्यमें उतारू हुए थे, उनके लिये आचार्यगणने तान्त्रिक गायत्री देकर प्रकारान्तरसे उनके द्विजत्वकी रक्षा की थी, तान्त्रिक सावित्रीमें भी शूद्रका अधिकार नहीं है, जो हो बल्लालसेनकी व्यवस्थासे पहले वैश्यगणोंमें यज्ञोपवीत था इसमें तो सन्देह नहीं है, धीरे २ कर्म लोपके साथ २ उनका यज्ञोपवीत भी लुप्त होगया, पूर्व वंगमें इस समय सहस्रों वैश्य निवास करते हैं, और आज भी वो यज्ञोपवीतधारी हैं, उन्होंने बल्लाली व्यवस्था नहीं मानी इसीसे वे इस समय तक निन्दित हैं,इनका परिचय इस प्रकार है कि—

पूर्व वंगके ढाका जिलेके अन्तर्गत मथाल परगने और नैमनसिंहके जहांगीर पुरमें वैश्य जातिका निवास है,यह अपनेको पुराण वर्णित पुरातन वैश्यजातिके वंशधर बताते हैं,इनके यहां निवास वा आगमनकी कोई आख्यायिका वा किंवदन्ती नहीं सुनी जाती है, पर यह इतना कहते हैं कि बल्लालसेनने जिस समय

कुल विधि स्थापन की थी, उससमय इस वैश्यजातिके अन्तर्भुक्त नहीं किया और इनके पूर्व पुरुषोंने उनकी वह नियमावली स्वीकार नहीं की उसने इनका जल स्पर्श बन्द कर दिया था, इस कारण उस समयसे ब्राह्मण और कायस्थ इनका जल ग्रहण नहीं करते हैं, यह जाति सदासे पण्यजीवी है, मुसल्मानोंके समयमें भी इस जातिका कोई मनुष्य दासत्वकी शृंखलामें नहीं बँधा, यह सोत्तरीयोपवीत (त्रिदण्ड सूत्र) धारण करते हैं, किन्तु बहुतसे स्मार्त कर्तव्योंका पालन अब इनमें नहीं है, चूडाकरण और उपनयन होता ही है, यजुर्वेदमें इनका अधिकार बताया जाता है, किन्तु अब इनको ब्राह्मणगण वैदिक सावित्री नहीं देते हैं।

इनके घरोंमें शालिग्राम और विष्णुकी पूजा होती है, पहले विवाह सम्बन्ध करनेमें गोत्रादिका विचार नहीं किया जाता था, परन्तु अब कुछ गोत्र माने जाने लगे हैं, तबसे गोत्र विचारकर विवाह करते हैं, यह अपने नामके पीछे गुप्त पद भी लगाते हैं,जो वणिक व्यवसायी जनोंके अधीनमें कार्य करते हैं, उनकी विश्वास पदवी है, जो बल्लाली व्यवस्थाके अनुकूल हैं वे इनका जलादि ग्रहण नहीं करते, और जो उस व्यवस्थाको नहीं मानते वे स्वच्छन्दतासे इनका पक्क पदार्थ भोजन करते हैं, अब इन लोगोंमें कुछ २ शिक्षित होते जाते हैं, तथा इनमें वकील मुख्तार तहसीलदार आदि भी हैं,इनमें पन्द्रह दिनका मृताशौच लगता है, श्राद्धादि सब कृत्य हिन्दूशास्त्रानुसार होते हैं, यह देव व देवीकी पूजा करते हैं, लक्ष्मी पूजनेमें विशेष उत्सव करते हैं, इनके आलम्यान, काश्यप, कात्यायन, मौद्गल्य और शाण्डिल्य गोत्र प्रचलित हैं, इनमें अर्य, भूमिस्पृक्, भूमिजीवी, व्यवहर्ता आदि उपाधिभी देखी जाती हैं, यह साधारणतः ह्रस्वाकार, दृढकाय, ऊंची नाक, ऊंची भौंह और अच्छी बुद्धिवाले होते हैं।

नागर वैश्योंके भेद।

गर्ततीर्थके ब्राह्मणही नागरवैश्य बन गये हैं, जहांगीर बादशाहके समयमें एक तानसेन गवैय्या थ एक समय उसने दीपकराग गाया था,जिसके कारण उसके शरीरमें दीपक जैसी ज्वाला उठने लगी अनेक उपचारसे भी शान्त न हुई, तब वह मल्लार राग गानेवाले किसी निपुण गवैयेकी खोजमें फिरता फिरता बडनगरमें आया वहां नागर ब्राह्मणोंकी स्त्रियोंने उसके दुःखको विचार मलार राग गाकर उसकी व्यथाको शान्त किया, उसने दिल्लीश्वरसे यह सब वृत्तान्त कहा बादशाहने उनके रूप गुणकी प्रशंसा सुनकर उन स्त्रियोंको बुलाया,पर वे वहां नहींगई, इसकारण बादशाहने वहां अपनी सेना भेजी उसने बडनगरका विध्वंस कर दिया अनेक स्त्रीपुरुषोंके प्राण गये,यवनोंने जिसके गलेमें जनेऊ देखा उसीको मारदिया,जिसपर जनेऊ न देखा उसे छोडदिया तब साढे चोहत्तरसौ७४५० ब्राह्मण यज्ञोपवीत त्यागकर शूद्रवृत्तिसे बाहर निकल गये और बाहर जाकर वैश्यवृत्ति करनेलगे, तबसे चिट्ठीपर ७४॥ का अंक लिखते हैं कि जो खोलैगा उसे इतनी हत्या लगैगी, इन साढे चौहत्तरसौमेंसे दो सहस्र सिद्धपुर पाटनमें गये, वे पटनी नागर कहाये- चौदहसौ प्रभास पाटन जिलेमें गये, वहां बारह ग्रामका जथा बांधके रहे उनको सोरठिया संज्ञा कहते हैं उन ग्रामोंके नाम जूनागढ, मांगरौल, पोरबंदर, नवानगर, भूज, ऊना, देलवाड, प्रभासपाटन, महुआ- वासा, बडा, घोघा, यह नाम हैं, दो सहस्र गुजरातमें रहे, वे गुजराती सम्ज्ञा कहाये, उनके बारह ग्रामोंके नाम अहमदाबाद, पेटलाद, नडियाद, बडोदरा, खंबात, सोजितरा, कन्याली, सीनौर, धोलका, विरम- गांव, मुमधा, आसी हैं। दोसहस्र चित्तौरमें गये, वे चित्रौडे नागर कहाये, पीछे और २ जो नागर इनग्रामोंमें बसे वे उन्ही नामसे विख्यात हुए, चित्तौर गढमें गये गर्त ब्राह्मण चित्तौडे बनिये हुए, पीछे

जो जो बडनगरे ब्राह्मण गये वे वे चित्रौडे नागर ब्राह्मण कहाये, इन्होंने तैंतीस ग्रामोंका खाने पीने और कन्याके लेनदेनका सम्बन्ध नहीं रक्खा, इस कारण चित्रौडे बनियोंका यूथ पृथक् होगया, उन तैंतीस ग्रामोंके नाम यह हैं, सोरठी सम्बाके १८ ग्राम, गुजरात सम्बाके १२ ग्राम, पौलकी सम्बाके ग्राम, सूरत, डूंगरपुर वासवप्रपाटन, मथुरा, काशी, वरानपोर, अडहितपुर, वालेम ओझा, ईडर डावला पाटन आदि, छः पोल पृथक् २ हैं, और सूरत बुरहामपुर काशी यह तीनों ग्राम पृथक् है, इन तीनों सम्बामें तैंतीस ग्राम हैं, यह सब बडनगर वालोंके भेद हैं, चित्रौडे ब्राह्मणोंके विवाहमें तो वर राजा होकर शिरपर लाल पीली हरी तीनो रंगकी रेशमी ताफतेकी लम्बी शिरसी बांधकर श्वशुरके घरको जाते हैं, हाथ ग्रहण होनेतक वरकी माता सामने नहीं आती, पाणिग्रहणके पीछे वर कन्या दोनों कुलदेवीका पूजन करते हैं, भीतके ऊपर रंगकी सात मूर्ति निकालके उसके सामने दो दीपक रखते हैं, उसके ऊपर धातुके पात्र ढकके दोनों वर कन्या उसके ऊपर बैठकर पूजा करते हैं, और चित्रौडे बनियोंके घरोंमें विवाहके पहले दिनरातमें पायजा नाम कुलदेवीकी पूजा करते हैं, उसकी विधि यह है, वंशपात्रमें पापड जोड २५उनमें ५ सादे कुमकुम लगाये हुए होते हैं, पांच जीरेके, पांच धनियेंके, पांच चनाकी दालके और २५ पापड वारीक, सेवइये लड्डुआ २५ खाजलिया २५, उडदके वडे २५, पानके बीडे २५ शलाका २५ नारियल पांच ५ पोचीके पांच कौडियें, पांच हलदीकी गांठ, पांच निमक ऽ। सेर कुमकुम ऽ= चावल पूजाके निमित्त यह सब पदार्थ छावडी बांसकी टोकरीमें लेकर कन्याके सहित पांच जंवाई (वर) के वरको आवैं, उनको एक नारियल देना, पीछे श्वेत वस्त्रसे कन्याको आच्छादन करके कन्याके हाथसे पूजन कराना, पीछे मंगल घाटडी १ मिठाई १ सेर कन्याके हाथमें देना, पीछे कन्या घरको आती है, इसमें दिशा विशाका विचार नहीं है ।

इति नागरवैश्योत्पत्तिः ।

खडायतवैश्योत्पत्तिः ।

खडायत ब्राह्मणोंकी सेवामें शंकरकी आज्ञासे रहनेवाले वैश्य खडायत कहाये उनके गुंदाणु, नांदोलु मिदियाणु, नानु, नरसाणु, वैश्याणु, मेर्वाणु, भटस्याणु, साचेलाणु, सालिस्याणु, नागराणु और कल्याण यह वारह गोत्र हैं, और नेपुगुणमयी, नरेश्वरी तुर्या, नित्या, नंदिनी, नरसिंही, विश्वेश्वरी, महिपालिनी, मंडोदरी, शंकरी, सुरेश्वरी, कामाक्षी, कल्याणिनी यह वारह कुलदेवी हैं । कोटयर्कदेव इनके मुक्तिके दाता हैं ।

अब श्रीमाली वैश्योंके भेद कहते हैं ।

श्रीमाल क्षेत्रमें विष्णुके ऊरूसे उत्पन्न हुए नव्वे हजार वैश्य थे, अमरसिंहने इनमेंसे बहुतोंको जैनी बना दिया (उस दिनसे वे सच्छूद्र हुए) पीछे उनमें बारह भेद हुए, उसमें एक सोनी कहाये, त्रागड ब्राह्मणोंके जो अठारह गोत्र कहे हैं उनमें पहले तीन गो वाली शूद्रकी कन्याके साथ विवाह किया, पिछले चार गोत्र अमरसिंहने भ्रष्ट किये, श्राद्धमें सूत्रधारण करना, खेती व्यापार करना, सोनीपन करना उनका काम है, इनकी कुलदेवी व्याघ्रेश्वरी है, त्रागडोंके गोत्र ही उनके गोत्र हैं, यह सोनी लोग दसे बीसेके भेदसे पाटणी, सूरती, अहमदावादी, खम्भाती आदि भेदवाले

है, इनमें वीसा श्रीमाली श्रावकधर्मी है, दसे श्रीमालियोंमें कितने एक श्रीसम्पन्न हैं, मारवाड गुर्जर और पदमास नागवाले हैं, प्राग्वाट पोरवालभी दसा वीसाके भेदसे दो प्रकारके हैं, पोरवालोंमेंसे एक गुर्जर नामक जातिभेद प्रगट हुआ है, वस्त्र देनेके निमित्त जो पटुआ जाति उत्पन्न हुई वह भी उस समय एक प्रकारके वैश्य थे कर्मभ्रष्ट होनेसे शूद्र हुए, यह महाराष्ट्र देशके जानकीपुर, वालापुर, सूरतादि देशोंमें विख्यात है, दूसरे गाठा और हलवाई भेदवाले हैं, गाठेवनियेही पहले श्रीमाली वनिये थे, परन्तु शूद्रस्त्रीके साथ विवाह करनेसे जो वंश बढा, तब वह गाठे वनिये कहाये, उनपर श्रीमाली ब्राह्मणोंका जो कर है वह श्रीमाली पोरवालोंसे आता है, इन गाठोंमें जो और भी भ्रष्ट हुए, सो हलवाई और छीपी जातवाले कहाये, यह आधी जात कही जाती है, इस प्रकार श्रीमाली ब्राह्मणोंकी साढे छः न्यातकी वृत्ति कहाती है। दसा वीसाके भेदका एक यह भी कहावत है कि एक धनवान् श्रीमाली वैश्यकी कन्या विधवा होगई, उसने शास्त्र विधि उल्लंघन करके देशान्तरमें उस कन्याका विवाह किया, और फिर अपने गांवमें आया, जातवालोंने उसके साथ भोजन व्यवहार बन्द करदिया जो उसके पक्षमें रहे वे दस्से श्रीमाली पोरवाल कहाये और इस विवाहको अयोग्य कहनेवाले वीसा श्रीमाली पोरवाल कहाये, पीछे यह वीसा जैनी होगये, पीछे वल्लभाचार्यके समयमें बहुतसे वैष्णव होगये, शेष आजतक श्रावक हैं।

इति श्रीमाली वैश्योत्पत्तिः ।

श्रीमालियोंके १३५ गोत्र ।

१ अगरीा
२ आकोदूपड
३ उवरा
४ कटारिया
५ कहूथिया
६ काठ
७ काल
८ कांडेरा
९ कादयें
१० धुगडिक
११ कुठारिया
१२ कूकडा
१३ काडिया
१४ कौफगड
१५ कंवौतिया
१६ कुंचलिया
१७ खगल
१८ खोरड
१९ खींर
२० खींचडिया
२१ खौसडिया
२२ गदडवा
२३ गलकडे
२४ गपताणियां
२५ गदह्या
२६ गिलाहला
२७ गींदौड्या
२८ गूजरिया
२९ गूजर
३० घेवरिया
३१ घीवडिया
३२ घूवारिया
३३ चरर
३४ चांडी
३५ चुगल
३६ चडिया
३७ चंदेरीवाल
३८ चकडिया
३९ छालिया
४० जलकट
४१ जांट
४२ जूंडीवाल
४३ जूंड
४४ झामचूर
४५ टांक
४६ टांकरिया
४७ ठींगड
४८ डहरा
४९ डागदे
५० डूंगरिया
५१ ढोढा
५२ ढौर
५३ तवरु
५४ ताडिया

५५	तुरक्या	८२	फोंफलिया	१०९	माथरपुरी
५६	तुसाज	८३	बहापुरिया	११०	मारूमहटा
५७	धनालिया	८४	वरडा	१११	मादौटिया
५८	धूपड	८५	बलदिया	११२	मुरारी
५९	धूवना	८६	बाहकटे	११३	मूसल
६०	ध्याधीभा	८७	वंदूवी	११४	मूंदडिया
६१	तार्वी	८८	वारीगौत	११५	मौथा
६२	तरट	८९	वाईसज	११६	मौगा
६३	दक्षिणत	९०	वायडा	११७	रांकियाण
६४	नाचण	९१	विमनालक	११८	राडिका
६५	नांदरिवाल	९२	वीचड	११९	रीहालीम
६६	निरद्रुम	९३	वौहलिया	१२०	लवाहल
६७	निवहटिया	९४	भद्रसवाल	१२१	लडारूप
६८	निवहेडिया	९५	मालौटी	१२२	लडवाला
६९	परिमाण	९६	भांडियां	१२३	सागरिप
७०	पचौसलिया	९७	भंडारिया	१२४	सागिया
७१	पडवाडिया	९८	माडूगा	१२५	सांमडती
७२	पलहौट	९९	भूवर	१२६	सीधुड
७३	पसरेण	१००	महिमवाल	१२७	सुद्राडा
७४	पंचासिया	१०१	मऊठिया	१२८	सोठिया
७५	पंचोभू	१०२	मरदुला	१२९	सौहू
७६	पापडगोत्र	१०३	महतियान	१३०	सौठिया
७७	पाताणी	१०४	महकुले	१३१	हाडीगण
७८	पूरविया	१०५	मरहठी	१३२	हेडाऊ
७९	फलवधिया	१०६	मसूरिया	१३३	हीडौच्या
८०	फाफू	१०७	मथुरिया	१३४	वोहोरा
८१	फूसफाण	१०८	माल्वी	१३५	सांगारिया

लाडवणिकोत्पत्तिः ।

लाड ज्ञातिका वैश्य राजा वेणुवत्सका मंत्री था, इसने खेडावाल ब्राह्मणोंसे कहा हम पूर्वी लाट देशके रहनेवाले क्षत्रिय हैं, उसी ग्रामके नामसे हम लाड कहाते हैं, क्षत्रिय धर्मसे भ्रष्ट होकर वैश्य होगये हैं, अब वे सच्छूद्रवत् हैं, नाम मंत्रसे कर्म करते हैं, कोई अपनेको वैश्य कहते, कोई क्षत्रियत्वका अभिमान करते हैं ।

हरसौलेवणिक ।

यह गुजरातमें हरसौले ग्राममें निवास करनेसे हरसौले कहाये, इनके मालियाणु, मोरियाणु, शशिथाणु, शियाणु, मदियाणु, गजेन्द्र, यज्ञाणु, पीपलाणु, कश्याणु, आदि बारह गोत्र हैं, गांधी, मेहता, शाहा आदि

प्रत्येक गोत्रके अवटंक हैं, इस समय यह सूरत म्हाड बंदर खानदेश जिला निमाड काशी और हरसौल स्थानोंमें रहते हैं ।

भार्गववैश्योत्पत्तिः ।

भृगु कच्छमें जो भार्गव ब्राह्मणोंकी सेवा करनेको विश्वकर्माने ३६ सहस्र वैश्य उत्पन्न किये वेही भार्गव वैश्य कहाते हैं, यही कदाचित् दूसरभी कहे जाते हैं, देखो भार्गव ब्राह्मणोत्पत्ति ।

भट्टमेवाडे वैश्य ।

जिनको वासुकीने मेवाडमें स्थापन किया वे भट्टमेवाडे वैश्य कहाये. देखो मेदपाट ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति।

नागदह वैश्य ।

यह नागदहपुरके रहनेवाले हैं देखो मेदपाटान्तर्गत नागदह ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति ।

त्रैविद्यम्होडब्राह्मणोंके यजमान गोभुजवैश्य ।

भगवान् विष्णुके स्मरणसे आकर धर्मारण्यमें कामधेनुके खुराग्रसे पृथिवीको विदीर्ण किया, और हुंकार शब्द किया, तब पृथिवीके विवरसे ३६००० वैश्य उत्पन्न हुए, तब उनके कहनेसे ब्रह्माजीने उनसे कहा तुम गायके हस्तरूप अगले चरणसे प्रगट हुएहो इस कारण तुम्हारा नाम गोभुज होगा, तुम त्रैविद्य ब्राह्मणोंकी सेवा करना ।

यस्माद्गोभुजसम्भूता गोभुजा इति नामतः ।

विश्वावसुने गन्धर्वोंकी कन्या उनको व्याह दीं इनके लिये-

प्रातर्मध्याह्नयोः स्नानं पितॄणां तर्पणं तथा ॥ नमस्कारेण मंत्रेण पंच यज्ञाः सदैव हि ॥ जातकर्मादिसंस्कारा ब्राह्मणापत्यवत्सदा ॥

इनको दोनों कालमें स्नान पितृतर्पण स्नान और पंचयज्ञ नमस्कार मंत्रोंसे करने चाहिये, खेती गोरक्षा वाणिज्य यह इनके कर्म हैं, एक समय जब रामचन्द्रजी धर्मारण्यको आये तब मार्गमें मण्डलीपुरमें ठहरे यह अणिमाण्डव्यका आश्रम है, वहां भगवान् ठहरे, वहांके वैश्य जो मिलने आये रामचन्द्रने उनको उसनगरके नामपर नामदिया, आगे धर्मारण्य गये वहां स्नान दान पूजा की, गोभुज वैश्योंको रामचन्द्रजीने एक तलवार दो चमर दिये, विवाहादि कार्यमें आजतक वर खड्गको वस्त्रमें लपेटकर श्वसुरालको जाता है, मण्डलीपुरसे सवालाख वैश्य रामचन्द्रजीके संग तीर्थयात्राको आये उनको रामचन्द्रजीने वहां स्थापन किया और कहा तुम म्होड मंडलिये वैश्य कहाओगे ।

अडाडजा म्होड वैश्योत्पत्तिः ।

अडाडजाम्होड वैश्योंकी उत्पत्ति इसप्रकार है, एक दिन गोभुज वैश्यके घर एक समय एक जैन मुडिया आया और गोभुजोंमें अपना उपदेश करने लगा, यह देख ब्राह्मणोंने उसे मारभगाया, और जो वैश्य उस मुडियेके उपदेशसे भ्रष्ट होगये थे उनको वह नगर छोडकर अट्टालपुरमें जाना पडा, और वह अट्टालज नामसे विख्यात हुए, अडाडजाम्होड कहाये ।

अट्टालजेति विख्याता चातुर्विद्याश्रिताश्च ये॥गोभुजानां तथा केचिच्छावारोहणकारकाः ॥ जाता मधुकरास्ते वै सिन्धुकूले स्थिताश्च ये ॥

उनके उपाध्याय चतुर्वेदी म्होड ब्राह्मणहुए, और गोभुजोंमें जिन्होंने नौका व्यवहार आरंभ किया, वे काठियावाडमें दीवउना, देलवाडा आदि गावोंमें जाके रहे, वे मधुकर म्होड वैश्य कहाये. यह लवणसागरके समीप द्वीपपुरमें रहते हैं, अब इन वैश्योंके आधुनिक दसा, वीसा, पंचाके भेद सुनो, गोभुज गांवमें तेजपालका पुत्र विजयपाल एक धनी वैश्य था, उसकी स्त्रीके सीमन्तकार्यमें वहुतसे गोभुज और अडाडजा एकत्र हुए, उसमें एक विधवा म्होडस्त्रीके पुत्रने सभामें खडे होकर कहा कि, मेरी मा विधवा है उसने कहा है मुझे भी एक पति करादो, तब सबने आश्चर्य करके पूछा कि कैसी वात कहते हो, यह कैसे होसकता है, तब उसने कहा विजयपालका विधवाके साथ विवाह कैसे हो सकता है, तब सभामें बडा गोलमाल हुआ, बहुतसे वैश्य उठकर चले गये, जिन्होंने कोई मुलाहजा नहीं किया वे वीसा कहाये, जो विजयपालके साथी हुए वे पांचाम्होड कहाये और जो दोनों उदासीन रहे वे दसाम्होड वैश्य कहाये।

इति म्होड वैश्यादि उत्पत्ति।

अथ झालोरा वणिकादिकी उत्पत्ति।

इन ब्राह्मणोंके सेवक वैश्य वृत्तिवाले वैश्य कहाये। और उसी प्रकारसे उनको कन्या उत्पन्न करके विवाह दीं, जो ब्राह्मणोंके गोत्र थे वही वैश्योंके हुए, इनमें बहुतसे अर्बुद क्षेत्रमें रहे।

इति झालोरावैश्योत्पत्तिः।

इति श्रीमुरादाबादवास्तव्य-विद्यावारिधि-पंडितज्वालाप्रसादमिश्रसंकलिते जातिभास्करे तृतीयो वैश्यखण्डः समाप्तः।

विचारकोटीकी जातियां।

इस विभागमें हम थोडासा उन जातियोंके विषयमें लिखेंगे जो अपने लिये वर्णान्तरमें प्रविष्ट होनेका साहस रखतीहैं और जिनके वर्णका आन्दोलन अभीतक समाप्त नहीं हुआ है, अथवा यों मान लिया जाय कि जातिविभागके देशी विदेशी विद्वानोंने जिनका वर्ण एकमत होकर स्वीकार नहीं किया है इस लिये हम इस विषयमें अपनी तरफसे निर्णय सम्बन्धी सम्मति नहीं देसकते हैं, दोनों ओरके सपक्ष विपक्ष मतके जो प्रमाण इस समय तक छपे मिलेहैं हमने उनको इन स्थलोंमें उतार दिया है, साधक और बाधक दोनों प्रकारके मत यदि न दिखाये जांय तो कोई भी पुरुष निर्णय करनेमें समर्थ नहीं होता, हमारी इच्छा है कि संसारकी सभी जातियां अपने २ न्यायको प्राप्त हों और शास्त्रके अनुसार अपना उत्कर्ष लाभ करें इस कारण हमको सब प्रकारकी सम्मतियें सरकारी रिपोर्टोंके सहित यहां प्रकाश करनी पडी हैं हां जिन महानुभावोंने धर्मशास्त्रोंके वचनोंपर अनर्थ किया है उनसे जो जगतमें मिथ्या भ्रान्ति फैलती है सर्व साधारणके उपकारके निमित्त शास्त्रोंके उन वचनोंका पुरातन माना हुआ अर्थ अवश्य दिखला दिया है। हम सत्य हृदयसे लिखते हैं, हमारा अभिप्राय किसी जातिके पुरुषको अधम मध्यम बनानेका नहीं है जो शब्द शास्त्रमें जिस वर्णमें पढेगये हैं उन शब्दोंको हमने उसी वर्णमें रख दिया है किसी व्यक्ति विशेषसे हमारा अभिप्राय नहींहै और फिर जिस जातिके महापुरुष अपनी जातिके पोषक सत्प्रमाण हमारे पास इस ग्रन्थको अवलोकन कर भेज देंगे वह हम दूसरी वार सहर्ष लगा देंगे कारण कि हमारा अभिप्राय जातिकी बडाई गौरवताका साधक है यहां हमने ब्रह्मभट्ट कायस्थ कुर्मी गोपादि कई जातियेंही विचार कोटिमें लिखकर दिखा दी हैं, यह इतनी ही नहीं चतुर्थखण्डमें भी कितनी ही जाति आभीर आदि विचारकोटिकी हैं सबको यहीं लिख

देनेसे ग्रन्थका चतुर्थ खण्ड सन्दिग्ध मात्र रह जाता इसलिये कुछ जातियोंका दिग्दर्शन पक्ष विपक्षका अपनी सम्मतिसे रहित दिखा दिया है।

भाट ब्रह्मभट्ट आदि।

वैश्यायां सूतवीर्येण पुमानेको बभूव ह।
स भट्टो वावदूकश्च सर्वेषां स्तुतिपाठकः॥

ब्रह्मवैवर्तपुराण।

अग्निकुण्डसे उत्पन्न सूतके वीर्यसे वैश्यामें एक पुरुष उत्पन्न हुआ इसका नाम भट्ट हुआ, यह बडा वावदूक सबकी स्तुति करने वाला हुआ, यह पुराणवक्ता सूत अग्निकुंडसे उत्पन्न है, और सारथ्यकर्मा सूत संकर जाति दूसरा है, भाट वा भट्टके प्रसंगसे हमको यह थोडा ब्रह्मभट्टोंके विषयमें विचार करना है, हम किसी भी जातिके उत्कर्ष विधानमें बाधक नहीं है पर शास्त्रोंने जिसको जिस प्रकार लिखा है, उसके छिपानेवाले या रूपान्तर करनेवालोंको इस समय या तो यही मान लेना उचित है, कि चार वर्णोंके सिवाय संकर जाति ही नहीं है, यदि पहले थी भी तो उनमेंसे अब कोई शेष नहीं रहा, इस समय यह ब्राह्मणही नाई बारी खाती भाट मागध वंदीके रूपमें दिखाई दे रहे है, और यह जो शब्द है यह सब एकही जातिके बोधक हैं, पहले एकही वर्ण था, तब तो किसीको क्षत्रिय बननेकी भी आवश्यकता नहीं है, कारण कि ब्राह्मणही सर्वोच्च पद है, यही रखना उचित है तो यह धर्मशास्त्र सम्बन्धी पद यातो पेशेके अन्तर्गत करदेने चाहियें, या जैसो कि प्रक्षिप्त कहनेकी चाल है वैसा इन शब्दों और जातियोंको भी प्रक्षिप्त कोटिमें डालकर सर्वथा हेय करके केवल चारही वर्ण मानने चाहिये, तो सभी संकर जातियोंका पीछा छुट सकता है और यदि शास्त्र वचनोंकी स्थिति रक्खी जायगी तो उनमें जिस जातिके लिये जैसे वचन हैं, वैसे हम माननेको तैयार हे, इस समय कुछ पुरुष भाटजातिको न मानकर कहते हैं कि भाटजाति कोई नहीं, ब्रह्मभट्टनामक ब्राह्मण जाति है, और वह कविक वंशमें है जेसा कि महाभारतमें लिखा है, कि एक यज्ञ हुआ था उसमें ब्रह्माजीका वीर्य आहुतिको प्राप्त हुआ उसमेंसे तीनपुरुष उत्पन्न हुए। (ब्रह्मभट्ट प्रकाश भाग १ पृ० १)

पुरुषा वपुषा युक्ताः स्वैः स्वैः प्रसवजैर्गुणैः।
भृगित्येव भृगुः पूर्वमङ्गारेभ्योऽङ्गिराभवत्॥ १०५॥
अङ्गारसंश्रयाच्चैव कविरित्यपरोऽभवत्॥ १०६॥

महाभारत–अनुशा०

वह अपने २ प्रसव (जन्य) गुणोंसे संयुक्त होकर पुरुषाकार होगये, उस यज्ञकी ज्वालासे भृगुजी हुए, अंगारोंसे अंगिरा हुए १०५ और अंगारोंको थोडी ज्वालासे कविनामक ऋषि उत्पन्न हुए १०६ इसी प्रकार और भी ऋषि उत्पन्न हुए पृ० ९

निसर्गाद्ब्रह्मणश्चापि वरुणो यादसांपतिः॥ १२३॥ जग्राह वै भृगुं पूर्वमपत्यं सूर्यवर्चसम्॥ ईश्वरोऽङ्गिरसं चाग्नेरपत्यार्थमकल्पयत्॥ ॥ १२४॥ पितामहस्त्वपत्यं वै कविं जग्राह धर्मवित्॥ १२५॥

जलोंके स्वामी वरुणजीने सूर्यके समान तेजस्वी भृगुजीको अपना पुत्र बनाया, और अग्निने अंगिराको अपना पुत्र बनाया, और पितामहने कविको अपना पुत्र बनाया ॥ १२५ ॥

ब्रह्मणस्तु कवेः पुत्रा वारुणास्तेऽप्युदाहृताः । अष्टौ प्रसवजैर्युक्ता गुणैर्ब्रह्मविदः शुभाः ॥ १३२ ॥ कविः काव्यश्च धृष्णुश्च बुद्धिमानुशनास्तथा । भृगुश्चाविरजाश्चैव काशी चोग्रश्च धर्मवित् ॥ १३३ ॥

पृ० ११

ब्रह्माजीके पुत्र कविजीकी सन्तान भी वारुण कहाती है उनके आठ पुत्र हैं जो प्रसव अर्थात् अपने ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी स्वाभाविक गुणोंसे युक्त हैं, और वे आठ हैं । कवि, काव्य, धृष्णु, बुद्धिमान् उशना, भृगु, विरजा, काशी, और धर्मवित् उग्र ॥ १३३ ॥

विचार-यह आठ पुत्र कवि ऋषिके महाभारतमें लिखे हैं, परन्तु महाभारतमें ऐसा कोई श्लोक नहीं है जिससे यह बात प्रतीत हो कि कविनामक ऋषिके समस्त वंशधर कवि कहाते हैं, कारण कि कवि यदि वंश पदवी होती तो समस्त ऋषिकुलही कवि कहाने चाहिये, कारण कि समस्त ऋषिही श्लोक रचनामें कुशल थे, तब सबही कवि होजाने चाहिये, और वेदमें ईश्वरको कवि लिखा है यथा (कविर्मनीषी परिभूस्स्वयम्भूः यजु० अ० ४० । ८) वह कवि (क्रान्तदर्शी) मनीषी परिभू और स्वयम्भू है, तो इस हिसाबसे सारासंसार चारों वर्ण चारों आश्रम सब कविवंशी हो सकते हैं, यदि कवि-नाम ब्रह्म भट्टोंका है तब सबही ब्रह्मभट्ट हो सकते हैं, इसकारण यह कहना किसी भांति भी सिद्ध नहीं होता कि कविके वंशमें भाट हुए हैं; अन्यथा जबतक ऐसा कोई प्रमाण धर्म शास्त्रका न हो कि कवि संज्ञक ऋषि सन्तान ब्रह्म भट्ट कहाई कोई कैसे मान सकता है फिर महर्षिकी सन्तानने ब्रह्मकर्मोंको छोडकर मनुष्योंकी स्तुति करके अपनेको उस कर्मसे निकृष्ट किया हो, ऋषि समाजमें यह संभव नहीं होसकता, स्तुति करना यह सूत मागध तथा भाटोंका काम है देखो महाभारत अनुशासन पर्व वर्णसंकर जातिविवेकाध्याय श्लो० १०।१२

विप्रायां क्षत्रियो बाह्यं सूतं स्तोमक्रियापरम् । वैश्यो वैदेहकं चापि मौद्गल्यमपवर्जितम् ॥ १० ॥ वंदी तु जायते वैश्यान्मागधो वाक्यजीविनः । शूद्रान्निषादो मत्स्यघ्नः क्षत्रियायां व्यतिक्रमात् १२

अध्या० ४८.

क्षत्रियके द्वारा ब्राह्मणीके गर्भसे चारों वेदोंसे पृथक् राजाओंकी स्तुति करनेवाला सूत होता हैं, वैश्यसे ब्राह्मणीके गर्भसे अन्तःपुरकी रक्षाका कार्य करनेवाला संस्कार रहित वैदेहजातिका पुरुष होता है यहां 'स्तोमक्रियापरम्' का अर्थ स्तुति करना है ॥ १० ॥ वैश्यके द्वारा क्षत्रिया स्त्रीसे वाक्यजीव बन्दी मागध वाक्यजीवी जाति होती है अर्थात् यह वंदी और मागध स्तुति आदि करके अपना निर्वाह करते हैं, और यदि कवि ऋषिके वंशधर भाट होते तो मनु० अध्याय ३ (सोमपास्तु कवेः पुत्राः) सोमपा पितर कविके पुत्र हैं यह भी ब्रह्मभट्ट होते तो क्या कहीं सोमपा शब्द भी ब्रह्मभट्टसंज्ञक है (और उन कविके तो आठही पुत्र हैं उनमें सोमपा नाम तो है नहीं, फिर आठ पुत्रोंके रहते यह स्वीकृत पुत्र कहे जाते हैं क्या?) अस्तु ऐसा प्रमाण ब्रह्मभट्ट जातिके ग्रंथमें नहीं पाया जाता कि, अमुक ऋषिकी सन्तान ब्रह्मभट्ट है, यदि यह ऋषिगण भाटका कार्य करते तो राजोंके विवाह आदिमें नेगजोगके समय दक्षिणा ले सकते, पर

ऋषियोंने तो राजपर लात मार दी है, वे ऐसा कभी नहीं करते थे, और यदि कवि ऋषि या कविके पुत्रगण ही यह काम करते थे तो पृथु राजाकी स्तुतिके समय उस वंशके ब्राह्मण खडे होकर स्तुति करने लगते, परन्तु ऐसा न करके।

एतस्मिन्नेव काले तु यज्ञे पैतामहे शुभे। सूतः सूत्यां समुत्पन्नः सौत्येऽहनि महामतिः ॥ ३३ ॥ तस्मिन्नेव महायज्ञे जज्ञे प्राज्ञोथ मागधः। पृथोस्तवार्थं तौ तत्र समाहूतौ सुरर्षिभिः ॥ ३४ ॥

हरिवंश पु० अ० ५ श्लो० ३३।३४

उसी पितामहके यज्ञमें अभिषवके दिन सूति स्त्रीमें सूत उत्पन्न हुआ जो बडा बुद्धिमान् था ॥ ३३ ॥ और उसी यज्ञमें महाबुद्धिमान् मागध हुआ, इन दोनोंको ऋषियोंने पृथुकी स्तुति करनेको बुलाया श्रीमद्भागवतमें भी अ० १५ श्लो० २२ स्कन्ध ४ में लिखा है।

हे सूत हे मागध सौम्य बन्दिँल्लोकेऽधुना स्पष्टगुणस्य मे स्यात्।
तथा—सूतोथ मागधो वन्दी तं स्तोतुमुपतस्थिरे—इत्यादि।

यह जो सूत मागध वंदी हैं इनको एकही कार्यका करनेवाला बताया है यदि यह सूत मागध वंदी विशुद्ध विप्रवंश थे तब ऋषियोंने स्वयं स्तुति न करके इनकोही क्यों स्तुति कर्ममें प्रयुक्त किया, और सूत पुराण वक्ताके वंशज विद्वान् होनेके कारण भट्ट कहलाये, ब्रह्म भट्ट भा० ३ पृ० ७ यह जो ब्रह्मभट्टोंका कहना है सो भी ठीक नहीं श्रीमद्भगवत महाभारत मार्कण्डेयादि पुराणोंमें एक जगह भी सूतको भट्ट नहीं लिखा इससे विदित होताहै कि भाट जाति सूतसे भी भिन्न है, इस ग्रन्थके प्रमाणोंसे विदित है बढई, सारथी और वंश प्रशंसक तथा पुराणवक्ता यह सूतोंके भेद हैं, भा० ३ पृ० ४ इनमें पुराणवक्ता सूत अग्निकुंडसे उत्पन्न है. स्तुति करनेवाले और व्यापार करनेवाले दो प्रकारके मागध होते हैं, पृथुने (अनूपदेशं सूताय मगधं मागधाय च) अनूपदेश सूतको दिया और मगध मागधको दिया। विदित होता है, इसी सूतसे भाटोंकी उत्पत्ति वैश्यामें हुई है जैसा ऊपर लिख आयेहैं (वैश्यायां सूतवीर्येण पुमानेको बभूव ह। स भट्टो॰ वावदूकश्च सर्वेषां स्तुतिपाठकः) कारण कि हरिवंश पुराणके सूत मागधोंका विवाह किस जातिकी स्त्रीसे हुआ उसका प्रमाण सिवाय ब्रह्मवैवर्तपुराणके और कहीं नहीं मिलता, और उसी बीर्य प्रधानके कारण भट्ट जाति भी पिताका कर्म स्तुतिपाठ आदि करने लगी, श्रीमद्भागवतसे मागध और बन्दिन् एकही हैं मनुने भी मागधों को ब्राह्मण और क्षत्रियोंकी स्तुति करनेवाला ठहराया है, सो पहले लिख चुके हैं, एक बडे आश्चर्यकी बात है कि आजकल जहां कोई बात दो रूपसे हुई कि उसको परस्पर विरुद्ध कहकर त्यागका उपदेश करने को उद्यत होजातेहैं, उनसे पूछना है कि यदि व्याकरणसे एकही शब्दके रूप शाकल्य आदि ऋषियों के मतसे कहीं लोप कहीं आगम होकर चार वा १०८ वा इससे भी अधिक प्रकारके बनते क्या आप उनको परस्पर विरुद्ध कहकर त्याग सकतेहैं, कभी नहीं यह ऋषियोंके परस्पर भिन्न २ मत हैं और सबही सत्य हैं आगे ब्रह्मभट्ट प्रकाश भा० ३ पृ० २९। ३० में विचित्र बात कही है।

नृत्ताय सूतम्, अतिक्रुष्टाय मागधम्।

यजु० अ० ३०।

नाचनेके लिये सूतको पैदा कीजिये हंसानेके लिये मागधको पृ० ३३ वेदमन्त्रोंमें वर्णसंकरताकी चर्चा लेशमात्रभी नहीं है केवल कर्म लिखा है "और जो पंडित महीधरजीने अपनी टीकामें सूत मागधोंको वर्ण संकर लिख दिया सो स्मृतियोंको देखकर भ्रमसे लिख दिया, क्या खूब ग्रन्थकर्ता वेदको बहुतही विचार गये हैं, सनातनी भी बनते हैं और अर्थ दयानन्दी उडातेहैं जब ईश्वरसे नाचनेके लिये सूतके उत्पन्न होने की प्रार्थना है तब यह सूत क्या वस्तु हैं, नाचनेके लिये मनुष्यको पैदा कीजिये ऐसा वेदमें लिखना चाहिये था वैश्य या ब्राह्मण क्षत्रियको पैदा कीजिये ऐसा होता तो ठीक था परऐसा न लिखकर सन्तति वह सूत कौन है, जिसे नाचनेके लिये पैदा करै, नाचना तो मनुष्यमात्रही सीख सकते हैं फिर सूतही क्यों इससे विदित है कि सूतही कोई मुख्य इनकी जाति है, फिर यहां नाचनेके लिये यह अर्थ भी नहीं बनता अत्र चतुर्थ्यन्तं देवतापदम्, द्वितीयान्तं पुरुषपदं बोद्धव्यम्(यहां) चतुर्थ्यन्त देवतापद और द्वितीयान्त पुरुष पद है तब यह अर्थ होगा नृत्तदेवताके लिये सूतको ग्रहण करे, यदि आपका अर्थ सत्य मानें तो सुनिये।

प्रमदे कुमारीपुत्रम् ६ गीताय शैलूषम् ६ तपसे कौलालम् ७नदीभ्यः पौञ्जिष्ठम्८गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यम्८अयेभ्यःकितवम् ८सन्धये जारम् ९ कीलालाय सुराकारम्११वीरहत्याय पिशुनम् १३विविक्त्यै क्षत्तारम् १४यमायायमसूम्१४बीभत्सायै पौल्कसम्१७नृत्यवे गोव्यच्छम्१८अन्तकाय गोघातम् १८ दुष्कृताय चरकाचार्यम् । पाप्मने सैलगम् १८ नृत्तायानन्दाय तलवम् २० मागधः पुँश्चली कितवः क्लीबोऽशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः। यजु० अ० ३० मंत्र २२

यदि तीसवें अध्यायके मंत्र इसी प्रकारके अर्थवाले हैं, कि हे ईश्वर नृत्य करनेके लिये सूतको पैदा कीजिये तो इसी प्रसंगके इन मंत्रोंका अर्थ ब्रह्म० प्रकाशके लेखानुसार यह होगा कि कुमारी कन्याके पुत्रको प्रमद (विशेष आनंदके लिये पैदा कीजिये) कहिये तो विशेष आनंद कारी कन्याकेही पुत्रमें होता है और पुत्रोंमें नहीं, और कुमारीका पुत्र कानीन संकर क्यों नहीं, आप कहते हो वेदमें संकरजातिका वर्णन नहीं, इसी अध्यायमें ' रथकारं ' आदि संकर जाति बोधक पद पढे हैं,फिरगीत गानेके लिये शैलूष (नट) का तप करनेके लिये कुलालस्यापत्यं कौलालम्, कुम्हारके पुत्रको, नदीके लिये पौञ्जिष्ठ-अन्त्यजको, गन्धर्व अप्सरोंके लिये व्रात्यको,आयके लिये कितव-द्यूतकारको, सन्धिके लिये जारको, कीलालके लिये सुराकर्ताको, वीरहत्याके लिये चुगलखोरको, विविक्तिके लिये क्षत्ताको, यमके लिये युगलसन्तान एक साथ उत्पन्न करनेवालीको उत्पन्न कीजिये, बीभत्सके लिये पुल्कसकी सन्तानको, अन्तकके लिये, गोघातीको, नृत्य और आनन्दके लिये तलव-बाजा बजानेवालेको; दुष्कृतके लिये चरकाचार्यको पाप्माके लिये सलगम् दुष्टकी सन्तानको और (त्रेतायैकाल्पिनम् मं० १८) त्रेताके लिये कल्पना करने वालेको उत्पन्न कीजिये " ऐसे अर्थ होंगे इस प्रार्थनाकी तो बलिहारी है तपस्या कुलालकी सन्तान ही कर सकती है ब्राह्मणादि नहीं, क्यों साहब पौञ्जिष्ठ कौन है ? वह नदीके लिये है, तो वह नदीका क्या करै वा स्वयं नदी बन जाय और, व्रात्य गंधर्वाप्सराओंका क्या करै वा गन्धर्व अप्सरा बन जाय द्यूतकार जार और सुराकर्ता चुगलखोर, गोघाती, इनके उत्पन्न होनेकी भी आवश्यकता है, क्या यह चार वर्णके पुरुषकर्म नहीं कर सकते, यदि कहो कर सकते है, तो इनकी प्रार्थना करके खोटी उत्पत्तिसे क्या लाभ है,

यदि कहो चार वर्ण यह काम नहीं कर सकते तो यह पृथक् जाति क्यों न समझी जायं, और यह भी तो कहिये कि चरकाचार्य वैद्य चिकित्सा न करके दुष्कर्म करनेके लिये उत्पन्न किये जायँ अच्छे कर्म. बताये और सैलग-दुष्टकी सन्तान पाप करनेके लिये उत्पन्न किये जांय, कैसी भयंकर प्रार्थना है बीभ. त्सता आदिके लिये, पाप चोरी और जारीके लिये भी प्रार्थना है, हा वेद भगवन्! तुम्हारे व्याख्याता ऐसे भी होगये, इसीसे भारतमें कहा है (इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्। बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति) इतिहासपुराणोंसे वेदका विस्तार करै, थोडे पढेसे वेद डरता है कि यह मुझपर प्रहार करैगा इस अध्यायमें सूत रथकार कर्मकार अन्त्यज चाण्डाल कानीन यह सब संकर जाति हैं, कुमारीपुत्रसे क्या लाभ है, कुमार अवस्थाहीमें पुत्रकी चाहना है धन्य ऐसे अर्थोंकी बलिहारी है यदि कहो हम श्रुति स्मृति कुछ नहीं मानते तो निरुक्तसेही अर्थ करो, यदि केवल व्याकरणसे प्रकृतिप्रत्ययमात्रसे अर्थ करोगे और रूढि शब्द नहीं मानोगे तो सब संसार चलनेवाला गंगा गौ बन जायगा, और सम्पूर्ण विद्वत्समाज तथा कविसमाज ब्रह्मभट्ट बन जायगा, तब कोई जाति न रहैगी इससे शास्त्रानुसार शतपथानुसार यहां चतुर्थ्यंत देवता हैं द्वितीयांत पुरुष है इसमें अमुक अमुक देवताकी प्रीतिके लिये अमुक २ पुरुषको यज्ञमें स्थापन करना, ऐसा अर्थ ही बन सकता है, कारण कि यहां पुरुषमेधका प्रकरण है और (ब्रह्मणे ब्राह्मणम्) ब्रह्मके निमित्त ब्राह्मणको (क्षत्राय राजन्यम्, मरुद्भ्यो वैश्यम, तपसे शूद्रम्) क्षत्रकी प्रीतिके लिये क्षत्रियको, मरुतके लिये वैश्यको, तपके लिये शूद्रको स्थापन करना चाहिये, जब इस अध्यायमें जातिका स्पष्ट प्रकरण है तब दूसरे शब्द रथकार, सूत, मागध, आदि जाति वाचक क्यों न समझे जांय, जब चारो- वर्णके मनुष्य ही यह काम कर सकते थे तब इनसे पृथक् सूत आदिका ग्रहण व्यर्थही होजाता, इससे यह अध्याय बहुतसी जातियोंका बोधक है, नहीं तो त्रेताके लिये कल्पना करनेवालेको ईश्वर कलि- युगमें पैदा न करै, कारण कि त्रेतातक तो विचारस्थित ही नहीं रह सकता और स्वयं वेदही मागधको अशूद्र और अब्राह्मण मानता है, जैसा पीछे (मागधः पुंश्चली कितवः क्लीबो अशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजा. पत्याः) अर्थात् मागध पुंश्चली कितव क्लीब यह अशूद्र और अब्राह्मण हैं, प्रजापति देवताकी प्रीतिवाले हैं इस वचनसे मागध जाति शुद्ध ब्राह्मण नहीं है अब रही यह बात कि सप्तर्षियोंमें एक समय कोई मागध ऋषि होगये हैं तो होसकता है, मगध देशमें उत्पन्न कोई मागध कहाये हों, वे मागध जातिके वंदीजन नहीं होसकते या उनकी सन्तान वंदी नहीं होसकती, दिलीपकी सुदक्षिणा रानी भी मागधी कहाती थी, तो क्या वह वन्दी कुलकी थी कभी नहीं इसी प्रकार मागध ऋषि भी कोई ब्राह्मण होगये हैं पर यह मागध वंदीजन उसकी सन्तान हैं ऐसा कोई प्रमाण हमारे देखनेमें नहीं आया इस कारण।

दोहा-वंदी मागध सूतगण, विरद वदहिं मतिधीर।
और-नाऊ बारी भाट नट, राम निछावर पाय।

तु० रामायण।

"सूतमागधसम्बाधां श्रीमतीमतुलप्रभाम्"

बा० रा० सर्ग ५ बालकाण्ड।

तुलसीदासजी कहते हैं वंदी मागध सूत यह वंशकी प्रशंसाकरने लगे, तथा नाऊ बारी भाट नट इन्होंने रामकी निछावर ली, वाल्मीकिमें लिखा है अयोध्यामें बहुत सूत मागध आतेजाते थे, यह सत्य है

१ महीधरको भ्रम नहीं है नये अर्थ करनेवालेको भ्रम है।

महाराजके यहांसे उनको बहुत कुछ मिलता था, फिर अयोध्यामें संकर नहीं था (न चाव्रती न संकरः) इसका अभिप्राय यह है अयोध्या राजधानीमें संकर जातिकी उत्पत्ति नहीं थी, यदि संकर जाति न थी तो महाराजका सूत सुमन्त्र कहांसे आगया, इससे सिद्ध है कि जब वेदमेंही संकर जातियोंका वर्णन है तब यह चार वर्णोंमें अनुलोम प्रतिलोमसे उत्पन्न हुई है, तब ब्रह्मवैवर्तपुराणके मतसे जो भट्ट जातिकी उत्पत्ति लिखी है जबतक इसके विरुद्ध प्रमाण न मिले तबतक हम इसको यज्ञकुण्डोत्पन्न सूतसे वैश्यागर्भ सम्भूत मान सकते हैं, यदि ब्रह्मभट्ट जाति इन भाटोंसे पृथक् है तो उसको जातिसम्बन्धी प्रमाण दिखाने की आवश्यकता होगी, प्रमाण होनेपर हमको उनके प्रमाण रूपवर्णमें किसी प्रकारकी आनाकानी न होगी और यदि वह एक पदवीमात्र मानते हों तो वह कोई जाति नहीं है. समस्त कविसमुदाय भट्ट हो सकैगा। उसपर हमारा कुछ कहना नहीं है ।

भट्टगण अपने पांच भेद बताते हैं ब्रह्मभट्ट, महाराज, भट्ट, वारुण और बाडव, उसी पुस्तकमें लिखा है इस जातिके मुख्यनाम वारुण, ब्रह्मपुत्र, कविवंशी, ब्रह्मभट्ट और ब्रह्मराव हैं । और इसकी छः पद्धति हैं । भार्गव, भास्कर, भट्ट, भट्टारक, राव और पाण्डु ।

बस इतनाही वर्णन अभीतक हमको मिला है बीचके पांच नाम ब्रह्माजीके पुत्र कविकी शैलीपर लिखे हैं वह हमने भाटोंसे नहीं सुने अस्तु जो कुछ भी हो यह जाति द्विजातिमात्रसे सत्कार ग्रहण करती आई और राजोंके यहां तो सदासे इस जातिका मान होता आया है रजवाडोंमें वंशावलीकी रक्षा इसी जातिने की है, परन्तु अन्य ब्राह्मणोंकी पंक्तिमें इनकी सहभोज्यता नहीं है, दशविध ब्राह्मणोंके सिवाय अन्य ब्राह्मण भी इनके साथ भोजन नहीं पाते इनका पद ब्राह्मणोंसे हटा हुआ प्रतीत होता है । इनके संस्कार होते हैं जितना खोजनेसे और कभी मिल सकैगा वह भी लिख दिया जायगा।

हां यदि भाट जातसे ब्रह्मभट्टोंकी कोई पृथक् जाति है और वे अपनेको तथा अपने आपको भाटोंसे कोई पृथक् जाति मानते हैं तब इसपर हमको कुछ भी वक्तव्य नहीं है हमने ब्रह्मवैवर्त पुराणके आधारसे भाट वा भट्टकी उत्पत्ति लिखी है भा० पृ० १३में—वर्णधर्मविवेकधर्मशास्त्रे प्रथमे तरंगे इस नामसे एक श्लोक लिखा है,

"अपरः कविसम्भूतो ब्रह्मभट्टेति विश्रुतः ।
त्रयस्ते लोकविख्यातास्सच्छास्त्रेण प्रकीर्तिताः ॥

और तीसरे कवि पैदा हुए जो ब्रह्मभट्ट करके प्रगट हैं सत्शास्त्रोंसे तीनों लोकोंमें विख्यात हैं । यह श्लोक ब्रह्मभट्ट और कविकी एकताका सम्पादक अवश्य है पर जिस ग्रन्थके नामसे यह श्लोक है न तो इस नामका कोई धर्मशास्त्र है न यह किसी निबन्धमें दीखता है स्वयं ग्रन्थकर्तासे हमने पूछा उसका भी सन्तोषजनक उत्तर न मिला हमको तो यह श्लोक आधुनिक ग्रन्थकर्ताहीकी कृतिका विदित होता है (सच्छास्त्रेण प्रकीर्तिता) यही इसकी आधुनिकताका प्रमाण है, जो कुछ भी हो ब्रह्मभट्ट वंशकी कहीं परंपरा मिलैगी तो हम उसको भी लिख देंगे, अभीतक श्रुतिस्मृतिमें हमको ब्रह्मभट्ट जातिके विषयमें कोई प्रमाण नहीं मिला है इस लिये हमारा लेख स्तुति प्रशंसक भाटोंके प्रति है ।

इति भट्टोत्पत्तिः ।

अथ द्वादशविधगौडब्राह्मणानां चतुर्विधकायस्थानामुत्पत्तिमाह। पाद्मे पातालखण्डे *

सूत उवाच।

एकदा ब्रह्मलोके तु यमः प्रोवाच कं प्रति। चतुरशीतिलक्षाणां शासनेऽहं नियोजितः ॥ १ ॥ असहायः कथं स्थातुं शक्नोमि पुरुषर्षभ।

ब्रह्मोवाच।

प्राप्स्यते पुरुषः शीघ्रमित्युक्त्वा विससर्ज तम् ॥ २ ॥

अब बारह प्रकारके गौड ब्राह्मण और पन्द्रह प्रकारके कायस्थ जातिकी उत्पत्ति कहते हैं। जो पद्म पुराणके पातालखण्डमें सूतजीने कही है। कि, एकदिन यमराज ब्रह्माजीके पास जाकर बोले कि, आपने मुझको चौरासीलाख योनिकी शिक्षाके ऊपर स्थापन किया है ॥ १ ॥ परन्तु यह काम मैं दूसरेकी सहायताके विना कैसे कर सकता हूँ, तब ब्रह्माने कहा कि, हे यम! तुमको शीघ्रही दूसरा पुरुष मिलेगा। यह कहकर यमराजको विदाकिया ॥ २ ॥

धर्मराजे गते ब्रह्मा समाधिस्थो बभूव ह। तच्छरीरान्महाबाहुः श्यामः कमललोचनः ॥३॥ लेखिनीपट्टिकाहस्तो मसीभाजनसंयुतः। स निर्गतोऽग्रतस्तस्थौ नाम देहीति चाब्रवीत् ॥ ४ ॥

ब्रह्मोवाच।

गच्छ पुरुष भद्रं ते तप आचरतामिति। इत्याज्ञप्तः स पुरुषो ययौ धौरेयदेशकान् ॥ ५ ॥ उज्जयिन्याः समीपे तु क्षिप्रायाश्च तटे शुभे। पञ्चक्रोशात्मके क्षेत्रे तपस्तप्तं महत्तरम् ॥ ६ ॥ ततः कतिपये काले ब्रह्मा लोकपितामहः। उज्जयिन्यां ततः श्रीमानाजगाम मुदान्वितः॥७॥ यजनार्थाय यज्ञैश्च नानासंभारसंयुतः। चित्रगुप्तोपि धर्मात्मा कन्याः प्राप सुलक्षणाः ॥ ८ ॥ वैवस्वतमनोः कन्याश्चतस्रः शुभलक्षणाः। अष्टौ सुरूपा नागीयाः पितृभक्तिपरायणाः ॥ ९ ॥ तासां समभवन्पुत्रा द्वादशैव जगत्प्रियाः। ब्रह्मा वर्षसहस्रं तु यज्ञैरिष्ट्वा सुदक्षिणैः ॥ १० ॥ चित्रगुप्तमुवाचेदं वाक्यं धर्मार्थमेव च।

---

* ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्डमें पातालखण्डके नामसे यह श्लोक लिखे हैं पर हमने वहां नहीं पाये अन्यत्र होंगे।

ब्रह्मोवाच ।

चित्रगुप्त महाबाहो मत्प्रियोऽस्मत्समुद्भवः ॥११॥ चित्रगुप्त सुगुप्तांग तस्मान्नाम्ना सुविश्रुतः।मम कायात्समुद्भूतःसर्वाङ्गं प्राप्य सत्वरम् ॥१२॥

यमराजके जानेके पश्चात् ब्रह्माजी समाधि चढाकर बैठे तब उनके शरीरमेंसे आजानुबाहु श्यामवर्ण, कमलके समान नेत्र, और हाथमें दवात, कलम, पट्टी, लिये ऐसा एक पुरुष निकल कर ब्रह्माजीके आगे खडे होकर कहने लगा कि, मेरा नाम दो ॥ ३-४ ॥ तब ब्रह्माने कहा कि, हे पुरुष ! तुम जाकर तप करो इसीमें तुम्हारा भला होगा, यह सुन वह तथास्तु कहकर बडे देशोंको चला गया ॥ ५ ॥ वहां उज्जयिनी नगरीके समीप क्षिप्रानदीके किनारे जो पांचकोशका क्षेत्र है वहां बैठकर बडे भारी महान् तपको करने लगा ॥ ६ ॥ इस प्रकार तप करते हुए उसको बहुत दिन बीत गये तब लोकपितामह ब्रह्मा प्रसन्न हो उस नगरीमें आये ॥ ७ ॥ और अनेक प्रकारकी वस्तुएँ संयुक्तकर एक हजार वर्षका यज्ञ आरंभ करदिया । उसमें चित्रगुप्त सुन्दर लक्षणवाली कन्याओंको प्राप्त होता हुआ ॥ ८ ॥ शुभ लक्षणवाली चार वैवस्वत मनुकी, और पितृभक्तिपरायण आठ कन्या नागोंकी ॥ ९ ॥ इस प्रकार उन वारह कन्याओंसे जगत्प्रिय वारह पुत्र उत्पन्न हुए, और ब्रह्मा भी उस सुन्दर दक्षिणवाले हजार वर्षके यज्ञको समाप्त कर ॥ १० ॥ चित्रगुप्तसे धर्म अर्थ युक्त वचन कहने लगे कि, हे चित्रगुप्त ! मुझको तू बहुत प्रिय है क्योंकि तू मेरी कायासे उत्पन्न हुआ है ॥ ११ ॥ हे चित्रगुप्त तुम्हारे सब अंग रक्षित हैं इससे तुम इसी नामसे विख्यात होगे मेरी कायासे उत्पन्न होनेसे—

तस्मात् कायस्थविख्यातो लोके त्वं तु भविष्यसि । एते वै तव पुत्राश्च काकपक्षधराः शुभाः ॥ १३ ॥ सर्वे षोडशवर्षीयाः शुभाचाराः शुभाननाः । परिज्ञातसदाचारः कायस्थः पंचमो मतः ॥ १४ ॥ धर्मराजगृहं गच्छ कार्यं मे कुरु सुव्रत । सदसत्सर्वजन्तूनां लेखकः सर्वदैव हि ॥ १५ ॥ एतान्दास्यामि सर्वान्वै ऋषिभक्तिपरांस्तव । एवमुक्त्वा तु विप्रेभ्यो ददौ लोकपितामहः ॥ १६ ॥ मांडव्याय ददौ पुत्रं सुरूपमृषिवल्लभम् । मंडपाचलसान्निध्ये मंडपेश्वरसान्निधौ ॥ ॥ १७ ॥ या देवी वर्तते मंडपेश्वरी जगदम्बिका । गृहीत्वा गतवान् सोऽपि ऋषिर्मांडव्यसंज्ञकः ॥१८॥ नाम्ना श्रीनैगमः सोऽपि कायस्थो देवनिर्मितः । मांडव्यास्तत्र श्रीगौडा गुरवः शंसितव्रताः ॥ १९ ॥ नैगमास्तेऽपि बहव ऋषिभक्तिपरायणाः । जाता वै नैगमास्तत्र शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २० ॥

—तुम शीघ्रही सब अंगोंको प्राप्त होगे ॥ १२ ॥ इस लिये तुम लोकमें कायस्थ नामसे विख्यात होगे, और ये काकपक्ष धारण करनेवाले जो तुम्हारे वारह पुत्र हैं ॥ १३ ॥ वे षोडश वर्षीय उत्तम

आचारके पालन करनेवाले हैं, इस लिये कायस्थ पांचवां वर्ण मान्य है ॥ १४ ॥ अब तुम धर्मराजके समीप जाकर मेरा काम करो, प्राणियोंका पाप पुण्य सब काल लिखना ॥ १५ ॥ और यह तुम्हारे बारह पुत्र (ऋषियोंको देता हूँ) कारण कि यह ऋषिभक्ति परायण हैं यह कह ब्रह्माने बारह पुत्रोंको ऋषियोंको देदिया ॥ १६ ॥ उसमें प्रथम माण्डव्य नामक ऋषिको पुत्र दिया, उनका स्थान मंडपपर्वतके पास जहां मंडपेश्वर शिव ॥ १७ ॥ और मंडपेश्वरी देवी हैं वहां चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर मांडव्य ऋषि चले गये ॥ १८ ॥ तब उस पुत्रसे जो वंश चला वह नैगम कायस्थ जाति कहलाई, और मांडव्य ऋषिकी जो सन्तान हुई वह मांडव्य श्रीगौड कहाई अर्थात् कोई माल्व्य श्रीगौड भी कहते हैं, वे उनके उपाध्याय हुए ॥ १९ ॥ उनकी भक्तिमें तत्पर सौ हजार नैगम कायस्थ रहते हुए ॥ २० ॥

गौडास्तेऽपि च मांडव्यशिष्यास्ते गुरवः स्मृताः । शिष्याणां चैव लक्षैकं प्रसंगात्समुदीरितम् ॥ २१ ॥ तस्मादर्धं गतास्ते वै लंभितं वासयन्पुरम् । द्वितीयं तु सुतं तस्य गौतमाय ददौ ततः ॥ २२ ॥ गौडेश्वरी तु या देवी वर्तते जगदम्बिका । श्रीगौडः सोऽपि कायस्थो वहुधा विश्रुतःशुचिः॥२३॥गौतमो दत्तवांस्तेषां गुर्वर्थं तानृषीन् विभुः। श्रीगौडास्तत्र शिष्यान्वै गुरवस्ते तपस्विनः ॥ २४ ॥ तृतीयं तु सुतं तस्य श्रीहर्षं दत्तवांस्ततः । श्रीहर्षेश्वरसान्निध्ये गतवानृषिसत्तमः ॥ ॥ २५ ॥ सरोरुहे शुभे देशे शुभे च सरयूतटे । सरोरुहेश्वरी यत्र वर्तते जगदम्बिका ॥ २६ ॥

वे श्रीगौड मांडव्यके शिष्य एकलाख थे, यह प्रसंगानुसार वर्णन किया गया ॥ २१ ॥ उनमेंसे आधे लंभित नगरमें जाकर रहने लगे, पश्चात् ब्रह्माने दूसरा पुत्र गौतम ऋषिको दिया ॥ २२ ॥ वे जगदम्बा गौडेश्वरी देवीके पासके रहनेवाले विख्यात श्रीगौड कायस्थ कहलाये ॥ २३ ॥ और गौतमजीकी आज्ञासे उनके शिष्य श्रीगौड ब्राह्मण उनके उपाध्याय हुए वे बडे तपस्वी होते हुए ॥ २४ ॥ ब्रह्माने तीसरा पुत्र श्रीहर्षको दिया, वह चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर सरोरुह देशमें सरयूनदीके तीर जहां श्रीहर्षेश्वर महादेव और सरोरुहेश्वरी देवी हैं वहांको गये ॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीगौडास्तस्य वै शिष्या गुर्वर्थं संप्रकल्पिताः । श्रीवास्तव्याश्च कायस्था नानारूपा ह्यनेकशः ॥ २७ ॥ श्रीगौडानां च लक्षैकं शिष्याणां संप्रकीर्त्तितम् । तस्मादर्धं गतास्तेऽपि ह्यवसन् जाह्नवी-तटे ॥ २८॥ चतुर्थं तु सुतं तस्य हारीताय ददौ ततः । गृहीत्वा गत-वान् सोऽपि देशे हर्याणके शुभे ॥ २९ ॥ हारीतेश्वरसान्निध्ये हरित-स्याश्रमे शुभे । हर्याणेशी यत्र देवी वर्तते जगदम्बिका ॥ ३० ॥

पश्चात् वहां श्रीहर्षके शिष्य श्रीहर्ष गौड गुरु हुए, और श्रीवास्तव्य कायस्थ अनेक रूपके बहुत हुए ॥ २७ ॥ श्रीगौड जो एक लाख ब्राह्मण थे उनमेंसे आधे उन कायस्थोंके गुरु हुए और आधे जाह्नवी

गंगाके किनारे जाकर रहने लगे, इसलिये वे गंगापुत्र हुए ॥ २८ ॥ ब्रह्माने चौथा पुत्र हारीत ऋषिको दिया, वह ऋषीश्वर चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर हर्याण देशमें जहां हारीतेश्वर महादेव, और जगदम्बा हर्याणी देवी हैं और जहां हारीत ऋषिका आश्रम है वहांको गये ॥ २९ ॥ ३० ॥

कायस्थाः श्रेणिपतयः विवृताश्च सहस्रशः । हर्याणाश्चैव श्रीगौडा गुरुत्वे संप्रणोदिताः ॥ ३१ ॥ पंचमं तु सुतं तस्य वाल्मीकाय ददौ ततः । गृहीत्वा गतवान् सोऽपि ह्यर्बुदारण्यके शुभे ॥ ३२ ॥ देशेऽर्बुदे महारण्ये वाल्मीकाश्रमसंज्ञके । वाल्मीकेश्वरसान्निध्ये कायस्थो देवनिर्मितः ॥ ३३ ॥ वाल्मीकेश्वरिका यत्र वर्तते जगदम्बिका । वाल्मीकाश्चैव कायस्था वर्द्धितास्तदनन्तरम् ॥ ३४ ॥ वाल्मीकाश्चैव गुरवो मुनिना संप्रकल्पिताः । रक्तशृङ्गीश्च इत्येते पार्श्वे पश्चिमतः शुभे ॥ ३५ ॥ योजनद्वयमाने तु दूरे तिष्ठन्ति चाश्रमे । किंयत्काले च संप्राप्ते यज्ञकर्म समाचरन् ॥ ३६ ॥ षष्ठं तस्य सुतं ब्रह्मा वसिष्ठाय ददौ पुनः । गृहीत्वा गतवान् सोऽपि वसिष्ठो मुनिसत्तमः ॥ ३७ ॥ अयोध्यामण्डले देशे वसिष्ठेश्वरसन्निधौ । सरयूतटमाश्राय वर्तते जगदम्बिका ॥ ३८ ॥

तत्पश्चात् ऋषिके वंशमें जो हुए वे हर्याणा गौडब्राह्मण हुए और उस पुत्रके वंशवाले श्रेणीपति कायस्थ हुए ब्राह्मण इनके उपाध्याय हुए ॥ ३१ ॥ ब्रह्माने पांचवा पुत्र वाल्मीकको दिया वह उसको लेकर अर्बुद वनमें गये ॥ ३२ ॥ आबूके पास जहां वाल्मीक ऋषिका आश्रम है और जहां वाल्मीकेश्वर माहादेव हैं तथा वाल्मीकेश्वरी देवी हैं वहां, रहने लगे पश्चात् वहां वाल्मीक कायस्थ वृद्धिको प्राप्त हुए ॥ ३३ ॥ यह यजमान और वाल्मीक ब्राह्मण गौडगुरु वृद्धिको प्राप्त हुए ॥ ३४ ॥ और कितने ही ऋषिसे कल्पित रक्तशृङ्ग नामक हुए । वे वहांसे पश्चिमके ॥ ३५ ॥ आठकोसके ऊपर जिनका आश्रम है जाकर यज्ञ करने लगे ॥ ३६ ॥ पश्चात् ब्रह्माने छठा पुत्र वसिष्ठ नामवाले ऋषिको दिया वे उसको लेकर अयोध्याके समीप सरयूनदीके तट पर जहां वसिष्ठेश्वर महादेव हैं और वसिष्ठादेवी हैं वहां गये ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

वासिष्ठाश्चैव कायस्था गुरवोऽपि शुचिस्मिताः । वासिष्ठा ऋषिशिष्याश्च वसिष्ठस्य महात्मनः ॥ ३९ ॥ सप्तमं तु सुतं तस्य ददौ सौभरये ततः ॥ गृहीत्वा गतवान् सोऽपि ब्रह्मर्षिः स्वाश्रमं शुभम् ॥ ४० ॥ सौरभेये शुभे देशे सौरभेश्वरसन्निधौ । सौरभी देवता तत्र वर्तते जगदम्बिका ॥ ४१ ॥ सौरभाश्चैव कायस्थाः सौरभा गुरवः स्मृताः ॥ अष्टमं तु सुतं तस्य दालभ्याय ददौ ततः ॥ ४२ ॥ गृहीत्वा गतवान् सोऽपि स्वाश्रमं मुनिसंयुतम् । देशो दुर्लभको यत्र दालभ्या

च सरिद्वरा॥४३॥ दालभ्येश्वरसान्निध्ये दालभ्यश्चित्रगुप्तजः। दालभ्या इति या देवी वर्तते जगदम्बिका॥४४॥ तच्छिष्याश्चैव दालभ्या गुरुत्वे ते प्रकीर्तिताः। तदुत्पन्ना द्विजाः सूत शतशोथ सहस्रशः ॥४५॥

पीछे उन दोनोंके वंशमें वासिष्ठ गौड ब्राह्मण उपाध्याय हुए और वसिष्ठ कायस्थ उनके यजमान हुए यह महात्मा वशिष्ठके शिष्य हुए ॥ ३९ ॥ पुनः ब्रह्माजीने सातवां पुत्र सौभरि ऋषिको दिया, सौभरि उस चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर अपने आश्रममें आये ॥ ४० ॥ सौरभेश्वर महादेव तथा जहां सौरभी देवी है वह सौरभ देश है उसमें यह ऋषि आये ॥ ४१ ॥ पश्चात् उन दोनों गुरु और शिष्यके वंशमें सौरभ कायस्थ यजमान, और ऋषिके वंशके सौरभ गौड ब्राह्मण उनके उपाध्याय हुए, पश्चात् ब्रह्माजीने आठवां पुत्र दालभ्य नामवाले ऋषिको दिया ॥ ४२ ॥ उस चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर दालभ्य ऋषि दुर्ल्लक देशमें दालभ्या नदीके तट पर ॥ ४३ जहां दालभ्येश्वर महादेव और दालभ्या देवी विराजमान है तथा जहां दालभ्य ऋषिका आश्रम है वहां आये ॥ ४४ ॥ जो दालभ्य ऋषिके शिष्य थे वे दालभ्य गौड ब्राह्मण हुए, और दालभ्य नामक कायस्थ उनके यजमान हुए। हे सूत जो कि दालभ्य गौडके वंशमें सहस्रावधि उत्पन्न हुए ॥ ४५ ॥

केचिदहिस्थलीं प्राप्ताः केचित्कुण्डलिनीं गताः॥ याजयन्ति स्म दालभ्यान् कायस्थाचित्रगुप्तजान् ॥ ४६ ॥ नवमं तु सुतं तस्य हंसं तमृषिसत्तमः। गृहीत्वा प्रययौ हंसो हंसदुर्गस्य सन्निधौ ॥ ४७ ॥ सुखसेनो महादेवो विद्यते गुणवत्तरः। हंसेश्वरस्य सान्निध्ये ऋषीणां प्रवरः सुधीः ॥ ४८ ॥ हंसेश्वरी यत्र देवी वर्तते जगदम्बिका। तदुत्पन्नाश्च कायस्थाः सुखसेना ह्यनेकशः ॥ ४९ ॥ ततस्तेभ्यो ददौ हंसाच्छिष्यांश्च याजनानि वा। विप्रास्तु सुखदाश्चैव सुखसेना महौजसः ॥ ५० ॥

उनमेंसे कितने एक तो अहिस्थलीमें गये और कुन्डलिनीमें गये और पश्चात् चित्रगुप्त दालभ्य कायस्थोंको वे यजन कराने लगे ॥ ४६ ॥ ब्रह्माजीने नववां पुत्र हंसनामक ऋषिको दिया वह ऋषि चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर हंसनामवाले दुर्गके समीप ॥ ४७ ॥ सुखसेन देशमें जहां हंसेश्वर महादेव हैं और हंसेश्वरी जगदम्बा देवी हैं वहां वे बुद्धिमान ऋषिश्रेष्ठ गये वहां चित्रगुप्तके वंशमें जो उत्पन्न हुए वे सुखसेन कायस्थ हुए ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ और हंसऋषिके जो शिष्य थे वे सुखसेन गौड ब्राह्मण उनके उपाध्याय होते हुए बडे तेजस्वी हुए ॥ ५० ॥

याजयन्ति सदाचाराः सुदेशेषु व्यवस्थिताः। दशमं तस्य पुत्रं तु भट्टाख्यमुनये ददौ ॥ ५१ ॥ गृहीत्वा गतवान् सोऽपि भट्टकेश्वरसन्निधौ। भट्टेश्वरी यत्र देवी वर्तते जगदम्बिका ॥ ५२ ॥ भट्टेश्वरो महादेवो यत्र शूली महेश्वरः। भट्टकेशाश्च कायस्थास्तदुत्पन्ना ह्यने-

कशः ॥ ५३ ॥ तान् गुरुत्वेन संपाद्य भट्टनागरसंज्ञकाः । एकादशं तु पुत्रं तु सौरभाय ददौ ततः ॥ ५४ ॥

सदाचारसे उत्तम देशमें यजन कराते हुए ब्रह्माने दशवां पुत्र भट्ट नामवाले ऋषिको दिया ॥ ५१ ॥ वह भट्टऋषि चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर जहां भट्ट महादेव और भट्ट महेश्वरी हैं वहांको गये ॥ ५२ ॥ वहां चित्रगुप्तके वंशमें जो उत्पन्न हुए वे भट्टनागर कायस्थ कहाये यजमान हुए ॥ ५३ ॥ और भट्टऋषिके जो शिष्य थे वे भट्टगौड ब्राह्मण उनके उपाध्याय हुए ब्रह्माजीने ग्यारहवां पुत्र सौरभ नामवाले ऋषिको दिया, ॥ ५४ ॥

सूर्यमण्डलदेशे तु सौरभेश्वरसन्निधौ । यत्र सौरेश्वरी देवी वर्तते जगदम्बिका ॥ ५५ ॥ सूर्यध्वजाश्च बहवो जातास्तेपि सहस्रशः । कायस्थास्तत्र विख्याताः स्वधर्मनिरताः सदा ॥ ५६ ॥ सूर्यध्वजाश्च तच्छिष्या गुरुत्वे ते प्रकल्पिताः ॥ द्वादशं तु सुतं तस्य माथुराय ददौ ततः ॥ ५७ ॥ माथुरेश्वरसान्निध्ये माथुरा विस्तृताः पुनः । माथुरेशी महादेवी वर्तते जगदम्बिका ॥ ५८ ॥ माथुरीयाश्च गुरवो वर्तन्ते बहवः स्मृताः । एवं दत्त्वा तु तान् पुत्रान् ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ ५९ ॥ उवाच वचनं श्लक्ष्णं ब्रह्मा मधुरया गिरा । पुत्रत्वे पालनीयाश्च लेखकाः सर्वदैव हि ॥ ६० ॥ शिखासूत्रधरा ह्येते पटवः साधुसंमताः ।

सौरभ ऋषि उस चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर सूर्यमंडल देशमें जहां सौरभेश्वर शिव और सौरभेश्वरी देवी हैं वहां गये ॥ ५५ ॥ वे सूर्यमंडलदेशमें निवास करनेके कारण उसकी सन्तान सूर्यध्वज कायस्थ हुई यह सहस्रों विख्यात अपने धर्ममें निरत हुए ॥ ५६ ॥ और सूर्यध्वज गौड ब्राह्मण उन ऋषिके शिष्य उनके उपाध्याय इस नामसे विख्यात हुए पश्चात् ब्रह्माजीने बारहवां पुत्र माथुर नामवाले ऋषिको समर्पण किया ॥ ५७ ॥ वे माथुर ऋषि चित्रगुप्तके पुत्रको लेकर माथुर देशमें जहां माथुरेश्वर महादेव मथुरा नगरी तथा माथुरेश्वरी महादेवी है वहां गये ॥ ५८ ॥ पीछे माथुर ऋषिके जो शिष्य थे, वे माथुर चौबे गौड ब्राह्मण उपाध्याय हुए और उनके यजमान माथुर कायस्थ हुए, ब्रह्माजीने इस प्रकार उन बारह पुत्रोंको यथाक्रमसे देकर मधुर वचनसे ॥ ५९ ॥ कहा कि, चित्रगुप्तके वंशका पुत्रके समान पालन करना यह लेखक होंगे ॥ ६० ॥ और ये सब कायस्थ शिरके ऊपर शिखा और यज्ञोपवीत धारण करनेवाले चतुर और साधुसम्मत होंगे ।

सूत उवाच-

एवमुक्त्वा विधाथादौ यज्ञं ब्रह्मा ययौ स्वकम् ॥ ६१ ॥ सावित्र्या सहितः श्रीमानथ ये चित्रगुप्तकाः । तेषां मध्ये तु ये चंकाः शृण्वंतु तस्य कारणम् ॥ ६२ ॥ गौडदेशे महारण्ये गंगायाश्चो-

त्तरे तटे । महालक्ष्म्या कृतो यज्ञस्तत्र ये वै वृताः शुभाः ॥ ६३ ॥ चत्वारः परमार्थज्ञा मुख्याः कर्मणि साधवः । तेषां शुश्रूषकास्तत्र लेखकाः कायजाः पुनः ॥ ६४ ॥ ते तु लक्ष्म्याः प्रसादेन चंकाः श्रीवत्सलाः परे । कर्माणीह तु यान्येषां या गतिस्त्रिषु वर्णतः॥ ६५ ॥ द्विजातीनां यथा दानं यजनाध्ययने तथा । कर्तव्यानीति कायस्थैः सदा तु निगमाँल्लिखेत् ॥ ६६ ॥

सूतजी कहने लगे कि, वह लोकपितामह ब्रह्माजी ऐसा कह यज्ञ समाप्त करनेके उपरान्त सावित्रीके साथ अपने लोकको गये अब जो चित्रगुप्तके वंशमें चक्र नामवाले हुए हैं उनका कारण सुनो ॥ ६१॥६२ ॥ गौडदेशमें एक बडे रमणीय सुन्दर स्थानमें गंगाके उत्तरतटके ऊपर महालक्ष्मीने यज्ञ किया, वहां जो वरणको प्राप्त हुए थे ॥ ६२ ॥ उनमेंसे चार मुख्य हुए, उनकी सेवा करनेको लेखक कायस्थ तत्पर होते हुए ॥ ६४ ॥ पश्चात् वे कायस्थ लक्ष्मीके अनुग्रहसे श्रीवत्सलचंक कायस्थ नामसे विख्यात हुए इनका कर्म त्रिवर्णके अन्तर्गत है ॥ ६९ ॥ अर्थात् कायस्थोंने दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना तथा निगम लिखना ॥ ६६ ॥

पुराणपाठकाः सर्वे सर्वे तत्स्मृतिशंसकाः । आतिथ्यं श्राद्धकर्तृत्वं सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥ ६७ ॥ इच्छया पुनरुद्वाहमितरः परिवर्जयेत् । शूलारोहनिमित्तेन कायस्थानृषिसत्तमान् ॥ ६८ ॥ मांडव्यस्ताञ् शशापेदं कोपसंरक्तलोचनः । अल्पोऽपराधो मे जातस्त्वया बहुतरीकृतः ॥ ६९ ॥ वध्यस्त्वं धर्मतश्शीघ्रं पापीयान् भव लेखक । श्रुत्वा शापं चित्रगुप्त ऋषिसेवां चकार ह ॥ ७० ॥

पुराण और स्मृतिका पाठ करना, अतिथिसेवा और श्राद्धादि धर्मसाधन करना है ॥ ६७ ॥ और जो यह पंचम चित्रगुप्त कायस्थ है इनकी इच्छापर दूसरा विवाह है अन्यथा नहीं । और कायस्थोंके लिये जो कलिमें शाप हुआ है उसको कहते हैं. एक दिन चोरोंके सहित वर्तमान मांडव्य ऋषिको किसी एक राजाने शूलीके ऊपर चढाकर उनका प्रताप देख ऋषिको नीचे उतार दिया ॥ ६८ ॥ तब मांडव्य ऋषिने चित्रगुप्तके पास जाकर कहा कि बाल्यावस्थामें मैंने जो कुछ थोडा अपराध किया था उसका दंड तूने बहुत दिया इससे ॥ ६९ ॥ हे लेखक तू धर्मसे वध करने योग्य है, इसलिये तू पापी होजा चित्रगुप्त इस प्रकार ऋषिके शापको सुनकर भयसे व्याकुल हो उनकी सेवा करने लगा ॥ ७० ॥

ऋषिरुवाच ।

मम शापस्तु विफलो न कदाचिद्भविष्यति । तथाप्यनुग्रहो मे वै त्वज्जातीनां भविष्यति ॥ ७१ ॥

तब मांडव्यने कहा हे चित्रगुप्त ! तू सेवा तो करता है परन्तु मेरा शाप निष्फल कदापि नहीं होवेगा तोभी मेरे अनुग्रहसे तुझको नहीं, तथा तेरे ज्ञातिके लोगोंको अवश्य फलीभूत होवैगा ॥ ७१

एवमुक्तोऽपि सेवां वै चित्रगुप्तश्चकार ह । कलौ शापो मया दत्तः सर्वेषां स भविष्यति ॥ ७२ ॥ तेषु सूर्यध्वजा ये वै तेषां धर्मः प्रणश्यति । वैश्यादुच्चतरा वृत्तिर्ब्राह्मणक्षत्रियादधः ॥७३॥ ब्रह्मशापाभिभूतानां पातित्यं च कलौ ध्रुवम् । वाल्मीकानां कियान्धर्मः स्थास्यत्येवं सुनिश्चयम् ॥ ७४ ॥ इति चित्रगुप्तकायस्थभेदः प्रथमः ॥

इससे पश्चात् पुनः वह चित्रगुप्त ऋषिकी सेवामें तत्पर होगया, तब ऋषिने कहा कि, तीन युगमें तो पुण्यात्मा रहेंगे फिर यह कलियुगमें शठ पापी होजायेंगे ॥ ७२ ॥ चित्रगुप्तने बहुतसी सेवा की तब ऋषिने उससे कहा कि तेरे जो बारह वंश हैं वह धर्मनाशके लिये प्राप्त होवेंगे उनमेंसे जो सूर्यध्वजवंश है वह धर्म नाशमें प्रवृत्त होवेगा, बाकी सबोंकी वृत्ति वैश्यवर्णसे श्रेष्ठ तथा ब्राह्मण और क्षत्रियोंसे नीची होगी उसका पालन करना ॥ ७३ ॥ ब्राह्मणके शापसे तुमको कलियुगमें पतितपना निश्चय प्राप्त होगा परन्तु वाल्मीकि ब्राह्मण और कायस्थ इनका कुछ धर्म स्थित रहेगा ॥ ७४ ॥ इसप्रकार चित्रगुप्त कायस्थोंका पहिला भेद समाप्त हुआ ।

अथ कल्पभेदेन द्वितीयचित्रगुप्तकायस्थोत्पत्तिमाह—पाद्मे सृष्टिखण्डे ॥

सृष्ट्यादौ सदसत्कर्म ज्ञप्तये प्राणिनां विधिः । क्षणं ध्यायन्स्थितस्तस्य शरीरान्निर्गतो बहिः ॥ ७५ ॥

(अब दूसरे चित्रगुप्त कायस्थोंकी उत्पत्ति कल्प भेदसे कहते हैं) ।

सृष्टिके आरम्भमें ब्रह्मा प्राणियोंके पाप पुण्य कर्मके ज्ञान होनेके लिये क्षणभर ध्यान करके बैठे कि इतनेहीमें उनके शरीरमेंसे एक पुरुष बाहर निकलकर स्थित हुआ ॥ ७५ ॥

दिव्यरूपः पुमान् हस्ते मषीपात्रं च लेखनीम् । दधानश्चित्ररूपेण रक्षितो दैवतेन हि ॥ ७६॥ चित्रगुप्त इति ख्यातो धर्मराजसमीपतः । ब्रह्मणा सह देवैश्च क्षणं ध्यात्वा नियोजितः॥७७॥प्राणिनां सदसत्कर्मलेखनाय सुबुद्धिमान्।भोजनादौ बलिस्तस्य भागोऽपि परिकीर्तितः७८ ब्रह्मकायोद्भवो यस्मात्कायस्थ इति गीयते । दक्षप्रजापतेः कन्यां दाक्षायण्यभिधां ततः॥७९॥उपयेमे ततः पुत्रो जातस्तस्य महात्मनः। विचित्रगुप्तनामासौ बुद्धिचातुर्यवीर्यवान् ॥ ८० ॥

उस विचित्र दिव्य स्वरूप, दवात कलम हाथमें लिये देवताओंसे रक्षित पुरुषको देखकर देवताओंने उसका नाम चित्रगुप्त रक्खा ॥ ७६ ॥ उस पुरुषको ब्रह्माने क्षणभर ध्यान करनेके पश्चात् देवसहवर्तमान धर्मराजके पास स्थापन किया ॥७७॥ इस प्रकार प्राणियोंके सदसत् कर्म लिखनेके लिये उस बुद्धिमान् पुरुषको स्थापनकर पश्चात् उसके भोजनके लिये बलिका भाग नियुक्त किया ॥ ७८ ॥ ब्रह्माकी कायासे उत्पन्न होनेके कारण "कायस्थ" इस प्रकार कहते हैं पीछे चित्रगुप्तने दक्षप्रजापतिकी दाक्षायणी नामवाली कन्याके साथ ॥ ७९ ॥ विवाह किया, उससे एक विचित्रगुप्तनामक पुत्र उत्पन्न हुआ वह बड़ा बुद्धिमान् पराक्रमी हुआ ॥ ८० ॥

ततस्तेन मनोः कन्या यथाविधि विवाहिता । स्वक्षाभिधानतस्तस्यां धर्मगुप्तो बभूव ह ॥ ८१ ॥

उसने मनुष्यकी कन्याके साथ विवाह किया, उससे धर्मगुप्तनामक पुत्र उत्पन्न हुआ ॥ ८१ ॥

धर्मगुप्ताच्च गांधार्यां रुद्रगुप्तोऽभवत्सुतः । तस्मादप्सरसो जातं पुत्राणां च चतुष्टयम् ॥८२॥ माथुरो गौडसंज्ञश्च नागरो नैगमस्तथा । तेषां नामानि चत्वारि चतुर्णां च यथाक्रमम् ॥८३॥ कायस्थश्चैकशाकश्च कौलिकश्च महेश्वरः । एतेषां काश्यपं गोत्रं तेषां धर्ममथो शृणु ॥८४॥ स्नानं द्विकालमेतेषां त्रिकालं संधिवन्दनम् । अष्टम्यां च चतुर्दश्यां चंडीव्रतपरायणाः ॥ ८५ ॥

धर्मगुप्तका पुत्र गंधारीमें रुद्रगुप्त हुआ, उसकी अप्सरा स्त्री हुई जिसके चारपुत्र हुए ॥ ८२ ॥ जिनके नाम माथुर, गौड, नागर और नैगम करके विख्यात हुए। उनके दूसरे नाम क्रमसे ॥ ८३ ॥ कायस्थ १ शाक २ कौलिक ३ और महेश्वर ४ हुए इस प्रकार इन सबका काश्यप गोत्र है। अब धर्म सुनो ॥ ८४ ॥ नित्य दो समय स्नान करना, त्रिकाल संध्या वन्दन करना, और अष्टमी तथा चतुर्दशीको दुर्गाव्रत करना ८५ ॥

भौमवारव्रताश्चैव नवरात्रव्रतास्तथा । तर्पणं पंचयज्ञानां विधानं च यथाक्रमम् ॥ ८६ ॥

अथ चान्द्रसेनीय कायस्थोत्पत्तिमाह

स्कांदे रेणुकामाहात्म्ये ॥

एवं हत्वार्जुनं रामः संधाय निशिताञ्छरान् । अन्वधावत्स तान्हन्तुं सर्वानेवासुरान्नृपान् ॥८७॥ तदा रामभयात्सर्वे नानावेषधरा नृपाः । स्वं स्वं स्थानं परित्यज्य यत्र कुत्र गताः किल ॥ ८८ ॥

मंगलवारका व्रत, तर्पण और पंचयज्ञ करना ॥८६॥ यह चित्रगुप्त कायस्थोंका दूसरा भेद समाप्त हुआ। (अब चन्द्रसेन राजाके वंशस्थ कायस्थोंका भेद कहते हैं)-परशुरामजी सहस्रार्जुनको मारकर पीछे पृथ्वीके क्षत्रियोंको मारनेके लिये तीक्ष्णबाण लेकर दौडते हुए ॥ ८७ ॥ तब परशुरामके भयसे सब क्षत्रिय राजा अनेक तरहके वेषबनाकर अपना २ स्थान छोड जहां तहां चलेगये ॥ ८८ ॥

सगर्भा चन्द्रसेनस्य भार्या दाल्भ्याश्रमं गता। ततो रामः समायातो दाल्भ्याश्रममनुत्तमम् ॥८९॥ पूजितो मुनिना रामो भोजनार्थं समुद्यतः भोजनावसरे तत्र गृहीत्वापोशनं करे ॥ ९० ॥ रामस्तु याचयामास हृदिस्थं स्वमनोरथम् ॥ तस्मै प्रादादृषिः कामं भार्गवाय महात्मने ९१ याचयामास रामाद्वै कामं दाल्भ्यो महामुनिः । ततो द्वौ परमप्रीतौ

भोजनं चक्रतुर्मुदा॥९२॥भोजनान्ते महाभागावासने चोपविश्य च।
तांबूलानन्तरं दाल्भ्यः पप्रच्छ भार्गवं प्रति ॥ ९३ ॥

उस समय चंद्रसेन राजाकी स्त्री गर्भवती थी सो दाल्भ्य ऋषिके आश्रममें चलीगई, ऋषिने उसका संरक्षण किया, पीछे परशुराम दाल्भ्य ऋषिके आश्रममें आये ॥ ८९ ॥ तब मुनिने उनकी पूजा की और भोजनको विठाया तो आपोशन हाथमें लेकर ॥ ९० ॥ परशुराम अपने मनोवाञ्छित वातकी प्रार्थना करने लगे तब दाल्भ्य मुनिने कहा आप जो मागेंगे वही मैं आपको दूंगा ॥ ९१ ॥ ऐसा कह रामके पाससे भी आपने एक इच्छित मांग लिया सो रामने तथास्तु कहा पीछे दोनोंजने परम प्रीतिसे भोजन करनेके॥९२॥ उपरान्त उत्तम आसनपर वैठ ताम्बूल भक्षण कर प्रथम दाल्भ्य परशुरामको पूछते हुए ॥ ९३ ॥

यत्त्वया प्रार्थितं देव तत्त्वं शंसितुमर्हसि ।

राम उवाच—

तवाश्रमे महाभाग सगर्भा स्त्री समागता ॥ ९४ ॥ चन्द्रसेनस्य राजर्षेस्तां देहि त्वं महामुने । ततो दाल्भ्यः प्रत्युवाच ददामि तव वांछितम् ॥९५॥ यन्मया प्रार्थितं देव तन्मे दातुं त्वमर्हसि । ततः स्त्रियं समाहूय चन्द्रसेनस्य वै मुनिः ॥ ९६ ॥ भीता सा चपलापांगी कंपमाना समागता । रामाय प्रददौ तत्र ततः प्रीतमना अभूत् ॥ ९७ ॥

और कहा हे राम तुम क्या मांगते हो सो कहो तब रामने कहा कि, हम तुम्हारे आश्रममें जो चन्द्रसेनकी स्त्री सगर्भा आई है ॥ ९४ ॥ उसको मांगते हैं वह दो. तब दाल्भ्यने कहा हे राम ! तुम्हारा वाञ्छित पदार्थ मैं देता हूं ॥ ९५ ॥ पीछे आप मुझको भी इच्छित पदार्थ देना यह कह मुनिने चन्द्रसेन की स्त्रीको वुलाया॥९६॥वह कम्पायमान होती हुई उनको दी तब उन्होंने प्रसन्न होकर कहा कि॥९७॥

राम उवाच ।

यत्त्वया प्रार्थितं विप्र भोजनावसरे पुरा । तन्मे शंस महाभाग ददामि तव वाञ्छितम् ॥ ९८ ॥

हे दाल्भ्य भोजनके समय जो तुमने मुझसे मांगा था हे महाभाग वह वताओ मैं तुमको देता हूं ॥९८॥

दाल्भ्य उवाच—

प्रार्थितं यन्मया पूर्वं राम देव जगद्गुरो । स्त्रीगर्भस्थममुं बालं तन्मे दातुं त्वमर्हसि ॥ ९९ ॥ ततो रामोऽब्रवीद्दाल्भ्यं यदर्थमिह चागतः । क्षत्रियांतकरश्चाहं तत्त्वं याचितवानसि ॥ १०० ॥

दाल्भ्यने कहा हे राम ! आपसे जो मैंने मांगनेकी इच्छा की है सो यह है कि, चन्द्रसेनकी स्त्रीके गर्भमें जो वालक है वह मुझको दे देना ॥ ९९ ॥ तब रामने कहा कि मैं तो क्षत्रियोंका अन्त करने वाला हूं, जिस तत्त्वके कारण मैं यहां आया था वही तुमने मांग लिया ॥ १०० ॥

प्रार्थितं च त्वया विप्र कायस्थं गर्भमुत्तमम्।तस्मात्कायस्थ इत्याख्या भविष्यति शिशोःशुभा॥१०१॥जायमानस्तदा बालः क्षात्रधर्मा भविष्यति। दुष्टाद्वै क्षात्रधर्मात्तु त्वं वारयितुमर्हसि॥१०२॥ततो दाल्भ्यः प्रत्युवाच भार्गवं प्रति हर्षितः। मा कुरुष्वात्र संदेहं दुर्बुद्धिर्न भविष्यति ॥१०३॥ एवं रामो महाबाहुर्हित्वा तं गर्भमुत्तमम्। निर्जगामाश्रमात्तस्मात्क्षत्रियान्तकरः प्रभुः ॥ १०४ ॥

परन्तु हे ऋषि ! तुमने कायाके भीतरका गर्भ मांगा है इस लिये इस बालकका नाम कायस्थ होगा॥ ॥ १०१ ॥ हे ऋषि ! उत्पन्न होनेके पश्चात् यह बालक क्षत्री धर्मी होवैगा इस लिये तुम इस दुष्टको उस धर्मसे रोकना ॥ १०२ ॥ तब दाल्भ्य प्रसन्न होकर कहने लगे कि, इस बातमें आप कुछ भी संशय न करिये यह दुष्टबुद्धि नहीं होगा ॥१०३॥ यह सुन गर्भ छोडकर क्षत्रियहन्ता महाबाहु समर्थ राम आश्रमके बाहर चलेगये ॥ १०४ ॥

स्कन्द उवाच—

कायस्थ एष उत्पन्नः क्षत्रिण्यां क्षत्रियात्ततः। रामाज्ञया स दाल्भ्येन क्षत्रधर्माद्बहिष्कृतः ॥१०५॥ दत्तः कायस्थधर्मोऽस्मै यः चित्रगुप्तस्य स्मृतः। तद्वंशजाश्च कायस्था दाल्भ्यगोत्रास्ततोऽभवन् ॥ १०६ ॥ दाल्भोपदेशतस्ते वै धर्मिष्ठाः सत्यवादिनः। सदाचाररता नित्यं रता हरिहरार्चने ॥ १०७ ॥ देवविप्रपितॄणां वै ह्यतिथीनां च पूजकाः। यज्ञदानतपःशीला व्रततीर्थरताः सदा ॥ १०८ ॥

इति चान्द्रसेनीयकायस्थभेदस्तृतीयः ।

स्कन्द कहने लगे यह गर्भस्थ बालक क्षत्रियवीर्यसे क्षत्रियाणीके उत्पन्न होनेके कारण क्षत्रियधर्मी हुआ परन्तु परशुरामकी आज्ञासे दाल्भ्य ऋषिने उसको क्षत्रियधर्मसे पृथक् कर ॥ १०५ ॥ चित्रगुप्त कायस्थके धर्ममें किया उसके वंशमें जो उत्पन्न हुए वह दाल्भ्य गोत्री कायस्थ हुए ॥ १०६ ॥ ऋषिकी आज्ञासे कायस्थ धर्मिष्ठ सत्यवादी शिव और विष्णुके पूजनमें तत्पर होते हुए ॥१०७॥ और देव ब्राह्मण अतिथि पूजन, श्राद्धतर्पण, यज्ञ दान तप व्रत तीर्थ यात्राको भली प्रकार करने लगे ॥ १०८ ॥ इस प्रकार चंद्रसेनीय कायस्थोंका तीसरा भेद समाप्त हुआ ॥

अथ संकरकायस्थानां जातिनिरूपणम् ।

माहिष्यवनितासूतुं वैदेहाद्यं प्रसूयते।स कायस्थ इति प्रोक्तस्तस्य कर्म विधीयते ॥१०९॥ लिपीनां देशजातानां लेखनं सममाचरेत्। गणकत्वं विचित्रत्वं बीजपाठीप्रभेदतः ॥ ११० ॥ अधमः शूद्रजातिभ्यः पंचसंस्कारवानसौ। चातुर्वर्ण्यस्य सेवा हि लिपिलेखनसाधनम् ॥ १११ ॥ व्यवसायः शिल्पकर्म तज्जीवनमुदाहृतम्। शिखा यज्ञो-

पवीतं च वस्त्रमारक्तमंभसा ॥११२॥ स्पर्शनं देवतानां च कायस्थः परिवर्जयेत् । इतिसंकरजातीयकायस्थभेदश्चतुर्थः ।

अब वर्णसंकर कायस्थ जातिका भेद कहते हैं, जो द्वादश जातिमेंका चौथा माहिष्य और उसकी स्त्री वैदेह मिश्र जातिमें ग्यारहवीं इन दोनोंसे जो पैदा हुआ पुत्र है उसको कायस्थ कहते हैं॥१०९॥ उनका कर्म अनेक देशकी लिपि लिखना और बीजपाटी गणित जानना ॥ ११० ॥ शूद्रवर्णसे अधम इनको पांच संस्कारका अधिकार है जो कि चारवर्णकी सेवा करना ॥ १११ ॥ व्यापार, कारीगरी, चातुर्यकाम करना ही इनकी जीविका है, शिखा, जनेऊ, लालवस्त्र, जलसे ॥ ११२ ॥ देवताका स्पर्श इनके लिये वर्जित है ॥ इस प्रकार ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्डके मतसे चार प्रकारके कायस्थ पाये जाते हैं ब्रह्मकायासम्भूत चित्रगुप्तकी सन्तान चान्सेनीय और संकर इन चारोंके संस्कारोंमें भेद है, किन्हींकी सम्मति है प्रथम कहे तीन प्रकारके कायस्थोंका समान धर्म है यथाहि—

चान्द्रसेनीयकायस्था ब्रह्मकायोद्भवादयः ।
चित्रगुप्ताश्चान्द्रसेनास्तेषां धर्मः समो भवेत् ॥

इन तीनोंका समान धर्म है और यह बारह संस्कारवाले हैं संकर कायस्थके पांच संस्कार हैं यथाहि—

संकरकायस्थस्य पंच संस्कारा अमन्त्रकाः । जातकर्मान्नाशनश्च वपनं कर्णवेधनम् ॥ विवाहः पंचमस्तस्य न्याय्यः संस्कार इष्यते ।

संकरकायस्थके पांच संस्कार जातकर्म, अन्नप्राशन, मुण्डन, कनछेदन और विवाह यह विना मंत्रके होने चाहिये परन्तु कलिमें पातित्य भी इनको दिखाया है, मद्यमांसकी रुचि इस जातिमें अधिक है, इससे वर्णदोष आता है, इसकारण जहां २ कायस्थ जातिके लिये यह लिखा हो कि, इनको देवताका स्पर्श न करना चाहिये, वहां संकर कायस्थोंके विषयमें वे वाक्य समझने चाहिये जहां जहां पातित्यता दीखै वहां सब संस्कारविना मंत्रोंके होने चाहिये यह सब लक्षणोंसे लक्षित हो जाते हैं. हमने इस ग्रन्थमें उत्तम मध्यम अधमता द्योतक जो प्रमाण इस समय जाति विवेचनावालोंने लिखे हैं, उतार दिये हैं, और सरकारी रिपोर्टोंकी भी सम्मति लिख दी है अपनी सम्मति सबका ऐक्य मत होजानेपर लिखेंगे अब बंगालमें किस प्रकारसे कायस्थ जातिका विवेचन ग्रंथकारोंने किया है सो लिखते हैं—

वंगीय कायस्थजाति ।

कायस्थ जाति किस वर्णमें है इसका विवाद अनेक ग्रन्थोंमें अनेक प्रकारसे लिखा हुआ है। कोई कहते हैं क्षत्रिय हैं कोई कहते हैं शूद्र हैं, और अनेक कहते हैं इन दोनोंसे अतिरिक्त हैं, इस कारण हम इस विषयमें कोई अपना मत प्रगट नहीं करते । केवल शास्त्रोंके वचन पाठकोंके सामने रखते हैं । जिसके देखनेसे पाठक निश्चय कर सकते हैं । कायस्थ जाति शस्त्र धारण नहीं करती किन्तु लेखनकर्ममें निपुण है । बहुधा मद्यमांसमें रुचि अधिक रखते हैं पर अब छोडते जाते हैं । कोई यज्ञोपवीत धारण करने लगे हैं। कुलकी श्रेष्टताकी परीक्षा वैश्य जातिमें लिखचुके हैं ॥

ब्रह्मपादांशतो जन्म चातः कायस्थनामभृत् । ककारं ब्राह्मणं विद्या-दाकारं निरयसंगकम् ॥ १ ॥ आयन्तु निकृष्टं ज्ञेयं तत्र कार्ये हि

तिष्ठति। कायस्थोऽतः समाख्यातो मषीशं प्रोक्तवांश्च यम्॥ २॥ जीवे क्षणे भृगुपदे जन्मत्वाच्छोभना धियः। शठश्च शूरता किंचिदनेक-प्रतिपालकृत्॥ ३॥ जन्मावधि द्विजार्चायां मतिरेव निरन्तरम्। कुशासनादि सकलं गृहीत्वा मस्तकोपरि॥ ४॥ अनुगच्छामि सततमिति चिन्तामनाः सदा। शठत्वाच्चतुरत्वाच्च विप्रसेवानुलक्षणम्। वाञ्छत्येव मषीशः स सदोद्वेगीतिभावहन्॥ ५॥

इति आचारनिर्णयतंत्रम्।

ब्रह्माजीके पादांशसे जन्म लेकर इन्होंने कायस्थ नाम धारण किया है। ककार शब्दसे ब्रह्मा, आकार शब्दसे नित्य॥ १॥ और आयका अर्थ निकट है। ब्रह्माकी कायामें स्थित होनेसे यह कायस्थ नामसे विख्यात हुए यह मसीश नामसे भी पुकारे गये॥ २॥ बृहस्पतिकी दृष्टि और शुक्रके अंशसे जन्मके हेतुवाले कायस्थ विलक्षण बुद्धिमान् हैं। इनमें वीरत्व और कुछ शठता होती है तथा बहुतोंके पालक होते हैं॥ ३॥ जन्मसे ब्राह्मणसेवामें रत हैं कुशासनादि मस्तकके ऊपर ग्रहण करके॥ ४॥ सदा ब्राह्मणोंके पीछे अनुगमनकी इनकी इच्छा रही, शठता चतुरता प्रयुक्त मषीश कुशासनादि वहन पूर्वक सदा द्विजसेवाकी वांछा करते हैं॥ ५॥

सुतपा उवाच।

हे सुयज्ञ नृपश्रेष्ठ ब्राह्मणातिप्रियो नृप। पश्यैतान् विप्रभृत्यांस्त्वमासनादिशिरोधृतान्॥६॥ एतद्घोरकलावेते भविष्यन्ति द्विजार्चकाः। जात्या मषीशाः कायस्था ब्राह्मणेश्वरमानसाः॥७॥ महाविद्योपासकाश्च गुणतः क्षत्रियोपमाः। कलौ हि क्षत्रियाभावाद्वैश्याभावाच्च सुव्रत॥ ८॥ एते भक्त्या भविष्यन्ति विप्रमानासहिष्णवः। विप्रप्रियाः विप्रभक्ता विप्रमानप्रदा यतः॥ ९॥ महाविद्यासितश्चैते क्षत्रकर्मकृतः कलौ। मष्यामेवेशतास्येति मषीश इतिसंज्ञकः॥ १०॥ ब्रह्मणो विप्रमूर्त्तेस्तु पादांशे सम्भवन्ति तत्। कायस्था इति संज्ञाः स्युः सुयज्ञैषां शिवा मतिः॥ ११॥

इति आचारनिर्णयतन्त्रम्।

हे ब्राह्मणोंमें अनुरक्त नृपश्रेष्ठ सुयज्ञ! मस्तकपर आसनादिधारी इन ब्राह्मणोंके भृत्योंको अवलोकन करो॥ ६॥ इस घोर कलिकालमें यह ब्राह्मणोंके पूजक होंगे, जातिसे मसीश कायस्थ ब्राह्मणोंमें ईश्वर-बुद्धि रक्खेंगे॥ ७॥ महाविद्याके उपासक गुणोंसे क्षत्रियोंके समान हे सुव्रत! कलियुगमें वैश्य क्षत्रियोंके अभावसे॥ ८॥ ब्राह्मणोंका मान यही सहेंगे। विप्रप्रिय, ब्राह्मणोंके भक्त तथा ब्राह्मणोंको मान देनेवाले, महाविद्याके उपासक, क्षत्रकर्मके करनेवाले मसिद्वारा प्रभुताई करेंगे इससे इनका नाम

मषीश ॥ ९ ॥ १० ॥ और विप्रमूर्ति ब्रह्माके चरणोंसे उत्पन्न होनेसे ये कायस्थ हैं इनकी मंगलमयी मति है ॥ ११ ॥ और भी लिखा है ।

आदौ प्रजापतेर्जाता मुखाद्विप्राः सदारकाः । बाहोश्च क्षत्रिया जाता ऊर्वोर्वैश्या विजज्ञिरे ।१२। पादाच्छूद्राश्च सम्भूतास्त्रिवर्णस्य च सेवकाः। ह्रीमनामा सुतस्तस्य प्रदीपस्तस्य पुत्रकः ॥ १३ ॥ कायस्थस्तस्य पुत्रोऽभूद्बभूव लिपिकारकः । कायस्थस्य त्रयः पुत्रा विख्याता जगतीतले ॥ १४ ॥ चित्रगुप्तश्चित्रसेनो विचित्रश्च तथैव च । चित्रगुप्तो गतः स्वर्गे विचित्रो नागसन्निधौ ॥ १५ ॥ चित्रसेना पृथिव्यां वै इति शूद्रः प्रचक्ष्यते । वसुर्घोषो गुहोमित्रो दत्तः करण एव च । मृत्युञ्जयश्च सप्तैते चित्रसेनसुता भुवि ॥ १६ ॥

इति जातिमालाधृताग्निपुराणम्।

प्रथम प्रजापतिके मुखसे सस्त्रीक ब्राह्मण उत्पन्न हुए । बाहुसे क्षत्रिय, ऊरुसे वैश्य ॥ १२ ॥ चरणोंसे तीनों वर्णोंके सेवक शूद्र हुए, शूद्रका पुत्र ह्रीम, ह्रीमका प्रदीप ॥ १३ ॥ उसका पुत्र लेखक कार्यकर्ता कायस्थ हुआ । कायस्थके तीन पुत्र पृथिवीमें विख्यात हुए ॥ १४ ॥ चित्रगुप्त चित्रसेन और विचित्र चित्रगुप्त स्वर्गमें, विचित्र नागलोकमें, ॥ १५ ॥ चित्रसेन पृथिवीमें रहा इस प्रकार यह शूद्र कहाते हैं । वसु, घोष, गुह, मित्र, दत्त, करण, मृत्युञ्जय ये सात चित्रसेनके पुत्र भूमिमें विख्यात हुए ॥ १६ ॥

क्षणं ध्यानस्थितस्यास्य सर्वकायाद्विनिर्गतः । दिव्यरूपः पुमान् हस्ते मसीपात्रं च लेखनी ॥ १७ ॥ चित्रगुप्त इति ख्यातो धर्मराजसमीपतः । प्राणिनां सदसत्कर्म्म लेख्याय स निरूपितः ॥ १८ ॥ ब्रह्मकायोद्भवो यस्मात्कायस्थो वर्ण उच्यते । नानागोत्राश्च तद्वंश्या कायस्था भुवि सन्ति वै ॥ १९ ॥

इति पद्मपुराणम् ।

ब्रह्माजीके क्षणमात्र ध्यान करनेसे दिव्यरूप एक पुरुष हाथमें लेखनी और मसीपात्र लिये प्रगट हुआ ॥ १७ ॥ ब्रह्माजीने उसका चित्रगुप्त नाम रख धर्म्मराजके समीप भेज दिया, वह प्राणियोंके सत् असत् कर्म लिखने लगे ॥ १८ ॥

ब्रह्माजीकी कायासे होनेसे यह कायस्थ कहलाये अनेक गोत्रके इनके वंश पृथ्वीमें विख्यात हुए हैं ॥ १९ ॥ और पुराणोंमें भी कायस्थोंकी उत्पत्ति लिखी है परन्तु जितने वचन इस समय तक हम लिख चुके हैं इन वचनोंसे द्वितीयवर्ण होना सम्यक् प्रकारसे निश्चय नहीं होता और इन्हीं वचनोंके प्रमाणसे कायस्थोंको निकृष्ट ज्ञाति भी नहीं कहसकते कारण कि —

" विद्यावांश्च शुचिर्धीरो दाता परोपकारकः ।
राजभक्तः क्षमाशीलः कायस्थः सप्तलक्षणः ॥ २० ॥

विद्यावांन, पवित्र, धीर, दाता, परोपकारी, राजभक्त, क्षमाशील होना ये कायस्थोंके सात लक्षण हैं ॥ २० ॥ बंगालमें राठी और वारेन्द्र ब्राह्मणोंकी जो कथा है इसी प्रकार कायस्थोंकी है । गौडेश्वर राजा आदिशूरके पुत्रेष्टि यज्ञमें कान्यकुब्ज देशसे ब्राह्मण आये थे, इन पांच ब्राह्मणोंके साथ पाँच पुरुष और भी आये थे । कोई २ कहते हैं वे पांचों भृत्य थे, कोई कहते हैं ब्राह्मणोंके शरीररक्षक थे । जो कुछ भी हो उनका परिचय नीचे लिखे श्लोकोंसे पाठकगण भली प्रकार प्राप्त कर सकेंगे इसी कारण वे कारिका नीचे लिखते हैं ॥

सुकृतालिकृताम्बर एष कृती क्षितिदेवपदाम्बुजचारुरतिः ।
मकरन्द इति प्रतिभाति यतिर्द्विजवन्द्य कुलोद्भव भट्टगतिः ॥ २१ ॥
स च घोषकुलाम्बुजभानुरयं प्रथितेन्दुयशाः सुरलोकवशः । सततं
सुमुखी सुमतिश्च सुधीः शरदिन्दुपयोऽम्बुधिकुन्दयशाः ॥ २२ ॥
वसुधाधिपचक्रवर्त्तिनो वसुतुल्या वसुवंशसम्भवाः । वसुधाविदिता
गुणार्णवैर्नियतं ते जयिनो भवन्तु नः ॥ २३ ॥ दशरथो
विदितो जगतीतले दशरथः प्रथितः प्रथमः कुले । दशदिशां
जयिनां यशसा जयी, विजयते विभवैः कुलसागरे ॥ २४ ॥
यशस्विनां यशोधरः सदा हि सर्वसादरः। प्रमत्तसत्त्वगत्वरः शरत्सु-
धांशुमद्यशः ॥ २५ ॥ प्रतापतापनोत्तपद्विषालियोषिदालिका ।
विभाति मित्रवंशसिन्धुकालिदासचन्द्रकः ॥ २६ ॥ द्विजालिपाल-
नार्थकोऽप्यसौ च हर्षसेवकः । कुलाम्बुजप्रकाशको यथान्धकारदी-
पकः ॥ २७॥ अयं गुहकुलोद्भवो दशरथाभिधानो महान् कुलाम्बुज-
मधुव्रतो विविधपुण्यपुंजान्वितः । निशम्य गुहभाषितं सकलसख्य-
हास्यं व्यभूत स वंगगमनोद्यतो विविधमानभंगो यतः ॥ २८ ॥

यह पुण्यात्मा कृतकृत्य ब्राह्मणोंका चरणसेवी मकरन्दकी तुल्य सौरभ्ययुक्त मकरंद है । यति द्विजोंसे वन्दित कुलमें उत्पन्न भट्टगति ॥ २१ ॥ यह घोष कुलके खिलानेको सूर्य हैं और घोष नाम है । चन्द्रमाके समान इनका यश विख्यात सुरलोकका वश करनेवाला है, सदा सुमुख बुद्धिमान् शरदके चन्द्रमारूप सागरमें इसका यश कुन्दके समान है ॥ २२ ॥ हे राजन् ! चक्रवर्ती वासुकीके वंशमें उत्पन्न गुण समूहोंसे भूमिमें विख्यात ये वसु हैं नित्यजयी हैं ॥ २३ ॥ भूमिमें दशरथ बडे विख्यात हुए वह कुलमें प्रथम विख्यात हुए जिस जयीने यशसे दशों दिशा जीतीं, वह कुल सागरमें विभवोंसे जयको प्राप्त होनेवाला यह दशरथ है ॥ २४ ॥ यशस्वियोंका यश धारण करनेवाला सदा सर्वका आदर करनेवाला प्रमत्त

सत्वोंका मद दूर करता शरदके चन्द्रमाकी समान यशस्वी है ॥ २५ ॥ जिनके प्रतापका सूर्य तपता है, शत्रुओंकी स्त्रियोंको शोक कर्ता मित्रका वंश शोभित होता है। यह मित्रवंश समुद्रमें कालिदासरूप चन्द्रमा है, सिन्धुमें जैसे चन्द्र शोभित हो यह तैसे है ॥ २६ ॥ यह ब्राह्मणोंका पालक हर्ष सेवक है, कुल कमलका प्रकाशक है जैसे अंधकारमें दोष प्रकाश करताहै ॥ २७ ॥ यह गुहकुलमें उत्पन्न दशरथ नामवाला है। अपने कुलकमलके खिलानेको भ्रमर अनेक पुण्यसमूहसे युक्त है। गुहके वचन सुन सब सभासद हँसे और वह अपमान समझ पूर्व वंगको जानेको उद्यत हुआ ॥ २८ ॥ इस कथनसे यह साधारण लोक नहीं विदित होते।

अहं च पुरुषोत्तमः कुलभृदग्रगण्यः कृती। सुदत्तकुलसंभवो निखिलशास्त्रविद्योत्तमः। विलोकितुमिहागतो द्विजवरैश्च राज्यं प्रभो चकार नृपतिः स तं विनयहीनतो निष्कुलम्॥ २९ ॥

इति कुलदीपिका।

उन सहचरोंके मध्यमें एकने इस प्रकार परिचय दिया कि, हे प्रभो ! हमारा नाम पुरुषोत्तम, मैं उत्तम दत्त वंशमें उत्पन्न, कुलधारियोंमें श्रेष्ठ, कृती, सब शास्त्रका ज्ञाता, क्रियावान् हूं। ब्राह्मणोंके सहित आपके दर्शन करनेको आया हूं। यह वचन सुन राजाने उसको विनयहीन देखकर कुलहीन (अकुलीन) कर दिया ॥ २९ ॥ इस धृष्टताके कथनमें भी विदित होता है कि, यह कोई निकृष्ट भृत्य नहीं थे। जो कुछ भी हो कान्यकुब्जसे बंगालमें गये। इन पांच कायस्थोंके नाम मकरन्द, घोष, दशरथ, वसु, कालिदास, मित्र, दशरथ वा विराट गुह और पुरुषोत्तमदत्त थे। यथा क्रमसे इनके गोत्र सुकालिन, गौतम, विश्वामित्र, काश्यप, और मौद्गल्य हैं। राजा आदिशूरने ब्राह्मणोंकी समान इन पांचोंको पांच ग्राम और यथोचित वृत्ति देकर इनको वहां स्थित किया। बंगाली कायस्थगण इन्हीं पांच महात्माओंकी सन्तति हैं।

इसके पांच छः पुरुष बीतने पर बल्लालसेनने कौलीन प्रथा चलाई उन्होंने ब्राह्मणोंकी समान कायस्थोंमें भी जिनमें आचार विचार विद्या प्रभृति गुण देखे उनको ही कौलीन मर्यादा प्रदान की। इसकेही अनुसार घोष, वसु और मित्र इन तीन घरोंको कौलीन मर्यादा प्राप्त हुई। दत्तसे राजाने पूछा उसने कहा संग आये हैं इसे अधिक क्या परिचय होगा ! राजाने उद्धत उत्तर सुन उसको कुलीनतासे बाहर किया गुहके परिचय देते समय सभा गुहनामसे हँसपडी इस कारण यह पूर्व बंगालको चलागया।

कायस्थोंने अपने २ आदि पुरुषोंसे अधिष्ठित वास स्थानका एक समाज कराना किया और एक अपनेको उसी समाजका परिचय देते हैं।

घोषवंशके छठे पुरुष प्रभाकर और निशापति यथाक्रमसे आकना और बाली नामक स्थानमें निवास करते हुए, इस कारण घोषवंशीय आकना और बाली ये दो समाजवाले कहाते हैं।

वसुवंशके पंचम पुरुष शक्ति और मुक्ति यथा क्रमसे बागान्ता और माइनगर में निवास करते हुए, इस कारण वसुवंशके बागान्त और माइनगर ये दो समाज हैं।

मित्रवंशके अष्टम धुइ और गुइ यथाक्रमसे बडिशा और टेकानामक स्थानमें निवास करनेलगे। इस कारण मित्रवंशकी बडिशा और टेका यह दो समाज हैं।

दत्तवंशके प्रधान समाजबाली और नाडदा और गुहवंशका प्रधान समाज यशोहर है।

बंगालके मध्यमें यह विख्यात है।

अथ सिद्ध मौलिक ।

गौडेष्टौ कीर्त्तिमन्ताश्चिरवसतिकृता मौलिका ये हि सिद्धास्ते दत्ताः सेनदासाः करगुहसहिताः पालिताः सिंहदेवाः । ये वा पाद्याभिमुख्याः स्थितिविनयजुषः सप्ततिस्ते द्विपूर्वा हौडाद्या वीक्ष्य राज्ञा चरणगुणयुता मौलिकत्वेन साध्याः ॥ ३० ॥

इति दक्षिणराढीयघटकारिका ।

गौडदेशमें दत्तसेन दासकर गुहपालितसिंह और देव यह आठ घर बहुकालके निवासी कीर्तिमान् सिद्धमौलिक कहाते हैं ये होडादि पाद्य प्रधान नियम मर्यादा सम्पन्न कायस्थोंके बहत्तर घरोंको एक पादमात्र गुण दिखाकर साध्यमौलिक किया ॥ ३० ॥

अथ द्विसप्तति साध्य मौलिक ।

होडः स्वरधरधरणीवान् आई च सोमः पैसुर सामः । भञ्जौ विन्दो गुहवललोधः शर्म्मा वर्मा हुई मुई चन्द्रः ॥ रुद्रो रक्षितराजादित्यो विष्णुर्नागः खिलपिलगूतः । इन्द्रो गुप्तः पालो भद्रओमश्चाङ्कुर वन्धुरनाथः ॥ ३१ ॥ शांई हराश्च मनो गण्डो रोहा राणा राहतसाना दाहा दाना गणउपमानाः । खामः क्षामा घरवैतेषा । वीदस्तनश्चार्णव आशः ॥ शक्तिभूतो ब्रह्मःशानः । क्षेमो हेमो वर्धनरंगः । गुहः कार्तियशः । कुण्डुर्नन्दी शीली धनुर्गुणः ॥ ३२ ॥

इति शब्दकल्पद्रुमधृतदक्षिणराढीयघटकारिका ।

वे बहत्तर यह हैं । होड, स्वर, धर, धरणीवान्, अईच, सोन, पैई, सुर, साम, मंज, विन्द, गुह, वल, लोघ, शर्मा, वर्मा, हुई, मुई, चन्द्र, रुद्र, रक्षित, राजा, आदित्य, विष्णु, नाग, खिल, तिल, भूत, इन्द्र, गुप्त, पाल, भद्र, ॐ, अंकुर, बंधुर, नाथ, ॥ ३१ ॥शांई, हेश, मनगण्ड, राहा, राना, राहुत, साना, दाहा, दाना, चाण, ठपमाना, खाम, क्षौम, घर, वैतष, वीद, तेज, अर्णव, आश, शक्ति, भूत, ब्रह्म, शान, क्षेम, हेम, वर्धन, रंग, गुह, कीर्ति, यश, कुण्ड, नंदी शील, धनु और गुण ॥ ३२ ॥

दक्षिण राढीय और बंगालके कायस्थोंके मध्यमें विशेष पृथक्ता नहीं है तो भी दूर स्थानमें रहनेसे इनकी भिन्न २ सम्प्रदाय होगई इस कारण उन दोनोंमें आदान प्रदानका चलन नहीं है ।

उत्तरराढीय कायस्थ ।

उत्तरराढमें निवास करनेसे इनकी उत्तरराढीय संज्ञा हुई है । उत्तरराढीय कायस्थगण अपनेको दक्षिण राढीय और बंगाली कायस्थोंके आदि पुरुषोंसे प्रगट होना स्वीकार नहीं करते । वह कहते हैं कन्नोजवासी ब्राह्मणोंके साथ और पांच जन करण आये थे । यह उन पांच करणकी संतान है परन्तु इसका प्रमाण कहीं नहीं देखा जाता है और करण एक संकर जाति होती है । जैसे कि, अगले श्लोकसे यह वार्त्ता प्रगट होती है कि, ऐसा होनेसे संकर जाति होजायगी ।

आचाण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः॥ शूद्राविशोस्तु करणो-

इत्यमरः।

चाण्डाल पर्यन्त वक्ष्यमाण अम्बष्ठ करणादि संकीर्ण प्रतिलोम और अनुलोमसे उत्पन्न होनेसे संकर जाति होती है। शूद्रा स्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्न पुत्र लेखन वृत्तिवाला करण कहलाता है। इस कथनसे उनका जो आशय हो उसको वेही जानते हैं।

उत्तरराठीय कायस्थोंके सर्व शुद्ध साढे सात घर हैं। उनमें सुकालिन गोत्र घोष, वात्स्यगोत्र सिंह, विश्वामित्रगोत्र मित्र, काश्यपगोत्र दत्त और मौद्गल्यगोत्र कर और दास ये पांच घर कान्यकुब्जसे आये हैं, और शांडिल्यगोत्र घोष और काश्यपगोत्र दास ये दो घर और मौद्गल्यगोत्र कर और भरद्वाजगोत्र सिंह ये दो आधे घर हैं। सर्व शुद्ध ढाईघर बंगालके आदिम कायस्थ हैं इनमें सुकालिन्गोत्र घोष वात्स्य गोत्र सिंह कुलीन हैं, अवशिष्ट साढे पांच घर मौलिक हैं।

उत्तरराठीय कायस्थोंमें एक प्रथा थी कि सामाजिक निमन्त्रणमें कुटुम्बके घर भोजन नहीं करते थे केवल निमन्त्रित-होकर धर्ममें कर्ताके स्थानमें आय प्रस्तुत व्यंजनको देख "उत्तम हुआ है" यह कहकर लौट जाते थे। आज कल यह प्रथा अनेक स्थानसे उठ गई है॥

वारेन्द्र कायस्थ।

वारेन्द्र कायस्थ बङ्गालमें वहुत पहलेसे वास करते हैं। उत्तर कालमें ये सब इस देशमें आये थे और किसीसे न मिलकर अपनी सम्प्रदाय अलगही चलाते रहे। वारेंद्र देशमें निवास करनेसे वारेन्द्र कहाये।

वारेन्द्र कायस्थ साढे सात घर हैं। उनमें दास, नन्दी, चाकी और शर्मा (आधाघर) ये साढे तीन घर कुलीन हैं, देव, दत्त, सिंह और नाग ये चार घर शुद्ध मौलिक हैं, संख्यामें बहुत थोडे हैं। न दिया, मुरशिदावाद, और राजशाही जिलेमें इस श्रेणीके कायस्थ मिलते हैं।

इस प्रकारसे बङ्गालके कायस्थोंका वर्णन वहांके छपे ग्रन्थोंमें पाया जाता है इसमें सन्देह नहीं कि भारतमें इसजातिका विस्तार वहुत है। और वडी सभायें इन जातियोंमें होती हैं, परन्तु अभीतक भी मद्यादि सेवनका सर्वथा त्याग नहीं हुआ है और शिखा सूत्रके विना तो सहस्रोंसे ऊपर हैं, परन्तु इस जातिकी बुद्धि वहुत तीव्र है, और लिखनेका काम वहुतकालसे इनके हाथमें चला आता है और इनमें लोग वडे ऊंचे पदोंपर नोकरी करते हैं, मुसल्मानी शासनकालमें जब कि दूसरे वर्णके मनुष्य यावनी भाषा बोलने और लिखनेमें परहेज करते थे, उस समय कायस्थ जातिने ही अरबी फारसी पढकर उसमें निपुणता प्राप्त की, और उनके साथ मिलकर काम करते रहे परन्तु हिन्दू राज्यमें इस जातिको इतना ऊचपद पाना नहीं पाया जाता, हां उस समयभी इनके हाथमें कुछ छोटीकक्षाका राजकाज पाया जाता है, इनके विषयमें याज्ञवल्क्यजी अपनी स्मृतिमें लिखते हैं।

चोरतस्करदुर्वृत्तमहासाहसिकादिभिः।
पीडयमानाः प्रजा रक्षेत्कायस्थैश्च विशेषतः॥

याज्ञ—राज० प्र० श्लो० ३३६.

राजाको उचित है कि उचक्के चोर दुराचारी और डाकू और विशेषकर कायस्थोंसे पीडाको प्राप्त हुई अपनी प्रजाकी रक्षा करै, उशनास्मृतिमें लिखा है।

कायस्थ इति जीवेत्तु विचरेच्च इतस्ततः।

नापितके वर्णन करनेके पीछे लिखा है, कि यह कायस्थकी जीविका स्वीकार करता हुआ इधर उधर भ्रमणकर अपना उदर पालन करै, इन दोनों श्लोकोंसे यह बात पाई जाती है कि यह जाति पुरातन राजदरबारमें ऋषियोंद्वारा विशेष समादरकी दृष्टिसे नहीं देखी गई थी, उशनास्मृति अध्याय ८ श्लोक ३२।३९ में जो कुछ लिखा है उसके देखनेसे विदित होता है, कि कायस्थ जातिके तीनों अक्षर उनके स्वभावका सूचन करते हैं व्यासस्मृति अध्याय १ श्लोक १०।१२ में और भी विशेषरूपसे लिखा है।

ब्राह्मण्यां शूद्रजनितश्चाण्डालस्त्रिविधः स्मृतः। वर्द्धको नापितो गोप आशायः कुम्भकारकः॥ वणिक्किरातकायस्थमालाकारकुटुम्बिनः। वेरटो मेधचाण्डालदासश्वपचकोलकाः॥एतेऽन्त्यजाः समाख्याता ये चान्ये च गवाशनाः। एषां सम्भाषणात्स्नानं दर्शनादर्कवीक्षणम्॥

ब्राह्मणी मा और शूद्रपितासे तीन प्रकारके चाण्डाल पैदा हुए हैं, बढई नाई अहीर चमार कुम्हार वनजारा किरात कायस्थ माली वसफोड स्यारमार चाण्डाल वारी भंगी और कोल यह अन्त्यज हैं, इनसे और दूसरे गोमांसभक्षियोंसे बात करनेपर स्नान और सूर्यदर्शनसे पवित्र हुआ जासकता है[1]।

अब अन्य सम्मतियें लिखते हैं—

शब्दकल्पद्रुम शूद्रकमलाकर और जातिमाला पुस्तकोंमें कायस्थोंको शूद्र लिखा है यह पुस्तकें प्रमाणरूपसे मानी जाती हैं, व्यवस्था दर्पणमें जो श्यामाचरणलिखित हिन्दूधर्मशास्त्रपर टीका है कायस्थोंको शूद्र लिखा है पृ० १०३२ से १०३६ तक छापा सन् १८६७ कायस्थजातिकी १२ श्रेणियोंमें अम्बष्ठ और करण यह दो श्रेणी हैं, मनुजीके कथनानुसार यह दोनो एक प्रकारकी संकर जाति है।

स्त्रीष्वनन्तरजातासु द्विजैरुत्पादितान् सुतान्।
सदृशानेव तानाहुर्मातृदोषविगर्हितान्॥

मनुवा० १० श्लो० ६.

द्विज पिता और उससे नीचे वर्णकी स्त्रीमें जो सन्तान होती है धर्म शास्त्रमें उनकी गणना उनके मातापिताकी जातिमें नहीं की कारण कि वे अपनी माताकी नीच जाति होनेके कारण अपने मातापिताकी जातियोंके वीचकी जातिमें रक्खे गये हैं, याज्ञवल्क्य मिताक्षरामें उनको नाम इस प्रकारसे दिये गये हैं मूर्धाभिषिक्त माहिष्य करण या कायस्थ और उनके कर्म सेनामें व्यायाम सिखाना, गाना, ज्योतिष, पशुपालन और राजाओंका बासकर्म है (ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते) ब्राह्मणसे वैश्यकन्यामें अम्बष्ठ होता है अम्बष्ठ और उग्र (क्षत्रियसे शूद्रकन्यामें उत्पन्न) होता है। अम्बष्ठ और उग्रजातियोंकी गणना इनके माता पिताकी जातियोंके मध्यकी जातिमें रक्खी गई है,और यह निकृष्ट

१ यह श्लोक संकरकायस्थविषयके हैं (सम्पादक)
२ हाटैनका अनुवाद १८२५ ई० जिल्द २ पृ० ३४०। ३४१।

कोटिमें समझे जाते हैं इसी प्रकार क्षात्री और वैदेह की उत्पत्ति उनके माता पिताकी जातियोंके मध्यमेंकी जातियोंके बीच गई है परन्तु इनके स्पर्शसे अपवित्रता नहीं होती ।

याज्ञवल्क्यजीकी भी यही सम्मति है, मिस्टर रमेशचन्द्र दत्तने इस विषयमें अपने विचारांशको इस प्रकार किया प्रगट है ।

पिता	माता	कृत्रिम जाति
ब्राह्मण	वैश्य	अम्बष्ठ
वैश्य	शूद्र	करण

कायस्थ वैश्यजातिसे छोटे हैं और यह शूद्र जातियोंके नायक हैं इनका दूसरा नाम लिखनेवाली जाति भी है, तथा इनका पेशा लिखने पढनेका है (आरसीदत्तकी ऐनसियण्ट इण्डिया जि० ३ पृ० ३०९)

इतिहासके इस बातका प्रमाण मिलता है कि जो कायस्थ ब्राह्मणोंके साथ कन्नौजसे बंगालको गये थे वे सेवक थे पूर्वीय बंगालके कायस्थ अब भी सेवकाईका कार्य करते हैं और सेवकाई शूद्रजातिका काम है ।

भारतवर्षके दूसरे भागोंके कायस्थोंमें छोटा नागपुर और आसाम केकोलीत, बम्बई प्रान्तके प्रभु, मैसोरके कान्नाकन, और शामभौम मदरासप्रान्तके करनाम, और दक्षिणके दूसरे, भागोंके चेलाकर वेढुगा मुदलियर और पिले शूद्रजातिके हैं शेरिंग जि० २ पृ० १८१ तथा जि० पृ० १२० और जोगेन्द्रनाथ भट्टाचार्यकी हिन्दूकाट्सएण्डसेक्टस पृ० १९२।१९४। १९७।

अनेक कायस्थ अपनेको पांचवें वर्णमें मानते हैं पर जबसे उन्होंने जाना कि मनुजीकी शुद्ध चारही वर्ण माने हैं तबसे अपनेको क्षत्रिय कहना स्वीकार किया है ।

कायस्थजातिकी रीतियां ।

जिस प्रकारसे क्षत्रियका धर्म प्रजापालन और शस्त्रग्रहण है वैसा न होकर कायस्थोंका कर्म केवल कलमकी नौकरी है, कायस्थोंमें एक शाखाका ब्याह सम्बन्ध उसी २ शाखामें होता है अर्थात् सकसेने कायस्थोंका ब्याह सकसेनोंमें, माथुरोंका माथुरोंमें, सूर्यध्वजोंका सूर्यध्वजोंमें होता है, क्षत्रियोंमें वैसा नहीं होता अर्थात् राठौरोंका राठौरोंमें कभी ब्याह नहीं होसकता और न इनका ब्याह कभी असली क्षत्रियोंमें हुआ है फिर जन्ममृत्युमें भी पवित्रताका कायस्थोंमें भेद है, ब्राह्मण १० क्षत्रिय बारह वैश्य १९ और तिरहुतके बहुतसे भागोंमें कायस्थ तीनदिनके पश्चात् शुद्धि मानते हैं इसी प्रकार दिवाली दशहरेके पूजनमें भी कायस्थोंका क्षत्रियोंसे भेद है, कायस्थ जातिमें बहुतसे पुरुष यज्ञोपवीत धारण नहीं करते, पर क्षत्रियोंमें एकभी यज्ञोपवीतके विना नहीं रह सकता, न कोई कायस्थ अपने यहां क्षत्रियोंकी समान कभी वसन्त पूजा करता है, तथा बहुतसे द्विज अब तक कायस्थोंकी छुई हुई वस्तुका भोजन नहीं करते हैं और बंगालमें जो ब्राह्मण कायस्थोंसे दान लेते हैं, वे शूद्र याची कहे जाते हैं बंगाली कायस्थ अबतक अपने नामके अन्तमें दासपद लगाते है, और स्त्रियें अबतक नामान्तमें दासीपद लगाती हैं, युरोपियन लोगोंकी इसमें जो सम्मति हैं यह थोडी और भी लिखते हैं ।

सर जानमालकम कहते हैं कायस्थ जातिमें आचार बहुत कम पायाजाता है, कारण कि हिन्दुओंमें उनकी गणना नीचवर्णमें है, मेमाहर आफ सेन्ट्रेल इण्डिया १८?३ जि० २ पृ० १६९.

---

१ हाटनका अनुवाद जिल्द २ पृ० ३४२ ।

जेम्स स्किनर अपनी सन् १८२९ की, व फारसी किताबमें अहवाल कौम शूद्र यानी कायस्थोंका वृत्तान्त पद्मपुराण, गरुडपुराण, महाभारत और वायुपुराणके अनुसार है।

प्रोफेसर कोलब्रुक कहते हैं कि सर्व साधारण कायस्थ शब्दको करण शब्दका पर्य्यायवाची समझते हैं, करणजाति कायस्थ नामको स्वीकार करती है परन्तु बंगाल प्रान्तके कायस्थ अपनेको असली शूद्र होनेका प्रतिपादन करते हैं, जिसका नाम जातिमाला नामक पुस्तकमें दिया है, कारण कि इस पुस्तकमें कायस्थ जातिकी उत्पत्तिका वर्णन गोपको असली शूद्र बयान करनेके पश्चात्ही कियागया है, और फिर वर्ण संकर जातिका वर्णन कियागया है एशियाटिक रिसरचेज जिल्द ९ पृ० ९७.

सर एच एम इलियट लिखते हैं कि कायस्थ जातिका स्थान जातियोंकी मध्यश्रेणीमें है, और यह असली शूद्र जातिकी स्थानापन्न और एक मिश्रित जाति समझी जाती है, रेसेज आफ दी N. W. P. १८६९ जिल्द १ क्रोडपत्र सी, भाग १ पृ० १२९.

प्रोफेसर कोवेलने नीचे लिखाहुआ फुटनोट कायस्थ शब्दपर दिया है, "शूद्रोंकी एकजाति" और फिर लिखा है "कमसे कम बंगालप्रान्तके शूद्र हैं" जिनका कर्म प्राचीनकालसे चला आता है, एलफिन्स्टनकी हिस्ट्री आफ इण्डिया सन् १८७४ ई० पृ० ९१।६१.

रेवरेण्डशेरिंगने कायस्थोंके विषयमें कहा है कि कायस्थ जातिकी गणना शूद्रोंसे ऊंची है, या शूद्र और वैश्योंके बीचमें है हिन्दूस्ट्राइवस ऐण्ड कास्टस् जि० १ अध्याय ८ पृ० ३०९.

सरेडनाजिल इवेटसन जिन्होंने मिस्टरवर नजिके वाक्यको उद्धृत किया है वे लिखते हैं हिन्दुस्तानकी समभूमिमें वसनेवाले कायस्थ शूद्र हैं और यज्ञोपवीत धारण करनेके अधिकारी नहीं हैं पंजाब एथनाग्राफी १८८३ ई० पैरा ५६०.

मिस्टर कुककी उद्धृतकी हुई मिस्टर रिजलीकी सम्मति इस प्रकार है कि यह कायस्थ जाति युद्ध प्रिय क्षत्रियोंकी अपेक्षा स्वभावतः शान्तिप्रिय वैश्यों और शूद्रोंके मेसजोलसे बनी है और इस जातिमें ब्राह्मणोंका लेशमात्र भी अंश नहीं है ट्राइवूस ऐण्डकास्टस आफ दी एन डबल्यू० पी०अवध० जि०पृ० १९५.

कलकत्ता हाइकोर्टके विचारसे यह बात कईबार प्रकाशित होचुकी है कि कायस्थ शूद्र हैं, राजकुमारलाल व अन्य पुरुषका नाम विश्वेश्वर दयाल १८८४ के मुकदमेंमें विचार हुआ और हाइकोर्टके निर्णयमें विहारप्रान्तके श्रीवास्तव्य कायस्थोंके विषयमें उल्लेख हुआ है जिनके विवाह सम्बन्ध संयुक्तप्रान्तके कायस्थोंमें होते हैं, और वे उनसे पृथक् नहीं हैं इण्डियनलारिपोर्ट १० कलकत्ता पृ० ९८ (१८८४ और L. L. R. 6 cal. Page 381)

एक मुकदमा रामलालशुक्ल बनाम अखयचरनमित्र १९०३ ई० में व्याह और असालतका सवाल पैदाहुआ तब हाइकोर्टने यह निर्णय किया कि बंगालप्रान्तके कायस्थ शूद्र हैं, कलकत्ता बीकली नोटसे जिल्द ७ पृ० ६१९ (१९०३) ई०

व्यवस्थाओंकी दशा यह है कि पंडितों द्वारा जो व्यवस्थाएं दी जाती हैं, वे अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकारकी होती हैं पं० लक्ष्मीनारायण और पं० रामचरणकी सन् १८७३ की पुस्तक अनुकूलतामें है हरकिशन और लक्ष्मीनारायणरचित कायस्थ क्षत्रियत्वकल्पद्रुमकुठार इसके विपरीत है।

१९०१ की मनुष्यगणनाकी रिपोर्टमें चार कमेटियोंने इस जातिको तीसरी कक्षामें रक्खा है और चार कमेटियोंने इसको नीचेकी कक्षामें रक्खा है। तीन कमेटियोंको इस जातिके उचित स्थानके विषयमें सन्देह है, और २९ कमेटियोंने इस चौथी कक्षामें रक्खा है, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अधिकांश सम्मतिके

कारण कायस्थ जाति ऊपर कहे हुए अनुसार चौथी कक्षामें रक्खी गई है, परन्तु आमतौरपर कायस्थ और क्षत्रियोंमें किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं पाया जाता है, इस चौथी कक्षामें वे जातियां भी सम्मिलित की गई हैं जो क्षत्रिय होनेका दावा करती हैं, और सामाजिक स्थितिमें अच्छी समझी जाती हैं, यद्यपि उनके क्षत्रिय बननेके कथनको सर्वसाधारण नहीं स्वीकार करते हैं, और यहां पर यह विदित करदिया गया है कि कायस्थजाति इस कक्षामें रक्खीगई है (बंगालसेन्सेज रिपोर्ट १९०१ पृ० ३६६)

कायस्थजातिमें संकरता साधारणरूपसे जिनका सम्बन्ध दोसे है पाई जाती है यदि तीन द्विजातियोंसे नहीं है तो शूद्र समझे जाते हैं। कुछ रिपोर्टोंमें यह बात स्पष्ट रूपसे लिखीगई है किसी भी हिन्दू जातिके विज्ञ पुरुषने इसबातको स्वीकार नहीं किया कि कायस्थ द्विज है। इस बातपर लोगोंको पूर्णतया विश्वास है कि कायस्थोंने द्विजातियोंकी रीतियोंको बहुत थोडे दिनोंसे स्वीकार किया है, विशेषत: जनेऊ पहरनेकी रीतिको पर विशेषकर तो संध्या करनेका कोई नियम अबतक भी पालन नहीं होता है, सेन्सेजरिपोर्ट १९०१ N. W. P. and Oudh भाग १ पृ० २२२। २२३।

बंगालप्रान्तके मनुष्यगणनाके सुपरैण्टैंडेन्टने इनको द्विजातियोंकी कक्षामें रक्खा है (पर वे क्षत्रिय हैं या वैश्य यह बात नहीं लिखी गई) और न अपने निर्णयके समर्थनमें कोई प्रमाण दिया—जो सोलहवीं शताब्दीके किसी हिन्दूप्रमाणको इस विषयमें उद्धृत किया है कि "सब सत्शूद्रोंमें कायस्थ सबसे उत्तम कहे जाते हैं। बंगालसेन्सेज रिपोर्ट अध्याय १ पृ० ३८२।

यहांतक हमके सब प्रकारके लेख जो कायस्थ जातिके सम्बन्धमें मुद्रित हुए मिले हैं हमने उतार दिये हैं बारह प्रकारके कायस्थोंका लेख तथा सृष्टिखण्डवाला लेख पद्मपुराणमें खोजना चाहिये हमने,ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्डके आधारसे लिखा है जब स्पष्ट प्रमाण हमें मिलैंगे तब निश्चय लिखदेंगे अभी इस बातको विचारकोटिमें छोडते हैं।

कुरमी।

कुरमी जाति भी अन्य जातियोंके समान अपनेको क्षत्रिय होनेका दावा करती है और अपने आपको कूर्म ऋषिकी सन्तान मानती है इनकी लिखी वंशावली भी हमारे पास है,पहले हम सरकारी रिपोर्ट आदिकी बात लिखकर पीछे शास्त्रप्रमाणानुसार व्यवस्था लिखैंगे,सरडेनजिल इवटेसन इनकी गणना दासोंमें करते हैं, वे लिखते हैं 'कुरमी या कुम्भी' काश्तकारोंकी एक बडी जाति है जो दक्षिण और हिन्दुस्तानके पूर्वी भागोंमें बहुत पायेजाते हैं, कुनबिन एक नेक जाति हैं यह कुदाली हाथमें लेकर अपने पतिके साथ खेतको निराती हैं देखो (पंजाब एथना ग्राफी सन् १८८३ पैरा ६६३) करनल टाड इनकी गणना खेतिहर और पशु पालन करनेवाली जातियोंमें अहीर ग्वाल और अन्य ऐसी जातियोंके साथ करते हैं।

सन् १८६९ की मनुष्यगणनाकी रिपोर्टमें ऐसा लिखा है कि कुरमी किसी क्षत्रियके दासीपुत्रने जिसका नाम बट्टू था किसी वैश्यकी दासीपुत्रीसे विवाह किया वह अपने ससुरके साथ रहता था परन्तु यह नहीं चाहता था कि मैं अपने ससुरके आश्रयमें रहूं, इस कारण वह वहांसे भाग गया, और काश्तकारी तथा व्यापार करना आरंभ किया, शब्द कुरमीके संस्कृत में यह अर्थ हैं कि जो अपने जीवनका निर्वाह अपनी कमाईसे करता है वही दशा इस कुरमी जातिके उत्पन्न करनेवालेकी थी (सेन्सेज रिपोर्ट पृ० ४२)

कुरमी किसी क्षत्रियके दास और दासीसे उत्पन्न हुई सन्तान बयान कीगई है (रिपोर्ट १८६९ सफा ७१) कुरमी—एक अहीरके चार लडके थे, बीन, कुरमी, पुलिन्द और निषाद, इन चार लडकोंसे

पृथक् २ चार जातियां बनीं, कुरमी--किसी क्षत्रीके दासीपुत्र वट्टूने किसी वैश्यकी दासीपुत्रीसे विवाह किया इसकी सन्तानने कृषिकर्म किया तभीसे यह कुरमी कहलाते हैं संस्कृतमें इस शब्दके अर्थ जीविका उपार्जन करनेके हैं, (सेन्सेज रिपोर्ट १०११६सन् १८९५)

मिस्टर कुक कहते हैं सब बातोंका विचार करके इन कुर्मियोंको वर्तमान कालमें काश्तकारी करनेवाली जाति कहना बहुत ठीक है, कुर्मी इस जातिसे समय समय पर मिलती हुई जातियां मसलन् कोरी काछी सैंनी माली और दूसरी जातियां जिनका सम्बन्ध खेतीके कामसे है निकली हैं (कुककी ट्राइवस ऐण्टुकास्टस जि० ३ पृ० ३४८) देखो।

मिस्टर शेरिंग लिखते हैं । कुनबी खेती करनेवाली जाति है हिन्दुस्तानके अधिक भागोंमें यह जाति है इस नामसे या कुरमी नामसे पुकारी जाती है ये लोग असली शूद्र हैं (शेरिंगकी जातिकी पुस्तक जि० पृ० १८७)

मिस्टर कुक कहतेहैं इन लोगोंमें विधवा विवाह प्रचलितहै जिसको धरेजा या कराव कहते हैं, केवल मरेहुए पतिके बडे भाईके साथ विधवा स्त्रीको धरेया करनेका निषेध है (कुककी ट्राइवस ऐण्ड कास्टस जिल्द ३ पृ० ३९२)

"साधारण रीतिपर कुर्मियोंमें परदेकी रीति नहीं पायी जाती न इनको यज्ञोपवीतका अधिकार है न इनका किसी क्षत्रिय जातिके साथ सम्बन्ध होनेका प्रमाण पाया जाता है ।

सन् १९०१ की मनुष्यगणनामें कुरमी जाति--

संयुक्तप्रान्त और अवधकी मनुष्य गणनाकी रिपोर्टमें लिखा है चौबीस जाति विवेचक कमेटियोंने कुर्मियोंको उस कक्षासे कममें रक्खा है, जिसमें वे अपने होनेका दावा करते हैं, और चार कमेटियोंने इनको चौथी कक्षा (वे जातियां जिनका सम्बन्ध क्षत्रिय जातिसे है) में रक्खा है, और दो कमेटियोंने उनकी गणना छठी कक्षामें (जातियां जिनका सम्बन्ध वैश्य या बनियोंसे है) की है यह बात कि इनमें विधवाविवाह (या धरेजा) प्रचलित है इनके निकृष्ट और शूद्र होनेका चिह्न समझा जाता है इस बातका वर्णन पहले हो चुका है कि इस कुरमी जातिमें कुछ सभासदोंकी नई सभायें बनाई गई हैं, जिनकी इच्छा अपनी जातीय दशामें उन्नति करनेकी है, और जिनको अपनी जातिमें विधवाविवाह होनेकी बात अस्वीकृत है (सेन्सेज रिपोर्ट १९०१ भाग १ ० २२४)

"दूसरे स्थानपर सेन्सेज आफ इण्डिया १९०१ जि० १ पृ० ५२९ में लिखा है बिहारके अवधिया या अयोध्या कुर्मी और संयुक्त प्रान्तके कनौजिया कुर्मी विधवा विवाहकी रीतिको रोकनेके कारण अभिमान करते हैं, और प्रयत्न करते हैं कि वे किसी प्रकारसे क्षत्रिय मान लियेजांय, यद्यपि अवधिया कुर्मी खास कुर्मियोंसे पृथक होगये हैं, तथापि उनको कोई क्षत्रिय या राजपूत स्वीकार नहीं करता है । वर्णविवेकचंद्रिकामें लिखा है कि--

> शङ्कुकारात्मजाः सर्वे बभूवुश्चित्रकारिणः ।
> कुविन्दकात्मजौ जातौ कैरी कुर्मीतिसंज्ञकौ ॥

शंकुकारके पुत्र चित्रकार हुए और कुविन्दके पुत्र कैरी और कुर्मी कहलाये, बहुधा विद्वानोंकी सम्मति इस जातिको शूद्र बतानेमें है, पंडित भीमसेनजीने इस जातिको अपनी अष्टादश स्मृतिके टीकामें लिखा है कि--

शूद्रेषु दासगोपालकुलमित्रार्द्धसीरिणः ।
भोज्यान्ना नापितश्चैव यश्चात्मानं निवेदयेत् ॥

पराशर० । ११ । २०

यहां कुरुमित्रपर कुर्मीकी संभावना पंडितजीने की है ।

इसके विरुद्ध कुर्मी जाति अपनेको क्षत्रिय कहती है और यह भी कहती है कि हमारी जातिमें बहुत वडे आदमी हैं जो कोई हमको क्षत्रिय न कहैगा हम दावा करदेगें हमने, वंशावली बनवाली है, इसके विरुद्ध कौन कह सकताहै, अतः हम इस अवसरमें उनलोगोंसे कहते हैं भाई शास्त्रमें जो लिखा होता है, वह सबको प्रमाण होता है, इसकारण यदि शास्त्र आपको क्षत्रिय कहैं तो हमको इसमें कोई आपत्ति नहीं है। कुर्मी क्षत्रियत्वदर्पण पृ० २ पं० ४ से ऋगादि वेदों, केन आदि उपनिषदों, शतपथादि ब्राह्मणों सांख्यआदि षड्दर्शनों, मानवआदि धर्मशास्त्रों, महाभारत आदि इतिहासों, तथा अन्य प्रमाणिक ग्रन्थोंमें न तो क्षत्रियसे भिन्न पुरुष की संज्ञामें पुं० कूर्मी शब्द प्रयुक्त हुआ है, न यह लिखा है कि कूर्मी क्षत्रियसे भिन्न अन्य वर्ण हैं २ पुं० कूर्मी शब्द भूपति, वीर्यवान् वीरकर्मा इन्द्रका वाचक है, और उत्कृष्ट क्षत्रियकी समुचित संज्ञा है । ३ (स एष कूर्म इम एव लोकाः) (श० का० ७।५।१) के अनुसार पृथिवी आदि लोक कूर्म है (पृ० ३ पं० १) (द्यावा पृथिव्यौ हि कूर्मः) (श० ७।५। १) के अनुसार स्पष्टरूपसे द्यौः-स्वर्ग और पृथिवीका नाम कूर्म है । (पृ० ३ पं० ९) (कूर्ममुपदधाति रसो वै कूर्मः) कूर्मका अर्थ रसका है, विश्वकोशमें "रसो गन्धरसे स्वादे तिक्तादौ विषरागयोः । शृंगारादौ द्रवे वीर्ये देहधात्वम्बुपारदे" कूर्मका अर्थात् रस अर्थात्-वीर्य है४(पृ० ४ पं० ६) (पूर्वीश्चिद्धित्वे तु विकूर्मिन्) (ऋ० मं० ८ सू० ९९) । (इन्द्रसुशिप्रोनघवातरुत्रोमहाव्रातस्तुविकूर्मिऋधावान्) (ऋ० मं० ३ सू० ३०) सायन भाष्यमें तो विकुर्मिका अर्थ (संग्रामे नानाविधिकर्मणां कर्ता) संग्राममें नाना विधि कर्मोंका करने वाला है, इन्द्र जिसकी संज्ञामें कूर्मी शब्दका प्रयोग वेदमें मिलताहै क्षत्रियही है"स यः स कूर्मोऽसौ आदित्यः" और "वृषावै कूर्मः श० ७।५। १" के अनुसार आदित्य सूर्य और वृषा अर्थात् इन्द्रका नाम कूर्म है । अतएव कूर्म शब्द उत्कृष्ट क्षत्रियकी संज्ञामें प्रयुक्त होता है ५ जिन कुलोंमें कुरमी उत्पन्न हैं उनमेंसे कुछके नाम अंग्रेजी पुस्तकोंसे लियेगये हैं, कूर्म वंश, कुशवंश, लववंश कूर्म (ऋषि) कुल कुरु वंश यदुवंश इत्यादि ।

यहीं पांच नम्बर सब वंशावलीके सारभूत हैं, इसपर हमको तथा दूसरे जाति निर्णय करनेवालोंको यह कहना है कि कुर्मी शब्द जो एक जातिका वाचक आप मानते हैं, तब आपको वेद उपनिषद दर्शन धर्मशास्त्र और महाभारत आदिसे दिखाना था कि यह कुर्मियोंकी वंशावली है, इक्ष्वाकु आदि सूर्यवंश, व. इलाआदि चन्द्रवंश, किसी एक वंशमें इनका समावेश होना दिखाया जाता, सो ग्रन्थकारने महाभारत मनु उपनिषद् साम यजु इनमेंसे एकका भी पता न लिखा कि अमुक स्थानपर कुर्मीजाति वाचक शब्द आया है, और वह कुर्मियोंके वंशका बोधक है, ऐसी गोलबातोंसे जातिका निर्णय नहीं होता महाभारतमें किसीभी क्षत्रियको कुर्मी नहीं लिखा, श्रीकृष्णने गीतामें अर्जुनको एक जगहभी कुर्मी कहकर नहीं पुकारा बहुत क्या समस्त पाण्डव कुलभी कहीं कुर्मी नहीं कहागया, तब क्षत्रियपर पुं० कुर्मी शब्द की सिद्धि कैसे ? कुर्मी शब्दके वीर्यवान भूपति आदि अर्थ जो आपने लिखे हैं इसमें आपने प्रमाण कोई नहीं दिया और वीर्यवान् आदि शब्द विशेषणप्रयुक्त है, तब वह किसीकी जातिको बतानेवाले नहीं गुणको बताते हैं, इससे संज्ञा या जातिको कहनेवाला कुर्मी शब्द नहीं ।

३ शतपथ ब्राह्मणमें जो कूर्म शब्द आया है वह कुर्मी जातिका वाचक नहीं है यह कूर्म शब्द है और कूर्मके लोक, पृथिवी, ग्राश पृथिवी, रस आदि अर्थ हैं पृथ्वी स्त्रीलिंग है और वैदिक कर्मकाण्डमें कूर्म (कच्छप)का उपधान होता है, यज्ञमें कच्छपकी स्थापना की जाती है (कूर्मम् उपदधाति) इसका अर्थ यह है कच्छपको स्थापन करता है, न कि यज्ञमें किसी कुर्मीको स्थापन किया जाता है, और विश्वकोशमें अर्थ रसका स्वाद तिक्त रागका है तथा विष धातु पारद आदिका है सही है यह रसका अर्थ है न कि कूर्मका, अर्थ भी खूब किये हैं कूर्मका अर्थ रस और रस अर्थ वीर्य पारद स्वाद तिक्त विषादि हैं तो कूर्मजी अब रस वीर्य विष आदि अर्थवाले होगये, यह अर्थ तो ऐसे जैसे कोई अंधेसे खीरकी व्याख्या करने लगा, उसने पूछा खीर कैसी होती है, उत्तर श्वेत. प्र० श्वेत कैसी होती है, उत्तर जैसी रुई, प्र० रुई कैसी होती है उत्तर जैसा बगला प्र० बगला कैसा होता है, तब उसने टेढा हाथ कर बताया ऐसा होता है तब अंधा बोला बहुत टेढी खीर होती है मैं नहीं खाऊंगा, ऐसा ही इस वंशावलीमें रसका कूर्म—अर्थात् रस वीर्य, वीर्य अर्थात्— विष तिक्तादि, तिक्तादि क्या कुर्मी जाति, ऐसा किया है शतपथ ब्राह्मणमें कूर्म शब्द आया है जो कच्छपका उपधान बताता है, और उसका अर्थ कई प्रकारका करता है जो शतपथके पाठ लिखे हैं वे भी अस्तव्यस्त हैं "स एष कूर्म इम एव लोकः" ऐसा पाठ इस पतेमें नहीं है, यहां "रसो वै कूर्म" से आरंभ कर बहुत आगे "तावानात्मा स एष इम एव लोकाः" पाठ है न कि कूर्मके साथ, न यहां कूर्मका किसी क्षत्रियपरक अर्थ है कारण कि इसी प्रसंगमें कहा है "स यत्कूर्मो नाम एतद्रै रूपं कृत्वा प्रजापतिः प्रजा असृजत" (श० ७ । ५ । ५) "यदकरोत्तस्मात्कूर्मः कश्यपो वै कूर्मस्तस्मादाहुः सर्वाः प्रजाः काश्यप" इति ७ । ५ । ५ "प्राणो वै कूर्मः प्राणो हीमाः सर्वाः प्रजाः करोति" अर्थात् प्रजापतिने कूर्मरूप धारण करके प्रजाको निर्माण किया, जो किया जाता है वह कूर्म है, या जो करता है सो कूर्म है, कश्यप कूर्म है इससे कूर्म है कि वह सब प्रजाको बनाता है, इससे सब प्रजा काश्यप कहाती है, प्राणनाम भी कूर्मका है, क्योंकि प्राण ही सब प्रजाको करता है अब ग्रन्थकार शतपथके इस प्रसंगको विचारे कि अकरोत् अर्थमें कूर्म है इसी अर्थमें कश्यप भी कूर्म है, अब आप बतावें कश्यप क्षत्रिय हैं या ब्राह्मण ? जब ब्राह्मण हैं तो फिर क्षत्रियकी आवश्यकता क्या है ब्राह्मण बनने चाहिये, अथवा जब कूर्म नाम प्राणका है तो सब जीव मात्र जिनमें प्राण हैं आपके मतमें कुर्मी कहे जाने चाहिये, और यहां तो कुर्मी शब्द भी नहीं सिद्ध तो यह करना चाहिये था कि कुर्मी वंश अमुक पुरुषसे चला सो यहां तो पृथ्वी, लोक, प्राण, वृषा, द्युलोक, सबही कूर्म हैं, और अकरोत अर्थमें हैं, और फिर यह भी विचारनेकी बात है कि प्रजापतिने कूर्मरूप धारण किया, और प्रजा रची तो कूर्मरूप कौनसा था, क्या कुर्मीयोंका रूप धारण किया था कुर्मी या दूसरे मनुष्योंमें विलक्षणता क्या थी इससे सिद्ध है कि पहला रूप प्रजापतिका कूर्म (कच्छप अवतार) है यहां तो अकरोत् अर्थमें कूर्म कुर्मी हुए, अब ऋग्वेदके अर्थमें इन्द्र भी कूर्मी हैं यहां यही लिखना उचित था कि इन्द्रकी जाति कुर्मी है, तब तो कुछ अर्थसिद्धि होती परन्तु यहां तो वंशावली निर्माताके मतानुसार कूर्मीशब्द अनेक संग्रामका कर्ता अर्थ होनेसे विशेषण वा गुणवाचक है इसमें जातिका कोई लक्षण नहीं निकलता।

५ वंशावली जो इस पुस्तकमें दीगई है उसमें पहले कूर्मवंश लिखा है ऐसा तो किसी इतिहास पुराणमें नहीं लिखा कि संसारमें सबसे प्रथम कूर्मवंश चला, कदाचित् प्रजापतिका वंशही कुर्मीवंश समझा गयाहो, परन्तु प्रजापतिके पुत्र तो सनकादि ब्राह्मण हुए हैं आप इस शब्दको केवल क्षत्रियही मानते

हैं, फिर आपने लवकुश यदु राठौर महाराष्ट्र आदि ४२ कुल और महाराष्ट्रोंके २२ कुल सबमें कुर्मी उत्पन्न हुए बताये हैं, जब सभी कुलोंमें कुर्मी हैं तो यह सब एकही कुल क्यों नहीं, कुर्मी कुल क्या खिचडी है जो यदु, कुरु, लवादि सबमें सम्मिलित हैं, फिर नम्बरवार पर कूर्म ऋषि लिखकर उनका कुलभी ऋषि माना गयाहै, तब फिर प्रश्न उठ सकता है कि यह पहला कूर्म वंश कौन है, इसमें कौन २ राजा हुए कारण कि सबसे प्रथमका इक्ष्वाकु राजा तो सूर्यवंशी है, इस कूर्म वंशका आदि पुरुष कौन है, फिर यह चौथा कूर्मऋषि वंश कौनसा है, यह ऋषि ब्राह्मण है वा क्षत्रिय, और वह पहला कूर्म कौन है, इस ऋषिसे विलक्षण है वा कोई जंतुविशेष है, यदि सब ही कूर्म हैं तब महाभारत, भागवत, वाल्मीकि, छः दर्शन तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थ वा काव्योंमें रामलक्ष्मणादि किन्हीको तो हे कूर्म वा कौर्म ऐसा सम्बोधन दियाजाता, कहीं अर्जुन भीम वा किसी यदुवंशीके लिये कूर्म शब्द नहीं मिलताहै तब यह वंशावली सत्यकी तराजू पर ठीक नहीं उतरती यदि कहो कि दो तीन कवितोंमें कई नरेशोंके साथ कूरम पद आया है, इससे यह कुर्मी हैं सो यह बात भी ठीक नहीं, वंशावलीमें कूर्मी शब्द अनेक संग्रामोंका करने वाला बताया है यहां भी वही अर्थ लिया जासकता है, तोभी कुर्मी जातिके यह नरेश हैं, ऐसा नहीं माना जासकता यथार्थमें क्षत्रियोंकी एक जाति कछवाहोंकी है; कच्छपका पर्याय कूर्म है इसी आशयसे कविने उनको कूर्म लिखा हो तो क्या असंगत है ?

क्षत्रियोंमें यज्ञोपवीत सबका होताहै अबभी लाखों कुर्मी यज्ञोपवीतरहित हैं ग्रामादि साधारण स्थितिपरक कुर्मी जातिमें आचार विचार कुलीनोंका सा नहीं दीखता, अभी तक हमारे पास इस जातिके क्षत्रिय होने का प्रमाण शास्त्रानुसार नहीं आया है, यदि कहींसे इस वंशके क्षत्रिय होनेका प्रमाण हमको मिलैगा तो हम सहर्ष उसको अगले संस्करणमें लगा देंगे, परन्तु गोलमाल वा पक्षपात हमको सब प्रकारसे त्याज्य है, किसीका नाम चन्द्र हो तो चन्द नाम होनेसे वह पुरुष चन्द्रवंशी नहीं कहा जासकता, कई विद्वानोंकी राय है कि यह संकर जातिहै, मिस्टर मेलकाम साहब अपने ग्रन्थमें इस जातिको शूद्र बताते हैं, और एक स्थानपर तो एक अंग्रेजने इनका भोजन बहुत अपवित्र लिखकर इनको शूद्र बताया है; अकवामुल हिन्द॰ में पिता शूद्र वर्ण और माता अहीरनसे इनकी उत्पत्ति लिखी है, इत्यादि वाक्योंसे इस समयतक इस जातिके क्षत्रिय होनेका पुष्ट प्रमाण शास्त्रोंमें नहीं पाया जाता । हमारा यह अभिप्राय नहीं कि कोई जाति अपने असली पद या यथार्थ रूपको प्राप्त न हो,अवश्य हो और अपनी असलियतको प्राप्त हो, परन्तु हम यहभी नहीं चाहते कि कोई जाति ऐसाभी काम न करै कि वह उस वर्णका तो नहीं, परन्तु दूसरे वर्णमें जाना चाहे और अपनी असलियत भी खो बैठे, इधर वह क्षत्रिय भी न बनै और अपनी जाति रूपको भी खो बैठे तो बडी कठिनाई उपस्थित होगी, जिस जातिमें परम्परा सम्बन्धसे संस्कार छिन्न नहीं हुआ है, जिस जातिमें विधवा विवाह जैसा गर्हित वा संकर कर्म प्रवृत्त नहीं हुआ है, जिस जाति के आचार विचार द्विजोंसे मिलते हैं,वा जो जाति बहुत कालसे व्रात्यताको प्राप्त नहीं हुई है, वह अवश्य द्विजसंज्ञक है, उन आचार विचारोंको कुर्मी जातिमें मिलानेसे पता मिलसकता है कि कुर्मी जातिकी सर्व साधारण रहन सहन कैसी है, हमसे एक महाशयने कहा है कि कुर्मी जातिमें बहुतसे भेद हैं यदि यह बात सत्य है कि बहुत प्रकारके कुर्मी होते हैं उनमें कुछ क्षत्रिय कुछ अन्य वर्ण होते हैं, तो हमको इसमें यह वक्तव्य है कि अपनी क्षात्रधर्म सम्बन्धी उन्नति करैं, केवल धनकी बहुतायतसे जाति नहीं बना करती, हां ! इस बातका हम कुर्मी जातिके महानुभाव सज्जनोंको हृदयसे धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने पाठशाला स्कूल और बोर्डिंग हाउस बनाकर अपनी जाति तथा सर्व साधारणका बहुत उपकार किया है,

वैसा अन्य जातियोंने नहीं किया, भगवान् इनकी उन्नति पद प्रतिष्ठा और उच्च कोटिकी स्थिति प्राप्त करें यह हम हृदयसे चाहते हैं।

खाती तक्षा ।

यद्यपि हम रथकार मीमांसा प्रकरणमें इस विषयका वर्णन करचुके हैं, कि रथकार जातिको एक यज्ञका अधिकार है, और सम्भवतः रथकारही यह वढई और खाती तक्षा आदि नामसे प्रसिद्ध है, परन्तु हमारे सामने एक पुस्तक जाङ्गिलोत्पत्ति है, इसके देखनेसे विदित होता है, कि इस समय खाती जातिका प्रवाह दूसरी ओर जारहाहै, उस पुस्तकमें लिखा है (पृ० ३) राजपूताना मालवादेशमें खाती, पंजावमें तखाण, दक्षिणमें सुतार, पूर्वमें वढई, वंगाल उडीसामें वडगई कहाते हैं, इस वातसे यह प्रतीत होता है कि खाती वढई आदि शब्द एकही इस जातिके बोधक हैं, आगे इस पुस्तकमें लिखाहै (पृ० ६) कि खातीका नाम जोग जाङ्गिडा है, हम लोग वढई नहीं किन्तु वढईका काम करतेहैं, वढई द्विज अर्थात्—ब्राह्मणवर्ण हैं, फिर आगे चलकर लिखा है (पृ० २३) मनु, मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, भृगु, वशिष्ठ, प्रचेता, नारद आदि अठारह गोत्रके ब्राह्मण जिनकी संख्या १४४४ थी जो योग शास्त्रके पूर्णज्ञाता थे जिसकारण इनकी जोग जाङ्गिडा संज्ञा हुई, इसकारण यह ब्राह्मणगण विश्वकर्मा वंशी ब्राह्मण नामसे विख्यात हुए । इसपर हमको यह विचार करना है, जव विराट् या मनु या ब्रह्माजीके यह अठारह गोत्रप्रवर्तक ऋषि हुए, तव यह विश्वकर्माके वंशज कहाये यह क्रम कहांका है, इसका प्रमाण क्या है और योगज्ञाता तो अनेक ऋषि मुनि हुए हैं, इनहीकी जाति जोग जांगडा हुई यह कैसे, तथा यदि योग जाननेसे जोगजाति वनी यह भी एक कर्मनाम हुआ, न कि जाति नाम, फिर इन ऋषियोंके गोत्र वाले और भी ब्राह्मणकुल हैं, वे जोग जांगिडा क्यों न हुए और विश्वकर्मासे यहां क्या समझाजाय, परमेश्वर या देवताओंका शिल्पी, यदि परमेश्वर लियाजाय तो सव संसारही विश्वकर्माकी सन्तान है, यदि विश्वकर्मा कोई ऋषि वा शिल्पी है तो अभी वह उत्पन्नभी नहीं हुआ फिर यह ऋषि विश्वकर्माके वंशधर कैसे हुए, दूसरे पुस्तकमें इस विषयका कोई प्रमाण भी नहीं दिया कि यह अठारह ऋषि विश्वकर्माके वंशधर हैं, इनकी सन्तान जोग वा जङ्गिला कहाती है, आगे इस पुस्तकमें लिखा है (पृ० २४) कि "श्रीकृष्णने कहाहै, कि योगशास्त्र सिखानेसे और पवित्र होनेके कारण तुम्हारी जोग जांगिडा संज्ञा है, शिल्पतत्त्वके जाननेवाले आप ही हैं हे महर्षियो ! तुम किसी दूरदेश भूमिमें एक नगर वसाओ जिसमें मेरी प्रजा और कुटुम्ब कष्ट रहित होजायँ" श्रीकृष्ण महाराजके वचन सुनकर वह सव जांगिडा ब्राह्मण शिल्पशास्त्रानुसार द्वारिकाके वनानेमें प्रवृत्त हुए, यह ब्राह्मण पहले शिल्पकर्म सम्बन्धी शास्त्रोंके उपदेशक थे, द्वारिका वनानेके समयसे यह लोग शिल्पसम्बन्धी काष्ठादिके पदार्थ तक्षण अर्थात् चीर फाडकर वनानेके कारण तक्षा वढई तखाण और खाती कहाये, इत्यादि इस वंशावलीमें कोई प्रमाण तो इस विषयका नहीं दिया गया है, कि यह खाती जातिके लोग पहले ब्राह्मण थे केवल दन्तकथा लिखी है, और न किसी भी धर्मशास्त्रमें यह लेख नहीं पाया जाता कि शिल्पकर्म करनेवाली ब्राह्मण जाति थी, और न श्रीकृष्णने यह वात मथुरावासी ब्राह्मणोंसे कही कि तुम जाकर किसी देशको वनाओ, वहां तो यह लिखा है कि विश्वकर्मा द्वारा नगर निर्माण किया गया है ।

इति सम्मन्त्र्य भगवान्दुर्गं द्वादशयोजनम् ॥
अन्तःसमुद्रे नगरं कृत्स्नाद्भुतमचीकरत् । भागवत ।

दृश्यते यत्र हि त्वाष्ट्रं विज्ञानं शिल्पनैपुणम् ॥ ५१ ॥

(द० उ० अ० ५०)

तत्र योगप्रभावेण नीत्वा सर्वजनं हरिः ॥

अर्थात्-सम्मति करके भगवान्ने बारहयोजनका नगर समुद्रके मध्यमें विश्वकर्माद्वारा निर्माण कराया, जिसमें विश्वकर्माका शिल्पनैपुण्यभली भांति प्रगट होता है भगवान्ने योगप्रभावसे सब द्वारिकावासियोंको वहां पहुँचा दिया, यह तो श्रीमद्भागवतमें है, इसके सिवाय जाङ्गिडा उत्पत्तिमें यह अप्रामाणिक कथा लिखकर तो ब्राह्मण जातिका अपमान करना वा कराना है कि कृष्ण भगवानने स्वयं ब्राह्मण जातिके लोगोंसे तख्ते चिरवाये, और उस उत्कृष्ट जातिको सदाके लिये खाती बना दिया, शिव शिव ! ! और फिर यह बडेही आश्चर्यकी बात है कि द्वारिकाका निर्माण तो अनभ्यासी ब्राह्मणोंने किया परन्तु द्वारिका निर्माणसे पहलेका जितना शिल्प है वह कौन जाति करती थी, और उसके पास शिल्प था या नहीं, यदि कोई जाति थी तो श्रीकृष्णने उस जातिके होते हुए ब्राह्मणोंसे यह काम क्यों कराया कुछ समझमें नहीं आता न कोई प्रमाण इस विषयका है कि ऐसा हुआ, ग्रन्थकार बतावैं तो कहांका लेख है ? दूसरी बात यह है, कि मथुरामें वह कौन जाति थी जिसे श्रीकृष्णने वढई आदि कामके लिये कहा, यदि कहो कि मैथिल जाति थी, क्या वह मैथिल ब्राह्मणों परही क्रुद्ध हुए, मथुरिया चौबेभी तो थे, और उससे पहले तो मैथिलोंकी खाती संज्ञा न थी, और सब मैथिलोंने ही ऐसा किया तो राजगीरी लुहारपण पत्थरकी नक्काशी आदि सब कर्म मैथिल ब्राह्मणोंके ही होने चाहिये, फिर जैसे खाती वैसेही राजलुहार इनमें कुछ भेद न होना चाहिये, तब खाती ही ब्राह्मण क्यों ? लुहार और मिस्तरी सब ही ब्राह्मण होने चाहिये, और मैथिलोंसे पहले लुहार वढई आदि कोई भी शिल्प न होना चाहिये, पर इससे पहले शिल्प पाये जाते हैं, इससे ब्राह्मणोंका यह कर्म है यह वात शास्त्रके विरुद्ध पाई जाती है, यदि मथुरासे गये ब्राह्मण खाती हो गये तो द्वारिकामें यह वंश बहुतायतसे पाया जाता पर वैसा नहीं है, और मिथिलामें तो कोई भी अपनेको मैथिल मानता हुआ वढई, खाती वा शिल्पी नहीं मानता, और न कभी यह समझमें आ सकता है, कि कृष्ण भगवान्ने ब्राह्मणोंको शिल्पी करके फिर उनको सदाके लिये खाती कर दिया हो, कारण कि उनका तो पहले ही से इनकार था और फिर सन्तानमें एक भी ऐसा न हुआ जो आज तक योग विद्याका उपदेशक हो, यह तो स्पष्ट इस बातको प्रगट करता है कि महायोगेश्वर होकर भी श्रीकृष्णने स्वयं योगज्ञाताओंका लोप कर दिया, पर ऐसा कोई बुद्धिमान् समझ नहीं सकता कि ऐसा हुआ हो, न इसमें कोई प्रमाण है, न खाती जातिपर विपत्ति पडनेका इतिहास पायाजाता है, कि उनके जनेऊ तोडे गये हों वल्कि शिल्पियोंका सर्वत्र मान रहा है, हमने अनेक खातियोंको देखा है कि, पन्द्रह वर्ष पहले उनके यज्ञोपवीत नहीं थे, अब भी पद्धति अनुसार यथा समय यज्ञोपवीत नहीं देखा जाता, दूसरी ब्राह्मण जातियें यज्ञोपवीत विना कभी न रहीं, वहुत अब भी ऐसे हैं जिनको गोत्र परिज्ञात नहीं वे दूसरा ही गोत्र कहते हैं, परन्तु शास्त्रोंमें जो तक्षा रथकारादि जाति लिखी हैं वह इससे पहली और सप्रमाण हैं, यदि यह खाती जाति तक्षा वा रथकार शास्त्रीय नहीं हैं और पेशेवर हैं तो पेशा अनेक जातिके लोग कर सकते हैं इसमें यह कैसे होगया कि ब्राह्मण जातिका एक समूह सदाके लिये तक्षा बन गया, और कोई आपत्ति न होनेपर भी इस रामराज्यमें वही गाडीं पहिये वनाती चली जाती है, कमसे कम एक चौथाई

भाग तो उपदेशक होता, जिससे आर्षत्वकी झलक आती, इत्यादि कारणोंसे लोगोंको इनके ब्राह्मणत्वपर सन्देह परिपक्व होजाता है हम यहांपर कुछ विशेष न लिख कर यह बात विद्वानोंके विचार पर छोडते हैं, कि वे स्वयं निर्णय करैं कि शास्त्रसे और दन्तकथाओंसे क्या सम्बन्ध है, लोग बडे २ तर्कके साथ ग्रन्थोंको देखते हैं, प्रक्षिप्त समझते हैं, पुराण नहीं मानते हैं, पर अपना स्वार्थ होनेपर चारों- खाने चित्त रहते हैं, दन्तकथा भी प्रमाण होती है, अस्तु हम किसीकी उन्नतिमें बाधक नहीं खाती जातिका सम्बन्ध खातीके यहांही होगा चाहै वोह कोटयधीश वा षट्शास्त्री क्यों न हो विद्याकी वृद्धि शिल्पशास्त्रके विज्ञानमें यह जातियें मन लगावैं तो कुछ देशको लाभ होसकता है, यों घरमें बेटेका नाम राजा भी रक्खा जासकता है, पर उसको राजा मान लें तबही तो राजा है, मैथिल ब्राह्मण श्रोत्रिय आदि इनको ब्राह्मणत्व स्वीकार नहीं करते इसकारण हम भी इसको विचार कोटिपर छोडते हैं। यह अपने गोत्र इस प्रकार लिखते हैं—

भरद्वाज, उपमन्यु, वसिष्ठ, काश्यप, मौद्गल्य, जातूकर्ण्य, शाण्डिल्य, कौडिन्य, गौतम, अघमर्षण, वच्छस, वामदेव, ऋक्षु, लौगाक्षि, वत्स, गविष्ठिर, विदस, दीर्घतमा यह अठारह गोत्र अपने बताते हैं जो किसी विप्र वंशावलीकी नकल विदित होती है बहुत लोग इनमें गोत्रज्ञान रहित हैं इनकी अल्लें इस प्रकार हैं।

लदोइया, नादोरिया, काकोडिया, वा काकडिया, लवोरिया, डंटवाल, वा डंढोरिया, टोर, मैन, बुढर, रोलीवाल, दम्मी, वाला दाने वा दायम् ॥ १ ॥

उवाने सामलोदिया, वा सामलोढिया, सामलीवाल, माले संगरखानी, टाडे, कटारिया मरोणया॥२॥

हरयाने मानडिन्या वा माडन्या, मंडीवाल, पीमाडिया, माडीवाल, माद्रैया, मोसामा, वा रोसामा ॥३॥

सामरवाल, सीकर, पामरया, परमर, परवाल, सूई चानी, गंकाल, डिडोल्या, धामा, वदले, वनडेला, डेडोला, जायलवाल, गोगोरेया, घराणे, चेवावा ॥ ४ ॥

वमेरवाल, स्वाल वा स्वार, राजुतनी, चन्देवा, धैमन वा धिमुन्याराजोल्या, तालचिडी ॥ ५ ॥

मिढयाल, आसपाल वा सुपाल, सीरूडी वा सीरूढी, रीक्षवाल, काकटैन वा काकूटायन, ऌरोल्य, सहारन, (शारन) नारनौलिया, केलोया, धनेरवा ॥ ६ ॥

नाले वौन्दवाल, वद्वानियां, वढवाल अथवा वाडेवाल्या, बन्दवान्या, वेरीवाल, जालवाल, वृंदिया, दडवाल ॥ ७ ॥

उज्जैनवाल, कलोनया, कादिन्या, भरेलेवा, मोलिया, सम्मी, कपूरवाल, (कपूरिया) मनीठिया, कलैया; सामडीवाल, मोखरीवार ॥ ८ ॥

चरखिया वा चरखीवाल, ठाटवाल (ठाटवालिया) सेवाल, ठाटालिया, मोकरवाल, चिचोया, सीवाल, पाखुरिया, सिरधन्या, रावत, सेमा, खतडया ॥ ९ ॥

नीशल, तिगन्या, खण्डेलवाल (खडलवार) कौशल्य, गच्ची, मेले, दज्जड वा धिंज्जड, चरसल ॥१०॥

विजोडिया, गोठरीवाल, मंडावरिया, वदुरली, आतली वा अटिल, रेट ॥ ११ ॥

भद्रानिया, दसोदिया, तेशन, दन्द्रवाले, तरानी, बवेरवाल, झटवालया, रीवाडय, कासलीवाल॥१२॥

ढागवाल, वालधनी, कोल्थल्या, रीसैया, कोत्कुथल्या, मालवा, मालवाल, नसपाल, सीधड, अरुद- वाल, रोमडीवार ॥ १३ ॥

कचुरिया, प्रनालिया, किंजा, धन्वरी वा धन्धरीवाल, खोकी, फरी, वंझेडया, कमलपुरया, मेरानिया, सीकरन्या ॥ १४ ॥

काले, झलझल्या, वडदुआ, दसुदनी, वलद्वा, वीजाणी वा वीजन्या, केसवान्या, वालदिया, पडवाल॥ १५॥

लामडीवाल, चोपल, वा चोवाल, वीजडिया, मार्गिया, गोदवाल, चेचेवाल वा चेचेवा, अठकोलिया, दमन, नेपालपूरया ॥ १६ ॥

सीलवाल, देनीवाल, धम्मी, वम्मीवालसे दीवाल, कादैय्या, वा कोदइया आजी, सोसानिया॥ १७॥

लोहारिया (लोहानिया) अडाइया, सगरया, रूढवाल, हरसोलिया, अमेरिया, जिरीपाल, तोन-गुरया ॥ १८ ॥

यह वंशावलीमें खातियोंकी अल्ल लिखी है, एक आश्चर्य इस अल्लमें यह है कि वलदवा माहेश्वरी वैश्योंकी भी अल्ल है, और इन लोगोंकी भी है तथा चेचेवा नवशिष्ठर गोत्रमें भी है और चेचावा कश्यपमें भी है और भी कहीं २ दो नाम एकसेही हैं, यथा शाण्डिल्यमें वन्दवा वान्या वद्वानियां इस जातिमें जो स्त्री नथ पहरती है वह कराव नहीं करती, जिसकी नाक छिदी नहीं होती वह करसकती हैं, इनके हाथका जल पीलिया जाता है निमन्त्रणभी ब्राह्मण जीमते हैं, इनके भेद विसोतर मेवाडा पूर्विया दिल्लीवाल जांगडा आदि हैं अनेकों विद्वानोंको इनके ब्राह्मणत्वसे इनकार है । इसमें तो सन्देह नहीं माना जासकता है कि वढईके कामोंमें वहुतसे दूसरे लोग भी सम्मिलित होगये हैं, जिनमें असली और दूसरे कौन हैं, इनका भेद निकालना कठिन होगया है ।

खैरादी ।

यह एक भी वढई जाति खातियोंके सम ान है, यह खैराद पर पाये हुक्के आदि उतारते हैं कोई २ यज्ञोपवीत भी पहरते हैं ।

राज-अट्टालिकाकार शिल्पी ।

राजपूतानोमें यह जाति विशेष रूपसे पाईजाती है अन्यत्रभी यह जाति पाईजाती है, यह कहीं कुमार कहीं राज और कहीं राजकुमार कहाते हैं, यह लोग मकान महल मन्दिर कोठी वंगले आदि वनानेमें वहुत चतुर होते हैं, पैसा वढ जानेसे यह ठेकेदारीभी करते हैं, कहीं खेती कहीं व्यापार और कहीं जिमीदारी भी करते हैं, खेती करनेवाले खेतैडकुमार कहाते हैं, जयपुर राज्यसे इस जातिके किसी महापुरुषको उस्ताकी पदवी मिली है, इनमें पूर्वकालमें तो यज्ञोपवीतका अभाव था, परन्तु अव कुछ दूसरी प्रकारकी हवा चलती है, जिसके द्वारा कोई अपनी स्थिति पर रहना नहीं चाहता इस समय शिल्पकी महिमा गाते २ लोगोंने विश्वकर्माजीसे अपना वंश मिलाकर इस वातकी चेष्टा की है कि यह जितने शिल्पकार हैं सव ब्राह्मण है, और इस विषयके कितने ही ग्रन्थ इस समय वनाये गये हैं, उनमें प्रमाणोंका उलट पुलट या कुछका कुछ लिखकर जातिके लोगों को भ्रममें डालकर उस धनको व्यर्थ ही खराव करदिया है, परन्तु जो हम ४ चतुर्थखंडमें लिख चुके हैं कि (विश्वकर्मा च शूद्रायां गर्भाधानं चकार ह) विश्वकर्माने मर्त्य लोकमें शूद्रामें गर्भाधान किया उससे मृत्यलोकमें नौ प्रकारके शिल्पकार प्रगट हुए हैं इन नौ शिल्पियोंमें कर्मकार, सूत्रधार, और स्वर्णकार स्पष्ट शब्द हैं पुराणोंमें भी छपेहुए हैं, पर तौ भी पक्षपातके मारे विश्वकर्मावंश कर्मकारके स्थानमें चर्मकार पाठ करदिया और सूत्रकारके अर्थमें नट ले दौडे कमसे कम इतना तो विचार किया होता कि विश्व-

कर्माजीने शिल्पी पैदा किये वे शिल्पकार होने चाहिये न कि नट, नटमें कौनसा शिल्प है; वह विमान बनाता है, या मकान बनाता है या गहने बनाता है, परन्तु इस समय तो लोगोंमें दयानन्दी रंगका चश्मा लगा रहा है, उनके जैसा गुरुने पाठ बदला है अर्थ बदला है वैसाही चेलोंने सीखा है, वास्तुशास्त्रोपदेशिकाके स्थानमें "शिल्पशास्त्रोपदेशिका" अर्थकर्तामें रथकर्ता कह देना फिर कौन बडी बात है, और यह बडाही आश्चर्य है कि दयानन्दी लोग तो जन्मसे जाति नहीं मानते कर्मसे मानते हैं तो सैकडों वर्षोंके बढई राज आदि शिल्पकर्मा खाती बढई मिस्त्रीही होने चाहिये।

और जब मनुआदि धर्मशास्त्रोंमें प्रक्षिप्त श्लोकोंकी भरमार मानी जाती है महाभारत चौगुना बढगया है पुराण नष्ट हैं, तो फिर इनहीं ग्रंथोंकी शरणमें जाकर अपनी जाति बनाना बडे शोककी बात है, अपने मतलबके बिगाडके लिये 'कारुकान्नं' ० १ यह मनुका श्लोक ग्रन्थकारको प्रक्षिप्त सूझै, और जब प्रयोजन बनता हो तो ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्डमें शैवागमके नामसे उतारे श्लोक प्रमाण मान लिये जांय, जरा इसकी तो खोज की होती कि यह शैवागम कौन ग्रंथ है, शिवमहिमाको कहनेवाले सभी शैवागम हो सकते हैं, पर विश्वकर्माजीका वंश बनानेवालेको इससे क्या उनको तो सूत्रधारका तक्षा अर्थ नहीं लिखा हुआ भी न सूझकर नट सूझा, वहां स्पष्ट लिखा है (सूत्रधारो द्विजानां तु शापेन पतितो भुवि । शीघ्रं च यज्ञकाष्ठानि न ददौ तेन हेतुना) अर्थात्-सूत्रधार इस लिये पतित हुआ कि उसने यज्ञसम्बन्धी काष्ठ शीघ्र तयार करके न दिया, अब सोचनेकी बात है सूत्रधारका अर्थ नट कैसे हो सकता है, जब विश्वकर्माने शूद्रोंमें वीर्याधान किया तो यह शिल्पकार पारशव क्यों नहीं माने जायँ बस इसका उत्तर इसके सिवाय और क्या हो सकता था, जैसा कि ग्रन्थकारने लिखा कि हमारा वंश विश्वकर्माके अवतार विशेषसे नहीं चला, जब वह देवर्षि अवस्थामें थे यह वंश तब चला है, यदि यह कथन मान लिया जाय तब विश्वकर्मा वंशियोंसे फिर यह प्रश्न होसकता है कि आपके पास इसका क्या प्रमाण है कि देवर्षि अवस्थावाले विश्वकर्माजीसे यह वंश चला है, उसकी वंशपरम्परा क्या है, और कहां है तथा वह स्वर्गवाले विश्वकर्माकी सन्तान मर्त्यलोकमें कैसे आई प्रमाणसे तो आठ वसुओंमें प्रत्यूषके पुत्र देवल कहाते हैं उनके बुद्धिमान दो पुत्र हुए।

देवलस्यापि द्वौ पुत्रौ क्षमावन्तौ मनीषिणौ ॥ बृहस्पतेस्तु भगिनी वरस्त्री ब्रह्मवादिनी ॥ योगसक्ता जगत्कृत्स्नमसक्ता विचचार ह ॥ प्रभासस्य तु सा भार्या वसूनामष्टमस्य च ॥ विश्वकर्मा महाभागो जज्ञे शिल्पप्रजापतिः॥कर्ता शिल्पसहस्राणां त्रिदशानां च वार्द्धकिः॥ मनुष्याश्चोपजीवन्ति यस्य शिल्पं महात्मनः ॥

बृहस्पतिकी एक बहन जो योगिनी थी और असक्त होकर जगत्में विचरती थी, वह आठवें वसु प्रभासकी भार्या हुई, उसमें विश्वकर्माने जन्म लिया यह शिल्पप्रजापति हैं, यह सहस्रों प्रकारके शिल्पकर्ता हैं, और देवताओंके वार्द्धकि कहाते हैं, इन्हीं महात्माके शिल्पसे मनुष्य आजीविका करते हैं, इस श्लोकसे स्पष्ट यह प्रतीत होता है कि विश्वकर्माके शिल्पशास्त्रसे मनुष्य आजीविका करते हैं, न कि उसके वंशधर आजीविका करते हैं, उसके वंशधर मनुष्य लोकमें तभी होंगे जब वह मनुष्य लोकमें आनकर अपना वंश स्थापन करें जैसे कि ब्रह्मवैवर्तसे सिद्ध है, और स्वर्गलोकमें तो उसे--

तस्य पुत्रास्तु चत्वारस्तेषां नामानि मे शृणु ।
अजैकपादहिर्बुध्नस्त्वष्टा रुद्रश्च वीर्यवान् ॥ २२ ॥

वि० अ० १ अ० १५

त्वाष्ट्री तु सवितुर्भार्या वडवारूपधारिणी ।
असूयत महाभागा सान्तरिक्षेऽश्विनावुभौ ॥

(महाभा० आदि० अ० ६६१ श्लो० ३६)

विश्वकर्माके चार पुत्र हुए, अजैकपाद, अहिर्बुध्न, त्वष्टा और रुद्र इनमें त्वष्टाके विश्वरूप और त्वाष्ट्री कन्या हुई, त्वाष्ट्रीमें सूर्यसे अन्तरिक्षमें अश्विनीकुमार हुए, त्वष्टाके विश्वरूप दैत्योंकी भगिनी रचनामें उत्पन्न हुए, इनको इन्द्रने मारा और त्वष्टाका वंश समाप्त हुआ, अब यह विचार कर्तव्य है कि इन स्वर्गीय विश्वकर्माके चार पुत्रोंमेंसे आजकलके शिल्पी किसके वंशधर हैं, और उन वंशधरोंका प्रमाण कहां है, कारण कि त्वष्टामें तो शिल्प था पर उसका वंश ही नहीं चला, शेष तीनों पुत्रोंके वंशधर कौन हैं सो लिखना चाहिये था, परन्तु एकबात भी इसमेंसे न लिखकर यों ही कहदेना कि हम विश्वकर्माके वंशधर हैं इससे ब्राह्मण हैं क्योंकि शिल्पकार्य करते हैं; चरक ऋषिकी बनाई चरकसंहिता यदि अम्बष्ठ जाति पढकर कहनेलगें वा अन्य वैश्यादि कहनेलगें कि हम चरकवंशी हैं ब्राह्मण हैं कारण कि हमने चरक पढ लियाहै, यह बात जैसे नहीं मानीजाती इसीप्रकार शिल्पका ज्ञाता विश्वकर्माका वर्ण नहीं माना जायगा, और ब्राह्मणसे भी जैसे अन्यवर्ण प्रगट होतेहैं इसीप्रकार विश्वकर्मासे भी ब्राह्मणातिरिक्त वंश होसकते हैं, जैसे बारह आदित्योंमें त्वष्टा हैं तथा अदितिके पुत्र आदित्य और आदित्यसे सूर्यवंश अर्थात् क्षत्रिय वंश चला तो सब सोचना चाहिये कि कश्यप अदिति प्रजापति हैं तब इनकी सन्तानभी ब्राह्मणही रहनी चाहिये सो न होकर भी क्षत्रियवंश चला, इसीप्रकार विश्वकर्माके वंशमें भी अन्यवर्ण शिल्पी हो सकतेहैं और एक बात यह भी है कि आठ वसुओंको विष्णु रहस्यमें क्षत्रिय लिखा है ।

इससे विश्वकर्माजी ब्राह्मण भी नहीं रहेंगे, परन्तु हमको यहां इस बातसे प्रयोजन है कि शिल्पकार्य ब्राह्मणोंका कर्म नहीं कारण कि यदि शिल्पकर्म ब्राह्मणोंका कर्म होता तो मनुजी शूद्रके लिये यह वचन न लिखते कि--

यैः कर्मभिः संचरितैः शुश्रूष्यन्ते द्विजातयः ।
तानि कारुककर्माणि शिल्पानि विविधानि च ॥

(मनु० १० । १००)

यदि शूद्र सेवाधर्मसे द्विजातियोंको सन्तुष्ट करनेकी सामर्थ्य न रखता हो तो जिन शिल्पके कर्मोंसे द्विजातियोंकी शुश्रूषा होसके वह बढईके कर्म तथा और दूसरे शिल्प कर्मोंसे ब्राह्मणादि तीन वर्णोंकी शुश्रूषा करे, चौकी बनाना, यज्ञपात्र बनाने तथा इष्टका बनाना आदि अब इन श्लोकोंसे यह बात स्पष्ट ही प्रतीत होती है कि शिल्पकर्म ब्राह्मणोंका कर्म नहीं पर शिल्पकर्मसे द्विजातिकी शुश्रूषा होसकती है,और वह शिल्पकर्म द्विजातिसे इतर संकर वा शूद्रजातिका कर्म भी है । विश्वकर्मवंशके ग्रन्थमें यहां शूद्रका पता तक उडा दिया है, वाल्मीकि रामायणमें भी ब्राह्मणोंसे अतिरिक्त शिल्पियोंकी जातिको पढा है । यथाहि--

ततोऽब्रवीद्द्विजान् वृद्धान् यज्ञकर्मसु निष्ठितान्। स्थापत्ये निष्ठितांश्चैव वृद्धान्परमधार्मिकान्॥ कर्मान्तिकान् शिल्पकारान् वर्द्धकीन् खनकानपि। गणकान् शिल्पिनश्चैव तथैव नटनर्तकान्॥

(बाल० सर्ग० १३)

अर्थात्-राजाकी आज्ञासे वशिष्ठजीने यज्ञकर्ममें निष्ठावाले वृद्ध ब्राह्मणोंको बुलाय और रथकारोंको जो परमधार्मिक थे तथा कर्मकार (लुहार) शिल्पकार (शिल्पकारीगर) वर्द्धकी (तक्षा) भूमि खोदनेवाले गणक तथा दूसरे शिल्पोंके ज्ञाता और इसीप्रकार दूसरे नट और नर्तकोंको भी बुलाया। यहां यह सब शब्द अलग २ पढे हैं तथा (चैव) इस कथनसे यह किसीके विशेषण नहीं हैं किन्तु पृथक् हैं पर विश्वकर्मा वंशधरजी कहते हैं वृद्धब्राह्मण वंशोत्पन्न मनुष्योंसे कहा, महात्माजी यह वृद्धब्राह्मण यहां कौन है क्या युवा ब्राह्मणोंका वंश नहीं होता है, क्या यहां वृद्ध ब्राह्मण विश्वकर्माजी हैं जो अमरलोकसे चलकर मनुष्यलोकमें आकर वूढे होगये, और अवतक तो तक्षा और राजगीरी की अव आपके मतसे नट नर्तक भी वृद्धब्राह्मण वंशोत्पन्न होगये। आपने तो ब्राह्मण जातिसे कोई कर्म भी न छुडवाया द्वापरमेंही नट नर्तक वना दिया पहले विद्या पढाई, फिर राजगुरु वनाया, फिर विद्याहीन पोप वनाया, फिर पानीपांडे फिर ववरची बनाये फिर वसूला हाथमें दिया, फिर कन्नी वसूलीके लिये जोर लगाया, आखिर नट नर्तक और कुआं खोदनेवाला बनाया, अव कपडे धुलाने शेप हैं, सो कोई (वसोपवित्रमसीति) जैसा मंत्र पढकर इनसे कपडेभी धुलवा लीजिये न होतो कोई श्लोक वनवा या वना लीजिये जैसा कि (पृ० १९३ में) "तेषां मध्ये तु विख्यातः खाती श्रेष्ठतरो गुणैः। विश्वकर्मकुलोत्पन्नः शौचाचारसमन्वितः॥" श्लोक विद्यमान है, यहां श्लोकावलि खाती वंशकी है इसका वर्णन कहा है, या यह ब्राह्मणवंशधर ऋषियोंकी परिपाटीसे नकल उडाई गई है, इन प्रमाणोंसे यह स्पष्ट है कि शिल्पादि कर्म ब्राह्मण जातिका नहीं है, और न ब्राह्मणजाति कभी इसको करती थी। जाङ्गिडोत्पत्तिमें तो विश्वकर्माजी निराकार ब्रह्म हैं, उनकी सन्तान खाती है और विश्वकर्म वंशावलीमें विश्वकर्माजी वसुके पुत्र हैं उनकी सन्तान वढई थवई आदि ब्राह्मण हैं, पर वह ऐसे ब्राह्मण हैं जैसे सृष्टिकी आदिमें सत्यार्थप्रकाशमें जवान २ स्त्रीपुरुष एकदमसे ईश्वरने प्रगट कर दिये ऐसे ही शायद विश्वकर्माजीने जनेऊ पहरे अपनी सन्तान मर्त्यलोकमें भेज दी होगी. शैवागमके अनुसार यह उपब्राह्मण नहीं. ब्रह्मवैवर्तके अनुसार विश्वकर्मासे शूद्रामें उत्पन्न नहीं तव आकाशसे गिरपडनेके सिवाय इस विश्वकर्मा वंशके वर्णन किये, शिल्पियोंको क्या कहा जा सकता है, अव भी सहस्रोंके यज्ञोपवीत नहीं है और देखादेखी कहीं जनेऊ डाल आये तो सन्ध्या जपका तो पताही नहीं है, दीवारका सूत अलवत्ता पास होता है, न विचारोंको अवकाश मिलता है इसलिये हमको दुखके साथ कहना पडता है कि कोई भी जाति हो वही रहैगी जो वह है उनमेंसे एक दो पुरुष यदि उस जातिकी असलियत खोकर उसे कहीं लेजांय तो वह इधर उधर दोनों स्थानसे भ्रष्ट होकर किसी कामकी नहीं रहैगी, हां इसवातमें हम बहुत प्रसन्न हैं शिल्पशास्त्र सम्बन्धी कार्यालय खोलेजांय, शिल्पके कालिज खोलेजांय वहां इन शिल्पियोंको उच्च-शिक्षा देकर देशकी उन्नति करके दिखाई जाय, ताजमहल तथा दक्षिण जैसे मंदिरोंकी इमारतें बनानेकी रीतियें सिखाई जांय, इञ्जीनियरी सिखाई जाय, तव कुछ जाति उन्नतिकर सकती है, ब्राह्मण वननेसे विश्वकर्मवंशकी उन्नति न होगी, ब्राह्मण वनकर भी वही पुराने गाडीके पहिये वनते रहे वा वही मकानोंकी टेढी मेढी तिदरी वनती रहीं तथा ब्राह्मण वनकर भी वडी इमारतोंके वनानेमें यदि इञ्जीनियरोंके कद्ध

वचन सुनने पडे तो फिर इस वंशकी क्या उन्नति होगी, आपको अपने कुलमें इञ्जीनियर शिल्पशास्त्रवेत्ता बनाने चाहिये, तब वंशका गौरव बढेगा, दयानन्दके सरलमाध्य होनेपर किसी दयानन्दी तक्षासे एक विमानभी न बन सका, पर अंग्रेजोंने विना ब्राह्मण बनेही विमान और मशीनें तयार करके अपने शिल्पने विश्वकर्माके सहित समस्त देशको चकित कर दिया, यही आप लोगोंका कर्तव्य है, ईश्वरभजन दान पुण्य अध्ययन तीर्थ पर्वादि सब कुछ आप कर सकते हैं, यही अब समयहै जाति उन्नति करो, जाति परिवर्त्तन मत करो, खातीका व्याह खातीमें होगा; असली मैथिलका मैथिलमें होगा, अनेकों भेद ब्राह्मणोंके होते हुए भी खाती ब्राह्मण थवई ब्राह्मण यह उपाधि तो कहीं देखनेमें नहीं आई, इससे स्वकर्ममें दक्षता(कार्य-कुशलता) तथा विद्या यह दोई वस्तु उत्कर्षता बढानेवाली हैं, इनको काममें लाना चाहिये ।

धीमार।

इस नामकी शिल्पकर्मा एक जाति है, इनमें धर्मांश तथा आचार विचार भी पाया जाता है ।

माहोर।

यह जाति शाहजहांपुर तिलहर आदि पूर्वी स्थानोंमें पाई जाती है, यह लोग अपनेको वैश्य बताते हैं, परन्तु इनमें अभीतक भी किसी २ के ही पास यज्ञोपवीत पाये जाते, साधारणतया ब्राह्मण इनके हाथका भोजन नहीं करते हैं, किसी २ ने इस जातिको द्विज नहीं माना है, अभीतक इसजातिने अपने विषयमें वैश्यत्वके कुछ प्रमाण उपस्थित नहीं किये हैं, यह लोग कहीं अपनेको माहोर कहीं माहूर कहीं महावर और कहीं मथुरिया कहते हैं, परन्तु माहुर जाति और माहोर जातिमें भेद पाया जाता है, कोई यह कहते हैं यह महुवान शब्दका माहोर बन गया है अर्थात्—यह महुवेका अर्क खैंचनेवाली जाति थी, या यह महुएका व्यापार करनेसे महुवार कहाई, पीछे बिगडकर माहोर या महावर शब्द होगया,हम देखते हैं माहोर शब्द अन्य जातियां भी अपने साथ लगाती हैं, यथा माहोर सुनार, महौर कोली, माहोर कहार माहोर कलवार,माहोर किसान आदि अनेक जातियोंके साथ पायाजाताहै,तब इतना तो अवश्य बोध होता है, कि महौर या महावर कोई उत्कृष्ट शब्द अवश्य है, जिसके निमित्त दूसरी जाति अपने साथ लगानेका उद्योग करती है, सी एस डबल्यु सी महोदय इसको कलवार जातिका एक भेद मानतेहैं, और दूसरे भी बहुतसे लोग ऐसाही कहतेहैं, पर इससमय इस जातिकी स्थिति देखनेसे पता लगताहै कि मद्य आदिका व्यापार इसजातिमें बहुत कालसे दिखाई नहीं देता, और लोग अच्छे आचार विचारसे रहतेहैं किन्हीका यह भी कहना है कि महाउर नाम एक क्षत्रियवंशमें राजा होगयाहै (जिसका नाम हम ३६ राजवंशमें दे चुके हैं) उसकी हम सन्तान हैं और क्षत्रिय कर्मके त्यागके कारण हम महाउर वैश्य कहातेहैं इत्यादि जातिका विवरण देतेहैं, परन्तु अभीतक इसजातिसे पुष्ट प्रमाणोंकी कोई पुस्तक नहीं निकली इसकारण हम कोई विशेष निर्णय नहीं करसकतेहैं । विचारकोटिमें इस जातिको रखते हैं ।

बाथम वैश्य ।

बाथम नामकी एक जाति अपनेको वैश्य कहतीहै, यह लोगभी शाहजहां पुर आदि स्थानोंमें पायेजातेहैं, शौण्डिकोंकी पुस्तकोंमें एक कलवार जातिका भेद इसजातिको लिखा है उस प्रान्तके निवासी भी ऐसाही कहतेहैं पर इस समय इस बाथम जातिमें मद्यका सेवन वा व्यापार कोई बात नहीं पाई जाती लोक सदाचरणकी ओर ध्यान रख रहेहैं, बाथम शब्द किसी शास्त्रमें अभीतक नहीं देखा गयाहै न वंशा व-लीमें इस बातपर ध्यान दियागयाहै कि किस वंशकी यह शाखा है केवल व्याकरणकी व्युत्पत्तिसे कोई

जाति सिद्ध नहीं होसकती कारण कि धातु प्रत्ययसे असंस्कृत शब्दभी संस्कृत जैसे होसकते हैं इनका विवरण जब विशेष प्राप्त होगा तब लिखेंगे ।

इसी प्रकारसे और भी कितनेही जातियोंको क्षत्रिय वैश्य होनेका दावा है, जैसे मेढ सुनार, अहीर बड गूजर आदि हमने चौथे मिश्र खण्डमें इन जातियोंपर भी कुछ २ विचार लिख दियाहै, विद्वज्जन देख कर इसका निर्णय कर सकते हैं ।

गोप ।

ब्रह्मवैवर्त पुराणमें लिखा है–

कृष्णस्य लोमकूपेभ्यः सद्यो गोपगणो मुनेः ।
आविर्बभूव रूपेण वेशेनैव च तत्समः ॥

(ब्र० वै० अ० ५। श्लोक० ४१)

अर्थात् कृष्णके लोम कूपोंसे गोपोंकी उत्पत्ति हुई है, जो रूप और वेशसे उन्हींके समान थे और जब भगवान्की नन्दरायजीसे बात हुई ।

"हे वैश्येन्द्र सति कलौ न नश्यति वसुन्धरा"

(ब्र० पु० १२८।३३)

हे वैश्येन्द्र ! कलिका आरम्भ होनेसे कलिधर्म प्रचलित होंगे पर वसुन्धरा नष्ट नहीं होगी इससे नन्द जीका वैश्य होना पाया जाता है, परन्तु कृष्णजी जब नन्दजीके घर थे तब उनके संस्कारको नन्दजीके पुरोहित न आये गर्गजीको वसुदेवजीने भेजा यह बडे आश्चर्यकी बात है, परन्तु फिर उसी पुरानमें लिखा है जब श्रीकृष्ण गोलोकको गये तब सब गोप ग्वालोंको साथ लेते गये और अमृत दृष्टिसे दूसरे गोपोंसे गोकुलको पूर्ण किया । यथाहि–

योगेनामृतदृष्ट्या च कृपया च कृपानिधिः ।
गोपीभिश्च तथा गोपैः परिपूर्णं चकारः सः ॥

(ब्रह्मवै० पु०)

भगवान् जब गोलोकको जानेलगे तब अपने साथ गोप गोपियोंको ले चलने लगे तब अमृतदृष्टि-द्वारा दूसरे गोपोंसे गोकुल पूर्ण किया, गोपालनमात्र इनमें एक वैश्य लक्षण पाया जाता है ।

लोधाजाति ।

लोधा जातिकी इस समयकी स्थिति जो पाई जाती है उसके देखनेसे विदित होता है कि यह जाति भी संस्कारशून्य है, उसमें साधारण स्थितिमें कहीं कोई यज्ञोपवीत पहरे नहीं दिखाई देता जीवन मरणमें कोई विशेष कृत्य तीन वर्णोंके समान नहीं होताहै, कराबभी होता है परन्तु यह जाति भी और जातिके समान अपनेको क्षत्रिय कहती है, पर प्रमाणमें केवल अनुमानका सहारा लेती है, जबतक शास्त्र किसी विषयमें अपना मतामत प्रगट न करै, तबतक कौन क्षत्रिय है कौन नहीं इस विषयमें क्या कहा जा सकता है, लोधोंकी वंशावलीमें लिखा है उद्यमशील होना क्षत्रिय है इसलिये उद्यमवाले होनेसे लोधे क्षत्रिय हैं, क्या अच्छा अनुमान है वैश्य शूद्र कोई उद्यमी हैही नहीं और वैश्य उद्यम शील होनेसे क्षत्रिय क्यों नहीं, तारीख बुलन्द शहरमें राजा लक्ष्मणसिंहने इनको खेतीके काममें मेहनती लिखा, लोधा शब्दको

लुब्धक, वा लोहधा वो वृक्ष विशेष लोधसे विगडा वताते हैं, राजा लक्ष्मणसिंह कहते हैं कि (किसी जमानेमें इस कौमके लोग लोध जंगलसे ला लाकर वाजारोंमें वेचा करते थे, इसवास्ते लोधे कहाने लगे (पृं० ३ से ९ तक) कोई लवधाका अपभ्रंश मानते हैं, एक जगह उसीमें लिखा है यह लोहि राजाके वंशधर होनेसे लोहिया थे, पीछे लोधा कहाये, फिर दूसरी जगह तारीख वुलन्द शहर पृ० ३६१में लिखा है लोधोंकी पैदायश इस देशके असली वाशिन्दों और आर्योंके मेल मिलापसे हुई होगी, क्योंकि पुराणोंमें एक जंगली कौमका नाम कहीं वोदा कहीं सोदा कहीं लोदा और कहीं रोदा लिखा है, और दिल्लीसे पूर्वपश्चिम दोनों ओर यमुना किनारे वहुत वडा जंगल था,पसकरीने कयास है कि इलके लोधे उसी जंगलीकौमकी औलाद होंगे। इनका गोत्र माहुर है। वंशावलीकार कहते हैं सौदा कौम टाडसाहवके मतसे सैगदी है और सौदा पमार वंशकी शाखा है (जि० १अ०४पृ०९४) सौदा राजपूत लोद्रवामें रहते हैं। (जि० २ । पृ० २६९) घोरावलसे दक्षिणकी ओर लोद्र राजपूत रहते हैं, उनकी राजधानी लोद्रवा है (जि० २ । पृ० २७८) मर्दुमशुमारी सन् १९०१ पुस्तक मिस्टर वर्नकी लिखी हुई (जिल्द १६ भाग १ फिकरा १७२) लोधा कसीर तादाद मजदूरों और अदना काश्तकारोंकी कौम है जिसका वहुत कुछ मेल दो और कौमों (किसान और खागी) से है, जो इन जगहोंमें मिलते है जहां लोधे कम हैं, उनके खेली फिरकोंके नामोंकी समानता और उनके रहनेकी जगहोंसे यह मेल साफ तौर पर जाना जात है, इस देशके और भागोंमें लोधोंसे वुंदेल खण्डके लोधोंकी प्रतिष्ठा वहुत वडी है, और वे राजपूतोंका एक फिरका लोधी भी है, जो मध्यहिन्दके लोधी राजपूतोंसे सम्बद्ध होना वताते हैं।

आगे वंशावलीमें लिखा है कि मथुरियां लोधे प्रायः दूसरे लोधोंसे उत्तम होते हैं, संभव है कि यह लोग मथुरासे जो चन्द्रवंशकी राजधानी है आकर वसे हों, इनका कश्यपगोत्र चन्द्रवंश शाखा मरद्दुनी (माध्यन्दिनी)आसान अत्रे स्याम (साम) वेद रसम क्षत्रिय मथुरापुरी निकास वंशोद्भव लोधोंकी उत्पत्ति न लोगोंमें विधवाविवाह या नियोगकी रीति प्रचलित है जो वेदोक्त आपद्धर्म है।

वस इतनाही इस वंशावलीका सार है जव हम लुब्धक शब्द तथा राजा लक्ष्मणसिंह और मनुष्य गणनाकी रिपोर्टपर विचार करते हैं तव लोधाजाति कृषिकर्म और दो जातिके मेलसे वनी हुई प्रतीत होतीहै, और इस जातिमें धरेजा वा करात्र है तो यह कभी भी क्षत्रिय वर्ण प्रतीत नहीं हो सकती है, वंशावलीके निर्माता समाजी ख्यालके हैं उनको यह लिखना चाहिये था कि आपद्धर्म सदाही विद्यमान रहता है या कभी मिट भी जाताहै, आपके ध्यानमें कृषिकर्म करते हुए भी जाति क्षत्रिय वनजाय और उसकी निकृष्टता आपद कहकर दूरकर दी जाय, परन्तु धरेजा कारवकी आपत्ति अंगरेजोंके सुराज्यमें ज्योंकी त्यों वनी रहै, यह क्या उत्कर्ष है, जव कोई अपभ्रंश शब्द होता है तो उसमें प्रायः अक्षर घटा करते हैं वढा नहीं करते, पर आप लिखते हो लोहि राजासे लोहवा हुआ फिर लोध हुआ यह कैसे संभव हो सकता है हां टाडसाहवके मतसे जो आप लोद्र राजपूत कहते हैं हमको इस वातसे कुछ इनकार नहीं पर यह सवूत क्या है कि मर्दुमशुमारीके पुस्तकवाले और राजा लक्ष्मण सिंहजीकी पुस्तकवाले जंगली कौमके लोधे एक ही हैं उनके और इनके वीचमें वहुत अन्तर है, इस जातिमें कहीं कहीं कुर्मी भी सम्मिलित हैं। दूसरे लोग ठाकुर साहव भी कहे जाते हैं, पर वे लोग क्षत्रियोंमें सम्मेलन नहीं करते, उन राजपूतोंके जो लोदवंशी हैं हाथका जल पिया जाता है पर इनका नहीं, अव यह सिद्ध हुआ कि लोधा जातिके दो भेद हैं एक पंवारकी शाखा दूसरे आर्य अनार्यके मेलवाले, इनमें जिसका खान पान उन टाडसाहवके लिखित लोध्र जातिके पुरुषोंसे हो वे

उस वंशके, और जो संस्कारहीन कृषिकर्मा तथा मँजूर और धरेजा करनेवाली जाति है तथा जिनका व्यवहार इसरूपका है वोह दूसरी प्रकारकी संकरताकी जाति हो सकती है।

लोहथम।

यह भी एक जाति है जो अपनेको क्षत्रिय वर्णमें मानती है यह कहते हैं बृहद्गल राजाको कृष्णदेवने लोहथमकी उपाधि दी थी।

पहरी।

यह एक चौहान वंशी क्षत्रिय जातिका भेद है, इनका निकास जैपुरके राज्य खंडेलासे हैं, जो आर पी सी रेलके माधोपुर स्टेशनसे पांच कोस दूर है, यह पहले राजाओंके शरीररक्षक थे, इससे इनको पहरीकी पदवी दीगई थी कहा जाता है यह जाति भी परशुरामके भयसे पश्चिमोत्तर प्रान्ततक आगई थी अब भी देहरादून आदि प्रान्तमें पाई जाती है, इनके विषयमें कहाजाता है कि--

क्षत्रियमूलकपोत भये भृगुनाथक छोपिलिये व हरी॥
जेहि देशदुरे तहां वाहिमगे नृपनारि अधीर नहीं ठहरी॥
गृहकाज तजे अरु जाती तजी जित जाय वसें बुधिकर गहरी॥
तेहि नामसे वंश विख्यात भये और आस प्रसिद्ध भयो पहरी॥
दोहा-पहारावंश चौहाणका, उत्पति खंडेला ग्राम।
कुलदेवी चक्रेश्वरी, जपै जो भगवत नाम॥

इनका गोत्र पहाड्या खांप चौहान निकास खंडेला देवी चक्रेश्वरी माता है।

तगाजाति।

जिला विजनौर जिला मुरादाबादमें एक तगाजाति पाई जातीहै. इन लोगोंके आचार विचार ठाकुर राजपूत जातिसे मिलते जुलते हैं, हमने देखा है कि दसहरे पर इस जातिमें शस्त्र पूजन होता है छुरी या तलवार रक्खी जाती है, परन्तु अभी तक विशेष विवरण प्राप्त नहीं हुआ है, इससमय इस जातिके लोग अपनेको ब्राह्मणभी मानने लगे हैं कोई अपनेको त्यागी ब्राह्मण कहतेहैं, इसके दो अर्थ होते हैं त्यागेहुए वा दान न लेनेवाले जो कुछ भी हों विशेष विवरण वंश मिलनेपर किया जायगा.

मिश्रखण्डश्चतुर्थः।

इस खण्डमें बहुतसी जातियोंका समावेश है, इसमें लिखी समस्त जातियें अपनेको यह न समझें कि हम चतुर्थ कक्षामें हैं किन्तु इसमें चतुर्थ वर्णके सिवाय अन्य वर्णकी जातियोंका भी उल्लेख है, इसीकारण इस खण्डका नाम हमने मिश्रखण्ड रखदिया है। इसमें शूद्र, शतशूद्र, संकरजाति, खेतिहर, किसान, हलवाई, क्षत्रिय, वैश्य, नुवजाति, स्मार्तसंकर, जातिविवेक लिखित संकर तथा ब्रह्मवैवर्त लिखित संकर, वंगीय वा अन्यदेशीय क्षत्रियादि अनेक जातियोंका वर्णन किया गया है तथा देवताओंके वर्णविवेक वर्णसंकरोंके भेद उनकी अंशकल्पना जातियोंके संस्कार भारतके मुख्य मत वा पंथ चौंसठ कला वर्णोंके विवाहादिमें वाहन आदि अनेक विषयोंका वर्णन किया गया है, इसके अनेक विषय बहुतही उपयोगी है।

प्रत्येक पुरुषको अपने मूलपुरुष वा जातिज्ञातिकी बहुत बडी आवश्यकता है, यदि नीच रुधिरसे उच्च रुधिरका सम्पर्क किया जाय तो रुधिर मध्यकी अवस्थावाला हो जाता है, इसी बातको जानकर प्रत्येक

मनुष्यको संकरतासे भय मानना चाहिये, एकही जातिके शफरीके पेड हैं परन्तु बीजकी उत्कृष्टता अप्कृष्टतासे उनके फलोंमें कितना तारतम्य हो जाताहै, अशुद्धके साथ संसर्ग निश्चय अशुद्धिका कारण उत्पन्न करैगा, और मनोमालिन्यका हेतु होगा, इसकारण प्रत्येक मनुष्यको शुद्ध संसर्ग और आत्मोन्नतिके कार्यमें दत्तचित्त रहना चाहिये, कैसे उत्कृष्ट अपकृष्ट होजाता है, किसप्रकार शुद्धजाति निकृष्ट बनकर संकर वंशको प्रगट करती है, इस बातको जानकर मनुष्य अपनेही वर्णमें शुद्धतासे बनारहै, इसी बातके बतानेको चतुर्थ खण्डका आरंभ है, पाठकगण देखैंगे कि किसप्रकारसे एकजातिके द्वारा दूसरी जातिके स्त्री वा पुरुषके संसर्गसे सांकर्य होता है, इन सब बातोंको विचार कर दोषोंसे बचैं यही हमारा प्रधान उद्देश्य है, जातिविवेकका बहुतसा अंश वर्णसंकर जातिविवेकाध्यायमें प्रकाशित भी होचुका है ।

चतुर्थखंडो वा मिश्रखण्डः ।

अब प्रथम क्रम प्राप्त शूद्र जातिका वर्णन किया जाता है शुद्ध शूद्रजाति प्रायः दुर्लभसी हो रही है, संस्कार हीन सेवकाई कर्मा शूद्र जाति है, परन्तु अब इनमें अनुलोम, प्रतिलोम और मिश्रित तीन भाग पाये जाते हैं, तीनों वर्णों द्वारा अपनेसे निकृष्ट वर्णकी स्त्रीमें जो सन्तान उत्पन्न होती है वह अनुलोम कहाती है, और उच्च वर्णकी स्त्रीमें नीच वर्णके पुरुषसे जो सन्तान होती है वह प्रतिलोम कहाती है और अनुलोम प्रतिलोम मिलकर जो सन्तान हुई वह मिश्रित कहाई, इनमें अनुलोम उत्तम, प्रतिलोम मध्यम और मिश्रित अधम हैं, इनमें—

द्विजानां षोडशैव स्युः शूद्राणां द्वादशैव हि ।
पंचैव मिश्रजातीनां संस्काराः कुलधर्मतः ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंके सोलह, शूद्रोंके बारह और मिश्र जातियोंके पांच संस्कार होने चाहिये । गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चौल, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, केशान्त समावर्तन, विवाह, आवसथ्याधान, गार्हपत्याहवनीय, दक्षिण अग्निस्थापन यह सोलह संस्कार व्यासस्मृतिमें लिखे हैं, इनमें द्विजाति स्त्रियोंके कर्णवेध पर्यन्त नौ संस्कार विना मंत्रके होते हैं, पर व्यासजी अपनी स्मृतिमें (शूद्रस्यामन्त्रतो दश) शूद्रके दशही संस्कार हैं ऐसा कहते कर्णवेधपर्यन्त नौ और दशवां संस्कार विवाह यह विना ही मंत्रके होते हैं, मिश्र जातियोंके नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, कर्णछेदन और विवाह यह पांचही संस्कार है अब संकरोंके लक्षण कहते हैं—

संकरस्त्रिविधः प्रोक्तः पुरातनमहर्षिभिः । तत्रादौ प्रथमः प्रोक्तो वर्णसंकरसंज्ञकः ॥ १ ॥ रथकारादिसंप्रोक्तो वर्णसंकीर्णसंकरः । वर्णसंकीर्णसंकीर्णसंकरस्त्रितयः स्मृतः ॥ २ ॥

महर्षियोंने तीन प्रकारके वर्णसंकर कहे हैं उत्तम अधम वर्णका अपत्य वर्णसंकर होता है यथा मूर्धावसिक्तादि, और संकरोंसे उत्पन्न संकीर्णसंकर जैसे माहिष्य और करणीमें रथकारादि, और वर्णसंकीर्णसंकरकी सन्तान वर्णसंकीर्णसंकर होती है ॥ २ ॥

स्मृत्यन्तरे—

प्रातिलोम्यानुलोम्येन वर्णैस्तज्जैः सवर्णतः ।
सृष्टैवान्ये प्रजायन्ते तत्प्रसूतैस्त्वनन्तकैः ॥

जातिविवेके—

षष्टिंगतास्तु तत्संख्यैः षट्त्रिंशच्छतसंख्यया। भेदाः संकरजातीनां वहवः स्युस्तथापरे॥ ४॥ तेषां भेदानुभेदाश्च प्रभवन्ति कलौ युगे। असंख्यातास्तु जायन्ते तान्वक्तुं कः प्रगल्भते॥ ५॥ आनुलोम्येन वर्णानां षड् भवन्ति नराः क्रमात्। प्रातिलोम्येन षट् ते स्युरिति द्वादश भेदतः॥ ६॥ एतैर्द्वादश मिश्राः स्युश्चतुर्वर्णैर्विमिश्रिताः। ते स्युरष्टाध्यधो भेदा षष्टिर्द्वादशसंयुताः। यैः षष्टिसम्मता भेदास्ते प्रज्ञासंज्ञकाः स्मृताः॥ ७॥

मनु०—एते षट् सदृशान् वर्णान् जनयन्ति स्वयोनिषु।
मातृजात्यान्प्रसूयन्ते प्रवरासु च योनिषु॥ ८॥ (अ० १०। २७)

भापार्थः—स्मृत्यन्तरमें लिखा है प्रतिलोम और अनुलोम वर्णोंसे उत्पन्न हुए वारह प्रकारके पुत्र और फिर उनके सम्बन्धसे उत्पन्न पुत्र साठ प्रकारके होते हैं, ये सब वर्णाभासक होते हैं, और फिर इनकी सन्तान अनन्त होती हैं॥ ३॥ फिर वे साठ भेदोंको प्राप्त हो १३६ होती हैं, तथा और भी वहुतसे भेद हो जाते है॥ ४॥ कलियुगमें उनके वहुतसे भेद और अनुभेद हो गये हैं, और यह इतने असंख्य हैं कि उनको कौन कहसकता है॥ ५॥ वर्णोंके अनुलोमसे छः प्रकारकी सन्तान होती हैं, वह मूर्द्धावसिक्त आदि हैं, और छः प्रकारकी सन्तान प्रतिलोमसे होती हैं, वह सूत आदि हैं, इस प्रकारसे वारह भेद हुए॥ ६॥ यह वारह जव चार वर्णोंसे संयुक्त होते हैं, तब ४८ प्रकारके भेदवाले होते हैं, उनमें वारह भेद और मिलकर साठ प्रकारके हो जाते हैं, अर्थात् वारह मूर्धावसिक्त, अनुलोम-द्वारा, क्षत्रिया और वैश्यामें उत्पन्न तीन प्रति लोमसे ब्राह्मणीमें एक सब चार हुए, अम्बष्ठके अनुलोमसे दो, प्रतिलोमसे दो ८ हुए, निपादके अनुलोमसे १ प्रतिलोमसे तीन सब वारह हुए, माहिष्यके अनु-लोमसे २ प्रतिलोमसे दो सब सोलह हुए, उग्रके अनुलोमसे १ प्रतिलोमसे ३ सब वीस हुए, करणके अनुलोमसे १ प्रतिलोमसे ३ सब चौवीस हुए, इस प्रकार पहले षट्कसे २४ दूसरे सूतादि छसे चारों वर्णोंकी स्त्रियोंमें उत्पन्न होनेसे इसी क्रमसे चौवीस, इस प्रकारसे ४८ वारह दोनों षट्क वाले इसप्रकार सब साठ हुए, इन साठों संख्यावालों द्वारा आभासोंमें उत्पन्न पुत्र प्राज्ञासंज्ञक कहाते हैं॥ ७॥ मनुजी कहते हैं, यह पूर्वोक्त छः सूतआदि अपनी २ योनियोंमें और अपनेसे उत्तम योनियोंमें अपनी समान पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं, और उन पुत्रोंकी वही जाति होती है और उनकी माताकी होती है इनकी सन्तान पिताकी जातिसे नीची होती है, यथा शूद्रासे वैश्यमें अयोगव होता है, और आयोगवी माताकी वैश्य जातिमें और उत्तम क्षत्रिया तथा ब्राह्मणीमें यह पूर्वोक्त छहों उत्पन्न होते हैं, और शूद्र जातिमें भीअपने सदृश उत्पन्न होते हैं, अर्थात्—इनसे जो सन्तान होती हैं वह अपनी माताकी सदृश होती हैं, पिताकी सदृश नहीं, किन्तु माताकी जातिमें पितासे अधिक निन्दित पुत्रकी उत्पत्ति आगे मनुजीने कही है, इससे यह भी माताकी समान पितासे हीन पुत्रोंको उत्पन्न करते है, नीच वर्णसे उत्तम वर्णकी स्त्रीमें प्रतिलोम विधिसे उत्पन्न हुए आयोगव आदि दुष्ट कर्मवाले होते हैं, और दुष्ट कर्मवाले मातापिताओंसे उत्पन्न हुआ

आयोगव इसप्रकार अधिक दुष्ट होता है, जैसे ब्रह्महत्यारा, अशुद्ध मातापितासे उत्पन्न हुआ ब्रह्महत्यारा पुत्र, और शुद्ध ब्राह्मण जातिकी स्त्रीमें उत्पन्न हुआ पुत्र, चाहै दुष्टकर्मा मातापितासे उत्पन्न हो तो भी मातापितासे अधिक दुष्ट नहीं हो सकता, कारण कि उसके मातापिताकी उसमें शुद्धजाति बनी रहती है, और सत्संगसे वह सुधर सकता है ॥ ८ ॥

प्रतिकूलं वर्त्तमाना बाह्या बाह्यतरान्पुनः ।
हीना हीनान्प्रसूयन्ते वर्णान्पंच दशैव तु ॥ ९ ॥

(मनु० १० । ३१)

इसपर मेधातिथि और गोविन्दराजने यह व्याख्यान किया है, कि चारों वर्णोंसे बाह्य अर्थात् शूद्रसे उत्पन्न हुए चाण्डाल क्षत्ता और आयोगव यह तीनों प्रतिलोम विधिसे चारों वर्णोंकी स्त्रियोंमें गमन करते हुए अपनेसे अत्यन्त नीच पन्द्रह जातिके वर्णोंको उत्पन्न करते हैं जिनकी परस्पर उत्तमता और नीचता होती है, अर्थात्-चाण्डाल शूद्रामें अपनेसे हीन, और चाण्डालसे वैश्या और क्षत्रिया और ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुए पुत्रोंसे उत्तम पुत्रको उत्पन्न करता है इसी प्रकार वही चाण्डाल वैश्यामें जिस पुत्रको उत्पन्न करता है वह शूद्रामें उत्पन्न हुएसे नीच, और क्षत्रिया ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुए पुत्रोंसे उत्तम होता है, और वही चाण्डाल क्षत्रियामें जिस पुत्रको उत्पन्न करता है, वह वैश्यामें उत्पन्न हुए पुत्रसे नीच और ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुए पुत्रसे उत्तम होता है और वही चाण्डाल ब्राह्मणोंमें जिस पुत्रको उत्पन्न करता है वह क्षत्रियामें उत्पन्न हुए पुत्रसे नीच होता है, इसप्रकार चाण्डालसे चारों वर्णोंकी स्त्रियोंमें यह चार अत्यन्त नीच पुत्र होते हैं, इसी प्रकार चार क्षत्ता और चार आयोगवसे होते हैं और वे चाण्डाल, क्षत्ता और अयोगव शूद्रसे भिन्न जातिके होते हैं अर्थात्-शूद्र नहीं होते, इससे इन चारों वर्णोंकी स्त्रियोंमें बारह प्रकारके पुत्र हुए और तीन इनके पिता चाण्डाल क्षत्ता और आयोगव यह शूद्रसे पंद्रह जाति उत्पन्न होती हैं, तथा जो निकृष्ट जाति वैश्य क्षत्रिय और ब्राह्मणसे उत्पन्न हुई हैं, उनमें भी एक एकके पन्द्रह पन्द्रह भेद होते हैं, इससे सब मिलकर साठ जाति होती हैं, इनमें चारो वर्णोंको मिलानेसे ६४ जाति होती हैं और यह परस्पर स्त्रियोंके समागमसे अनेक प्रकारके वर्णोंको उत्पन्न करतेहैं, इस मेधातिथि और गोविन्दराजके अर्थको कुल्लूकभट्ट आदि समीचीन नहीं मानते, वे कहते हैं कि पहले सूतआदि प्रतिलोमसे उत्पन्न हुए छःका वर्णन है उसकेही विस्तारके निमित्त यह श्लोक है, और इसमें यह कहाहै कि प्रतिलोमसे वर्ततेहुए बाह्योंसे अत्यन्त हीन होते हैं, इससे यहां प्रतिलोमसे उत्पन्न हुओंमें ही तात्पर्य है, अनुलोमसे उत्पन्न हुओंके विषयमें नहीं है, इससे वैश्य क्षत्रिय और ब्राह्मण इनसे उत्पन्न हुए पन्द्रह २ होते हैं, साठका कहना ठीक नहीं, सम्भव मात्रसे भी साठ नहीं कारण कि दुष्ट तो वह १५ ही होते हैं, जो शूद्रके पुत्र आयोगव क्षत्ता और चाण्डाल यह तीन और जो इन तीनोंसे उत्पन्न बारह हैं फिर यह कहना भी तो ठीक नहीं, कारण कि शूद्र द्वारा प्रतिलोम विधिसे उत्पन्न हुए निकृष्ट इन तीनोंकी सन्तान जैसे निकृष्ट कही हैं, इसी प्रकार प्रतिलोम विधिसे उत्पन्न हुएभी तीन हीन होते हैं, और उन चारो वर्णोंकी स्त्रियोंमें उत्पन्न हुए अत्यन्त हीन कहने युक्त थे, और मनुजीने इसी अध्यायके ३० वें श्लोक (यथैव-शूद्रो०) में कहाहै, कि नीच वर्ण चारों वर्णोंकी स्त्रियोंमें अत्यन्त नीच वर्णको उत्पन्न करता है, उस श्लोकका अर्थ मेधातिथिने भी यही कियाहै, और चौसठ संख्यामें चार वर्णोंकी गणना भी अनुचित है कारण कि यह संकीर्ण प्रकरण है, इसमें शुद्ध वर्णोंकी गणना नहीं चाहिये, और यह भी युक्ति सम्मत

नहीं है कि प्रथम आयोगव क्षत्ता और चाण्डाल यह तीनों पन्द्रह प्रकारके वर्णोंको उत्पन्न करते हैं, यह प्रतिज्ञा करके भी उनके बारह पुत्र गिनाये, फिर उन तीनों आयोगव क्षत्ता और चाण्डालको मिलाकर पन्द्रहकी संख्या पूरी की, और जो अपने सहित पन्द्रह वर्णोंकी लेते हैं यह भी संगत नहीं है, कारण कि जबतक बारह पुत्र न हों तबतक यह पन्द्रह प्रकारके नहीं होसकते, और इनमें अपने सहित इसबातको ऊपरसे मिलाना पड़ैगा यह भी एक दोष होगा इसकारण उक्त टीकाकारोंका अर्थ असंगत प्रतीत होताहै तब इसका अर्थ यह होताहै कि प्रतिलोमसे वर्ततेहुए प्रतिलोमज बाह्य अर्थात् द्विजोंसे उत्पन्न हुए प्रतिलोमजोंसे निकृष्ट और शूद्रसे उत्पन्न हुए आयोगव क्षत्ता और चाण्डाल यह तीनों चतुर्वर्णकी स्वजातिकी स्त्रियोंमें अत्यन्त निकृष्ट पन्द्रह प्रकारके पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं, अर्थात्–जैसे निकृष्ट पुत्र इनसे चारों वर्णोंकी स्त्रियोंमें होता है, वैसाही अपनी जातिमें होता है, कारण कि इसी १० अध्यायके (एते षट् २७) इस श्लोकमें सजातीय स्त्रीमें उत्पन्न हुआ भी पुत्र पितासे निकृष्ट होता है, जैसे आयोगवसे चारों वर्णोंकी और आयोगवी–इन पांचों स्त्रियोंमें अपनेसे निकृष्ट पांच पुत्र उत्पन्न होते हैं, इसीप्रकार क्षत्ता और चाण्डाल इन दोनोंसे भी पांचो स्त्रियोंमें पांच २ पुत्र उत्पन्न होते हैं, इस प्रकार यह तीन बाह्य (नीच) अत्यन्त नीचे पन्द्रह पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं, इसीप्रकार अनुलोमजोंसे हीन वैश्य क्षत्रियसे उत्पन्न हुए मागध, वैदेह, सूत यह तीनों भी चारों वर्णोंकी और अपनी सजातीय स्त्रियोंमें अपनेसे नीच पन्द्रह पुत्र उत्पन्न करते हैं, इससे यह सब मिलकर अत्यन्त नीच तीस जाति होती हैं, अथवा इस श्लोकका तात्पर्य यह है कि बाह्य और हीन शब्दसे प्रतिलोमसे उत्पन्न हुए ग्रहण करने, अर्थात्–चाण्डाल, क्षत्ता, आयोगव, वैदेह, मागध, सूत यह छहों, बाह्य प्रतिलोम विधिसे स्त्रियोंमें वर्तते हुए अत्यंत नीच पन्द्रह पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं, जैसे चाण्डाल क्षत्ता आदि पांच स्त्रियोंमें और क्षत्ता आयोगव आदि चार स्त्रियोंमें और आयोगव वैदेही आदि तीन स्त्रियोंमें तथा वैदेह मागधी और सूती स्त्रियोंमें और सूत सूतीमें, इसप्रकार पन्द्रह पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं और इस श्लोकमें पुनः पदसे यह आशय निकलता है कि उलटी गणनासे सूतादि चाण्डालपर्यन्त जो नीच हैं वे अनुलोम विधिसे भी अर्थात्–सूतसे मागध, वैदेह, आयोगव, क्षत्ता, चाण्डाल इनकी कन्याओंमें पांच और मागधसे वैदेह, आयोगवसे क्षत्ता, चाण्डालकी कन्याओंमें चार, और वैदेहसे आयोगव क्षत्ताकी कन्याओंमें तीन और आयोगवसे क्षत्ता चाण्डालकी कन्यामें दो, और क्षत्तासे चाण्डालकी कन्यामें एक, इन पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं, इसप्रकारसे यह सब मिलकर तीस प्रकारके नीच होते हैं ॥ ९ ॥

याज्ञवल्क्यजी कहते हैं।

सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः ।
अनिन्द्येषु विवाहेषु पुत्राः सन्तानवर्द्धनाः ॥

(याज्ञ० जाति० श्लो० ९०)

सवर्णा स्त्रीमें सवर्णासे समान जाति उत्पन्न होती है, प्रशस्त विवाहोंसे उत्पन्न हुए पुत्र सन्तानोंके बढानेवाले होते हैं, इस वचनसे विवाहिता स्त्रियोंमेंही पूर्वोक्तविधि मानी है, और आगे (विवाहस्वेव विधिः स्मृतः) उक्त वचनसे विवाहपद सम्बन्धि शब्द है इससे अपने दूसरे शब्दकी अपेक्षा करनेसे सवर्ण पतिके संग जिसका विवाह हुआ हो उससे सवर्णा स्त्रीकोही जनावैगा, इससे इस श्लोकमें एक सवर्ण पद स्पष्टार्थ है, इससे यह अर्थ सिद्ध हुआ कि उक्त विधिसे विवाही हुई सवर्णामें सवर्ण विवाहनेवाले वरसे जो

उत्पन्न हों वे समान जातीय होते हैं; इससे कुंड, गोलक, कानीन, सहोढज, आदि सवर्ण नहीं हो सकते और सवर्ण अनुलोमज प्रतिलोमजोंसे भिन्न उनका अहिंसा आदि साधारण धर्ममें अधिकार है, कारण कि इसवचनसे यह कहा है जो कि अपध्वंस अर्थात् व्यभिचारसे उत्पन्न हुए हैं, वे सब शूद्रोंके समान धर्मवाले कहे गये हैं, अर्थात्-वे द्विजोंकी सेवा आदि ही करें, कदाचित् कोई शंका करे कुंड और गोलकोंको ब्राह्मण न मानोगे तो श्राद्धमें उनका निषेध क्यों किया, कारण कि प्राप्ति होनेपर निषेध होता है, और इस न्यायका विरोध होता है, कि जो जिस जातिके मनुष्यसे जिस जातिकी स्त्रीमें उत्पन्न होता है, वह इसप्रकार उसही जातिवाला होता है, जैसे वृषसे गौमें उत्पन्न हुई गौ, और अश्वसे घोडीमें उत्पन्न हुआ घोडाही होता है, तिससे ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुआ ब्राह्मण यह विरुद्ध नहीं, और कानीन पौनर्भव आदि पुत्रोंके प्रकरणमें जो यह वचन कहा है, कि यह विधि सजातीय पुत्रोंके विषयमें कही है, उस वचनका भी विरोध नहीं है, यह शंका उनकी ठीक नहीं, श्राद्धमें निषेध इस भ्रमकी निवृत्तिके लिये है कि ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुआ ब्राह्मणही होताहै, जैसे अत्यन्त अप्राप्त पतितका भी श्राद्धमें निषेध है और न्यायका विरोध नहीं है, कारण कि वहांही न्याय विरोध होता है जहां जाति प्रत्यक्ष जानी जाती है, ब्राह्मण आदि जाति तो स्मृतियोंसे जानी जाती हैं, जैसे ब्राह्मणत्वके समान होने पर भी कुंडिनका वशिष्ठ और अत्रिका गौतम गोत्र इसस्मृतिसे होता है तैसे मनुष्यके समान होने पर भी ब्राह्मण आदि जाति स्मृतिसे ही जानी जाती हैं, और माता पिताकी भी जातिका लक्षण यही है, कदाचित् कहो कि अनवस्था होगी, सो नहीं संसारके अनादि होनेसे शब्द और अर्थका व्यवहार है, सजातीय पुत्रोंकी यह विधि मैंने कही, इस उक्त वचनका व्याख्यान भी उक्तके अनुवाद रूपसे करेंगे, क्षेत्रज पुत्र तो नियुक्त विधिको शास्त्रोक्त युगान्तरमें होनेसे और शिष्टाचारसे माताका सजातीय ही होता है, जैसे धृतराष्ट्र पाण्डु विदुर क्षेत्रज माताके सजातीय हुए, और शुद्ध विवाहोंमें सन्तान बढाने वाले रोगहीन दीर्घ आयुवाले धर्मप्रजासे संयुक्त पुत्र होते हैं।

अब अनुलोमको दिखाते हैं—

विप्रान्मूर्द्धावसिक्तो हि क्षत्रियायां विशः स्त्रियाम्।
अम्बष्ठः शूद्र्यां निषादो जातः पराशवोऽपि वा ॥ १० ॥

(या० ९२)

अर्थात्-ब्राह्मणसे विवाही हुई क्षत्रिया स्त्रीमें जो पुत्र होता है, वह मूर्धावसिक्त होता है, और विवाही हुई वैश्यामें जो पुत्र होता है, वह अम्बष्ठ होता है, और विवाही हुई शूद्रामें निषाद पुत्र होता है, यह मत्स्योंके मारनेवाला निषाद नहीं है, जो प्रतिलोम से उत्पन्न है किंतु यह निषाद वह है जिसको पारशव कहते हैं, और जो शंखऋषिने कहा है कि (ब्राह्मणेन क्षत्रियायामुत्पादितः क्षत्रिय एव भवतीत्यादि) अर्थात्-ब्राह्मणद्वारा क्षत्रियामें उत्पन्न क्षत्रियही होता है, और क्षत्रियसे वैश्यामें उत्पन्न हुआ वैश्य और वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न हुआ शूद्र ही होता है यह उनका वचन इसकारण है कि उनको क्षत्रियके करने योग्य कर्म करने कुछ इस लिये नहीं हैं कि मूर्द्धावसिक्त आदि जाति ही नहीं होती, इससे इन मूर्द्धावसिक्त आदिकोंको यज्ञोपवीत उन्हीं दण्ड धर्म यज्ञोपवीत आदिसे होता है, जो क्षत्रिय आदिकोंको कहे हैं, और इनको भी क्षत्रिय आदिकोंके समान यज्ञोपवीतसे पहले यथेच्छ आचरण करना कुछ विशेष शुद्धिकी अपेक्षा नहीं है ॥ १० ॥

वैश्याशूद्र्योस्तु राजन्यान्माहिष्योग्रौ सुतौ स्मृतौ ।
वैश्यात्तु करणः शूद्र्यां विन्नास्वेष विधिःस्मृतः ॥ ११ ॥

(याज्ञ० ९२)

विवाहित हुई वैश्य और शूद्रकी कन्यामें क्षत्रियसे माहिष्य और उग्र नामक दो पुत्र होते हैं और वैश्यसे विवाही हुई शूद्रामें करण होता है, यह सम्पूर्ण मूर्द्धावसिक्त आदि कन्याओंका विधान विवाही हुई स्त्रियोंमें ही जानना, और मूर्द्धावसिक्त, अम्बष्ठ, माहिष्य, निषाद, उग्र, करण यह छः पुत्र अनुलोमज जानने अर्थात्—उच्च वर्णसे नीच वर्णकी कन्यामें उत्पन्न होते हैं।

अथ प्रतिलोममाह ।

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतो वैश्याद्वैदेहिकस्तथा ।
शूद्राज्जातस्तु चाण्डालः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ १२ ॥

(याज्ञ० ९३)

क्षत्रिया मागधं वैश्याच्छूद्रात्क्षत्तारमेव च ।
शूद्रादायोगवं वैश्या जनयामास वै सुतम् ॥ १३ ॥

(यज्ञ० ९३)

क्षत्रियसे ब्राह्मणीमें जो उत्पन्न हो वह सूत, और वैश्यसे जो उत्पन्न हो वह वैदेहिक, और शूद्रसे ब्राह्मणीमें जो उत्पन्न हो वह सब धर्मोंसे रहित चाण्डाल होता है, इसको किसी धर्मका अधिकार नहीं है ॥ ॥ १२ ॥ क्षत्रियकी कन्या वैश्यसे मागध नाम पुत्रको उत्पन्न करती है, वही कन्या शूद्रसे क्षत्ताको और वैश्यकी कन्या शूद्रसे आयोगव नाम पुत्रको उत्पन्न करती है, यह छः सूत, वैदेहिक, चाण्डाल, मागध, क्षत्ता, और आयोगव प्रतिलोमज पुत्र कहाते हैं, मनु और शुक्रनीतिमें इनकी आजीविका लिखी है सो आगे कहेंगे अब संकीर्णसंकर जातिका उदाहरण कहते हैं ॥ १३ ॥

माहिष्येण करण्यान्तु रथकारः प्रजायते ॥ असत्संतस्तु विज्ञेयाः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ ११ ॥

(य० ९५)

माहिष्य जो क्षत्रियसे वैश्यकी कन्यामें उत्पन्न हो उससे करणी(जो कन्या वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न हुई हो) में जो पुत्र उत्पन्न होताहै वह रथकार कहाता है, उस रथकारके शंखऋषि जो यज्ञोपवीतादि मानते हैं और वैश्यकी अनुलोम सन्तानसे उत्पन्न हुआ जो रथकार है,उसके यज्ञदान यज्ञोपवीतादि संस्कार होते हैं और घोडोंकी प्रतिष्ठा, रथसूतकी वृत्ति, सारथिपन, वास्तु विद्या, स्थान बनाना और पढना यह उसकी आजीविका हैं, इसीप्रकार ब्राह्मण और क्षत्रियासे उत्पन्न हुए मूर्धावसिक्त माहिष्यादि अनुलोम संकरमें भी भिन्न जातिकी और यज्ञोपवीतादिकी प्राप्ति जाननी, कारण कि यह दोनों द्विजातियोंसे उत्पन्न होनेसे द्विजाति कहाते हैं, और दूसरी स्मृतियोंमें इनकी संज्ञा जाननी यह संकीर्ण संकर जातियोंका वर्णन दिखाने मात्रही है, कारण कि संकर जातियें अनन्त हैं, इससे यहां इतना ही कहना उचित है कि, प्रतिलोमसे अनुलोम (जो उच्च वर्णके पुरुषसे नीच वर्णकी स्त्रीमें उत्पन्न हुए हैं) श्रेष्ठ हैं यहां रथकारपर थोडा विचार किया जाता है अमरकोशने इस जातिको शूद्र प्रकरणमें पढा है । यथा—

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः ॥
(अमर० २ | १० | ४)

तक्षा तु वर्द्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ॥
(अमर० २ | १० | ९)

माहिष्यसे करणीमें रथकार होता है, तक्षा वर्द्धकी त्वष्टा रथकार काष्ठतट् यह सब एकही नामवाले हैं, उशना स्मृतिमें लिखाहै-

ब्राह्मण्यां क्षत्रियाच्चौराद्रथकारः प्रजायते ॥
वृत्तं च शूद्रवत्तस्य द्विजत्वं प्रतिषिद्धयतें ॥ १५ ॥

अर्थात्-ब्राह्मणीमें चोरीसे क्षत्रियद्वारा जो पुरुष उत्पन्न होताहै वह रथकार है उसकी वृत्ति शूद्रके समान है उसमें द्विजत्व नहीं है, तब यह विचार उदय होताहै कि जिस रथकारके कुछ संस्कार माने जाते हैं वह याज्ञवल्क्यवाला और यह उशनावाला क्या एकही है, हमारी समझमें यह आताहै कि यह उशना-वाला रथकार कोई दूसरा है, कारण कि स्मृतिकार वेदके एककर्माधिकारी रथकारको न जानते हों यह संभव नहीं होसकता है, इसकारण उशना रथकार किसी अन्य प्रान्तका दूसरा हो सकता है उसमें द्विजत्व नहीं होसकता, याज्ञवल्क्यवाले रथकारके विचारमें पूर्वमीमांसा अ० ६ पाद १ में इसप्रकार लेख है-(चातु-र्वर्णातिरिक्तस्य रथकारस्याधानेऽधिकाराधिकरणं रथकारन्यायः)

सूत्र-वचनाद्रथकारस्याधानेऽस्य सर्वशेषत्वात् ॥ ४४ ॥

सि०-न्याय्यो वा कर्मसंयोगाच्छूद्रस्य प्रतिषिद्धत्वात् ॥ ४५ ॥

पू०-अकर्मत्वात्तु नैवं स्यात् ॥ ४६ ॥

उ०-आनर्थक्यं च संयोगात् ॥ ४७ ॥

पु०-गुणार्थेनेति चेत् ॥ ४८ ॥

आशंका-उक्तमनिमित्तत्वम् ॥ ४९ ॥

आ० निवारण-सौधन्वनास्तु हीनत्वान्मन्त्रवर्णात्प्रतीयेरन् ॥ ५० ॥

अर्थात्-चारों वर्णोंसे भिन्न रथकारको अग्निके स्थापन करनेमें अधिकार दिखानेका यह प्रकरण है विवाहके पीछे अग्निहोत्रके निमित्त द्विजोंमें अग्न्याधान होता है, और द्विजोंमें यज्ञोपवीत सिद्ध है, अग्न्या-धानके प्रमाणसे वसन्तमें ब्राह्मण, ग्रीष्ममें क्षत्रिय, शरदमें वैश्य और (वर्षासु रथकार आदधीत) वर्षा ऋतुमें रथकार अग्न्याधान करै, इस कथनसे रथकार तीनों वर्णोंसे पृथक् तो अवश्यही सिद्ध होता है ॥ ४४ ॥ जब शूद्रको वेदोक्त कर्मका अधिकार नहीं तब रथकारको शूद्र होनेसे अधिकार नहीं होना चाहिये इसकारण यह मानना उचित होगा कि उपरोक्त द्विजोंमें जो कोई रथबनानेके कर्मको करता हो उस यौगिक रथकारके निमित्त अग्न्याधानकी आज्ञा मान लीजाय ॥ ४५ ॥ इसपर उत्तरपक्ष यह है कि वेदादिशास्त्रों-में तीन वर्णोंमें रथादिका बनाना किसीका भी कर्म नहींहै किन्तु शिल्पद्वारा जीविकाका निषेध है इससे द्विजोंमें किसीको रथकार मान लेना ठीक नहीं ॥ ४६ ॥ पैंतालीसवें सूत्रमें कहा पूर्व पक्ष ठीक नहीं है उस पर युक्ति यह है कि जब ब्राह्मणादि वर्णोंके साथ वसन्तादिका संयोग नियत है तो उनके संग वर्षाका कथन असंगत होगा, इससे रथकारको तीनवर्णोंसे भिन्न ही मानना होगा ॥ ४७ ॥ यदि कोई शंका

करै कि तीन वर्णोंको शिल्पकर्मका निषेध रहो तथापि कोई द्विजोंमेंसे यह कर्म करनेही लगै तब इसी यौगिक गौणार्थसे उसको रथकार मानकर उसके लिये वर्षामें अग्निका स्थापन कहा हो ऐसा भी श्रुतिका अभिप्राय हो सकता है इस दशामें ब्राह्मणादिके निमित्त वसन्तादिका नियम होनेपर भी तक्रकौण्डिन्य न्याय के तुल्य रथकार ब्राह्मणादिके लिये वर्षाका आधान रहै और स्वकर्मोपजीवियोंके लिये वसन्तादि ऋतु रहैं यथा-(दधि ब्राह्मणेभ्यो दीयतां तक्रं कौण्डिन्याय, कौडिन्योऽपि ब्राह्मणस्तस्य तक्रदानं दधिदानस्य निवर्तकं भवति महाभा०) जैसे किसीने कहा ब्राह्मणोंको दही दो पर कौण्डिन्यको तक्र दो, यहां कौण्डिन्य भी ब्राह्मण है मट्ठा देनेसे दही देनेका निषेध नहीं होता तो क्या कौण्डिन्यको दही और मट्ठा दोनों दियेजांय, ऐसी शंका होनेपर सिद्धान्त किया गया कि यदि वक्ताकी इच्छा दोनो वस्तुओंके देनेकी होती तो ऐसा कहा जाता (तक्रं च कौण्डिन्याय) कि कौण्डिन्यको तक्र भी दो, पर वहां चकार न होने से सामान्यतासे कहे उत्सर्गरूप दधिदानका तक्रदान अपवाद रूपसे निवर्तक होगा, इससे कौण्डिन्यको केवल तक्रही दिया गया, इसीके अनुसार सामान्य ब्राह्मणादिकोंके लिये वसन्तादि ऋतुओंमें अग्निका स्थापन सामान्य उत्सर्गरूप मान लियाजाय तथा रथकार ब्राह्मणादिके लिये वहां वर्षा ऋतुमें अग्निस्थापन वसन्तादिका अपवादरूप निवर्तक समझ लियाजाय ॥ ४८ ॥ ऐसी शंकाका उत्तर यह है कि जब शिल्प कर्म ब्राह्मणादिका नहीं तब यदि आपत्कालमें कोई किसी कामको करले तो इतनेसे वह कर्म उसको पृथक् रथकार जाति बनानेको निमित्त नहीं होसकता, कारण कि कर्मोंको ऐसा निमित्तत्व मानने लगैं तो क्षत्रिय वैश्य जिस समय संध्या पूजा हवनादि करैं उससमय ब्राह्मण मानेजांय, ब्राह्मण जब बलका काम करैं तो क्षत्रिय मानेजांय, इसप्रकारसे तो फिर जातिका कोई क्रम न रहैगा,इससे ब्राह्मणादि रथकार नहीं होसकते, जिनके कुलोंमें परम्परासे जो काम चला आताहै उनकी वह जाति मानी जाती है जैसे लुहार कुंभार आदि इससे रथकारादि जाति ब्राह्मणादिसे भिन्न है, इसकारण तीनों वर्णसे कुछ नीचे और शूद्र वर्णसे ऊपर वेदमन्त्रमें कहे होनेसे सौधन्वना नामके पुरुष यहां रथकार पदवाच्य मानने चाहिये उन्हीको वर्षाऋतुमें आधानका अधिकार रहै. (सौधन्वना ऋभवः सूरचक्षसः)अष्ट० १।७।३।४।इस मन्त्रमें ऋभु नाम रथकारोंका है, इनके आधानके मन्त्र (ऋभूणाम् ऋ० ३ । ७ । ९) और (नेमिं नमन्ति ऋभवो यथा) पहियेकी पुट्टी वा हालका नाम नेमि है, उसके प्राप्त करनेवाले ऋभु नाम रथकार हैं मनुने अध्याय १० श्लो० २३ में लिखा है-

वैश्यात्तु जायते व्रात्यात्सुधन्वाचार्य एव च

(मनु० १० । २३)

संस्कारहीन वैश्यही सवर्णा स्त्रीमें सुधन्वाचार्य पुत्र होताहै, यह कापुरुष, विजन्मा, मैत्र और सात्वत कहातेहैं, संभव है कि इसके शब्दोंके अपभ्रंश शब्दोंका कुछ पता लगजाय न भी लगै तो भी रथकार वढई, खाती यह तीन वर्णोंमें किसीप्रकारसे नहीं ठहर सकते,और जब सहस्रों वर्षोंसे यज्ञोपवीत नहीं तो भी व्रात्यता सिद्धही है, परन्तु यदि यह उत्तम कर्मानुष्ठान कहैं तो द्विज धर्मा कहा सकते हैं, कारण कि मीमांसाने वर्षामें आधानका अधिकार दिया है (सदृशानेव तानाहुः)के अनुसार द्विजातिकी सदृश हो सकते हैं । रथकार, वढई, तक्षा आदि अनेक शब्द जब रथकारके पर्यायवाची हैं तब उनकी व्यवस्था इसी रथकार शब्दके साथ आजातीहै, परन्तु आगे चलकर एक तक्षा पद और भी आया है वहां पर भी थोडा विचार करैंगे । एक खाती जातिहै, गाडी और गाडीके पहिये बनाना इनका काम है, यह लोग तर्षा,

तखान और खाती नामसे अपनेको सम्बोधन करते हैं, और कहते हैं हम लोग मैथिल ब्राह्मणोंमें हैं। जहांतक हमारा विचार है और इनकी वंशावली हमने देखी है वहांतक उस ग्रन्थमें एक भी प्रमाण वेद-धर्मशास्त्रका उस ग्रंथमें नहीं दिया गया है कि खाती, तक्षा आदि शिल्पकर्मा ब्राह्मण जाति हैं इस लिये हम खाती जातिको उनके मनोऽनुकूल कहनेमें असमर्थ हैं, हां यदि वे कोई धर्मशास्त्रका प्रमाण देंगे तो अवश्य हम उसको ग्रन्थमें लिखेंगे केवल इतनी बातसे कि हमको मुसलमानोंका भय होगयाथा परशुरामका भय होगया था जातिसे ब्राह्मण हैं पुष्ट प्रमाण नहीं समझा जाता।

जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः पंचमे सप्तमेऽपि वा ।
व्यत्यये कर्मणां साम्यं पूर्ववच्चाधरोत्तरम् ॥ १६ ॥

(य० ९६)

मूर्द्धावसिक्तादि जातियोंका उत्कर्ष अर्थात् ब्राह्मणत्व आदि जातिकी प्राप्ति सातवें, पांचवें और छठे जन्ममें जाननी इस विकल्पकी व्यवस्था यह है, कि ब्राह्मणने शूद्रामें जो निषादी उत्पन्न की है यदि वह ब्राह्मणको विवाही जाय और उसके जो कन्या हो वह भी ब्राह्मणको विवाही जाय, तो इस प्रकारसे छठी कन्यासे जो पुत्र उत्पन्न होगा सातवीं पीढीमें वह ब्राह्मण होगा और ब्राह्मणसे वैश्यकी कन्यामें उत्पन्न हुई अम्बष्ठा ब्राह्मणको विवाही जाय और उसके उत्पन्न हुई कन्या फिर ब्राह्मणको विवाही जाय तो वह भी पांचवीं छठी पीढीमें ब्राह्मणको उत्पन्न करेगी, इसीप्रकार क्षत्रियसे विवाही उग्रा और महिष्या भी क्रमसे छठी और पांचवीं पीढीमें क्षत्रियको उत्पन्न करेगी, इसी प्रकार वैश्यसे विवाही करणी पांचवीं पीढीमें वैश्यको उत्पन्न करेगी, इसी प्रकार अन्यत्र भी जातिका उत्कर्ष जानना, और यदि इसी प्रकार कर्मोंका व्यत्यय हो जाय। अर्थात्-पूर्वोक्त वर्ण संकरोंकी कन्याओंके विवाहनेवाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अपनी २ जाति के कर्मोंको न करतेहों, जैसे ब्राह्मण यदि क्षत्रिय कर्मसे जीविका करताहो उससेभी निर्वाह न चलै तो वैश्य वृत्ति करता हो अथवा शूद्र वृत्ति करताहो यदि क्षत्रिय, वैश्यभी निज २ वृत्ति त्यागकर वैश्य-शूद्रवृत्तिसे निर्वाह करते हों तो आपत्तिके दूर होनेपरभी उन २ कर्मोंको न त्यागनेसे पांचवीं छठी या सातवीं पीढीमें उस जातिकी समताको प्राप्त होते हैं, अर्थात् ब्राह्मण यदि शूद्र वृत्तिसे जीता हो उसको न छोडकर जिस पुत्रको उत्पन्न करै तो सातवीं पीढीमें वह पुत्र शूद्रकी समताको प्राप्त होगा, इसी प्रकार क्षत्रियपुत्र छठी पीढीमें वैश्यकी समताको और वैश्यपुत्र पांचवीं पीढीमें शूद्रकी समताको प्राप्त होता है, और उत्कर्ष वृत्तिसे जीनेवाला वैश्य छठी पीढीमें क्षत्रियकी समतावाले पुत्रको और शूद्रवृत्तिसे जीता हुआ क्षत्रिय छठी पीढीमें शूद्रकी समता वाले पुत्रको और वैश्य वृत्तिसे जीता हुआ पांचवीं पीढीमें वैश्यकी समतावालेको और एसेही वैश्य पांचवीं पीढीमें शूद्रके समान पुत्रको उत्पन्न करता है तथा अधर उत्तर वर्ण जो संकरसे उत्पन्न होते हैं वे पूर्वके समान ही जानने, अर्थात्-अधर असत् और उत्तर श्रेष्ठ होतेहैं। इससे पहले अनुलोमज और प्रतिलोमज दिखाये, और रथकारादि संकीर्ण संकरोंसे उत्पन्न हुए दिखाये। अब इस अधरोत्तर पदसे वर्णसंकरोंसे उत्पन्न हुए दिखाते हैं, जैसे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रोंसे मूर्द्धावसिक्ता कन्यासे उत्पन्न हुए पुत्र और अम्बष्ठामें वैश्य, शूद्रसे उत्पन्न हुए पुत्र, और निषादीमें शूद्रसे उत्पन्न हुए पुत्र अधर प्रतिलोमज होतेहैं, इसीप्रकार मूर्द्धावसिक्ता, अम्बष्ठा और निषादीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हुए पुत्र, माहिष्य और उग्रकी कन्यामें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यसे उत्पन्न हुए पुत्र उत्तर अनुलोमज होते हैं, इसी प्रकार दूसरेभी जानने। यह अधर प्रतिलोमज और उत्तर अनुलोमज असत् और सत् जानने, अर्थात्-अधर

निकृष्ट और उत्तर उत्तम होते हैं,एक वर्णके व्यवधानमें स्पर्शमें कुछ दोष नहीं है तो अन्य वर्णके व्यवधानमें भी कुछ दोष नहीं है, इससे एक चाण्डालही स्पर्शके अयोग्य होता है, और अनन्तर वर्णोंमें उत्पन्न द्विजातियोंके संस्कार माताकी जातिके अनुसार होतेहैं ॥ १६ ॥

अब अठारह जातियोंका धर्म कहते हैं ।

स्कंद पुराणमें चातुर्मास्यमाहात्म्यमें लिखा है-

अष्टादशमिता नीचा प्रकृतीनां यथातथा॥ विधिर्नैव क्रिया नैव स्मृतिमार्गोऽपि नैव च ॥ १७ ॥ तासां ब्राह्मणशुश्रूषा विष्णुध्यानं शिवार्चनम् ॥ अमन्त्रात्पुण्यकरणं दानं देयं च सर्वदा ॥ १८ ॥ न दानस्य क्षयो लोके श्रद्धया यत्प्रदीयते ॥ अश्रद्धयाशुचितया दानं वैरस्य कारणम् ॥ १९ ॥

(अध्याय ९)

अठारह प्रकारकी जो नीच जाति हैं उनके लिये विधि, क्रिया और स्मृतिमार्ग नहीं है ॥ १७॥ उनको मंत्रके बिना ब्राह्मणकी सेवा, विष्णुका ध्यान और शिवका अर्चन करना चाहिये, यही उनका पुण्य साधन है ॥ १८ ॥ जो दान श्रद्धासे दिया जाताहै लोकमें कभी उसका क्षय नहीं होता अश्रद्धा और अशुचि होकर जो दियाजाय वह वैरका कारण होता है ॥ १९ ॥ अब उन अठारह प्रकारके नीचोंको कहते हैं।

शिल्पी च नर्तकश्चैव काष्ठकारः प्रजापतिः । धर्मकश्चित्रकश्चैव सूतको रजकस्तथा ॥ २० ॥ गच्छकस्तन्तुकारश्च चक्रिकश्चर्मकारकः । सूनिको ध्वनिकश्चैव कौल्हिको मत्स्यघातकः ॥ औनामिकस्तु चाण्डालः प्रकृत्यष्टादशैव ताः ॥ २१ ॥

शिल्पी, नर्तक, काष्ठकार,प्रजापति (कुम्हार) धर्मक चितेरा जुलाहा, धोवी, धावक (दूत) तन्तुकार (सूत करनेवाला) तेली, चमार, वधिक वा मद्यनिकालनेवाला, नगाडची, कौल्कि (कोल) मच्छीमार औनामिक और चांडाल ॥ २१ ॥ इनके मध्यमें तथा और दूसरे जन-

शिल्पिनः स्वर्णकारश्च दारुकः कांस्यकारकः ॥
कारुकः कुम्भकारश्च प्रकृत्या उत्तमाश्च षट् ॥ २२ ॥

शिल्पकार सोना बनानेवाले, बढई, कांसीको बनानेवाले रूपकारादि शिल्पी और कुम्हार यह प्रकृतिसे उत्तम होते हैं ॥ २२ ॥

खरवाह्युष्ट्रवाही च हयवाही तथैव च ॥
गोपाल इष्टकाकारो अधमाधमपंचकम् ॥२३॥

खिचर, ऊंट और टट्टू लादनेवाले, रोजगारके निमित्त गौओंके पालक ग्वाले और ईंटपज-यह अधम जाति है पूर्व कालमें यह एक प्रकारकी जातियें थीं ॥ २३ ॥

रजकश्चर्मकारश्च नटो वरुड एव च ॥
कैवर्तमेदभिल्लाश्च सप्तैते चान्त्यजाः स्मृताः२४॥

धोबी, चमार, नट, बरुड, कैवर्त, मेद और भील यह सात अन्त्यज कहाते हैं ॥२४॥

एतासां प्रकृतीनां च गुरुपूजाः सदोदिताः ।
विप्राणां प्राकृतो नित्यं दानमेव परो विधिः ॥२५॥

इन सब प्रकृतियोंको भगवानके भजन गुरुपूजन और दानमें अधिकार है ॥ २५ ॥

अथाष्टादशसमूहाः ।

मणिकांस्यघटस्वर्णस्यन्दनं लोहकारकाः ॥
सिंदोला सोषिरो नीली कर्त्ता किंशुकशौल्विकौ ॥ २६ ॥
पांशुलः कर्मचाण्डालो रौमिको वंधुलस्तथा ॥
कुक्कुटश्चाथ ठट्ठारः श्वपचोऽष्टादश स्मृतः॥२७॥

मणिकार, कांस्यकार, स्वर्णकार, रथकार, लोहकार, सिन्दोल, सोशिर, नीलकार, कर्चा, किंशुक, शौल्विक, (तांबाकूटनेवाला) फसिये कर्म, चांडाल, रोमिक, वंधुल,(शूद्रसे निषादीमें उत्पन्न)कुक्कुट, ठट्ठार और श्वपच यह अष्टादश समूह कहाते हैं ॥ २७ ॥ अब सात समूहोंको कहते हैं-

मालाकारः शाम्बरश्च शाल्मलो मौक्लस्तथा ॥
कारावारः पुल्कसश्च श्वपाकः सप्त च प्रजाः ॥२८॥

माली, बाजीगर, शाल्मल, मौक्ल,चमार, (पुल्कस निषादसे शूद्रामें उत्पन्न) और कञ्जर यह सप्तसमूह कहाते हैं तथा २४ श्लोकमें कहे रजक आदि अन्त्यज भी सप्तसमूह कहाते हैं ॥ २८ ॥

अथैकादशसमूहः ।

तेरवाच्छिरक्रव्यादा हस्तकायश्च हिंसकः ॥
सासेहिको भारुडश्च मातंगो डौम्बगोपकौ ॥ २९ ॥
एताः प्रकृतयः प्रोक्ता एकादश मनीषिभिः ।
वर्णानामाश्रमाणां च सर्वदा तु बहिःस्थितिः ॥३० ॥
अन्त्यौ यावन्त्यजौ चैव तयोः स्नानं विशुद्धये ॥
आद्या ये अन्त्यजाः पंच तेषामाचमनं स्पृशी ॥ ३१ ॥

तेरवा, छिर, क्रव्याद, हस्तकाय, हिंसक, सांसिये, (सर्प पकडनेवाले) भारुड, मातंग, डौम और गोपक यह ग्यारह जाति एकादश समूहमें हैं इनमें डौम और गोपकके छूनेसे तो स्नान करना और पांचोंके छू जानेसे आचमन करना चाहिये। यह ग्यारहवों वर्णाश्रमके निवासभूत ग्रामादिसे बाहर हैं ॥३१॥ अब पंच समूहोंको कहते हैं-

चाण्डालः पुल्कसो म्लेच्छः श्वपाकः पतितस्तथा ॥ एते पंच समाख्याताः पंचपातकिनां समाः ॥३२॥ आरामिको मणीकारः तन्तुवायश्च लोमकः ॥ नापितो दासकश्चैव प्रकृत्या मध्यमाश्च षट् ॥३३॥ ब्रह्महा मद्यपः स्तेयी तथैव गुरुतल्पगः ॥ एते महापातकिनो यश्च तैः सह संवसेत् ॥ ३४ ॥ कारुकोदारुकश्चैव चारुकः कांस्यघट्टकः ॥ लोहकृत्कुम्भकारश्च प्रकृत्या उत्तमाश्च षट् ॥ ३५ ॥

चाण्डाल, पुल्कस, म्लेच्छ, श्वपाक और पतित यह महापातकियोंके समान हैं ॥ ३२ ॥ यह मिलकर साठ हुए बागवान, मणीकार, जुलाहा, लोमक, नाई और दास यह छः प्रकृतिसे मध्यम हैं ॥ ३३ ॥ ब्रह्महत्यारा, मद्यपान करनेवाला, सोना चुरानेवाला, गुरुस्त्रीगामी और इनका साथी यह महापातकी हैं॥३४॥कारुक (शिल्पी) दारुक (बढई) चारुक कांसी कूटनेवाला, लुहार और कुम्हार यह छः प्रकृति उत्तम हैं ॥ ३५ ॥

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः ।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रश्च निरवर्तयत् ॥

(मनु० अ० १ श्लोक० ३१)

विधाताने लोकोंकी वृद्धिके लिये ब्राह्मणको मुखसे, क्षत्रियको भुजाओंसे, वैश्यको जंघाओंसे और शूद्रको अपने चरणोंसे उत्पन्न किया ॥ ३१ ॥

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः । चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पञ्चमः ॥ ४ ॥ सर्ववर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षतयोनिषु । अनुलोम्येन संभूता जात्या ज्ञेयास्त एव ते ॥ ५ ॥

(मनुः १०)

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये ३ वर्ण द्विज हैं, चौथा वर्ण शूद्र है, इनके सिवाय पांचवां वर्ण ही नहीं है ॥ ४ ॥ सब वर्णोंमें समान जातिको शास्त्रकी रीतिसे व्याही हुई और परपुरुषके संपर्कसे बची हुई कन्यामें अनुलोमतासे अर्थात् ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें, क्षत्रियसे क्षत्रियामें, वैश्यसे वैश्यामें और शूद्रसे शूद्रामें उत्पन्न पुत्र अपने पिता माताकी जातिके ही होते हैं ऐसा जानना चाहिये ॥ ५ ॥

स्त्रीष्वनन्तरजातासु द्विजैरुत्पादितान्सुतान् । सदृशानेव तानाहुर्मातृदोषविगर्हितान् ॥ ६ ॥ अनन्तरासु जातानां विधिरेष सनातनः । द्व्येकान्तरासु जातानां धर्म्यं विद्यादिमं विधिम् ॥ ७ ॥ ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते । निषादः शूद्रकन्यायां यः पारशव उच्यते ॥ ८ ॥ क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां क्रूराचारविहारवान् । क्षत्रशूद्रवपुर्जन्तुरुग्रो नाम प्रजायते ॥ ९ ॥

द्विजोंद्वारा अनुलोम क्रमसे अनन्तर वर्णजा पत्नीमें उत्पन्न अर्थात्–ब्राह्मणसे क्षत्रियामें क्षत्रियसे वैश्यामें और वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न पुत्र माताकी हीन जाति होनेके कारण अपने पिताकी जातिके तुल्य नहीं होते हैं ॥ ६ ॥ अनन्तर जातिकी स्त्रियोंमें उत्पन्न सन्तानोंकी सनातन विधि कही गई। अब पतिसे एक वर्णकी अंतरकी और दो वर्णके अन्तरकी पत्नीमें उत्पन्न पुत्रोंका वृत्तान्त कहता हूँ ॥ ७ ॥ ब्राह्मणसे वैश्यकी कन्यामें अंवष्ठ जाति उत्पन्न होती है और ब्राह्मणसे शूद्रकी कन्यामें निषाद जातिका पुत्र जन्म लेता है जिसको पारशव कहते हैं ॥ ८ ॥ क्षत्रियसे शूद्रकी कन्यामें उत्पन्न होनेवाली सन्तान क्रूरचेष्टा, निन्दित कर्म करने वाली क्षत्रिय और शूद्रके स्वभावसे युक्त उग्रजातिकी होती है ॥ ९ ॥

विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु नृपतेर्वर्णयोर्द्वयोः ॥ वैश्यस्य वर्णे चैकस्मिन्षडेतेऽपसदाः स्मृताः ॥ १० ॥ क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः ॥ वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राङ्गनासुतौ ॥ ११ ॥ शूद्रादायोगवः क्षत्ता चाण्डलश्चाधमो नृणाम् ॥ वैश्यराजन्यविप्रासु जायन्ते वर्णसंकराः ॥ १२ ॥

ब्राह्मणकी कन्यामें क्षत्रियसे उत्पन्न सूत, क्षत्रियामें वैश्यसे उत्पन्न मागध, और ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्न होनेवाला पुत्र वैदेह जातिका होता है ॥ १० ॥ ११ ॥ वैश्यामें शूद्रसे आयोग, क्षत्रियामें शूद्रसे क्षत्ता, और शूद्रसे ब्राह्मणीमें चाण्डाल ये सब वर्णसंकर उत्पन्न होते हैं ॥ १२ ॥

एकान्तरे त्वानुलोम्यादम्बष्ठोग्रौ यथा स्मृतौ॥क्षत्तृवैदेहकौ तद्वत्प्रातिलोम्येऽपि जन्मनि ॥ १३ ॥ पुत्रा येऽनन्तरस्त्रीजाः क्रमेणोक्ता द्विजन्मनाम् ॥ताननन्तरनाम्नस्तु मातृदोषात्प्रचक्षते ॥ १४ ॥ ब्राह्मणादुग्रकन्यायामावृतो नाम जायते ॥ आभीरोऽम्बष्ठकन्यायामायोगव्यां तु धिग्वणः ॥ १५ ॥

जैसे अनुलोम क्रमानुसार एकान्तर वर्णज अम्बष्ठ और उग्र जाति कहे गये हैं, उसी भाँति प्रतिलोमभी क्रमानुसार एकान्तर वर्णज, क्षत्ता और वैदेह हैं ॥ १३ ॥ द्विजातियोंके जो अनुलोम क्रमसे अनन्तर जातिकी स्त्रियोंमें उत्पन्न पुत्र कहे गये वे पतिसे छोटी जातिकी माता होनेके कारण अनन्तर नामवाले कहे जाते हैं ॥ १४ ॥ ब्राह्मणसे उग्रकी कन्यामें आवृत जाति, ब्राह्मणसे अम्बष्ठकी कन्यामें आभीर और ब्राह्मणसे आयोगवकी कन्यामें धिग्वण जातिका पुत्र उत्पन्न होता है ॥ १५ ॥

आयोगवश्च क्षत्ता च चण्डालश्चाधमो नृणाम्॥प्रातिलोम्येन जायन्ते शूद्रादपसदास्त्रयः ॥१६ ॥ वैश्यान्मागधवैदेहौ क्षत्रियात्सूत एव तु ॥ प्रतीपमेते जायन्ते परेऽप्यपसदास्त्रयः॥१७॥ जातो निषादाच्छूद्रायां जात्या भवति पुक्कसः॥शूद्राज्जातो निषाद्यां तु स वै कुक्कुटकः स्मृतः॥१८

१ यहां उशना विवाहिता वैश्या लेते हैं, अम्बष्टकी वृत्ति चिकित्सा है। २ यह पर्वतोंपर रहते हैं मद्रक कहाते हैं।

शूद्रद्वारा प्रतिलोम (उलटा) क्रमसे उत्पन्न (उपरोक्त) आयोगव, क्षत्ता और चाण्डाल मनुष्योंमें अधम और पितरके कार्योंसे रहित होते हैं ॥ १६ ॥ इसीभाँति प्रतिलोम क्रमसे वैश्यद्वारा उत्पन्न मागध, वैदेह, और क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न सत जातिभी पितृकार्यके अधिकारी नहीं हैं ॥ १७ ॥ निषादसे शूद्रामें पुक्कस जाति और शूद्रसे निषादीमें कुक्कुट जाति होती है ॥ १८ ॥

क्षत्तुर्जातस्तथोग्रायां श्वपाक इति कीर्त्यते ॥ वैदेहकेन त्वम्बष्ठ्यामुत्पन्नो वेण उच्यते ॥ १९ ॥ द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्यव्रतांस्तु यान् ॥ तान्सावित्रीपरिभ्रष्टान् व्रात्यानिति विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

क्षत्तासे उग्रामें उत्पन्न श्वपाक जाति, और वैदेहसे अंबष्ठामें वेण जातिके पुत्र होते हैं ॥ १९ ॥ द्विजातिके लोग अपनी सवर्णा स्त्रीमें जिन पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं वे उपनयन संस्कारसे रहित होनेपर व्रात्य कहेजाते हैं ॥ २० ॥

व्रात्यात्तु जायते विप्रात्पापात्मा भूर्जकण्टकः ॥ आवन्त्यवाटधानौ च पुष्पधः शैख एव च ॥२१॥ झल्लो मल्लश्च राजन्याद्व्रात्यान्निच्छिविरेव च ॥ नटश्च करणश्चैव खसो द्रविड एव च ॥ २२ ॥ वैश्यात्तु जायते व्रात्यात्सुधन्वाचार्य एव च ॥ कारुषश्च विजन्मा च मैत्रः सात्वत एव च ॥ २३ ॥ व्यभिचारेण वर्णानामवेद्यावेदनेन च ॥ स्वकर्मणाञ्च त्यागेन जायन्ते वर्णसंकराः ॥ २४ ॥

व्रात्य ब्राह्मणकी सवर्णा स्त्रीमें पापकर्मा भूर्जकण्टक जातिका पुत्र उत्पन्न होता है, जिसको आवन्त्य, वाटधान, पुष्पध और शैख कहते हैं ॥ २१ ॥ व्रात्य क्षत्रियकी सवर्णा स्त्रीमें उत्पन्न हुए पुत्रको झल्लमल्लनिच्छिवि, नट, करण, खस और द्रविड जातिके कहते हैं ॥ २२ ॥ व्रात्य वैश्यकी सवर्णा स्त्रीमें उत्पन्न पुत्रको सुधन्वा आचार्य, कारुष, विजन्मा, मैत्र और सात्वत जातिके कहते हैं ॥ २३ ॥ व्यभिचार करनेसे विवाहके अयोग्य सगोत्र आदिमें विवाह करनेसे और उपनयन आदि अपने कर्मोंको त्यागनेसे ब्राह्मणादि वर्णोंमें वर्णसंकर हुआ करते हैं ॥ २४ ॥

संकीर्णयोनयो ये तु प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ अन्योन्यव्यतिषक्ताश्च तान्प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ २५ ॥ सूतो वैदेहकश्चैव चाण्डालश्च नराधमः ॥ मागधः क्षत्तृजातिश्च तथाऽयोगव एव च ॥ २६ ॥ एते षट् सदृशान्वर्णाञ्जनयन्ति स्वयोनिषु ॥ मातृजात्यां प्रसूयन्ते प्रवरासु च योनिषु ॥ २७ ॥

संकीर्ण योनि अर्थात्-दोवर्णके मेलसे प्रतिलोम और अनुलोम होते हैं तथा परस्पर अन्यकी स्त्रियोंमें आसक्त होनेसे जो वर्णसंकर उत्पन्न होतेहैं उनको यथार्थ रीतिसे कहताहूं ॥ २५ ॥ सूत और वैदेह मनुष्योंमें अधम, चाण्डाल, मागध, क्षत्ता और आयोगव ये ६ प्रतिलोम वर्णसंकर अपनी जाति, माताकी जाति और अपने श्रेष्ठ जातिकी कन्यामें अपने समान जातिके पुत्रको उत्पन्न करतेहैं । जैसे शूद्रसे

वैश्यकी स्त्रीमें आयोगव होता है तो वह आयोगव जातिकी स्त्रीमें, माताकी जाति वैश्यामें और श्रेष्ठ जाति ब्राह्मणी तथा क्षत्रियामें आयोगव जातिका पुत्र उत्पन्न करता है ॥ २६-२७ ॥

यथा त्रयाणां वर्णानां द्वयोरात्मास्य जायते ॥ आनन्तर्यात्स्वयोन्यां तु तथा बाह्येष्वपि क्रमात् ॥ २८ ॥ ते चापि बाह्यान्सुबहूंस्ततोऽप्यधिकदूषितान् । परस्परस्य दारेषु जनयंति विगर्हितान् ॥ २९ ॥ यथैव शूद्रो ब्राह्मण्यां बाह्य जन्तुं प्रसूयते । तथा बाह्यतरं बाह्यश्चातुर्वर्ण्ये प्रसूयते ॥ ३० ॥

जैसे ब्राह्मणद्वारा क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रामें उत्पन्न सन्तानोंमेंसे क्षत्रिया तथा वैश्यामें उत्पन्न हुई सन्तान द्विज होतीहै वैसे ही ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुई संतान द्विज होतीहै और वैश्यामें उत्पन्न पुत्रसे क्षत्रियामें उत्पन्न पुत्र, क्षत्रियामें उत्पन्न पुत्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुआ पुत्र श्रेष्ठ होताहै, ऐसेही प्रतिलोमक्रमसे ब्राह्मणीमें क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न सन्तानसे वैश्यद्वारा उत्पन्न सन्तान वैश्यद्वारा उत्पन्न हुई सन्तानसे शूद्रद्वारा उत्पन्न हुई सन्तान नीच होती है ॥ २८ ॥ प्रतिलोमज वर्णसंकर जब परस्पर जातिकी स्त्रियोंमें अर्थात् सूत वैदेहकी स्त्रीमें अथवा वैदेह सूतकी स्त्रीमें पुत्र उत्पन्न करते हैं, तब वे पुत्र अपने पिता मातासे अधिक दूषित और निंदित होते हैं, ॥ २९ ॥ जैसे शूद्रसे ब्राह्मणीमें चाण्डाल उत्पन्न होता है, वैसेही वर्णसंकर द्वारा ब्राह्मण आदि चारों वर्णोंकी स्त्रियोंमें चाण्डालसे भी नीच पुत्र उत्पन्न होते हैं ॥ ३० ॥

प्रसाधनोपचारज्ञमदासं दासजीवनम् । सैरिन्ध्रं वागुरावृत्तिं सूते दस्युरयोगवे ॥ ३२ ॥ मैत्रेयकं तु वैदेहो माधूकं संप्रसूयते । नॄन्प्रशंसत्यजस्रं यो घण्टाताडोऽरुणोदये ॥ ३३ ॥

डाकू जातिसे अयोगवकी स्त्रीमें उत्पन्न हुए पुत्रको सैरिन्ध्र जाति कहते हैं वे लोग केशरचना, देह दबाना आदि सेवकाईके काम करनेमें चतुर होते हैं, दास नहीं होने परभी दासकर्म करके निर्वाह करते हैं, और मृगको फन्देसे फांसकर जीविका चलाते हैं, ॥ ३२ ॥ वैदेहसे अयोगवी स्त्रीमें उत्पन्न हुई सन्तानको मैत्रेय जाति कहते हैं वे लोग मिष्टभाषी होते हैं और सूर्योदयके समय घण्टा बजाकर जीविकाके लिये राजा आदिकी प्रशंसा करते हैं ॥ ३३ ॥

निषादो मार्गवं सूते दासं नौकर्मजीविनम् । कैवर्त्तमिति यं प्राहुरार्यावर्त्तनिवासिनः ॥ ३४ ॥ मृतवस्त्रभृत्सु नारीषु गर्हितान्नाशनासु च । भवन्त्यायोगवीष्वेते जातिहीनाः पृथक्त्रयः ॥ ३५ ॥ कारावारो निषादात्तु चर्मकारः प्रसूयते ॥ वैदेहकादन्ध्रमेदौ बहिर्ग्रामप्रतिश्रयौ ॥ ॥ ३६ ॥ चाण्डालात्पाण्डुसोपकस्त्वक्सारव्यवहारवान् । आहिण्डको निषादेन वैदेह्यामेव जायते ॥ ३७ ॥

निषादसे अयोगवीमें उत्पन्न हुई सन्तानको मार्गव और दास जाति कहते हैं, वे लोग नाव चलाकर अपनी जीविका करते हैं, इस लिये आर्यावर्त्तके लोग इनको कैवर्त कहते हैं ॥ ३४ ॥ जूठन खानेवाली

और मुर्देका वस्त्र पहिरनेवाली, अयोगवीमें जन्मदाताके भेदसे सैरंध्र, मार्गव और मैत्रेय ये ३ हीन जातियें उत्पन्न होती हैं ॥ ३५ ॥ निषादसे वैदेही स्त्रीमें उत्पन्न होनेवाली सन्तानको कारावर कहते हैं चर्मका काटना इनकी वृत्ति है, वैदेहसे कारावरीमें अन्ध्र और निषादीमें मेद उत्पन्न होते हैं, ये ग्रामसे बाहर निवास करते हैं ॥ ३६ ॥ चाण्डालसे वैदेही स्त्रीमें पाण्डु सोपक जाति, और निषादसे वैदेहीमें अहिण्डिक जाति उत्पन्न होती है, बांसका कार्य, चटाई आदिका बनाना इनकी जीविका वृत्ति है ॥३७॥

चाण्डालेन तु सोपाको मूलव्यसनवृत्तिमान् । पुक्कस्यां जायते पापः सदा सज्जनगर्हितः ॥ ३८ ॥ निषादस्त्री तु चाण्डालात्पुत्रमन्त्यावसायिनम् । श्मशानगोचरं सूते बाह्यानामपि गर्हितम् ॥ ३९ ॥ संकरे जातयस्त्वेताः पितृमातृप्रदर्शिताः।प्रच्छन्ना वा प्रकाशा वा वेदितव्याः स्वकर्मभिः ॥ ४० ॥

चाण्डालसे पुक्कसी स्त्रीमें पापी कर्म करनेवाली सोपाक जाति होती है, वह सज्जनोंसे निन्दित और जल्लादका काम करके अपना निर्वाह करती है ॥ ३८ ॥ चाण्डालसे निषादकी स्त्रीमें अन्त्यावसायी जाति उत्पन्न होती है वे लोग श्मशानके कामसे अपना निर्वाह करते हैं, ये जाति सबसे नीच होती है ॥ ३९ ॥ इस प्रकार यह वर्णसंकर जाति और इनके माता पिताका नाम वर्णन किया गया, इनके सिवाय जो कुछ छिपी हुई जातियें हैं या प्रगट हैं वे कर्मोंसे पहिचानी जाती हैं ॥ ४० ॥

सजातिजानन्तरजाः षट् सुता द्विजधर्मिणः ॥
शूद्राणां तु सधर्माणः सर्वेऽपध्वंसजाः स्मृताः ॥ ४१ ॥

ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें, क्षत्रियसे क्षत्रियामें, वैश्यसे वैश्यामें, और अनुलोम क्रमसे ब्राह्मणसे क्षत्रियामें, ब्राह्मणसे वैश्यामें और क्षत्रियसे वैश्यामें उत्पन्न ये ६ प्रकारके पुत्र द्विजधर्मपर चलनेवाले अर्थात्-यज्ञोपवीतके योग्य होते हैं, किन्तु द्विजोंके सम्पूर्ण प्रतिलोमज पुत्र अर्थात् क्षत्रियसे ब्राह्मणीमें और वैश्यसे क्षत्रिया तथा ब्राह्मणीमें उत्पन्न पुत्र शूद्रधर्मी हुआ करते हैं ॥ ४१ ॥

तपोबीजप्रभावैस्तु ते गच्छन्ति युगे युगे ॥ उत्कर्षं चापकर्षं च मनुष्येष्विह जन्मतः ॥ ४२ ॥ शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ॥ वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥ ४३ ॥ पौंड्रकाश्चौड्रद्रविडाः कम्बोजा यवनाः शकाः ॥ पारदा पल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥ ४४ ॥

मनुष्य सब युगोंमें तपके प्रभावसे (विश्वामित्रके समान) और वीर्यके प्रभावसे (ऋष्यशृंग आदिके समान) अपनी जातिसे श्रेष्ठ जातिके बन जाते हैं और क्रियाहीन होजानेसे बडी जातिके मनुष्य हीन जातिके होजाते हैं ॥४२॥४३॥ पौंड्रक, औड्र, द्रविड, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद, और खश देशके रहनेवाले क्षत्रिय, यज्ञोपवीत आदि क्रियाओंके लोप होनेसे और उन देशोंमें ब्राह्मणके न रहनेके कारण धीरे धीरे शूद्र होगये हैं ॥ ४४ ॥

मुखवाहूरुपज्जानां या लोके जातयो वहिः ॥
म्लेच्छवाचश्चार्यवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र लोगोंमें चाहें आर्यभाषा बोलनेवाले है अथवा म्लेच्छभाषावाले हैं क्रियाके लोप होजानेके निमित्त जो वाह्य जाति होगये है वे दस्यु अर्थात् डाकू जातिके कहे जातेहैं ॥४५॥

ये द्विजानामपसदा ये चापध्वंसजाः स्मृताः ॥ ते निन्दितैर्वर्तयेयु-र्द्विजानामेव कर्मभिः॥४६॥ मेदांध्रचुञ्चुमद्गूनामारण्यपशुहिंसनम् ॥४७॥

द्विजातियोंकी क्रमसे अनुलोम (बडी जातिके पुरुषसे छोटी जातिकी कन्यामें) उत्पन्न सन्तान अथवा प्रतिलोम क्रमसे (छोटी जातिके पुरुषसे बडी जातिकी कन्यामें) उत्पन्न सन्तान द्विजोंके कर्मोसे भिन्न निन्दित कर्मोंसे अपनी जीविका करती हैं ॥ ४६॥ मेद, अन्ध्र, चुंचु और मद्गु जातिकी वृत्ति वनैले पशुओंका वध करना है ॥ ४७ ॥

क्षत्त्रुग्रपुक्कसानां तु विलौकोवधबंधनम्। धिग्वणानां चर्मकार्यं वेणानां भाण्डवादनम् ॥ ४९ ॥ चैत्यद्रुमश्मशानेषु शैलेषूपवनेषु च । वसेयु-रेते विज्ञाना वर्त्तयंतः स्वकर्मभिः ॥ ५० ॥

क्षत्ता, उग्र और पुक्कसकी वृत्ति विलमें वसनेवाले जीवोंका मारना तथा बांधना । धिग्वणकी वृत्ति चमडेका काम करना, और वेण जातिकी वृत्ति मृदङ्ग आदिका वजाना है ॥ ४९ ॥ इन जातियोंके मनुष्य अपनी २ वृत्तिका अवलम्बन करके प्रसिद्ध वृक्षोंकी जडके पास, पर्वतके समीप, श्मशान तथा उपवनमें वास करें ॥ ५० ॥

चाण्डालश्वपचानां तु वहिर्ग्रामात्प्रतिश्रयः । अपपात्राश्च कर्तव्या धनमेषां श्वगर्दभम् ॥ ५१ ॥ वासांसि मृतचैलानि भिन्नभाण्डेषु भोजनम् । कार्ष्णायसमलंकारः परिव्रज्या च नित्यशः ॥ ५२ ॥

चांडाल और श्वपचको ग्रामसे वाहर वसाना चाहिये, ये निषिद्ध पात्र रखने योग्य हैं, और कुत्ते गदहे इनके धन है ॥ ५१ ॥ ये मुर्देके वस्त्र पहिनते हैं, टूटे वर्तनोंमें भोजन करते हैं, लोहेके गहने पहनते हैं और एक जगहसे दूसरी जगह भ्रमण किया करते हैं ॥५२ ॥

न तैः समयमन्विच्छेत्पुरुषो धर्ममाचरन् ।
व्यवहारो मिथस्तेषां विवाहः सदृशैः सह ॥ ५३ ॥

धर्म कार्यके समय इनको नहीं देखना चाहिये और इनका विवाह लेन देन अपने समानवालोंके साथ होना चाहिये ॥ ५३ ॥

अन्नमेषां पराधीनं देयं स्याद्भिन्नभाजने । रात्रौ न विचरेयुस्ते ग्रामेषु नगरेषु च ॥ ५४ ॥ दिवा चरेयुः कार्यार्थं चिह्निता राजशासनैः । अबान्धवं शवं चैव निर्हरेयुरिति स्थितिः ॥ ५५ ॥

इनको अन्न देना होवे तो दासोंसे टूटे वर्तनोंमें दिलाना चाहिये और रात्रिमें गांव अथवा नगरमें इनको नहीं आने देना चाहिये ॥ ५४ ॥ ये लोग राजाकी आज्ञासे अपनी जातिका चिह्न धारण करके किसी कार्यके लिये दिनमें गांवसे या नगरमें जावें और अनाथ मुर्दोंको गांव बाहर फेंकें ॥ ५५ ॥

वध्यांश्च हन्युः सततं यथाशास्त्रं नृपाज्ञया ।
वध्यवासांसि गृह्णीयुः शय्याश्चाभरणानि च ॥ ५६ ॥

शास्त्रकी आज्ञानुसार जिसको राजा वधकरनेका दंड देता है उसका ये वध करें, मृतकके वस्त्र, शय्या और उसके गहनेको ये ग्रहण करें ॥ ५६ ॥

वर्णापेतमविज्ञातं नरं कलुषयोनिजम् ॥ आर्यरूपमिवानार्यं कर्मभिः स्वैर्विभावयेत् ॥५७॥ अनार्यता निष्ठुरता क्रूरता निष्क्रियात्मता ।
पुरुषं व्यंजयन्तीह लोके कलुषयोनिजम् ॥ ५८ ॥

अनार्य वर्णसंकर जो अपनेको छिपाकर आर्यके वेषसे रहते हैं उनको नीचे लिखेहुए कर्मोंसे पहचानना चाहिये ॥ ५७ ॥ कठोरता, निष्ठुरता, क्रूरता और शास्त्रोक्त कर्मसे हीन ये वर्णसंकर जातिको लोकमें प्रकाशित करदेते हैं, अर्थात्–जिनमें कठोरता आदि हों उनको वर्णसंकर जानना चाहिये ॥ ५८ ॥

पित्र्यं वा भजते शीलं मातुर्वोभयमेव वा ॥ न कथञ्चन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति ॥५९॥ कुले मुख्येऽपि जातस्य यस्य स्याद्योनि-संकरः ॥ संश्रयत्येव तच्छीलं नरोऽल्पमपि वा बहु ॥ ६० ॥

ये लोग पिताके अथवा माताके वा दोनोंहीके स्वभाववाले होते हैं, ये अपने नीच स्वभाव कभी नहीं छिपा सकते ॥५९॥ बडे कुलमें उत्पन्न होनेपर भी वर्णसंकरमें थोडा अथवा बहुत स्वभाव अपने पिताका अवश्य ही रहता है ॥ ६० ॥

यत्र त्वेते परिध्वंसा जायन्ते वर्णदूषकाः ॥
राष्ट्रिकैः सह तद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति ॥ ६१ ॥
ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा देहत्यागोऽनुपस्कृतः ॥
स्त्रीबालाभ्युपपत्तौ च बाह्यानां सिद्धिकारणम् ॥ ६२ ॥

जिस राज्यमें वर्णदूषक वर्णसंकर उत्पन्न होते हैं वह राज्य शीघ्रही प्रजासहित नष्ट होजाता है ॥६१॥ विना पुरस्कारकी आशाके ब्राह्मण, गौ, स्त्री और बालककी रक्षाके लिये प्राणत्याग करनेसे वर्णसंकरोंको स्वर्गकी प्राप्ति होती है ॥ ६२ ॥

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः ॥ ६३ ॥

मनु महाराजने हिंसा न करना, सत्य बोलना, चोरी न करना, पवित्र रहना और इन्द्रियोंको वशमें रखना ये धर्म चारों वर्ण और संकर जातिके लिये भी कहे हैं ॥ ६३ ॥

शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः श्रेयसा चेत्प्रजायते ॥ अश्रेयान्श्रेयसीं जातिं गच्छत्यासप्तमाद्युगात् ॥ ६४ ॥ शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ॥ क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥ ६५ ॥

ब्राह्मणसे शूद्रामें उत्पन्न हुई सन्तान श्रेष्ठसे संवन्ध होनेके कारण सातवीं पीढीमें नीचसे श्रेष्ठजातिवाली हो जाती है ॥ ६४ ॥ जैसे शूद्र स्त्रीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हुआ पुत्र निषाद जातिका होता है यदि ब्राह्मणकी शूद्रा स्त्रीमें कन्या उत्पन्न होवे और वह ब्राह्मणसे विवाही जाय और उसकी कन्यासे फिर ब्राह्मणका विवाह होवे, इसी प्रकार सात पीढीतक वरावर विवाह उक्त नियमसे होनेपर सातवीं पीढीमें निषादीका पुत्र ब्राह्मण हो जाता है। इसीभांति शूद्र ब्राह्मण हो जाता है और ब्राह्मण शूद्र हो जाता है। क्षत्रिय और वैश्यसे उत्पन्न हुई सन्तानके विषयमें भी ऐसा ही समझना चाहिये ॥ ६५ ॥

अनार्यायां समुत्पन्नो ब्राह्मणात्तु यदृच्छया । ब्राह्मण्यामप्यनार्याच्च श्रेयस्त्वं केति चेद्भवेत् ॥ ६६ ॥ जातो नार्यामनार्यायामार्यादार्यो भवेद्गुणैः ॥ जातोप्यनार्यादार्यायामनार्य इति निश्चयः ॥ ६७ ॥

ब्राह्मणसे शूद्र स्त्रीमें इच्छापूर्वक उत्पन्न हुई सन्तान और शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुई सन्तान इन दोनोंमें कौनसी श्रेष्ठ है ॥ ६६ ॥ ब्राह्मणसे शूद्रामें उत्पन्न हुआ पुत्र पाकयज्ञानुष्ठान गुणयुक्त होनेसे शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न पुत्रसे निश्चयही श्रेष्ठ होता है ॥ ६७ ॥

तावुभावप्यसंस्कार्याविति धर्मो व्यवस्थितः । वैगुण्याज्जन्मनः पूर्वमुत्तरः प्रतिलोमतः ॥ ६८ ॥ सुबीजं चैव सुक्षेत्रे जातं संपद्यते तथा । तथार्याज्जात आर्यायां सर्वसंस्कारमर्हति ॥ ६९ ॥

धर्मकी व्यवस्था है कि ब्राह्मणसे शूद्रामें उत्पन्न पुत्र (पारशव) अथवा शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुआ पुत्र (चाण्डाल) इन दोनोंमें कोई भी संस्कारके योग्य नहीं है क्योंकि पारशव निन्दित क्षेत्रमें जन्मा है और चाण्डाल प्रतिलोमज है ॥ ६८ ॥ जैसे उत्तम क्षेत्रमें अच्छे वीज वोनेसे उत्तम ही धान्य उपजता है, वैसेही द्विजाति द्वारा अनुलोम क्रमसे द्विजकी कन्यामें उत्पन्न हुआ पुत्र उपनयन आदि संस्कारके योग्य होता है ॥ ६९ ॥

बीजमेके प्रशंसन्ति क्षेत्रमन्ये मनीषिणः । बीजक्षेत्रे तथैवान्ये तत्रेयं तु व्यवस्थितिः ॥ ७० ॥ अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टमन्तरैव विनश्यति । अबीजकमपि क्षेत्रं केवलं स्थण्डिलं भवेत् ॥ ७१ ॥ यस्माद्बीजप्रभावेण तिर्यग्जा ऋषयोऽभवन् ॥ पूजिताश्च प्रशस्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्यते ॥ ७२ ॥

पंडितगण कोई वीज और कोई क्षेत्रकी प्रशंसा करते हैं, कोई बीज और क्षेत्र दोनोंकी किया करते हैं, इस मत भेदसे नीचे कही हुई व्यवस्था उत्तम है ॥ ७० ॥ ऊषरभूमिमें अच्छा वीज भी नहीं जमता है, बीजके विना उपजाऊ भूमिभी निष्फलहीसी होती है, इसलिये वीज और क्षेत्र दोनों प्रधान हैं ॥ ७१ ॥ वी

हीके प्रभावसे तिर्यक् योनिमें उत्पन्न हुए ऋष्यशृङ्ग आदि मुनि पूजित तथा स्तुतिके योग्य हुए, इसीलिये बीज श्रेष्ठ कहा गया है ॥ ७२ ॥

विप्रान्मूर्द्धावसिक्तो हि क्षत्रियायां विशः स्त्रियाम् । अम्बष्ठः शूद्रायां निषादो जातः पारशवोऽपि वा ॥ ९१॥ वैश्याशूद्र्योस्तु राजन्यान्माहिष्योग्रौ सुतौ स्मृतौ । वैश्यात्तु करणः शूद्र्यां विन्नास्वेष विधिः स्मृतः ॥ ९२ ॥ माहिष्येण करण्यां तु रथकारः प्रजायते । असत्सन्तस्तु विज्ञेयाः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ ९५ ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृति अ० १ ।)

क्षत्रियामें ब्राह्मणसे उत्पन्न मूर्द्धावसिक्त जाति, वैश्यामें अम्बष्ठ और शूद्रामें निषाद जाति (अर्थात्– पारशव) उत्पन्न होती है ॥ ९१ ॥ क्षत्रियसे वैश्यामें उत्पन्न हुआ पुत्र माहिष्य, शूद्रासे उत्पन्न उग्र और वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न पुत्रकी करण जाति होती है, यह विवाही हुई स्त्रीके लिये है ॥ ९२ ॥ माहिष्यसे करणकी स्त्रीमें रथकार उत्पन्न होता है । इनमेंसे नीच जातिके पुरुषसे ऊंच जातिकी स्त्रीमें उत्पन्न पुत्र बुरे और ऊंच जातिके पुरुषसे नीच जातिकी स्त्रीमें उत्पन्न पुत्र श्रेष्ठ समझे जाते हैं ॥ ९५ ॥

शूद्रकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः॥संस्कृतस्तु भवेद्दासो ह्यसंस्कारैस्तु नापितः ॥२३॥ क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां समुत्पन्नस्तु यः सुतः। स गोपाल इति ख्यातो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥ २४ ॥ वैश्यकन्यासमुद्भूतो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः । स ह्यार्द्रिक इति ज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥ २५ ॥

(पाराशर० अ० ११ ।)

ब्राह्मणसे शूद्रकी कन्यामें उत्पन्नहुए पुत्रका यदि ब्राह्मण संस्कार करे तो वह दास जातिका कहलाता है, यदि संस्कार नहीं करता है तो वह नापित (नाई) होता है ॥ २३ ॥ क्षत्रियसे शूद्रकी कन्यामें उत्पन्न हुए पुत्रको गोपाल जाति कहते हैं, उसके घर ब्राह्मण पक्वान्न भोजन करसकताहै॥२४॥ ब्राह्मणसे वैश्यकी कन्यामें उत्पन्नहुए पुत्रका यदि ब्राह्मण संस्कार करता है तो वह आर्द्रिक कहाता है उसके घर ब्राह्मण निःसन्देह भोजन करे ॥ २५ ॥

ब्राह्मण्यजीजनत्पुत्रान्वर्णेभ्य आनुपूर्व्याद् ब्राह्मणसूतमागधचाण्डालान्तेभ्य एव क्षत्रिया मर्द्धावसिक्तक्षत्रियधीवरपुल्कसान्तेभ्यएव वैश्या भृज्जकण्टकमाहिष्यवैश्यवैदेहान्तेभ्य एव पारशवयवनकरणशूद्राऽशूद्रेत्येके ॥ ७ ॥

(गौतमस्मृति अ० ४।)

ब्राह्मणकी कन्या ब्राह्मणी ब्राह्मण पतिसे ब्राह्मणको क्षत्रियसे सूतको वैश्यसे मागधको और शूद्रसे चाण्डालको उत्पन्न करती है, क्षत्रियकी कन्या क्षत्रियाणी ब्राह्मणसे मूर्द्धावसिक्त, क्षत्रियसे क्षत्रिया

वैश्यसे धीवर और शूद्रसे पुक्कस (पुल्कस) को उत्पन्न करतीहै, वैश्यकी कन्या ब्राह्मणसे भृज्जकण्टक क्षत्रियसे माहिष्य, वैश्यसे वैश्य, और शूद्रसे वैदेहको उत्पन्न करतीहै, शूद्रकन्या ब्राह्मणसे पारशव, क्षत्रियसे यवन, वैश्यसे करण और शूद्रसे शूद्रको उत्पन्न करती है, यह किन्हीं आचार्योंका मत है ॥७॥

वैश्येन ब्राह्मण्यामुत्पन्नो रोमको भवतीत्याहुः । राजन्यायां पुल्कसः ॥ २ ॥

(वसिष्ठ० अ० २८ ।)

ऐसाभी कहतेहैं कि, ब्राह्मणीमें वैश्यसे रोमक जाति पुत्रका और क्षत्रियामें पुल्कस जातिका पुत्र उत्पन्न होता है ॥ २ ॥

सूताद्विप्रप्रसूतायां सुतो वेणुक उच्यते ।

(औशन० ६ खं०)

नृपायामेव तस्यैव जातो चर्मकारकः ॥ ४ ॥ चाण्डालाद्वैश्यकन्यायां जातः श्वपच उच्यते ॥ ११ ॥ श्वमांसभक्षणं तेषां श्वान एव च तद्बलम् ॥ १२ ॥

ब्राह्मणीमें सूतसे उत्पन्न हुआ पुत्र वेणुक, और क्षत्रियामें उत्पन्नहुआ पुत्र चर्मकार जातिका होताहै ॥ ४ ॥ चाण्डालसे वैश्यकी कन्यामें उत्पन्न हुए पुत्रको श्वपच कहतेहैं, ये लोग कुत्तेका मांस खाते हैं कुत्ताही इनका बल है ॥ ११ ॥ १२ ॥

आयोगवेन विप्रायां जातास्ताम्रोपजीविनः । तस्यैव नृपकन्यायां जातः सूनिक उच्यते ॥ १४ ॥ सूनिकस्य नृपायां तु जाता उद्बन्धकाः स्मृताः । निर्णेजयेयुर्वस्त्राणि अस्पृश्याश्च भवन्त्यतः ॥ १५ ॥

आयोगवसे ब्राह्मणीमें उत्पन्नहुए पुत्रको ताम्रोपजीवी, और आयोगवसे क्षत्रियकी कन्यामें उत्पन्नहुए पुत्रको सूनिक कहते हैं ॥ १४ ॥ सूनिकसे क्षत्रियामें उत्पन्न हुआ पुत्र उद्बन्धक कहाता है जो वस्त्र धोताहै वह स्पर्श करने योग्य नहीं होता ॥ १५ ॥

नृपायां वैश्यतश्चौर्यात्पुलिन्दः परिकीर्त्तितः ॥ पशुवृत्तिर्भवेत्तस्य हन्युस्तान्दुष्टसत्त्वकान् ॥ १६ ॥ पुल्कसाद्वैश्यकन्यायां जातो रजक उच्यते ॥ १८ ॥ नृपायां शूद्रतश्चौर्याज्जातो रञ्जक उच्यते । वैश्यायां रञ्जका ज्जातो नर्तको गायको भवेत् ॥ १९ ॥

चोरीसे वैश्यद्वारा क्षत्रियामें उत्पन्नहुए पुत्रको पुलिन्द जाति कहते हैं, जो दुष्ट जीव और पशुओंको मारकर उनका मांस वेचकर अपनी जीविका करताहै ॥ १६ ॥ पुल्कससे वैश्यकी कन्यामें उत्पन्न हुए पुत्रको रजक, चोरीसे शूद्रद्वारा क्षत्रियामें उत्पन्नहुए पुत्रको (रङ्गरेज) और रंजकसे वैश्यामें उत्पन्नहुए पुत्रको नर्त्तक और गायक कहते हैं ॥ १८-१९ ॥

वैदेहिकात्तु विप्रायां जाताश्चर्मोपजीविनः ॥ २१॥ नृपायामेव तस्यैव सूचिकः पाचकः स्मृतः । वैश्यायां शूद्रतश्चौर्याज्जातश्चक्री च उच्यते ॥ २२ ॥ तैलपिष्टकजीवी तु लवणं भावयन्पुनः । विधिना ब्राह्मणं प्राप्य नृपायां तु समंत्रकम् ॥२३ ॥

वैदेहिकसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुए पुत्रको चर्मोपजीवी, और क्षत्रियामें उत्पन्न हुएको सूचिक और पाचक कहतेहैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ शूद्रद्वारा वैश्यामें उत्पन्न हुए पुत्रको चक्री (तेली) कहते हैं। यह तेली, खली और लवण (नमक) से अपनी जीविका करता है ॥ २३ ॥

जातः सुवर्ण इत्युक्तः सानुलोमद्विजः स्मृतः ॥ अथ वर्णक्रियां कुर्वन् नित्यनैमित्तिकीं क्रियाम् ॥२४॥ अश्वं रथं हस्तिनं च वाहयेद्वा नृपाज्ञया । सैनापत्यं च भैषज्यं कुर्याज्जीवेत्तु वृत्तिषु ॥ २५ ॥

ब्राह्मणसे विधिपूर्वक विवाही हुई क्षत्रियकी कन्यामें उत्पन्न हुआ पुत्र सुवर्ण कहलाता है, वह अनुलोम द्विज है और नैमित्तिक द्विजके कर्मोंको करता है, राजाकी आज्ञासे रथ, घोडा हाथीका चलाना वा सेनापति होकर तथा औषधि द्वारा अपना निर्वाह करता है ॥ २४ ॥ २५ ॥

नृपायां विप्रतश्चौर्यात्संजातो यो भिषक् स्मृतः । अभिषिक्तनृपस्याज्ञां परिपाल्येत्तु वैद्यकम् ॥२६॥आयुर्वेदमथाष्टांगं तंत्रोक्तं धर्ममाचरेत् । ज्योतिषं गणितं वापि कायिकीं वृत्तिमाचरेत् ॥ २७ ॥

क्षत्रिय कन्यामें चोरीसे जो ब्राह्मणसे पुत्र होताहै उसे भिषक् कहते हैं वह राजाकी आज्ञासे वैद्यक करता है ॥ २६ ॥ वह अष्टांग आयुर्वेद पढे और तंत्रके कहे धर्मोंको करै, ज्योतिष वा गणित विद्यासे भी अपना निर्वाह करै ॥ २७ ॥

नृपायां विधिना विप्राज्जातो नृप इति स्मृतः ॥ नृपायां नृपसंसर्गात्प्रमादाद्गूढजातकः ॥ २८ ॥ सोऽपि क्षत्रिय एव स्यादभिषेके च वर्जितः ॥ २९ ॥ अभिषेकं विना प्राप्य गोज इत्यभिधायकः ॥

ब्राह्मणसे विवाहीहुई क्षत्रियामें उत्पन्न हुआ पुत्र राजा कहलाता है, राजासे क्षत्रियामें उत्पन्न हुए पुत्रको गूढ कहते हैं वह क्षत्रिय है, किन्तु राजतिलकके योग्य नहीं है, राजतिलकके अयोग्य होनेके कारण उसको गोज (गोलला) कहते हैं ॥ २८–२९ ॥

सर्वं तु राजवृत्तस्य शस्यते पदवन्दनम् । पुनर्भूकरणे राज्ञां नृपकालीन एव च ॥ ३० ॥ वैश्यायां विप्रतश्चौर्यात्कुंभकारः स उच्यते ॥ ३२ ॥ कुलालवृत्त्या जीवेत्तु नापिता वा भवन्त्यतः ॥ ३३ ॥

इनको राजाके चरणोंकी वन्दना करना श्रेष्ठ है, यह गोज राजाओंके पुनर्भू करणमें अर्थात् दूसरा विवाह करनेमें राजाके समान हैं, अर्थात्--इनके यहां राजा अपना दूसरा विवाह करलेवे ॥ ३० ॥ चोरीसे ब्राह्मणद्वारा वैश्यामें उत्पन्न पुत्र कुम्हार कहाता है, मिट्टीके वर्तन बनाना उसकी जीविका है और इसीप्रकार ब्राह्मणसे वैश्यामें चोरीसे उत्पन्न नापित (नाई) होते हैं ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

नृपाज्जातोऽथ वैश्यायां गृह्यायां विधिना सुतः। वैश्यवृत्त्या तु जीवेत क्षात्रधर्मं न चारयेत् ॥ ३८॥ तस्यां तस्यैव चौर्येण मणिकारः प्रजायते। मणीनां राजतः कुर्यान्मुक्तानां वेधनक्रियाम् ॥ ३९॥ प्रवालानां च सूत्रित्वं शाखानां वलयक्रियाम्। शूद्रस्य विप्रसंसर्गाज्जात उग्र इति स्मृतः ॥ ४० ॥ नृपस्य दण्डधारः स्याद्दण्डं दण्डयेषु संचरेत्।

क्षत्रियसे विधिपूर्वक विवाही हुई वैश्यकी कन्याके पुत्र वैश्यकी वृत्तिसे अपना निर्वाह करें, परन्तु वे क्षत्रियके धर्मपर न चलें ॥ ३८ ॥ चोरीसे क्षत्रियद्वारा वैश्यकी कन्यामें उत्पन्न पुत्र मणिकार (मीना॰ कारा) होते हैं वे मणियोंको रंगते हैं, मोतियोंको छेदते हे, मूँगोकी माला और कडे बनाते हैं, ब्राह्मणसे शूद्रामें उत्पन्न पुत्र उग्रजाति कहाते हैं ॥ ३९ ॥४०॥ वे लोग राजाका दण्ड धारण करते हैं और दंडके योग्य मनुष्योंको दंड देते हैं।

तस्यैव चौर्यसंवृत्त्या जातः शुण्डिक उच्यते ॥ ४१ ॥ जातदुष्टान्समारोप्य शुंडकर्मणि योजयेत् ॥ शूद्रायां वैश्यसंसर्गाद्विधिना सूचिकः स्मृतः ॥ ४२ ॥

चोरीसे ब्राह्मणद्वारा शूद्रामें उत्पन्न पुत्र शुण्डिक कहलाते है, राजाको चाहिये कि इनको जन्महीसे दुष्टोंका अधिपति बनाकर शुण्डाकर्म्म (शूलीदेना) में नियुक्त करे। वैश्यकी विवाही हुई शूद्रामें उत्पन्न हुआ पुत्र सूचिक (दर्जी) कहलाता है. ४१॥४२ ॥

सूचिकाद्विप्रकन्यायां जातस्तक्षक उच्यते ॥ शिल्पकर्माणि चान्यानि प्रासादलक्षणं तथा ॥ ४३ ॥ नृपायामेव तस्यैव जातो यो मत्स्यबंधकः ॥ शूद्रायां वैश्यतश्चौर्यात् कटकार इति स्मृतः ॥ ४४ ॥

सूचिकसे ब्राह्मणकी कन्यामें उत्पन्न हुए पुत्रको तक्षक (बढई) जाति कहते हैं, लोग कारीगरीका काम और मकान बनाते हैं ॥ ४३ ॥ सूचिकसे क्षत्रियामें उत्पन्न पुत्र मत्स्यबंधक और चोरीसे वैश्यद्वारा शूद्रामें उत्पन्न हुए पुत्र कटकार कहलाते ॥ ४४ ॥

सं०	जाति		पिता	माता	जीविका	स्मृति
१	ब्राह्मण		ब्रह्माके	मुखसे	०	मनु, याज्ञवल्क्य, हारीत और वसिष्ठ।
					यज्ञ कराना, वेद पढना और दान लेना।	मनु, याज्ञवल्य अत्रि हारीत शंख गौतमऔर वसिष्ठस्मृति
२	क्षत्रिय		ब्रह्माके	बाहुसे	०	मनु, याज्ञवल्क्य, हारीत और वसिष्ठ।
					अस्त्रशस्त्रधारण और प्राणियोंका रक्षा करना।	मनु, अत्रि इत्यादि।
३	वैश्य		ब्रह्माकी	जंघासे	०	मनु, याज्ञवल्क्य, हारीतऔर वसिष्ठ
					खेती, पशुपालन, वाणिज्य और ब्याज।	मनु, याज्ञवल्क्य, गौतम और वसिष्ठ।
४	शूद्र		ब्रह्माके	चरणसे	०	मनु, याज्ञवल्क्य,हारीत और वसिष्ठ।
					द्विजातियोंकी सेवा इनके अभावमें शिल्पकर्म	मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि इत्यादि।
५	अंबष्ठ		ब्राह्मण	वैश्य कन्या	चिकित्सा	मनुस्मृति
				वैश्या *विवाहिता		वसिष्ठ बौधायन और याज्ञवल्क्य।
				कन्या	खेती, लकडा, सना और शस्त्र	औशनस।
६	निषाद वा पारशव		ब्राह्मण	शूद्रा कन्या	मछलीमारना	मनुस्मृति।
				शूद्रा	०	याज्ञवल्क्य,गौतम, बौधायन
				पारशवी	वनैलेमृगोंको वध करना	औशनस स्मृति।
				विवाहिता शूद्रा	शिवादि आगमविद्या और मंडल वृत्ति।	,,
७	उग्र		क्षत्रिय	शूद्र कन्या	बिलम रहने वाले जीवोंका हिंसा	मनुस्मृति।
				विवहिता शूद्रा	०	याज्ञवल्क्य।
				शूद्रा	०	वसिष्ठ और बोधायन।
				,,	चोबदार	औशनस।
८	सूत		क्षत्रिय	ब्राह्मण कन्या	रथ हांकना	मनु और बृहद्विष्णु।
				ब्राह्मणी	०	याज्ञवल्क्य, गौतम, वसिष्ठ और बौधायन
				विवाहिता ब्राह्मणा	०	औशनस
९	मागध		वैश्य	क्षत्रिया	वाणिज्य	मनुस्मृति।
			,,	,,	०	याज्ञवल्क्य
			शूद्र	,,	प्रशंसाकरना	बृहद्विष्णु।
			वैश्य	ब्राह्मणा	०	गौतम. औशनस
			शूद्र	वैश्या	प्रशंसा और वैश्यका सेवाकरना	बौधायन

* जहां विवाहिता शब्द है वहां विवाही हुई जहां विना विवाही है वहां व्यभिचारसे उत्पन्न हैं।

सं०	जाति		पिता	माता	जीविका	स्मृति
१०	वैदेह		वैश्य	ब्राह्मणी	अन्तःपुरकी रक्षाकरना	मनु, वृहद्विष्णुस्मृति
			”	”	०	याज्ञवल्क्य, बौधायन
			शूद्र	वैश्य	०	गौतम
			”	”	बकरी भैंस और	
			”	”	गौ पालनकरना	औशनस
११	आयोगव		शूद्र	वैश्या	काठछीलना	मनुस्मृति
			”	”	०	याज्ञवल्क्यस्मृति
			”	”	रङ्गवतारण	वृहद्विष्णु
			वैश्य	क्षत्रिया	०	बौधायन
			”	”	वस्त्रबुनना तथा कांसीकी व्यापार	औशनसस्मृति ।
१२	क्षत्ता		शूद्र	क्षत्रिया	बिलमें रहनेवाले जीवोंका वध करना	मनुस्मृति
			”	”	०	याज्ञवल्क्य
			”	”	०	बौधायन
१३	चाण्डाल		शूद्र	ब्राह्मणी	मुर्दा उठाना और शूली देना	मनुस्मृति
			”	”	०	याज्ञवल्क्य, व्यास, गौतम वसिष्ठ, बौधायन.
			”	”	वध योग्यका शूली देना	वृहद्विष्णु
			”	”	मल उठाना	औशनस
१४	आवृत		ब्राह्मण	उग्रकन्या	०	मनुस्मृति
१५	आभीर		ब्राह्मण	अम्बष्ठकन्या	०	मनुस्मृति
१६	धिग्वण		ब्राह्मण	आयोगव कन्या	चमडेका काम	मनुस्मृति
१७	पुक्कस		निषाद	शूद्रा	बिलके जीवोंका वध	मनुस्मृति
			”	”	व्याधका काम	बौधायन,वृहद्विष्णु
१८	कुक्कुटक		शूद्र	निषादी	०	मनु, बौधायन०
१९	श्वपाक		क्षत्ता	उग्रा	मुर्दे फेंकना और शूली देना	मनुस्मृति
			उग्र	क्षत्ता स्त्री	०	बौधायन
२०	वेण वेणुक वंसफोर		वैदेह शूद्र सूत	अम्बष्ठा क्षत्रिया ब्राह्मणी	मृदंग आदि बजाना	मनुस्मृति बौधायन वसिष्ठ औशनस
२१	भूर्जकंटक मृज्जकंटक	जिसको आवन्त्य वाटधान औरशैख कहतेहैं			०	मनुस्मृति
			व्रात्य ब्राह्मण	सवर्णा स्त्री	०	गौतमस्मृति
			ब्राह्मण	वैश्या	०	”
२२	झल्ल मल्ल निच्छिविनट करण खस और द्रविड		व्रात्य क्षत्रिय	सवर्णा स्त्री	० ०	मनुस्मृति

सं०	जाति	पिता	माता	जीविका	स्मृति
२३	सुधन्वा	व्रात्य	सवर्णा स्त्री	०	मनुस्मृति
	आचार्य कारूप विजन्मा मैत्र और सात्वक	वैश्य		०	,,
२४	सैरिन्ध्र	डाकू	आयोगवी	मृगादिवध और सेवावृत्ति	मनुस्मृति
२५	मैत्रेय	वैदेह	आयोगवी	प्रातःकालके समय राजाकी प्रशंसा करना	मनुस्मृति
२६	मार्गव दास तथा कैवर्त	निषाद	आयोगवी	नाव चलाना	मनुस्मृति
२७	कारावार	निषाद	वैदेही	चमडेका काम	मनुस्मृति
२८	पाण्डुसोपाक	चाण्डाल	वैदेही	बांसका काम	मनुस्मृति
२९	आहिंडिक	निषाद	वैदेही	०	मनुस्मृति
३०	सोपाक	चाण्डाल	पुक्कसी	जल्लादका काम	मनुस्मृति
३१	अन्त्याव-सायी	चाण्डाल	निषादी	श्मशानका काम	मनुस्मृति
		शूद्र	वैश्या	०	
३२	मेद	वैदेह	निषादी.	वनेले पशुओंका वध	मनुस्मृति
३३	अन्ध्र	वैदेह	कारावरी	वनेले पशुओंका वध	मनुस्मृति
३४	चुञ्चु	०	०	वनेले पशुओंका वध	मनुस्मृति
३५	मृद्गु	०	०	वनेले पशुओंका वध	मनुस्मृति
३६	मूर्धावसिक्त	ब्राह्मण	क्षत्रिया	०	याज्ञवल्क्य, गौतम
३७	माहिष्य	क्षत्रिय	वैश्या	०	याज्ञवल्क्य और गौतम
३८	करण	वैश्य	शूद्रा	०	याज्ञवल्क्य, गौतम
३९	रथकार	माहिष्य	करणजातिकी स्त्री	०	याज्ञवल्क्य
		वैश्य	शूद्रा	०	बौधायन
		क्षत्रिय	क्षत्रियका विना व्याही ब्राह्मणी स्त्री	शूद्रधर्मी	औशनस
४०	दास	ब्राह्मण	शूद्रकन्या	०	पाराशर
४१	नाई	ब्राह्मण	शूद्रकन्या	०	पाराशर
			विनाव्याही	केशकाटना	औशनस
४२	ग्वाल	क्षत्रिय	शूद्रकन्या	०	पाराशर
४३	आर्धिक	ब्राह्मण	वैश्यकन्या	०	पाराशर
४४	धीवर	वैश्य	क्षत्रिया	०	गौतमस्मृति
४५	यवन	क्षत्रिय	शूद्रा	०	गौतम
४६	रोमक	वैश्य	ब्राह्मणी	०	वसिष्ठ
४७	पुल्कस	वैश्य	क्षत्रिया	०	वसिष्ठ
		शूद्र	क्षत्रिया	सुराका व्यापार	गौतम, औशनस
४८	चर्मकार	सूत	क्षत्रिया	०	औशनस
४९	श्वपच	चाण्डाल	वैश्यकन्या	कुत्तापालनाऔरउसकामांसखाना	,,
५०	ताम्रोपजीवी	आयोगव	ब्राह्मणी	०	,,
५१	सूनिक	आयोगव	क्षत्रियकन्या	०	,,

सं०	जाति		पिता	माता	जीविका	स्मृति
५२	उद्बन्धक		सूनिक	क्षत्रिया	वस्त्रधोना	"
५३	पुलिन्द		वैश्य	विनाव्याहीक्षत्रिया	पशुमांसवेचना	बृहत्पाराशर
५४	रजक		पुल्कस	वैश्यकन्या	०	औशनस
५५	रजक		शूद्र	विनाव्याहीक्षत्रिया	०	"
५६	नर्तकतथा गायक		रजक	वैश्या	०	"
५७	चर्मोपजीवी		वैदेहिक	ब्राह्मणी	०	"
५८	सूचकऔर पाचक		वैदेहिक	क्षत्रिया	०	"
५९	चक्री	तेली	शूद्र	विनाव्याही वैश्या	तेल खली और लवण वेचना	"
६०	सुवर्ण		ब्राह्मण	विवाहिताक्षत्रिया	सवार सेनापति तथाऔषधीवेचना	"
६१	भिषक्		ब्राह्मण	विनाव्याहीक्षत्रिया	वैद्यक और ज्योतिष	"
६२	नृप		ब्राह्मण	वि० क्षत्रिया	०	"
६३	गूढ	गोज	नृप	क्षत्रिया	क्षत्रिय धर्मी	"
६४	कुंभकार	कुम्हार	ब्राह्मण	विना व्याही वैश्या	मिट्टीके वर्तन वनाना	"
६५	मणिकार		क्षत्रिय	विना व्याही वैश्या	मोती और मणियोंका काम करना	"
६६	शुण्डिक		ब्राह्मण	विना० शूद्रा	शूली देना	"
६७	सूचक		वैश्य	विवाहिता शूद्रा	०	"
६८	तक्षक	वढई	सूचक	ब्राह्मण कन्या	शिल्पकर्म और गृहनिर्माण	"
६९	मत्स्यबंधक		सूचक	क्षत्रिय	०	"
७०	कटकार		वैश्य	वि०शूद्रा	०	"
७१	शवर		वैश्य	०	०	बृहत्पाराशरीय धर्म

अब अन्य ग्रन्थोंसे अम्बष्ठादिकी जाति और जीविका लिखते हैं। उनमें पहले वारह मिश्रजातियोंकी उत्पत्ति कहते हैं।

उक्तञ्च जातिविवेके-मूर्द्धावसिक्तः १।

क्षत्रियाविप्रसंयोगाज्जातो मूर्द्धावसिक्तकः।
स करोति मनुष्याणां चिकित्सां क्षत्रियोधिकः॥ १॥

लघूशनसा वृत्तिश्चोक्ता-

अथ वर्णक्रियां कुर्वन्नित्यनैमित्तिकीः क्रियाः। अश्वं रथं हस्तिनं वा वाहयेद्वै नृपाज्ञया॥ सैनापत्यं भेषजं च कुर्याज्जीवनवृत्तिषु॥ २॥ आयुर्वेदमथाष्टांगं तन्त्रोक्तं धर्मतश्चरेत्। ज्योतिषं गणितं वापि कायिकीवृत्तिमाचरेत्॥ ३॥

(स्कान्दे)

भाषार्थः—जातिविवेकमें लिखा है क्षत्रियामें ब्राह्मणसे मूर्द्धावसिक्त होता है, वह क्षत्रियसे अधिक गिना जाता है और चिकित्सा उसकी वृत्ति है ॥ १ ॥ लघुउशनामें उसकी जीविका लिखी है कि वह अपने वर्णोंकी क्रिया करता हुआ तथा नित्यनैमित्तिक कर्म करता हुआ अश्व रथ हाथियोंके चलानेका कार्य करै जीवनके लिये सेनापतिका कार्य तथा चिकित्सा करै ॥ २ ॥ स्कन्दमें लिखा है आठों अंगों सहित आयुर्वेदको पढकर वैद्यकको धर्मानुसार करै, और ज्योतिष और गणितभी उसकी आजीविका है ॥ ३ ॥

अथाम्बष्ठः २ ।

वैश्यस्त्रीद्विजसम्भूतोम्बष्ठः स्यादनुलोमतः । अन्येभ्यो वैश्यजातिभ्यः षट्कर्मस्वधिकः स्मृतः ॥ ४ ॥ मणिमन्त्रौषधिप्राणिरक्षणं च प्रकीर्तितम् ॥ वरवाजिगजादीनां चिकित्सा तस्य जीविका ॥ कृष्णाजीवी शस्त्रजीवी तथैवाग्रे प्रनर्तकः ॥ ५ ॥

(जातिविवेके)

नृपायां विप्रतश्चौर्यात्संजातो यो भिषक् स्मृतः ।
अभिषिक्तो नृपस्याज्ञां प्रतिपाल्य तु वैद्यकम् ॥ ६ ॥

(उशना)

ब्राह्मणसे वैश्यकी ब्याही कन्यामें अम्बष्ठ होता है यह अनुलोमसे उत्पन्न है यह दूसरी वैश्यजातियोंसे छः कर्ममें अधिक है ॥ ४ ॥ मणि मन्त्र औषधियोंद्वारा प्राणियोंकी रक्षा तथा श्रेष्ठ वाजि हाथी आदिकी चिकित्सा करनी उसकी आजीविका है, कृषि, शस्त्र और नृत्यशिक्षणभी इसकी आजीविका है ॥ ५ ॥ उशना कहते हैं कि ब्राह्मणद्वारा चोरीसे क्षत्रियकी कन्यामें उत्पन्न हुआ भी एक प्रकारका अम्बष्ठ है, यह भी राजाकी आज्ञासे चिकित्सा आदि उपरोक्त कर्मोंको करै ॥ ६ ॥

अथ पारशवनिषादः ।

ब्राह्मणाच्छूद्रकन्यायां निषादः पारशवोऽपि वा ॥
स भवेन्मत्स्यघाती च लोके राजाज्ञया सदा ॥ ७ ॥

लघुवृहदुशनसौ—

शूद्रायां विधिना विप्राज्जातः पारशव उच्यते ॥ भद्रकालीं समाश्रित्य पूजनाज्जीवनं स्मृतम् ॥ ८ ॥ अन्यच्च—द्विजातिशुश्रूषा धान्याध्यक्षता पारशवस्य च ॥ तस्यां वै चौरसंगत्या निषादो जात उच्यते ॥ ९ ॥ ब्राह्मणोढाशूद्राज्जातः पारशवो माभूदिति ।निषादसंज्ञाकरणम् ।

अब तीसरे पारशव निषादको कहते हैं, ब्राह्मणसे शूद्रकी कन्यामें पारशव निषाद होता है, लोकमें राजाकी आज्ञासे उसका काम मच्छी मारना है ॥ ७ ॥ लघुवृहत् उशना स्मृतिमें भी यही लिखा है कि ब्याही शूद्रामें ब्राह्मणके द्वारा निषाद पारशव होता है, भद्रकालीके आश्रित हो पूजनसे निर्वाह करै ॥ ८ ॥ और जगह लिखा है कि पारशवका कर्म द्विजातिकी शुश्रूषा और धान्यकी अध्यक्षता है, उसी शूद्रामें

चौर संगतिसे निषादकी उत्पत्ति होती है, ब्राह्मणकी विवाही शूद्रामें उत्पन्न पारशव निषाद नहीं है इस-कारण निषाद संज्ञाके निमित्त यह श्लोक है ॥ ९ ॥

माहिष्यः ४ ।

वैश्यायां क्षत्रियाज्जातो माहिष्यस्त्वनुलोमतः ॥ अष्टाधिकारनिरत-श्चतुःषष्ट्यंगकोविदः ॥ १० ॥ व्रतबंधादिकास्तस्य क्रियाः स्युः सकला विशः ॥ ज्योतिषं शाकनं शास्त्रं स्वरशास्त्रं च जीविका ॥ १२ ॥

वैश्या स्त्रीमें क्षत्रियद्वारा माहिष्य जाति उत्पन्न होती है, यह अष्टांगके अधिकारी हैं और ६४ कला-ओंको जाननेवाले होने चाहिये । इनकी व्रतबंधादि क्रिया वैश्योंके समान होनी चाहिये । ज्योतिषविद्य शकुनशास्त्र स्वरशास्त्र इनकी आजीविका है ॥ १२ ॥

उग्रः (रावत, राउत, भाषायाम्) ५ ।

जातिविवेके-शूद्रीक्षत्रिययोरुग्रः क्रूरकर्मेति गीयते । स शास्त्राभ्यास-कुशलो संग्रामकुशलो भवेत् ॥ १३ ॥ तया वृत्त्या स जीवन्सन् शूद्र-धर्मांश्च पालयेत्॥ द्विजातीनां पालनार्थी यतीनां चोग्र उच्यते ॥१४॥

क्षत्रियसे शूद्रकी कन्यामें क्रूर आचार विहारवाला क्षत्र और शूद्रासे मिश्रित उग्र जातिका पुरुष होता है, यह शास्त्र और संग्रामके काममें कुशल होता है ॥ १३ ॥ इसीवृत्तिसे आजीविका करता हुआ यह शूद्रधर्मोको पालन करै, द्विजाति और यतियोंकी सेवा इसका धर्म है, उग्रको राउत भी कहते हैं ॥१४॥ (रजपूत इति ख्यातो युद्धकर्मविशारदः) यह रजपूत नामसे भी विख्यात है ।

वैतालिकः करण चारण (नटवा) ६ ।

वैश्यवीर्येण शूद्रायां जातो वैतालिकाभिधः ॥ करणोऽसौ च विज्ञेयो न्यूनो वै शूद्रधर्मतः ॥ १५ ॥ राज्ञां च ब्राह्मणानां च गुणवर्णन-तत्परः ॥ संगीतकामशास्त्रश्च स्वरशास्त्रश्च जीविका ॥ १६ ॥

वैश्यके वीर्यसे शूद्रामें वैतालिक होता है इसीको करण भी कहते हैं, यह शूद्रधर्मसे न्यून है ॥ १५ ॥ इनकी जीविका राजा और ब्राह्मणोंके गुणवर्णनकी है, संगीतशास्त्र, कामशास्त्र और स्वरशास्त्र इनकी आजीविका है, इसीके देशभेदसे मनुमें कहे झल्ल, मल्ल, निच्छिवि, नट आदि नाम हैं ॥ १६ ॥ इस प्रकार यह छः अनुलोम कहे, अब छः प्रतिलोम कहते हैं ।

आयोगवः (पाथरवट इनारा चूनारा) ७ ।

वैश्यस्त्रीशूद्रसंयोगाज्जातोयोगवसंज्ञकः ॥ स शूद्राद्धीयते धर्मे पाषाणे-ष्टककर्मकृत् ॥ १७ ॥ स कुर्यात्कुट्टिमां भूमिं चूर्णेनैवास्य जीवनम् ॥ ग्रन्थान्तरे-सोऽपि सिन्दूलकश्चैव मंजिष्ठरंगकारकः । तेन रंगेण

वासांसि सदा चित्राणि रंजयेत् ॥ चतुर्वर्णविहीनोऽसौ चान्त्यजः परिकीर्तितः ॥ १९ ॥

वैश्यकी स्त्रीमें शूद्रसे आयोगव पुत्र होता है, वह धर्ममें शूद्रसे न्यून है, वह पाषाण और ईंटोंका कर्म करनेवाला वा पत्थर तोडनेकी आजीविकावाला होताहै कदाचित् यही ईंटपज और चूनपज कहाते हैं ॥ १७ ॥ ग्रन्थान्तरमें कहाहै कि यही दूसरे स्थानोंपर सिन्दूल कहाते हैं, यह मंजीठका रंग निकालते और उससे कपडे रंगा करते हैं, यह चारों वर्णोंसे भिन्न अन्त्यजके समान हैं ॥ १९ ॥

क्षत्ता, पारधी, निषादः ८ ।

क्षत्रिणी शूद्रसंयोगात्क्षत्तारं जनयेत्सुतम् । स निषाद इति ख्यातः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ २० ॥ शूद्राचारविहीनश्च पापर्द्धिनिरतः सदा । वागुरापाशपाणिः स मृगबन्धनकोविदः ॥ २१ ॥ अरण्यपशुजातीनां पक्षीणां चान्तको वने । क्रोधान्वितो मधुमांसविक्रयाद्वृत्तिरीरिता २२

क्षत्रियामें शूद्रके संयोगसे क्षत्ताकी उत्पत्ति होतीहै उसको निषादभी कहते हैं, वह वर्णाश्रमके धर्मोंसे बाहर है ॥ २० ॥ शूद्रोंके आचरणसे भी विहीन सदा पापकर्मोंमें रत रहनेवाला जाल और पाश हाथ लिये मृगोंको वध और बंधन करनेवाला ॥ २१ ॥ तथा वनके पशु पक्षियोंका नाशक क्रोधस्वभाव और मधुमांस वेचकर आजीवन करनेवाला होता है ॥ २२ ॥

चाण्डालः ९ ।

ब्राह्मण्यां शूद्रवीर्येण जातश्चाण्डाल उच्यते । अपपात्राश्च कर्तव्या धनमेषाश्च गर्दभाः ॥ २३ ॥

ब्राह्मणीमें शूद्रके समागमसे उत्पन्न हुआ पुत्र चाण्डाल कहाता है, यह अपपात्र है इनको कोई पात्र न छुडावै और गधोंसे मल ढोवैं, इनका स्पर्श करना निषिद्ध है (सर्वेषामेव स्पर्शैश्च सचैलं स्नानमाचरेत्) इनके स्पर्शसे सवस्त्र स्नान करना चाहिये पीछे ५१-५७ श्लोकतक मनुद्वारा इनकी वृत्ति लिख चुकेहैं २३

मागधः १० ।

जातिविवेके-क्षत्रिणी मागधं वैश्याज्जनयामास वै सुतम् । स बन्दीजन इत्युक्तो व्रतबंधादिवर्जितः ॥ न्यूनता शूद्रधर्मेभ्यस्तस्य जीवनमुच्यते ॥ २४ ॥

वैश्यसे व्याही क्षत्रिया मागधको उत्पन्न करतीहै इसीको बन्दीजन कहतेहैं इनके व्रतबन्धादि नहीं होते शूद्रधर्मोंसे भी इसमें न्यूनता है ॥ २४ ॥

कथालंकारगद्यादिषड्भाषासु कलाक्रमः ॥
गद्यपद्यानि चित्राणि विरुदानि महीभुजाम् ॥ २५ ॥

यह कथा अलंकार गद्य पद्य कलाओंमें कुशल चित्र काव्य रचनेमें कुशल राजाओंके यहां स्तुति करनेकी जीविका करतेहैं ॥ २५ ॥

वैदेहिकः ११ ।

ब्राह्मण्यां जायते वैश्याद्योऽसौ वैदेहिकाभिधः ॥ शुद्धान्ते रक्षणं राज्ञां कुर्यादनुपमं हि सः ॥२६॥ सामान्यवनितापोष्यस्तासां भाटी च जीविका ॥ तस्योक्तसर्वधर्माणां नाधिकारोऽस्ति कस्यचित् ॥२७॥ पण्यांगनानां राज्ञाञ्च कुर्यात्संगं तदिच्छया ॥ स एव तासां प्राणेशो नान्यः कान्तोऽपि तत्पतेः ॥ चतुःषष्टिकलाकामशास्त्रं तदनुजीवनम् ॥ २८ ॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्न हुआ वैदेहिक होता है, शुद्धान्तमें राजाकी रक्षा करना उसका कार्य है, सामान्य स्त्रियोंका पोषण और उनकी आयसे आजीवन ही कर्तव्य है, इसका भी किसी धर्मविशेषमें अधिकार नहीं है, पण्य स्त्री तथा राजाओंके समीप स्थिति उनकी इच्छासे कर सकते हैं, उन पण्यस्त्रियोंके यही पति होतेहैं यही प्राणेश होतेहैं, चौंसठ कला तथा कामशास्त्रसे इनका आजीवन होता है, यह ग्यारहवां वैदेहक है ॥२६-२८॥

सूतः १२ ।

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतो प्रातिलोम्येन जायते ॥ गजबन्धनमश्वानां वाहनं कर्म सारथेः ॥ २९ ॥ वैश्यधर्मेषु सूतस्य नाधिकारः क्वचिद्भवेत् ॥ जातिवि०-क्षत्रियाणामसौ धर्मं कर्तुमर्हत्यशेषतः ॥ किंचिच्च क्षत्रजातिभ्यो न्यूनता तस्य जायते ॥ ३० ॥

ब्राह्मणीमें क्षत्रियद्वारा प्रतिलोमतासे सूतजाति उत्पन्न होती है । गजबंधन,अश्वोंका वाहन और सारथ्य इसकी आजीविका है, वैश्यधर्ममें इसका कुछभी अधिकार नहीं है । जातिविवेकमें लिखा है यह सब क्षत्रियोंके धर्म कर सकताहै, परन्तु क्षत्रियजातिसे यह कुछ न्यून है, यह बारहवां है । ॥२९-३०॥

मूर्धावसिक्तोऽम्बष्ठश्च निषादो ब्रह्मतः क्रमात् ॥ माहिष्योग्रौ क्षत्रियतोऽनुलोमः करणो विशः ॥ ३१ ॥ आयोगवश्च क्षत्ता च चाण्डालः शूद्रसंभवः ॥ विशो मागधवैदेहौ नृपात्सूतो विलोमजः ॥ ३२ ॥

मूर्धावसिक्त, अम्बष्ठ और निषाद यह क्रमसे ब्राह्मणद्वारा क्षत्रिया वैश्य और शूद्रामें होतेहैं, माहिष्य और उग्र क्षत्रियसे वैश्या और शूद्रामें होते हैं और वैश्यसे शूद्रामें करण होता है, यह अनुलोम हैं । आयोगव क्षत्ता और चांडाल यह शूद्रद्वारा क्रमसे वैश्या क्षत्रिया और ब्राह्मणीमें उत्पन्न होते हैं, मागध और वैदेह वैश्यद्वारा क्षत्रिया और ब्राह्मणीमें होते हैं और क्षत्रियसे ब्राह्मणीमें सूत होता है ॥३१॥ ३२ ॥

अथाष्टादशसमूहः (शालव्य मणिकार मीनाकार) १३ ।

जातिविवेके-कायस्थजातेर्वनितां मालाकारोऽभिकामयेत् ॥ तस्यां यस्तेन पुत्रः स्यात्स शालव्य इति स्मृतः ॥ कान्ताशयेषु रचयेद्ध-

जदन्तककाविकः ॥ ३३ ॥ स हीनः शूद्रधर्मेभ्यो मणीन्विरचयेत्सदा ॥ स्फाटिकान्दारजादींश्च कुर्यात्तद्द्रव्यजीविकाः ॥ ३४ ॥

कायस्थ जातिकी स्त्रीको यदि माली कामना करै तो उसका जो पुत्र हो वह शालक्य कहाता है, यह चोरीसे उत्पन्न पुत्र है, यह स्त्रियोंके शयनस्थानमें हाथीदांतकी वस्तु बनानेका व्यापार करनेवाला होता है, यह शूद्रधर्मोंसे हीन बिल्लौर तथा लकडीके काम करनेकी आजीविकावाला होता है, लघूशनाने वैश्य कन्यामें क्षत्रियद्वारा चोरीसे उत्पन्न पुत्रको मणिकार लिखा है, यह मीनाकार कहाता है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

कांसारः (कसेरा) १४ ।

पद्मपुराणे कालिकामाहात्म्ये-

सोमवंशो महाराजः कृतवीर्यात्मजोऽर्जुनः।तस्यान्वये समुत्पन्ना वीरसेनादयो नृपाः ॥ ३५ ॥ तेषामप्यन्वये शूराः कांस्यवृत्त्युपजीविनः ॥ कांसारा इति विख्याताः कालिकायजने रताः॥३६॥ अपरश्चैव कांसारो गोपीनाथेन दर्शितः।वैश्यस्त्रीद्विजसम्भूता कन्यकाम्बष्ठकाभिधा॥३७॥ सा त्वम्बष्ठा द्विजाश्लिष्टा जनयेत्तनयं रहः ॥ स कासार इति ख्यातो सततं कालिकां यजेत् ॥ ३८ ॥ कांस्यपात्राणि चित्राणि रचयेज्जीवनाय च ॥ शूद्रधर्मेण सर्वत्र स्थितिरस्य विधीयते ॥ ३९ ॥ कांसारो द्विविधः प्रोक्तो राजजन्मा तथेतरः । तत्राद्यो राजसंस्कार्यो अन्त्ये पंच प्रकीर्तिताः ॥ ४० ॥

(इति कासारः)

चन्द्रवंशमें कार्तवीर्यार्जुन नामवाला एक राजा हुआ है उसके वंशमें वीरसेनादिक राजा हुए हैं, उसके वंशके कुछ क्षत्रिय कांसीकी वृत्तिसे आजीविका करते हैं, वे कसेरे कहाते और कालिकाके पूजनमें तत्पर रहतेहैं, गोपीनाथने और एक कसेरेका वर्णन किया है कि वैश्यकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे जो अम्बष्ठ नामक कन्या उत्पन्न हुई वह अम्बष्ठाद्विजातिसे छिपकर जिस सन्तानको उत्पन्न करै वह कसेरा होताहै; वह निरन्तर कालिकाका पूजन कियाकरै और आजीविकाके लिये भिन्न २ प्रकारके कांसीके वर्तन बनावै, इसकी स्थिति शूद्रधर्मके समान है । यह दो प्रकारके होते हैं, एक क्षत्रियजन्मा, एक संकर इनमें पहलेके सब क्षत्रियसंस्कार और इतरके पांच संस्कार होते हैं ॥ ३९-४० ॥

कीनाटः १५ ।

शूद्राक्षत्रिययोर्जातः पारशवाख्यश्च यो नरः ॥ सा सूते क्षत्रियात्पुत्रं विद्वांसं ताम्रकुट्टनम् ॥ संसर्ग इह कांसारैः कुर्यात्स तु विशेषतः ॥ ॥ ४१ ॥ घट्टनं ताम्रपात्राणां तत्पर्यावर्तजीवनः ॥ शास्त्रे कीनाट इत्युक्तो लोके तांबटसंज्ञकः ॥ ४२ ॥

शूद्रामें क्षत्रियसे उत्पन्न पारशव होताहै, पारशव जातिकी स्त्रीमें क्षत्रियसे ताम्रकुट्टन नाम पुत्र होता है, इसकी संगति कसेरोंके साथ होतीहै, तांबा कूटना और उसके पात्र बनाना इनका काम है, इनका नाम तांवट कहा जाता है शास्त्रमें यह कीनाट कहाते हैं ॥ ४१॥४२ ॥

आवृतः (कुंभार) १६ ।

शूद्राक्षत्रिययोर्जाता वनितोग्राभिधानिका ॥ ब्राह्मणाज्जनयेत्पुत्रमावृतं कुंभकारकम् ॥ स शूद्राद्धीयते धर्मे घटयेन्मृण्मयान् घटान् ॥ ४३ ॥

शूद्रामें क्षत्रियसे उग्रा नामकी स्त्री यदि ब्राह्मणसे पुत्र उत्पन्न करै तो वह आवृत वा कुंभार नाम पुत्रको उत्पन्न करती है वह धर्ममें शूद्रसे कुछ कम है और मट्टीके घडे वनाना उसका काम है ॥ ४३ ॥

पारशवः १७ ।

शूद्रां शयनमारोप्य ब्राह्मणो यात्यधोगतिम् ॥ जनयेद्ग्राम्यधर्मेण यं तस्यां पार्शवं सुतम् ॥स शूद्र इति विख्यातस्तद्धर्मेण च वर्तनम् ४४

शूद्राको शयनमें आरोपण करके ब्राह्मण अधोगतिको प्राप्त होताहै और उससे जो पारशव नामक पुत्र उत्पन्न होताहै वह एक प्रकारका शूद्र है और उसी धर्मसे उसको वर्तना चाहिये ॥ ४४ ॥

स्वर्णकारस्य तस्यैव स्नानं शौचं पवित्रकम् ॥
शौचं शूद्रस्य धर्मेण वर्तनं तस्य च स्मृतम् ॥

(जा० वि०)

उस स्वर्णकार पारशवका स्नान करना ही शौच और पवित्रता है शूद्रके समान शौच और उसी धर्मसे वर्तना उसका कार्य है ।

उल्मुक (लोहकार) १८ ।

यो मागधीक्षत्रिययोर्जात उल्मुकसंज्ञकः ॥
स लोहकर्मणा जीवेद्वर्णतो हीन एव सः ॥ ४५ ॥

मागधी स्त्री क्षत्रियके संगसे जिस पुत्रको उत्पन्न करतीहै वह लोहेके कर्मसे आजीवन करै, यह भी वर्णसे हीन है यह लोहकार अठारहवां है ॥ ४५ ॥

रथकार (वढई) १९ ।

माहिष्येण करण्यान्तु रथकारः प्रजायते ॥ नैवोपनयनं तस्य शूद्रधर्माद्बहिः क्वचित् ॥ वर्तनं शूद्रवृत्त्या च लोके शिल्पस्य शास्त्रवित् ४६

(जाति० वि०)

माहिष्यद्वारा करणीमें रथकार होताहै उसके यज्ञोपवीत नहीं होता, यह शूद्रधर्मसे भी कहीं वाहर माना जाताहै, शूद्रवृत्तिसे वर्तना और शिल्पशास्त्रद्वारा आजीवन करना इसकी वृत्ति है पीछे रथकार मीमांसा लिख चुकेहैं ॥ ४६ ॥

सिंदोलः २० ।

वांदिनीशूद्रसंयोगाज्जातः सिन्दोलकाभिधः ॥ वर्णतो हीन एव स्यान्मांजिष्ठारंगकारकः ॥४७॥तेन रंगेण वासांसि चित्राणि रचयेत्सदा॥

हस्तलेख्यैः प्राकृतिकं द्विधा तच्चित्रसाधनम् ॥ ४८ ॥ (स एव सूचिकः ख्यातः कर्तरीसूचिकार्जकः)

वंदिनीमें शूद्रके संयोगसे सिन्दोल नाम पुत्र होताहै, यह भी वर्णधर्मसे हीन है, मजीठका रंग निकाल कर उस रंगसे अनेक प्रकारके वस्त्र रंगता है, हाथसे लिखकर तथा प्राकृत चित्रों द्वारा इसका आजीवन है यही रंगसाज है कहीं छीपी कहाता है ॥ ४८ ॥

सौषिर २१।

आभीरीकुक्कुटाभ्यां यो जातः सौषिरसंज्ञकः ॥
स कुर्याच्च शरीराणां वसनान्यात्मवृत्तये ॥ ४९ ॥

आभीरी स्त्री और शूद्रसे निषादीमें उत्पन्न पुत्र सौषिर जातिवाला उत्पन्न होता है, यह २१ वां है यह रेशमीने वस्त्र बनाकर जीविका करै ॥ ४९ ॥

नीली २२।

कुक्कुट्याभीरसंयोगात् नीलीकर्ता स कथ्यते ॥ ५० ॥

कुक्कुटीमें आभीरके संयोगसे नीलका करनेवाला उत्पन्न होता है यह नीली २२वां है ॥ ५० ॥

किंशुक २३।

जातो निषादवीर्येण धिग्वण्यां किंशुकाभिधः ॥ वनान्तरे वसेत्तत्र वंशच्छेदनतत्परः ॥ ५१ ॥ तैलपात्राणि कुर्वीत वंशपर्वमयान्यपि ॥ वंशविक्रयतो लब्धं तद्द्रव्यं जीवनं स्मृतम् ॥ ५२ ॥

ब्राह्मणसे आयोगवकी कन्यामें धिग्वणी होती है उसमें निषादसे उत्पन्न किंशुक होता है, वह वनोंमें बांस काटनेका काम करै, और बांसोंकी नलकीके तैलपात्र बनावै, और बांस बेचे, यही उनकी आजीविका है ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

सांखिल्य, शौण्डिकक, वाबराः २४।

मार्गानापितयोर्जातो योऽसौ सांखिल्यसंज्ञकः ॥ हीनः स गुह्यकेशानां कुर्याद्वपनमंजसा ॥ ५३ ॥ जलौकांस्तु विशृंगाणि शराकष्टे प्रयोजयेत् ॥ वातपित्तकफादीनां विकारेषु यथाक्रमम् ॥ ५४ ॥ तनुरोमाणि च रहः सर्वाण्येव तु वापयेत् ॥ मंगलाचारयुक्तः स्यात्प्रयतात्मा जितेन्द्रियः ॥ ५५ ॥

मार्गा स्त्रीमें नापितसे उत्पन्न सांखिल्य होता है, यह निरन्तर गुह्यस्थानोंके केशोंको वपन करनेवाली जाति है, वात, पित्त और कफादिके विकारोंमें जोंक और सींगी लगाना इनका काम है, तथा शरीरके अन्य स्थानोंके रोमभी वपन करते हैं, यह मंगलाचारसे युक्त और जितेन्द्रिय रहैं, यह नाईसिंगी भी कहाते हैं, (मार्दलिककी स्त्रीका नाम मार्गा है) ॥ ५३-५५ ॥

पांशुलः २५ ।

निषादनारीसंयोगात्पांशुलो नाम जायते ॥ स पौष्टिकेति संज्ञो हि शणसूत्रविधायकः ॥ कर्त्ता च गोणिपट्टानां जीविका तस्य तद्धनम् ॥५६॥

निषादकी स्त्रीमें नापितसे पांशुल नाम पुत्र होता है, यह पौष्टिक भी कहाता है और सनके काम करनेवाला सनकी बोरी और टाट बनाकर आजीविका करनेवाला होता है ॥ ५६ ॥ (यह २५ वां है । ममाटामी इसको कहते हैं । पौष्टिक कहीं दोलावाहक भी कहा जाता है ।)

सन्दोलः २६ ।

विप्रस्वीकृतसंन्यासमारूढः पतितो भवेत् ॥ ब्राह्मणीं कामयेद्रंडां यस्तस्यां जनयेत्सुतम् ॥५७॥ सन्दोलः कर्मचाण्डालस्तत्स्पर्शात्पातकम्महत् ॥ महापर्वतदुर्गेषु वीथीचतुष्पदादिषु ॥ ५८ ॥ हर्म्याणि पुरमार्गं च रम्यं देवालयं तथा ॥ वापीकूपतडागानां प्रवाहानां च सर्वशः ॥ खननं जीवनार्थाय तस्य प्रोक्तं मनीषिभिः ॥ ५९ ॥

कोई ब्राह्मण संन्यासी होकर पीछे पतित होकर विधवा घरमें डालकर उससे जो पुत्र उत्पन्न करै उसका नाम भी सन्दोल है, यह कर्मचाण्डाल है, इसके स्पर्शसे वडा पातक लगता है, यह महापर्वत दुर्गमस्थान गली चौराहे महल पुर मार्ग देवालयोंके अगाडीके बहिर्भागोंमें बुहारी दें सफाई करैं, तथा बावडी, कुएँ, तालाव, जलके प्रवाहोंमें खुदाईका काम करैं, यह इनकी आजीविका है ॥ ५७ ॥ ५९ ॥ यह कर्मचाण्डाल चूहरा २६ वां है)

रोमकः २७ ।

आवर्तनार्यां सूताद्वै संजातो रोमसंज्ञकः ॥ स क्षारोदकमानीय बद्ध्वा केदारखण्डके ॥ तज्जातं लवणं तस्य जीवनं लवणविक्रयः ॥ ६० ॥

आवर्त जातिकी स्त्रीमें सूतसे उत्पन्न पुरुष रोमक होता है, यह खारी पानी लेकर क्यारियोंमें भरकर उसका नमक बनावे, और उनसे उत्पन्न हुए नमकको बेचकर अपनी आजीविका करै ॥ ६० ॥ (इसको लोकमें लोणार कहते हैं यह २७ वां है) ॥

वंधुलः २८ ।

जातो मैत्रयशुक्रेण जांघिकायां तु यः सुतः ॥
असौ वंधुलसंज्ञो वाऽधमः सर्वासु जातिषु ॥
सुवर्णकारविपणे धूल्यां हेमं स पश्यति ॥ ६१ ॥

मैत्रेयके वीजसे जांघिल नामकी स्त्रीमें जो पुरुष उत्पन्न होता है यह वंधुल कहाता है, सब जातियोंमें अधम है यह सुनारोंकी दुकानोंमें बुहारी देकर धूरिमें सोनेके किणके ढूंढा करते हैं यही इनकी वृत्ति है लोकमें इनको झारा कहते हैं ॥ ६१ ॥

कुक्कुट क्रोधिक, टांकसाली २९ ।

निषादकन्यकाशूद्रसंयोगाज्जनयेत्सुतम् ॥ कुक्कुटः क्रोधकश्चैव इति

प्रोक्तो द्विसंज्ञकः ॥६२॥ टंकशालासु सर्वत्र नाणकानां विधायकः॥ जीवनायाष्टधातूनामन्त्यजैः समतां व्रजेत् ॥ ६३ ॥

निषादकन्या शूद्रके संयोगसे जिस पुत्रको उत्पन्न करती है, वह कुक्कुट तथा क्रोधिक नामवाला है, वह टंकशालामें सिक्के बनानेका काम करता है, अष्ट धातुओंके व्यापारसे अपना आजीवन करै। सोना चांदी, तांबा सीसा बंग (रांग) कांसी तीक्ष्णक (लोहभेद) मुंडान्त लोह यह आठ धातु हैं, मंडूर लोट और किट्टक यह तीन उपलोह कहाते हैं॥ ६२ ॥ ६३ ॥

ठठार ३०।

मेदवंशस्य वनिता हस्तकेन यदा रहः॥ पुत्रं ठठारं सा सूते नीचः सर्वासु जातिषु ॥६४॥ त्रपुलाक्षाताम्रकांस्यैः कुर्यात्पाणिविभूषणम्॥ तद्विक्रयतो लब्धं तदेव जीवनं स्मृतम्॥ ६५॥

मेदवंशकी स्त्री यदि छिपकर हस्तकके साथ समागम करै तो उसका नाम ठठार होता है, यह सब जातियोंसे निकृष्ट होता है, सीसा, लाख, तांबा, कांसीके गहनोंका बनाना इसका काम है, और उनके बेचनेसे जो धन मिलै यही उसकी आजीविका है (यह ठठार चोतार तीसवां है)॥ ६४ ॥ ६५ ॥

सुवर्णं तारं ताम्रं वा गोवंगं कांस्यतीक्ष्णकम्॥
मुण्डोत्तमष्टकं लोहं कांस्यकं पचयोदिति॥ ६६॥

सोना, चांदी, सीसा, तांबा, रांगा, इस्पात, मुण्डलोह, साधारण लोह और कांसी, इनके गलानेकी भी इस जातिकी आजीविका है॥ ६६॥

मांग ३१।

मेदस्य वनितासंगाच्चांडालो जनयेत्सुतम्॥ स मांगः श्वपचो लोके अस्पृश्यः सीसकारकः॥ जीविका तस्य कथिता आर्द्रगोचर्म रज्जुभिः॥ ६७॥

मेदकी स्त्री कोलिनी उससे जो चाण्डालका समागम हो तो उससे मांग जातिका श्वपच उत्पन्न होता है, यह भी स्पर्शके योग्य नहीं है, गीले गौआदिके चमकी रस्सी बनाकर वृत्ति करना जीविका है ॥६७॥ यह इकतीसवां है।

इति अष्टादशसमूहः।

अथ सप्तसमूहः (मालाकारः)

जातिविवेके—वैश्याक्षत्रिययोर्जातो माहिष्य इति कीर्त्यते॥ स माहिष्यो निषादस्त्रीसंगमाज्जनयेत्सुतम्॥ ६९॥ मालाकारमसौ लोके मालाकारः प्रकीर्तितः॥ कुसुमानि च शाकानि वर्द्धयेद्धनवृद्धये॥ ७०॥ स हीनः शूद्रधर्मेभ्यः सप्तहे सप्तके प्रभुः॥ ७१॥

जातिविवेकमें लिखा है कि वैश्यकी स्त्रीमें क्षत्रियसे माहिष्यकी उत्पत्ति होती है वह माहिष्य निषादकी स्त्रीका संग करके जिस पुत्रको उत्पन्न करता है, उसको लोकमें मालकार वा माली कहते हैं, फूलवाडी और शाक बागोंमें लगाकर हारादि गूथकर वेचना उसकी वृत्ति है यह शूद्र धर्मसे हीन सत्समूहमें प्रथम वा उत्तम वा अग्रज है ॥ ६९-७१ ॥

शांवरीक, साली ३३ ।

संगता वेनवनिता वर्त्तकेन यदा रहः । तस्याः शांवरिकाभिख्यः पुत्रोऽसौ लोकसम्मतः ॥ स हीनस्त्वन्तजातिभ्यः शुचिवासोविधायकः ७२

वेन अर्थात्–नटकी स्त्री छिपकर यदि आवर्तक (गायक वैष्णव ब्राह्मण) के साथ संग करके जिस पुत्रको उत्पन्न करै उसको शाम्वरिक कहते हैं, वह अन्त्य जातिसे हीन और शुद्ध वस्त्रोंका अर्थात्–वस्त्रोंके शुद्ध करनेके विधान करनेवाला होता है (यह ततीसवां है) ॥ ७२ ॥

शाल्मल ३४ तंवोली ।

क्षात्रेणी कन्यका वैश्याज्जनयामास वंदिनम्॥सा वन्दिनी द्विजात्सूते तनयं मंगुसंज्ञकम् ॥ ७३ ॥ स मंगुः कुम्भकारस्य माहिष्यां यदि कामयेत्॥ तस्यां च जनयेत्पुत्रं स स्याच्छालमलाभिधः ॥७४॥ स हीनः शूद्रधर्मेभ्यः पर्णवल्लीविधायकः ॥ ताम्बूलवल्लीसम्भूतं द्रव्यं तस्योपजीवनम् ॥ ७५ ॥

क्षत्रियकी कन्या वैश्यसे वंदीनामा पुत्र उत्पन्न करती है वह वंदीकी स्त्री द्विजसे संग करके मंगुनामक पुत्रको उत्पन्न करती है वह मंगु यदि कुंभारीकी कामना करके उससे पुत्र उत्पन्न करै तो उसको शालमल कहते हैं। यह शूद्रधर्मसे हीन पर्णवल्ली अर्थात् पानीकी आजीविकावाला होता है, (यह तम्बोली चौतीसवां है) परन्तु इससमय जो तम्बोली जाति इधर है इसका आचार विचार उच्च जातियोंकासा है। इनके हाथका लोग पान खाते हैं, तब यह ताम्बूल वणिकोंके भेदमेंसे होसकते हैं, यह लोग अपनेको संकर नहीं मानते हैं, परन्तु हम देखते हैं कि लोग इनके हाथका पान तमाखू जब ग्रहण करते हैं तब जलपानमें क्या दोष रहा और इनके यहां ब्राह्मण लोग भोजन करते पाये गये हैं, तब इनका जल चलनेसे यह त्याज्य जाति नहीं पाई जाती ॥ ७३-७५ ॥

तेली ।

उग्रापारशवाभ्यां यो जातो मौष्कलकाभिधः । वहेदसौ तैलयंत्रमुत्तमश्चान्त्यजातितः ॥ ७६ ॥ जीविका तस्य कथिता शुद्धतैलस्य विक्रयः॥तिलाहिंसायंत्रखाकरणात्पापसंभवः ॥७७॥अतो मौष्कलिको नित्यं निर्वास्यो नगराद्वहिः ॥ तथाच स्मृतेः–तैलयंत्रेक्षुयंत्राणां यावच्छब्दः प्रवर्तते॥तावत्कर्म न कुर्वीत शूद्रान्त्यपतितस्यच ॥७८॥

उग्रा स्त्रीमें पारशवसे मौष्कल उत्पन्न होता है, यह कोलू पेरनेका काम करै, यह अन्त्यज जातिसे उत्तम है, शुद्ध तेल और खल वेचना इनकी आजीविका है, जो कि कोलूपेरनेका शब्द पापो-

त्पादक है इस कारण मौञ्कलिकका निवास नगरसे बाहर होना चाहिये, जैसा कि स्मृतियोंमें लिखा है, कोलू और गन्ने पेरनेके कोलूका शब्द जबतक सुनाई आता रहै तथा जबतक शूद्र अन्त्यज और पतित समीप हों तबतक वैदिक कर्मोंका आरंभ न करै ॥ ७६-७८ ॥ (यह तेली पैंतीसवां है)

इस समय एक तेली जाति जो-राजपूताना विहार प्रान्तमें पायी जाती है उसमें लोग धनाढ्य तथा अच्छे २ व्यापारी भी हैं। एक पत्रभी उस जातिका तेली समाचारके नामसे निकलता है, इनके हाथका जल लोग ग्रहण नहीं करते हैं, पर सुनते हैं, राजपूतानेमें इनके हाथकी मिठाई खाते हैं, बंगालमें तेली जाति काद्र कहाती हैं शास्त्रोंमें उशना और जातिविवेक ग्रन्थोंमें तो इस जातिके लिये सांकर्यही है, परन्तु दूसरे लोग इस विषयमें क्या प्रमाण रखते हैं, सो अभी विदित नहीं पर स्मृतिशास्त्र तो यह दोही भेद मानता है, संभव है कि एक दूसरी कोई सदाचारी जाति भी तेली नामसे ग्रहण की जाति हो। जैसा कि राठोर, चोहान, जैसवार, राठी आदि शब्दोंके पीछे भी तेली शब्दका प्रयोग देखा जाता है, संभव है कि विहारादि प्रान्तके तेली कोई अन्य जातिके हों तेलका व्यापार करनेसे तेली कहाने लगे हों, परन्तु शुद्ध तैलकार जातिकी उत्पत्ति इसी प्रकार है।

प्राणिकार, चमार ३६।

निषादधिग्वणीजातः प्राणिकारोचराभिधः। स हीनस्त्वन्तजातिभ्यो जीवनं तस्य चोच्यते॥ ७९॥ आर्द्राणि गोमहिष्यादिचर्माणि तत्र शोषयेत्। लक्षणं सारसमुच्चये–ग्रामाद्बहिः प्रकर्तव्यं वर्तुलं कुण्डमेव च॥ ८०॥ गोचर्मणा महिष्याश्च चर्मणा तस्य जीवनम्॥ उपानदंगत्राणानि कुर्यादश्वस्य पाखरा॥ ८१॥

निषादसे धिग्वर्णीमें उत्पन्न हुआ प्राणीकार होता है, यह अन्त्य जातिसे हीन है, इसकी वृत्ति गाय भैंसके गीले चर्मोंको सुखाना है, सारसमुच्चयमें इसका लक्षण लिखा है कि ग्रामसे बाहर एक गोलाकार कुंड बनाया जाय, उसमें यह लोग चमडे धोया करैं, जूते अंगत्राण (शरीर रक्षाके दूसरे पदार्थ चर्मके दस्ताने पैरके पिण्डरीरक्षक पदार्थ) और घोडेकी जीन आदि बनाना इनका काम है यह चमार (छत्तीसवां) है॥ ॥ ७९-८१ ॥ (धिग्वणी मोची जातिकी स्त्री कहाती है)

पुल्कस, कोली ३७।

जातो निषादवीर्येण शूद्रयां पुल्कससंज्ञकः। अन्त्यजानां तु सदृशो धर्मेषु विविधेषु च॥ ८२॥ अरण्यजीवघातेन वृत्तिःस्याद्देहपोषणे। तेन पापर्द्धिका तस्य कथिता कविदूषिता॥ ८३॥

निषादके वीर्यसे शूद्रामें पुल्कस (पुक्कस) होता है यह सब धर्मोंमें अन्त्यजोंके समान है, वनके जीवोंको मारना इसकी वृत्ति है, इस पापवृत्तिके कारण कविजनोंने इसको दूषित कहा है ८२॥ ८३॥ (यह सैंतीसवां है)

श्वपच ३८।

चाण्डालः पुल्कसीसंगाच्छ्वपचं जनयेत्सुतम् । स्थानान्तरं स नगरे कर्तुमर्हत्यशेषतः ॥ ८४ ॥ गोगर्दभपशूनाञ्च ग्रामान्निःसरणं वहिः ॥ सा जीविकास्य कथिता सर्वतो लोकविश्रुता ॥ ८५ ॥

चाण्डाल पुरुष पुल्कसीके संयोगसे पच नाम पुत्रको उत्पन्न करता है, वह भी नगरके वाहर ही अपना स्थान वनावे ग्रामसे वाहर मृतक गऊ गर्दभ आदिको ग्रामके वाहर लेजाना इसकी आजीविका है, (यह अडतीसवां है लोकमें महार घेट भी कहाता है) ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

अथान्त्यजसप्तसमूहः ।

रजक (धोवी) ३९ ।

उग्रावैदेहिकाभ्यां च जातो मंजूषसंज्ञकः ॥ रजकः शूद्रतो हीनः प्रथमश्चान्त्यजेषु च॥८६॥वस्त्रनिर्णेजनं कुर्यादात्मवृत्त्यर्थमेव च ॥८७॥

(इति मंजूषः, रजकः)

उग्रा स्त्रीमें वैदेहकसे मंजूष जातिका पुरुष उत्पन्न होताहै इसको रजक कहते हैं, यह अन्त्यज जातिमें प्रथम है, यह अपनी आजीविकाके लिये वस्त्रोंको धोया करै, यह लोकमें धोवी कहाता है॥८६॥८७॥

दुर्भर, चमकार, ढोहोर ४० ।

धिग्वण्यायोगवाभ्यां यो जातो दुर्भरसंज्ञकः ॥ स कुर्याच्छागलां सम्यग्दृढां च करपत्रिकाम् ॥ ८८ ॥ अन्यानि चर्मपात्राणि जीवनाय प्रकल्पयेत् ॥ अन्त्यजातिषु मुख्योऽसौ कीर्तितो जातिसंग्रहे ॥ ८९ ॥

धिग्वणीमें आयोगवसे दुर्भर संज्ञक पुत्र होताहै, यह छागादि चर्मकी मशक दृढरूपसे वनावै, यह मशक वह है जो लकडीसे वांधकर जलमें पौराई जाती हैं, इनसे पुरुष नदीपार होते हैं, और भी यह चमडेके पात्र अपने जीवनके लिये वनावैं, यह जातिसंग्रहमें अन्त्यजोंमें मुख्य कहा गया है (यह चालीसवां है) ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

नट ४१ ।

शिलीन्ध्रो क्षत्रिणीं गच्छेज्जनयेन्नटसंज्ञकम् ॥ हीनोऽसौ शूद्रधर्मेभ्यो नाटकानि समभ्यसेत्॥९०॥कौल्हाटिकः स एवोक्तो वहुरूपीति विश्रुतः । अन्यः कोऽपि नटो भूत्वा न शूद्रैः समतां व्रजेत् ॥ ९१ ॥

शिलीन्ध्र क्षत्रियाके संग गमन करै तो नटसंज्ञक पुत्र होता है, यह शूद्रधर्मोंसे हीन नाटकका अभ्यास करनेवाला होताहै, इसीको कोहलाटक और वहुरूपिया कहते हैं, नाटकके खेलसे आजीविका करै कोई यदि अन्य वर्ण नाटय करै तो वह शूद्रकी समताको प्राप्त नहीं होता ॥ ९० ॥ ९१ ॥

किंशुक,वुरुड ४२ ।

कुरुविन्दांगना सूते धीवरात्किंशुकाभिधम् ॥
असावन्त्यज इत्युक्तो वंशपात्रानुजीवनः ॥ ९२ ॥

सनके टाट आदि बनानेवाला कुरुविन्द कहाता है, उसकी स्त्री धीवरसे किंशुक पुत्रको उत्पन्न करती है, यह भी अन्त्यज है, बांसके पात्र पिटारी आदि बनाना इनकी आजीविका है ॥ ९२ ॥

कैवर्त, धीवर, तारु ४३ ।

आयोगवी पारशवाभ्यां यः स्यात्कैवर्तकाभिधः । स हीनस्त्वन्तजातिभ्यो जालं स्वीकृत्य सर्वशः ॥ मत्स्याञ्जलचरानन्यान्घातयेदात्मवृत्तये ॥ ९३ ॥ नाव्यं कर्म प्रवहणं नद्यां वर्षासु वाहयेत् ॥ नदीमुत्तारयेल्लोकाँस्तेभ्य श्चैच्छदनं मुदा ॥ ९४ ॥

आयोगवीमें पारशव जातिके पुरुषसे कैवर्त होताहै, यह अन्त्य जातिसे हीन जाल बनाकर उसके द्वारा पक्षी और जलचरोंको आजीविकाके लिये पकडते हैं, तथा वर्षाकालमें नदीमें नाव डालकर लोगोंको पार करते हैं, उससे इनकी आजीविका चलती है, यह धीवर मल्लाह नामसे विख्यात हैं ॥ ९३ ॥ ९४॥

मेद, गौण्ड, गौंद. ४४ ।

कारावारी यदा नारी वैदेहाज्जनयेत्सुतम् । स मेदसंज्ञः कथितस्तुल्योऽसौ फलजीविना । वितण्डवेशः स वसेदरण्ये वृक्षपर्वते ॥ ९५ ॥

यदि कारावारी स्त्री वैदेहिकसे पुत्र उत्पन्न करै तो उसकी मेद संज्ञा होती है, यह फलजीवीके समान है, यह कुदालधारी वेशसे वन और वृक्षोंवाले पर्वतोंमें निवास करै, यह कुदाली जाति है (कारावारी, कोली, वैदेहक शय्यापालक है) ॥ ९५ ॥

भिल्लः (भील) ४५ ।

कारावारी यदा नारी धीवराज्जनयेत्सुतम् । स भिल्लसंज्ञः कथितः कन्दमूलादिजीवनः ॥ बीभत्सवेशः स वसेदरण्ये वृक्षपर्वते ॥ ९६ ॥

कारावारी स्त्रीमें धीवरसे जो पुत्र उत्पन्न होताहै, वह भील कहाता है, कन्द मूल फल उसका जीवन है, वह भयावने वेशसे वन वृक्षयुक्त पर्वतोंमे निवास करते हैं ॥९६॥ (यह ४५ पैंतालीसवां है)

अथैकादशसमहः ।

तेरवा मच्छ ४६ ।

मेदस्य वनितासंगाच्चाण्डालो जनयेत्सुतम् ॥ तेरवामच्छसंज्ञो वै प्रोक्तः स च द्विसंज्ञकः ॥ ९७ ॥ नृमांसभक्षणं कार्यं विक्रयं तस्य जीवनम् ॥ जीविका सास्य कथिता स वसेन्नगराद्बहिः ॥९८॥

मेदकी स्त्रीके संगसे चाण्डाल जिस पुत्रको उत्पन्न करता है, वह तेरवा और मच्छ कहाता है, यह मुर्दोंका मांस खाते और बेंचते हैं, यह भी नगरसे बाहर रहैं, यही इनकी जीविका है । (यह जंगली जाति है) ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

शिरस् हाडी ४७ ।

अन्धस्य वनितासंगाच्चाण्डालो जनयेत्सुतम् ॥ प्लवसंज्ञो स हाडीति

लोके सर्वत्र विश्रुतः॥९९॥ अश्वोष्ट्रगर्दभानां च मृतानां कालयोगतः॥ कुर्यान्निर्हरणं सोऽपि मांसभक्षणजीवनः ॥ १००॥

अन्त्यकी वनिताके संगसे चाण्डालद्वारा जो पुत्र उत्पन्न होता है वह प्लवसंज्ञक स्थिरसंज्ञक और हाडी नामवाला होता है ऐसा विख्यात है, अपनी मृत्युसे मरेहुए घोडे ऊंट और गदहोंको यह ग्रामसे वाहर लेजाय मांसभक्षणही इनका जीवन है। (यह हडियामांग ४७ वां है) ॥ ९९ ॥ १०० ॥

क्रव्यादि ४८ ।

प्लवस्त्रियां श्वपाकेन जातो क्रव्यादिरुच्यते । स प्रेतवह्निसंरक्षां कुर्या-त्सा जीविका स्मृता॥सीमायां स वसेन्नित्यं सीमारक्षणतत्परः॥१०१॥

प्लवकी स्त्रीमें श्वपाकसे उत्पन्न हुआ पुत्र क्रव्यादि कहाता है, श्मशानमें प्रेताग्नि (चिताकी अग्नि) रक्षाका कार्य करै, और नगरकी सीमाकी रक्षाकरता हुआ सीमा जहां ग्रामकी हो उस वनमें निवास करै ॥ १०१ ॥ (हाडीका नाम प्लव भी है)

हस्तिक (शिकारी) ४९ ।

क्रव्यादिवनितासंगाच्चण्डालाद्धस्तको भवेत्॥मृगवद्गुलश्येनादिपाक्षि-पालनतत्परः॥तेषां विक्रयतो लब्धं धनं तज्जीवनं स्मृतम् ॥ १०२ ॥

क्रव्यादकी स्त्रीमें चाण्डालसे जो पुत्र होता है उसको हस्तक कहते हैं वह मृगके समान गुलशर और श्येनादिको पालन करै उनके वेचनेसेही उसकी आजीविका है(यह हस्तिक४९वां है वह आखेटकारी)है१०२

कायक ५० ।

हस्तकस्त्री श्वपाकेन कायक जनयेत्सुतम् ॥ कुर्याद्राजावरोधस्य मलापहरणं सदा ॥ वृत्तिरेषास्य कथिता निवासो नगराद्वहिः ॥१०३॥

हस्तककी स्त्री श्वपाकसे कायक नाम पुत्रको उत्पन्न करती है यह सदा भीतरी स्थानोंके कूडे उठाया करै और स्थान स्वच्छ किया करै, यही इसकी आजीविका है यह नगरसे वाहर निवास करै ॥ १०३ ॥

शाशेष ५१ ।

चाण्डाली म्लेच्छसंयोगाच्छाशेषं जनयेत्सुतम् ॥ वध्याच्छिन्नांगमादाय वाणेग्विपणिषु भ्रमेत्॥तद्द्रव्यं जीविका तस्य तद्वासो नगराद्वहिः॥१०४॥

चाण्डाली और म्लेच्छके संयोगसे शाशेष नामक पुत्र होता है, मारे गये अपराधी पुरुषके छिन्न अंगको लेकर वाजारमें घूमना इसका काम है, उस नौकरीसे जो द्रव्य मिलै यह इसकी आजीविका है॥ १०४ ॥

भारुड ५२।

पुल्कसीडोम्बसंयोगाद्भारुडो नाम जायते ॥ ग्रामद्वारं स संरक्षेद्रात्रौ वीथीषु संचरेत् ॥ १०५ ॥ वाचमुच्चारयेदित्थमहो जाग्रत जाग्रत ॥ भेरीडिंडिमझंकारैः पौराञ्जागरयेन्निशि ॥ १०६ ॥ सा जीविकास्य कथिता राज्ञो गाः परिपालयेत् ॥

पुल्कसी डोमके संयोगसे भारुडनामा पुत्र उत्पन्न होता है, ग्रामके द्वारकी रक्षा करना उसका काम है, रातमें नगरकी गलियोंमें जागते रहो २ कहता हुआ तथा भेरी डिमडिम झनकारोंसे निशामें पुरवासियोंको जगावै, और राजाकी गौओंकी रक्षाकरै, यह इसकी आजीविका है (यह भारुड ५२ वां है)॥१०५।१०६॥

सौनिक (हिंसक) ५३.

सौनिकं कर्मचाण्डालात्सूते दासवधूसुतम् ॥ स कुर्यादजमेषाणां हिंसां तन्मांसविक्रयम् ॥ तद्द्रव्यं जीविका तस्य स हीनस्त्वन्त-जातितः ॥ १०७ ॥

कर्म चाण्डालसे दासवधूके जो सन्तान पैदा हो वह सौनिक कहाता है, यह बकरे और मेंढोंकी हिंसा करके उनके मांसको बेचा करै, जो द्रव्य मिलै उससे आजीविका करै यह अन्त्य जातिसे भी हीन है, इस जातिको कार्तिकमी कहते हैं यह एक प्रकारके हिन्दूकसाई हैं ॥ १०७ ॥

मातंग ५४.

डोम्बिन्यां प्लवसंयोगान्मातंगो नाम जायते ॥ भूतप्रेतपिशाचादिग्रस्तरक्षां समाचरेत् ॥ सा जीविकास्य कथिता स वसेन्नगराद्बहिः॥१०८॥

डोंबिनीमें प्लवके संयोगसे मातंग जाति उत्पन्न होती है, भूत प्रेत पिशाचादिसे ग्रस्त हुए पुरुषोंकी मंत्रद्वारा यह रक्षाकरैं, यह इनकी जीविका है, नगरसे बाहर इनका निवास है ॥ १०८ ॥

अन्त्यावसायी डोम्ब ५५.

निषादवनिता सूते चाण्डालाड्डोम्बसंज्ञकम् ॥ असावन्त्यावसायी च श्मशाननिलये वसेत्॥तत्र रक्षां प्रकुर्वीत प्रेतानां वस्त्रजीवनम्॥१०९॥

निषादकी स्त्रीमें चाण्डालसे डोम्बनामक पुरुष होता है, यह भी नीच है, मरघटमें इसका निवास है, वहां यह मृतकोंकी चिता रखता हुआ उनके ऊपरके वस्त्रोंसे निर्वाह करै, श्मशानमें काष्ठवेचनेकीभी अन्त्यवसायीकी जीविका है ॥ १०९ ॥

गोपकाः ५६.

मातंगीडोम्बसंयोगात् गोपको नाम जायते ॥
दाहभूविक्रयाल्लब्धं धनं तज्जीवनं स्मृतम् ॥ ११० ॥

मातंगी स्त्रीमें डोम्ब पुरुषसे गोपक जाति होतीहै, दाहभूमिसे (श्मशान) से करग्रहण इसकी आजीविका है ॥ ११० ॥

ब्रह्महा मद्यपः स्तेयी तथैव गुरुतल्पगः ॥
एते महापातकिनो यश्च तैः सह संवसेत्॥ १११ ॥

ब्रह्महत्यारा, मद्य पीनेवाला, सोना चुरानेवाला, गुरुस्त्रीगामी और इनका साथी यह पांच महापातकी हैं इनके पूर्वके चार मिलाकर साठ हुए ॥ १११ ॥

अब दूसरी संकर जातियोंको कहते हैं ।

कायस्थ ६१ ।

माहिष्यवनितापुत्रं वैदेहाद्यं प्रसयते ॥ स कायस्थ इति प्रोक्तस्तस्य कर्म विधीयते ॥ लिपीनां देशजातानां लेखनं स समभ्यसेत्॥११२॥ गणकत्वं विचित्रञ्च बीजपाटीविभेदतः ॥ वृत्त्यानया वर्तनं स्यात्कायस्थस्य विशेषतः॥ अधमः शूद्रजातिभ्यः पंचसंस्कारवानसौ॥११३॥

माहिष्यकी स्त्रीमें वैदेहसे जो पुत्र उत्पन्न होता है, वह कायस्थ कहाता है उसका कर्म कहते हैं यह देशकी भाषाओंको सीखकर लिखनेका अभ्यास करै, इनका गणकत्व विचित्र है, बीज पाटीके भेदसे यह विद्या सीखैं कायस्थकी लिखने पढनेकी वृत्ति है, यह शूद्रजातिसे अधम पांच संस्कारवाला है (जातिविवेकमें यह दूसरी कायस्थ जाति है जो संकरोंमें हैं) ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

कायस्थापित ६२ ।

**कायस्थादेव कायस्था विधवा यं प्रसयते ॥
कायस्थापित इत्युक्तस्तद्वृत्त्या तस्य जीवनम् ॥११४॥**

कायस्थ विधवा स्त्रीमें जो कायस्थसे पुत्र उत्पन्न हो वह कायस्थापित कहाता है, लिखने पढनेकी इसकी भी वृत्ति है ॥ ११४ ॥

कुन्तल (नापित) ६३ ।

उग्रामागधसंयोगाज्जातः कुन्तलकाभिधः ॥ स नापित इति प्रोक्तः क्षौरकर्मविधानकृत्॥११५॥ श्मश्रुकृन्तनकृच्चैव नखकृन्तनकोविदः ॥ वृत्त्यानया ग्राममध्ये तिष्ठन् वर्णेषु सेवकः ॥११६॥

उग्रा स्त्रीमें मागधके संयोगसे कुन्तल होता है, इसीको नापित वा नाई भी कहते हैं, यह हजामत बनानेका काम करै, डाढी मूछ बनाने, नखून काटनेका काम करै, इस वृत्तिसे यह चार वर्णोंकी सेवा करताहुआ ग्रामके मध्यमें निवास करै, यह जाति सच्छूद्रोंमें प्रतिष्ठित समझी जाती है, पूर्वकालमें तो इसका वडा मान था, अकेली वह वेटी हजारोंका जेवर पहरे इनके संग आती जाती थी, कनोजिये, सरयूपारी, उमर, राठौर आदि देशभेदसे इनके भी अनेक नाम हैं, गोळा आदिभी हैं । अब नाइयोंकी सभायें वनती हैं,यह भी अब नाई वनना नहीं चाहतेन्यायी वनतेहुए देखिये कहां तक पहुंचते हैं॥ ११६॥

तीर्थनापित ६४ ।

शूद्रकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ॥ अपरो नापितः प्रोक्तः शूद्रकर्माधिकोऽपि सः॥११७॥नराणां नापितो धूर्तः शूद्रेभ्योऽभ्यधिकः स्मृतः । गंगायां भास्करे क्षेत्रे मातापित्रोर्मृतेऽहनि ॥ आधाने सोमपाने च षट्सु क्षौरं विधीयते॥ ११८ ॥

उपरोक्त विधिसे शूद्र कन्यामें उत्पन्न होनेसे और ब्राह्मणद्वारा संस्कारको प्राप्त होनेसे यह दूसरे प्रकारका एक नापित होता है, यह शूद्रकर्माओंसे अधिक हैं ॥ ११७ ॥ नरोंमें नापित बहुत चालाक होता है,

यह शूद्रोंसे अधिक है, गंगामें भास्करक्षेत्रमें माता पिताके मृत दिनमें आधान और सोमपानके दिन क्षौर कर्म करना होताहै, यह तीर्थनापित इसीप्रकार क्षौर करके अपनी आजीविका करै ॥ ११८॥ कहीं (नराणां नापितः क्षतः) ऐसा पाठ है, नरोंमें नापित और क्षतः शूद्रोंसे अधिक है ।

सैरिन्ध्रः शिलीन्ध्रः ६५।

शूद्रादायोगवी जाता वैश्यगर्भसमुद्भवा ॥ आयोगवी सा सैरन्ध्रं कायस्थाज्जनयेत्सुतम् ॥ ११९ ॥ स हीनः शूद्रधर्मेभ्यः सेवां कुर्याद् द्विजातिषु ॥ पादयोः क्षालनं तेषां धम्मिल्लानां प्रसाधनम् ॥ १२०॥ अभ्यंगमर्दनं चैव चन्दनस्यानुलेपनम् ॥ मृगनाभेरिन्दुयोगाच्छृंगार-रचनाद्धनम ॥ १२१ ॥ जीविका तस्य सम्प्रोक्ता तत्स्त्री सैरन्ध्रिका स्मृता । चतुष्षष्ठीकलाभिज्ञा रूपशीलादिसेविनी ॥ प्रसाधनोपचतुरा सैरंध्रीति प्रकीर्तिता ॥ १२२ ॥

शूद्रद्वारा वैश्यासे आयोगवी स्त्री होती है वह आयोगवी कायस्थसे सैरन्ध्र नामक पुत्रको उत्पन्न करती है ॥ ११९ ॥ यह शूद्रधर्मसे हीन है द्विजातियोंकी सेवा करै उनके चरण धोवै, और सेव्योंके केशोंको तैल आदि लगाकर सुधारै ॥ १२० ॥ शरीरमें तेल लगाना, चन्दन लगाना, कस्तूरी और कपूर मिलाकर सेव्योंके शृंगार बनाना यह इसकी आजीविका है ॥ १२१ ॥ इसकी स्त्री सैरन्ध्री कहातीहै, यह चौंसठ कलासम्पन्न रूपशील सेविनी तथा शृंगार बनाने और वेशरचनामें चतुर होती है ॥ १२२ ॥

शिलिन्ध्र, मर्दनः ६५।

क्षत्रिणीमल्लसंयोगाच्छिलीन्ध्र इति जायते ॥
हीनः स शूद्रधर्मेभ्यो जीविकास्यांगमर्दनम् ॥ १२३ ॥

क्षत्रिणीमें मल्लके संयोगसे शिलीन्ध्र होताहै यह शूद्रधर्मसे हीन है अंग मर्दन करना इसकी आजीविका है (यह पैंसठवां है) ॥ १२३ ॥

भाजक, मागध ६६ ।

स्त्री पुष्पशेखरा नाम ब्राह्मणेन सुसंगता ।
सा सूते तनयं सोऽपि भोजको मागधाभिधः ॥
सूर्यपूजारतस्यास्य स्पष्टतः भूर्जकण्ठतः ॥ १२४ ॥

पुष्पशेखरा जातिकी स्त्री ब्राह्मणद्वारा समागम करके भोजक मागध पुत्रको उत्पन्न करती है, यह सूर्यकी पूजा किया करै (यह भूर्जकंठ ६६ वां है) ॥ १२४ ॥

देवलक ६७ ।

तस्य मागधजातेस्तु कन्यका विप्रसंगता । तत्पुत्रः शाश्वतीकश्च कथितो देवलाभिधः ॥ १२५ ॥ प्रतिमां पूजयेद्विष्णोरसौ शंखादिचि-

हितः । सपर्याजनितां तासां द्रविणं तस्य जीवितम् ॥१२६॥अपांक्ते योऽप्यभोज्याम्नो वर्णत्रयबहिष्कृतः । मनुः-देवार्चनपरो विप्रो वित्तार्थी वत्सरत्रयम्। असौ देवलको नाम सर्वकर्मसु गर्हितः॥१२७॥

मागध जातिकी कन्या यदि ब्राह्मण जातिसे समागम करै तो उसका पुत्र शाश्वतीक वा देवलक नामवाला होता है ॥ १२५ ॥ यह शंखादिके चिह्न धारण करके विष्णुकी प्रतिमाकी पूजा कियाकरै, और जो पूजाका द्रव्य आवै उससे आजीविका करै, यह ब्राह्मणोंकी पंक्तिमें बैठकर भोजनकरने योग्य नहीं है, तीन वर्णसे बाहरही है ॥ १२६ ॥ मनुभी यही कहते हैं, यदि ब्राह्मण तीन वर्षतक नौकरी लेकर देवार्चन करै तो देवलक संज्ञा होकर सबकर्मोंमें निन्दित हो जाता है, पूजा तो विना धनलिये करनी चाहिये ॥ ॥ १२७ ॥ (यह देवलक वरुआभी कहाता है)

आभीर (गौली) ६९ ।

माहिष्यस्त्री ब्राह्मणेन संगता जनयेत्सुतम् ॥ आभीरपत्न्यामाभीरमिति ते विधिरब्रवीत्॥१२८॥तेषां संघो वसेद् घोषे बहुशस्यजलाशये॥ आविकं गोमाहिष्यादिपोषयेत्तृणवारिणा ॥१२९॥दुग्धं दधि घृतं तक्रं विक्रयीत धनाय च । विशूद्रेभ्यो न्यूनतो धर्मे तस्य सर्वस्य विश्रुता१३०॥

माहिष्यकी स्त्रीमें ब्राह्मणद्वारा जो पैदा हो वह आभीर है तथा ब्राह्मणद्वारा आभीर पत्नीमें भी आभीरही उत्पन्न होता है इनका समूह घोषमें रहता है जहां बहुतसी घास तृण हो तथा समीपमें जल हो वहां निवास होता है, भेड, बकरी, गौ, महिषी आदिको तृण जलसे पुष्ट करना इनका काम है, दूध, दही, घी, मट्ठा धनकी प्राप्तिके लिये बेचैं, यह धर्ममें शूद्र जातिसे कुछ हीन हैं । बहुतसे लोगोंका मत है कि आभीर शब्दसे बिगडकर अहीर बन गया है, इस जातिमें अनेकों विवाद हैं इससमय कोई अपनेको क्षत्रिय वंशमें कहते हैं, कोई इनको वैश्य वर्णमें कहते हैं, मनुजी अम्बष्ठकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे आभीरकी उत्पत्ति मानते हैं, कोई कहतेहैं कि यह बाबा नन्दके वंशके हैं इनके चौंसठ गोत्र हैं जैसी एक कहावंत है ॥ १२८-१३०॥

चौंसठ गोत्र अहीरके, धुर गोकुलके निकास ॥
बेटे बाबा नन्दके, यह केलि करैं कैलास ॥

श्रीमद्भागवतके देखनेसे विदित होता है, कि श्रीकृष्णजीने वैश्यकी चार प्रकारकी वार्ता कहकर 'गोवृत्तयोऽनिशम्' (द० पू० अ० २४ श्लोक २१) में कहा है कि हमारी निरन्तर गोवृत्ति है अर्थात् वैश्यकी चार वार्तोमेंसे हमारी केवल एक वार्ता है, फिर आगे चलकर कहा है कि हमारे घर जनपद ग्रामादि कुछ नहीं हैं हम नित्य वन शैलके निवासी हैं (वनशैलनिवासिनः) इससे इनमें वैश्यतासे कुछ निकृष्टता पाई जाती है, इनके गोत्र पचेरा, लूणवाल, पारू, गरड, खातोंस्या, लूगेरी आदि हैं, गोकुलमें अहीरोंका कभी संस्कार देखनेमें नहीं आया, श्रीकृष्णजीके संस्कारके लिये स्वयं गर्गजी मथुरासे आये थे, इसलिये आभीर शब्द क्षत्रिय कुलका नहीं है आर्य समाजकी बदौलत यह यज्ञोपवीत पहरते हैं, परन्तु हमारे पास यदि इनके किसी ग्रन्थके प्रमाण आवैंगे तो हम उनको इसग्रन्थमें दूसरीवार लगादेंगे इस समय तो इतनाही लिखना ठीक समझते हैं इस समयतक शास्त्रमें कोई भी प्रमाण आभीरके क्षत्रिय होनेका नहीं मिला है यह जाति विचार कोटिमें है ।

मल्ल ७०।

शुद्धा या क्षत्रिणी सूते व्रात्यक्षात्रियमैथुनात् ॥ पुत्रः स मल्ल इत्युक्तः शूद्रधर्मविधायकः ॥ १३१ ॥ स कुर्याद्राजपुत्रांश्च शस्त्रास्त्रनिपुणान्धनम् ॥ तेभ्यो लब्ध्वात्मवृत्त्यर्थं स्वधर्ममनुपालयेत् ॥ १३२ ॥

व्रात्य क्षत्रियसे शुद्ध क्षत्रियामें मल्ल जातिका पुरुष उत्पन्न होता है, यह शूद्रधर्मा है यह राजपुत्रोंको शस्त्र अस्त्रकी शिक्षा देकर उनसे धन लेकर अपनी आजीविका करै ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ (यह राजगुरु कहाता है)

(वारी) चुच्चूभ ७१।

ब्राह्मण्यां वैश्यजनिता वैदेहीति निगद्यते ॥ सा संगता ब्राह्मणेन चुच्चूभं जनयेत्सुतम् ॥१३३॥ स स्याच्छत्रधरो राज्ञां लोके वारीति कथ्यते ॥ समास्तेषु च वर्णेषु कुर्यात्पानीयविक्रयम् ॥ १३४ ॥ तस्यैव जीविका प्रोक्ता शूद्रधर्मा स जातितः ॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे वैदेही उत्पन्न होती है, यह वैदेही ब्राह्मणसे संगति करके चुच्चुभ पुत्रको उत्पन्न करती है, यह राजापर छत्र लगानेवाला लोकमें वारी कहाता है, यह चारों वर्णोंमें पानी दाम लेकर भरै, उसकी यही आजीविका है, यह जातिसे शूद्र धर्मवाला है (यह ७१ वां हैं) ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

(पौष्टिक) दोलाकार ७२।

द्विजशूद्रीसमायोगान्निषादी वनिता भवेत् ॥ निषादी द्विजतः सूते तनयान्पौष्टिकाभिधान् ॥ १३५ ॥ ते दोलावाहका राज्ञां विशेषाद्द्रुतगामिनः ॥ छागलावाहकास्ते स्युः कावडीवाहका मताः ॥ काहारा इति लोकेस्मिन् गर्दभैरुपजीविनः ॥ १३६ ॥

ब्राह्मणमें शूद्रीद्वारा निषादी कहाती है और निषादीमें ब्राह्मणद्वारा जो सन्तान हो वह पौष्टिक कहाती है वे पालकी सुखपालमें राजादिको लेकर चलते हैं, यह छागलावाहक और कावडीवाहक कहाते हैं, और शीघ्रतासे चलते हैं लोकमें यह कहार कहाते हैं, कहीं यह गर्दभोंपर वस्तुएं लादकर उपजीविका करते हैं, कहीं पानी भरते हैं ॥ १३५ ॥ १३६ ॥

मल्ल ७३।

क्षात्रिणीमल्लसंयोगाज्जातो मल्लाभिधः परः ॥ लब्ध्वायोगवणं सम्यग्बलदर्पेण गर्वितः ॥ १३७ ॥ राज्ञां कौतुकमुत्पाद्य नियुद्धेन धनार्जनम् । कुर्यात् स्ववृत्तिनिपुणान् शूद्रधर्मानशेषतः ॥ १३८ ॥

मल्लके संयोगसे क्षत्रिणीमें मल्ल जाति उत्पन्न होती है यह बडा परिश्रमी बलसे दर्पित होता है॥ १३७॥ राजोंके सन्मुख कुश्ती लडकर धनार्जन करता है, और अपनी वृत्तिकरके सब शूद्रधर्मोंको करै ॥ १३८॥

सुग्रण (सूपकार) ७४ ।

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतः स जात इति कीर्तितः ॥ ब्राह्मण्यामपि वैदेही वैश्याज्जातेति विश्रुता ॥ १३९ ॥ वैदेही सूतसंयोगात्प्रसते सुग्रणं तु सा ॥ लेह्यादीनां चतुर्णांश्च पाकं कुर्याद्यथाविधि ॥ १४० ॥ अन्नानमृतयोगेन मांसस्त्रावकभेदतः॥ रसैः स्वाद्वम्ललवणातिक्तोषणकषायकैः ॥ १४१ ॥ वातपित्तकफादीनां क्षयोपशमकारकैः ॥ स शूद्रधर्मसदृशः सूपशास्त्रविशारदः ॥ १४२ ॥ पार्वतीनलभीमानामन्तेषु परिनिष्ठितः ॥ गुणस्य तस्य कथिता जीविका स्वेन कर्मणा ॥१४३॥

ब्राह्मणोंमें क्षत्रियसे सूत होता है ब्राह्मणीमें वैश्यसे वैदेही कन्या होती है ॥ १३९ ॥ वैदेही और सूतके समागमसे सुग्रण जातिका पुरुष उत्पन्न होता है, यह लेह्य, चोष्य, चर्व्य, पेय चार प्रकारके भोजन यथाविधि बनाते हैं ॥ १४० ॥ अन्नोंके स्वाद अमृतके समान करते हैं, तथा मांस और रसके पदार्थ भी बनातेहैं बडे स्वादिष्ट षड्रसके पदार्थ अम्ल (खाई) लवण, तीखे, चरपरे, कसैले आदि तयार करतेहैं ॥ १४१ ॥ जो वात पित्त कफ तथा क्षयके शान्त करनेवाले है, यह सूपशास्त्रमें बडा कुशल शूद्रधर्मके समान कहा है, यह लोग पर्वतोत्पन्न पुष्परस आदिके व्यवसायी भी होते हैं, उनका शहत लेते अर्क निकालते और बेचतेहैं इसप्रकारसे आजीवन करतेहैं, जहां इनके हाथका कोई नहीं खाता वहां उनके निरीक्षणमें भोजन तयार होता है ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ (यह रावत्रण ७४ वां है)

अंधासिक ७५ ।

ब्राह्मण्यां वैश्यजनितो जातो वैदेहिकाभिधः ॥ तस्य शूद्रांगनासूनुर्जातस्त्वंधासिकाभिधः ॥ १४४ ॥ कुर्यादन्नानि चत्वारि विवृद्धयर्थं समन्ततम् । अन्नविक्रयतो लब्धं तद्धनं तस्य जीवनम् ॥ १४५ ॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्न वैदेहिक होताहै, उस वैदेहिकसे शूद्रकी स्त्रीमें अधासिक होता है। ।१४४॥ यह चार प्रकारके अन्नोंको बेचकर अपना निर्वाह करै, (यह अंधासिक ७५ वां है) ॥ १४५ ॥

वच्छक, गोचारी ७६ ।

वैश्यवीर्येण शूद्रायां जाती सा करणी मता । करणीवैश्यसंयोगाज्जातो वच्छकसंज्ञकः ॥१४६ ॥ स शूद्रधर्मरहितः शाड्वलं गाश्च पालयेत । यत्र यत्र भवेच्छस्यं तत्र तत्र विशेषतः ॥ १४७ ॥

वैश्यके वीर्यसे शूद्रामें करणी होती है, करणीमें वैश्यके द्वारा वच्छक संज्ञक पुत्र होता है, यह शूद्रधर्मसे रहित गांवमें घास खिलाकार गायोंको पालै, जहां २ अधिक घास हो वहां२ गौ लेजाइ चरावै॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ यह ग्वाला गोचारी कहाता है ।

छागालिक, सौलिक ७७ ।

ब्राह्मणो गायको लोके स वैष्णव इतीरितः । शास्त्रे स कटधानाख्यो विप्रस्त्रीगर्भसंभवः ॥ १४८ ॥ कटधानः स मंगुतां कामतो यदि

गच्छति ॥ तयोर्यो जायते पुत्रः स छागलिकसंज्ञकः ॥ १४९ ॥ स हीनः शूद्रजातिभ्यश्छागलान् रक्षयेत्सदा ॥ छागलेभ्यो धनं जातं तस्य तज्जीवनं स्मृतम् ॥ १५० ॥

गानेकी आजीविकावाला ब्राह्मण वैष्णव कहाताहै विप्रस्त्रीके गर्भसे समुत्पन्न होनेसे उसका कटवान नाम शास्त्रोंमें कहाहै, कटवान यदि अपनी इच्छासे (तावडीककन्या सैरन्ध्री) मंगू जातिकी स्त्रीमें गमन करै तो उसके छागलिक नामवाला पुत्र होताहै, यह शूद्रधर्मसे रहित सदा छागलों (भेडों) की रक्षा करै उनसे जो धन मिलै उससे आजीवन करै। यह जाति कदाचित् गडरिया कहातीहै युक्तप्रदेशमें यह भेड बकरी चराते हैं, उनके कम्बल आदि बनातेहैं यह आगरे प्रान्तमें बघेले, बम्बईमें अहिर, नागपुरमें गौली, राजपुतानेमें गूजर, मालवेमें धनगर और डंगर कहाते हैं। धिंगर, मरारिया, बैखटा, निखर, जौनपुरी, इलाहाबादी, चिकवा आदि इनके भेद हैं यदी गडरिये नामवाली जाति छागलिकसे पृथक्धर्म हो तो उसका विचार पृथक् समझना, द्रविड देशमें अतवाडियार भी गडरियेकी जातिका एक भेद है यह व्यापारी है यह अपने आपको शूद्रवर्ण नहीं मानते, हमारे यहां गडरीयोंसे गूजर भिन्न हैं॥ १४८॥ १४९॥

शय्यापालक (सजके) ७८।

मंगुसैरिन्ध्रयोर्जातः शय्यापालकसंज्ञकः ।
जातस्तं सततं राज्ञा शय्याकर्माणि कारयेत् ॥ १५१ ॥

मंगु-तावडीकसे सैरन्ध्रीमें जो होताहै वह शय्यापालक कहाता है, यह राजाओंकी शय्या रचना तथा उसकी रक्षाका कर्म करता हुआ अपनी आजीविका करै, (यह ७८ वां है) ॥ १५१ ॥

मंडल, शुनेधर ७९ (शूणकटा)

कर्मचाण्डालवनिता पुष्पशेखरसंगता । जनयेद्यं सुतं सोऽपि ख्यातो मण्डलकाभिधः ॥ १५२ ॥ युगलं शुनकादीनां धर्तुं योग्यो महीभृताम् । आखेटकपणे तस्य शुनां जीवनमुच्यते ॥ १५३ ॥

डोमकी स्त्री यदी गायक ब्राह्मणसे सन्तान उत्पन्न करै तो मण्डल नामक पुत्रको उत्पन्न करती है, यह राजाओंके कुत्तोंकी जोडियोंकी रक्षा किया करै, शिकारके कार्य और कुत्तोंके द्वारा इनका आजीवन होताहै ॥ १५२ ॥ १५३ ॥

सूत्रधार ८०।

रथकारस्य वनिता आयोगवसमागता । जनयेत्तनयं सोऽपि सूत्रधार इतीरितः ॥ १५४ ॥ जायाजीवश्च शैलूषो नाट्यशास्त्रविशारदः॥ जलमण्डपकादीनि सूत्राणि रचयेत्सदा ॥ १५५ ॥ लोकविस्मयकारीणि स वसेन्नगराद्बहिः । रंगावतारः कर्तव्यो नाट्येन नृपसंसदि ॥ चतुर्विधैरंगहारैर्देशभाषांगसम्भवैः ॥ १५६ ॥

यदि रथकारकी स्त्री आयोगवसे समागम करै तो उसका पुत्र सूत्रधार होताहै, यह स्त्रियोंको नचाकर आजीविका करताहै; इसकारण जायाजीवी कहाताहै, यही शैलूषभी कहाता हैयह नाट्यशास्त्रमें बडा चतुर

होता है, यह जलमण्डपादिस्थानोंको आश्चर्य रूपसे निर्माण करताहै, इसका नाटक आदिका आडम्बर बहुत है, इसकारण यह नगरसे बाहर रहै, राजसभाओंमें रंगावतारमें पहले इसीका काम है, चार प्रकारकी मागधी संस्कृत प्राकृतादि भाषाओंमें नाटक आरंभ करै ॥१५४-१५६॥ (यह रथकार स्त्रीपाथरट कहाता है सूत्रधार८० वां है)

कुरुविन्द ८१ ।

कुक्कुटस्येह वनिता कुंभकारेण संगता । तस्याः सूनुः स विख्यातः कुरुविन्द इति स्फुटम् ॥ १५७ ॥ कौशेयानि स वस्त्राणि रचयेदात्मवृत्तये । तुल्योऽसावन्त्यजातीनं तद्धर्ममनुपालयेत् ॥ १५८ ॥

कुक्कुट पटोलकी स्त्री यदि कुम्हारसे संगति करै तो उसका पुत्र कुरुविन्द कहाता है, यह अपनी आजीविकाके लिये कौशेय वस्त्र तयार करै, यह भी अन्त्यजातियोंके समान है, इससे वही धर्म पालन करै, ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ (कुक्कुटी पटोलकस्त्री, कुरुविन्द लोकमें टकसाली कहाता है)

औरभ्र, धनगर, धरमिगुरु ८२ ।

औरभ्र छागली सूते भूर्जकण्ठाद्धि यं सुतम्। कुर्यादौर्णपटांश्चित्रान्मेषाणां चैव पालनम् ॥ तस्येयं जीविका प्रोक्ता तद्धनेन विशेषतः॥१५९॥

छागली भूर्जकण्ठसे जिस पुत्रको उत्पन्न करती है, वह औरभ्र धनगर कहाता है, यह चित्र विचित्र ऊनके कपडे बनावै, तथा मेषादिको पालकर अपनी आजीविका करै, यह खारी ८२ वां है ॥ १५९ ॥ (छागली छागल रक्षककी स्त्री, भूर्जकंठ वैष्णव गायक ब्राह्मण)

(महांगु कलेकर) ८३ ।

आवर्तवनिता सूते क्षेमकच्चश्च पुत्रकम् । स महांगुरिति ख्यातो उष्ट्रवाहनतत्परः ॥ १६० ॥ उष्ट्राणां पालनं कृत्वा दधिदुग्धस्य विक्रयः । तद्द्रव्येणास्य वृत्तिः स्याल्लोकतः सल्हकः स्मृतः ॥ १६१ ॥

आवर्त-वैष्णव गायककी स्त्री क्षेमक (द्वाररक्षक) से जिस पुत्रको उत्पन्न करती है वह महांगु नामसे विख्यात होता है, यह ऊंटोंका लादना तथा ऊंटोंका पालना आदि करै, तथा दही दूधको बेचै उसी द्रव्यसे इसकी जीविका है, यह महां कलेंकर भी कहाता है ॥ १६० ॥ १६१ ॥

धिग्वणः ८४ ।

वैश्यस्त्रीशूद्रसंयोगाज्जातायोगविकाभिधा ॥ आयोगवीब्राह्मणाभ्यां धिग्वणकसमुद्भवः ॥ १६२ ॥ स चर्मणाश्वपल्याणं यथाशोभं प्रकल्पयेत् । तद्द्रव्यं जीविका तस्य विहिता लोकसम्मता ॥१६३॥ अश्वानां पाखरां सोऽपि कर्तुं चित्रां तथार्हति ॥

वैश्यकी स्त्रीमें शूद्रके संयोगसे आयोगवी होती है, आयोगवीमें ब्राह्मणसे धिग्वणक होता है यह चमडे घोडोंकी पल्याण (जीन) तयार करै और शोभायमान बनावै, उससे जो द्रव्य मिलै उससे अपनी

जीविका चलावै तथा यह घोडोंकी जीन (पाखरा) बहुत विचित्र बनावै, यह मोची जीनगर ९४ वां है॥ १६२ ॥ १६३॥

भस्मांकुर ८५।

शैवा पाशुपताश्चैव महाव्रतपरास्तथा ॥ तुरीयाः कालमुखाः प्रोक्तास्ते वै धर्मपरायणाः ॥१६५॥ आरूढपतितास्ते स्युः शूद्रापण्यांगनारताः॥ तेभ्यश्च ताभ्यः संजाता भस्मांकुर इतीरिताः ॥१६६॥ स जटाभस्मधारी च शिवलिंगं प्रपूजयेत् ॥ ताम्बूलभक्षणं द्रव्यं गावः क्षेत्राणि शालिनी ॥ १६७ ॥ शिवाय प्राणिभिर्दत्ता अन्यत्किमपि भक्तितः ॥ चण्डीशं तदिति ख्यातं तेन तस्येह जीवनम् ॥ १६८ ॥ धारयेच्छिवनिर्माल्यं भक्त्या लोभान्न धारयेत् ॥ भक्षणान्नरकं गच्छेद्भूषणाच्चैव मूढधीः ॥ १६९ ॥

शैव पाशुपत महाव्रतवाले चौथे कालमुख यह जो अपने जिस जिस धर्ममें परायण होते हैं ॥ १६५ । वे अपने धर्ममें परायण हुए यदि परायण पतित होकर शूद्रा वा वेश्यामें रमण करैं, और उनसे उन शूद्रा वा वेश्यामें सन्तान हो तो वह भस्मांकुर कहाती है ॥ १६६ ॥ वे जटा और भस्म धारण किये शिवलिंग आजीविकार्थ पूजैं, ताम्बूल भक्षणके द्रव्य मिठाई पूरी आदि तथा गौ क्षेत्र ॥१६७॥ शंकरके निमित्त जो कुछ भी किसी भक्तिपूर्वक दिया है, यह सब चण्डीश भस्मांकुर ग्रहण करने यही इनकी आजीविका है ॥१६८॥ यह शिवनिर्माल्य इनको भक्तिसे धारण करना चाहिये लोभसे नहीं कारण कि वैसे शिव निर्माल्य भक्षण करनेसे नरक(संसारमें पतन) होना कहा गया है तथा अपने निमित्त शंकरके भूषणोंमेंसे लोभसे बनाना भी मूर्खता है इसमें परम भक्तिसे शिवके प्रसाद रूपसे ग्रहण करना चाहिये, यह चण्डीश लोकगुरु शब्दवाच्य है, शैव पाशुपतोंके धर्म शिवरहस्यमें लिखे हैं ॥ १६९ ॥

(क्षेमक, पडदार, द्वारवटेकारु) ८६।

क्षत्रिणी शूद्रसंयोगात् क्षत्तारं जनयेत्सुतम् ॥ उग्रा शूद्र्यां समुत्पन्ना क्षत्रियादेव केवलात् ॥ १७० ॥ क्षत्तुरुग्रा च जनयेत् क्षेमकं तनयं क्षितौ ॥ स शूद्रधर्मसदृशो द्वाररक्षास्य जीवनम् ॥ १७१ ॥

क्षत्रियामें शूद्रके संयोगसे क्षत्तानामक संतान होती है, और केवल क्षत्रियसे शूद्रामें उत्पन्न सन्तान उग्रा कहाती है, क्षत्तासे उग्रामें जो सन्तान होती है वह क्षेमक कहाती है, वह शूद्रधर्मकी समान द्वाररक्षाका काम करै ॥ १७० ॥ १७१ ॥

भृकुंश ८७।

क्षत्रिणीवैश्यसंयोगाज्जातो मागधकाभिधः ॥ वैश्याशूद्रसमायोगाद्भवेदायोगवः सुतः ॥१७२॥ मागधायोगवाभ्यां च भृकुंश इति जायते। स वर्णबाह्यो धर्मेषु सम्यक् संगतिकोविदः ॥ १७३ ॥ कान्तानां

नृत्यशालासु नृत्यं लास्यं च शिक्षयेत् ॥ जीविका तस्य कथिता तद् द्रव्यं नृत्यकारणात् ॥ १७४ ॥

वैश्यके संयोगसे क्षत्रियामें उत्पन्न सन्तान मागध कहाती है, और वैश्यामें शूद्रसे आयोगव पुत्र होता है, मागध और आयोगव जो सन्तान होती है वह भृकुंश कहाती है, यह धर्मोंमें वर्णसे वाहर है, संगीत शास्त्रमें कुशल होता है, नृत्यशालामें यह स्त्रियोंको संगीत नृत्य और लास्य (नृत्यनाटयभेद सिखावै,) उनसे जो द्रव्य मिलै यही उनकी आजीविका है ॥ १७२–१७४ ॥यही लोकमें नटवा कहाता है ८७ वां है ।

वानगर, निर्मण्डलिक ८८ ।

आभीरीनर्तकाभ्यां यो ग्राम्यधर्मेण जायते ॥ शराणां कंकपत्रैश्च रचना तस्य जीवनम् ॥ १७५ ॥

अभीरीमें नर्तकद्वारा जो ग्राम्यधर्मसे उत्पन्न होताहै वह निर्मण्डलिक वा वानगर कहाता है, यह वाणोंमें कंकपत्र लगाकर अपना आजीवन करै, यही तीरगर और कमानगर कहाते हैं, कमानगर अपना वंश मार्कण्डेय ऋषिसे चला बताते हैं, परन्तु यह वात प्रामाणिक नहीं है ॥ १७५ ॥

वेन ८९ ।

द्विजवैश्यासमायोगाज्जाताम्बष्ठा पुरंध्रिका॥ब्राह्मण्यां जायते वैश्याद्योऽसौ वैदेहिकाभिधः ॥१७६॥साम्बष्ठा जनयेत्पुत्रं वैदेहाद्वेणसंज्ञकम् ॥ स शूद्रधर्मरहितोऽभ्यसेन्नाटयं सलाघवम् ॥ १७७ ॥ जीविका तस्य विहिता हरिमेखलकारणे॥विजयादशमीघस्त्र एतत्कारणमुच्यते॥१७८॥

ब्राह्मण पुरुषसे वैश्य जातिकी स्त्रीमें अम्बष्ठा होती है उसीका नाम पुरन्ध्रिका है, ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्न वैदेहिक होता है, उस अम्बष्ठामें वैदेहिकसे वेण नामवाला पुत्र होता है; यह शूद्रधर्मसे रहित लाघवतासे नाटयशास्त्र सीखै, यह तलवारकी म्यान वा घोडेकी मेखला बनावै, यह चन्द्रावलिकार लाघवी कहाता है, ८९ वां विजयादशमीको इसके शस्त्रोंकी पूजा होती है ॥ १७६–७८ ॥

शुद्धमार्गक, मार्दली ९० ।

वैश्याक्षत्रियसंयोगान्माहिष्या जायतेऽगना । क्षत्रिणीवैश्यसंयोगाज्जातोऽसौ मागधाभिधः ॥ १७९ ॥ स मागधो माहिष्यायाः शुद्धमार्गकसंज्ञकम् । जनयेत्तनयं सोऽपि शूद्रधर्मविनाकृतः ॥ १८० ॥ गीतं चतुर्विधं वाद्यमभ्यसेज्जीवनाय च ॥ १८१ ॥

(संगीतशास्त्रोक्तज्ञेयम् शुद्धमार्गकः मार्दली)

वैश्यामें क्षत्रियके संयोगसे माहिष्या स्त्री होती है, और क्षत्रिणीमें वैश्यसे मागध होता है, मागध माहिष्यासे शुद्धमार्गकसंज्ञक पुत्र उत्पन्न करतीहै यह पुत्र शूद्रधर्मसे भी रहित है,यह अपने जीवनके लिये गीत और चार प्रकारके वाजोंका अभ्यास करै, यह संगीत शास्त्रमें शुद्धमार्गक कहाता है, मार्दली इसीका नाम है ॥ १७९–१८१ ॥(यह ९०नव्वेवां है)

मैत्रेय ९१ ।

शूद्रादायोगवी जाता वैश्यायामिति विश्रुता । ब्राह्मण्यां वैश्यजनितः स च वैदेहिकः स्मतः ॥ १८२ ॥ आयोगवी सा वैदेहान्मैत्रेयं जनये त्सुतम् । स्यादुषासमये नित्यं घण्टावादनतत्परः ॥ १८३ ॥ प्रबोधं नागराणां च कुर्यान्मंगलनिस्वनैः ॥ कलितं भैरवीं गायन् धनं तत्त स्य जीवनम् ॥ १८४ ॥

वैश्यामें शूद्रसे आयोगवी होती है, और ब्राह्मणीमें वैश्यसे वैदेहिक होता है, वह आयोगवी वैदेहिकसे जिस पुत्रको उत्पन्न करै वह मैत्रेय होता है, वह सबेरेके समय उषाकालमें लोगोंको जगानेके लिये निरन्तर घण्टा बजाया करै,तथा मंगलगीत गाकर जगावै, तथा प्रभातकी भैरवी गानेसे जो धन मिलै वही उसकी आजीविका है ॥ १८२-१८४ ॥ (यह प्रातर्गायक मैत्रेय ९१ इक्यानवैवां है)

मंगुष्ठ ९२ ।

कैवर्तजंघकाभ्यां यो जातो मंगुष्ठसंज्ञकः ॥ स स्फोटयेद्बै खडकान् कृत्वा चूर्णं विशेषतः ॥ १८५ ॥ तद्धनं जीवनार्थाय सोऽपि कुर्या-न्निरन्तरम् ॥ न तत्स्पर्शः प्रकर्तव्यः कदाचिदपि मानवैः ॥ १८६ ॥

कवर्तसे जंघका नामक स्त्रीमें मंगुष्ठसंज्ञक पुरुष होता है, यह बडे बडे लट्ठोंको चीरै फाडनेसे जो धन मिलै वही इसका जीवन है इसका स्पर्श मनुष्योंको नहीं करना चाहिये ॥१८५॥ १८६॥

चित्रकारः ९३ ।

कुंभकारधिग्वणीसंगात्पुत्रो यस्तु प्रजायते ॥ स चित्रकारो लोकेऽस्मि-न्नामतः परिकीर्तितः ॥ १८७ ॥ चित्राणि प्रतिबिम्बानि पुरुषा-कृतिमेव च ॥ यत्तद्विक्रयतो लब्धं धनं तस्येह जीवनम् ॥ १८८ ॥

धिग्वणीमें कुम्भकारसे जो पुत्र उत्पन्न होता है वह लोकमें चित्रकार नामसे विख्यात है ॥१८७॥ वह पुरुषादिके चित्र लेखनीद्वारा तथा प्रतिबिम्ब (फोटोग्राफी रूपसे) उतारै उससे जो धन मिलै उसकी आजीविका करै ॥ १८८ ॥ यह प्रतिबिम्बकर्ता भडोवा चितेरा नामसे विख्यात है ।

अहितुंडिक, सर्पीलिये, गारुडी ९४ ।

वैदेहीतनयं सूते निषादादहितुंडकम् ॥ सप्तानामन्त्यजातीनां स धर्मे सदृशः स्मृतः ॥ १८९ ॥ महाफणीन्करंडेषु क्षिप्त्वा विषधरान्बहून् । तैः खेलनं जीविका तु कथितास्य विशेषतः ॥ १९० ॥

निषादसे वैदेहिक जातिकी स्त्रीमें अहितुण्डक होता है यह सात अन्त्यज जातियोंके समान धर्म-वाला है ॥ १८९ ॥ यह बडे बडे विषधर सांपोंको पिटारियोंमें रखकर तमाशा दिखावै और उस तमाशेसे मिले धनसे अपनी आजीविका चलावै ॥१९०॥

सौष्कल (कलाल) ९२ ।

आभीरीवेनसंयोगात्सौष्कलं जनयेत्सुतम् ॥ असावधर्म इत्युक्तः सर्व-धर्मबहिष्कृतः ॥ सुरां कृत्वा विक्रयीत कुर्यात्तद्धनजीवनम् ॥१९९॥

आभीरीमें वेनके संयोगसे सौष्कल नामक पुत्र होता है, यह सुराकरण अधर्म है इसकारण वह सब धर्मोंसे वाहर है, यह सुराकर्ता लोकमें कलाल कहाता है ।

इराकी-कोई इनको राकी भी कहते हैं यह कलवारोंकी सन्तान अपनेको कहते हैं,यह अपना निकास पारसियोंसे वताते हैं उनके इराक़ प्रान्तसे निकास बताते हैं यह तमाखूका भी धंधा करते हैं गोरखपुरमें इस जातिके वहुतसे प्रतिष्ठिंत लोग हैं ।

इदिगा-यह दक्षिणदेशमें ताडी खैंचनेका काम करनेवाली जाति है । कलवार-यह जाति युक्तप्रदेश विहार वंगाल आदि प्रान्तोंकी है, इनके यहां शराव खैंचना और वेचनेका व्यवसाय वहुत पुराना है, परन्तु आजकलके कुछ इसजातिके सज्जन इसकामसे सर्वथा पृथक् होगये हैं, वे दूसरे व्यवसाय भी करते हैं और अपने आपको मद्यका व्यवसायी नहीं मानते, शास्त्रमें मद्यके व्यवसायीको तो शौण्डिक, तथा सुराकर्ता, सौष्कल, कलाल आदि कहा है, वह तो अवश्यही संकरजाति हीन धर्मा है, और महाजन शब्द अवभी कलवारोंके लिये प्रयुक्त होता है इनके भेद गुलहरे, तीनवारे, सातवारे, सोहारे, खडपतिया आदि हैं । यह जाति कहीं भंडारी कहीं शुण्डी कहाती है । राजपूताना और युक्तप्रान्तके कलाल अपनेमें क्षत्रियत्व मानते हैं, कहीं पूर्वमें अपनेको वैश्यवर्णमें मानते हैं, तात्पर्य शास्त्रका मत यह है कि मद्यका व्यवसाय निन्दित कर्म है इस कार्यके करनेवाले संकरजातिकेही शौष्कल आदि थे, परन्तु यदि वैश्यजाति आदिने पहले इस कार्यका व्यवसाय किया हो तो वह निन्दित मानी जानेलगी हो, पीछे वह वैश्यादि अपनी योग्यतापर पहुंचनेकी इच्छा करते हों तो वह दूसरी वात है । कोई २ वाथम और मोहोर इसी जातिका भेद मानते हैं इनका वर्णन हम आगे चलकर करैंगे ।

गमला-तैलंग जातिमें शराव खैंचने और वेचनेवाले गमला कहाते हैं । दक्षिण देशमें शराव खैंचने और ताडीका धंधा करनेवाली एक जाति है, वह गौंदला कहातीहै इनकी संख्या वहां २३९९०२ है इनमें वहुतसे धनाढय तथा दूसरा रोजगार करनेवाले भी हैं, मुम्बई प्रान्तमें यही गन्दला कहाती है ।

घोलिक (कैकडा मूषकान्तक) ९६ ।

व्याधाहितुडकाभ्यां यो जातो घोलिकसंज्ञकः ॥ स कुर्यान्मूषकादीनां हननं भमिवासिनाम् ॥ (१९९) बिलेशयानां सर्वेषामन्येषामपि सर्वतः ॥ जनेभ्यो याचयेद्वित्तं तेन तद्वर्तनं स्मृतम् ॥ घोलिको धर्मरहितः कथितो मषकान्तकः ॥ २०० ॥

व्याधसे अहितुण्डकी स्त्रीमें घोलिक जातिका पुरुष होता है, विलमें रहनेवाले चूहोंको मारना इसका काम है तथा विलके सिवाय अन्यत्र भी चूहे मारना इसका काम है तथा अन्य विलशयी जीवोंका भी वधकरना काम है इसीकर्मसे धन मिलनेसे यह आजीविका करै, यह मूषिकान्तक धर्म रहित है, यह कैकडा भी कहाता है ॥ २०० ॥

यावासिक । ९७ ।

पुल्कसस्त्रियां पुलकात्सूते यावासिकाभिधम् ॥ स कुर्यात्तुरगादीनां शस्यैनैव च वर्तनम् ॥ जीवनं तस्य निर्दिष्टमसौ साकल्यकर्मकृत् ॥ २०१ ॥

पुलकसे पुल्कसकी स्त्रीमें यावासिक उत्पन्न होता है, यह घोडोंको घास दांना खिलानेपर नौकर होता है, और भी घोडेका खुरैरा आदि सव कर्म यह करै इसीसे इसका आजीवन चलताहै (यह कवाडी यावासिक ९७ वां है) ।

तुरुष्कः (यवन) ९८ ।

मेदस्य वंशवनिता संगता तेन चेदिह ॥ सा सूते यवनं पुत्रं तुरुष्कः स प्रकीर्तितः (२०१) अत्यन्तो म्लेच्छदेशस्तु गोवधो नाति शास्त्रतः ॥ तेषां हि निष्ठुरत्वेन जीवनं संप्रकीर्तितम् ॥ २०२ ॥

मेद वंशवनिताकी सङ्गतिसे यवन वा तुरुष्क नामक पुत्रको उत्पन्न करती है (सोतिनिष्ठुरः) और वह निठुर वहुत होता है यह म्लेच्छ देशोंके समीप निवास करै, शास्त्रमें विहित न होनेपर भी गोवध करते हैं निष्ठुरताही इनकी आजीविका है ॥ २०२ ॥

लाट (वैश्य) ९९ ।

वैश्यायामेव विन्नायां विकर्मस्थाच्च वैश्यतः ॥ लाटदेशे समुत्पन्नो लाट इत्यभिधीयते ॥ स वैश्य इव विज्ञेयश्चामराणां च विक्रयी२०३॥

विकर्म वैश्यसे विकर्म वैश्यामें लाटदेशमें उत्पन्न पुरुष लाट (लाड) संज्ञावाला होताहै, यह धर्ममें वैश्योंके समान चमर वेंचनेवाला होताहै ॥ २०३ ॥

लिंगायत १०० ।

व्रात्यवैश्यसमुत्पन्नो वैश्यायां व्यभिचारतः ॥ विभूतिं धारयेद्भाले कण्ठे लिंगं प्रपजयेत् ॥२०४॥ मरिचाहिंगुसामुद्रजीर्णोर्णापटविक्रयः॥ जीविका तस्य कथिता शूद्रधर्माधिकोऽपि सः ॥ २०५ ॥

व्रात्य वैश्यसे व्यभिचारिणी वैश्यामें लिंगायत होता है यह मस्तकमें विभूति धारण करनेवाला और गलेमें शंकरकी प्रतिमा लटकाये रहता है, काली मिर्च, हींग, समुद्रफेन (समुद्रझाग) जीरा तथा वस्त्रोंमें ऊनी कपडेके व्यवसायी होतेहैं (यह सौ १०० वां है) ॥ २०४ ॥ २०५ ॥

द्विजातयः सवर्णेषु जनयन्त्यव्रतांस्तु यान् ।
तान्सावित्रीपरिभ्रष्टान्व्रात्यानिति विनिर्दिशेत् ।

(मनु० २०६)

ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य सवर्णा स्त्रियोंमें जिन सन्तानोंको उत्पन्न करते है यदि उनका समयपर यज्ञोपवीत आदि संस्कार न हुआ हो तो उनको व्रात्य कहते है । इनमें ब्राह्मणको तो देवपूजाका विधान कहा है अवशिष्टोंकी वृत्ति उशनाने लिखी है ।

व्रात्यजैरन्यैः परराष्ट्राणां कोशमन्त्रवृत्तज्ञानं मित्रामित्रञ्च ज्ञेयम् ॥

अर्थात्--दूसरे जो व्रात्य हैं वे परराष्ट्रके कोश मन्त्रका विज्ञान तथा कौन मित्र कौन अमित्र है इस भेदको लेते हुए राजाकी ओरसे विचरैं ।

आवर्तक, कटधान १०१ ।

जातिविवेके-ब्राह्मण्यां भूर्जकंठाच्च सुतस्त्वावर्तको भवेत् । ब्राह्मण्यावर्तकाभ्याञ्च पुत्रः स कटधानकः ॥ २०७ ॥

ब्राह्मणीमें भूर्जकण्टसे आवतक पुत्र होता है और आवर्तकसे ब्राह्मणीमें कटधान होता है ॥ २०७ ॥ (यह कटधान कहीं कदाचित् धनकुटे हों)

पुष्पशेखर १०२ ।

ब्राह्मण्यां कटधानेन सूतोऽसौ पुष्पशेखरः ॥ २०८ ॥

ब्राह्मणीमें कटधानसे पुष्पशेखर पुत्र होताहै यह लोकभाषामें वैष्णव कहाता है ॥ २०८ ॥

वर्ण्यौ हरिहरौ तैश्च गीतगाथाप्रबन्धकैः । चरितैर्देशभाषाभिर्ज्ञेयं तज्जीविका स्मृता । लोकाचाराः स्मृतास्तेषां शूद्रधर्माद्बहिःकचित् ॥

इन भूर्जकण्ठादिकी वृत्ति इसप्रकार है कि यह देशभाषामें शिव विष्णुका यश वर्णन करैं यही इनकी आजीविका है यह लोकाचारकी समानतासे ग्राह्य हैं, शूद्रधर्मसे वाहर हैं ।

मंगुकी वृत्ति १०३ ।

क्षत्रियकन्यका वैश्याज्जनयामास वंदिनीम् । स वंदिनी द्विजात्सूते मंगुतावडिकाभिधम् ॥२१०॥नगरग्रामदेशस्थान्धृत्वा चौरापराधिनः। संक्षिपेद्बंधनागारेष्विच्छेत्तां वृत्तिमात्मनः ॥ २११ ॥

क्षत्रियकन्यामें वैश्यसे वंदिनी कन्या होती है वह वंदिनी : द्विज मंगुतावडि पुत्रको उत्पन्न करती है यह नगर,ग्राम,देशके अपराधी चोरोंको पकड कर बंधनागारमें डालते हैं, इसीसे राजासे वृत्ति पाते हैं॥२१०॥

उग्राः शूद्रासमुत्पन्ना क्षत्रियादेव केवलात् । सोग्रा निषादसंयोगाज्जाधिकं जनयेत्सुतम्॥२१२॥स शूद्रधर्मरहितो द्विजानां लेखहारकः ॥ देशदेशान्तरं गच्छेच्छीघ्रञ्चरणवेगतः ॥ सा जीविकास्य विहित जाधिकस्य विशेषतः ॥ २१३ ॥

केवल क्षत्रियसे शूद्रामें उग्रा जातिकी स्त्री होती है वह उग्रा निषादके संयोगसे जाधिक जातिके पुत्रको उत्पन्न करती है, यह शूद्रधर्मसे द्विजातिकी चिट्ठी लेजानेका काम करता है यह पैरोंके बलसे शीघ्र ही देशदेशान्तरोंमें गमन करता है, और इसी कर्मसे इसकी आजीविका चलती है ॥ २१३ ॥ यह धावन वा दूतक होता है ।

कुशीलवः चारण १०४ ।

ब्राह्मण्यां वैश्यपुरुषाज्जाता वैदेहिका मता । विप्राद्वैश्यांगनाजातोऽम्बष्ठइत्यभिधीयते ॥ २१४ ॥ स वैदेही स चाम्बष्ठस्तयोर्जातः

कुशीलवः। नृत्यकर्ता स गीतज्ञो देशदेशान्तरं व्रजेत् । सास्य वार्तात्र कथिता चारणस्य स्वयंभुवः ॥ २१५ ॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे वैदेहिका कन्या होती है, ब्राह्मणसे वैश्यस्त्रीमें अम्बष्ठ होता है, वह वैदेहिकी अम्बष्ठसे कुशीलव पुत्रको उत्पन्न करती है यह गीतज्ञाता नृत्य करनेके निमित्त देशदेशान्तरमें गमन करता है, स्वयम्भूने इसका नाम चारण रखकर इसकी यही वृत्ति निर्दिष्ट की है ॥ २१५ ॥

अन्य श्वपच (भंगी, महत्तर) १०५ ।

ब्राह्मणं हन्ति यश्शूद्रस्तं मुशल्यं विदुर्बुधाः । तत्संयोगात्तीवरस्त्री जनयेत्तनयांस्तु यान् ॥ २१६ ॥ श्वपचास्ते समाख्याता वृत्तिर्वीथीषु मार्जनम् । तथा नगरवासीनां विट्गृहाणां प्रमार्जनम् ॥ २१७ ॥ अपराह्णे तथा सायं तदुच्छिष्टं समानयन् । सर्वे ते भोजनं कुर्युर्मृत-कर्पटसंग्रहम् ॥ इति तेषां जीविका च कथिता विश्वकर्मणा ॥२१८॥

जो शूद्र ब्राह्मणको ताडन करै उसे मुसल्य कहते हैं, उसके सयोगसे तीवरकी स्त्री जिन सन्तानोंको उत्पन्न करै वे श्वपच भंगी कहाते हैं, सडक गली आदि स्थानोंमें सायंप्रातर्बुहारी देना तथा नगर निवासियोंके घरोंमेंसे विष्ठाकमाना प्रातःसायं घरोंमेंसे बची रोटी और जूठनको ले आना तथा मृतकके वस्त्रोंको लेना और जीर्णवस्त्र हाथमें ले बचा हुआ भोजन करना इनकी आजीविका है । ऐसा विश्वकर्माने विधान किया है२१६–२१८॥यह समस्त वर्णन जातिविवेक नामक ग्रन्थमें लिखा हुआ है इनके वस्त्र विभूषणोंका वर्णन आगे करैंगे अब ब्रह्मवैवर्त पुराणमें जातिविषय एक अध्याय कहा गया है उसका वर्णन करते हैं, जाति विवेकका प्रकरण यहां समाप्त हुआ, यह गोपीनाथका संकलित है ।

सूत उवाच ।

बभवर्ब्रह्मणो वक्त्रादन्या ब्राह्मणजातयः ॥ ताः स्थिता देशभेदेषु गोत्रशून्याश्च शौनक ॥२१९ ॥ (१४)चन्द्रादित्यमनूनाश्च प्रवराः क्षत्रियाः स्मृताः॥ ब्रह्मणो बाहुदेशाच्च वान्याः क्षत्रियजातयः॥२२०॥ (१५) ऊरुदेशात्त वैश्याश्च पादतः शूद्रजातयः ।।तासां संकरजा-तेन बभूवुर्वर्णसंकराः ॥ २२१ ॥ (१६) गोपनापितभिल्लाश्च तथा मोटककूवरौ ॥ ताम्बूलीपर्णकारौ च तथा वै वैश्यजातयः ॥ २२२ ॥ (१७) इत्येवमाद्या विप्रेन्द्र सच्छूद्राः परिकीर्तिताः ॥ शूद्राविशो-स्तु करणाम्बष्ठौ वैश्याद्विजन्मनोः ॥ २२३ ॥ (१८)

(ब्रह्म वै० अ० १०)

ब्रह्माजीके मुखसे ब्राह्मण जाति उत्पन्न हुई, हे शौनक वह अनेक देशोंमें निवास करनेके कारण उस देशके नामवाले होगये कितनेक सुदूर देशोंमें जाकर गोत्र शून्य होगये ॥ २१९ ॥ क्षत्रियोंके प्रवर चन्द्र, सूर्य, मनुसे आरंभ हुए, क्षत्रिय जाति ब्रह्माकी भुजाओंसे प्रगट हुई ॥ २२० ॥ ऊरुदेशसे वैश्य और

चरणोंसे शूद्र हुए हैं, इन वर्णोंके परस्पर समागमसे संकरजातियें हुई हैं ॥ २२१ ॥ गोप, नाई, भिल्ल, मोदक, कूवर, तांबूली, वारी, वंजारा इनको सत् शूद्र कहाहै, शूद्रामें वैश्यसे करण और ब्राह्मणसे वैश्यामें अम्बष्ठ होता है ॥ २२२ ॥ २२३ ॥

विश्वकर्मा च शूद्रायां वीर्याधानं चकार सः ॥
ततो बभूवुः पुत्राश्च नवेति शिल्पकारिणः ॥ २२४ ॥
(पुराण श्लो० १९)

मालाकारशंखकारकर्मकारकुविन्दकाः ॥ कुंभकारः
कांस्यकारः षडेते शिल्पिनां वराः ॥ २२५ ॥

विश्वकर्माने शूद्रामें वीर्याधान किया, उससे नौ पुत्र उत्पन्न हुए, वे माली, शखकार, कर्मकार, कुविन्दक, कुंभकार, कांस्यकार यह छः तो शिल्पियोंमें श्रेष्ठ हुए ॥ २२४ ॥ २२५ ॥

सूत्रधारश्चित्रकारः स्वर्णकारस्तथैव च ॥ पतितास्ते
ब्रह्मशापादयाज्या वर्णसंकराः ॥ २२६ ॥ (२१)

सूत्रधार, चित्रकार और स्वणकार (सुनार) यह तीन ब्रह्मशापके कारण पतित गिनेजाते हैं, यह अयाज्य हैं अर्थात् यज्ञकर्मका इनको अधिकार नहीं है स्वर्णकारके पतित होनेका हेतु कहते हैं ॥ २२६ ॥

स्वर्णकारः स्वर्णचौर्याद्ब्राह्मणानां द्विजोत्तम ॥
बभूव पतितः सद्यो ब्रह्मशापेन कर्मणा । २२७ । (२२)

हे द्विजोत्तम ब्राह्मणोंका सोना चुरानेके कारण ब्रह्मशापसे स्वर्णकार तत्काल पतित हुआ ॥ २२७ ॥ थोडासा यहां यह विषय लिखदेना उचित है कि यह शूद्रा कौन थी यह शूद्रा घृताची नाम अप्सरा थी इन्द्रलोकमें एकसमय विश्वकर्माने इससे रति मांगी तब इसने कहा कि आजके दिनमें दूसरेकी हो चुकी हूं इसपर क्रुद्ध होकर कहा-

शशाप शूद्रयोन्यां च व्रजेति जगतीतले ।
(अ० १० श्लो० ५८)

घृताची तद्वचः श्रुत्वा तं शशाप सदारुणम् । लभ जन्म भवे त्वञ्च स्वर्गभ्रष्टो भवेति च ॥ ५९ ॥ सा भारते च कामोक्त्या गोपस्य मदनस्य च । पत्न्यां प्रयागे नगरे ललाभ जन्म शौनक ॥ ६१ ॥
(ब्रह्मवै० ब्रह्मख०)

तब उसने शाप दिया कि या, तू संसार मर्त्यलोकमें शूद्रयोनिमें जन्म ले, तब घृताचीने भी क्रोधकरके उसको शाप दिया कि तुम भी स्वर्गलोकसे भ्रष्ट होकर मनुष्य योनिमें जन्म लो, अप्सरा तो गोपके घर जिसका नाम मदन था, प्रयागमें उत्पन्न हुई ।

ललाभ जन्म ब्राह्मण्यां पृथिव्यामाज्ञया विधेः ॥ ६७ ॥
स एव ब्राह्मणो भूत्वा भुवि कारुर्बभव ह ॥ ६८ ॥

और विश्वकर्माने पृथिवीमें ब्राह्मणरूपसे जन्म लिया और एकदिन उस अप्सराके मिलनेपर कहा-

अहोधुना त्वमत्रैव घृताचि सुमनोहरे ॥ मा मां स्मरसि रंभोरु विश्वकर्माहमेव च ॥ ७३ ॥ शापमोक्षं करिष्यामि भज मां तव सुन्दरि ॥ ७४ ॥ जगाम तां गृहीत्वा च मलयं चन्दनालयम् ॥८५॥ सा सुषाव च तत्रैव पुत्रान्नव मनोहरान् ॥ ८८ ॥

हे घृताचि अब तक तुम यहीं हो क्या मुझे स्मरण नहीं करती कि मैं विश्वकर्मा हूं, अब तुम मुझे भजो तो शाप मोक्ष होगा, यह कहकर मलयपर्वतपर उसको लेगया, और कुछ कालतक उसके साथ विहार किया वहां उसके नौ पुत्र हुए, यह नौके नौ शिल्पकार हए, विश्वकर्मा इनको शिक्षा देकर स्वर्गको गये, और वह घृताची भी अपने स्वरूपको प्राप्त होकर स्वर्गको गई, ब्राह्मणसे शूद्रामें पारशव वर्ण होताहै, वह स्वर्णकारीभी करता है, मनुजीके श्लोकानुसार "ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः । महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैःसह" (११ । १५) सुवर्णकी चोरी ब्रह्महत्याके समान लिखीहै और इससमय भी यह सुवर्णस्तेय बहुतायतसेहैं, तव पूर्वकालमें ब्राह्मणका सोना चुरानेसे यह असली स्वर्णकार जाति पतित होगई, और अबतक हो, तो इसमें सन्देह क्याहै परन्तु इससमय इसजातिमें भी बहुत गोलमाल उपस्थित हुआहै, दूसरी जातिके लोग भी सुवर्णकारीका पेशा करने लगे हैं, और पूर्वकालसे भी अन्य जाति इनमें सम्मिलित होगईहैं, वामनिये सुनार क्षत्रिय सुनार, वैश्य सुनार, रस्तौगी सुनार, अजमीढ सुनार, मेढ सुनार, आदि अनेक भेद पाये जाते हैं, क्या यह सबही पतित गिने जांयगे या सब उस जातिकी समान होजांयगे, इसपर कहना तो यही बनता है । कि अन्यायसे सुवर्णका काम करनेवाला दो चावल भी यदि सोना चुराता है तोवह पतित हैं, अन्यथा, वह ऐसे पतितोंकी संगतिसे धर्मशास्त्रके अनुसार दूषित हो सकता है, हम यदि इन बातोंको त्यागकर, इन जातियोंकी वंशावलियोंको देखते हैं, तो स्पष्ट ही विदित हो जाता है कि इन वंशावलीवालोंने जाति-सम्बन्धी एक प्रमाण भी न देकर अटकलपच्चू बातोंसे अपने भाइयोंका पैसा नष्ट किया है, किसीने मनु, आदिको प्रक्षिप्त श्लोकोंसे भरा बताकर दयानन्दजीकी बदौलत अपनी उन्नति मानी है किसीने विश्वकर्मा शब्द वेदमें देखते ही उसको अपना पूर्वऋषि माना है, कोई योगसे जांगडा बनगये है, कोई व्याकरणमें उणादिसे अपना शब्द सिद्धकर कृतार्थ होरहे हैं, दूसरे वंशोंके कुल गोत्रोंकी नकल अपने वंशमें मिला रहे हैं, हमारे सामने ऐसी कई पुस्तक हैं, यथा- ब्रह्मभट्टप्रकाश, आचार्यदर्पण, विश्वकर्मवंशनिर्णय-जाङ्गडोत्पत्ति, मेढमीमांसा आदि इनमें हम सार कुछ भी नहीं पाते, इस समय मेढमीमांसा सामने है, इसमें ४४ पृष्ठ हैं, बीस पृष्ठमें भूमिका है, भूमिकामें अपने राजाधिराजके गुण वर्णन हैं, इसके आगे १६ पृष्ठ तक ब्राह्मणादिके लक्षण लिखे हैं, १७ पृष्ठमें मरुतराजाके लिये वर्तन आदिका बनाना लिखकर कहदिया कि हम इसी वंशमें हैं, कुछ क्षत्री परशुरामके भयसे सुवर्णकारी करने लगगये आगे मरुतका वंश थोडा लिखकर लोगोंकी सम्मति लिख पुस्तक समाप्त करदी है, यही बात विश्वकर्म वंशप्रकाशमें है ब्राह्मणोंकी निन्दा दयानन्दजी और उनके अनुयायियोंकी प्रशंसासे पुस्तक भरी पडी है, पीछे संस्कारोंका आडम्बर किया गया है, पूछना यह है कि इसमें आपके वंशका खुलासा किसप्रमाणसे है, और वह कहां लिखा है, हमारी अभिलाषा किसीकी निन्दा वा हानिमें नहीं है, न हम पक्षपात करते हैं पर आपके लाभके लिये कहते हैं, कि जब चारभाइयोंका पैसा लगाते हो तब जातिके हितकी उस उद्देश्यकी पूर्ति भी तो कीजिये, यदि आप प्रमाण लिखें तो हम सादर अपने ग्रन्थोंमें लिखनेको तैयार हैं । (अभी विचारकोटीमें है) (मेढमीमांसा पृ० २७)

सुवर्णकार क्षत्रिय राजपूत वंशमेंसे हैं ।

मरुत्तस्यान्ववाये च रक्षिताः क्षत्रियात्मजाः । मरुत्पतिसमा वीर्ये समुद्रेणाभिरक्षिताः ॥ एते क्षत्रियदायादास्तत्रतत्र परिश्रुताः ॥ द्योकारहेमकारादिजातिं नित्यं समाश्रिताः ॥

(महाभा० राजधर्म० अ० ४९ श्लो० ८३-८६ तक)

मरुत् राजाके वंशमें जो क्षत्रिय हुए वह वीर्यमें मरुत्पतिके समान थे और परशुरामके भयसे इधर उधर भाग गये उनकी समुद्रने रक्षा की, तथा उनमेंसे बहुतसे प्रासाद निर्माण करनेवाली तथा सुवर्णकार जातिके आश्रय होकर रहे, इन महाभारतके श्लोकोंसे यह बात प्रगट है कि द्योकार और हेमकार आदि जाति इसके पूर्वमें भी विद्यमान थीं, उन्हींके स्थानोंमें यह लोग भी जाकर यही काम करते हुए रह गये, परन्तु पृथिवीने कश्यपसे कहा है उनको पुनः राज्यपर स्थापन करो, परशुरामका भय मिटजानेसे कश्यपने फिर वैसा ही किया, यह बात समझमें नहीं आती, राजप्राप्ति छोडकर भी तथा आपत्ति दूर होनेपर भी संस्कारको प्राप्तहुई क्षत्रिय जाति फिर भी सुनारका काम करनेकी इच्छा करती रही हो, परन्तु यदि कोई दूसरी जातिने यह काम स्वीकार किया है तो हम उनको असली सुनार बनानेकी इच्छा भी नहीं करते, राजा मरुत्त सोने आदिके बर्तन बनाया नहीं करता था किंतु बनानेवाले दूसरे थे, वह तो पुण्य करता था, सुनारोंमें मैढ और टांक यह दो भेद हैं, कोई २ ऐसा कहते हैं कि मैढ भाटी . एक राजपूतोंकी शाखा है, हम मैढसुनार भी राजपूत हैं, किन्हींका यह कहना है कि-

बृहत्क्षत्रस्य पुत्रोऽभूद्धस्ती यद्धस्तिनापुरम् । अजमीढो द्विमीढश्च पुरुमीढश्च हस्तिनः । अजमीढस्य वंशाः स्युः प्रियमेधादयो द्विजाः॥

बृहत्क्षत्रके पुत्र हस्ती हुए जिन्होंने हस्तिनापुर बसाया उनके अजमीढ, द्विमीढ और पुरुमीढ यह तीन पुत्र हुए, अजमीढके वंशमें . प्रियमेधादि ब्राह्मण हुए । इसमें अजमीढने मेढराजपूत वंश चलाया इनका निवास स्थान महरवाडा प्रसिद्ध है, यहां मेढराजपूतवंश अब भी विद्यमान है ।

इसपर हमको यह कहना है कि कहीं ऐसा भी लेख है कि अजमीढका एक कुल स्वर्णकारी करने लगा, यदि ऐसा नहीं है, तो यह क्यों न मानलिया जाय कि मेहरवाडेके रहनेवाले सुनार जाति महर-सुनार कहाती है न कि क्षत्रिय । जो कुछ हो हमको इस बात पर कोई आग्रह नहीं है कि यदि कोई अन्य जाति सुवर्णकारी करनेलगै तो हम उसको असली सुनार समझें परन्तु यह बडे आश्चर्यकी बात है कि समस्त मेढ जाति स्वर्णकार बनजाय और जो मेढ क्षत्रिय हों उनके साथ इनके खानपानका कुछ भी व्यवहार न हो, फिर विवाह सम्बन्धकी तो बातही क्या है, मेडसुनारोंके गोत्र भारद्वाज, सांकृत्य, गर्ग, पतंजलि, काश्यप, वाछल, वाशिष्ठ इत्यादि लिखे हैं, परन्तु मुरादाबादके एक मेढसुनारने कांसलिया, सहस्रानियां सेढा, महर और कश्यप गोत्र बताये हैं, बहुतसे स्वर्णकार पहले तो यज्ञोपवीत नहीं लेते थे, पर अब कुछ २ दयानन्दी समाजकी देखा देखीसे पहरते हैं, पर अबभी बहुतोंके नहीं है विश्वकर्माकी सन्तान वा पारशव असली सुनार हैं ।

सूत्रधारो द्विजातीनां शापेन पतितो भवि ॥
शीघ्रं च यज्ञकाष्ठानि न ददौ तेन हेतुना । २२८ । (९३)

सूत्रधारभी द्विजातियोंके शापसे पतित हुआ कारण कि उसने यज्ञ सम्बन्धी काष्ठ देनेमें बहुत ढिलाई की ॥ २२८ ॥

व्यतिक्रमेण चित्राणां सद्यश्चित्रकरस्तथा ॥ पति-
तो ब्रह्मशापेन ब्राह्मणानां च कोपतः ॥ २२९ ॥ (९४)

चित्रकारभी इसीप्रकार चित्रोंके अस्तव्यस्त बनानेके कारण ब्राह्मणोंके कोपसे पतित हुआ ॥ २२९ ॥

कश्चिद्वणिग्विशेषश्च संसर्गात्स्वर्णकारिणः ॥
स्वर्णचौर्यादिदोषेण पतितो ब्रह्मशापतः ॥२३०॥(९५)

इसी प्रकार कोई वणिक विशेषभी स्वर्णकारका काम करनेलगा वह भी सुवर्ण चुरानेके दोषसे पतित हुआ ॥ २३० ॥

अट्टालिकाकार कोटक १०६ ।

कुलटायाश्च शूद्रायां चित्रकारस्य वीर्यतः ॥ बभूवाट्टालिकाकारः पतितो जारदोषतः ॥२३१॥ (९६) अट्टालिकाकारबीजात्कुंभकारस्य योषितः ॥ बभव कोटकः सद्यः पतितो गृहकारकः ॥ २३२ ॥ (९७)

व्यभिचारिणी स्त्रीमें चित्रकारके वीर्यसे अट्टालिकाकारकी उत्पत्ति है, यह भी जारदोषसे पतित है ॥ २३१ ॥ अट्टालिकाकारके बीजसे कुम्हारकी स्त्रीमें कोटक नामक गृह निर्माण करनेवाली जाति उत्पन्न हुई यह भी पतित है।यही दोनों जातियें पहले मकान बनानेका काम करती थीं,राजमिस्त्री नामसे विख्यात थीं, अब अनेक जातियें इस कामको करती हैं, और अपनी उत्पत्ति कोई क्षत्रिय और कोई विश्वकर्मासे बताती हैं ॥ २३२ ॥

तैलकारः १०७ ।

कुंभकारस्य बीजेन सद्यः कोटकयोषिति ॥
बभव तैलकारश्च कुटिलः पतितो भुवि ॥ २३३ ॥ (९८)

कुंभकारके वीर्यसे कोटक जातिकी स्त्रीमें तैलकार उत्पन्न हुआ, और यह तेली भी पतित है जिसकी उत्पत्ति इसप्रकार है ॥ २३३ ॥

धीवरः १०८ ।

सद्यः क्षत्रियबीजेन राजपुत्रस्य योषिति ॥
बभूव धीवरश्चैव पतितो जारदोषतः ॥ २३४ ॥ (९९)

क्षत्रियके बीर्यसे राजपुत्रकी स्त्रीमें छिपकर धीवरकी उत्पत्ति हुई है, यह भी जारदोषसे संस्कार-हीन है ॥ २३४ ॥

लेटः।

तीवरस्य तु बीजेन तैलकारस्य योषिति ॥
बभूव पतितो दस्युर्लेटश्च पतितो भुवि ॥२३५॥ (१००)

तीवरके वीर्यसे तैलकारकी स्त्रीमें लेट जातिका पुरुष हुआ यह एक प्रकारका दस्यु संस्कारहीन है २३५

माल्ल, मल्ल, मातर, भज, कोल, कलन्दर।

लेटो धीवरकन्यायां जनयामास षट् सुतान् ॥
माल्लं मल्लं मातरं च भजं कोलं कलन्दरम् ॥२३६॥

लेटके धीवरकी कन्यामें छः पुत्र हुए माल्ल, मल्ल, मातर, भज, कोल और कलन्दर ॥ २३६ ॥

चाण्डालः।

ब्राह्मण्यां शूद्रवीर्येण पतितो जारदोषतः ॥
सद्यो बभूव चाण्डालः सर्वस्मादधमोऽशुचिः ॥ २३७ ॥

ब्राह्मणीमें शूद्रके वीर्यसे चाण्डाल हुआ है, यह भी जारदोषसे पतित सबसे अधम और अशुचि है२३७

चर्मकारः, मांसच्छेदी।

तीवरेण च चाण्डाल्यां चर्मकारो बभूव ह ॥
चर्मकार्यांश्च चाण्डालान्मांसच्छेदी बभूव ह ॥ २३८ ॥ (१०३)

तीवरसे चाण्डालीमें चमार होता है और चमारीमें चाण्डालसे मांसच्छेदी कसाई होता है ॥ २३८ ॥

कौंच, काण्डार।

मांसच्छेद्यां चीवरेण कौंचश्च परिकीर्तितः ॥
कौंचस्त्रियां तु कैवर्तात्कर्तारः परिकीर्तितः ॥२३९॥ (१०४)

मांसच्छेदीकी स्त्रीमें चीवरसे कौंच होता है और कौंची स्त्रीमें कैवर्तसे कर्तार होता है ॥ २३९ ॥
(कहीं कर्त्तारकी जगह काण्डार पाठ है)

हड्डि, डुम (डोम)

सद्यश्चाण्डालकन्यायां लेटवीर्येण शौनक ॥
बभूवतुस्तौ द्वौ पुत्रौ दुष्टौ हड्डिडुमौ तथा ॥ २४० ॥ (१०५)

हे शौनक चाण्डालकी कन्यामें लेटके वीर्यसे हड्डि और डुम यह दो पुत्र दुष्ट प्रकृतिवाले हुए ॥ २४० ॥

वनचराः।

क्रमेण हड्डिकन्यायां सद्यश्चाण्डालवीर्यतः ॥
बभुवरातिदुष्टाश्च पुत्रा वनचराश्च ते ॥ २४१ ॥ (१०६)

हड्डिकी कन्यामें चाण्डालके वीर्यसे अतिदुष्ट स्वभाववाले वनचर हुए।

---

१ कहीं लेटस्तीवरकन्यायां पाठ है, मल्लं मन्त्रं मातरं च पाठ है, लेटके स्थानमें कहीं नट पाठ है।
२ कहीं (बभूवुः पञ्च पुत्राश्च) पाठ है। अर्थात्–पांच पुत्र हुए॥ २४१ ॥

गंगापुत्र ।

लेटात्तीवरकन्यायां गंगातीरे च शौनक ॥
वभूव सद्यो यो वालो गंगापुत्रः प्रकीर्त्तितः ॥२४२॥(१०७)

लेटसे तीवरकी कन्यामें गंगाके किनारे जो पुत्र हुआ वह गंगापुत्र कहाया ॥ २४२ ॥

युंगी ।

गंगापुत्रस्य कन्यायां वीर्येण वेशधारिणः ॥
वभूव वेशधारी च पुत्रो युंगी प्रकीर्तितः ॥ २४३ ॥ (१०८)

गंगापुत्रकी कन्यामें वेशधारीके वीर्यसे जो पुत्र हुआ वह युंगी बहुरूपिया कहाया ॥ २४३ ॥

शुण्डी, पौण्ड्रक ।

वैश्याच्चीवरकन्यायां स च शुण्डी बभव ह ॥ शुण्डी
योषिति वैश्यात्तु पौण्ड्रकश्च बभूव ह ॥ २४४ ॥(१०९)

वैश्यसे चीवरकी कन्यामें शुण्डी और शुण्डी स्त्रीमें वैश्यसे पौण्ड्रक जाति हुई ॥ २४४ ॥

राजपुत्र ।

क्षत्रात्करणकन्यायां राजपुत्रो बभूव ह ॥ राजपुत्र्यां
तु करणादागरीति प्रकीर्तितः ॥ २४५ ॥ (११०)

क्षत्रियसे करणकी कन्यामें राजपूत हुआ और राजपुत्रीमें करणसे आगरी कहाया ॥ २४५ ॥

कैवर्त्त ।

क्षत्रवीर्येण वैश्यायां कैवर्त्तः परिकीर्तितः ॥ कलौ
तीवरसंसर्गाद्धीवरः पतितो भुवि ॥ २४६ ॥ (१११)

क्षत्रियके वीर्यसे वैश्यामें कैवर्त नामवाला पुत्र होता है, कलियुगमें यह तीवरके संसर्गसे संस्काररहीन और पतित हुआ ॥ २४६ ॥

रजक, कोहाली ।

तीव्रर्यां धीवरात्पुत्रो बभूव रजकः स्मृतः ॥ रजक्यां तीवराच्चैव
कोयाली (कोहाली) ति बभूव ह ॥ २४७ ॥ (११२)

तीवरीमें धीवरसे रजक(धोबी)होताहै, धोबिनमें तीवरसे कोहाली लकडी फाडनेवालाहोताहै ॥२४७॥

सर्वस्वी, व्याध ।

नापिताद्गोपकन्यायां सर्वस्वी तस्य योषिति ॥
क्षत्राद्बभूव व्याधश्च बलवान्मृगहिंसकः ॥ २४८ ॥ (११३)

नाईसे गोपकी कन्यामें सर्वस्वी होता है और सर्वस्वीकी स्त्रीमें क्षत्रियसे मृगोंकी हिंसा करनेवाला व्याध होता है ॥ २४८ ॥

दस्युः ।

तीवराच्छुण्डिकन्यायां बभवः सप्त पुत्रकाः ॥ ते
कलौ हड्डिसंसर्गाद्बभूवुर्दस्यवः सदा ॥ २४९ ॥ (११४)

धीवरसे शुण्डिकन्यामें सात पुत्र हुए वे कलियुगमें हड्डिजातिके संसर्गसे दस्यु हुए ॥ २४९ ॥

कूदरः ।

ब्राह्मण्यामृषिवीर्येण ऋतोः प्रथमवासरे ॥ कुत्सि-
तश्चोदरे जातः कूदरस्तेन कीर्तितः ॥ २५० ॥ (११५)

ऋतुमती ब्राह्मणीमें प्रथम ऋतुदिनमें ऋषिके समागमसे कुत्सित उदर होनेसे उसमें उत्पन्न होनेके कारण कूदर पुत्र हुआ ॥ २५० ॥

तदशौचं विप्रतुल्यं पतित ऋतुदोषतः ॥ सद्यः
कोटकसंसर्गादधमो जगतीतले ॥ २५१ ॥ (११६)

इसका आशौच ब्राह्मणके समान है, परन्तु ऋतुदोष और कोटककी संगति करनेके कारण यह पतित और जगतमें अधम है ॥ २५१ ॥

महादस्युः ।

क्षत्रवीर्येण वैश्यायामृतोः प्रथमवासरे ॥ जातः
पुत्रो महादस्युर्बलवांश्च धनुर्धरः ॥ २५२ ॥ (११७)

क्षत्रियके वीर्यसे वैश्यामें ऋतुके प्रथमदिन जो पुत्र हुआ, वह महादस्यु कहाया और बलवान् तथा धनुर्धर हुआ ॥ २५२ ॥

वागातीतः ।

चकार वागतीतं च क्षात्रियेणापि वारिता । तेन
जात्या स पुत्रश्च वागातीतः प्रकीर्तितः ॥२५३ ॥ (११५)

क्षत्रियके निषेध करनेपरभी वागातीत क्षत्रिणी (वचन न माननेवाली क्षत्रियामें जो पुत्र उत्पन्न होता है वह वागातीत कहाता है ॥ २५३ ॥

म्लेच्छजातिः ।

क्षत्रवीर्येण शूद्रायामृतुदोषेण पापतः ॥ बलवन्तो
दुरन्ताश्च बभवर्म्लेच्छजातयः ॥ २५४ ॥ (११९)

क्षत्रियके वीर्यसे शूद्रामें ऋतुदोषके पापसे वडे वली दुरन्त म्लेच्छ जातिके पुत्र हुए ॥ २५४ ॥

अविद्धकर्णाः क्रूराश्च निर्भया रणदुर्जयाः । शौचा-
चारविहीनाश्च दुर्धर्षा धर्मवर्जिताः २५५ (१२०)

यह कान नहीं छिदाते, वडे क्रूर, निर्भय, युद्धमें कठिनाईसे जीते जानेवाले, शौचाचारसे विहीन, दुर्धर्ष और धर्मसे रहित होते हैं ॥ २५५ ॥

जोला, शराक।

म्लेच्छात्कुविन्दकन्यायां जोला जातिर्बभूव ह। जोलात्कु-
विन्दकन्यायां शराकः परिकीर्तितः ॥ २५६ ॥ (१२१)

म्लेच्छसे कुविन्दकी कन्यामें जोला जाति हुई और जोलासे कुविदकन्यामें शराक हुआ ॥ २५६ ॥

व्यालग्राही ।

वर्णसंकरदोषेण बह्व्यश्च श्रुतजातयः । तासां नामानि संख्याश्च
को वा वक्तुं क्षमो द्विज ॥ २५७ ॥ (१२२) वैद्योऽश्विनीकुमारेण
जातश्च विप्रयोषिति । वैद्यवीर्येण शूद्रायां बभवर्बहवो जनाः ॥
॥ २५८ ॥ (१२३) ते च ग्रामगुणज्ञाश्च मन्त्रौषधिपरायणाः ॥
तेभ्यश्च जाताः शूद्रायां ये व्यालग्राहिणो भुवि ॥ २५९ ॥ (१२४)

वर्णसंकर दोषसे बहुतसी जातियें होगई, उनके नाम और संख्याको कौन कह सकताहै ॥ २५७ ॥ वैद्य अश्विनीकुमारसे विप्रकी स्त्रीमें तथा वैद्यके वीर्यसे शूद्रामें बहुतसे पुरुष हुए ॥ १५८ ॥ वे ग्राम्य गुणोंके ज्ञाता मंत्रौषधि परायण हुए, उनसे शूद्रामें बहुतसे व्यालग्राही पुरुष हुए ॥ २५९ ॥

मल्लाक।

गच्छन्तीं तीर्थयात्रायां ब्राह्मणीं रविनन्दनः । ददर्श कामुकः शान्तः
पुष्पोद्याने च निर्जने ॥ २६० ॥ (१२५) तया निवारितो यत्ना-
द्बलेन बलवान् सुरः ॥ अतीव सुन्दरीं दृष्ट्वा वीर्याधानं चकार
सः ॥ २६१ ॥ (१२६) द्रुतं तत्याज सा गर्भं पुष्पोद्याने मनोहरे ॥
सद्यो बभूव पुत्रश्च तप्तकांचनसन्निभः ॥ २६२ ॥ (१२७) सपुत्रा
स्वामिनो गेहं जगाम व्रीडिता तदा ॥ स्वामिनं कथयामास यन्मार्गे
दैवसंकटम् ॥ २६३ ॥ (१२८) विप्रो रोषेण तत्याज तं च
पुत्रं स्वकामिनीम् ॥ सरिद्बभूव योगेन सा च गोदावरी स्मृता
॥ २६४ ॥ (१२९) पुत्रं चिकित्साशास्त्रं च पाठयामास यत्नतः ॥
नानाशिल्पश्च मंत्रश्च स्वयं स रविनन्दनः ॥ २६५ ॥ (१३०)

एक ब्राह्मणी तीर्थयात्राको जा रही थी उसको निर्जन पुष्पोद्यानमें अश्विनी कुमारने देखा ॥ २६० ॥ उस सुन्दरीने उसको बलपूर्वक निवारण भी किया, परन्तु उन्होंने न मानकर उसमें वीर्याधान किया ॥ २६१ ॥ उसने मनोहर पुष्पोद्यानमें उस गर्भको त्यागन किया, उसी समय एक बालक सुवर्णके समान कान्तिमान् प्रगट हुआ ॥ २६२ ॥ वह लज्जित हो पुत्रको गोदमें लिये अपने स्वामीके पास गई, स्वामीने जब पूछा तो उसने दैवसंकटकी बात सुनाई ॥ २६३ ॥ ब्राह्मणने क्रोधसे स्त्री और पुत्र दोनोंको त्याग दिया, वह तो योगद्वारा अपने शरीरको जलरूप करके गोदावरीमें लय होगई ॥

॥ २६४ ॥ और उस पुत्रको चिकित्साशास्त्र उसके पिताने पढाया अर्थात्-अश्विनीकुमारने नाना-शिल्प और मन्त्र तथा वैद्यक स्वयंही पढाई ॥ २६५ ॥ (वह वैद्य कहाया)

सूतः ।

कश्चित्पुमान् ब्रह्मयज्ञे यज्ञकुण्डात्समुत्थितः ॥ स सूतो धर्मवक्ता च मत्पूर्वपुरुषः स्मृतः ॥ २६६ ॥ (१४४) पुराणं पाठयामास तञ्च ब्रह्मा कृपानिधिः ॥ पुराणवक्ता सूतश्च यज्ञकुण्डसमुद्भवः २६७॥ (१४५)

ब्रह्मयज्ञमें एक पुरुष अग्निकुण्डसे उत्पन्न हुआ वह सूत धर्मवक्ता हमारे पूर्व पुरुष हैं, यह सूतका वचन शौनकके प्रति है ॥ २६६ ॥ कृपानिधि ब्रह्माने स्वयं उनको पुराण शास्त्र पढाया था, इसप्रकार पुराण-वक्ता सूत यज्ञकुण्डसे उत्पन्न है ॥ २६७ ॥

भट्टः ।

वैश्यायां सूतवीर्येण पुमानेको बभूव ह ॥
स भट्टो वावदूकश्च सर्वेषां स्तुतिपाठकः ॥ २६८ ॥ (१३६)

वैश्यामें सूतके वीर्यसे एक पुरुष उत्पन्न हुआ वह भट्टवावदूक सबकी स्तुति पाठ करनेवाला हुआ॥२६८॥

लोभी विप्रश्च शूद्राणामग्रे दानं गृहीतवान् ॥
ग्रहणे मृतदानानामग्रदानी बभव सः ॥ २६९ ॥

(ब्रह्म० वै० अ० १० । १३३)

लोभी ब्राह्मणने शूद्रजातिसे अशौचमें प्रथम दान लिया मरे हुएके उद्देश्यसे प्रथम दान लेनेके कारण वह अग्रदानी कहाया ॥ २६९ ॥

यहांतक ब्रह्मवैवर्त पुराणके मतसे जातियोंका निर्णय किया गया, अब अन्य प्रकारसे भी कुछ उत्पत्ति लिखते हैं । वर्णविवेकचन्द्रिकामें लिखा है-

कलवार ।

क्षत्रवीर्येण वैश्यायां कलवारेति नामतः ॥
संजातः पतितः सोऽपि वेदधर्मबहिष्कृतः ॥ २७० ॥

क्षत्रियके वीर्यसे वैश्यामें कलवारकी उत्पत्ति हुई यह भी पतित है और वेदधर्मसे पतित है ॥ २७० ॥

सद्वोपात्पतितो यस्तु संसर्गाद्रजकस्त्रियः ॥
कुविरजकनाम्नैव अथासौ परिकीर्तितः ॥ २७१ ॥

सद्वोपसे रजककी स्त्रीमें कुविरजक नामका एक पुत्र हुआ यह पतित है ॥ २७१ ॥

दोलावाही ।

वैश्यायां च तैलकाराद्दोलावाही बभूव ह ॥

(बृहद्धर्मपुराण २७२)

वैश्यामें तेलीसे दोलावाही जाति उत्पन्न हुई है ।

कपाली ।

ब्राह्मण्यां तीवराज्जातः ।

(ब्र० वै०)

ब्राह्मणीमें तीवरसे कपाली होता है ।

नवशायक ।

गोपी माली तथा तेली तन्त्री मोदक वारुजी ॥

कुलालः कर्मकारश्च नापितो नव शायकाः ॥ २७३ ॥

सद्गोप, माली, तेली, तन्त्री, मोदक, वारुजी, कुंभार, लुहार और नाई यह नौ नवशायक कहाते हैं । (यह परशुराम संहितामें लिखा है) ॥ २७३ ॥

तैली, मालाकार ।

वारुजेर्गोपकन्यायां तैलिकः समजायत ॥

तैलिक्यां कर्मकाराच्च मालाकारस्य संभवः ॥ २७४ ॥

वारुज अर्थात्–बारीसे गोपकी कन्यामें तेली होताहै; इनके दो भेद हैं, एक जो तेल निकालकर बेचते तथा तिल आदिका व्यवसाय करते हैं, दूसरे अन्य प्रकारके भी व्यवसाय करते हैं ॥ २७४ ॥

ताम्बूलिक ।

वैश्यात्तु शूद्रकन्यायां जातस्ताम्बूलिकस्तथा ॥

(बृहद्धर्मपु०)

वैश्यसे शूद्रकन्यामें ताम्बूलिककी उत्पत्ति हुई, यह दूसरे ताम्बूलिक हैं, यह भी पान बेचनेका व्यवसाय करते हैं तथा कोई दूसरा व्यवसाय भी करते हैं ॥

वारी, कर्मकारः ।

वारुजी तन्तुवाय्यां वै गोपात्सद्योप्यजायत ॥

गोपालात्तन्तुवाय्यां वै कर्मकारोऽप्यभूत्सुतः ॥ २७५ ॥

(पराशरपद्धति)

जुलाहीमें गोपसे वारी उत्पन्न हुआ है और गोपालसे तन्तुवायकी स्त्रीमें कर्मकारकी उत्पत्ति हुई ॥ २७५ ॥

कुंभकारः ।

मालाकारात् कर्मकार्यां कुम्भकारो व्यजायत ।

पट्टकाराच्च तैलिक्यां कुंभकारो बभूव ह ॥ २७६ ॥

मालाकारसे कर्मकारीमें कुंभार होता है, तथा पट्टिकारके औरससे तेलिनमें भी कुंभारकी उत्पत्ति है ॥ २७६ ॥

नापितः ।

शूद्रायां क्षत्रियाज्जातः ।

(शब्दकल्पद्रुम)

शूद्रामें क्षत्रियसे नापित हुआ ।

गन्धवणिक ।

जातो वणिग्गन्धको हि ब्राह्मणाच्छूद्रयोषिति ॥ २७७ ॥

ब्राह्मणसे शूद्रामें गन्धवणिक्की उत्पत्ति होती है, यह एक व्यवसायी जाति है पहले यही गन्धद्रव्य इत्तर फुलेल वेंचते थे ॥ २७७ ॥

कांस्यकार, शंखकार ।

ब्राह्मणाच्छूद्रकन्यायां कांस्यकारो बभूव ह ।
विप्रवीर्येण शूद्रायां शंखकारस्य संभवः ॥ २७८ ॥

ब्राह्मणसे शूद्रकन्यामें कांस्यकार और विप्रसे शूद्रामें शंखकारकी उत्पत्ति है, यह उसकी विवाहिता नहीं है ॥ २७८ ॥

तन्तुवायः [जुलाहः]

मणिबन्धामणिकायां तन्तुवायाश्च जज्ञिरे ॥ २७९ ॥

मणिबन्धके औरससे मणिकार जातिकी स्त्रीमें जुलाहेकी उत्पत्ति हुईहै । क्षत्रियसे शूद्रामें मोदक वा (मयरा) जाति होती है, मोदकजाति लड्डूआदि मिठाई बनाती है । कहते हैं, जब चैतन्य देवने किसी मधुनाम नापितसे क्षौरकर्म कराया तब नापितने उनका क्षौरकर्म करके अपनेको कृतार्थ माना, और आगेको इसकर्मके करनेकी न इच्छा की, तब चैतन्य देवने प्रसन्न होकर उसको मोदक बनानेकी आज्ञा दी तबसे उसके वंशधर मोदक बनाने लगे और वे इसी नामसे विख्यात हुए ॥ २७९ ॥

कैवर्तः ।

स्वर्णकाराच्च कैवर्त्तः कुबेरिण्यां बभूव ह ।

(परशुरामसंहिता)

कैवर्त्ता द्विविधाः प्रोक्ता हालिका जालिका मुने ॥
हलवाहा हालिकाश्च जालिका मत्स्यजीविनः ॥ २८० ॥

(बृहद्व्याससंहिता)

स्वर्णकारसे कुबेरिणीमें कैवर्तजाति हुई है, हालिका और जालिका भेदसे कैवर्त दो प्रकारके होते हैं हल चलानेवाले हालिक, और मछली मारकर वेंचनेवाले जालिक कहाते हैं । हुगली, हावडा और मेदनी-पुरके अंतर्गत विशेष करके हालिक कैवर्त रहते हैं, पश्चिमोत्तरमें यह कम हैं, यहां धीमर विशेष रहते हैं इधर धीमर सत्शूद्र कहाते है, इनके हाथका चारों वर्ण जल ग्रहण करते हैं । परन्तु नवद्वीपमें इनके हाथका जल ग्रहण नहीं करतेथे, महाराज बल्लालसेनने वहां इनके जलग्रहणकी व्यवस्था कर दी है, इनमें अनेक विश्वासी स्वामिभक्तिपरायण कार्यकुशल सेवामें निपुण और सन्तुष्टचित्त होते हैं ॥ २८० ॥

गोप, आभीर ।

"वैश्य एव आभीरो गवाद्युपजीवी" इति प्रकृतिवादः । मणिबन्ध्यां तन्तुवायाद्गोपजातेश्च संभवः ॥ २८१ ॥

जनसाधारण इनको गवादि उपजीवी जानकर वैश्यवर्मा मानते हैं पश्चिमोत्तरमें आभीर गोपविशेष हैं, इनको अहीर, गोपाल कहते हैं यह गाय भैंसका दूध दही वेचते हैं, इनका जल दूषित नहीं माना जाता

परन्तु मणिवन्धीमें तन्तुवायसे एक गोपजाति उत्पन्न हुई है; यह आभीरसे इतर गोपजाति है, वाला वल्लव गोपादि इस जातिके अन्तर्गत हैं ढाकेके अधिक ग्वाले वली होते हैं। एकसमय यह गौडराजके दुर्गरक्षक थे यह द्वारपालका काम करनेसे उधर गौडग्वाला कहाते हैं, वल्लव गोप दूध दही वेचते हैं, इनका जल चलित नहीं है, नवद्वीपमें इनके हाथका जल ग्रहण करते हैं। भीगाग्वाला वृषोत्सर्गादिमें बैलोंको दागते हैं यह गोपजातिमें निकृष्ट गिने जाते हैं इनका जल नहीं पिया जाता॥ २८१॥

अहर।

यह भी एक युक्तप्रदेशकी जाति है, इसके कईसौ भेद बताये जाते हैं, कोई इनको गोपवंश कोई अहेरिया बताते हैं, यह अपनेको अहीरोंसे उच्च मानते हैं, परन्तु अहीर इनको अपनेसे हीन बताते हैं, कोई इस जातिको अहीरोंसे निकली मानते हैं, दोनोंही अपनेको क्षत्रिय बताते हैं, पर प्रमाण कुछ नहीं देते न पुरातन संस्कारही पाये जाते हैं॥

उरुगोला।

मैसोर राजकी एक ग्वालाजातिका उरुगोला नाम है वहां उरुगोला और कड्डूगोला यह दो प्रकारके ग्वाले होते हैं इनका परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है, इनमें वडी विचित्र वात यह है कि जव किसीके पुत्र वा कन्याका जन्म होता है, तव स्त्री अपने वच्चे सहित ग्रामसे वाहर वृक्षकी छायामें सात वा तीस दिनतक रहती है, वीमारी होनेपर वृद्धा स्त्री इलाज करती हैं, विवाह भी ग्रामसे वाहर होता है और किसी छायाकी जगह होता है, पांच दिनतक जेमनवार होती है पतिके मरनेपरभी स्त्री चूडा नहीं उतारती॥

गद्दी।

यह भी एक युक्तप्रदेशकी जाति गोपालन करती है, यह जाति मुसल्मान वहुतायतसे वनायी गयी थी घोसी तथा अहीरोंसे इनकी रहन सहन मिलती है, पंजाबमें करनाल कांगडा आदिस्थलोंमें यह जाति पाई जाती है, अवधिया, वहरायची, वालपुरिया, गोरखपुरिया, कनौजिया, पूर्वीया, मथुरिया, सकसेना, सरवरिया, साहपुरी, अहरवाड, वाछर, वैस, मदौरिया, भंगी, भट्टी, विशन, चन्देल, डौहान, क्षत्री, रोमर, ग्रोली, गूजर, हरकिया, जाट, कम्बोहा, राठौ, टांक, तोमर आदि इनके भेद हैं विदित होता है, कि क्षत्रियोंसे निकलकर, यह जाति संस्काररहित होकर इस दशामें आगईहै इसप्रकार यह जाति है, इधर गोपालक ग्वालभी कहाते हैं॥

कमार।

यह भी एकप्रकारकी लुहारजाति वङ्गालमें प्रसिद्ध है, यह विलायती ढले हुए लोहेपर काम करते हैं, कृषिके औजारोंकी मरम्मत करते हैं, वहां यह सत्शूद्रोंकी श्रेणीमें माने जाते हैं, चाकू, कैंची आदिभी तयार करते तथा वहुत वढिया तालेभी वनाते हैं, कुछ लोग इसजातिके सुनारका भी धन्दा करते हैं, यह लोग वलिदान करनेकी नौकरी करते हैं, सुनारका काम करनेवाले प्रतिष्ठित समझे जाते हैं।

कमारी।

यह तैलंग देशकी लुहारजाति है, यह पंचनाम वालेजातिका एक भेद है, यह लोग सुनारका काम भी करते हैं।

असत।

द्रविड देशान्तर्गत तैमिल देशकी यह जाति क्षौर करनेका काम करती है वहां यह नाई माने जाते हैं।

अगसाला ।

यह एक सुनारजातिका भेद है वह मैसौरमें हैं, यह अगसाला और अर्कसाला भी कहाते हैं, इनको पंचसलारों अर्थात् सुनारोंमें ऊंचा कुल माना जाता है, इनमें कोई २ आचार विचार भी रखते हैं ।

कंसारी ।

यह भी तैलंगदेशकी पंचनामवाली सुनारजातिका एक भेद है, यह लोग कांसेका भी काम करते हैं, घंटे घंटियां भी बनाते हैं, यह कुछ पढे लिखे भी होते हैं यह कंसाली भी कहाते हैं ।

सुकुली जाति ।

हुगली और मेदनीपुरके निकट एक सुकुली जाति कपडे वुनती है लोग इनको नीच कहते हैं, परन्तु ज्ञाता लोग इनको सोलंकी जातिकी शाखा कहते हैं, यह विपत्तिसे अपना कर्म त्यागकर पतित हुई हैं, मूलराज सोलंकी राजा था, उसके पुत्र चन्द्रराव पिताके सिंहासन पर बैठे, वह अनहलवाडे पर महम्मद गजनवीसे युद्धमें पराजित हुआ सम्वत् १२८४ में अनहलवाडा नष्ट हो गया, तातारियोंकी बराबर चढाई होती रही तब यह जाति वहांसे उजडकर दूसरे देशोंमें विखर गई, उडीसामें यह वहुतसे लोग जगन्नाथजीका दर्शन करते हुए निवास करनेलगे, उस समय उडीसा वस्त्र तथा कृषि विषयमें प्रधान था इन्होंने भी यही वृत्ति अवलम्बन की वहुत कालतक वहां रहनेसे यह भी उसी भावको प्राप्त हो गये और सोलंकी उपाधिसे रहित होकर सुकुली कहाये, यह धर्मनिष्ठ तथा अतिथिप्रिय होते हैं । यह बंगादिकी संकरजातिका वर्णन किया ।

धनकुटेमाली ।

यह एकप्रकारकी सत्शूद्रजाति है यह युक्तप्रदेशमें रहती हैं, इनके हाथका जल चारों वर्ण ग्रहण करते हैं, तथा यह नाजकी दुकानोंपर नौकरी करते हैं और पल्ले बांधते हैं ॥

वरवाल ।

यह भी एक प्रकारकी शूद्रजाति है, यह लोग घोडा लादते हैं तथा पल्लेदारीभी करते हैं ।

वेलदार ।

यहभी एक शूद्रजाति है कदाचित् यह कुदालीजाति है, यह कुहलाडी द्वारा लकडी चीरनेका काम करते हैं तथा फलादि भी वेचते हैं ।

अगरिया ।

युक्तप्रदेशमें यह जाति लोहेका काम करती है, मिर्जापुरके जिलेमें विशेषरूपसे पाई जाती है यह महनीच और अस्पर्शी मानी जाती है ।

अगसिया ।

मैसौर राज्यमें अगसिया नाम धोवी जातिका है बङ्गालमें धोवीको धोया, मध्यदेशमें वरठी, दक्षिणमें वनान और अगसिया कहते हैं तैलंगमें चकली कहाती है, तैलंगमें इनसे गृहस्थोंके काम भी लेते हैं तथा वहां यह नौकरी भी करते हैं ।

आहेरिया, फासिया ।

यह जंगलमें जीवोंको मारने तथा पकडनेवाली एक निकृष्ट जाति है, अलीगढ जिलेमें यह वहुत पाई जाती है, यह खेती मजदूरी भी करती है तथा पक्षी आदिको मारकर खा जाती है, यह टोकरी

बनाकर आजीविका करते हैं, कहीं चिडिया होता आदि पकडकर बेचते हैं, यही एक प्रकारकी फसियोंकी जाति है यह भी पक्षी पकडने आदिका धन्धा करते हैं तथा कहारोंकी तरह वैहंगी लगाते हैं।

कतकारी।

यह जाति दक्षिण देशकी है, स्टीलसाहबने इसको शूद्रसे नीचे माना है, यह कत्था बनानेका काम करती है।

कतुवा।

आजमगढ और पीलीभीतके जिलेमें यह जाति निवास करती है, यह अपनेको क्षत्रिय कहते हैं पर वैसा कोई संस्कार नहीं है।

थरुआ।

यह जाति तराई पीलीभीत अटेमा खटेमा जिले नैनीतालमें पाई जाती है, विशेष कर कृषिकर्म करते हैं, कोई कत्था भी बनाते हैं, अपनेको ठाकुर कहते हैं, घरका कोई मरजाय तो गाडदेते हैं, चौतरा बनाकर उसकी पूजा करते हैं, वास्तवमें यह एक प्रकारके शूद्र हैं, खसियोंका एक भेद है, पर्वतमें ऊपर खसिया नीचे थरुआ रहते हैं।

कम्बोह।

यह एक प्रकारकी जाति है परन्तु अब मुसलमानोंमें कम्बोह जाति विशेषतासे है, सम्भव है यह हिंदूसे मुसलमान होगये हों, पर इस जातिमें अबतक वीरत्व पाया जाता है।

कल्लन।

दक्षिणमें यह एक प्रकारकी अत्याचार कारिणी जाति कहातीहै, यह चोरी और लूटमार करतेहैं, पन्द्रह वर्षकी अवस्थासेही यह इसकार्यमें दक्ष होजातेहैं, यह बाल बढाते हैं, इनमें शिवके पूजक भी होते हैं।

कव्वाल।

यह गानेवाली एक जाति है, यह लोग सितार बहुत बढिया बजाते हैं, अमीर खुशरोके समय इनकी बडी प्रतिष्ठा थी।

कवराई।

यह द्राविडी खेतिहर जाति है, इसमें कुछ धनी लोग भी हैं यह अपनेको ठाकुर कहते हैं, पर लोगोंकी सम्मति इस रूपमें नहीं हैं।

कामगर।

यह भी एक प्रकारकी युक्तप्रदेशकी सेवा करनेवाली जाति है, यह शूद्र कहाते हैं।

कामडिया।

यह एक भीख मांगनेवाली जाति है स्त्रीपुरुष तम्बूरेपर गातेहैं, स्त्रियें शरीरमें बारह तेरह जगह मंजीरे बांधकर बजाती हैं, इनको नौटंकी भी कहते हैं, इनका इष्ट रामदेव है। इनके गाने बजानेका धन्धा होता है, यह मुरदोंको गाडते हुए सुने गये हैं, इनके विवाहादि गुरडे कराते हैं।

कानडे।

दक्षिण देशमें एक प्रकारकी सुनारोंका धंधा करनेवाली एक जाति है, यह लोग यज्ञोपवीत धारण करते हैं, मद्य मांसादि भी सेवन करते हैं, यह अपनेको पांचाल सुनार कहते हैं, तथा अपनेको ब्राह्मण होनेका भी दावा करते हैं, परन्तु वहांके निवासी इनको चतुर्थ वर्णमें मानते हैं।

कानोता ।

कहते हैं कि पहले यह वीन वजानेवाली ब्राह्मण जाति थी लोग कहते हैं कि भवानी खांपके पंचोलियोंके वडेरे उससमय कोषाध्यक्ष थे, एक समय बादशाहसे इनकी अनवन हुई तो वहुतसे पंचोली मारे गये, वहुतसे कैद होगये और अनेकोंके प्रार्थना करने पर भी वादशाहने न छोडा, चन्दन नामक एक वृद्धने वीन वजाकर वादशाहको प्रसन्न किया, और खजानचियोंका छुटकारा चाहा, तव वादशाहने कहा यदि तुम मुसलमान होजाओ तो उन सबको छोड दूंगा उसके मुसलमान होनेपर सब छोड दियेगये ।

कालू ।

वंगालमें यह जाति तेल निकालने और वेचनेका काम करती है, यह धनी भी हैं और ऊंचे वर्णका दावा करते हैं पर प्रमाण कुछ नहीं है ।

कावडा ।

वंगालमें निकृष्ट काम करनेवाली यह एक निकृष्टकर्मा जाति है, इस जातिमें चोरी तथा लूट खसोट करते भी लोग पाये गये हैं ।

कार्तिक ।

इस जातिका काम भेडादि पशुओंको मारकर उनका मांस वेचना है, यह नीचजाति स्पर्शके योग्य नहीं है ।

कंजर ।

युक्तप्रदेशमें यह एक अति नीच जाति है, यह लोग कछुए गोह तक खा जाते हैं, तथा सेंठे औ तुलियोंकी सिरकीका घर और परदे वनाकर उसीमें अपनी आजीविका करते हैं ।

किंगरिया ।

यह मुडचिरोंकी एक जाति है, यह भीख मांगनेमें वडा मूडचिरापन करते हैं, अपने शरीर या अन्य किसी अंगमें भीख न देनेपर चक्कू आदि मार लेते हैं, पैसा लेकरही पीछा छोडते हैं ।

कीर ।

यह एकप्रकारकी कहार जातिका भेद है, यह सिंवाडे वोने वेचने तथा खरवूजे ककडी आदि वेचनेका काम करते हैं ।

किरात ।

भीलोंके समान यह जाति भी वनवासिनी है संस्कारहीन है, शूद्रसेभी गिरे धर्मवाली है ।

किकारी ।

यह एक टोकरीवुननेवाली निकृष्ट जाति है, यह शूद्रोंसे भी नीच जाति है ।

कुनेडा ।

यह लोग खैरकी लकडीके टुकडे वो नगाली वनाकर वेंचते हैं, यहभी शूद्र है ।

कुसाटी । डंवारी ।

यह दक्षिणकी रहनेवाली नटके समान आचरण करनेवाली निकृष्ट जाति है ।

कुर्वा ।

यह एक भक्ष्याभक्ष्य कीट पतंगादितक भोजनकर जानेवाली जाति है, यह अन्त्यजोंमें समझी गई है, मिस्टर क्रूकने इसको सबसे निकृष्ट कहा है, युक्तप्रदेशमें इनकी संख्या ६२० है ।

कुरुमार।

दक्षिणमें कुरुमार और युक्तप्रदेशमें यह सिकलीगर कहाते हैं, यह चाकू कैंची छुरी आदिपर धार रखते हैं।

कुश्ती, सुशीर।

यह रेशम कातने और तयार करनेवाली दक्षिणकी शूद्र जाति है।

कौंजडा।

यह एक तरकारी वेचनेवाली जाति है, प्रायः अब मुसलमान हैं।

कैकलर।

यह दक्षिणदेशकी कपडा बुननेवाली जाति है, यह जुलाहे हैं, यह लोग मद्य बहुत पीते हैं।

कोच।

यह जाति युक्तप्रदेशमें रहतीहै इसकी स्थिति साधारण और शूद्रधर्मसे भी रहित है तीवर जातिके पुरुपसे कसाइनमें उत्पन्न पुरुष कोच हैं।

कोडा।

यह युक्तप्रदेशकी शोरा और नमक वनानेवाली एक जाति है यह अपनेको वैश्य कहते हैं, पर संस्कारसे हीन हैं।

कोरी।

यह कपडा बुननेवाली जाति है इनके भेदोंकी बहुतसी संख्या है, कोई कहते हैं कि यह कानीन हैं, एक कोइरी जाति है यद्यपि यह समान शब्द हैं पर कोइरी अपनेको क्षत्रियधर्मा कहते हैं जिनका वर्णन मने अन्यत्र किया है।

कोला।

यह भी एक प्रकारकी वनवासिनी निकृष्ट जाति है यहभी निकृष्टकर्मा हैं।

कोवर।

यह अगूरी जातिके समान एक जातिका भेद है।

कंचारा।

इस जातिका नाम कचकर भी है शीशेका व्यापार इनका काम है इनमें खांप भी है, यह कहीं कांचका भी काम करते हैं, संस्कार इनमें नहीं है।

कंचारी।

यह भी पूर्ववत् शीशेका व्यापार करनेवाली जाति है, यह खानदेश तथा कोकनदमें बहुतायतसे हैं।

गौंद, गौंड।

यह अनेक प्रकारके अभक्ष्य मांसादि भक्षण करनेवाली म्लेच्छोंके समान अस्पर्श जाति है।

गौरिया।

युक्तप्रदेशमें गौ आदि पालन करनेवाली एक ग्वालों जैसी जाति है यह राजपूतानेमें भी पाये जाते हैं, यह भी मिश्रित जाति है।

गेजगारा ।

दक्षिण देशमें यह जाति घंटी घंटे तथा मंजीरे वनानेका काम करती हैं, इनको वहांके लोग ठठेरोंके मान मानते हैं ।

गूजर ।

यह भारत वर्षकी एक प्रसिद्ध जाति है, यह जाति कुछ शरीर वल सम्पन्न होती है और अपने पुरुषाओंको राजपूत वताती है और जहां कहीं लोग कुछ सम्पन्न हैं या पढ लिख गये हैं वे अपनेको क्षत्रिय कहते है, मनुष्य गणनामें यह आठवीं श्रेणीमें लिखे गये हैं, पर इसमें सन्देह नहीं कि इस जातिका पिता तो क्षत्रिय हैं और माता अन्यवंशकी है इसमें कुछ कुरीतियें ऐसी हैं कि यह उच्च कोटिमें नहीं मानी जा सकती हैं इनके संस्कार भी नहीं हैं, गोप जातिसे इस जातिका सम्बन्ध अवश्य पाया जाता है, कोई इनको अहीरोंकी शाखामें वताते हैं, कोई इनको राज्याधिकारी कहते हैं, कोई अहीर जाट गूजरको एकही वंशमें कहते हैं इनमें किसी भाईका एक स्त्रीके व्याह होजानेपर अन्य भाइयोंको विवाहकी आवश्यकता नहीं रहती इत्यादि कुरीतियेंभी वताई जाती हैं, इसलिये जवतक यह जाति प्रमाण न दिखावे तवतक इसके विषयमें कुछ कहा नहीं जाता, जिस जातिमें एक दो पढे, लिखे, धनी रईस हुए कि लोग झटसे उनको उच्चजाति कह देते हैं, और वंशावली वनजाती है, चाहै उसमें कुछ हो या न हो, इसलिये इसका विशेष निर्णय प्रमाणपर छोडा जाता है, इस समयका लेख इस समयकी स्थिति पर है ।

कोइरी ।

युक्तप्रदेश तथा विहारकी कृषिकर्मा प्रसिद्ध जाति है कोइरी शब्द किस शब्दका अपभ्रंश है यह निर्णय अवतक नहीं हुआ; कृषिकर्मी, कुर नामक ऋषि, कुरु सन्तति, कछवाहा आदि शब्दोंसे इसका असली शब्द माना जावे तोभी कोइरी शब्द इनका अपभ्रंश नहीं माना जा सकता, इनमें सवके संस्कार भी नहीं हैं, उनके नाम निकासके कारण इलाहावादी, व्रजवासी, पुरविया, दखनाहा, मचधिहा, मघहिया (मगधिया) सरवरिया, कनौजिया, वनारसिया, मिर्जापुरिया, अयोध्यावासी, आजमगढिया आदि पाये जाते हैं, कुछ भेद नाराइमन, तोरीकोडिया, हरदिया, शक्तिया, भक्तिया, वरदवार आदि हैं, कुछ भेद कोई २ कछवाहा, वैसिया, राठौरे, जैसवार, सूर्यवंशी नामवाले हैं, इनके वहुत भेद हैं, यह अपनेको क्षत्रिय कहते हैं, पर दूसरोंकी सम्मति इसके विरुद्ध है, शास्त्रप्रमाण जवतक न हो तवतक यह निर्णय विचारकोटिमें रक्खा जाताहै)

खट्दर्शन ।

इसमें वहुत जातिके भिक्षुक पुरुष मिलकर एक आकारमें होगये हैं, यह मारवाडमें कोई डेढ लाख पाये जाते हैं, किसी समय इनका न्याय वहां चारण जातिके लोग करते थे, इनमें पहले कुछ भेदभाव न था सव एक रूपसे रहते थे ।

खटीक ।

यह एक निकृष्टकर्मा जाति है, यह भी छेरी आदि पशुओंको मारकर खानेवाले हैं, भेड वकरीको भी यह पालते हैं, ऊनका काम करते हैं, यह जाति युक्तप्रान्तमें पाई जाती है, लोग इनको अस्पृश्य कहते हैं ।

खरौत ।

यह जाति युक्त प्रदेशके वस्ती जिलेमें पाई जाती है, यह कैवर्त्त वा केवट जातिका एक भेद है और इनको वेलदार भी कहते हैं, दखनाहा, जडौत, और माटौर इनके तीन भेद पाये जाते हैं ।

खागर ।

यह भी एक युक्त प्रदेशकी जाति है, बुन्देलखण्डमें भी यह पाई जाती है, कोई कहते हैं यह शब्द खंगढसे बना है, अर्थात्–तलवारका गढ यह संख्यामें कोई ४८ सहस्र हैं, हमीरपुर, झांसी, जालौनमें वह विशेष हैं, कुर्मियोंके हाथकी कच्ची पक्की रसोई यह खाते पाये जाते है, यह चौकीदारी भी करते हैं, इसमें कोई २ अपनेको ठाकुर कहते हैं, पर संस्कार इस जातिमें भी नहीं पाये जाते कहा जाता है इसका आदि निकास काल्पी है, काल्पीसे ही चलकर इन्होंने भीषमगढ रियासतके कुरार-गढमें निवास किया था ।

खाडरिया ।

यह जाति मारवाडमें पाई जाती है, यह सीरवियाभी कहाते हैं, कहते हैं कि यवनोंके समयसे यह खेती करते हैं यह लोग अपना निकास राजपूतोंसे बताते हैं, पर संस्कार नहीं रखते, जालौरमें रावका-महडदेवने इनको शरण दी थी।

खारवाल ।

इनको कोई २ खारौल भी कहते हैं. यह मारवाडमें खारी भूमिमें नमक बनाते थे, पर जबसे नम-कका कानून बना तबसे यह लोग खेती करते हैं, कहा जाता है इनमें क्षत्रियोंकी समान खांप पाई जाती हैं, कोई कहते हैं शाहबुदीनके समयसे क्षत्रिय धर्म छुटा है ।

गढनायक ।

वह उडीसा प्रान्तकी खण्डायत जातिका भेद है, इसमें जिसके हाथमें गढरक्षकका काम था वे लोग गढनायक कहाये ।

गरूरी ।

स्टील साहबके मतसे यह जाति शूद्रसे निकृष्ट और चाण्डालसे उत्कृष्ट मानी गई है यह एक प्रकारके सपेरे हैं ।

गरसी ।

यह जाति पंढरपुर पूनामें निवास करती है, यहभी शूद्रोंसे निकृष्ट मानी गई है ।

गनिग ।

मैसौर प्रान्तमें तैलकारको गनिग कहते हैं, बङ्गालमें यह लोग कालू राजपूताना व युक्तप्रदेशमें तेली उत्तरीभागोंमें वांची, तैलंगमें कूल्रवाई, द्रविडमें वणिक, कर्णाटकमें नगोरा कहाते हैं, देशभेदानुसार मान प्रतिष्ठा है, असली तैलकारकी उत्पत्ति लिख चुके हैं ।

गनीगार ।

मैसौरमें यह जाति मोटे कपडे तथा टाट बोरी बुनती है, बहुतसे इनमें खेती भी करते हैं ।

गंवारिया ।

यह एक प्रकारकी जाति राजपूतानामें रहती है, यह मूँज कूटकर रस्सी बनाती, पानी पूले सरकण्डे बेचती है, सिरके सींगकी कंघी बनाती है, यह नगरके बाहर रहते हैं, इनमें सीवान, खटान, मालावत, घावड़िया, भूकिया, बीजलोत, वीसलोत, गोरामा, कूण्डा और मूछल आदि भेद पाये जाते हैं ।

गान्धिल ।

यह सुगन्धित पदार्थ बेचनेवाली एक जाति है, यह विशेषकर पंजाबमें पाये जाते हैं, युक्त-प्रदेशमें बहुत न्यून हैं ।

आसिया।

यह जाति प्रायः लूटखसोट करती है राजपूतानेमें यह लोग पाये जाते हैं, यह अशिक्षित होनेसे चोरी आदि कुकर्म करते हैं, दूसरे आसिया राजपूतानाके पर्वतोंमें रहते हैं, यह भीलोंके समान तीरकमान रखना, पशु पक्षियोंका वध करना, घास लकडी काटकर नगरोंमें वेचते है, इस समय इस जातिमें शूद्र-धर्मही वर्ताजाता है, कहा जाता है पहले यह भी क्षत्रियवर्मा थे।

खूमडा।

यह पत्थरकी चक्कियोंको वेचनेके लिये इधर उधर फिरा करते हैं, बैलोंकी गाडियोंपर चक्की लादते हैं, इनमें बहुतसे मुसल्मान होगये हैं इनके भेद वाहमन, दुलहा, गौरिया, गौड, हटैवाले, कुरैशी, मुलतानी, नवावार, तराई तमार आदि हैं।

गोला।

इसनामकी एक जाति राजपूतानेमें निवास करती है, यह एकप्रकारके दास हैं, जो पृथक् नहीं हो सकते, यह राज्योंमें दहेजोंमें भी दिये जाते हैं, यह चाकर चाकरिन, बांदा बांदी, खवास खवासिन, दारोगा दारोगिन भी कहाते कहाती हैं, राजपूत राजे महाराजोंके यहां यह जाति निवास करती है, इनकी उत्पत्ति इस प्रकारसे लिखी गई है कि क्षत्रियपुरुषद्वारा दासीसे जो सन्तान होती है वह गोला और गोली कहाते हैं, किन्हींका मत है मोल लीहुई दासीमें जो सन्तान होती है वह गोला वा गोली कहाती है, अवतक यह जाति राजघरानोंकी सेवामें पाई जाती है, यह अपनी अल्ल भी वही रखते हैं, यथा राठौर, चौहान, वघेल, पवार, कछवाहा, सोलंकी, सिसोदियां, गोड, गोयल, टांक, भाटी, तवर, वड गूजर, आदि इससे विदित होता है कि वंशसे यह अपनी अल्ल मान लेते हैं, यह जाति वेटीवालेकी ओरसे दायजेमें दी जाती है, कोई इनमें बहुत सुन्दरी होती हैं, कोई २ ठाकुर राजपूत उनको अपने यहां स्त्री वत् रखलेते हैं, कहीं गोले उच्च नौकरी करते दिखाई देते हैं, पैरमें सोनेका कडा पहनते हैं, कहीं पडदा-यतजी कहीं खवासिनजी कहीं पडारिनजी स्त्रियें कहाती हैं।

भुरजी।

भारत वर्षमें चवेना भूननेवाली एक भुरजी जाति है, इन लोगोंमें भी किसी प्रकारका संस्कार नहीं पाया जाता, यह लोग भी शूद्रप्राय हैं, परन्तु इसके हाथका भुना हुआ चवैना चारों वर्णके लोग खाते हैं, कहीं यह लोग भरभूजे कहीं भुरजी और कहीं भ्राष्ट्रक कहाते हैं इनमें मथुरिया आदि भी होते हैं, इनमें कराव होता है यह लोग अपनेको जादव कायथ कहते हैं।

अथ झालोरा-सच्छूद्रोत्पत्तिः।

पादेनाताडयन्पादं वालुका पतिता भुवि ॥
षट्त्रिंशच्च सहस्राणि द्विशतं तु तथोत्तरम् ॥
षट् पंचाशच्च सच्छूद्रा विप्रेभ्यो द्विगुणाभवन् ॥

ब्रह्माजीने ब्राह्मणोंकी सेवा करनेके निमित्त पांवसे पांवको ताडन करके ३६२५६ सत् शूद्र उत्पन्न किये, और उनके लिये ब्रह्माजीने आज्ञा दी कि तुम सब सेवा वृत्तिसे धनोपार्जन करो और इन ब्राह्मणोंकी सेवा करो. अपने सब कार्य इन्हीं ब्राह्मणोंसे कराओ जो अन्यसे कराओगे तो तुम्हारे सब कर्म निष्फल होंगे,

यही सब तुम्हारे पुरोहित होंगे, साम्बादित्य और रतीश्वर यह दो प्रकारसे तुम्हारे भेद होंगे, इसी प्रकार चन्द्रसे कन्या उत्पन्न करके उनका विवाह किया ।

अथ मंदग-शूद्रोत्पत्ति ।

जो शाकद्वीपसे शाकद्वीपी ब्राह्मणोंके साथ आठ कुल मंदग शूद्रोंके आये वे मंदग शूद्र कहाये, शाकोंकी कन्याओंके संग इनका विवाह हुआ यह सूर्यभक्त होते हैं ।

अथ लेवाकडवाशूद्रोत्पत्ति ।

एकसमय रामचंद्रजीके लवकुशा नामक पुत्र तीर्थयात्रा करते हुए गुजरात देशके सिद्धपुर नामक क्षेत्रमें आये, इस क्षेत्रके दक्षिण पांच कोसपर ऊंझा ग्राममें उमादेवी विराजती हैं, उनकी सेवा करनेके निमित्त निर्धन कृषकोंको नियत किया, उनमें लवके स्थापन किये लेवे पट्टीदार हुए, और दालका व्यापार करनेसे दालिये कहाये, कुशके स्थापन किये शूद्र कुडवे और कुणबी कहाये, इनमें बारह वर्षमें कन्याका विवाह होता है ।

जातिकी नामावली ।

रजपूत, कहार, सारथी, कुर्मी, अहीर, वैतालिक, माली, कलार, नाई, वेधक (रत्नोंमें छेद करने वाला), तमोली, रंगरेज, दरजी, लुहार, बढई, सुनार, ठठेरा, यह अनुलोम हैं ।

कोलवील, कंजर, भंगी, कोरी, कुम्हार, गडरिया, तेली, भट, धोबी, मोची (चमार, पासी, धानुक) बंसफोर चिकवा (मांसविक्रेता), डोरियां (कुत्ते पालनेवाले भंगी), नक्कारची, निषाद, डोम, मल्लाद, बारी, कलवार यह अकवामुलहिन्दमें लिखा है ।

खेतिहर किसान ।

अराइन-पंजाब प्रान्तकी खेती करनेवाली एकजाति है यह लोग बाग बगीचेकी संभालमें मालीका भी काम करते हैं, इनकी आबादी पंजाबमें नौलाखसेभी विशेष है इनमें अनेको मुसलमानभी होगये हैं ।

उपपर्व-यह द्रविड देशमें खेती करनेवाली एक जाति है ।

उर्ली-यह द्रविड देशकी कृषि करनेवाली जाति है इनके आचरणोंमें कुछ उत्तमता पाई जाती है ।

कढेरा-यह कढारभी कहाते हैं, इनका सम्बन्ध मल्लाह जातिसे बताया जाता है, परन्तु इस समय यह भी विशेष करके खेती करते हैं, कहीं यह लकडीका कामभी करते हैं, वास्तवमें शूद्रधर्मा हैं ।

कनेत-कनेट--यह भी एक प्रकारकी खेती करनेवाली जाति है, यह अपनेको क्षत्रिय मानते हैं, पर संस्कार इनमें कुछ भी नहीं पाया जाता, युक्तप्रदेशके उत्तरी तथा पहाडी भागोंमें यह जाति पाई जाती है। प्रायः दूसरे लोग इन्हें शूद्र ही कहते हैं ।

कपिलियन-यह द्रविड देशकी खेती करनेवाली एकजाति है, यह केनारियोंसे प्रतिष्ठित समझे जाते हैं ।

कम्बलातर-द्रविड देशकी कवराई जातिका उपभेद है यह कृषिकर्म तथा दस्तकारीमें बडी योग्यता रखते हैं, मद्रासमें यह लोग ऊंचे पदपर नौकर हैं, यह जादूगरीभी करते हैं, सर्पके काटेका इलाज भी करते हैं, शिरमें चमकीले रंगकी पगडी बांधते हैं, स्त्रियें गहनोंसे ही शरीरको ढकती हैं।

कामावारू-यह तलंग देशकी कृषि करनेवाली एक जाति है, यह कापू जातिके समान है ।

कास्त-यह महाराष्ट्र देशकी कृषि करनेवाली एकजाति है, इनका निवास पूने आदिमें है, पांचसौ छःसौ घर उस प्रान्तमें पाये जातेहैं यह लोग कुछ मालदारभी हैं कोई अपनेको ब्राह्मण मानते हैं, पर कोई ब्राह्मण इनको ब्राह्मण नहीं मानता, सब शूद्र मानते हैं, इनकी उत्पत्तिका विवरण नहीं मिला ।

काप्पू-यह तैलंग देशीय खेती करनेवाली एक जाति है यह सिपाहीगिरीभी करते हैं, मांस मद्य सेवन करते हैं, कोई क्षत्रिय कोई शूद्र कहते हैं वास्तवमें क्षत्रियोंके संस्कार इनमें नहीं हैं।

किसान-युक्तप्रदेशमें खेती करनेवाली किसान असली जाति है युक्तप्रदेशमें कोई चारलाख मनुष्य हैं, यह सब शूद्रधर्मी हैं।

कुनवी-यहभी एक प्रकारकी खेती करनेवाली जातिहै, मध्य प्रदेशमें और गुजरातमें यह लोग विशेष पाये जाते हैं, किन्हीकी सम्मति है कि कुनवी, कुर्मी, कुणवी, कुनवी सब एकही जाति है।

कोलटा-यह मध्य प्रदेशकी सम्भलपुरमें विशेष रूपसे रहने वालीएक कृषक जाति है, यहभी अपनेको क्षत्रिय कहते हैं, पर दूसरे लोग इस बातको नहीं मानते।

खोगी-युक्तप्रदेशमें यह जातिभी खेतिहर है, कोई कहते हैं कि पहले यह चौहान राजपूत खङ्गी कहातेथे, उसीका बिगडकर खांगी होगया है, कोई कहतेहैं कि यह राजा खङ्गके वंशधर हैं, परन्तु अब तो यह सर्वथा संस्कारहीन हैं। इनके अनेक भेदहैं, वास्तवमें जिनके निकास और स्थितिका पता नहीं संस्कार नहीं यह शूद्रधर्मी होनेसे शूद्रही कहे जा सकते हैं।

हलवाई।

हलवाई-फर्रुखावादके समीपस्थ एक हलवाई जाति कहाती है लोग इनके हाथकी मिठाई खाते हैं, पूरी कचौरी भी खाते हैं।

कन्दू-कन्दोई-यह भी एक प्रकारकी मिठाई बनानेवाली जाति है, राजपूतानेमें यह कन्दोई कहाते हैं, इनकी बनाई पूरी आदि भी वहांके ब्राह्मण तथा वैश्यआदि खाते हैं, बंगालमें यह जाति कन्दू कहाती हैं यह अपनेको वैश्य कहते हैं।

गुडिया-उडीसामें गुड तथा मिठाई बनानेवाली हलवाईके समान एक जाति है। यह अपनेको वैश्य कहते हैं।

आगरी।

यह दक्षिण देशमें रहनेवाली एक जाति है, यह कहते हैं ययाति राजाके वंशमें एक बलीन्द्र नामक राजा था उसकी स्त्रीका नाम आगलिका था उससे जो पुत्र हुआ वह आ[illegible]ला कहाया, वहांसे यह लोग बिंवराजाके कोकन देशमें आये, इनका दक्षिणमें मुख्यस्थान मुंगी है, यह पहले मीठेका व्यापार करते थे इससे मीठे आगरी कहाये, कोकनमें जाकर इनके यज्ञोपवीतादि सब संस्कार नष्टहोगये, मीठा आगरी औरढोल आगरी इनके दो भेद हैं, विवाहादि अपने २ थोकमें होता है, यह जाति राजपूतानेमें अब भी विशेष रूपसे पाई जाती है सर्व साधारणमें अब यह शूद्र माने जाते हैं।

अभात-यह जाति बंगाल विहारमें निवास करती है और सत्शूद्र कहाती है, इनके यहां दो भेद लिखे हैं, एक घरबैठ दूसरा बिआहुत, घरबैठ तो खेती करते हैं, और बिआहुत नौकरी करते हैं, परस्पर इनका विवाह सम्बन्ध नहीं होता, इनके यहां की पुरोहिताई मैथिल ब्राह्मण करते हैं, यह अपनेको वैश्य-वर्णमें मानते हैं।

अथ वर्णसंकरजातिज्ञानचक्रम् ।

संख्या ।	जाति ।	पिता	माता
१	मूर्धावसिक्त	ब्राह्मण	क्षत्रिया
२	अंबष्ठ	ब्राह्मण	वैश्या
०	अंबष्ठ	ब्राह्मण	क्षत्रिया
३	पारशवनिषाद	ब्राह्मग	शूद्री
४	माहिष्य	क्षत्रिय	वैश्या
५	उग्र	क्षत्रिय	शूद्री
६	वैतालिक, करण, नट	वैश्य	शूद्री
७	आयोगव,इटारा,पाथरवट,	शूद्र	वैश्या
	चूनाटा ।	”	”
८	क्षत्ता, पारधी, निषाद ।	शूद्र	क्षत्रिया
९	चाण्डाल	शूद्र	ब्राह्मणी
१०	मागध, वंदीजन	वैश्य	क्षत्रिया
११	वैदेह	वैश्य	ब्राह्मणी
१२	सूत	क्षत्रिय	ब्राह्मणी
१३	शालक्य, मणिकार	मालाकार	कायस्थस्त्री
१४	कासार	नृपवंशीयब्राह्मण,	अंवष्ठा
१५	तांबटकर	क्षत्रिय	पारशवा
१६	कुंभकार	ब्राह्मण	उग्रा
१७	पारशव,स्वर्णकार,	ब्राह्मण	शूद्री
१८	उल्मुक, लोहकार	क्षत्रिय	मागधी
१९	रथकार, वाटी,सुतार	माहिष्य	करिणी
२०	रंगकार, सिन्दोल, सूचिक	शूद्र	वंदिनी
२१	सौवीर	कुक्कुट	आभीरी
२२	नीलीकार कोष्टा	आभीर	कुक्कुटी
२३	किंशुक,	निषाद	धिग्वणी
२४	सांखिल्य, सौण्डिक,	”	”
	बावर ।	नापित	मांगी
२५	पांशुल,पौटिक,भामाटा ।	निषाद	मांगी
२६	सिंदोल, कर्मचांडाल,	”	”
	चोहड्ड ।	संन्यासी	विधवाब्राह्मणी
२७	रोम, लोणार	मल्ल	आवर्तस्त्री
२८	वंधुलक, झारा,	मैत्रेय	जांधिका

सं० ।	जाति	पिता	माता
२९	कुक्कुट, क्रोधिक,	शूद्र	निषादी
	टांकशाली ।	”	”
३०	ठठार, नोतार,	हस्तक	मेदस्त्रीकोलिनी
३१	श्वपच, मांग,	चाण्डाल	मेदवनिता ।
३२	मालाकार–माली	माहिष्य	निषादस्त्री
३३	शांवरिक–साली	आवर्तक	वेनस्त्री
३४	शाल्मल–तँबोली	मंगु	कुंभकारस्त्री
३५	मंगु	ब्राह्मण	बन्दिनी
३६	वंदि	वैश्य	क्षत्रिया
३७	मौष्कल तैलकार ।	पारशव	उग्रा
३८	प्राणिकार । चर्मकार–		
	चमार ।	निषाद	धिग्वणी
३९	पुल्कस–कोली ।	निषाद	शूद्री
४०	श्वपच । धेड, माहार ।	चाण्डाल	पुल्कसी
४१	मंजूक । परीट । रजक,		
	धोबी	वैदेह	उग्रा
४२	दुर्भर । चर्मकार ।		
	ढोहोर +	आयोगव	धिग्वणी
४३	नट । कोल्हाटिक ।		
	बहुरूपी +	शिलींध्र	क्षत्रिया
४४	किंशुक । बुरुड,		
	वंशपात्रानुजीवी ।	धीवर	कुरुविन्दा
४५	कैवर्त । धीवर ।		
	तारु ।	पारशव	आयोगवी
४६	मेद । गोंड ।	वैदेह	कारावरी
४७	भिल्ल	ढीवर	कारावरी
४८	तेरवा	चाण्डाल	मेदस्त्री
४९	स्थिरसंज्ञा,हाडियामांग	चाण्डाल	अंधवनिता
५०	क्रव्याधि ।	श्वपाक	प्लवस्त्री
५१	हस्तक । मीरसिकारी	चाण्डाल	क्रव्यादस्त्री
५२	लायक ।	श्वपाक	हस्तकस्त्री
५३	शशेष ।	म्लेच्छ	चाण्डाली
५४	मारुड	डोम	पुल्कसी

सं० ।	जाति	पिता	माता
५५	खौनिक । हिंसक ।		
	कसाई	कर्मचाण्डाल	दासवधू
५६	मातंग ।	प्लव	डोंब्रिणी
५७	डोंब्र ।	चाण्डाल	निषाद वनिता
५८	वोपक ।	डोंब्र	मातंगिनी
५९	ब्रह्मप ।	”	”
६०	मद्यप ।	”	”
६१	स्वर्णस्तेयी ।	”	”
६२	गुरुतल्पी ।	”	”
६३	कायस्थ ।	वैदेह	माहिष्यवनिता
६४	क्षुंतलक । नापित ।	”	”
६५	नापिक । नाही । वावर ।	मागध	उग्रा
६६	हजाम । गांजो । तीर्थनापित ।	ब्राह्मण	शूद्रकन्या
६७	सैरिन्ध्र । शिलीन्ध्र ।	कायस्थ	आयोगवी
६८	शिलीन्ध्रमर्दिनी ।	मल्ल	क्षत्रिया
६९	भोजक मागध ।	ब्राह्मण	पुष्पशेखरा
७०	शाश्वतिक । देवलक ।		
	वडवा । पुजारा	ब्राह्मण	मागधकन्या
७१	आभीर । गौलि ।	ब्राह्मण	माहिष्यस्त्री
७२	क्रूरकर्मा । रजपूत ।	क्षत्रिय	शूद्रा
७३	मल्ल । राजगुरु ।	व्रात्यक्षत्रिय	क्षत्रिणी शूद्रा
७४	चुच्चूभ । छत्रधर । वारी ।	ब्राह्मण	वैदेही
७५	दोलाकार । भोई ।		
	काहरा । कानडीवाहक–		
	छागलावाहक । पौष्टिक ।	द्विज	निषादी
७६	मल्ल ।	भिल्ल	क्षत्रियाणी
७७	सुव्रण राधवण		
	सुवार ।	सूत	वैदेही
७८	अंधासिक । रावचण ।	वैदेह	शूद्रा
७९	वच्छक । गोवारी ।	वैश्य	करिणी
८०	छागलिक । सौलिक ।	कटधान	मंगुता
८१	शय्यापाल । सेजल ।		सैरन्ध्री

सं० ।	जाति ।	पिता	माता
८२	मंडल । शुनेधरु ।	पुष्पशेखर	कर्मचांडाली
८३	सूत्रवार । शै		
	जायाजीव	आयोगव	रथकारणी
८४	कुरुविंद । टाकसाली ।	कुंभकार	कुक्कुटस्त्री
८५	धनगर । रवारी	भूर्जकण्ठ	छागली
८६	क्षेमक । महांगु		
	द्वारपाल । कल्हेकर ।	क्षेमक	आवर्तस्त्री
८७	धिग्वणक । खत्री ।		
	मोची–जिनगर	ब्राह्मण	आयोगवी
८८	भस्मांकुर । गुरव ।	शूद्र	पण्यांगना
८९	क्षेमक । द्वारवटेकारु ।	पडदार	क्षत्ता उग्रा
९०	भृंकुश, नटवा ।	आयोगव	मागधा
९१	निर्मण्डिका, सोल्हाटा,		
	तीरकरणारा	अनूतक ।	आभीरी
९२	वेन, लाघवी, चन्द्रा–		
	वलिकार ।	वैदेह ।	अंवष्ठा
९३	शुद्धमार्गक, मादली ।	माहिष	मागधा
९४	मैत्रेय, प्रातगीयका	वैदेह	आयोगवी
९५	मंगुष्ठ ।	कैवर्त	जंघिका
९६	चित्रकार, मोडोवा		
	चितारा ।	कुंभकार	धिग्वणी
९७	अहितुण्डिक, गारुडी-	निषाद	वैदेही
९८	सौण्कल सुराकर्ता,		
	कलाल ।	वेन	आभीरी
९९	धोलिक, सूत्रकान्तक,		
	कैकाडा ।	व्याध	अहितुण्डिका
१००	वासिक, कावाडी ।	पुलक	पुल्कसा
१०१	तुरुष्क । यवन मुसलमान ।	मेद	मेदस्त्री
१०२	लाट, लाड, ।	विकर्मवैश्य ।	विकर्मवैश्या
१०३	लिंगायित । व्रात्यऔरत ।	व्यभिचारी	वैश्या
१०४	व्रात्य, अव्रत ।	द्विजातय ।	सवर्णासु
१०५	सुधन्वा, कारुष, विजन्मा,		
	मैत्र, सात्वत ।	व्रात्यवैश्य	वैश्या

सं०	जाति	पिता	माता
१०६	भूर्जकण्ठ, पुष्पध, झल्ल; मल्ल, शैख, नट, खस, द्रविड ।	व्रात्य ।	ब्राह्मणी
१०७	आवर्तक ।	भूर्जकण्ठ ।	ब्राह्मणी
१०८	करधान ।	आवर्तक ।	ब्राह्मणी
१०९	पुष्पशेखर ।	कटधान ।	ब्राह्मणी
११०	मंगु, वडिक ।	द्विज ।	वंदिनी
१११	वेन ।	वैदेह ।	अंबष्ठा
११२	गोत्रहीनब्राह्मण ।	ब्रह्मदेवधक्र	"
११३	व्रात्यक्षत्रिय ।	ब्रह्मदेवबाहुत ।	"
११४	व्रात्यवैश्य ।	ब्रह्मदेवऊरुत ।	"
११५	व्रात्यशूद्र ।	ब्रह्मपादत ।	अंबष्ठा
१	मालाकार ।	विश्वकर्मा ।	शूद्रा
२	कर्मकार ।	विश्वकर्मा ।	"
३	शंखकार ।	विश्वकर्मा ।	"
४	कुविन्दक—जुलाहा ।	विश्वकर्मा ।	शूद्रा
५	कुंभकार ।	"	"
६	कंसकार ।	"	"
७	सूत्रधार ।	"	"
८	चित्रकार ।	"	"
९	स्वर्णकार ।	विश्वकर्मा	शूद्रा
१०	अट्टालिकाकार ।	चित्रकार ।	कुलटाशूद्री
११	कोटक ।	अट्टालिकाकार	कुंभकारस्त्री
१२	तैलकार ।	कुंभकार ।	कोटकस्त्री
१३	धीवर ।	क्षत्रिय ।	राजपुत्रस्त्री
१४	दस्यु, लोट ।	धीवर ।	तैलकारस्त्री
१५	माल्ल, मल्ल; मातर, भज, कोल, कलंदर	"	"
१६	चर्मकार ।	धीवर ।	चांडाली
१७	मांसच्छेदी ।	चांडाल ।	चर्मकारी
१८	कोच ।	धीवर ।	मांसच्छेदस्त्री
१९	काण्डार ।	कैवर्त ।	कोचस्त्री
२०	हद्रि, द्रम ।	लोट ।	चांडालकन्या

सं०	जाति	पिता	माता
२१	वनचर ।	चाण्डाल ।	हद्रिकन्या
२२	गंगापुत्र ।	लोट	धीवरकन्या
२३	युगी, वेशधारी	वेशधारी	गंगापुत्रकन्या
२४	शुण्डी ।	वैश्य	धीवरकन्या
२५	पौण्ड्रक ।	वैश्य ।	शुण्डीस्त्री
२६	राजपुत्र ।	क्षत्र ।	करकन्या
२७	आगारी ।	करण ।	राजपुत्री
२८	कैवर्त ।	क्षत्र	वैश्या
२९	राजक ।	धीवर ।	तीवरी
३०	कोआली	तीवर	राजकी
३१	सर्वस्वी	नापित ।	गोपकन्या
३२	व्याध, मृगहिंसक ।	क्षत्र ।	सर्वस्वी
३३	ससपुत्र ।	तीवर ।	शुण्डीकन्या
३४	दस्यव	हाद्रिसंसर्गत ।	
३५	दर्दुर	ऋषिवीर्य	ब्राह्मणी०
३६	महादस्यु ।	क्षत्र ।	वैश्यप्रथ०
३७	बागतीत ।	क्षत्रिय ।	बागतीत क्षत्रिणी
३८	म्लेच्छ ।	क्षत्र ।	प्रथमर्तौशूद्रा
३९	जालजाति	म्लेच्छ ।	कुविन्द कन्या
४०	शराक	जाल ।	"
४१	वैद्य ।	अश्विनीकु० ।	विप्रस्त्री
४२	व्यालग्राहिण ।	वैद्य	शूद्री
४३	सूत	यज्ञकुंडसे उत्पन्न	
४४	बाहुक, स्तुतिपाठक ।	सूत	वैश्यस्त्री
४५	आवृत्त ।	ब्राह्मण ।	उग्रकन्या
४६	धिग्वण ।	आभीर	अंबष्ठकन्या
४७	श्वपाक ।	क्षत्ता	उग्रा
४८	वेण	वैदेह	अंबष्ठा
४९	कारावार ।	चर्मकार ।	निषादी
५०	अन्ध्र ।	वैदेहिक ।	निषादी
५१	मेद		
५२	पांडुसोपक ।	चाण्डाल ।	वैदेही

स०	जाति	पिता	माता
५३	आहितुण्डिक ।	निषाद ।	वैदेही
५४	सोपाक ।	चाण्डाल	पुक्सी
५५	अन्त्यावसायी ।	चाण्डाल ।	निषादी
५६	गोलक ।	व्यभिचारीनर	विधवा ब्राह्मणी
५७	अनुगोलक ।	”	विवाहिताब्राह्मणी
५८	कुंडगोल ।	”	विधवाब्राह्मणी
५९	रण्डक ।	”	भर्तात्यागिनीस्त्री
६०	मार्तण्ड	वैश्य ।	क्षत्रिया

इति वर्णसंकरजातिज्ञानचक्रं समाप्तम् ।

अथ सुरलोकनिवासिदेवतानां वर्णसंकर-जातिज्ञानचक्रम् ।

	नाम	वर्ण ।
१	ब्रह्मा	ब्राह्मणः ।
२	अग्निः	”
३	वरुणः	”
४	मरीच्यादयः	ब्राह्मणाः ।
५	वायुः	ब्राह्मणः ।
६	रुद्रः	”
७	शेषः	”
८	गरुडः	”
९	इन्द्रः	”
१०	प्रद्युम्नः	”
११	चन्द्रः	”
१२	अर्कः	”
१३	वसवः	ब्राह्मणः ।
१४	रुद्रः	ब्राह्मणाः ।
१५	मरुद्गणः	”
१६	कुबेरः	वैश्यः
१७	देवताः	”
१८	गन्धर्वाः	”
१९	अश्विनौ	”
२०	यमः	शूद्रः ।
२१	शनिः	”
२२	पुष्करः	”
२३	यक्षाः	”
२४	यमदूतः	”
२५	चित्रः	”
२६	चित्रगुप्तः	”
२७	वंदिनः	”
२८	वेतालाः	”
२९	किन्नराः	”
३०	विद्याधराः	”
३१	धर्मराजः	ब्राह्मणः
३२	पितरः	ब्राह्मणाः
३३	मनवः	क्षत्रियाः ।
३४	राक्षसाः	क्षत्रियाः ।
३५	नारदः	ब्राह्मणः ।
३६	देवलः	ब्राह्मणः ।
३७	असितः	”
३८	बृहस्पतिः	”
३९	भृगुः	”
४०	सनकादयः	”
४१	गुह्यकाः	शूद्राः ।
४२	विश्वावसुः	मूर्धावसिक्तः ।
४३	चित्रांगदः	”
४४	मातलिः	सूतः ।
४५	ऐरावतः	उग्रः ।
४६	पुष्पदन्तः	चारणः ।
४७	नलकूबरः	यक्षेशः ।
४८	चित्ररथः	मूर्धावसिक्तः ।
४९	गुह्यकेशः	क्षत्ता ।
५०	पिशाचः	चाण्डालः ।
५१	भूतः	”
५२	कूष्मांडः	”

नाम	वर्ण	नाम	वर्ण
५३ प्रेतः	चाण्डालः	६१ ब्रह्मराक्षसः	नानाजातिः।
५४ घंटाकर्णः	"	६२ वेतालः	नानाजातिः
५५ भैरवः	"	६३ यातुधानाः	"
५६ भृंगी	"	६४ उर्वश्याद्याः	"
५७ उल्मुकः	"	६५ मातरः	"
५८ तुंबुरुः	अंबष्ठः।	६६ शाकिन्यः	"
५९ चित्राङ्गादयो-विद्याधराः	आयोगवाः।	६७ डाकिन्यः	"
		६८ विश्वकर्मा	"
६० निर्ऋतिः	क्षत्रियः।	६९ भौवनः	देवशिल्पी

इति सुरलोकनिवासिदेवतानां वर्णसंकरजातिज्ञानचक्रं समाप्तम्।

अथ देवानां वर्णनिर्देशमाह उक्तश्च विष्णुरहस्यस्य द्वाविंशेऽध्याये-

अब देवताओंके वर्णोंका निर्देश करते हैं जो विष्णुरहस्यके २२ वें अध्यायमें लिखा है।

शौनक उवाच।

अथ प्रस्तुतमाचक्ष्व यथा स ब्रह्मणे हरिः।
उक्तवान्प्रथमां सृष्टिं सूत शुश्रूषवो वयम् ॥ १ ॥

शौनकजी बोले हे सूतजी! अब आप इस प्रसंगप्राप्त वार्ताको कहिये कि, जिसप्रकार भगवान्ने ब्रह्माजीके प्रति प्रथम सृष्टिको कथन किया, उसके सुननेकी हमारी इच्छा है॥ १ ॥

सूत उवाच।

वासुदेवात्तु या सृष्टिस्तथा संकर्षणादपि।
या पूर्वमभवत्सूक्ष्मा ततोऽग्रेऽकथयद्धरिः ॥ २ ॥

सूतजी बोले-वासुदेव और संकर्षणसे जो पहिले सूक्ष्म सृष्टि हुई उसको भगवान्ने आगे निरूपण किया है॥ २ ॥

श्रीभगवानुवाच-तत एकादशे वर्षे प्रारभ्य ब्रह्मणो ह्ययम् ॥ प्रगृह्य सर्वदेवांशाञ्जीवांश्चाप्यखिलानपि॥३॥प्रद्युम्नरूपःस्वांगेषु बीजत्वेनासृजत्ततः ॥ तस्य वामाङ्गमभवत्कृतिर्देवी ततः स्वयम् ॥ ४ ॥ अर्धनारीकदेहोऽसावर्धनारायणोऽभवत्। तस्य दक्षिणभागेभ्यो पुरुषा जज्ञिरेऽखिलाः ॥ ५ ॥

श्रीभगवान् बोले ब्रह्माके ग्यारह वर्ष प्राप्त होनेपर सब देवताओंके अंश और जीवोंको ग्रहण करके॥ ३ ॥ प्रद्युम्नरूपने अपने अंगोंसे बीजरूपसे सबकी सृष्टि की, उनके बायें अंगसे स्वयंकृति देवी प्रगट

हुई ॥ ४ ॥ यह आधे अगमें स्त्री और आधे अंगसे नारायण रूप हुई, उसके दक्षिण भागसे अनेक पुरुष प्रगट हुए ॥ ५ ॥

चतुर्वर्णविभेदेन नार्यो वामाङ्गतोऽभवन् ॥ मुखदक्षिणभागेभ्यो ब्रह्माग्निवरुणादयः ॥ ६ ॥ ऋषयोऽपि मरीच्याद्या ये च विप्राः स्वरूपतः । जीवास्तेऽपि विनिर्जग्मुस्ते विप्रा मुखजन्मतः ॥ ७ ॥ ब्रह्मा ब्राह्मणवर्णस्य मुख्यो देवः प्रकीर्त्तितः । ब्रह्मादीनान्तु याः पत्न्यस्त्रीजीवा ब्रह्मजातयः ॥८॥ ता जाता वामभागेभ्यो मुख्यस्यास्यार्धरूपिणः । भुजदक्षिणतो वायुरुद्रशेषगरुत्मतः ॥ ९ ॥

और चारो वर्णोंके भेदसे स्त्रियें वायें अंगसे प्रगट हुईं, और मुखके दक्षिण भागसे ब्रह्मा अग्नि वरुण प्रगट हुए ॥ ६ ॥ जो मरीचि आदि ऋषि और ब्राह्मण हैं वे सब मुखसे प्रगट हुए ॥ ७ ॥ ब्राह्मण वर्णके मुख्य देवता ब्रह्माजी हुए और ब्रह्मादिकी जो स्त्रियें थीं वह भी ब्रह्मजाति कहाईं ॥ ८ ॥ वह इस अर्धनारीके मुखसे प्रगट हुई थीं, इसकी दक्षिण भुजासे वायु, रुद्र, शेष और गरुड हुए ॥ ९ ॥

इन्द्रप्रद्युम्नचन्द्रार्कवसुरुद्रादयोऽपरे । मरुतः क्षत्रवर्णत्वाज्जज्ञिरे क्षत्रजीवकाः ॥ १० ॥ सर्वाश्च तत्स्त्रियो वामाद्भुजाद्विष्णोर्विनिःसृताः । क्षत्रदेवः परो वायुः प्रायेण क्षत्रियाः सुराः ॥ ११ ॥ कुबेरदेवगंधर्वा दस्राद्या वैश्यवर्णकाः । वैश्यजीवाः परे विष्णोरूरोर्दक्षिणतोऽभवन् ॥ १२ ॥ नार्यश्च तादृशा वामादूरोर्जाताः प्रजापतेः । कुबेरो वैश्यवर्णस्य देवता परमोच्यते ॥ १३ ॥

इन्द्र, प्रद्युम्न, चन्द्र, सूर्य, वसु तथा दूसरे रुद्र हुए, यह क्षत्रवर्ण होनेसे क्षत्र जीविकावाले हुए ॥ १० ॥ उन सबकी स्त्री विष्णुकी वाम भुजासे प्रगट हुईं, क्षत्र देवता वायु हैं यह ऊपर लिखे देवता जो भुजासे हुए यह क्षत्रधर्मा कहाये ॥ ११ ॥ कुवेर, देवता, गन्धर्व, अश्विनीकुमार यह वैश्यवर्णवाले विष्णुकी दक्षिण जंघासे प्रगट हुए ॥ १२ ॥ और इसी वर्णकी स्त्रियें प्रजापतिकी वाम जंघासे उत्पन्न हुईं वैश्य वर्णका कुवेर परम देवता है ॥ १३ ॥

यमो मानुषगन्धर्वास्तथैवाजानदेवताः ॥ शनिपुष्करयक्षाद्या यमदूताश्च सर्वशः ॥ १४ ॥ चित्रश्च चित्रगुप्तश्च बंदिवेतालकिन्नराः ॥ विद्याधरादयो येऽन्ये शूद्रवर्णाः समस्तशः ॥ १५ ॥ शूद्राजीवास्तथा सर्वे जातास्तद्दक्षिणांघ्रितः ॥ स्त्रियस्तादृशरूपास्तु तथैवाप्सरसां गणाः ॥ १६ ॥ जज्ञिरे वामतः पादाद्यमः शूद्राधिदेवता । यमस्यान्यद्धि यद्रूपं धर्मः स ब्राह्मणः स्मृतः ॥

यम, मानुष, गंधर्व, अजानदेवता, शनि, पुष्कर यक्षादि तथा समस्त यमदूत ॥ १४ ॥ चित्र, चित्रगुप्त वंदि, वेताल, किन्नर तथा दूसरे विद्याधर यह सब शूद्र हैं ॥ १५ ॥ यह सब शूद्र प्रजापतिके दक्षिण

चरणसे प्रगट हुए, और वैसेही क्षिय तथा अप्सराओंके गण ॥ १६ ॥ यह सब वायें चरणसे प्रगट हुए, यम शूद्रोंके अधिदेवता हैं यमका दूसरा रूप जो धर्म है वह ब्राह्मण कहा है ॥

पितरो ब्राह्मणा एव क्षत्रिया मनवः स्मृताः ॥ कर्मदेवास्तथा चान्ये निखिलाश्चक्रवर्त्तिनः ॥ १७ ॥ क्षत्रिया एव ते प्रोक्ता राक्षसा अपि शौर्यतः ॥ क्षत्रियेष्वेव गण्यंते ततस्ते भुजतोऽभवन् ॥ १८ ॥ पशुतिर्यक्पक्षिवृक्षतृणगुल्मादयोऽखिलाः । जीवाः पुंस्त्रीविभेदेन रोमभ्यो निःसृता इमे ॥ १९ ॥ ब्रह्मविंशतिवर्षे तु सृष्टिर्जाता निरूपिता । एवं नानाविधैर्जीवैर्नानारूपधरैर्हरिः ॥ २० ॥

पितर ब्राह्मण हैं, मनु क्षत्रिय हैं, कर्म देवता तथा दूसरे सब चक्रवर्ती ॥ १७ ॥ वह सब क्षत्रिय हैं, तथा शूर होनेसे राक्षसभी क्षत्रिय हैं । वे क्षत्रियोंमें गणनावाले इसीसे हुए कि भुजाओंसे प्रगट हैं ॥ ॥ १८ ॥ पशु, तिरछे चलनेवाले जीव, पक्षी, वृक्ष, तृण, गुल्म आदि जो कुछभी हैं वे स्त्री पुरुषके भेदवाले जीव प्रजापतिके रोमसे प्रगट हुए हैं ॥ १९ ॥ ब्रह्माके वीसवर्षमें सब सृष्टि हुई इस प्रकार अनेक जीवोंके रूपमें साक्षात् हरि भगवान्ही हैं ॥ २० ॥

चिक्रीडे स्वेच्छया काले स्वानंदपरिपूरितः । उक्तो यो वर्णनिर्देशो देवानां विस्तरान्मया ॥ २१ ॥ नियामकः स नैतेषामाचारस्य कथंचन । सर्वे वर्णाश्रमाचाराः प्रत्यवायसमुज्झिताः ॥ २२ ॥ अपरोक्षविदो विष्णोर्भक्ता एकान्तिनो मम । अपरोक्षं विना विष्णोर्नहि देवत्वमाप्यते ॥ २३ ॥

इति श्रीविष्णुरहस्ये देवजातिनिरूपणं नाम प्रकरणम् ॥

अपनी इच्छासे नियमित कालतक क्रीडा करते हैं और अपने आनन्दमें पूर्ण रहते हैं, जो यह विस्तारसे मैंने देवताओंका वर्णनिर्देश किया ॥ २१ ॥ इनके आचारका कोई नियम नहीं है, यह सब वर्णाश्रमोंका आचार विघ्नोंसे छूट जाता है ॥ २२ ॥ मेरे एकान्त भक्तही विष्णुको अपरोक्ष रूपसे जानते हैं, विष्णुके अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) हुए बिना देवत्व प्राप्ति नहीं होती ॥ २३ ॥

इति देवजातिनिरूपणम् ।

अथ मनुष्यलोकजातिस्थसंकरजातिप्रसंगादेव-लोकस्थसंकरजातिभेदमाह-

अब मनुष्य लोकमें स्थित संकर जातिके प्रसंगसे देवलोकमें स्थिति संकर जातिके भेद कहतेहैं ।

विष्णुरहस्ये पञ्चत्रिंशेऽध्याये-

शौनक उवाच-

भृग्विन्द्रद्युम्नसंवादाद्यदुक्तं हरिचेष्टितम् ॥ तदेव विस्तराद्ब्रूहि तत्र कौतूहलं हि नः ॥ २४ ॥ सृष्ट्यादौ भगवान्भूत्वा वैराजः पुरुषो महान् । ससर्ज विश्वमखिलं नानारूपमिदं स्वतः ॥ २५ ॥ वैजात्यं तत्कथं सूत देवेषु समभूत्तथा । विद्याप्रवृत्तिर्लोकेषु प्रवृत्तिं शिल्पिनो तथा ॥ २६ ॥ केन रूपेण भगवान् कथं चेदमिहातनोत् ॥

सूत उवाच-

जातिभेदस्तु देवेषु ईश्वरेच्छानिबन्धनः ॥ २७ ॥

शौनकजी बोले भृगु और इन्द्रद्युम्नके संवादमें जो आपने नारायणकी लीला वर्णन की है वह आप विस्तारसे कहिये इसमें हमको बडा कौतूहल है ॥ २४ ॥ सृष्टिकी आदिमें भगवानने विराट्पुरुष होकर अनेक रूपवाला इस संसारको रचा ॥२५॥ हे सूतजी ! देवताओंमें जातिसंकर किस प्रकारसे हुआ लोकमें विद्याकी प्रवृत्ति तथा शिल्पियोंकी प्रवृत्ति ॥ २६ ॥ कैसे हुई किस रूपसे भगवानने यह सब किया, सूतजी बोले देवताओंमें जातिभेद ईश्वरकी इच्छासे प्रवृत्त हुआ है ॥ २७ ॥

ब्रह्मवर्णपतिर्ब्रह्मा नारदो देवलोऽसितः। बृहस्पतिर्भृगुर्वह्निर्मरीच्याद्याः सनादयः । ऋषयः पितरः सर्वे ब्रह्मवर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ २८ ॥ अश्विनौर्णपतेर्दायुः प्राणसत्रय ईरितः ॥ रुद्राद्याः प्रायशो देवाः क्षत्रवर्णा उदीरिताः ॥ २९ ॥

ब्राह्मणवर्णके पति ब्रह्माजी हैं, नारद, देवल, असित, बृहस्पति, भृगु, अग्नि, मरीचि आदि ऋषि सनकादि और पितर ये सब ब्राह्मण वर्ण हैं ॥ २८ ॥ अश्विनीकुमार, वरुण, वायु, प्राणात्मा जो कहा है, तथा रुद्रादि देवता यह क्षत्रियवर्ण कहाते हैं ॥ २९ ॥

अश्विनौ धनदो विश्वकर्मविद्याधरादयः ॥ वैश्यवर्णपतिं तेषां धनदं व्यदधाद्धरिः ॥ ३० ॥ एवमेव यमो देवो धर्मः काल इति द्विधा । धर्मो विप्रः कालशूद्रवर्णाध्यक्षोऽथ दूतकाः ॥ ३१ ॥

अश्विनीकुमार, कुबेर, विश्वकर्मा, विद्याधर ये वैश्यवर्ण हैं, इनके पति विशेषकर भगवान्ने कुबेर किये हैं ॥ ३० ॥ इसी प्रकार कालका शूद्रवर्ण है, यह अपने दूतोंके अधिपति हैं ॥ ३१ ॥

यक्षाश्च गुह्यकाश्चापि शूद्रवर्णाः प्रकीर्त्तिताः । विश्वावसुश्चित्ररथस्तथा चित्रांगदादयः ॥ ३२ ॥ अष्टौ गंधर्वपतयः प्रोक्ता मूर्धावसिक्तकाः ॥

तथा केचिद्देवगणा युद्धकर्मविशारदाः ॥ ३३ ॥ क्षत्रियादित्रिवर्णेषु ब्राह्मणादनुलोमिनः ॥ मर्द्धावसिक्तकाम्बष्ठौ तथा पारशवस्त्विति३४॥

इसीप्रकार यक्ष और गुह्यकोंका शूद्रवर्ण कथन किया है, विश्वावसु चित्ररथ तथा चित्रांगद आदि३२॥ तथा आठो गंधर्वपति मूर्द्धावसिक्त कहाते हैं और जो देवता युद्ध कर्ममें विशारद हैं वे भी ॥ ३३ ॥ क्षत्रियादि तीनों वर्णोंमें अनुलोम रीतिसे ब्राह्मणसे उत्पन्न हुए, मूर्द्धावसिक्त अम्बष्ठ और पारशव क्रमसे कहाते हैं ॥ ३४ ॥

ब्रह्मविट्शूद्रयोषित्सु सूतो माहिष्य उग्रकः ॥ त्रयः क्षत्रियतो जातौ प्रतिलोमानुलोमिनौ ॥ ३५ ॥ ब्रह्मक्षत्रियशूद्रस्त्रीगर्भजा वैश्यतस्त्रयः॥ वैदेहो मागधश्चैव करणश्चानुलोमजाः॥ ३६ ॥ शूद्राश्चाण्डालक्षत्तारा-वयोगव इति त्रयः ॥ ब्राह्मणादिषु नारीषु प्रोच्यंते प्रतिलोमिनः३७॥ क्षत्तारावीति विज्ञेयौ उग्रपारशवावपि ॥ एवं द्वादश पूर्वैस्तु चतुर्भिः संयुतास्त्वमी ॥ ३८ ॥

ब्राह्मण वैश्य और शूद्रकी स्त्रियोंमें क्षत्रियसे उत्पन्न पुत्र क्रमसे माहिष्य और उग्रक कहाते हैं,क्षत्रियसे प्रतिलोम और अनुलोम रूपसे यह होते हैं ॥ ३५ ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय और शूद्रकी स्त्रीमें तीन पुत्र वैश्यसे वैदेह मागध और करण अनुलोम रूपसे होते हैं ॥ ३६ ॥ शूद्रसे ब्राह्मणादि तीन वर्णकी स्त्रियोंमें क्रमसे चाण्डाल, क्षत्ता और अयोगव होता है यह प्रतिलोम हैं ॥ ३७ ॥ क्षत्ता दो, उग्र और पारशव, यह बारह पहिले और चार यह ॥ ३८ ॥

देवाः षोडश जातीयाः स्वभावादेव जज्ञिरे ॥ मातल्याद्याः सूतजात्या उग्रा ऐरावता द्विपाः ॥ ३९ ॥ कर्णाश्विचित्रगुप्ताद्या मागधश्चारणेषु तु ॥ केचित्सूताश्च तत्रापि यक्षाः पारशवोग्रकाः ॥ ४० ॥

इस प्रकारसे सोलह जातिके देवता स्वभावसे ही प्रगट हुए हैं मातलि आदि सूतजाति, और ऐरावत हाथी उग्र जाति हैं ॥ ३९ ॥ कर्णाश्वि चित्रगुप्तादि चारणोंमें हैं तथा—कोई सूतको भी इन्हींमें गिनते हैं, यक्ष पारशव और उग्रजाति हैं ॥ ४० ॥

पुष्पदन्तश्चारणेशो यक्षेशो नलकूबरः ॥ क्षत्तारो गुह्यकेष्वेव प्रोक्ताः शूद्रानुयायिनः ॥ ४१ ॥ पिशाचभूतकूष्माण्डाः प्रेताश्चाण्डालजातयः। घंटाकर्णः पिशाचेशो भूतेशो भैरवः स्मृतः ॥ ४२ ॥ कूष्माण्डेशो भृंगि रुक्मी प्रेताधीशस्तथोल्मुकः । तुंबुर्वाद्याश्च गंधर्वा अंबष्ठा अखिला अपि ॥ ४३ ॥

पुष्पदन्त चारणोंका अधिपति, नलकूबर यक्षोंका पति, गुह्यकेश क्षत्ता है, यह शूद्रानुयायी हैं ॥४१॥ पिशाच, भूत, कूष्माण्ड, प्रेत चाण्डाल जातिवाले हैं, घंटाकर्ण पिशाचोंका अधिपति और भैरव भूतोंके

अधिपति हैं ॥ ४२ ॥ कूष्माण्डोंके अधिपति भृंगी, प्रेतोंके अधिपति रुक्मी तथा उल्मुक हैं, तुम्बुरु आदि गंधर्व अम्बष्ठ जातिवाले हैं ॥ ४३ ॥

आयोगवाश्च माहिष्या नानाशिल्पविशारदाः ॥ विद्याधरेषु केचित्तु चित्रकेत्वादयो विशः ॥ ४४ ॥ सर्वरक्षःपतिः प्रोक्तः क्षत्रवर्णोऽथ तद्गणाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेताला नानाजात्यः प्रकीर्तिताः ॥ ४५ ॥

आयोगव और माहिष्य अनेक शिल्प विद्याओंके ज्ञाता हैं विद्याधरोंमें चित्रकेतु आदि वैश्यवर्ण हैं॥४४॥ सब राक्षसोंके पति निर्ऋति, और उनके गण क्षत्रियवर्ण हैं, ब्रह्मराक्षस वेताल नाना जातिवाले कहे हैं॥ ४५ ॥

क्रव्यादाः शोणिताहारा यातुधानास्तथापरे ॥ उर्वश्याद्या अप्सरसो नानाजात्यस्तथोदिताः ॥ ४६ ॥ मृदंगिनस्तालधराः शूद्राद्यास्तु यथायथम् ॥ नटा गंधर्वजातीयाश्चारणाः परिहासकाः ॥ ४७ ॥ वीणादिसहगातारो गंधर्वाः परिकीर्त्तिताः ॥ केवलं कंठमाधुर्याद्गायंतो विविधैः स्वरैः ॥ ४८ ॥

शोणितभोजी क्रव्याद तथा यातुधानादि और उर्वशी आदि अप्सरा अनेक जातिकी हैं ॥ ४६ ॥ मृदंग वजानेवाले, ताल देनेवाले यह सब शूद्र हैं, नट गंधर्वजातीय तथा हँसानेवाले चारण हैं ॥ ४७ ॥ वीणा वाजेपर गानेवाले गन्धर्व हैं और केवल कंठकी माधुर्यतासे जो अनेक सुरोंसे गाते हैं ॥ ४८ ॥

किन्नरास्ते नरास्या हि हयाकारकबंधकाः ॥ केचित्किम्पुरुषास्त्वन्ये हयास्या नृकबंधकाः ॥ ४९ ॥ गंधर्वपतयस्तेऽपि सेवन्ते देवतागणान्॥ मातरः पूतनाद्याश्च शाकिन्यो डाकिनीगणाः ॥ ५० ॥ मलरक्तसुरापाश्च नानाजात्यः प्रकीर्तिताः । सर्ववर्णाश्रमाचारा देवा यद्यपि सर्वशः ॥ ५१ ॥

वे सब किन्नर होतेहैं इनका मुख मनुष्योंके आकारका शेष अंग घोडेके आकारका होता है,दूसरे किम्पुरुष होते हैं इनका मुख घोडेके आकारका शेष शरीर मनुष्योंके आकारका होता है ॥ ४९ ॥ यह गंधर्वपतिभी देवताओंकी सेवा करते हैं, सप्त मातृका, पूतनाको आदिले ग्रह शाकिनी और डाकिनी ॥ ५० ॥ मल रक्त और सुरा पान करनेवाली नाना जातिवाली हैं यद्यपि सब तरहसे देवता वर्णाश्रम आचारवाले हैं ॥ ५१ ॥

तथापि प्रायः स्वाभाव्यादेतज्ज्ञातय इरिताः ॥ सर्वस्रष्टा यतो विष्णुर्नास्य जातिर्नियम्यते ॥ ५२ ॥ स्वस्वयोग्यतया सर्वे ब्रह्माद्यैः स उपास्यते ॥ एवं षोडश जातीया नरजीवाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ५३ ॥ चराच-

रस्य सर्वस्य व्यवहारप्रसिद्धये ॥ जीवनार्थञ्च सर्वेषां विश्वकर्माभवत्स्वयम् ॥ देवानुपादिशच्छिल्पान्यथायोग्यतयाखिलान् ॥ ५४ ॥

तो भी यह छोटी जाति स्वभावसे इसी प्रकारकी है, भगवान् सबके उत्पन्न करनेवाले हैं, इनको किसी जातिका नियम नहीं होसकता ॥ ५२ ॥ अपनी २ योग्यतासे समस्त ब्रह्मादि देवता इनकी उपासना करते है, इस प्रकारके सोलह जातिवाले नरजीवोंका वर्णन किया॥५३॥सब चर अचरकी व्यवहार सिद्धिके लिये तथा सबकी जीविका निर्वाहके लिये वही स्वयं विश्वकर्मा होकर यथायोग्य देवताओंको शिल्पकर्म सिखाने लगे ॥ ५४ ॥

ब्राह्मणं नारदादींश्च सुखविद्या उपादिशत् ॥ भुवनो नाम यो देवो विश्वकर्माथ तत्सुतः ॥ ५५ ॥ प्रसिद्धो यश्च शास्त्रेषु भौवनः सुरवार्धकिः ॥ विश्वकर्मा स्वयं तत्र छित्त्वा लोकान्विनिर्ममे ॥ ५६ ॥ प्रासादांश्च विमानानि वाप्युद्यानान्यलंकृतीः ॥ वस्त्रवाद्यादिवस्तूनि विचित्राणि पृथक्पृथक् ॥ ५७ ॥ ततः सृष्टान्मर्त्यलोके नानाजीवानुपादिशत् ॥ नानाऋषिगतो विष्णुर्वेदान्सांगान्द्विजातिषु ॥ ५८ ॥

ब्राह्मण नारद आदिको सुखविद्याका उपदेश किया, भुवननामक देवताके विश्वकर्मा नामक पुत्र हुआ ॥ ५५ ॥ यह भुवनका पुत्र सब शास्त्रोंमें देवताओंका शिल्पी कहकर विख्यात है, विश्वकर्माने स्वयं काष्ठादिको छेदनकर लोकोंके स्थान बनाये ॥ ५६ ॥ बडे २ महल, विमान (सवारियें), बावडी, उद्यान (बगीचे) बनाये, वस्त्र तथा अनेक प्रकारके बाजे और बहुतसी विचित्र वस्तुओंकी न्यारी२ कल्पना॥५७॥ फिर मृत्युलोकके अनेक जीवोंको इनका उपदेश किया और विष्णु भगवान्ने अनेक ऋषियोंके रूपमें सांगवेदका ब्राह्मणोंमें उपदेश किया ॥ ५८ ॥

सर्वेषां गुरवो विप्रा विप्राणान्तु मिथोऽधिकाः॥आयुर्वेदं धनुर्वेदं गान्धर्वं चार्थशास्त्रकम् ॥ ५९ ॥ सत्यायुषि शरीरस्य नानारोगनिवृत्तये ॥ आयुर्वेदं वितेने स ह्यग्निवेश्यादिभिर्भुवि ॥ ६० ॥ नानाशास्त्रैर्युद्धसिद्ध्यै धनुर्वेदमवातनोत् ॥ राज्ञाश्च धनिकानाञ्च मनोरंजनसिद्धये ॥६१॥ गान्धर्वं व्यतनोद्यत्र गीतं वाद्यञ्च नर्तनम्॥ पाकक्रियागजाश्वादिनानाकर्मप्रसिद्धये ॥ ६२ ॥ लोकानां व्यवहाराय नानाशिल्पप्रसिद्धये॥ राजनीत्यै दण्डनीत्या अर्थशास्त्रमिहातनोत् ॥ ६३ ॥

ब्राह्मण सबके गुरु हैं, ब्राह्मणोंमें रहस्यके जाननेवाले विशेष हैं। आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थशास्त्रका उपदेश किया ॥ ५९॥ यदि आयु शेष है तो शरीरके अनेक रोगोंकी निवृत्तिके लिये अग्निवेशादि ऋषियोंके द्वारा चिकित्सा शास्त्रका विस्तार किया ॥६०॥ युद्धकी सिद्धिके निमित्त अनेक शास्त्रोंसे धनुर्वेदका विस्तार किया, राजा और धनियोंके मनोरंजनके निमित्त ॥ ६१ ॥ गाने बजाने नाचनेकी

सिद्धिवाले गान्धर्व वेदका विस्तार किया पाकक्री क्रिया हाथी घोडे आदिका शिक्षण और लक्षणादिवाला है ॥ ६२ ॥ तथा लोकव्यवहार सिद्धिके लिये अनेक प्रकारके शिल्प, राजनीति और दंडनीतिवाले अर्थ-शास्त्रका विस्तार किया ॥ ६३ ॥

इति श्रीविष्णुरहस्ये देवलोकस्थवर्णसंकरजातिप्रकरणम् ।

अथ पूर्वोक्ताद्विशेषं जातिधर्मं निरूपयति विष्णुरहस्यैकत्रिंशत्तमेऽध्याये ।

भृगुरुवाच-

अब पूर्वोक्तसे विशेष जातिधर्मका निरूपण करते हैं, विष्णुरहस्यके ३१ वें अध्यायमें लिखा है ।

ससर्ज भगवानादौ वैराजो निजदेहतः ॥ मुखतो ब्राह्मणं बाह्वोः क्षत्रियं वैश्यमूरुतः ॥ ६४॥ पादाच्छूद्रास्त्रियस्तेषां वामभागान्मुखादितः॥ शुक्लवर्णोऽभवद्विप्रः शूद्रोऽभूत्कृष्णवर्णकः ॥ ६५ ॥

भृगुजी बोले-पहिले भगवान्ने अपनी देहसे विराट् पुरुषको किया, उसके मुखसे ब्राह्मण, बाहुसे क्षत्रिय, ऊरूसे वैश्य ॥ ६४ ॥ और चरणोंसे शूद्र हुए, यह सब दक्षिण भागसे हुए, और इनकी स्त्रियें वाम भागसे हुई, ब्राह्मणका शुक्लवर्ण और शूद्र कृष्ण वर्णवाला हुआ ॥ ६५ ॥

क्षत्रियः प्रायशः शुक्लः कृष्णः प्रायेण विट् स्मृतः ॥ ब्राह्मणः सर्वतः श्रेष्ठस्तुर्यांशस्तस्य बाहुजः ॥ ६६ ॥ वैश्यस्तत्पंचमांशश्च शूद्रस्तत्षष्ठकांशकः ॥ ब्राह्मणो मुखजातत्वान्मुखकर्माणि तस्य तु ॥ ६७ ॥ तत्र दृष्टफलान्यस्य जीविकान्यानि यानि तु ॥ स्युः पुण्यजनकान्येव बाहुकर्मा च बाहुजः ॥ ६८ ॥

प्रायशः क्षत्रियभी उज्ज्वल वर्ण हुए, और उनकी अपेक्षा वैश्य कृष्णवर्ण हुए, ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ हुए क्षत्रिय उनके चतुर्थांश ॥६६॥ वैश्य उनके पंचमांश और शूद्र उनके षष्ठांश हैं, ब्राह्मण उसके मुखसे उत्पन्न हुए, इससे उनके कर्म मुखके हैं ॥ ६७ ॥ उसमें दृष्ट फलानुसार उनकी आजीविका है, जो जिसकी आजीविका है वही उसको पुण्य देनेवाली है, क्षत्रिय भुजासे उत्पन्न होनेके कारण बाहुकर्मा हैं ॥ ६८ ॥

जघन्यकर्मा वैश्यः स्यात्सेवाकर्मा तु पादजः ॥ एतेषामानुलोम्येन प्रातिलोम्येन सृष्टिषु ॥ ६९ ॥ बहवो जातयो जाता नानाशिल्पेषु नैपुणाः ॥ नानाविद्याधराश्चान्या विश्ववृत्तिप्रवर्त्तकाः ॥ ७० ॥

वैश्य जंघासे उत्पन्न होनेके कारण जघन्यकर्मा हैं, और सेवा करनेवाला शूद्र है, इनके अनुलोम और प्रतिलोम संयोगसे सृष्टिमें ॥ ६९ ॥ शिल्पकर्ममें चतुर अनेक जातियें उत्पन्न हुई, कोई अनेक विद्या धारण करनेवाली जगत्में वृत्तियोंमें प्रवृत्त हुई ॥ ७० ॥

प्रातिलोम्येन ते न्यूनास्तदाधिक्येन लोमकः ॥ ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रास्त्रिवर्णेष्वनुलोमजाः ॥ ७१ ॥ शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्त्रैवर्ण्ये प्रतिलोमजाः ॥ त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ ७२ ॥ एवं द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ॥ चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्चतुरः सुतान् ॥ ७३ ॥ ते चत्वारिंशदष्टौ च पर्वैर्द्वादशभिः सह ॥ चातुर्वर्ण्येन संयुक्ताश्चतुःषष्टिर्हि जातयः ॥ ७४ ॥

प्रतिलोम द्वारा उत्पन्न हुए न्यून हैं, और अनुलोम उनसे अधिक श्रेष्ठ हैं, ब्राह्मणसे क्षत्रिया वैश्या और शूद्रामें उत्पन्न हुए पुत्र अनुलोम कहाते हैं ॥ ७१ ॥ और शूद्रसे वैश्या क्षत्रिया और ब्राह्मणीमें उत्पन्न पुत्र प्रतिलोम कहाते हैं, इसीप्रकार क्षत्रिय वैश्यसे अपनेसे निकृष्ट वर्णकी स्त्रीमें उत्पन्न हुए पुत्र अनुलोम और उत्कृष्ट वर्णकी स्त्रीमें उत्पन्न पुत्र प्रतिलोम कहाते हैं ॥ ७२ ॥ इसीप्रकारसे चारवर्णोंसे उत्पन्न चार २ पुत्र एक एकके द्वारा बारह भेदवाले होते हैं ॥ ७३ ॥ और इन बारहों द्वारा अनुलोम प्रतिलोमके भेदसे अडतालीस प्रकारके होते हैं, इसप्रकार चारोंवर्णोंसे संकरतामें चौसठ जातियें होती हैं ॥ ७४ ॥

तत्राद्यास्तु चतुर्वर्णा द्वादश स्युर्द्वितीयकाः ॥ अन्ये तृतीयास्तेभ्योऽन्ये चतुर्थाद्यास्तदुद्भवाः ॥ ७५ ॥ अमृते जारजः कुंडो मृते भर्तरि गोलकः ॥ षोडशाद्या द्वितीयाश्च कुण्डगोलकसंयुताः ॥ ७६ ॥ जातयोऽष्टादश प्राहुरन्याः संकरजातयः ॥ ॥ जातीनान्तु पुनः षष्ठे मिथः कन्यासु संगताः ॥ ७७ ॥ प्रतिकन्याप्रजननाज्जातयः स्युः पुनस्ततः ॥ तत्तज्जातिककन्यासु तत्तज्जातीयपूरुषैः ॥ ७८ ॥ चतुर्थीः पंचमाः षष्ठश्च इत्यनंता हि जातयः ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या वैदिकेष्वधिकारिणः ॥ ७९ ॥

उनमें पहिले चार वर्णसे बारह इसीप्रकार दूसरे तीसरे और चौथे वर्णद्वारा उन २ संकरोंमें उत्पन्न होते हैं ॥ ७५ ॥ स्वामीके रहते जारसे उत्पन्न होनेवाला पुत्र कुण्ड और पतिके मरनेपर अन्यसे उत्पन्न होनेवाला पुत्र गोलक कहाता है, पहिले सोलह और दूसरे यह ऊपर कहे हुए कुंड गोलक इनसे संयुक्त ॥ ७६ ॥ अठारह प्रकारकी दूसरी जातिय होती हैं, फिर इन जातियोंमें छठी परस्पर कन्याओंसे संगत होनेसे ॥ ७७ ॥ प्रतिकन्याओंके उत्पन्न होनेसे फिर उनसे कन्या और पुरुषोंके उत्पन्न होनेसे उन२ जातिके कन्या और पुरुषोंसे ॥ ७८ ॥ चौथी पांचवी छठी इत्यादि अनन्त जातियें उत्पन्न होती हैं इनमें ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यह तीन वेदके अधिकारवाले हैं ॥ ७९ ॥

शूद्रास्त्वत्रानधिकृतास्तथैव प्रतिलोमिनः ॥ अनुलोमिषु यत्र स्याच्छूद्रवर्णस्य संक्रमः ॥ ८० ॥ मातृतः पितृतो वापि साक्षाद्वान्तरतोऽपि वा ॥ तेषामपि भवन्नैव वैदिकेष्वधिकारिता ॥ ८१ ॥

शूद्र और प्रतिलोम वर्णकी सन्तानका वेदमें अधिकार नहीं है जहां अनुलोम वर्णका शूद्र वर्णके साथ संक्रमण है ॥ ८०॥ माताकी तरफसे वा पितृपक्षसे साक्षात् वा अन्तर अर्थात् गुप्तरूपसे उनकाभी वेदमें अधिकार नहीं है ॥ ८१ ॥

अन्येषामनुलोमानां पितृवद्वैदिकाः क्रियाः ॥ वेदाधिकारी पितृतो ये जाताः प्रतिलोमिनः ॥ ८२ ॥ अवैदिकैस्तु मंत्रैस्ते संस्कार्याः पितृजातिवत् ॥ व्याहृतिप्रणवैर्हीना गायत्री वैष्णवी द्विजैः ॥ ८३ ॥

दूसरे अनुलोम वर्णोंकी पिताके समान वेदमें अधिकारता होती है, वेदके अधिकारियोंमें पिताकी ओरसे जो प्रतिलोमी हुए हैं ॥ ८२ ॥ अवैदिक मन्त्रोंसे पिताकी जातिके समान संस्कारके योग्य हैं, व्याहृति और ओंकारके विना उनको विष्णुगायत्री देनी चाहिये ॥ ८३ ॥

तेषां समुपदेष्टव्या तदन्ये नामजापकाः ॥ यावदंशैर्भवेन्न्यूना जननी पितृजातितः ॥ ८४ ॥ चतुर्थांशास्तु ते भक्तास्तत्रांशैस्त्रिभिरूनतः ॥ पितृजातेर्भवेन्मातुरेकांशेनाधिकः सुतः ॥ ८५ ॥

इनके सिवाय जो दूसरे वर्ण हैं वे भगवन्नामका जप करें, माता पिताकी जातिसे यह जितने अंशमें न्यून हों ॥ ८४ ॥ चतुर्थांशसे उनका विभाग करें कारण कि उनको तीन अंशोंमें न्यूनता है, पिताकी जातिसे पुत्र मातासे एक अंशमें अधिक होता है ॥ ८५ ॥

यावद्गुणैर्भवेन्मातृजातिर्जनकतोऽधिका ॥ तावद्भिरंशैर्जनकजातितो न्यूनतः सुतः॥८६॥ कर्णं स्पृशेद्दशन्यूने विंशत्यूने जलं स्पृशेत् ॥ पृष्ठं षष्टिलवन्यूने द्विराचम्य विशुध्यति ॥ ८७ ॥ शताधिकोने स्नात्वैव सहस्रन्यूनके मृदा ॥ स्नानं कुर्यात्तदधिके पंचगव्याशनं स्मृतम् ॥ ८८ ॥

माताकी जाति जितने गुणोंमें पितासे अधिक हो उतनेही अंशोंमें पिताकी जातिसे पुत्र न्यून होता है ॥ ८६ ॥ दश अंश न्यून होनेपर कान छुए, बीस अंश न्यून होनेपर जल स्पर्श करै, साठ अंश न्यून होनेपर पृष्ठ और लवकी न्यूनता मात्र संकरके स्पर्शसे दो बार आचमन कर शुद्ध होता है ॥ ८७ ॥ सौ अंश न्यून पुरुषके स्पर्शसे स्नान करके, सहस्र अंश न्यूनके स्पर्शसे मिट्टी लगाकर स्नान करनेसे, और इससे विशेषमें पंचगव्यको प्राशन करके शुद्ध होता है ॥ ८८ ॥

येषां न ज्ञायते मातृपितृजातिविनिर्णयः ॥ संकीर्णास्ते हि विज्ञेयास्तदालापमपि त्यजेत् ॥ ८९ ॥ तद्दृष्टौ कर्णसंस्पर्श आलापे जलमाचमेत् ॥ स्पर्शे सवाससा स्नानं पंचगव्याशनाच्छुचिः ॥ ९० ॥

जिनके माता पिताकी जातिके निर्णय न हो वह संकीर्ण जाति जाननी,उनसे बातचीतभी नहीं करनी चाहिये ॥ ८९ ॥ उनके देखतेही कर्ण स्पर्श करे और बात करनेपर जलसे स्नान करै और पंचगव्य खाय तो शुद्ध होता है ॥ ९० ॥

राजोवाच–पूर्वोक्तविधिना केचिज्जायन्ते वैश्यतोऽधिकाः । प्रतिलोमा अपि कथं वैदिके नाधिकारिणः ॥ ९१ ॥

राजा बोला– पूर्वोक्त विधिसे कोई प्रतिलोम वैश्यवर्णसे विशेष हों तो वे वेदके कर्मके अधिकारी कैसे है ॥ ९१ ॥

भृगुरुवाच ।

द्विजस्त्रीणामिवैतेषां वैश्याधिक्येऽपि सर्वथा ॥ वचनादधिकारो नो जातो दोषोऽत्र शक्यते ॥ वैदिकेभ्यस्तु ये जाताः कुंडा वा गोलका अपि ॥ आनुलोम्येन तेऽपि स्युः पितृजातिक्रियाकराः ॥ ९२ ॥

भृगुजी बोले–वैश्यसे अधिक होनेपर उन सबके द्विजोंकी स्त्रियोंके समान शास्त्र वचनसे वेदमें अधिकार नहीं है, और जो वैदिक अधिकारियों द्वारा कुंड वा गोलक उत्पन्न हुए हैं, वे अनुलोम रूपसे उत्पन्न होनेके कारण पिताकी जातिकी क्रिया करनेवाले होते हैं ॥ ९२ ॥

संस्कार्या वैदिकैर्मंत्रैर्वेदाध्ययनवर्जिताः ॥ अवैदिकेषु शास्त्रेषु ज्ञेया तदधिकारिता ॥ ९३ ॥ ब्राह्मणेभ्योऽपि जातीनां कुंडादीनां प्रतिग्रहे ॥ अध्यापने याजने च नाधिकारः प्रकीर्त्तितः ॥ ९४ ॥

उनका संस्कार वेद मन्त्रोंसे होना चाहिये, पर उनको वेद पढनेका निषेध है, अवैदिक शास्त्रोंमें उनका अधिकार है ॥ ९३ ॥ यदि कुंडादि जाति ब्राह्मणोंसे हो तो उनको भी दान लेने वेद पढाने तथा यज्ञ करानेका अधिकार नहीं है ॥ ९४ ॥

ज्योतिषे वैदिके ज्ञाने शिवादीनां च पूजने ॥ अधिकारस्तया वृत्त्या तेषां जीवनमीरितम् ॥ ९५ ॥ प्रतिलोमिषु सर्वेषु वैश्यान्न्यूनेषु कुंडता ॥ नैव गोलकता वापि तदाधिक्येऽनुलोमिवत् ॥ ९६ ॥

ज्योतिष विद्या, वैदिकज्ञान, शिवादि देवताओंका पूजन इनमें उनका अधिकार है और इसी वृत्तिसे वे अपना जीवन निर्वाह करें ॥ ९५ ॥ सब प्रतिलोमियोंमें कुंडता वैश्य जातिसे न्यून है पर गोलकता नहीं यह अनुलोमीके समान है और जातिमें उनसे विशेष है ॥ ९६ ॥

यथानुलोमिकुंडादौ संस्कृतिः पितृजातिवत् ॥ वैश्यादिकेभ्यः कुंडादिजन्मिनां पितृवत्क्रियाः ॥ ९७ ॥ वेदाध्ययनहीनानां जातीनामुपनायने ॥ न कालनियमावस्था नैवातिनियमा अपि ॥ ९८ ॥ स्ववृत्तिकरी विद्याध्ययनाध्यापनानि तु कर्त्तव्यानि न दोषोऽत्र तथा वैदिककर्मसु ॥ ९९ ॥

जैसे अनुलोमसे उत्पन्न हुए कुंडादिका संस्कार पिताकी जातिकी समान होता है ऐसेही वैश्य आदिसे उत्पन्न कुण्डादिकी पिताकी समान क्रिया होगी ॥ ९७ ॥ जो वेदके अध्ययनसे हीन है उन जातियोंके

उपनयन (अनुलोम होनेपर कालका अवस्थाका कोई नियम नहीं हैं ॥ ९८ ॥ उनको उन २ की वृत्तिकी विद्या सिखानी चाहिये इसमें कुछ दोष नहीं है, तथा उन अनुलोमोंका वैदिक कर्मोमें दोष नहीं है ॥ ९९ ॥

ब्रह्मचर्यञ्च गार्हस्थं वानप्रस्थं परिव्रजिः ॥ चत्वार आश्रमा ह्येते प्रोक्ता वेदाधिकारिणाम् ॥१००॥ सपादाधिकता ज्ञेया गृहस्थब्रह्मचारिणोः॥ तथा ततोऽधिको वन्यस्तथा तस्माच्च नैष्ठिकः॥ १०१ ॥ यतिः सार्द्धाधिकस्तस्मान्नैष्ठिकब्रह्मचारिणः ॥ ये तूपनीत्यधिकृता न वेदेष्वधिकारिणः ॥ १०२ ॥ आश्रमं द्वितयं तेषामाद्यमेव प्रकीर्त्तितम् ॥ नैष्ठिक्यञ्चापि वानस्थ्यं तेषां पाक्षिकमिष्यते ॥ १०३ ॥

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास यह वेदके अधिकारियोंको चार आश्रम कहे हैं ॥ १०० ॥ गृहस्थ और ब्रह्मचारीको सपाद अधिकता जाननी उनसे वनवासी वानप्रस्थ विशेष हैं और उनसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी विशेष है ॥ १०१ ॥ नैष्ठिक ब्रह्मचारीसे यति सार्द्ध अधिक है । जिनका वेदमें अधिकार नहीं है उनका यज्ञोपवीत कियागया हो तो वे संन्यासादिके अधिकारी नहीं हैं क्योंकि वे पहिलेहीसे अनधिकारी हैं ॥ १०२ ॥ उनको दूसरा आश्रम गृहस्थही कहा गया है, उनका ब्रह्मचारीपन और वानप्रस्थ विकल्पसे पन्द्रह दिनका कहा गया है ॥ १०३ ॥

पारिव्रज्यन्तु नैतेषां प्रणवानाधिकारिता ॥ ये नोपनीत्यधिकृतास्तथा संकरजातयः ॥१०४॥ गार्हस्थमेव तेषां स्यान्नामजाप्येऽधिकारिता ॥ वैदिका उपनीताः स्युर्द्विजा इति हि कीर्त्तिताः ॥ १०५ ॥

उनको संन्यास आश्रमका अधिकार नहीं है, और ओंकार उच्चारणमें भी अधिकार नहीं है, जो उपनीतिके अधिकारी नहीं तथा संकजाति हैं ॥ १०४ ॥ उनको केवल गृहस्थ आश्रममें ही अधिकार है और वे भगवानका नाम जपा करें । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य यह तीन वैदिक हैं इस कारण यह द्विज कहाते हैं ॥ १०५ ॥

मातृतः प्रथमं जन्म गायत्र्याश्च द्वितीयकम् ॥ अतो द्विजत्वमेतेषां ते हि वेदाधिकारिणः ॥ १०६ ॥ ये तूपनीतिहीनास्ते विज्ञेया एकजातयः । ये तु पौराणिकैर्मन्त्रैरुपनीताः कथंचन ॥ १०७ ॥ ते मिश्रा इति विज्ञेयाः पुराणागमवेदिनः ॥ एकजातिषु शूद्रोनः सहस्रं यावदंशकः ॥ १०८ ॥ इतिहासपुराणेषु स्मृतिष्वागमनेषु च ॥ विप्राच्छ्रवणमात्रे स्यादधिकारो न चान्यथा ॥ १०९ ॥

पहिला जन्म मातासे और दूसरा जन्म गायत्री धारणसे होता है, इस कारण दो जन्म होनेसे इनकी द्विज संज्ञा है, यही वेदोंके अधिकारवाले हैं ॥ १०६ ॥ जो उपनीतिसे हीन है वे एकजाति शूद्र कहाते

हैं, और जो किसीप्रकार पुराणोंके मंत्रोंसे उपनीत हैं ॥ १०७ ॥ वे पुराण, आगमके ज्ञाताओंने मिश्रित संकरजाति कहे हैं, एक जाति होनेसे शूद्र सहस्र अंशमें न्यून कहा गया है ॥ १०८ ॥ इतिहास, पुराण, स्मृति और शास्त्रोंमें इन लोगोंको ब्राह्मणके मुखसे इतिहास, पुराण तथा निज धर्म सुनना कहा है॥ १०९॥

अथ ये स्युस्ततो न्यूनास्तेषां मानुषनिर्मिते ॥ कथागाथापद्यकादौ भगवन्महिमांकिते॥ ११०॥ज्ञेया अधिकृतस्तेषां सुकृतं तत एव हि ॥ वेदस्याध्ययनं यागो द्विजानां धर्म ईरितः॥१११॥दानं हि सर्वजातीनां हरेर्नाम्नां च कीर्त्तनम् ॥ स्नानं नमस्कृतिर्यात्रा दयास्तेयं प्रदक्षिणा११२॥

जो इनसे भी न्यून हैं वे मनुष्योंके रचित कथा, गाथा, पद्य (भजन) जिनमें भगवानकी महिमा हो ॥११०॥ पढें इसमें उनका अधिकार है यही उनको पुण्यदायक है, वेद पढना, यज्ञ करना यह ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्योंका धर्म है ॥ १११ ॥ दान देना भगवानका नाम स्मरण करना, स्नान, नमस्कार, तीर्थयात्रा, दया, चोरी न करना, प्रदक्षिणा करना, ये समस्त जातियोंका धर्म है ॥ ११२ ॥

स्वभर्तृनियतिः स्त्रीणां स्वदारनियतिर्नृणाम् ॥ एते प्रायेण संप्रोक्ता धर्माः साधारणा इति ॥ ११३ ॥ प्रतिग्रहोऽध्यापनञ्च याजनं दूत्यमेव च ॥ विप्राणां जीविका तत्र दूत्यं पाक्षिकमिष्यते ॥ ११४ ॥

स्त्रियोंको अपनेही पतिके परायग होना और पतिको अपनी स्त्रीमेंही रति होना उचित है, यह सबके लिये साधारण धर्म है ॥ ११३ ॥ दान लेना, पढाना, यज्ञ कराना, दौत्यकर्म वह ब्राह्मणोंकी आजीविका है दूतपनेमें विकल्प है, ब्राह्मणोंको दूत बनना सर्व सम्मत नहीं॥ ११४ ॥

प्रतिग्रहादौ नान्येषामधिकारस्त्रिके क्वचित् । विप्रक्षत्रियमध्यस्थाः कथंचिदधिकारिणः ॥ ११५ ॥ युद्धं हि क्षत्रिये मुख्यं रथमातंगवाजिनाम् । रक्षणानि क्रिया नाना सारथ्याद्यापदि स्मृतम् ॥ ११६ ॥ कृषिगोरक्षवाणिज्यं नानाकर्मसु कौशलम् । विट्शूद्रजीविका प्रोक्ता शूद्रे तु द्विजसेवनम् ॥ ११७ ॥

प्रतिग्रहादिमें अर्थात्—दान लेनेमें, वेद पढानेमें, यज्ञकरानेमें अन्य वर्णोंका अधिकार नहीं है, केवल ब्राह्मणहीको है, परन्तु किसी अवस्थामें क्षत्रियको भी अधिकार है ॥ ११५ ॥ मुख्य तो क्षत्रियका युद्धही धर्म है, रथ, हाथी, घोडोंकी रक्षा तथा दूसरी अनेक प्रकारकी क्रिया क्षत्रियोंकी आजीविका है, आपत्कालमें ये सारथ्यभी करसकते हैं ॥ ११६ ॥ खेती, गोरक्षा, वाणिज्य, अनेक कार्योंमें कुशल होना, यह वैश्य और शूद्रकी आजीविका कही है, शूद्रका द्विजसेवाभी परम धर्म है ॥ ११७ ॥

स्ववृत्त्या सेवनं क्षत्त्रे क्षत्त्रस्य न निषिध्यते । नीचसेवा तु सर्वेषां निन्दिता परिकीर्त्तिता ॥ ११८ ॥ आपद्यपि च कष्टायां सन्निकृष्टस्य वृत्तिभिः । सर्वेऽपि जीवनं कुर्युर्नापकृष्टस्य सेवनम् ॥ ११९ ॥

क्षत्रियको अपनी वृत्तिकी रक्षा अर्थात् क्षात्रधर्ममें रत रहना श्रेष्ठ है, निषिद्ध नहीं है, और नीचसेवा

तो सबके लियेही निषिद्ध कही है ।। ११८ ।। आपत्काल तथा कष्टमें जो आजीविका अपनेसे निकृष्ट वर्णकी हो उससे आजीविका करसकता है, यह सब वर्णोंका धर्म है, हां अपनेसे अधिक नीचवृत्तिका सेवन न करे ।। ११९ ।।

अनुलोमविलोमानां मातुर्वा जनकस्य वा । जातेवृत्तिर्भवेद्वृत्तिर्यथासंभवमेव हि ॥ १२० ॥ अतः सर्वप्रपंचस्य जायते जीवनं मिथः ॥ तत्तद्वृत्तेरनुष्ठानादंधपंगुसमाजवत् ॥ १२१ ॥

अनुलोम विलोम वर्णोंमें जो उनके माता पिताकी जाति वृत्ति हो वही उनके लिये उचित है ॥१२०॥ इस प्रकार सब वर्णोंके परस्पर जीवनका विधान है, उन २ वृत्तियोंके अनुष्ठानसे निर्वाह होता है अंधे और लंगडोंके समान रेखा न त्यागकर अपने २ समाज द्वारा की हुई वृत्ति करै ॥ १२१ ॥

तेन नानाविधं द्रव्यं समुत्पत्तेर्नरादिनाम् ॥ जायते भोगसंपत्तिर्जीविकाप्यखिलस्य च ॥ १२२ ॥ स्वस्ववृत्त्यानापदि स्यात्सन्निकृष्टस्य चापदि ॥ तदनन्तरवृत्त्या च महापदि च जीविका ॥ १२३ ॥

इस प्रकारसे मनुष्योंको अनेक प्रकारके द्रव्योंका उपार्जन होता है, और भोग सम्पत्ति तथा सबकी जीविका निर्वाह भी होती है ॥ १२२ ॥ आपत्कालके विना सब अपनी २ वृत्तिसे निर्वाह करें, आपत्ति कालमें अपने समीपके वर्णकी वृत्तिसे निर्वाह करें और महाआपत्तिमें समीपके आगेके वर्णकी वृत्तिसे भी आजीविका करें ॥ १२३ ॥

आद्यद्वितीयजातीयान् जीवानेव स्वरूपतः । सृष्ट्वा तानेव सृष्ट्यादौ विश्वकर्मापि च स्वयम् ॥ १२४ ॥ नानाशिल्पानि जीवानां जीवनार्थमशिक्षयत् ॥ जीविकाः कल्पयामास पूर्वोक्तविधिना ततः ॥१२५॥ तृतीयाश्च चतुर्थाश्च पञ्चमाद्याश्च जातयः ॥ सृष्टावेवं विमिश्रत्वाद्वृत्तिसांकर्यमापिरे ॥ १२६ ॥ तन्तुवायकुलालाद्याः कर्मारा हेमकारकाः ॥ पशोर्विशसका ये च वेणवाः स्नायुशोधकाः ॥ १२७ ॥

ब्राह्मणसे दूसरी जाति क्षत्रियोंकी आजीविका सृष्टिकी आदिमें विश्वकर्माने उनके स्वरूपके अनुसार निर्धारण की है ॥ १२४ ॥ और इन वर्णोंकी आजीविकाके लिये विश्वकर्माने अनेक प्रकारके शिल्पोंकी शिक्षा की है और पूर्वोक्त विधान सबकी जीवकाकी कल्पना की है ॥१२५॥ वैश्य, शूद्र और पांचवीं जो संकर जाति है इनके लिये उस विश्वकर्माने सृजन करके मिश्रणकरके संकरवृत्तिका विधान किया है, उसीको यह प्राप्त है ॥ १२६ ॥ जुलाहे,कुम्हार, कर्मकार, सुवर्णकार, पशुओंके घात करनेवाले कसाई), वंसफोड, स्नायुशोधक (नसें निकालकर धोनेवाले) ॥ १२७ ॥

विण्मूत्रहारका व्याधाः श्वपाकाश्चर्मशोधकाः ॥ ग्राम्यारण्यविभेदेन

किराताः शबरादयः ॥ १२८ ॥ पुल्कसाश्च पुलिन्दाश्च पुष्कला म्लेच्छजातयः ॥ किरातेषु निषादाश्च मत्स्यादा मांसजीविनः ॥ १२९ ॥

विष्ठा मूत्र धोनेवाले (भंगी), व्याध, श्वपाक (कंजर) चमडा शोधनेवाले (चमार) ग्राम औ वनके भेदसे जो किरात और शबर (वनवासी नीच) ॥ १२८ ॥ पुल्कस, पुलिन्द, पुष्कल, ये म्लेच्छ जाति हैं, किरातोंमें निषाद, मत्स्याद (मच्छी खाने वाले) यह सब मांसजीवी (मांसाहारी) हैं १२९ ॥

केचिद्वन्यफलाहारा ग्राम्या अपि तु केचन॥ स्तेयैर्नानाविधैरेतैः प्रायो जीवनकारिणः ॥ १३० ॥ शान्ताः स्युः प्रबले राज्ञि प्रबला निर्बले नृपे ॥ इति ते कथिता राजन् लोके जीवनहेतवः ॥ १३१ ॥

कोई वनमें होनेवाले फलोंका आहार करते हैं, कोई ग्राम्य कर्मोंसे आजीवन करते हैं, इनमें कोई अनेक प्रकारसे चोरी और लूट करके आजीवन करते हैं ॥ १३० ॥ जब प्रबल प्रतापी राजा होता है तब यह शान्त रहते हैं और निर्बल राजाके होनेमें यह प्रबल होजाते हैं, हे राजन् ! आपसे यह लोकमें जीवनके उपाय वर्णन किये ॥ १३१ ॥

तथोपद्रावकाश्चापि नानाजातिविभेदतः ॥ शुद्धतातारतम्यं चाप्याश्रमाणां प्रसंगतः ॥ १३२ ॥ आद्यद्वितीयजातीया जीवा एव स्वरूपतः ॥ मुक्ताः किं नु प्रकुर्वन्ति पूर्णकामाः सदा हि ते ॥ १३३ ॥

जातियोंके भेदसे अनेक प्रकारकी विदग्धता शुद्धता और तारतम्यताके प्रसंगसे आश्रमोंकी व्यवस्थाका वर्णन किया ॥ १३२ ॥ पहिली और दूसरी जातिके प्राणी स्वभाव (स्वरूप) सेही मुक्त हैं वह सदा पूर्ण काम हैं, क्या नहीं करसकते ॥ १३३ ॥

भृगुरुवाच--

ब्राह्मणाद्याश्चतुर्वर्णा आद्या ये परिकीर्त्तिताः ॥ मूर्धावसिक्तसूताद्या अनुलोमविलोमिनः ॥१३४॥ द्वितीया द्वादशैवं स्युर्नृपषोडश जातयः एतज्जातियोषाभिः स्वीयाभिः सर्वदैव तु ॥ १३५ ॥ स्वरूपानंदमापन्ना मोदन्ते विष्णुसद्मसु । वेदाधिकारिणस्तत्र वेदाद्यागमनिष्ठिताः ॥ १३६ ॥ स्वभावादेव ते विष्णुं नानायागैर्यजन्ति ते ॥ अन्याधिकारिणो ये च स्वोचितैस्तमुपासते ॥ १३७ ॥

भृगुजी बोले-जो ब्राह्मण आदि चार वर्ण आपने प्रथममें वर्णन किये हैं, और मूर्धावसिक्त सूत आदि जो अनुलोम और विलोम जाति हैं ॥ १३४ ॥ और दूसरी जाति क्षत्रियसे बारह सोलह वर्ण होते हैं, यह सब अपनी २ जातिकी स्त्रियोंके संग विवाह करके ॥ १३५ ॥ अपने स्वरूपके आनन्दको प्राप्त होकर विष्णुके लोकमें आनन्द करते हैं, उनमें वेदके अधिकारी और वेदादि शास्त्रोंमें निष्ठावाले ॥ १३६ ॥ स्वभावसेही अनेकों यज्ञ द्वारा विष्णु भगवान्का यजन करते है, और दूसरे वर्ण भी अपने अधिकारके अनुसार विष्णुकी उपासना करते हैं ॥ १३७ ॥

निपुणा उत्तमे शिल्पे हैमिकाद्याः कुविन्दकाः ॥ नानावाणिज्यकार्यैं च रथ्यालंकारहेतवः ॥ १३८ ॥ हरिप्रीत्यर्थमेवैते वैकुण्ठादौ स्वभावतः । व्यवहारं प्रकुर्वन्ति स्वोचितैः पण्यकादिभिः॥१३९ ॥वृक्षादयः स्वरूपेण तेऽपि स्वेच्छादिचारिणः ॥ स्थाने स्थाने विमुञ्चन्ति फलपुष्पादिसंचयम् ॥ १४० ॥ सात्त्विकान्येव तान्येते जीवा भुञ्जन्ति लीलया ॥ नानोद्यानगताः केचिद्रथ्याट्टालकवर्त्तिनः ॥ १४१ ॥

सुवर्णकार और कुविन्दक (शूद्रामें विश्वकर्मासे उत्पन्न) जो उत्तम शिल्परचनामें चतुर हैं, वह अनेक प्रकारके वाणिज्यके कार्यसे सजावटकर गलीबाजारोंको शोभित करनेवाले हैं अर्थात्–आभूषणोंसे और व्यापारिक वस्तुओंसे अनेक प्रकारकी सजावट करते हैं ॥ १३८ ॥ यह लोगभी भगवान वैकुण्ठपतिकी प्रीतिके निमित्त स्वभावसे अपनी वस्तुओंको बेचते तथा मोल लेते हैं और व्यवहार करते हैं ॥ १३९ ॥ जिसप्रकारसे वृक्षादि फल,पुष्पोंका संचयकर फिर उनको त्याग देते हैं उसी प्रकार यह स्वेच्छाचारी व्यापारी स्थान २ में एकत्रित किये अपने पदार्थोंको बेचते हैं ॥ १४० ॥ इनमें सत्व प्रकृतिके सात्विक पदार्थोंका भोग करते हैं, कोई उद्यानों (बगीचों) में गमन करते, कोई गलियों और कोई अटारियोंमें विहार करते हैं ॥ १४१ ॥

रथैरश्वैर्गजाद्यैश्च यानैः क्रीडन्ति जातुचित् ॥ अश्वाद्या अपि मुक्तास्ते सर्वे मोदिन एव हि ॥१४२ ॥ निंद्यास्तु वृत्तयस्तत्र न प्रवर्तन्ति कर्हिचित् ॥ तत्राधिकारिजात्यस्तु स्वोचितैर्नाममंत्रकैः ॥ १४३ ॥ उपासते हरिं नित्यं दूरात्परिचरन्ति चास्वानन्दमात्रापूर्णास्ते विज्ञेया मानुषोत्तमाः ॥ १४४ ॥ जंबूद्वीपपते राज्ञो दक्षस्य सततं स्वतः ॥ स्वेष्टस्त्रीपुत्रभृत्याद्यैः संभृतो वैरिवर्जितः ॥ १४५ ॥

कभी रथ, घोडे, हाथी और दूसरी सवारियोंपर विहार करते हैं, वे अश्वादिक सब मुक्त (छुटे हुए) ही रहते हैं यह सब आनन्दकी सामग्री हैं ॥ १४२ ॥ ऐसे पुरुष निन्दित वृत्तिसे कभी आजीविका नही करते, और २ जाति अपने २ अधिकारके अनुसार नाममंत्रोंसे ॥ १४३ ॥ नित्य भगवान्की उपासना करते और दूरसेही परिचर्या करते हैं, जो अपने आनन्दकी मात्रासे पूर्ण हैं उनको मनुष्योंमें उत्तम समझना चाहिये ॥ १४४ ॥ जम्बूद्वीपके अधिपति राजादक्षके इष्टजन स्त्री पुत्रादिसे यह स्थान युक्त हैं, वैरियोंसे वर्जित हैं ॥ १४५ ॥

यततो यत्सुखं लोके सुक्तविप्रस्य तादृशम् । तदन्यजातौ विज्ञेयं पूर्वोक्तेन क्रमेण तु ॥ १४६ ॥ ब्राह्मणाद्या मुखादिभ्यः सृष्टाः सत्कर्मकारिणः ॥ मध्यं सन्निचकर्मैषां मध्यमं व्यावधानिकम् ॥ १४७ ॥ अनापदि स्वकर्मैव मध्यं कर्म तथापदि ॥ महापद्यधमं प्रोक्तं जातिजीव-

नहेतवे ॥ १४८ ॥ मुख्यवर्णो भवेद्विप्रश्चतुर्थांशो नृपस्ततः ॥ वैश्यः पंचाशको भूपाद्वैश्याच्छूद्रः षडंशकः ॥ १४९ ॥

उद्योग करनेवालोंको इसलोकमें जो सुख है मुक्त ब्राह्मणको वैसाही सुख है और धर्मानुसार वर्तनेसे पूर्वोक्तकर्मसे और जातियोंको भी वही सुख है ॥ १४६ ॥ ब्राह्मणादि वर्ण जो विधाताके मुखादि अंगोंसे उत्पन्न हुए हैं वह सत्कर्म करनेवाले हैं, समय पडनेपर यह अपनेसे मध्यम वर्णके वा मध्यमसे आगेके वर्णकी आजीविका कर सकते हैं ॥ १४७ ॥ आपत्तिके विना सब अपने २ कर्मोंको करैं आपत्तिमें मध्यम और महा आपत्तिमें जीवनके निमित्त अधम कर्मसे आजीवन करना कहाहै ॥ १४८ ॥ मुख्यवर्ण ब्राह्मण है क्षत्रिय उससे चतुर्थांश, क्षत्रियसे वैश्य पंचमांश और वैश्यसे शूद्र षष्ठांश न्यून है ॥ १४९ ॥

पुमाधिक्याद्वानुलोम्यं पुन्नीचत्वाद्विलोमता ॥ अनुलोमात्त्रिपादोनो विप्रान्मूर्धावसिक्तकः ॥ १५० ॥ तस्मान्माताऽर्द्धपादोना पिता पादद्वयाधिकः ॥ मातृजात्यनुसारेण नीचोच्चत्वं ततः परम् ॥ १५१ ॥ एवं न्यायेन सर्वत्र द्रष्टव्यमनुलोमिषु ॥ प्रातिलोम्ये पितुर्यावद्गुणा माताधिका भवेत् ॥ १५२ ॥ तावदंशो भवेत्पुत्रः पितुर्जातेर्न संशयः ॥ पितरौ जातितो भ्रष्टौ द्विपंचाशाधिकौ सुतात् ॥ १५३ ॥

अनुलोम वर्णमें पुरुषसे आधिक्य है, पुरुषके नीच होनेसे वा स्त्रीके उच्च होनेसे विलोमता होती है, ब्राह्मणसे मूर्धावसिक्त अनुलोम तीन पाद न्यून है ॥ १५० ॥ उससे माता अर्धपाद ऊन है, पिता दो पाद अधिक है, इससे आगे माताकी जातिके अनुसार उच्च और नीचत्व जातियोंमें होता है ॥ १५१ ॥ अनुलोमियोंमें सर्वत्र इसीके अनुसार जानना, प्रतिलोम वर्णोंमें पिताके गुणोंसे मातामें अधिकता होती है ॥ १५२ ॥ पिताकी जातिसे पुत्र उतनेही अंशकी जातिमें होता है, जातिभ्रष्ट माता पिता पुत्रसे ५२ अंश अधिक उत्तम हैं अर्थात्—जातिभ्रष्टोंसे उत्पन्न पुत्र ५२ अंश निकृष्ट है ॥ १५३ ॥

जात्यन्तरात्पुत्रपित्रोर्भागकल्पनमत्र तु ॥ १५४ ॥ एकस्य नानाभार्यत्वे समोना भृतयोऽखिलाः ॥ १५५ ॥ यथायोग्यमथो नात्र प्रातिलोम्यस्य संभवः ॥ एकमात्रेऽनुलोमस्य नानामात्रानुलोमतः ॥ १५६ ॥ नीचोच्चत्वं यथायोगमेवमेव विलोमके ॥ त्रिवारं मैथुनं सार्धं गर्भोत्पत्तिमदुच्यते ॥ १५७ ॥ पादोनं स्यात्सकृत्संगे द्वियाने सार्द्धतां व्रजेत् ॥ गर्भोत्पत्तिर्भवेद्यावत्यानुलोम्ये तु नीचता ॥ १५८ ॥

जो माता पिता भिन्न जातिके हों, तो पुत्रके निमित्त माता पिताको भाग अंशके अनुकूल करना चाहिये ॥ १५४ ॥ अर्थात् पिताके उच्च होनेपर पितृधनके अनुसार माताके उच्च होनेपर मातृधनके अनुसार भाग मिलै, एककी यदि अनेक भार्या हों तो समान वर्णवालीको सम, शेषोंको न्यूनाधिक भृति दी जाय ॥ १५५ ॥ इनको यथा योग्य भाग मिलै; अनुलोममें प्रतिलोमका संभव नहीं है, एक मातामें अनुलोमका, और अनेक माताओंमें अनुलोमके क्रमसे ॥ १५६ ॥ यथायोग्य नीच ऊँच जानना, इसी

प्रकार विलोममें जानना, तीनवारके मैथुनसे गर्भोत्पत्ति हो तो गर्भजात बालकके जातिकी साम्यता होती है ॥ १५७ ॥ एकवार संगसे एक पाद, दो वारके संगसे आधी न्यूनता होती है, फिर जवतक गर्भकी उत्पत्ति हो अनुलोममें नीचता आती जाती है ॥ १५८ ॥

तावत्येवात्र विज्ञेया मात्राधिक्ये तथैव हि ॥ सकृत्संगेन यत्र स्याद्गर्भोगर्भः स एव तु ॥ १५९ ॥ प्रायश्चित्ताद्यथाशास्त्रं दम्पत्योः शुद्धिरिष्यते ॥ तद्राहित्ये जातिहैन्यं जायते नात्र संशयः ॥१६०॥ मातृतः पितृतो वापि ह्येकजातेस्तु संक्रमः ॥ यत्र जातो भवेत्तत्र नोपवीताधिकारिता ॥ १६१ ॥ अन्येऽनुलोमिनः सर्वे वैदिकाधिकृता मताः ॥ त एव हि द्विजास्त्वन्ये एकजातय ईरिताः ॥ १६२ ॥

इसक्रमसे गर्भोत्पत्तिमें माताकी उतनीही अधिकता जाननी, यदि एकही वारके संगसे गर्भ रहजाय तो वह गर्भ अगर्भ है, उसमें पिताका प्राधान्य है ॥ १५९ ॥ यदि माता पिता यथाशास्त्र प्रायश्चित्त करें तो उनकी शुद्धि होजाती है, न करनेसे निःसन्देह जाति हीनताको प्राप्त होती है ॥ १६० ॥ जब तीन वर्णकी स्त्रीमें किसी एकका शूद्रके साथ समागम हो तो उससे उत्पन्न प्रतिलोम पुत्रका यज्ञोपवीतमें अधिकार नहीं है ॥ १६१ ॥ और अनुलोम वर्णका तो वेदके कर्मोंमें अधिकार है, वे द्विजोंमें रहसकते हैं, और दूसरे एक जाति शूद्र कहाते हैं ॥ १६२ ॥

प्रतिलोमिषु सर्वेषु वैदिकानधिकारिता ॥ वैश्याधिकास्तु तुल्या वा संस्कार्याः पितृतन्त्रतः ॥१६३॥ मंत्रैरवैदिकैः सम्यगुपनीय विवाहितः ॥ उपादिशेद्गुरुस्तेषां गायत्रीं वैष्णवीं विशः ॥ १६४ ॥ आर्षं गोत्रन्तु विप्राणां तदन्येषां गुरोरिव ॥ शाखाभेदाद्गुरोर्भेदाद्गोपादीनान्तुसर्वशः ॥ १६५ ॥ सापिण्ड्यं सप्तपुरुषं सोदका आचतुर्दश ॥ सगोत्रा एकविंशाः स्युरतत ऊर्ध्वं तु गोत्रजाः ॥ १६६ ॥

समस्त प्रतिलोम वर्णवालोंको वेदमें अधिकार नहीं है, जो वैश्यसे वर्णमें अधिक हैं वा जो तुल्य हैं उनको पिताके अनुसार संस्कारका अधिकार है, जैसे पिताके संस्कार हों तैसे इनके करै ॥ १६३ ॥ इन वर्णवालोंको विवाहसे पहले पुराणमन्त्रोंसे उपनीत करके वैष्णवी गायत्रीका गुरु उपदेश करै यह वैश्योंको देनी ॥ १६४ ॥ ब्राह्मणोंका ऋषियोंका गोत्र है दूसरे वर्णोंका गोत्र गुरुका गोत्र होताहै, शाखा और गुरुओंके भेदसे राजोंके गोत्र होते हैं ॥ २६५ ॥ सात पीढीतक सपिण्ड और चौदह पीढीतक समानोदक, इक्कीस पीढीतक सगोत्र इसके उपरान्त गोत्रज कहाते हैं ॥ १६६ ॥

द्वात्रिंशे क्षत्रियाणां तु गुरुभेदः प्रशस्यते ॥ विशां पंचदशे प्रोक्तः शूद्रवर्णस्य चाष्टमे ॥ १६७ ॥ विप्रस्य गुरुभेदेऽपि शाखागोत्राभिधा नहि ॥ अनुलोमविलोमेषु पितुर्गुरुर्गुरुर्भवेत् ॥ १६८ ॥

क्षत्रियोंमें गुरुभेद ३२ बत्तीस, पीढीमें वैश्योंका पन्द्रह और शूद्रोंका आठमें होजाता है ॥ १६७ ॥

ब्राह्मणका गुरुभेद होनेपर शाखा गोत्रका भेद नहीं होता, अनुलोम विलोममें पिताका गुरुही गुरु होताहै उसीका गोत्र होता है ।। १६८ ॥

वध्वा वरस्य वा तातः कूटस्थाद्यदि सप्तमः । पंचमी चेत्तयोर्माता तत्सापिण्डयं निवर्त्तते ॥१६९॥ भिन्नगोत्रेऽपि सापिण्डयं विप्राणामेव-मीरितम् ॥ जातीनामितरासान्तु सापिण्डयं त्रिपौरुषम्॥१७०॥अस-गोत्रामसपिण्डामुद्वहेदिच्छया स्त्रियम् । ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजाप-त्यस्तथाऽऽसुरः ॥ १७१ ॥ गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः । ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलंकृता ॥ १७२ ॥

वधूके वरका पिता वधूकुलसे यदि सातवीं पीढीमें हो और उन दोनोंकी माताकी पांचवीं पीढीहो तो सपिण्डता निवृत्त हो जाती है ॥ १६९ ॥ ब्राह्मणोंका भिन्न गोत्र होनेपर भी सापिण्डय होता है और दूसरी जातियोंमें तीन पीढीतक सपिंड कहा है ।। १७० ।। अपने गोत्रकी और अपने पिण्डकी जो न हो इस प्रकारकी स्त्रीसे अपनी इच्छासे विवाह करै । ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर ॥ १७१ ॥ गान्धर्व, राक्षस, पैशाच, यह आठ प्रकारके विवाह हैं, यह आठवां पिशाचविवाह अधम है, ब्राह्मविवाहमें यथाशक्ति अलकारोंसे कन्याको अलंकृत करके जो वरको बुलाकर दी जाती है, वह ब्राह्म विवाह कहाता है ॥ १७२ ॥

दैवो विवाहः कन्याया ऋत्विजो दानमुच्यते । आर्षो गोमिथुने दत्ते कन्यादानं यदा तदा ॥ १७३ ॥ प्राजापत्यः सहधर्मं चरेतामिति दा-नतः । आसुरो द्रविणादानाद्गान्धर्वः समयान्मिथः ॥ १७४ ॥ राक्ष-सो युद्धहरणात्पैशाचः कन्यकाछलात् ॥ धर्म्याश्चत्वार आद्याः स्यु-र्ब्राह्मणस्य त एव हि ॥ १७५ ॥ राक्षसोऽपि क्षत्रियस्य त्रयोऽन्येऽन्यासु जातिषु । स्वयंवरस्तु गान्धर्वं हठाद्राक्षस उच्यते ॥ १७६ ॥

ऋत्विजको कन्यादान करना दैवविवाह कहाता है, कन्याके पिताको एक गायका जोडा देकर जो विवाह किया जाय उसे आर्ष विवाह कहते हैं ॥१७३ ॥ तुम दोनों मिलकर धर्म करो इस प्रकार वाणीसे कहकर कन्या और वरको वस्त्रादिसे सत्कार करके जो कन्यादान करना है वह प्राजापत्य विवाह है । धन देकर जो विवाह किया जाय वह आसुर कहाता है, दोनों वर कन्या परस्पर राजी होकर विवाह करलें उसको गांधर्व विवाह कहते हैं ॥ १७४ ॥ युद्ध करके कन्याले आनेसे राक्षस विवाह कहाता है, छलसे कन्याको हरलेनेसे पैशाच विवाह कहाता है,पहिले चार विवाह धर्मके हैं और ब्राह्मणोंको यह चारही करने चाहिये ॥ १७५ ॥ क्षत्रियको राक्षस विवाहका भी अधिकार है शेष तीन विवाह अन्य जातियोंमें होते हैं, स्वयंवर विवाह गांधर्व है, हठसे जो विवाह किया जाय वह राक्षस कहाता है ॥ १७६ ॥

क्रीता कन्या समा दास्या विप्राणामतिनिन्दिता ॥अवैदिकी वैदिकी च गायत्री द्विविधा मता ॥ १७७ ॥ वैदिकी तत्र सावित्री वैष्णवाद्या

द्विधैव हि ॥ सोंकारा वैदिकी प्रोक्ता सश्रीका स्यादवैदिकी ॥१७८॥ वैश्यतुल्यविलोमानां सैवोक्ता पूर्वमेव तु ॥ अन्यैकजातयो नाम मंत्रैरेव हि संस्कृताः ॥ १७९ ॥ भजेयुर्विष्णुमव्यग्रा दयादानादि-कर्मभिः ॥ ग्रहणं तप्तमुद्राणां तथा मंत्रविवेचनम् ॥ १८० ॥

कन्याको मोल लेना और उससे विवाह करना यह ब्राह्मणोंको बहुत निंदित है, अब मन्त्र विधान कहते हैं, वैदिकी और अवैदिकी दो प्रकारकी गायत्री कहाती है ॥ १७७ ॥ सावित्री वैदिकी है यह वैश्यवोंकी दो प्रकारकी है जिसमें ओंकार लगाया जाय वह वैदिकी और जिसमें श्रीलगाई जाय वह अवैदकी है ॥ १७८ ॥ वैश्योंके समान विलोम जातियोंका मंत्र पहले लिखही चुके हैं, और दूसरी जातियोंके संस्कार नाममन्त्रोंसे होते हैं ॥ १७९ ॥ वे लोग दया दानादि कर्मोंसे एकाग्रमन हो विष्णु भगवान्का भजन करें, इन त्रिवर्णोंसे अन्य जातियोंको तप्तमुद्राका लेना तथा नाममन्त्रोंका विवेचन उचित है ॥ १८० ॥

हयग्रीवब्रह्मविद्याप्रसंगे पूर्वमीरितम् ॥ उपनीत्यधिकारी यो नोपनीतो यदा भवेत् ॥ १८१ ॥ सावित्रीपतितो व्रात्यस्तज्जन्मा भृज्जक-ण्टकः ॥ व्रती स्त्रीसंगतो व्रात्य आरूढपतितो यतिः ॥ १८२ ॥ यतिस्तस्मान्महापापात्पाखण्डी वेदनिंदकः ॥ जाताश्चतुर्भ्य एतेभ्य-स्तेप्युक्ता भृज्जकण्टकाः ॥ १८३ ॥ जीवत्पतिस्तु या भार्या जनये-दन्यतः सुतम् ॥ अनुरागाद्धठाद्वापि प्रच्छन्नं स्पष्टमेव वा ॥ १८४ ॥

यह बात हयग्रीव ब्रह्मविद्याके प्रसंगमें पहिले कह दी है जो उपवीतका अधिकारी हो और उसका उपवीत न किया जाय ॥ १८१ ॥ वह सावित्रीसे पतितव्रात्य होजाते हैं, उससे जो जन्मे वह भृज्जकं-टक कहाता है, यदि यति स्त्रीका सङ्ग करै तो वह भी पतित होता है, व्रती (ब्रह्मचारी) स्त्रीके संगसे व्रात्य होताहै, यदि संन्यासी होकर स्त्रीका संग करै तो वह यति पतित होजाता है ॥ १८२ ॥ यह यतिके लिये महापाप है, दूसरे जो पाखण्डी और वेदनिन्दक होतेहैं, इन व्रती आदि चारों प्रकारके व्रात्यों से उत्पन्न भृज्जकण्टक होते हैं ॥ १८३ ॥ पतिके जीतेहुए जो स्त्री अनुराग या हठसे गुप्त वा प्रगट रूपसे अन्य पुरुषसे सन्तान उत्पन्न करै ॥ १८४ ॥

स प्रोक्तो जारजः कुंडः क्षेत्रजो भर्तुराज्ञया । मृते भर्तरि या नारी वरयेत्स्वेच्छया पतिम् ॥ १८५ ॥ तज्जन्मा गोलकः प्रोक्तो हठाद्वापि स एव हि । भर्तृसम्बन्धिनामाज्ञा यदि तत्र भवेत्सुतः ॥ १८६ ॥ सोऽपि क्षेत्रज एव स्याद्द्विपादोनौ तु तौ पितुः । भृज्जकंटश्चतुर्थांशः सोऽपि चेत्पितृजातितः । संस्कृतस्त्र्यंशहीनः स्यात्तत्सुतो द्व्यंश

उच्यते ॥ १८७ ॥ तन्नप्ता लभते जातिं मूलपुंसः क्रमादिति । विधिरेष सवर्णासु भार्यास्वेव यदा जनिः ॥ १८८ ॥

जारसे उत्पन्न होनेके कारण वह कुण्ड नामवाला होताहै और जो भर्त्ताकी आज्ञासे दूसरेसे उत्पन्न किया हो वह क्षेत्रज कहाता है, भर्ताके मरने पर जो स्त्री अपनी इच्छासे दूसरेसे पुत्र उत्पन्न करे ॥१८५॥ वह गोलक नामवाला होता है, चाहे हठसे हुआ हो पर वह भी गोलक नामवाला होता है, यदि उस पुत्रके उत्पन्न करनेमें भर्त्ताके सम्बन्धियोंकी आज्ञा हो ॥ १८६ ॥ तो वह भी क्षेत्रज कहाता है, यह दोनों पितासे दोपाद कमती हैं और भृज्जकण्टक पिताकी जातिसे चौथे अंशमें है, संस्कारको प्राप्त हुआ तीन अंशमें हीन होता है उसका पुत्र दो अंशका भागी कहाता है ॥ १८७ ॥ और उसका नप्ता (पोता) क्रमसे मूल पुरुषकी जातिको प्राप्त होताहै परन्तु यह बात तब होती है जब सवर्णा भार्यामें सन्तानकी उत्पत्ति होती जाय ॥ १८८ ॥

एवं हि क्षेत्रजो जातिं लभतां क्रमशः पितुः । प्रायश्चित्ताद्विशुद्धिः स्यात्क्षेत्रजे व्यावहारिके ॥ १८९ ॥ तदभावे विगीतः स्यात्किंचिज्जातेस्तथोन्नता । भृज्जकंटस्य पितरौ सुतात्पादद्वयाधिकौ ॥ १९० ॥ कुंडगोलौ पितुर्जातेः पंचमांशाधमौ मतौ । पितरौ भृज्जकंटेन तुल्यरूपौ प्रकीर्तितौ ॥ १९१ ॥ प्रायश्चित्ताज्जातिलाभः पित्रोरेव न पुत्रयोः । अनुलोमादानुलोम्यमेवमेव प्रकीर्तितम् ॥ १९२ ॥

इसीप्रकार क्षेत्रज क्रमसे सवर्णा भार्यामें विवाह होनेसे पिताकी जातिको प्राप्त होता है, क्षेत्रजकी व्यवहारमें प्रायश्चित्तसे शुद्धि हो जाती है ॥ १८९ ॥ यदि प्रायश्चित्त न हो तो जातिसे कुछ न्यून हो विगीत कहाता है, प्रायश्चित्तसे उन्नत होता है, भृज्जकण्टकके माता पिता पुत्रसे दो दो पाद अधिक हैं ॥ १९० ॥ कुंड और गोलक पिताकी जातिसे पंचमांश नीचे हैं, भृज्जकण्टकके उत्पन्न होनेसे माता पिता उसीरूपके हो जाते हैं ॥ १९१ ॥ प्रायश्चित्त करनेसे ही माता पिता अपनी जातिको प्राप्त होते हैं न कि, पुत्र अनुलोमसे उत्पन्न अनुलोमपनको प्राप्त होते हैं, इसप्रकार सिद्धान्त है ॥ १९२ ॥

वैलोम्ये जातिभेदस्तु नैतेषां विद्यते क्वचित् ॥ किंचिद्विगीततैव स्यान्मातापित्रोः सुतस्य च ॥१९३॥ शूद्राधिकास्तु तुल्या वा विलोमा अनुलोमिनः ॥ यावंत एकजात्यः स्युस्ते शूद्रा इति कीर्त्तिताः॥१९४॥ शूद्रवैदेहमध्यस्था मध्यजातय ईरिताः ॥ अंत्यजास्तत्पराः प्रोक्ता यावज्जातिर्विविच्यते ॥ १९५ ॥ यत्र जातिविवेको न यथेष्टमिथुनाशनाः ॥ यवनास्ते विमिश्रत्वान्म्लेच्छा इति च कीर्त्तिताः ॥ १९६ ॥ अनुलोमे मातृवृत्तिः पितृवृत्तिर्विलोमके । सान्निध्यवशतस्त्वेवं तद्धर्मा-

ञ्शृणुताधुना ॥ १९७ ॥ दयादानमहिंसादिर्विष्णुनामानुकीर्तनम् ॥ सर्वासामेव जातीनामेष साधारणो विधिः ॥ १९८ ॥

विलोममें तो इनका जातिभेद कहीं नहीं है, परन्तु मातापितासे यह पुत्र कुछ विगीत (निन्दित) हो जाता है ॥ १९३ ॥ विलोम वा अनुलोम जो शूद्रसे अधिक वा शूद्रकी तुल्य हैं जितने ऐसी एक जाति शूद्रसे उत्पन्न हैं वे शूद्रही कहेगयेहैं ॥ १९४ ॥ शूद्र और वैदेहके बीचवाले मध्यजाति कहाते हैं इसके सिवाय और निकृष्ट जाति अन्त्यज कहाती हैं ॥ १९५ ॥ जिनमें जातिका कोई विवेक नहीं हैं इच्छानुसार मैथुन और भोजन है वे यवन हैं, और यही मिश्रित होनेसे म्लेच्छ कहाते हैं ॥ १९६ ॥ अनुलोम जाति मातृकुलकी आजीविकावाले विलोमजाति पितृकुलके आजीविकावाले होते हैं, सन्नि-धान अर्थात्-संगतिसे उनका जीवन चलता है अब मैं उनके धर्मोंको कहता हूं ॥ १९७ ॥ दया, दान, अहिंसादि, विष्णुके नामोंका कीर्त्तन यह सब जातियोंके धर्मकी साधारण विधि है ॥ १९८ ॥

वेदाध्ययनयजनं द्विजानामधिकं स्मृतम् ॥ अध्यापनं याजनञ्च प्रतिग्रह इति त्रयम् ॥ १९९ ॥ विप्राणामधिको धर्मो जीविका परिकीर्त्तिता । क्षत्रियो युद्धजीवी स्याच्छस्त्रवृत्त्या च सेवकः ॥ २०० ॥ कृषिगोरक्षवाणिज्यवृत्तिर्वैश्य उदाहृता ॥ सेवाकर्म तु शूद्रस्य वृत्तिरित्यभिधीयते ॥ २०१ ॥ सजातीयास्तु भोज्यान्नाश्चतुर्न्यूनास्तु मध्यमाः ॥ अधमा द्वादशन्यूना विंशत्यूनाधमाधमाः ॥ २०२ ॥

इनमें वेदका पढना और यज्ञ करना यह ब्राह्मणोंका विशेष धर्म है, वेद पढाना, यज्ञ कराना, दान लेना इन तीन ॥ १९९ ॥ कर्मोंसे ब्राह्मणोंकी आजीविकाका निर्वाह होताहै, यह धर्मकी आजीविका है, क्षत्रिय युद्धकार्यसे अपनी आजीविका करै, शस्त्रकी वृत्ति और सेनाकी नौकरी करें ॥ २०० ॥ खेती, गोरक्षा, व्यापार यह वैश्यकी वृत्ति हैं और शूद्रकी वृत्ति तीनों वर्णकी सेवा है ॥ २०१ ॥ सजा-तियोंमें अन्नके सब समान भोक्ता हैं एक भोजन होता है, मध्यमजाति इनसे चार अंश न्यून है अधम-जाति बारह और अधमाधम जाती बीस अंश न्यून है ॥ २०२ ॥

तन्न्यूना नैव भोज्यान्ना इति शास्त्रविनिर्णयः ॥ विनोदकेन यत्पक्वं यत्पक्वं तैलसर्पिषा ॥ २०३ ॥ तदन्नं फलवद्ग्राह्यं नात्र कार्या विचारणा ॥ अधमान्मध्यमं चेदं मध्यादुत्तममुच्यते ॥ २०४ ॥ भोज्यान्ने योऽधमः प्रोक्तो जलपाने स उत्तमः ॥ विंशत्यूनात्तु मध्यं स्याच्छ-ष्ट्या चाधमसीरितम्॥ २०५॥ विंशोत्तरशतांशास्स्यादधमादधमं त्विति॥ यतस्तस्माच्च परतो जलपानं न युज्यते ॥ २०६ ॥

इनसे जो न्यून हैं उनके घरका किसीप्रकारका भोजन नहीं करना चाहिये, यह शास्त्रका निर्णय है जो अन्न विना जलके पकाया गया है वा जो तेल और घीमें पकाया गया है ॥ २०३ ॥ वह अन्न फलके समान ग्रहण करना चाहिये, इसमें विचारकी आवश्यकता नहीं, अधमसे मध्यम और

मध्यमसे उत्तम अच्छे हैं ॥ २०४ ॥ अन्न भोजनमें जो अधम कहा गया है जलपानमें वह उत्तम है, उत्तमसे मध्यम वीस अंशमें न्यून है अधम ६० अंशमें ॥ २०५ ॥ अधमाधम एकसौ वीस १२० अंश न्यून है इस कारण इससे परे अन्य जातिके हाथका जलपान नहीं करना चाहिये ॥२०६॥

विप्रधर्मा भवेत्सोऽपि मूर्धावसिक्ततोऽधिकः ॥ प्रतिग्रहादौ तस्मात्स्यादधिकारी स इत्यपि ॥ २०७ ॥ ब्रह्मक्षत्रविशां पुत्रा अनुलोमाः षडेव तु । शूद्रविट्क्षत्रजाः पुत्राः प्रतिलोमाः षडेव तु ॥ २०८ ॥ मंत्री सभासत्सचिवः सेनानीः कोषरक्षकः । योद्धा विप्रादिभोज्यान्नोऽखिलविद्याविशारदः ॥ २०९ ॥ उपदेष्टोपवेदानां प्रोक्तो मूर्द्धावसिककः । चिकित्सकः पत्रलेखो रत्नसौवर्णवाससाम् ॥२१०॥ विक्रेता नाणकादीनां धान्यादीनां सुवस्तुनः । उपवेदोपदेष्टा च तुल्यनीचाधिकारिणाम् ॥२११॥ पुराणाख्यानानि पुणः पुस्तकादिविलेखकः ॥ नृपाणां सचिवः प्रोक्तोऽम्बष्ठ इत्यादिकर्मकः ॥ २१२ ॥

मूर्धावसिक्त जातिका पुरुष विप्रधर्मा होता है इससे वह एक अंशमें प्रतिग्रहका अधिकारी है ॥२०७॥ ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्योंसे हीनवर्णामें अनुलोम विधिसे छः पुत्र होते हैं, और शूद्र वैश्य तथा क्षत्रियसे प्रतिलोम विधिसे छः पुत्र होते हैं ॥ २०८ ॥ इनमें मूर्द्धावसिक्त मंत्री, सभासद, सचित्र, सेनापति, कोषरक्षक, योधा, विप्रादिको भोजन करानेका अधिकारी, समस्त विद्याओंमें पंडित ॥२०९॥ और उपवेदोंका उपदेश करनेवाला कहा गयाहै अर्थात्–इनमेंसे किसी भी कामके करनेका वह अधिकारी है, और दूसरा अम्बष्ठ चिकित्सा कर्म, पत्र लिखना, रत्न, सुवर्ण और वस्त्रादिका बेचना ॥ २१० ॥ तथा राजमुद्रासे अंकित निष्क तथा धान्यादि वस्तुओंके बेचने, उपवेदोंके उपदेश देने, तुल्य और नीच अधिकारियोंको ज्ञान सिखाने ॥२११॥ पुराणोंके आख्यान जाननेमें कुशलता, पुस्तकादिका लिखना और राजाओंका सचिव इतने कर्मोंका अधिकारी कहा गया है ॥ २१२ ॥

सुवर्णाद्यष्टलोहानामुपलोहस्य चापि तु ॥ अलंकाराद्यखिलकृत्कवचादिविधायकः ॥ २१३ ॥ रत्नमाणिक्यमुक्तानां वेधभेदादिकर्मकृत् ॥ परिचर्य्याकरोऽप्युच्चजातेः पारशवाभिधः ॥ क्रमादुत्तमजातीयाः क्षत्रवर्णादिमे त्रयः ॥ २१४ ॥

सुवर्णादि अष्ट लोह और उपलोहादिके अलंकार बनाना, कवच (बख्तर) का बनाना ॥ २१३ ॥ रत्न माणिक्य और मोतियोंमें छिद्र करना, उनके भेद जानना और उच्च जातिकी सेवा करना यह पारशवका कर्म है, यह तीनों क्षत्रवर्णसे क्रमसे उत्तम माने गये हैं ॥ २१४ ॥

वैश्यंतः क्षत्रियाद्वापि येऽधिका एकजातयः॥ तेषामवैदिकत्वन्तु वचनादेव नान्यथा ॥ २१५ ॥ न तावताधमत्वं स्याद्द्विजस्त्रीणामिवात्र

हि ॥ विप्रक्षत्रियमध्यस्था ब्रह्मसूदाः प्रकीर्त्तिताः ॥ २१६ ॥ वैश्यक्षत्रियमध्यस्था क्षत्रसूदा इतीरिताः ॥ वैश्यशूद्रान्तरा ये तु वैश्यसूदाः प्रकीर्त्तिताः ॥ २१७ ॥ शूद्रसूदास्तु वैदेहपर्यन्ताः क्रमशो वराः । सूदाश्च परिवाहाश्च यथाजात्याखिला अपि ॥ २१८ ॥ भोज्यान्नाः पेयपानीया न जातिनियमोऽत्र तु ॥ परचित्तानुवृत्तिर्या सा सेवेत्याभिधीयते ॥ २१९ ॥ परिचर्या च साचिव्यं दौत्यमित्येव सान्निधिः ॥ पुरोवस्थितिरूपादिक्रमहीनत्वमीक्ष्यते ॥ २२० ॥

जो एकजातिकर्मा वैश्य और क्षत्रियोंसे अधिक हैं उनमें अवैदिकत्व शास्त्रके वचनोंसे है अन्यथा नहीं ॥ २१५ ॥ उनमें उतना अधमपना नहीं है वे द्विजन्नोंके समान धर्मवाले हैं, यथा ब्राह्म और क्षत्रियके मध्यके वर्ण ब्राह्मणसूद (ब्राह्मण रसोइयें) कहाते हैं ॥ २१६ ॥ वैश्य और क्षत्रियके मध्यके क्षत्रियरसोइये वैश्य और शूद्रके मध्यके वैश्यरसोइयें कहाते हैं ॥ २१७ ॥ और शूद्र तथा वैदेह जातिके मध्यके शूद्र रसोइयें कहाते हैं, यह सूद और परिवाह सब जातियोंमें होते हैं ॥ २१८ ॥ चारों वर्णोंमें इन चार प्रकारके सूदोंका बनाया अन्न क्रमसे ग्राह्य है, इनके हातका जल भी पिया जा सकता है, ब्राह्मणसूद ब्राह्मणादि तीन वर्णकी, क्षत्रियसूद दो वर्णकी, और वैश्यसूद अपने वैश्यवर्णकी रसोई करें, आगे जातिका नियम नहीं है, पराये चित्तके अनुकूल वर्तनेका नाम सेवा है ॥ २१९ ॥ सेवा, साचिव्य, दूतपना, नित्य निकट रहना, सन्मुख खडा रहना और रूप यह क्रमसे हीनत्वके बतानेवाले हैं ॥ २२० ॥

परिचर्या तु सम्प्रोक्ता नीचानां सा न शस्यते ॥ सभासदत्वं मंत्रित्वं मान्यकर्मनियोज्यता ॥ २२१ ॥ साचिव्यमिति दूतत्वं प्रेषणं मानपूर्वकम् ॥ परिचर्या नीचजातेः श्ववृत्तिरिति भण्यते ॥ २२२ ॥ स्वामिनः सेवकस्यापि श्ववृत्तिः पापकृद्यतः ॥ निवारयेत्ततो राजा ज्ञात्वा जातिविवेचनम् ॥ २२३ ॥

जो परिचर्या कर्म कहा गया है यह नीचोंकी नहीं करनी चाहिये, इसमें कष्ट होता है, सभासद होना, मंत्री होना तथा दूसरे प्रतिष्ठित पदमें नियुक्त होना ॥ २२१ ॥ साचिव्य, दूतपन अर्थात्-मानपूर्वक कहींको भेजना इसमें दोष नहीं है यह उच्चसेवा है, और नीच जातिकी सेवा तो श्ववृत्ति कहाती है ॥ २२२ ॥ ऐसे स्वामीके साथ सेवककी श्ववृत्ति पापरूप है, राजाको उचित है कि जातिके विभागको जानकर श्ववृत्तिको निवारण करै, उच्च नीचकी सेवा न करै ऐसा प्रबन्ध करै ॥ २२३ ॥

सर्वेषां वृत्तिकृद्राजा तथा ज्ञात्वा नियोजयेत् ॥ नानाकर्मसु विप्रादींस्ततोऽत्रामुत्र शं लभेत् ॥ २२४ ॥ जीवाः षोडश जातीयाः सन्ति ये मानुषोत्तमाः ॥ तेषां जातिक्रमेणैव मुक्तावानंद इष्यते ॥ २२५ ॥ जातिर्नियम्यते तस्मादुच्चनीचसमत्वतः ॥ कर्णं स्पृशेदशन्यूने विंश-

न्यूने जलं स्पृशेत् ॥२२६॥ विंशोत्तरशतन्यूने तावदंगविशोधनम् ॥
स्पृष्टे तु मध्यजातीनां सचैलं स्नानमाचरेत् ॥ २२७ ॥ स्पर्शनादन्त्य-
जातीनां पंचगव्यविशोधनम्॥नीचनीचतरेष्वत्र क्रमादुपवसेदपि २२८

राजाही सबकी वृत्तिका करनेवाला है, वह इन सबको यथा योग्य नियुक्त करै, अनेक प्रकारके कार्योंमें विप्रादिको नियुक्त करनेसे दोनों लोकमें कल्याणकी प्राप्ति होती है ॥ २२४ ॥ सोलह जातिके प्राणी मनुष्योंमें उत्तम माने गये हैं, उनके जाति क्रमसेही नियुक्त होनेसे मुक्तावस्थामें आनन्द प्राप्त होता है ॥ २२५ ॥ जातिके नियमसे ऊँच नीच और समानता जानीजाती है, जो अपनेसे दश अंश न्यून हो उसको छूकर कर्ण स्पर्श करै, बीस अंश न्यूनको छूकर जल स्पर्श करै ॥ २२६ ॥ एकसो बीस अंश न्यूनके स्पर्शमें अंग शुद्धि स्नान करे, मध्य जातिके स्पर्शसे सचैल स्नान करे ॥ २२७ ॥ अन्त्यजोंके स्पर्शसे पंचगव्य प्राशन कर शुद्धि होती है, नीचोंसे नीचोंके भी स्पर्शमें क्रमसे उपवास करै ॥ २२८ ॥

स्पृष्टस्पृष्टे तदर्वाक्तु क्रमादेव विशोधनम् ॥ भवेदाचारवानेवं ज्ञात्वा
जातिविवेचकः ॥२२९॥ माहिष्यो गणिको ज्योतिःशास्त्राणामुपदेशकः॥
भाण्डाररक्षः सैरन्ध्रो रत्नविक्रीयलेखकः ॥ २३० ॥ सेनानीर्वस्त्रहे-
मादिवणिग्व्यवहृतौ पटुः ॥ नृपप्रियोऽधिकारी च न्यायान्यायविवे-
चकः ॥ २३१ ॥ उग्रोऽश्वसादिः पादातः शूरः शास्ता दुरात्मनाम् ॥
धर्मपालः प्रजापालः शस्त्रेणैव स जीवति ॥ २३२ ॥

इनके स्पर्शसे क्रमसे वही ऊपर लिखी शुद्धि है, इस प्रकार जातिके विवेकवाला इन बातोंको जानकर आचारवान् होता है ॥ २२९ ॥ माहिष्य वर्ण, गणक और ज्योतिषशास्त्रका उपदेश करनेवाला होता है। सैरन्ध्र, भण्डारोंका रक्षक और रत्नोंकी विक्रीका लिखनेवाला होता है ॥ २३० ॥ सेनाका चलानेवाला वस्त्र सुवर्ण और वणिक् व्यवहारमें पटु, राजाका प्रिय अधिकारी न्याय अन्यायका विवेचक होता है अर्थात्-यह इसके अधिकार हैं ॥ २३१ ॥ उग्रजाति पुरुषके कार्य घोडेकी सवारी(कोचवानी), पैदल, सेनाका प्यादा होता है यह शूर दुरात्माओंको दंड देना, धर्मपालक, प्रजापालक, शस्त्रधारक कर्मसे आजीविका करनेवाला होता है ॥ २३२ ॥

हस्त्यश्वरथपादातं सेनांगः स्याच्चतुष्टयम्॥चतुरंगस्य सैन्यस्य कार्या-
कार्यविवेचकः ॥२३३॥ सारथ्यकृत्सखा राज्ञः सूतो हस्त्यश्ववाहनः ॥
करणो लिपिलेखः स्याच्चित्रलेखो वणिग्वरः ॥२३४॥कृषिकृद्ग्रामणी-
र्वाणिज्यव्यवहृतौपटुः॥नानाशिल्पकरःस्वोच्चपरिचर्याकरोऽपिसः२३५
मागधो नृपतिस्तोता हयादिपशुविक्रयी ॥ नानावाद्यपटुर्गाता कर्षक-
श्चित्रलेखकः॥२३६॥ शिल्पवेत्ता च संगीतनटनाट्यकवित्पटुः॥ राज्ञां

विनोदकः शूरा यन्ता गजहयादिनाम् ॥ २३७ ॥ वैदेहः काष्ठपाषाणक्रयविक्रयशिल्पकृत् ॥ ताम्रकांस्यायसादीनां नानाकर्मविधायकः ॥ २३८ ॥

हाथी, घोडे, रथ, पैदल यह सेनाके चार अंग हैं, ऐसी चतुरंग सेनाके कार्य अकार्यकी विवेचना करनेवाला ॥ २३३ ॥ रथका हांकना, राजाका मित्र, हाथी घोडोंकी सवारी चलाना यह सूतका कार्य होताहै, करणजाति लिपिका लिखनेवाला होता है और चित्र लिखनेवाला होता है, वणिग्वर ॥ २३४ ॥ कृषिका करनेवाला, ग्राममें वस्तुओंके लेजानेका कार्य करता है, ग्रामणी अवी छाग (बकरों) का लेन देन करै तथा और भी अनेक प्रकारके उच्चशिल्प करनेवाला तथा ऊंच वर्णोंकी परिचारकीका काम करता है ॥ २३५ ॥ मागधका कार्य राजाकी स्तुति, घोड़े आदि पशुओंका बेचना, अनेक बाजे बजानेमें चतुर होना, गायक होना, खेती तथा चित्रलेखन है ॥ २३६॥ शिल्पवेत्ता, संगीत नटनाटयके कार्यमें कुशल, राजोंको विनोद करानेवाला, शूर हाथी घोडे आदिकोंकी सवारी चलाना यह इसका काम है ॥ २३७ ॥ वैदेहका काम काष्ठ पाषाणपर शिल्प करके उनका क्रय विक्रय करना है, तथा तांबा कांसी लोहे आदिके नाना कर्मोंको विधान करना है ॥ २३८ ॥

कौशेयकस्तन्तुवायः कुशलश्चर्मकर्मकृत्॥हयोष्ट्राश्वनरादीनां पल्याणकरणे पटुः ॥ २३९ ॥ कर्षको वणिगित्यादिकर्मा च परिचारकः ॥ आयोगवस्तु रजको धावकश्चर्मकृत्तथा ॥ २४० ॥ नापितस्तंतुवायश्च कर्मारः स्वनकोऽपि च ॥ कुंड्यको वाद्यको व्याधस्तिलकश्चूर्णकृत्तथा ॥ २४१ ॥ वृक्षच्छेदकरो दण्ड्यदण्डकृद्बाणकुंतकृत् । मल्लः शिल्पी निशिचरो मृगपक्षिश्वकर्मकृत् ॥ २४२ ॥

जुलाहा (कौशेयक) रेशमके वस्त्र बनावै, कपडा बुनै तथा यह चर्मका काम भी करै, हाथी घोडे ऊंटोंकी जीन आदि बनावै तथा मनुष्योंके निमित्त चर्मकी वस्तुएँ बनावै ॥ २३९ ॥ कर्षक वणिक कर्मका व्यवसाय करै तथा परिचर्या करै, आयोगव भी यही करै, धोबी कपडा धोवै, धावक दूतपनका काम करै, चर्मकृत् चर्मकी वस्तु बनानेका काम करै ॥ २४० ॥ इसी प्रकार नाई, जुलाहा, लुहार, स्वनक, कुंडक, वाद्यक (बाजा बजानेवाले), व्याध, तिलक, चूर्णक (वस्तुओंका चूर्ण करनेवाले) ॥ २४१ ॥ यह सब अपने नामके अनुसार काम करैं, वृक्षच्छेदी दण्डयोग्योंको दण्ड देनेवाले अर्थात् राजाकी आज्ञासे ताडन करनेवाले, बाण बरछी बनानेवाले, मल्ल, शिल्पी, रात्रिमें विचरनेवाले, मृग पक्षी तथा श्वान पोषणका काम करनेवाले स्वनामानुसार कार्य करैं ॥ २४२ ॥

धान्यवाहो बलीवर्दवाहनादौ महापटुः॥ क्षत्ता राज्ञां प्रतीहारः सुरामद्यादिकर्मकृत् ॥ २४३ ॥ चौरादिदण्डयपापानां शिरःपाण्यादिवर्धकः ॥ मल्लश्चूर्णकरो वाजिगजगोमृगपक्षिणाम् ॥२४४॥ परिचर्याकरो राज्ञां शुद्धान्तस्य च रक्षकः ॥ प्रेष्यः पुरःसरः शूरो मल्लः शस्त्रेषु

नैपुणः ॥ २४५ ॥ तंतुकृत्तंतुवायश्च जालकृन्मत्स्यजीवनः ॥ कर्मारश्च-मेरजकः क्रूरकर्मा च यामिकः ॥ २४६ ॥

धान्यवाह गाडीमें बैल जोतने आदिके कर्ममें चतुरता लाभ करैं, क्षत्ताओंका कार्य राजाओंका प्रतिहारी होना तथा सुरा और मद्यका निकालना है ॥ २४३ ॥ वर्धक चौरादिको दंड देने, उनके शिर मूंडने, तथा पाप कर्मियोंके हाथ पैर आदिके छेदन करनेका काम करैं, मल्ल और चूर्णकर घोडे और हाथी तथा मृग पक्षियोंकी परिचय में नियुक्त रहैं ॥ २४४ ॥ राजाओंकी सेवा तथा शुद्धान्तः पुरकी रक्षाका कार्य करैं, प्रेष्य आगे चलनेका काम करैं, मल्ल शूर शस्त्रमें निपुणता लाभ करैं ॥ २४५ ॥ तन्तुवाय तन्तुकार्य बुननेका काम करैं, मत्स्यजीवी जाल बुननेका काम करैं, कर्मार (चमार) चर्मका काम करैं, रजक धोनेका काम करैं, यामिक क्रूर कर्म करैं अर्थात्-राजाज्ञासे छेदन भेदन करैं ॥ २४६ ॥

ग्रामरक्षो दुर्गरक्षो नाविको मांसविक्रयी ॥ शैलूषो गारुडी गाता नटो रज्ज्वादिकर्मकृत् ॥ २४७ ॥ वेणुको गूढचारश्चेत्यादिकर्मा च भाण्डकः ॥ चाण्डालो मृतजीवी स्याच्चर्मणां रंजकोऽपि हि ॥ २४८ ॥

ग्रामरक्षक ग्रामकी रक्षाको करै, दुर्गरक्षक दुर्गरक्षा करै, नाविक नावका कर्म करै, मांसका बेचनेवाला, शैलूष (नाटयकर्ता) गारुडी (सर्पके विष उतारनेके मंत्रोंका ज्ञाता (गाता) ऊंचे स्वरसे शब्द करके जगानेवाला) नट यह स्वनामानुसार कार्य करैं, रज्जु आदि कर्मोंका करनेवाला ॥ २४७ ॥ वेणुक (बांसके कर्म करनेवाला) गूढचारी और भाण्डक यह भी स्वनामानुसार कार्य करैं, चाण्डाल मृत पुरुषके वस्त्र ग्रहण करैं और चमडा रंगनेका काम करैं ॥ २४८ ॥

स्नायुनिष्कासनः शूरः प्रेष्यो राज्ञां पुरःसरः ॥ मृतवस्त्रपरीधानो ग्रामरक्षो बहिश्चरः ॥ २४९ ॥ परिचर्याकरश्चारो व्याधश्च मृगपाचकः ॥ ग्राम्यकुक्कुटवाराहक्रयविक्रयजीविनः ॥ २५० ॥ रज्जुकृत्तन्तुवायश्च तन्तुकृत्काष्ठजीविनः ॥ तृणपुष्पफलाहर्ता तथैवोद्यानसेवकः ॥ २५१ ॥ इत्यादिकर्मसंप्रोक्ता इत्थं प्राग्धर्मिणोऽखिलाः । विधवा एककल्पाश्चेद्भिक्षुक्यः सूत्रकारिकाः ॥ २५२ ॥ सूत्रचित्रकरा वासःकौशेयादिष्वनेकधा ॥ सूपकार्यश्च सैरन्ध्र्यो गृहक्षेत्रादिरक्षकाः ॥ २५३ ॥ नानास्वयोगवाणिज्यवृत्तयो जीवितावधि ॥ सुशीलाः स्वैरिणीदूत्यो नर्तक्यो भगजीविकाः ॥ २५४ ॥

शूर स्नायुनिकालनेका काम करैं, प्रेष्य राजाके आगे गमन करैं, निकृष्टग्राम रक्षक मृतक पुरुषोंके वस्त्र पहरें, और ग्रामसे बाहर विचरैं॥२४९॥चार गमनागमन रूपसे परिचर्या करैं व्याध मृगोंके पाचनका काम करैं, तथा ग्रामसूकर: वनके सूकरके क्रयविक्रयसे आजीविका करैं ॥ २५० ॥ रज्जुकृत् और तन्तुवाय यह सूत बुननेका रस्सी बनानेका काम करैं, काष्ठजीवी काष्ठकी वस्तुएँ बना कर आजीविका करैं, उद्यानसेवक (माली) बगीचेसे तृण पुष्प फलादि स्वामीके पास लेजानेका काम करैं ॥ २५१ ॥

पतिव्रता विधवा, भिक्षुकी तथा सुतकातनेवाली ॥ २५२ ॥ यह सूत रंगै, तथा कौशेय वस्त्रोंपर अनेक प्रकारकी चित्रकारी करैं, सूपकारिणी रसोई बनावैं और सैरंध्री घर क्षेत्रादिकी रक्षा करैं ॥ २५३ ॥ इस प्रकार अपने जीवनके लिये और भी अनेक वाणिज्यवृत्ति करैं स्त्रियें सुशीला उपरोक्त रीतिसे रहैं, अन्यथा स्वैरिणी (कुल्टा) दूती, नर्तकी भगजीविनी होकर निर्वाह करती हैं ॥ २५४ ॥

इत्याद्यनेककर्मिण्य एवं सृष्टिरिहेशतुः ॥ आद्येभ्योऽथ द्वितीयास्तु चत्वारिंशत्तथाष्ट च॥२५५॥तावन्त एव चाद्यासु द्वितीयेभ्यश्च जज्ञिरे। द्वितीयेभ्यो द्वितीयासु द्वात्रिंशदधिकं स्मृतम् ॥ २५६ ॥ एवं तृतीया चाद्यासु द्वितीयैरपि संयुताः। मिलितास्तु चतुश्चत्वारिंशदग्र्यं शतद्वयम् ॥ २५७ ॥ केचिन्मातृकुलाचाराः केचिज्जनकवृत्तयः ॥ संकीर्णवृत्तयश्चान्ये तथा सन्निधिवृत्तयः ॥ २५८ ॥

इत्यादि निकृष्टकर्मा स्त्रियोंकी अनेक वृत्ति हैं इस प्रकार यह ईश्वरकी सृष्टि है ७१। ७४ श्लोकोंमें कहे चार वर्णोंसे चार चार पुत्र एक एकके द्वारा बारह भेदवाले होते हैं इन बारहों द्वारा अनुलोम प्रतिलोमके भेदसे ४८ अडतालिस प्रकारके होते हैं, आद्यवर्णोंका दूसरोंके साथ संयोग होनेसे संतान ४८ प्रकारकी होती है ॥ २५५ ॥ तथा इतनेही पहिलियोंमें दूसरोंसे सन्तान भेद प्रगट होते हैं, दूसरियोंसे दूसरियोंमें ३२ भेद होते हैं।।२५६॥ इसीप्रकार तीसरी पहिलियोंमें तथा दूसरियोंसे संयुक्त होकर दोसौ चवालिस भेदवाली सन्तति प्रगट करती है ॥ २५७ ॥ इनमें कोई माताके कुलके आचारवाले कोई पिताकी आजीविकावाले कोई संकीर्ण वृत्तिवाले और कोई अपने समीपीकी वृत्तिवाले होते हैं ॥ २५८ ॥

तृतीयेभ्यश्चतुर्थाश्च तेभ्यः पंचमषष्ठकाः ॥ एवं नानाविधा लोके मिथोजीवनवृत्तयः ॥ २५९ ॥ तेषां नामानि सर्वाणि न कश्चिद्वेदितुं क्षमः ॥ यत्र ग्रामे यत्र देशे जातयो याः कथंचन ॥ २६० ॥ वेत्तुं शक्यास्तथा ताभिर्व्यवहार्यक्रमादिति ॥ इति जातिविवेकोऽयं यथाजन्मे निरूपितः ॥ व्यवहाराद्यथा विष्णुः सृष्टौ विविधकर्मभिः ॥ २६१ ॥

तीसरोंसे चौथे उनसे पांचवें छठे इस प्रकारसे लोकमें संकीर्णतासे अनेक प्रकारकी आजीविका करते हैं ॥ २५९ ॥ उन सबके नाम जाननेको कोई समर्थ नहीं है जिस ग्राम या देशमें जो कुछ जातियें है ॥ २६० ॥ वह २ सब उनके व्यवहारसे जानी जाती हैं इस प्रकार यह मैने यथायोग्य जातिका विवेक निरूपण किया, जिस प्रकारसे भगवान् विष्णुमें सृष्टिमें विविध कर्म और व्यवहार निरूपण कियेहैं २६१॥

अथ म्लेच्छजातीनां विशेषलक्षणम् ॥

(उक्तं पाद्मे सृष्टिखण्डे)

अब म्लेच्छ जातियोंका विशेष लक्षण कहते हैं, पद्मपुराणके सृष्टि खण्डमें कहा है-

ततस्तार्क्ष्यसुवाचेदं मुनिर्ब्रह्मवधे भयात् ॥ उद्धमैतान्सविप्रांश्च म्लेच्छानेतान्समंततः ॥ २६२ ॥

उस समय ब्रह्मवधके भयसे गरुडजीसे मुनिने कहा इन समस्त म्लेच्छोंको ब्राह्मणोंके सहित आप वमन कर दीजिये अर्थात्-उगल दीजिये ॥ २६२ ॥

वनेषु पर्वतान्तेषु दिक्षु तान्पतगेश्वरः ॥ उद्वाम ततः शीघ्रं दोषज्ञः पितुराज्ञया ॥ २६३ ॥ ततः सर्वेऽभवन्व्यक्ता अकेशाः श्मश्रुवर्जिताः ॥ यवना भोजनप्रीताः किंचिच्छ्मश्रुयुताश्च ये ॥२६४॥ अग्नौ च नग्नकाः पापा दक्षिणे श्यामवाचकाः ॥ घोराः प्राणिवध प्रीता दुरात्मानो गवाशिनः ॥ २६५॥ नैर्ऋत्ये कुर्वदाः पापा गोब्राह्मणवधोद्यताः ॥ खर्पराः पश्चिमे पूर्वे निवसन्ति च दारुणाः ॥ २६६ ॥

तब गरुडजीने पिताकी आज्ञासे पर्वत तथा दिशाओंमें शीघ्रतासे उन म्लेच्छोंको उगल दिया ॥२६३॥वे सब शिरके बाल और मूछोंसे रहित होकर निकल पडे उनमें भोजनमें बडी प्रसन्नतावाले यवन कुछ एक श्मश्रुओंके रखनेवाले हैं ॥ २६४ ॥ यह अग्निकोणमें नग्नकनामवाले पापाचरणवाले हैं दक्षिण में श्यामनामसे कहे जाते हैं यह महाघोर स्वभाववाले प्राणियोंके वधमें प्रसन्न होनेवाले दुरात्मा गोमांस-भोजी हैं ॥ २६५ ॥ नैर्ऋत्यमें कुर्वत नामसे यह पापशील गोब्राह्मणोंके वधमें उद्यत रहते हैं, पश्चिम पूर्वमें खर्पर नामसे विख्यात यह दारुण निवास करते हैं ॥ २६६ ॥

वायव्ये तु तुरुष्काश्च श्मश्रुपूर्णा गवाशिनः ॥ अश्वपृष्ठसमारूढाः प्रयुद्धेष्वनिवर्त्तिनः ॥ २६७ ॥ उत्तरस्यां च गिरयो म्लेच्छाः पर्वतवासिनः ॥ सर्वभक्षा दुराचारा वधबन्धरताः किल ॥ २६८ ॥ ऐशान्यां निरयाः सन्ति कर्तॄणां वृक्षवासिनः ॥ एते म्लेच्छाः स्थिता दिक्षु घोरास्ते शस्त्रपाणयः ॥ २६९ ॥ एषां च स्पर्शमात्रेण सचैलो जलमाविशेत् ॥ एतेषां च कलौ देशेऽप्यकाले धर्मवर्जिते ॥ २७० ॥

वायव्यमें तुरुष्क नामसे विख्यात दाढीसे पूर्ण गोभक्षण करते निवास करते हैं, घोडोंपर चढनेवाले और युद्धसे निवृत्त न होनेवाले हैं ॥ २६७ ॥ उत्तर पर्वतोंके निवासी म्लेच्छ सर्वभक्षी दुराचारी वध-बंधमें रत रहते हैं ॥ २६८ ॥ ईशान दिशाके रहनेवाले मारकाट करनेमें रत वृक्षोंके नीचे रहतेहैं यह म्लेच्छ इस दिशाओंके निवासी शस्त्रधारी वनपर्वतोंमें निवास करते हैं ॥ २६९ ॥ इनके स्पर्शमात्रसे वस्त्रों-सहित जलमें स्नान करै जिस समय कलिकी प्रवृत्ति विशेष होगी और देश धर्महीन होगा ॥ २७० ॥

संस्पर्शं च प्रकुर्वन्ति वित्तलोभात्समंततः ॥
म्लेच्छास्तान्मोचयित्वा तु क्षुधया परिपीडितान् ॥ २७१ ॥

तब धनके लोभसे लोग इनका सब प्रकारसे स्पर्श करेंगे और क्षुधासे पीडित हुए म्लेच्छ ही इस कष्ट से इनको छुडानेमें समर्थ होवेंगे ॥ २७१ ॥

अथ मानवजातिषु दैत्यादिचिह्नान्याह-तत्रैव ।

तार्क्ष्यस्योद्गमितानां च अन्येषां गोत्रवासिनाम् ॥
कुलजाताः सदा दैत्या येषां शृण्वन्तु कारणम् ॥ २७२ ॥

अत्र मनुष्य जातिमें दैत्योंके चिह्न कहते हैं-वहीं लिखा है, कि अन्य गोत्रवासी जनोंको जो गरुडजीने उगला उनमें जो दैत्यकुल हुए उसका कारण सुनो ॥ २७२ ॥

दुर्गतिं च मृता यान्ति द्विजस्त्रीशिशुघातिनः ॥ गवाशिनो दुरात्मानो ह्यभक्ष्यभक्षणे रताः ॥ २७३ ॥ कीटा वान्तं गते तेषां तरुजन्म पिपीलिकाः ॥ न मंत्रेषु न देवेषु कल्पन्ते ते सुरद्विषः ॥ २७४ ॥

द्विज स्त्री और बालकोंके घात करनेवाले मरकर दुर्गतिको प्राप्त होते हैं, वे दुरात्मा गोभक्षी और अभक्ष्य भक्षणमें प्रीतिवाले ॥२७३॥ अन्तमें कीट पतंगकी गतिमें जाते अर्थात् तरु चैंटी आदिमें उनका जन्म होता है वे देवद्वेषी मन्त्र देवता किसीको माननेवाले नहीं होते ॥ २७४ ॥

अग्रजाः सहजास्तेषां सदृग्भ्यो ग्रामवृत्तयः ॥ लोमकेशाः प्रजाकामाः क्रव्यभक्ष्यरता भुवि ॥ २७५ ॥ साहसाच्च व्रतं दानं स्नानयज्ञादिकं च यत् ॥ मत्स्यमांसादिषु प्रीता मृषावचनभाषिणः ॥ २७६ ॥ सदाकामाः सदालोभाः सदाक्रोधमदान्विताः वधबंधात्ततोद्वेगाद्-द्यूतसंगीतसंप्रियाः ॥ २७७ ॥ कुभृत्याः कुजनप्रीताः पूतिगर्ह्यरता नराः ॥ न देवेषु न वित्तेषु न धर्मश्रवणेषु च ॥२७८॥ स्तोत्रमंत्रादिके पुण्ये यथाकार्येष्वनिश्चयाः ॥ बहुरोगा ह्यरोगाश्च बहुरूपपरिच्छदाः॥२७९॥

उनमें पूर्वसेही स्वभावसें ग्रामवृत्ति होती है यह एक सरीखे होते हैं ये लोम केशोंसे युक्त संतानकी कामनावाले मांस भक्षणमें निरत होते हैं ॥ २७५ ॥ व्रत दान स्नान और जो यज्ञादिक हैं उनमें इनका द्वेष होता है, मत्स्य मांसमें प्रेम करनेवाले साहसी नित्य मिथ्या वचन बोलनेवाले ॥ २७६ ॥ सदा काम चेष्टावाले, सदा लोभी, सदा क्रोधसे युक्त वध, वन्ध, उद्वेग, जुआ, और गानेमें अनुरागवाले ॥ २७७॥ कुभृत्य, खोटेजनोंमें प्रेम करनेवाले, अपवित्र तथा निंदित कर्मोंमें रत, न देवताओंमें न वित्तमें न धर्म श्रवणमें ॥ २७८ ॥ तथा पुण्यदायक स्तोत्र मन्त्रादिमें निश्चय न रखनेवाले कार्यमें निश्चय न माननेवाले वहुरोगी, निरोगी तथा अनेक प्रकारके रूप रखनेवाले ॥ २७९ ॥

नरजातिषु दैत्यानां चिह्नान्येतानि भूतले ॥ न जानन्ति परं लोकं न गुरुं स्वं न चापरम् ॥ २८० ॥ गर्भाभरणमिच्छंति नातिथिं न गुरून्द्विजान् ॥ न देवं न सुतं गोत्रं न मित्रं न च बांधवम् ॥२८१॥ स्वप्ने दानं न जानन्ति भक्ष्यगात्रपरिच्छदम् ॥ गोपायन्ति धनं य-

स्मात्ते यक्षा नररूपिणः ॥ २८२ ॥ विना पीडां वपुं किञ्चिन्न दद-
न्ते च राजनि । ते यक्षा दुर्गतिस्थाश्च परार्थे भारवाहकाः ॥ २८३ ॥

भूलोकमें यह मनुष्योंमें दैत्योंके चिह्न जानने, जो परलोक गुरु और अपना पराया नहीं मानते ॥ ॥ २८० ॥ जो केवल गर्भ और आभरणकी इच्छा करते हैं, अतिथि गुरु ब्राह्मण देवता पुत्र गोत्र मित्र बन्धु इनके लिये॥२८१॥स्वप्नमें भी दान देना नहीं जानते, भक्षणमात्र अन्न और पहरने मात्र वस्त्र रखतेहैं और धनको बडी कृपणतासे जोडते हैं वे नररूपी यक्ष हैं ॥ २८२ ॥ जो विना पीडाके राजाको किंचित् धन भी नहीं देते हैं वे भी यक्ष दुर्गतिमें स्थित होते हैं मानो वे पराये निमित्त भार वहन करते हैं॥२८३॥

प्रेतानां लक्षणं यद्वा सर्वलोकविगर्हितम् ॥ स्त्रीणाञ्च पुरुषाणाञ्च शृ-
णुष्वैकमना मयि ॥ २८४ ॥ मलपंकधरा नित्यं सत्यशौचविवर्जिताः
दंतकुंतलवस्त्राणां वपुषा मलिनास्तथा ॥२८५॥ गृहपीठादिपात्राणां॥
सकृच्छौचं न रोचते ॥ न पश्यन्ति सुखं स्त्रीणां विशन्ति कानने
द्रुतम् ॥ २८६ ॥ विरसोच्छिष्टपूतीनां भक्षणेऽभिरता भुवि ॥ अन्न-
पानं च शयनमंधकारेषु रोचते ॥ २८७ ॥ कदाचिच्छुक्लतां नेति क-
श्चिद्वा शुचितां तनौ ॥ लक्षणं नरलोकेषु प्रेतानामीदृशं किल॥२८८॥

अब सब लोकमें निन्दित स्त्री और पुरुषोंमें जो मानो प्रेत ही हैं उनके लक्षण मुझसे एकमन होकर सुनो ॥ २८४ ॥ जिनका शरीर सदा मैला कीचमें सना रहता है, जो सदा सत्य और शौचसे रहित हैं, जिनके दांत बाल वस्त्र और शरीर मैलसे भरे हैं ॥ २८५ ॥ घरकी चौकी आदि पात्रोंको जो एकवार भी स्वच्छ नहीं करते, जिन्होंने कभी स्त्रीका सुख नहीं देखा, जो सदा वनोंमें विचरते हैं ॥ २८६ ॥ वासी जूंठा दुर्गन्धियुक्त अन्नके भक्षणमें प्रेम करते हैं, जिनको अंधेरेमें अन्नपान और शयन रुचता है ॥२८७॥ जिनको कभी शुक्लता, स्वच्छता, वा श्वेत वस्त्रोंका धारण वा कभी शरीरमें शुचिता नहीं होती, यह मनुष्यलोकमें साक्षात् प्रेतोंके लक्षण हैं ॥ २८८ ॥

हिताहितं न जानन्ति मित्रामित्रं गुणागुणम् ॥ पापपुण्यादिकं
स्थानं स्नानं देवद्विजार्चनम् ॥ २८९ ॥ अरिमित्रमुदासीनं न
विन्दन्ति स्वभावतः ॥ मर्त्यस्थाः पशवस्ते च ज्ञायन्ते धीरसंमतैः ॥
॥ २९० ॥ बुद्ध्या हीना ह्यसद्भावास्ते भ्रमन्ति मृषा भुवि ॥ यक्षरूपा
नरास्ते च सर्वकर्मबहिष्कृताः ॥ २९१ ॥ एषां भेदं प्रवक्ष्यामि लक्ष-
णं धरणीतले ॥ विजाता मर्त्यलोकेषु पापस्यैवानुरूपतः ॥ २९२ ॥

जो हित अहित मित्र अमित्र गुण अगुण पाप पुण्यादिके स्थान स्नान देव ब्राह्मणकी पूजाको नहीं जानते ॥ २८९ ॥ जो स्वभावसे ही शत्रु मित्र उदासीनको नहीं जानते, ऐसे मनुष्य इसलोकमें पशुही

समझने चाहिये ऐसी धीरोंकी सम्मति है ॥ २९० ॥ जो मनुष्य बुद्धिको तिलाञ्जलि दिये निष्प्रयोजन अर्थात् व्यर्थही पृथिवीमें विचरते हैं वे मनुष्य सब धर्मोंसे बहिष्कृत यक्षरूप जानने ॥ २९१ ॥ पृथिवी-तलमें इनके लक्षण और भेद तुमसे कहता हूं यह मर्त्यलोकमें पापके अनुसारही जन्म पाये हुए हैं ॥२९२॥

मलीमसं भुव्यतथ्यं नागरं छलरूपिणम् ॥ विघसादिप्रभोक्तारं काकमाहुर्मनीषिणः ॥ अभक्ष्ये निरताः पापाः कुक्कुराः पूतिसंप्रियाः ॥ २९३ ॥ प्रवृत्ताः सर्वगुह्येषु भये भक्षन्ति जीवने॥भूम्यां स्वादमया मीनाः संभवाश्च सुरद्विषः ॥ २९४ ॥ प्रगृह्य च ततो ग्रास्ते म्लेच्छान्नभक्षणप्रियाः ॥ विशेषेण करीणाञ्च तथा चरणयोधिनाम् ॥ २९५॥ पोषणे भक्षणे प्रीताः पूतिगर्ह्येषु साधुषु ॥ पर्वते च रणे वह्नौ काष्ठसंचयसंग्रहे ॥ २९६ ॥

जो इस जगतमें महामलीन रहते हैं, जो वंचक वेप बनाये चतुरता प्रकाश करते हैं, विघस (जूंठे) अन्नके खानेवाले होते हैं वे साक्षात् काग हैं, जो पापी अभक्ष्य भक्षणमें रत दुर्गन्धियुक्त अन्नके खानेवाले हैं वे मनुष्योंमें कुत्ते हैं ॥ २९३ ॥ जो सब गुह्य स्थानोंमें प्रवृत्त होकर जीवनके निमित्त भयसे अभक्ष्य भक्षण करते हैं, वह देवद्रोही जन साक्षात् मछली हैं उनका दैत्योंसे जन्म है ॥ २९४ ॥ जो म्लेच्छोंके प्रिय अन्नग्रहण करनेवाले तथा म्लेच्छोंके भक्षणके पदार्थोंमें प्रेम करनेवाले विशेषकर हाथों और चरणोंसे युद्ध करनेवाले ॥ २९५ ॥ उन्हींके पोषण भक्षणमें प्रीति करनेवाले हैं, निन्दित साधुओंमें प्रेम करनेवाले हैं पर्वत गमन, युद्ध, अग्निदाह, काष्ठ सञ्चयमें जिनका मन सदा लगता है, २९६॥

विज्ञेयास्ते सदा म्लेच्छाः क्षत्रियाणां भयाकुलाः॥ लोकानां नष्टधर्मे च सत्यशौचविवर्जिते ॥२९७॥ कुलीनानां तदा म्लेच्छा भविष्यन्ति च दस्यवः ॥ तेषां संसर्गतोऽन्ये च संबंधादन्नभोजनात् ॥ २९८ ॥ मैथुनात्तस्य योषायां तद्भावं तु व्रजन्ति ते ॥

अथ म्लेच्छानां विशेषलक्षणम्, शिवपुराणे धर्मसंहितायाम् ।

सगरः स्वां प्रतिज्ञां तु गुरोर्वाक्यं निशम्य च ॥ २९९ ॥ धर्मं जघान तेषां वै केशान्यत्वं चकार ह ॥ अर्धं शकानां शिरसो मुण्डं कृत्वा विसर्जिताः ॥ ३०० ॥

वह क्षत्रियोंके भयसे व्याकुल म्लेच्छही जानने, लोकोंके धर्मनष्ट होनेसे तथा सत्यशौचके रहित होनेसे ॥ २९७ ॥ कुलीनोंमें ही म्लेच्छ और दस्यु हो जाते हैं, दूसरे जन उनके संसर्ग और उनके भोजन करनेसे ॥ २९८ ॥ तथा उनकी स्त्रियोंमें मैथुनसे उसी भावको प्राप्त हो जाते हैं । अब म्लेच्छोंके विशेष लक्षण कहते हैं, शिवपुराणकी धर्मसंहितामें लिखा है-राजा सगरने वसिष्ठजीके वचनके गौरव और अपनी प्रतिज्ञासे ॥ २९९ ॥ उन क्षत्रियोंका धर्म नष्ट कर दिया, और उनके बालोंकी व्यवस्था करदी, शकोंका तो आधा शिर मूँडकर छोड दिया ॥ ३०० ॥

यवनानां शिरः सर्वं काम्बोजानां तथैव च ॥ पारदा मुण्डकेशाश्च पह्लवाः श्मश्रुधारिणः॥ निःस्वाध्यायवषट्कारः कृतास्तेन महात्मना॥

(श्रीभागवते नवमस्कन्धे)

सगरश्चक्रवर्त्यासीत्सागरो यत्सुतैः कृतः ॥

यस्तालजंघान्यवनाञ्शकान्हैहयबर्बरान् ॥ ३०२ ॥

यवन और काम्बोजोंका सब शिर मुडवा दिया, और पारदोंके भी बाल मुडवा दिये, पहलवोंकी डाढी रहने दी इसप्रकार महात्मा सगरने इनको स्वाध्याय और वषट्कारसे रहित कर दिया ॥ ३०१ ॥ श्रीमद्भागवतके नवमस्कन्धमें लिखा है कि राजा सगर बडा प्रतापी चक्रवर्ती था जिसके पुत्रोंने यह सागर बनाया है उसने तालजंघ, यवन, शक, हैहय, बर्बर इनको ॥ ३०२ ॥

नावधीद्गुरुवाक्येन चक्रे विकृतवेषिणः ॥ मुण्डाञ्श्मश्रुधरान्कांश्चिन्मुक्तकेशार्द्धमुण्डितान् ॥ अनन्तर्वाससः कांश्चिदबहिर्वाससोऽपरान्॥

अथ पद्मे तुरुष्कोत्पत्तिमाह-भूम्युत्तरभागे यौवनावस्थाकामस्तुरुं प्रति ।

ययातिरुवाच-

मदीयां त्वं जरां गृह्य यौवनं देहि पुत्रक ॥

तुरुरुवाच-

शरीरं प्राप्यते पुत्र पितुर्मातुः प्रसादतः ॥ ३०४ ॥

गुरुके वचनसे मारा नहीं किन्तु उनके वेष विकृत करदिये, किन्हींके केश सर्वथा मूंड दिये किन्हींकी डाढी रहने दी, किन्हींके मुक्तकेश कर दिये, किन्हींके आधे वाल मुंडदिये ॥ ३०३ ॥ किन्हींको बाह्य-वस्त्रधारी किया किन्हींको एक भीतर कच्छ और ऊपरसे आच्छादक वस्त्रधारी किया ॥

अब पद्मपुराण भूमिखण्डके उत्तरभागसे तुरुष्ककी उत्पत्ति कहते हैं यौवन अवस्थाकी कामनासे ययातिने तुरुसे कहा हे पुत्र तुम मेरा बुढापा ग्रहण करलो और अपनी युवावस्था मुझे देदो। तुरुने कहा, पिता माताके प्रसादसे पुत्रका शरीर प्राप्त होता है ॥ ३०४ ॥

पित्रोः शुश्रूषणं कार्यं पुत्रैश्चापि विशेषतः ॥ तस्माद्वाक्यं महाराज करिष्ये नैव तेन तु॥३०५॥ गुरोर्वाक्यं ततः श्रुत्वा तं शशाप रुषान्वितः ॥

ययातिरुवाच-

अवध्वस्तस्त्वयादेशो ममैवं पापचेतन ॥ ३०५ ॥ तस्मात्पापी भव त्वं च सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ शिवशास्त्रविहीनश्च वेदवेदाङ्गवर्जितः ३०७

विशेषकर पुत्रको पिता माताकी सेवा करनी चाहिये, न कि माताके भोगनेको युवावस्था दीजाय इससे मैं अपनी युवावस्था नहीं दूंगा हे महाराज ! मैं आपका वचन पालन नहीं करसकता ॥ ३०६ ॥

तुरुके वचन सुनकर राजाने क्रोधित हो उसको शाप दिया । ययातिने कहा हे पापी ! तूने यह हमारी आज्ञा जो नहीं मानी ॥ ३०६ ॥ इस कारण तू पापी सम्पूर्ण धर्मोंसे वाहर हो शिव शास्त्रसे हीन वेद-वेदांगसे रहित हो ॥ ३०७ ॥

सर्वाचारविहीनस्त्वं भविष्यसि न संशयः॥ ब्रह्मघ्नस्त्वं देवदुष्टः सुरापः सत्यवर्जितः ॥ ३०८ ॥ चण्डकर्मप्रकर्त्ता त्वं भविष्यसि न संशयः ॥ सुरालीनः सुरापीथो गोघ्नश्चैव भविष्यसि ॥ ३०९ ॥ दुष्कर्मा मुक्तकच्छश्च ब्रह्मद्वेष्टाऽशिवाकृतिः ॥ परदाराभिगामी त्वं महादुष्टश्च लंपटः ॥ ३१० ॥ सर्वभूतेषु दुर्मेधाः सत्त्वात्त्वं च भविष्यसि ॥ स्वगोत्रा रमणा नारी सर्वधर्मप्रणाशकः ॥ ३११ ॥

तू सम्पूर्ण आचरणोंसे हीन हो जायगा इसमें सन्देह नहीं, तू ब्रह्महत्यारा, देवद्रोही, सुरापान करनेवाला, सत्यसे वर्जित होगा ॥ ३०८ ॥ और संशय रहित तू उग्रकर्मोंमें, सुरामें लीन सुरा पीनेवाला गोघाती होगा ॥ ३०९ ॥ दुष्टकर्मा, कच्छ खुला हुआ, ब्रह्मद्रोही, अशिवमूर्त्ति, परदाराओंमें गमन करनेवाला, महादुष्ट और लम्पट होगा ॥ ३१० ॥ तथा सब प्राणियोंमें दुर्बुद्धि होकर सर्वभक्षी होजायगा अपने गोत्रकी स्त्रीमें रमण करैगा इससे तू सव धर्मोंका नाश करनेवाला होगा ॥ ३११ ॥

पुण्यज्ञानविहीनात्मा कुष्ठविच्च भविष्यसि ॥ तव पुत्राश्च पौत्राश्च ईदृशाश्च न संशयः ॥ ३१२ ॥ भविष्यन्ति ह्यपुण्याश्च मच्छापकलुषीकृताः ॥ तव वंशसमुद्भूतास्तुरुष्का म्लेच्छरूपिणः ॥ ३१३ ॥

(अन्यजात्युत्पत्तिमाह—ग्रन्थान्तरे)

ससर्ज योधान् रोमभ्यः शृंगेभ्योऽपि सहस्रशः ॥ निश्वासेभ्यः खुराग्रेभ्यः पुच्छाग्रेभ्यश्च वालधेः ॥ ३१४ ॥ विनिःसृता महायोधाः प्रगृहीतशरासनाः ॥ भक्षिता योगिनीवृन्दैर्योनिरंध्रसमुद्भवैः ॥ ३१५ ॥

पुण्य और ज्ञानसे विहीन तथा कुष्ठरोगसे आक्रान्त होगा इसीप्रकारके तेरे पुत्र पौत्र होंगे इसमें सन्देह नहीं ॥ ३१२ ॥ मेरे शापसे तुम्हारी सन्तान पुण्य रहित और कलुषित होगी, और तेरे वंशमें उत्पन्न हुए तुरुष्क म्लेच्छरूप होंगे ॥ ३१३ ॥ (ग्रन्थान्तरमें इन जातियोंमेंकी उत्पत्ति है) उस गौने अपने रोम, शृङ्ग, निश्वास, खुराग्र और पुच्छसे सहस्रों योद्धाओंको सृजन किया ॥ ३१४ ॥ वडे वडे योद्धा धनुष वाण ग्रहण किये प्रगट हुए और योनिरंध्रसे उत्पन्न हुई योगिनियोंने तिनको भक्षण किया ॥ ३१५ ॥

अथ राठोराः क्षत्रियाः प्राचीना एवेत्याह—

ब्रह्मवैवर्त्ते गणेशखण्डे-

भृगुः शंकरमूलेन सोमदत्तं जघान ह ॥ आययुः समरं कर्त्तुं कार्त्त-

वीर्यं निवार्य च ॥ ३१६ ॥ राठीयाः शतशश्चैव नरेन्द्राकृतयस्तथा। कृत्वा ते शरजालं च भृगुं चच्छदुरेव च ॥ ३१७ ॥

अब राठौर क्षत्रियोंका प्राचीनत्व वर्णन करते हैं, ब्रह्मवैवर्त पुराणके गणेशखण्डमें कहा है–

भृगुने शंकरमूलद्वारा सोमदत्तका वध किया वह समर करनेको आया था, कार्तवीर्यको निवारण करके जब समरको आया ॥ ३१६ ॥ उस समय सैकडो राठौर उस राजाके साथसे उन्होंने शरजालके द्वारा भृगुको आच्छादन करदिया इससे राठौरोंकी प्राचीनता सिद्ध है ॥ ३१७ ॥

अथ ज्ञातिबहिष्कृतं नरं शीघ्रं ज्ञातिमध्ये आनये-
दित्याह-स्कान्दे ।

ज्ञातित्यक्तो हि कुरुते पापं ज्ञातिविवर्जितः ॥ तत्पापं ज्ञातिबन्धूनां जायते मनुरब्रवीत् ॥ ३१८ ॥ ज्ञात्वापि विहितं कर्म ज्ञातिभिः परिवर्जितम् ॥ प्रायश्चित्ते पुनर्ज्ञातिमानयेन्मनुरब्रवीत् ॥ ३१९ ॥ ज्ञातित्यक्तं तु पुरुषं ज्ञातिमध्ये समानयेत् ॥ प्रायश्चित्तेन विधिना नोचेज्ज्ञातिं व्रजत्यपि ॥ ३२० ॥

अब जातिसे बाहर किये मनुष्यको शीघ्र ही जातिमें लेना चाहिये इस बातको स्कन्दपुराणसे कहते हैं–

जातिसे त्यागा हुआ मनुष्य जो फिर स्वच्छन्द होकर पाप करता है वह पाप ज्ञातिके लोगोंको लगता है ऐसा मनुने कहा है ॥ ३१८ ॥ जानकर जो कर्म छिपाया गया है इसीसे वह ज्ञातियोंद्वारा वर्जित किया गया, मनुजी कहते हैं कि प्रायश्चित्तसे उसको फिर जातिमें लेलेना चाहिये ॥ ३१९ ॥ जातिसे त्यागे हुए पुरुषको फिर जातिमें लेलेना चाहिये और उससे प्रायश्चित्त कराना चाहिये नहीं तो वह सदाको जाता रहैगा, जिसका प्रायश्चित्त विधान हो उसीको जातमें लेना अन्यथा वह सबको पतित करैगा ॥ ३२० ॥

अथ विवाहे वाहननियमः कथ्यते ।

ब्राह्मणस्य सितो वाजी पीतो वाजी नृपस्य च ॥ रक्तो वैश्यस्य वाजी स्याच्छ्यामो वाजी तु पद्भुवः ॥३२१॥ चतुर्णामेव वर्णानां यथावाहं तुरंगमम् ॥ अन्यासामिह जातीनां न वाहो वाहनं भवेत् ॥३२२॥ यानमारुह्य न श्रेष्ठमतिक्रामेत्कदाचन ॥ अतिक्रामेदपांक्तेयो व्रतमौद्दालकं चरेत् ॥ ३२३ ॥

अब विवाहोंमें वाहनका नियम कहते हैं, ब्राह्मणके लिये विवाहमें चढनेको श्वेत घोडा, राजाको पीला, वैश्यको लाल, और शूद्रको श्याम घोडा होना चाहिये ॥ ३२१ ॥ चारवर्णोंके जैसे घोडेके रंग कहे

१ वर्णसंकरजातिविवेकाध्यायमें यह श्लोक स्कन्दके नामसे लिखे हैं ।

हैं इस प्रकार संकर जातियोंका वाहन नहीं कहा है ।। ३२२ ।। वे दूसरी जातियें श्रेष्ठ वाहनपर न चढें जो वे इस बातको अतिक्रमण करैं तो उनको पंक्तिसे बाहर करदिया जाय और औद्दालक व्रत कराया जाय ।। ३२३ ।।

चतुर्वर्गचिन्तामणौ--

वरणार्थं यथा गच्छेदश्वारूढो भवेद्वरः ॥
पंचमेऽहनि निर्गन्तुं वडवायां समारुहेत् ॥ ३२४ ॥

चतुर्वर्ग चिन्तामणिमें लिखा है, जो वर घोडेपर चढकर विवाहके लिये आवे तो पांचवे दिन वहांसे निकलनेको घोडीपर चढै ॥ ३२४ ॥

वरणं नाम अष्टौ विवाहास्ते च चतुर्वर्णानामव मिश्रजातीनां न ।

अनुलोमप्रसूतानां षण्णां क्षेत्रोचितो हयः॥ विना निषादमेतेषां चतुष्पथमहोत्सवः ॥ ३२५ ॥ प्रतिलोमप्रसूतानामुच्यते वाहनान्यथ ॥ चाण्डालादिविवाहेषु नरो यानं स्ववर्त्मनि ॥ ३२६ ॥ क्षत्तरायोगवस्यापि खरो वाजिं विना तथा ॥ एतासां हि विवाहेषु स्वमार्गे वाहनं खरः ॥ ३२७ ॥

(वरण नाम विवाह जो आठ प्रकारके हैं सो यहां लेने, वह आठ प्रकारके ब्राह्म आदि विवाह चार वर्णोंमें ही हो सकते हैं, संकर जातियोंमें नहीं)

अनुलोम विधिसे उत्पन्न हुए छः संकरोंको घोडेकी सवारी हो सकती है, पर निषादके लिये अश्वके वाहनका निषेध है, निषादके विना इनका चतुष्पथ महोत्सव है ॥३२५ ॥ जो प्रतिलोम विधिसे उत्पन्न हुए हैं उनके वाहनोंको कहते हैं, चाण्डाल आदिके विवाहमें वे अपने मार्गमें नरयान ले जा सकते हैं ॥ ३२६ ॥ क्षत्ता और आयोगवको खरयानका अधिकार है घोडेका नहीं. इनके विवाहोंमें स्वमार्गमें खरयानही कहा गया है ॥ ३२७ ॥

वामीयानं मागधस्य वैदेहस्य क्रमेलकः ॥ अश्वयुक्तरथो यानं सूतस्य परिकीर्त्तितम् ॥ ३२८ ॥ अष्टादशसमूहेषु मणिकांस्योपजीविनः ॥ ये स्युस्तेषां विवाहेषु यानं वृषभमुच्यते ॥ ३२९ ॥न शिरोवेष्टनं तेषां नातपत्रं न चामरम् ॥ रंजितो विविधैर्वर्णैर्हयः काष्ठविनिर्मितः ३३०॥ क्रोडीकृत्ताः स्वजातीयैर्नार्पिताः षट् स्ववर्त्मनि ॥ विवाहे स्वर्णकारोऽपि तद्वद्गच्छेत्स्ववर्त्मनि ॥ ३३१ ॥

मागधको घोडी, वैदेहको क्रमेलक (ऊंट), सूतको अश्वयुक्त रथ यानका अधिकार है ॥ ३२८ ॥ अठारह समूहोंमें जो मणिकार कांसकार आदिक हैं, उनके विवाहोंमें वृषभका यान होना चाहिये ॥३२९॥

पर इन जातिके वरको पगडी (चीरा) चमर और छत्र लगानेका अधिकार नहीं है, हां काष्ठका बनाया हुआ घोडा अनेक वर्णोसे चित्रितकर संग ले चलैं ॥३३०॥ यह नापीत आदि छः अपनी २ जातियोंके साथ अपने मार्गमें स्वविषयमें प्रवृत्त हुए वर्त्ते, वरको गोदी लेकर चलैं। इसी प्रकार स्वर्णकारोंके भी विवाहका विधान है, वे अपने मार्गमें वरको गोदी लेकर चलैं ॥ ३३१ ॥

शकटं वृषसंयुक्तं वाहनं तैलयंत्रिणः ॥ पर्यंको वाहनं प्रोक्तं सूचिकस्य स्ववर्त्मनि ॥ ३३२ ॥ ईदृग्जातिषु सर्वासु स्वजातिस्कंधरोहणम् ॥

जात्यर्णवे–

अश्वगजरथोक्षाकं विवाहे वाहनं क्रमात् ॥ ३३३ ॥ संकीर्णानां विशेषास्तु गदिताः पूर्वसूरिभिः ॥ यं यं कृषिकृतं कर्म तत्तद्वाहनमुच्यते ॥ ३३४ ॥ रजकश्चर्मकारश्च नटो वुरुड एव च । कैवर्तो मेदभिल्लश्च वाहनं खर उच्यते ॥ ३३५ ॥

तेलीको बैलोंके छकडेके वाहनका अधिकार है और दर्जीको विवाहमें पर्यंकपर बैठना वही उसका वाहन है ॥ ३३२ ॥ इसप्रकारकी सब जातियोंमें अपनी जातिके कंधेपर चढकर विवाहमें जानेका अधिकार है, (जात्यर्णवमें लिखा है)–विवाहमें चार वर्णोका क्रमसे घोडा, हाथी, रथ और वृषभवाहन कहा है ॥ ३३३ ॥ संकीर्ण वर्णोका पूर्व विद्वानोंने इस प्रकार निरूपण किया है कि जो २ कृषि कर्ममें पशु उपयोगमें लावैं वही २ उनका वाहन है ॥ ३३४ ॥ धोबी और चमार नट वुरुड कैवर्त्त मेद भिल्ल इनकी सवारी गधा है ॥ ३३५ ॥

भिल्लानां वाहनमुष्ट्रमिति वा ॥ ३३६ ॥ रथकः शिल्पकश्चैव स्वर्णस्तेयी तथापरे ॥ वाहनं वाजिरित्युक्तं सर्ववर्णे वृषः स्मृतः ॥ ३३७ ॥

कहीं भीलोंका वाहन ऊंट भी लिखा है ॥३३६ ॥ रथ हांकनेवाला, शिल्पी स्वर्णस्तेयी तथा दूसरोंका वाहन अश्व कहा है, शेष वर्णोकी सवारी वृष है ॥ ३३७ ॥

पंथ, मत वा सम्प्रदाय ।

अभ्यागत–यह नाम एक प्रकारके साधुओंका हो गयाहै, जो जहां तहां ठौर कुठौर सब स्थानोंमें जीम लेते हैं, कहींपर यह लोग तेरहवींकी जो पत्तल निकाली जाती है उसके जीमनेवाले कहे जाते हैं।

अलखनामी वा अलेखिया–अलख अलख पुकारकर भीख मांगनेवाली एक सम्प्रदाय है, यह चोंचदार ऊंची टोपी पहनते हैं, कम्बलका लवादा पहनते हैं, कुछ सन्तोषीभी होते हैं।

अवधूत–यह शैवसम्प्रदायके संन्यासियोंका एक भेद है, यह लोग दक्षिणमें बहुत हैं, विभूति और रुद्राक्षकी माला धारण करते गेरुए वस्त्र पहिनते हैं, इस सम्प्रदायकी स्त्रियें अवधूतिनी कहाती हैं।

अतीत–यह एक शैवसम्प्रदायकी भिक्षुक विरक्त मंडली है,यह भी रंगे कपडे पहरते और नमो नारायण कहते हैं, इनमें कोई मरजाय तो दस नामियोंको जिमाते तथा भंडारा करते हैं।

परमहंस–जीव ब्रह्मको एक माननेवाली संन्यासी जनोंकी सम्प्रदाय है, यह ब्राह्मण होते हैं।

अकाली-अकाल पुरुषको माननेवाली सिक्खोंकी एक सम्प्रदाय है,पंजाबमें यह सम्प्रदाय मान्यदृष्टिसे देखी जाती है, यह काले कपडे पहिनते, शिरपर लोहेका चक्र लगाते, गोविन्दसिंह गुरुको अपना पूज्यपुरुष मानते हुए पांच ककार धारण करते हैं, यथा हाथमें लोहेका कडा १, कंघा २, कच्छ ३,कर्द४ (छुरा) और केश ५ (सब शिरपर बाल रखना) यह इनको मोक्षका साधन समझते हैं, देवीको पूजते झटका (अपने हाथसे वध कियेका) मांस खाते हैं यह लोग वीरभी होते हैं।

अघोरी-यह एक घृणितकर्मा बाबाजियोंका समुदाय है, एक प्रकारके यह लोग घोरी होते हैं, दुकान २ हठसे पैसा मांगते हैं, जो न दे उसके सामने मलमूत्र करदेते हैं, खा पी भी जाते हैं, ये लोग श्मशानोंमें रहते हैं, यंत्र मंत्र टोना जाननेका भी दावा करते हैं, कहते हैं यह पंथ किनारामजीका चलाया है।

अनन्तपन्थी-यह विचरणशील एक वैष्णवोंकी समुदाय है रायबरेली सीतापुरमें कुछ २ लोग पाये जाते है।

आकाशमुखी-यह एक शैव सम्प्रदायके साधू हैं, यह सदा अपना मुख आकाशको किये रहते है, इनकी नसें वैसेही रहजाती हैं, जैसा हाथ ऊपरको फैलानेवालेकी रहजाती हैं, उनका हाथ ऊपरको खडा रहजाता है, यह बाल बढाते तथा गेरुआ वस्त्र पहरते हैं।

आचारी-स्वामी रामानन्दजीके सम्प्रदायवाले आचारी कहाते हैं इनमें आचारी, संन्यासी, बैरागी, खाकी ऐसे चार भेद हैं इनमें आचारी तो ब्राह्मणही होते हैं, खाकी आदिमें दूसरे वर्ण भी मिलजाते हैं, आचारी लोग सदा ऊनी व रेशमी वस्त्र पीताम्बर आदि पहनते हैं, यह छूतछातका बडा परहेज रखते हैं, वे अपनेही हाथका भोजन करते हैं, किसीका स्पर्श भी नहीं करते, स्पर्श होतेही स्नान करते हैं, दूसरे वर्णके लोग यदि इनमें सम्मिलित हों तो वे इस रूपसे नहीं रह सकते।

आपापन्थी-खेडी जिलेके मुंडवा ग्राम निवासी मुन्नादास सुनारका चलाया यह एक पंथ है, मुन्नादासजीमें कुछ चमत्कार होगया था, इसीकारण बहुतसे लोग उनके शिष्य होगये१८३० संवत्के लगभग यह पंथ चला है, युक्त प्रदेशमें यह लोग कोई ८००० आठ सहस्र हैं।

कनफटा-यह गोरखनाथी सम्प्रदायके अन्तर्गत कालवेलिये वा जोगी कहाते हैं, गुरु गोरखनाथजी बडे प्रसिद्ध योगी हुए हैं गोरखपुरमें तथा नैपाल और हुगली जिला डमडमके इलाकेमें इनके प्रसिद्ध स्थान हैं।

कनीया जोगी-यह भी एक प्रकारके जोगी हैं, कनफटोंसे मिलते जुलते हैं, यह कहीं सर्प दिखाकर अपनी आजीविका करते हैं।

कवीरपंथी-महात्मा कवीरजीको कौन नहीं जानता उनके गम्भीर गवेषणासे पूर्ण निर्गुण भजनका स्वाद ऐसा कौन है जिसने न पाया हो, कवीरका एक दो पद प्रायः सभी पुरुषोंको याद निकलैगा, इस सम्प्रदायमें चारों वर्ण सम्मिलित हैं।

कर्ताभजा-यह बंगाल प्रान्तकी एक सम्प्रदाय है, इसके नेता सद्गोप वंशके अलंकार रामसरनपाल थे, कंचरापारा स्टेशनके समीप गोशवारामें इनकी जन्मभूमि थी यह अपनेको अदृश्य गुरुसे उपदेश प्राप्त हुआ कहते थे, इनके शिष्य मनुष्योंपर धर्म टैक्स बताते थे, और अबला जातिपर बहुत सहानुभूति रखते थे।

कष्टसंगी-यह जैनधर्मावलम्बी दिगम्बरी सम्प्रदायका एक भेद है, यह लकडीकी मूर्ति पूजते याककी पूंछका बूस बांधते हैं।

कालवेलिये—यह सर्पोंके पालनेवाले बीन बजाकर फिरनेवाले होते हैं, ये राजपूतानेमें कालवेलिये युक्तप्रदेशोंमें सपेरे कहाते हैं, भगवे कपडे पहनते कानोंमें मुद्रा पहनते हैं, गुरु गोरखनाथको मानते हैं।

कालूपन्थी—यह भी एक प्रकार कालूका चलाया पंथ है इसमें निकृष्ट जातिके लोग सम्मिलित हैं मेरठ जिलेमें यह लोग बहुत हैं अनुमानसे कोई तीन लाख संख्यामें होंगे।

कूका—यह एक नानकपंथी सम्प्रदाय है, यह श्वेत वस्त्र पहनते हैं, दिनमें तीनवार स्नान करते हैं, गुरु नानकजीके शब्दोंको ऊंचे स्वरसे पढते हैं, यह गृहस्थी हैं, सिक्खधर्मानुसार इनका विवाह होता है इनका आदिगुरु रामसिंह कहा जाता है, गांव तहणी जिला लुधियानामें इनका गुरुद्वारा है।

कौल—यह एक वाम मार्गका भेद है, यह तान्त्रिक रीतिसे देवीकी उपासना करते हैं, मद्य मांस मत्स्य मुद्रा मैथुन यह पांच वस्तु सार मानते हैं, परन्तु इनके आध्यात्मिक अर्थोंसे कुछ दूसराही रहस्य प्रगट होता है, तथा मद्यका अर्थ जिह्वाको उलटकर तालुमें लगाकर ब्रह्माण्डका रस पीना इत्यादि।

खाकी—यह भी एक भिक्षुक साधुओंका समुदाय है, शिरपर जटा मस्तकमें विभूति और सब शरीरमें खाक मलीरहती है, मूंजकी कौंधनी बांधते हैं।

गच्छ—यह एक प्रकारके कुमार रहनेवाले जैन धर्मियोंका समुदाय है, यह घूमते रहते हैं, धर्मशाला जैनाश्रमोंमें ठहर जाते हैं, खरतखाच्छ, तपगच्छ, कम्बलगच्छ, लोकगच्छ, पत्तनीर इनके भेद हैं, गान्धव यह गानेवालोंकी एक जाति प्रयागकी रस, गाजीपुर आदिमें पाई जाती है। अनरुख, अरख, रामसी, शाहीमल, हविन, पच, भैय्या, ऊधोमत, वहाजवन, वनाल, वतुरहा, भकवा, क्षत्री, गेंदवारा, कनौजिया, कस्मीरी, खोदारी, मनहो, नमाहारिन, नामिन, खीसी, रामसन, रावत, सहमल, सलीयाली गाही, सोमल आदि इनके गोत्र हैं।

समाजी—यह दयानन्द सरस्वतीका चलाया एक सम्प्रदाय है, रूपान्तरसे यह आर्य समाज वा दयानन्दी पंथ कहाता है, इसमें ३६ जाति तथा ईसाई मुसलमानादि समस्त जातिके लोग सम्मिलित होसकते हैं, चार मिनटमें मुसलमान, ईसाई आर्य हो जाता है, यह लोक तीर्थ, श्राद्ध, जातिकी जन्मसे व्यवस्था, अवतार, ईश्वरकी प्रतिमा, अर्चा, चौकाछूत आदि कुछभी नहीं मानते, केवल विधवाविवाह नियोग एक स्त्रीके ग्यारह पति मानते हैं, वे पढभी वेद चिल्लाते हैं, कुछ काम अच्छेभी करते हैं, स्कूल कालिज कन्याका पाठशाला खोलते हैं पर शिक्षा वही सत्यार्थप्रकाशी देते हैं।

दादूपन्थी—महात्मा दादूजीका चलाया हुआ पंथ इसमें गृहस्थी भी होते हैं, इस पंथमें सुन्दरदास नामा एक अच्छा कवि हुआ है।

नानकपन्थी—गुरु नानकजीका चलाया एक पंथ है इसमें पंजाबी खत्री विशेष रूपसे सम्मिलित हैं इस सम्प्रदायके सब शिष्य कहाते हैं, यह पहले सब सनातन धर्मावलम्बी थे, अब जबसे इनमेंसे एक सिंह सम्प्रदाय निकला है, तबसे इसमें बहुत भेद होगया है, सिंह समाजवाले अपनेको हिन्दू कहनेसे इनकार करते हैं, एक प्रकारसे समस्त पंजाबही शिष्यधर्मा कहा जा सकता है, यह ग्रन्थ साहबको पूजते हैं।

राधास्वामी—यह राधास्वामीके द्वारा तथा उनके शिष्य राय शालिग्राम पोस्टमास्टरके द्वारा प्रचार किया हुआ एक नवीन मत है, यह अपना भेद गुप्त रखते हैं, शान्तिमें रहना पसन्द करते हैं, गुरुकी उच्छिष्ट प्रसादी चिट्ठीमें बन्द होकर शिष्योंपर पहुँचती है, यह मद्य मांसका किसी प्रकार भी सेवन नहीं करते।

इन सबके सिवाय चार्वाक, बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त अनेक सम्प्रदाय इस भारतमें विद्यमान हैं, जिनके सिद्धान्त वर्णनकी इस पुस्तकमें आवश्यकता नहीं है, वह दूसरे ग्रन्थमें लिखा जायगा।

जातिविवेककी पुस्तकोंमें चौंसठ कला देखी जाती हैं, इससे हम यहां चौंसठ कलाओंके नाम लिखते हैं, शैवतंत्रमें इसप्रकार लिखा है ।

१ गीतम् २ वाद्यम् ३ नृत्यम् ४ नाट्यम् ५ आलेख्यम् ६ विशेषकच्छेद्यम् ७ तण्डुलकुसुमबलिविकाराः ८ पुष्पास्तरणम् ९ दशनवसनांगरागाः १० मणिभूमिकाकर्म ११ शयनरचनम् १२ उदकवाद्यमुदकघातः १३ चित्रयोगाः १४ माल्यग्रथनविकल्पाः १५ शेखरापीडयोजनम् १६ नेपथ्ययोगाः १७ कर्णपत्रभंगाः १८ सुगन्धयुक्तिः १९ भूषणयोजनम् २० ऐन्द्रजालम् २१ कौचुमारयोगाः २२ हस्तलाघवम् २३ चित्रशाकापूपभक्ष्यविकारक्रियाः २४ पानकरसरागासवयोजनम् २५ सूचीवायकर्म २६ सूत्रक्रीडा २७ वीणाडमरुकवाद्यानि २८ प्रहेलिकाः २९ प्रतिमाला ३० दुर्वचनयोगाः ३१ पुस्तकवाचनम् ३२ नाटकाख्यायिकादर्शनम् ३३ काव्यसमस्यापूरणम् ३४ पट्टिकावेत्रबाणविकल्पाः ३५ तर्ककर्माणि ३६ तक्षणं ३७ वास्तुविद्या ३८ रूप्यरत्नपरीक्षा ३९ धातुज्ञानम् ४० मणिरागज्ञानम् ४१ आकारज्ञानम् ४२ वृक्षायुर्वेदयोगाः ४३ मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधिः ४४ शुकसारिकाप्रलपनम् ४५ उत्सादनम् ४६ केशमार्जनकौशलम् ४७ अक्षरमुष्टिकाकथनम् ४८ म्लेच्छितकुतर्कविकल्पाः ४९ देशभाषाज्ञानम् ५० पुष्पशकटिकानिर्मितज्ञानम् ५१ पंचमातृकाधारमातृका ५२ संवाच्यम् ५३ मानसीकाव्यक्रिया ५४ अभिधानकोशः ५५ छंदोज्ञानम् ५६ क्रियाविकल्पाः ५७ छलिकयोगाः ५८ वस्त्रगोपनानि ५९ द्यूतविशेषः ६० आकर्षक्रीडा ६१ बालक्रीडनकानि ६२ वैनायिकीनाम् ६३ वैजयिकीनाम् ६४ वैतालिकीनाञ्च विद्यानां ज्ञानम्, इति चतुःषष्टिकलानां नामानि ।

१ गाना २ बजाना ३ नाचना ४ नाट्य करना ५ चित्र लिखना ६ हीरेको वेधना ७ चावल फूलोंके रंग निकालना ८ फूलोंका बिछाना ९ दन्त वस्त्र और अंगोंका रंगना १० मणियोंकी भूमि रचना ११ शयनस्थानकी रचना १२ जलतरंग बजाना वा जलताडन विधि जानना १३ विष उतारना १४ माला आदि गूंथना १५ मुकुट आदि बनाना १६ नेपथ्य रचना १७ कर्णभूषण रचना १८ सुगंधित पुष्पोंसे तेल बनाना १९ गहनेकी योजना २० इन्द्रजाल विद्या २१ बहुरूपियापन, रूपभरना २२ पट्टेबाजीका खेल जानना २३ शाक हुए आदि अनेक खाद्य पदार्थोंके बनानेका ज्ञान २४ पीनेके शर्बत

आदि बनाना २५ सीनेका काम और लक्ष्यभेद जानना २६ सूत्रक्रीडा २७ वीणा डमरू बजाना २८ कहानी कहना २९ दूसरेकी बोली बनाकर बोलना ३० छल करना जानना ३१ पुस्तक बांचना ३२ नाटक आख्यायिका देखना ३३ काव्यकला समस्या पूर्ति जानना ३४ निवाडर डोरी आदि बुनना, बेतबाण आदिके प्रयोग ३५ तर्क कर्म ३६ बढईका काम ३७ शिल्पविद्या, वास्तुकर्मका ज्ञान ३८ चांदी और रत्नोंकी परीक्षा ३९ धातुज्ञान ४० मणियोंके रूपका ज्ञान ४१ खानकी वस्तुओंकी भूमिकी पहिचान ४२ वृक्षोंकी चिकित्सा ४३ मेंढा मुर्गे और बटेरोंके लडानेकी विधिका ज्ञान ४४ तोते मैनाका प्रलाप ४५ वैरीका तिरस्कार ४६ मसालेआदिसे धोकर बालोंको शुद्ध करना ४७ मुट्ठीमेंकी वस्तु बताना ४८ म्लेच्छ भाषाका ज्ञान, उनकी कुतर्कोंका उत्तर देना ४९ देश भाषाका ज्ञान ५० फूलोंकी सवारी वाहन आदिका रचना ५१ यंत्र निर्माण अक्षर विन्यासादिका ज्ञान (वा कठपुतरी नचाना) ५२ वाणीमें प्रवीणता ५३ दूसरोंके मनकी बात जानना वा मनमें काव्य निर्माण कर लेना ५४ शब्दकोशका ज्ञान होना ५५ छन्दोंका ज्ञान ५६ अनेक प्रकारसे कार्य सिद्ध करना ५७ छलविधि ५८ वस्त्रोंको छिपा देना ५९ द्यूतका विशेष परिज्ञान ६० दूसरेको आकर्षण करना ६१ बालकोंके खेल जानना ६२ विनयसे राजाको प्रसन्न कर लेना ६३ विनयका विचार वा देवताओंको वशमें करना ६४ वैतालिक विद्याका ज्ञान, यह चौंसठ कला कहाती हैं; इनके जाननेवाला पुरुष चतुर होता है ।

इति श्रीमुरादाबादवास्तव्यविद्यावारिधिपण्डितज्वालाप्रसादमिश्र-
संकलिते जातिभास्करे चतुर्थखण्डः समाप्तः ।

शुभं भूयात् ।

दोहा—ब्रह्मा शंकर विष्णु श्री,—गणपति गिरा मनाय ॥
जातिभास्कर ग्रन्थ यह, पूर्ण कियो सुखदाय ॥ १ ॥
संवत शशिवारीशग्रह, भूमि मार्गशिरमास ॥
कृष्णपक्ष भृगु पंचमी, पूर्ण कियो सुखरास ॥ २ ॥
वसत रामगंगानिकट, नगर मुरादाबाद ॥
भजन करत हरिको सदा, बुध ज्वालापरसाद ॥ ३ ॥
श्रोता वक्ताके रहै, नित नवमंगल गेह ॥
प्रेम नेम अरु धर्मलखि, कराहिं परस्पर नेह ॥ ४ ॥
करुणामय आनन्दनिधि, सकल सुमंगल मूल ॥
जन ज्वालाप्रसादपर, सदा रहो अनुकूल ॥ ५ ॥

श्रीरस्तु ।

सम्पूर्णोयं ग्रंथः ।

क्रय्य धर्मशास्त्र-ग्रन्थ।

नाम.	की. रु. आ.
अष्टादशस्मृति-मूलमात्र अक्षर खुलापत्रा सर्वधर्मनिरूपण युक्त है.	२-०
अष्टादशस्मृति-मूलमात्र छोटागुटका जिल्द बँधा	२-०
अष्टादशस्मृति-भाषाटीकासमेत ग्लेज कागज़	४-०
" तथा रफ कागज़	३-८
अधिमासपरीक्षा	०-४
अर्थसंग्रह-(लौगाक्षिभास्करकृत) भाषाटीकासमेत छपता है.	
अब्धिनौयानमीमांसा-(अर्थात् विलायत यात्रा)	१-४
आह्निकसूत्रावली-श्रीशुक्लयजुर्वेदी माध्यन्दिन वाजसनेयिशाखावालोंको परमोपयोगी है.	२-८
आचारार्क-इसमें ऋग्वेदियोंका आह्निकाचार है.	०-१२
आचारादर्श-यजुर्वेदियोंकी आह्निक विधि	०-१२
आचारसूचिका-भाषाटीकासमेत। बूंदीनिवासी पं० गंगासहायजी विरचित।	०-१
आशौचनिर्णय-(अग्निपुराणोक्त) इसमें-सूतकोंका निर्णय अच्छी प्रकार किया है	०-१॥
आशौचनिर्णय-मूलमात्र	०-२
आशौचनिर्णय-भाषाटीकासमेत	०-४
एकादशीतिथिव्रतनिर्णय-सप्रमाण जयसिंहकल्पद्रुमसे उद्धृत	०-४
कर्मविपाक-मूलमात्र. ग्लेज कागज	१-०
कर्मविपाक-नक्षत्रचरणगत-भाषाटीकासमेत। तीन जन्मका वृत्तान्त मालूम होता है ग्लेज	१-८
कर्मसिद्धान्तदीपिका-(कर्मफल भलीभांति वर्णित है)	०-२
जन्माष्टमीव्रतनिर्णय-सप्रमाण जयसिंहकल्पद्रुमसे उद्धृत	४-०
जयसिंहकल्पद्रुम-(मूलमात्र धर्मशास्त्रका अपूर्व ग्रंथ)	८-०
धर्मप्रदीप-सप्रमाण बारहमासोंके तिथ्यादि निर्णय स्पष्ट लिखे गये हैं.	१-४
निर्णयसिन्धु-मूलमात्र-टिप्पणी सहित, पंडितोंके देखने योग्य अत्युत्तम ग्लेज कागज	३-८
" तथा रफ	३-०
निर्णयसिन्धु-विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत सरल सुबोधभाषाटीकासहित	
ग्लेज कागजका दाम	८-०
" तथा रफ कागज	७-०
निर्णयामृत-मूलमात्र-बारहों मासोंके तिथिव्रत, श्राद्धादिका निर्णय है.	२-०
प्रतिष्ठामयूख-सर्वदेवताओंकी प्रतिष्ठाकी विधि भलीप्रकार वर्णन की है	०-६

नाम	की० रु० आ०
तराज–टिप्पणी सहित अतिउत्तम जिसमें वर्षभरकी तिथियोंके व्रतोद्यापन और प्रत्येक व्रतोंकी कथा है. ग्लेज	६–०
” तथा रफ	५–०
विवादार्णवसेतु–इस ग्रन्थमें ऋणदान निक्षेप, अस्वामिविक्रय, सम्भूय समुत्थान, दत्तप्रदानिक, वेतनादान, संविद्व्यतिक्रम, द्यूतआह्वयादि विवाद लिखे गये हैं.	२–८
विवादचिन्तामणि–इस ग्रन्थमें उपरोक्त ग्रन्थानुसार व्यवहारादि प्रकारान्तरसे विषय भलीप्रकार लिखे गये हैं.	१–८
वृद्धकर्मविपाकसूर्यार्णव–सम्पूर्ण बडा–ग्रन्थसंख्या २५००० इस वृहद्ग्रन्थके देखनेसे भृगुसंहिताकी आवश्यकता नहीं है याने तीनों जन्मका वृत्तान्तादि विषय है, अत्यन्त उपयोगी होनेसे अवश्य संग्रह करिये. नूतन छपा है	७–०
वैश्यवर्णधर्ममीमांसा–इसमें–द्विजातिकी गायत्रीका निर्णय उत्तम प्रकारसे किया गया है.	०–४
शान्तिसार–इसमें सबप्रकारकी शान्ति लिखी गई हैं.	२–०
शान्तिमयूख–सब प्रकारकी शान्तियोंका निर्णय और क्रिया लिखी हैं.	१–०
त्रिंशी–ग्रंथ–भाषाटीकासमेत। इसमें सूतक पातक इत्यादिका निर्णय श्रीमदाचार्यवर्य बोपदेवजीने सुगमरीतिसे दर्शाया है.	०–४
दयानन्दतिमिरभास्कर–भाषाटीकासमेत । विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत दयानन्दमतखण्डन प्रमाण संयुक्त है	४–०
दानचन्द्रिका–सब प्रकारके दान और संकल्प इसमें हैं	०–१०
दानसंग्रह–सब प्रकारकी सप्रमाण दानकी विधि वर्णित है.	२–०
धर्मसिन्धु–मूलमात्र। वह धर्मशास्त्रका ग्रंथ प्रसिद्ध ही है लीजिये अत्यन्त देखने योग्य है.	३–०
धर्मसिन्धु–श्रीयुत पं० मिहिरचन्द्रकृत भाषाटीकासमेत ।	७–०
शुक्लयजुर्वेदियोंका–आह्निक	१–०
शुद्धिविवेक–इसमें चारोंवर्णोंका अशौचनिर्णय और अधिकार निर्णय और देहादिक शुद्धि भूमि उदक और रजस्वलादिकी शुद्धिका निर्णय है.	०–१२
सपिण्डीनिर्णयदीपिका–इसमें–सपिंडोंके आशौच और सपिंडीश्राद्धमें अधिकार आदि विषय सप्रमाण वर्णित हैं.	०–४
स्मृत्यर्थसागर–माध्वसंप्रदायी धर्मशास्त्र–वैष्णवमात्रको परमोपयोगी है तथा हमेशा पास रखनेयोग्य है,अवश्य संग्रह करिये	०–८

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास.
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस बंबई.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास.
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस कल्याण-बंबई.